भक्तमालका सूचीपत्र ।

भक्तों के नाम व कथा	पत्र

मंगलाचरण व भगवत् की महिमा ॥

निष्ठा पहिली धर्मकी सात भक्तोंकी कथा ॥

निष्ठा दूसरी धर्म्म प्रचारक कथा बीसभक्तोंकी ॥

निष्ठा तीसरी साधुसेवा व सत्संग जिसमें तीस भक्तों की कथा ॥

निष्ठाचौथी श्रवण चार भक्तों की कथा ॥

निष्ठा पांचवीं कीर्त्तन पन्द्रह भक्तोंकी कथा ॥

भक्तमालका सूचीपत्र ।

संसार समुद्रसे उतरजाताहै और यह विशेषता उनहीं के नहीं कि जो उत्तमकुल व विद्याकला करके युक्तहोयँ किन्तु ऐसे असाधुकुल व नीच राक्षस दैत्यादि जो सबप्रकार लोकवेदकी रीतिसे बाहर व सब विद्या कलाआदिसेशून्य व अनधिकारीथे उनचरित्रोंको गायकर ऐसेस्थानको पहुँचे कि जहां योगियोंका मनभी न जायसके पशुपक्षी जैसे ऋक्ष बानर गज ग्राह गीधआदिको वह उत्तमगति प्राप्तहुई जिसको ऋषिमुनिनहीं पहुँचते भगवत्नाम जन्ममरणके दुःखदूर करनेको परमऔषधी है और नहींकहाजाताहै कि नामईश्वरकाबड़ा कि ईश्वरबड़ाहै परंतुध्यानकरना चाहियेकि यद्यपि किसीके स्वरूपकाज्ञानहै और नामयादनहीं तो किसी प्रकार विनानाम निर्देश उसका ज्ञाननहीं करसक्ता और यद्यपि किसी वस्तुकेरूपका ज्ञाननहीं है व नामजानताहै तो नामसे मिलसक्तीहै जैसे यह कि किसीकोबुलानाहै तो यद्यपि वह समीपभीहै तथापि वेनाम नहीं बुलासक्ता व नामकाज्ञानहै तो दूरभीहै तो पुकारनेसे तुरन्त आसक्ताहै अब विचारिलेनाचाहिये कि बड़ाई किसको है व सिवाय इसके ब्रह्मकेदो स्वरूपहैं एक सगुण दूसरा निर्गुण सो यहनाम दोनों से बड़ाहै क्योंकि ब्रह्मएकअविनाशी और व्यापक सत्चित् आनन्दघनहै सोयद्यपि ऐसा ईश्वर निर्गुण निर्विकार सबके शरीरमें प्राप्तहै तथापि संपूर्णजीव दीन व दुःखीहैं और जबउसीजीव ने नामकोजपा व नामका ध्यानकिया तो वह निर्गुणब्रह्म आपसेआप साक्षात्कार होजाता है किन्तु अपने स्वरूपको जीवजानलेताहै अब विचार करना चाहिये कि ब्रह्मबड़ाहै कि नाम और सगुणब्रह्म से इसकारण बड़ाहै कि जब भक्तोंको दुःखहुआ तब ईश्वर ने आपअपने ऊपर परिश्रम अंगीकारकरके अनेकप्रकारके अवतार धारण किये औरदुःखोंकोदूरकिया व नामकैसाहै कि जबभक्तोंनेजपाबिनाक्लेशव परिश्रम दुःखदूरहोगये अर्थात् यहनाम अर्थ धर्म काम मोक्ष चारोंपदार्थ के देनेको आप समर्थहै और किसी साधनका प्रयोजन नहीं और इस कलियुगमें तो सिवाय कृष्णनामके औरकोईयुक्ति व कारण उद्धारकानहीं वामनपुराणमें लिखाहै कि जिसने भगवत्नामजपा उसने अश्वमेधयज्ञ आदि सबकिया भागवतमेंकहाहै कि जो बहुतदुःखीहैं वे संसारकेदुःखसे डरतेहैं सो धोखेसेभी भगवत् का नामलेतेहैं तो शीघ्रही दुःखों से छूटजा-तेहैं स्कंदपुराणमें वर्णनहै कि गोविन्दनाम ऐसाएककोई धरतीपरहै कि

जिसका जपना पापों के हजारटुकड़े करदेताहै नारदपुराणमें कहाहै कि नारायण नामको नित्यनवीन जानकर कहते और सुनतेहैंवे अमृतजानि कर जपतेहैं ये जीव जीवन्मुक्तहैं तात्पर्य्य यह कि हजारोंश्लोकव वेदश्रुति नामकी महिमामें हैं सो उसीनामको जपकर व दण्डवत् करके प्रारम्भ लिखना भाषांतर भक्तमालप्रदीपन जो तुलसीरामने उर्दू में किया है सूक्ष्मकरके करताहूं॥

श्रीगुरूकी महिमा॥

प्रथम श्रीगुरू के चरण कमलों को दण्डवतहै कि जिनकी कृपाहृदय के अंधकार के दूरकरने के निमित्त सूर्य्य से अधिक प्रकाश करती है व वेद श्रुति कहती हैं कि अज्ञान अंधकार करके जो अंधेहैं तिनको गुरू का वचन ज्ञानांजनकी सलाईहै वह भगवत् कि जिसकी महिमा ब्रह्मा और शिवभी नहीं कहसक्ते सो गुरू के उपदेश से प्राप्तहोता है वेद व सबशास्त्रों ने बिनागुरू उपदेश दूसरा कोई उपाय जन्ममरण के दुःख से छूटने के निमित्त नहीं लिखा॥

भगवत्भक्तिकी महिमा॥

पश्चात् श्रीभगवतभक्तिको करोड़ों दण्डवतहैं यद्यपि भगवतमें व भक्तिमें कुछ अन्तरनहीं परन्तु एकविशेषविचारस्मरण होआया जिसकरके भगवत्भक्तिको बड़ाईप्राप्तहुई किंतु भगवत् तो कर्मके अनुसारसबको सुखदुःख दोनोंदेताहै व भक्तिमहारानी दुःखोंको दूरकरके सुखहीदेतीहै व दुःखको समीपनहीं आनेदेती भक्तिकीमहिमावेद व शास्त्रोंनेइसप्रकार लिखीहै जैसी भगवत की बरु अधिक भगवत सो पद्मपुराणमें लिखाहै कि जैसे प्रज्वलित अग्नि सब प्रकारकी लकड़ीको भस्मकरदेतीहैइसी प्रकारभगवत्भक्ति इसजन्म व जन्मांतरके पापोंको भस्मकरदेतीहै व उसीपुराणमें लिखाहै कि देवता भगवत्से प्रार्थना करतेहैं कि जो हमने जप तप कियाहै उसकेफलसे हमारा जन्म भरतखंडमेंहो कि तुम्हारी भक्तिकरें नारदपुराणमें लिखाहै कि भगवत् केवल भक्तिसे प्राप्तहोताहैधन आदिकसेनहीं जो भक्तिसेपूजन उसकाकरतेहैं सम्पूर्णअभीष्ट प्राप्तहोता है और गुण यहहै कि केवल पानी से पूजाहुआ सबदुःख दूरकरदेताहै वामनपुराणमें कहाहै कि जिनकी अनन्यभक्ति शङ्खचक्रधारी नारायणमें है वे लोग निश्चय करिके नारायणको पहुँचते हैं महाभारतमें लिखाहै

कि हजारों जन्मोंमें जो तपव ध्यानकरके पापदूरहुयेहें उसीकी भगवत् में भक्तिहोतीहै वैशाख माहात्म्यमेंवर्णनहै कि प्रथमतो भरतखंडमेंजन्म होना दुर्घटहै तिसपर मनुष्य फिरमनुष्यमें भी स्वधर्मकरनेवालातिसमें भक्तहोना बहुतदुर्लभहै पद्मपुराणमेंलिखाहै कि जिसकेहृदयमें प्रेमभक्ति का निवासहै तिसको यमराज स्वप्नमें भी नहींदेखता और जिसकोप्रेत व पिशाच व राक्षस व देवताभी विघ्ननहीं करसक्ते नारदपुराणमें लिखाहै कि अर्थ धर्म काम मोक्ष इनचारोंके निमित्त लोग परिश्रमकरतेहैं सो यह सब भगवत्भक्तिसे अनायास प्राप्तहोजातेहैं फिर पद्मपुराणमें कहाहैकि भगवत्भक्तोंको मुक्तिकाद्वार खुलाहै और यह निस्संदेह निश्चय किया गया कि भक्तिसे अधिक अन्य कुछ साधननहींहै ब्रह्मांडपुराणमें कहा है कि जोभगवत्के भक्तनहींहैं उनके निमित्तकरोड़ों कल्पतकमुक्ति व ज्ञान प्राप्त न होगा भागवतमें लिखाहै कि नारायणकी भक्तिवास्तेब्राह्मणकुलमें जन्म अथवा देवताहोनेका प्रयोजननहीं व न ऋषीश्वरहोनेका न व्रत न दान न यज्ञ केवल भक्तिसे नारायण प्रसन्नहोतेहैं और सब स्वांगहैं भागवत में उद्धवसे श्रीकृष्ण कहतेहैं योग और सांख्य और वेदकापढ़ना और वैराग्य हमको वशनहीं करसक्ते एकभक्ति वश करतीहै स्कंदपुराण में लिखाहै कि भगवत्भक्ति करनेसे और कोई उत्तम पंथनहींहै भगवत् का वाक्यहै कि भक्तिकी अवलम्बसे गोपी और गऊ और वृक्ष और पशु और सांप आदिक पवित्र होकर हमको प्राप्तहुये भागवतमें कहाहै कि जो कर्मोंसे और तपसे और योग व ज्ञान वैराग्य और दानादिकसबधर्मों से फल होताहै सो केवल भक्तिसे होजाताहै नारदपुराणमें लिखाहै कि विशेषकरके मुक्तिकी प्राप्ति ज्ञानसे कहतेहैं सोवह ज्ञानभक्तिही के आधीन हैं उसीमें फिरकहाहै कि विनाभगवत्भक्तिके जोसहस्र अश्वमेधयज्ञऔर वेदके अनुसार कर्मकिये सब निष्फलहैं स्कंदपुराणमें कहाहै जहां भगवत्काभक्त रहताहै तहां ब्रह्मा विष्णु महेश और सब सिद्ध निवासकरते हैं भगवद्गीतामें कहाहै कि केवल भक्तिसे जानाजाताहै जैसा मैंहूं फिर उसी में लिखा है अनन्य भक्तिसे प्राप्तहोताहै फिर लिखाहै अर्जुन ने भगवत्से पूछा किज्ञान और भक्ति इसमें अधिक कौनहैं भगवत्ने आज्ञा की कि मेरेभक्त योग्यतमहैं नाम सबसे अतिअधिकहैं यद्यपिज्ञानसेभी मेरीप्राप्तिहै परन्तु उसमें क्लेश अधिकहै इसीप्रकारके हजारों श्लोकपुरा-

णोंके और वेदकीश्रुतिहै विस्तारके भयसे नहीलिखा फिरजबकिशास्त्रों का और वेदोंका प्रत्यक्ष यह अर्थहै कि भगवत्के प्राप्तहोनेके निमित्त व अन्य फलकेहेतु एक भगवत्भक्तिही समर्थ है तो बड़ीदुर्भाग्यता है कि ऐसी भक्तिको त्याग करिके इधर उधर दौड़ता फिरै॥

भगवद्भक्तिका स्वरूप कि भक्ति किसको कहते हैं॥

अब यहवर्णन उचितहुआ कि जिसभक्तिकी यह महिमाहै सो क्या बस्तु है और क्या उसका वृत्तान्त है सोई वर्णन होताहै कि वेद और सूत्रों के सिद्धांतके अनुसार यह बात स्थिर व दृढ़हुईहै कि भगवत् में परमअनुराग का होना यही भक्तिहै सो शाण्डिल्यऋषीश्वर ने अपने सूत्र में लिखा है और सूत्र उसको कहतेहैं कि कई जगह के वेद की आज्ञाको ऋषीश्वरों ने संग्रह करिके थोड़े अक्षरों में एक जगह रचि दिया (सापरानुरक्ती ईश्वरे) यही सूत्रहै अर्थ इसका यह कि ईश्वरमें दृढ़स्नेह होना भक्तिहै और विशेष स्पष्ट वर्णन इस सूत्रका प्रेमनिष्ठा में होगा इस सूत्रमें यह शंका प्रकटहुई कि गीताजीमें भगवत्ने भक्ति उसको कहा कि जो अनन्य भजन और ध्यान करते हैं दूसरी जगह सेवाकोभक्ति वर्णन किया तीसरी जगह लिखाहै कि मन और प्राणका लगाना औ भगवत्ही को समझना वो भगवत्ही का वर्णन करना उसका नाम भक्ति है और रामानुज और माध्व और निम्बार्क और विष्णुस्वामी इत्यादि आचार्योंने यह निर्णय व निश्चय किया है कि दिन रात निश्चल जिसप्रकार गङ्गा का प्रवाह अनुक्षण प्रवर्त्तहै और एक जगह भगवत्वाक्यहै कि जो कोई जिसप्रकार के भावकरिके मेरे शरण होते हैं उसी प्रकार उनको मिलताहै और एक जगह भगवत्के प्रसन्नताको भक्ति लिखाहै और लिङ्गपुराणमें लिखाहै मन वच कर्म से भगवत् सेवा जो है उसीका नाम भक्ति है तन्त्रशास्त्रका बचन है कि भक्तिके तीन अक्षर हैं प्रथमअक्षर (भ) यह अक्षर भव जो संसार तिसके दुःखको दूरकरताहै दूसराअक्षर (क) कल्याणकरताहै तीसरा अक्षर (ती) तीव्रज्ञान को देता है इसी हेतु भक्ती नामहुआ और सनत्कुमारसंहिता का बचन है कि जो सब दुःख दूर करे उसको भक्ति कहतेहैं और एक जगह लिखाहै कि भगवत्को स्वामी और अपनेको दास भृत्य जानना इसीकानाम भक्तिहै भगवत्का बचनहै कि भक्तोंके

अनेकभांतिके भावके हेतु भक्ति अनेक भांतिकीहै सो भावहीको भक्ति जानना चाहिये विष्णुपुराणमें लिखाहै कि शास्त्रकी आज्ञाके अनुसार कर्मकरना और जो कर्म त्यागनेयोग्यहैं तिनका छोड़देना व भगवत् आज्ञाके बन्धनमें रहना इसका नाम भक्ति है कि उसी के कारण से भगवत् की कृपा होगी और साहित्यशास्त्र कि जिस शास्त्र में स्नेह व काव्य व रस इत्यादि को वर्णनकियाहै उसमें लिखाहै कि सात्त्विकभाव से जो ज्ञानशुद्ध होय तिसको भक्ति कहतेहैं अर्थात् इन सब वचनोंसे भक्तिस्वरूपके निर्णयमें बहुत विरोध पायागया सिद्धांत एक बात क्या है तहां कहते हैं कि सिद्धांत उसी अनुराग तात्पर्य भगवत्में दृढ़स्नेह होने को भक्ति कहते हैं यह सब विरोध ऊपर कहनेमात्रको है विचार करनेमें उन सबका परिणाम भगवत्की प्रीतिहै जिस रीति भांति से मनका रोकना भगवत्में लगाना शास्त्रोंमें लिखाहै अथवा जिस भांति भांतिकी रीतिसे भक्तलोग भगवत्को प्राप्तहुये उसको भक्तिलिखा इस हेतुसे विरोध दिखलाई देनेलगे नहीं तो वास्तवकरिकै कुछ विरोधनहीं और विशेष निर्णय उस अनुराग का यहहै कि जिस उपासकके संपूर्ण अन्तर्बाह्य की वृत्ति मित्र शत्रु सुख दुःखसे अलगहोकर वेद व स्मृति व पुराण व नारदपंचरात्र इत्यादि शास्त्रों की आज्ञाके अनुसार श्रवण कीर्त्तन पूजादिकमें बिना चाहना कोई वस्तुके लगी हुई ऐसे उपासक की वृत्ती शास्त्र व नरकादिकके भयको छोड़कर व स्वर्गादिकके सम्पूर्ण सुखभोगसे उदासीन होकर सम्पूर्ण ब्रह्मांडों की शोभा व सुन्दरताका सार जो भगवत्का रूप तिसमें स्वभावकरिकै आपसे आप अखण्ड निश्चल अनुक्षण लगीरहै इसकानाम भक्तिहै सो दो प्रकारकीहै एक विहित दूसरी अविहित सो विहित उसको कहते हैं कि जिस प्रकार शास्त्र में रीति व आज्ञाहै उसी के अनुसार होय सो विहितहै सो चार प्रकारकी है एक काम अर्थात् चाहनासे जैसे गोपिका व ध्रुव इत्यादि की दूसरी द्वेष अर्थात् शत्रुतासे जैसे रावण शिशुपालादिककी तीसरी भय अर्थात् डरसे जैसे कंस व मारीचादिकी चौथी स्नेह अर्थात् केवल प्रीति जैसे नारद व सनकादिक इत्यादिकी सो इन चारोंप्रकारमेंसे दो प्रकारकी एकशत्रुता एकभयसे उपासनाकी रीतिसेत्याज्यहैं और दूसरी अविहितउसको कहतेहैं कि जो स्वभाव करिकै आपसे आपबुद्धिकेबि-

चारसे विना शास्त्रकी आज्ञाके भगवत्में प्रीतिहो और यह गति फल रूप अन्तकाहै यद्यपि इसमें भिन्न भिन्न करिके वर्णन करनेका प्रयोजन नहीं तथापि कोई कोई इसमें दो भेद वर्णन करते हैं एक ज्ञानांगा जो ज्ञानको उत्पन्न करके मुक्ति देतीहै दूसरी स्वतंत्रा जोकि आप मुक्तिदेतीहै ज्ञान उसका एक अंगहै इसमें भगवद्गीताका वचनहै कि मेरे भक्त मेरी मायाको तरतेहैं फिर द्वितीयबार वर्णनकिया कि मेरे भक्त मुझको प्राप्त होतेहैं तृतीयबार गीताजीके अंतमें कहा कि जो संसार से छूटाचाहै तो केवलमेराही सेवनकरै सो इसमें वेदश्रुति और सब स्मृति व पुराणइत्यादिक इस बातमें युक्तहैं फिर उसी भक्तिके तीन प्रकारहैं उत्तम मध्यम प्राकृत सो प्रथमपदवीका नाम उत्तमहै उसका स्वरूप यहहै कि जोभगवत्को सब जगह व्यापक और वर्तमान देखता है और सबको भगवन्मय जानताहै जल व तरंगकेसदृश सो उत्तमहै और जिसकी भगवत्में प्रीतिहै परंतुभगवत्भक्तिको अपनामित्र जानताहै और प्राकृतभक्तोंपर दया व अनुग्रह करताहै और द्वेषीजनों से अनमिल रहताहै सो मध्यम है और जो भगवत् और भगवत् अर्चा मूर्त्ति इत्यादिको ईश्वरजानताहै और भगवत्भक्तों में प्रीतिनहीं सो प्राकृत है फिरवही भक्तिसात्विकराजस तामसके विवरणसे भागवतके वचनके प्रमाणसे तीनप्रकारकी है किन्तु जो निष्कामहै सो सात्विकहै जैसे प्रह्लादआदिक और जो किसीप्रकारकी कामनायुक्तहै सो राजसहै जैसे ध्रुव व गज इत्यादिकऔर जो शत्रुकेविजयकेहेतु करकेहै सो तामस जैसे इन्द्रादिक कि वृत्रासुरके बधके निमित्त भगवत्का आराधनकरावो फिर उसभक्तिके तीनप्रकार और भी भागवत्में लिखेहैं एक मानस जो मनसेहोय दूसरा वाचकजो बोलनेसेहोय तीसरा कायिक जो शरीरसेहोय फिर वही गीताजीमेंचार प्रकारकी लिखीहै एकआर्त्तजो किसीदुःखके कारणसे भगवत् आराधन होय जैसेद्रौपदी व गज आदिक दूसरा जिज्ञासु मुक्तिकीराह ढूँढ़नेवाले जैसे परीक्षित आदि तीसरा अर्थार्थी जैसे ध्रुव आदि चौथे ज्ञानीजैसे प्रह्लाद नारद सनकादिक इत्यादि फिर उसीभक्तिके तीन प्रकार और लिखतेहैं एकवहजोआपकरे दूसरावहकि औरलोगोंसेसमझायकेकरावे तीसरे वह कि और लोगोंको भक्तिकरतेहुये देखकर प्रसन्न होय फिर उसीभक्तिके नवप्रकार भागवतमें लिखेहैं श्रवण १ कीर्त्तन २ स्मरण३

सेवा ४ अर्चा ५ वन्दन ६ दास्य ७ सख्य ८ आत्मनिवेदन ९ व इन नवप्रकार में से कई एक इसभक्तमाल में निष्ठानाम धरके लिखाहै फिर वही भक्तिभूमिकाके निश्चयसे ग्यारहप्रकारकी है प्रथमभूमिका सत्संग दूसरी भक्तों की दया व प्रसन्नता के योग्य होजाना तीसरी भक्तों के आचरण जो शांत व दया इत्यादिहैं सो उसमें श्रद्धा व विश्वास करना चौथी भगवत् चरित्रोंको श्रवणकरना पांचवीं श्रवणकिया जो भगवत्स्वरूप तिसमें प्रेमकी उत्पत्तिहोना छठवीं यह कि भगवत्के स्वरूप और अपने स्वरूपको यथार्थ जानलेना जैसाहै व इस अवस्थाको अद्वैतवादी ज्ञान कहतेहैं सातवीं उस भगवत्के स्वरूप में प्रेम अधिक होना आठवीं उस भगवत्का प्रकाश दिनदिन हृदयमें होना नवीं दया और सब ओरसे निर्मल इत्यादि जो भगवत्में धर्महैं उनधर्मोंकाआना प्रारम्भहोना दशवीं ईश्वरता और दयालुता और सर्वज्ञता इत्यादि ईश्वरके धर्मसे पूर्ण इस पुरुषमें आजाना ग्यारहवीं यह कि इसपुरुषको जितनी प्रीति अपने शरीरमेंहै तैसीही प्रीति भगवत्में निश्चल कि कोई क्षण उस श्यामसुंदर रूप चितवनसे चलैनहीं है जानो फिर वही भक्तिदान इत्यादिके विभाग से क्रमक्रम अधिक होतीहुई तीसप्रकारकी है सो यह सब भेदभक्तिमें केवल इसहेतुहै कि जिसजिस भांतिसेभक्तों के मनलगें वह एकप्रकारकी होगई जैसे भगवत्से उद्धव ने पूंछा कि हे महाराज तत्त्वको कोई चौबीस कोई सत्तरह कोई सोलह कोई तीन कोई पांच कोई आठ कोई सात कहते हैं सो विरोधका हेतुक्याहै भगवत्ने कहा कि वास्तवमें कुछ विरोधनहीं कारण यहबातहै जिसनेएक तत्त्वको दूसरे तत्त्वमें मिलासमझा तो उसकी गणनामें तो कम और जिसकिसीने अलगसमझा उसकीगणनामेंअधिक है जैसे जिस किसीने ईश्वर और माया और जीवकोअलगजाना उसगणनामेंतीनहैं और जिसने मायाको भगवत्की इच्छाजाना उसकी गिनतीमें दोहैं और जिस किसीने तीनोंतत्त्व परमहितू तत्त्व व अहंकार व पंचमहाभूतको अधिक किया तिसकी गिनती में दशहैं इसीप्रकार छत्तीसतक संयोग पहुँचा है कारणमूल एकभगवत्है दूसरा दृष्टांत औरहै कि किसीने बरगदकेवृक्ष को देखकर कहाकि दोशाखावालाहै किसीने चारशाखाकादेखाथा उसने चारशाखावाला बतलाया वास्तवकरके वह बरगदएकहै इसीप्रकारयह

भक्ति एक है भक्तों के मनको लगनके अनुसार कई प्रकार की दिखाई परती है और तात्पर्य्य सबका यह है कि कोई हो किसी प्रकार से कोई लाभके निमित्त किसी विधान से करो परंतु अनुरागका होना अतिही प्रयोजन है जबतक वह प्रीति सिद्धपद को नहीं पहुँचती तबतक साधनरूप है और जब स्थायीभाव को पहुँचगई वही फल रूप है और वह दृढ़भाव जो किसी और पदार्थ का साधन नहीं जीवन्मुक्त उसीको कहते हैं और मुक्तिका स्पष्ट वर्णन ग्रंथ के अन्तमें होगा॥

भगवद्भक्तोंकी महिमा॥

अब उन भगवद्भक्तों को कि उसभक्ति के जो ऊपरकही हैं तिसके अभ्यास व साधना करनेवालेहुये और आगेहोंगे और अबहैं भगवद्रूप जानकर दण्डवत् करता हूं यद्यपि साधुसेवा निष्ठा में कुछ वर्णन उन का होगा तथापि यहांभी इसपोथीके मंगलाचरणकेहेतु उनका प्रतापथोड़ासा लिखताहूं भागवतमें लिखाहै कि जिनके स्मरण करनेसे लोग अपने परिवार सहित पवित्र होजाते हैं उनके दर्शन और स्पर्श व सेवाकरनेका क्याही कहनाहै फिर भागवत के एकादशस्कन्ध में लिखाहै कि संसार समुद्र में जो डूबते उछलते हैं तिनको भगवद्भक्ति नौका के सदृश है फिर भागवत में भगवत् ने आपकहा है कि मैं भक्तोंके आधीनहूं और भक्त आप स्वतंत्र हैं पद्मपुराण में भगवत्का वचन है कि जो मेरे भक्तों के भक्तहैं सो मेरेही भक्तहैं गोसाईं तुलसीदासजी ने जो यह चौपाई लिखी है कि (बिधिहरिहरकबिकोबिदबानी। कहतसाधुमहिमासकुचानी) उसके अर्थ बहुतप्रकारके हैं तिसमें से एकयह भी है कि मनुष्यको भक्तों के सत्संग से ब्रह्मा विष्णु महेश की पदवी प्राप्त होती है इस हेतु उनकी बाणी सकुचती है कि हम और हमारे स्वामी भगवद्भक्तों के सँवारे हुये हैं हम उनकी क्या महिमा वर्णन करैं अच्छे प्रकार मनन करने से अवलोकन करी जाती है तो जिस किसीको जो पदवी लाभहुई सो भगवद्भक्तों के सत्संग से हुई एक समय विश्वामित्र और पर्व्वत ऋषीश्वर से वादहुआ विश्वामित्रजी तपको बड़ा कहते थे और पर्वतऋषीश्वर सत्सङ्गको बड़ा कहते थे पंचशेषजी ने इसबिवादके तोड़ने के समय कहा कि एकमुहूर्त्त तुमदोनों में से कोई धरती को अपने शिरपर रखलेव विश्वामित्रजीने कईलाख वर्षका व्रत अपने जन्मभरके तपका

फल लगाया धरती न ठहरी पर्वत ऋषीश्वर ने एकमुहूर्त्त के सत्संगका फल लगादिया कि धरती ठहरिगई और इसी में न्याय होगया (सत्संगतिमुदमंगलमूला। सोइफल सिधसवसाधनफूला) अर्थ इसका यह है कि सत्संग आनंद व सुखका मूल अर्थात् जड़है और वही सिद्धफल है और सब साधनफूल हैं अब मनमें विचार करना चाहिये कि भगवद्भक्तों को कितनी बड़ाई होगी कि जिनके सत्संगकी यह महिमाहै और ध्यान करके देखना चाहिये कि भगवत् को सब कोई देहधारी अपना स्वामी जानकर पूजन करते हैं और भक्त कैसे हैं कि वही भगवत् उनके में होकर आप उनकी सेवाकरता है और एक दूसरा प्रसंगहै कि एक कविने चाहा कि जो सबसे बड़ा हो उसका महत्त्व वर्णन करूं धरतीको सब से बड़ाजाना उससे बड़ा शेषजी को और शेषजीसे बड़ा शिवजीको और शिवजी से बड़ा ब्रह्माजी को और ब्रह्मासे बड़ा भगवत् को फिर जब अच्छीप्रकार शोचा तब भगवत् से अधिक भगवद्भक्त को जाना कि जिन्हों ने भगवत्को भी बलसे अपने वश करलियाहै और अपने हृदय से बाहर नहीं जाने देते तात्पर्य्य यह कि भगवद्भक्तों की जो कुछ पदवी व बड़ाई है सो लिखने व वर्णन करने के प्रमाणसे बाहरहै और उनमें और भगवत् में कुछ भिन्नता नहीं॥

देवनागरी में भाषांतर होनेका कारण॥

अब यह पोथी भक्तमाल कल्पद्रुम जिसप्रकार देवनागरी में भाषांतरहुई सो लिखाजाताहै इसका वृत्तान्त यह है कि प्रथम मेरे चित्तको यह चाहहुई कि भक्तिमार्ग के सिद्धान्तके वचन भागवत व गीता व नारदपंचरात्र व गोपालतापिनी इत्यादिग्रन्थोंका संग्रहकरिके पोथीबनावैं सो बहुतसे श्लोक भागवत इत्यादिके व भक्तिके पांचोंरसों की सामग्री अर्थात् विभाव व अनुभाव व सात्त्विक व व्यभिचारी व स्थायीभाव इत्यादिके संग्रहकरिके एकत्रकिये व इसपरिश्रम में प्रवर्त्तरहे तबतक सँवत् उन्नीससौ सत्रह १९१७ श्रावण के शुक्लपक्ष में पड़रौना ग्राम में जो श्यामधाममें मुख्य भगवद्धाम है तहां श्रीराधाराजवल्लभलालजी ठाकुर हिंडोलाझूलरहे थे उसीसमय उमेदभारती नामे संन्यासी रहनेवाले ज्वालामुखी के जो कोटकांगड़े के पासहै भक्तमाल प्रदीपन नाम पोथी जो पंजाबदेश में अम्बाले शहर के रहनेवाले लाला तुलसीरामने जो

पारसी में तर्जुमा करिकै भक्तमाल प्रदीपननाम ख्यातकियाहै तिसको लियेहुये आये उनके सत्कार व प्रेमभावसे पोथीहम ईश्वरीप्रतापशायको मिली जब सब अवलोकन करिगये तो ऐसाहर्ष व आनंद चित्तको प्राप्त हुआ कि वर्णन नहीं होसक्ता साक्षात् भगवत् प्रेरणाकरके मनोवांछित पदार्थको प्राप्तकरदिया व लालातुलसीरामके प्रेम व परिश्रमकी वड़ाई सहस्रोंमुखसे नहींहोसक्ती कुछकालउसके श्रवण व अवलोकनका सुख लिया तब मनमें यह अभिलाषाहुई कि इसपोथीको देवनागरीमें भाषांतर अर्थात् तर्जुमा करें कि जो पारसी नहीं पढ़े हैं उनसब भगवद्भक्तों को आनन्ददायक होय सो थोड़ा थोड़ा लिखते लिखते तीसरे वर्ष संवत् उन्नीससौ तेईस १९२३ अधिक ज्येष्ठशुक्ल पूर्णिमा को श्री गुरू स्वामी व भगवद्भक्तों की कृपासे यह भक्तमाल नाम ग्रन्थ सम्पूर्ण व समाप्तहुआ व चौबीसनिष्ठामें सत्रह निष्ठातक तो ज्योंकात्यों क्रमपूर्वक लिखागया परन्तु अठारहवींनिष्ठासे भक्तिरसके तारतम्यसे क्रम न लगाकर इस ग्रन्थमें लिखाहै कोई पारसीवाले ग्रन्थ पढ़नेवाले हमारी भूल चूक न समझैं हमने विचारसे यह क्रम इसप्रकारसे लगायाहै कि प्रथम धर्म निष्ठा जिसमें सात उपासकोंका वर्णन और दूसरी भागवत धर्म्म प्रचारक निष्ठा तिसमें बीसभक्तोंका वर्णन तीसरी साधुसेवानिष्ठा व सत्संग तिसमें पन्द्रह भक्तोंकी कथा छठई भेषनिष्ठा तिसमें आठ भक्तों कीकथा सातई गुरूनिष्ठा तिसमें ग्यारहभक्तोंकी कथाआठई प्रतिमा व अर्चानिष्ठा तिसमें पन्द्रह भक्तोंकीकथा नवई लीला अनुकरण जैसे रास लीला रामलीला इत्यादि तिसमें छवों भक्तोंकी कथा दसवीं दया व अहिंसा तिसमें छवों भक्तोंकी कथा ग्यारहवीं व्रतनिष्ठा तिसमें दो भक्तों की कथा बारहवीं प्रसादनिष्ठा तिसमें चार भक्तोंकी कथा तेरहवीं धाम निष्ठा तिसमें आठभक्तोंकी कथा चौदहवी नामनिष्ठा तिसमें पांचभक्तों की कथा पन्द्रहवीं ज्ञान व ध्याननिष्ठा तिसमें बारह भक्तोंकी कथा सोलहवीं वैराग्य व शान्त निष्ठा तिसमें चौदह भक्तों की कथा सत्रहवीं सेवानिष्ठा तिसमें दश भक्तोंकी कथा अठारहवीं दासनिष्ठा तिसमें सोलह भक्तों की कथा उन्नीसवीं वात्सल्य निष्ठा तिसमें नव भक्तोंकी कथा बीसवीं सौहार्द निष्ठा तिसमें छवों भक्तो की कथा इक्कीसवीं शरणागती व आत्मनिवेदन निष्ठा तिसमें दशभक्तों की कथा बाईसवीं सख्यभाव

निष्ठा तिसमें पांच भक्तों की कथा तेईसवीं शृङ्गार व माधुर्य्य निष्ठा तिसमें वीस भक्तों की कथा चौबीसवीं प्रेमनिष्ठा तिसमें सोलह भक्तों की कथाका वर्णन लिखागया अब भगवद्भक्तों से मेरी यह प्रार्थना है कि यह भक्तमाल नाम ग्रन्थ परमानन्दका देनेवाला पढ़ने व सुननेपर तुम्हारे विचारमें सत्यकरिकै यह मेरापरिश्रम तुम्हारे प्रसन्नताके योग्य होय तो इस अपने किङ्करको यह प्रसन्नता दानदेव कि जो ग्रन्थके मङ्गलाचरणमें ध्यान लिखि आयाहूं सोसदा अनुक्षण निश्चल मेरेहृदय में वसारहै कदाचित् इसमें कोई दो वातकी शङ्का व प्रश्नकरै एक यह कि जो चरित्र तुमने वर्णन कियाहै सो सब चरित्र भगवत् व भगवद्भक्तों के कियेहुये हैं सोसब प्रसिद्धहैं नई कोई नहीं है व दूसरी यह कि पारसी में जोरचाहै तिसको तुमने देवनागरी में भाषांतर अर्थात् तर्जुमा करदियाहै तो इनदोनों वातों में तुम्हारी कौन नवीन उक्ति व विशेषपरिश्रम सूचित है कि जिसकरिकै तुमको भगवद्भक्त लोग प्रसन्नतादान अर्थात् इनआम देंगे सो पहिले प्रश्नका उत्तर तो यहहै कि जैसे राजा लोगों के कियेहुये चरित्रोंको गायक व दसौंधी व कविलोग गद्य पद्य व छन्दप्रबन्धमें बांधकर उसीराजाको सुनाते हैं व मालाकारलोग राजाही की पुष्पवाटिकाके फूलों के स्तवक व हारआदि आभूषण रचिकर उसी राजाके आगेधरते हैं तो यद्यपि उनकेही कियेहुये चरित्र व उनकेही फुलवारी के फलहैं तथापि रचनापर प्रसन्नहोकर वह राजा इनआम देता है इसीप्रकार यद्यपि उनहीं के चरित्रहैं परन्तु मैं रचिके आगे निवेदन करताहूं तो क्या नहीं वांछितरूप अनूपका चितवनरूप घनप्रसन्नदान मैंपाऊंगा और दूसरे प्रश्नका उत्तर यहहै कि जिसप्रकार कोई ऊंचे आम्रादि के वृक्षपर अतिमीठे मीठे फल पके पके लटकि रहे हैं और किसीप्रकार हाथ नहींआते और उसके स्वादलेनेको जी तरसरहाहै और जो किसीने वड़े श्रमसे वृक्षपर चढ़कर उनफलों को लाकर आगे धर दिया तो यद्यपि वह वृक्ष व फल उसका लगाया व बनाया नहीं है परन्तु निश्चय करिकै उस फल के स्वाद प्राप्तहोनेपर उसपुरुष के परिश्रमपर प्रसन्नता होती है तिसीप्रकार यद्यपि यह ग्रन्थ पारसी में रचना औरका किया है मैंने केवल देवनागरी में भाषान्तर करदिया है तो भी इसके स्वाद को लेकर भगवद्भक्त लोग क्यों न प्रसन्न होकर मेरे

वांछितको पूर्णकरैंगे कदाचित् कोई यहकहै कि जो भगवद्भक्त पारसी नहीं पढ़ेहैं सोई प्रसन्नहोंगे व जो पढ़ेहैं सो नहीं सो यह बात कदापि नहीं वरु पारसी पढ़नेवाले भगवद्भक्त दो बातों से अधिक प्रसन्न होंगे एक तो पारसी के पदोंके अर्थ व भावभाषामें यथार्थ बूझकरिकै दूसरे परोपकार परदृष्टि करिकै सोसबप्रकारसे दृढ़विश्वासहै कि मेरे वांछित को भगवद्भक्त लोग प्रसन्न होकर निश्चय कृपाकरैंगे॥

मुख्यकर्ताभक्तमाल और भाषान्तर कर्ताओंका नाम वर्णन॥

नारायणदासनाम प्रसिद्ध नाभाजी मुख्यकर्ता भक्तमालके हुये हनुमान्वंशमें उनकाजन्महुआ वृत्तान्तयहहै कि दक्षिणमें तैलंगदेश गोदावरी के समीप उत्तरमें रामभद्राचल एकपहाड़है श्रीरामचन्द्रजीने वनबास के समय कुछदिन उसपर निवासकिया तहीं रामदासनाम ब्राह्मण महाराष्ट्रहनुमान्जीके अंश अवतारहुये रामचन्द्रजीकी उपासना में बहुत लोगोंकोप्राप्तकिया बड़े पण्डित थे उनकेपरिवार हनुमान् अवतार होनेसे हनुमान्वंशकरिकै प्रसिद्धहैं गानविद्याके अधिकारीहैं राजालोगों के यहां नौकरी गानेपर करतेहैं नाभाजी जन्मसे सूरथे पिताके मरनेपर अकालका समयथा कि उनकी माताने जंगलमें छोड़दिया कील्हदास व अग्रदासजी ने देखा उनके नेत्रोंपर जलका छींटादिया नेत्र खुलगये वृत्तान्त पूछकर गलताजीमें लेआये चेलाकरिकै नारायणदास नामरक्खा सबसाधुओंकी प्रसादीखाते २ दिव्यज्ञान होगया अग्रदासजी केमानसी पूजाके समय जो साहूकारके जहाजअटकनेकी दुचिताई मनमें उत्पन्न हुई सो बतलायदिया कि महाराज जहाजनिकलगया सेवामें सावधान हूजिये तबप्रसन्न होकर आज्ञादी कि जिनभक्तोंकी प्रसादी से यह ज्ञान तुमकोहुआ तिनका यशवर्णनकरो तबछप्पयछंदमें नाभाजीने भक्तमाल बनाया यहमाला भक्तजन मणिगण से भराहै जिसने हृदयमें धारणकिया तिसने भगवत्को पहिंचाना ऐसीयहमालाहै श्रीप्रियादासजी माध्व संप्रदायके वैष्णव श्रीवृन्दावनमें रहतेथे उन्होंने कवित्वमें इसभक्तमाल की टीकाबनाई तिनकेपश्चात् लालालालजीदासने सन् ११५८ हिजरी में पारसी में प्रियादासजीकेपोते वैष्णवदासकेमतसे तर्जुमाकिया व तर्जुमेकानाम भक्तउरबसी धरा यह रहनेवाले कांधलेके थे लक्ष्मणदास नामथा मथुराकी चकलेदारी में सत्संगप्राप्तहुआ हित हरिवंशजीकीगद्दी

६ सेवकहुये लालजीदास नाममिला राधावल्लभलालजीके उपासकहुये दूसरा तर्जुमा एक और किसीने कियाहै नामयाद नहीं है तीसरा तर्जुमा लाला गुमानीलाल कायस्थ रहनेवाले रत्थकके संवत् १९०८ में समाप्तकिया चौथा तर्जुमा लालातुलसीराम रामोपासक लालारामप्रसाद के पुत्र अगरवाले रहनेवाले मीरापुर अम्बालेके इलाक़ेके कलक्टरीके सरिश्तेदार उस मूल, भक्तमाल और टीकाको संवत् १९१३ में बहुत प्रेम व परिश्रम करिके शास्त्र के सिद्धांत के अनुसार बहुत विशेष वाक्यों सहित अति ललित पारसी में उर्दू बाणी लियेहुये तर्जुमाकरके चौबीस निष्ठामें रचिके समाप्त किया॥

भक्तमालकी महिमा का वर्णन॥

महिमा व बड़ाई श्रीभक्तमालकी कोई वर्णन नहीं करसक्ता अपार है और इसलोक व परलोककी कामना पूर्ण करने को जैसे कल्पवृक्ष व कामधेनुहै जो कोई सर्वदा पढ़ते हैं निश्चय करके तिसको भगवद्भक्ति प्राप्त होती है जो कोई संसारी कामना के सिद्ध होनेके निमित्त पढ़ते हैं तो वह भी बहुत शीघ्र सिद्ध होजाती है बहुत लोगोंको परीक्षा मिली है जितना तीर्थों के स्नान, दानादिक से पुण्य होताहै उसके दश गुणा अधिक इस भक्तमाल के पढने से मिलता है संसार में तीन प्रकार के मनुष्य हैं एक विमुक्त दूसरे साधक तीसरे विषयी सो विमुक्त व साधक को तो यह पोथी प्राणसेभी अधिक प्यारी है कि उनका अभिप्राय अच्छी भांति से निकलता है और विषयी को इस निमित्त लाभ देने वाली है कि संसारी कामना इसके पढ़ने से प्राप्त होती है और भगवत् की ओर मन लगजावै तो आश्चर्य नहीं व इसके सिवाय यह कि अद्भुत अद्भुत वार्ता व ब्योरा खोल कर मर्यादा प्रेम औ वियोग ऐसे योग व रस औ शृंगार के लिखे हुये हैं यद्यपि वह सब सम्बन्ध किये गये भगवत् के प्रेमके हैं तथापि रीति प्रेम वास्तवी औ मनमुखी को एकही भाँति की है इस हेतु वे लोग उन मर्यादाओं को मनमुखी प्रेमक सम्बन्धी समझ कर प्रेमकी रीति व मर्याद से ज्ञानयुक्त होंगे और सुख आनंद पावैंगे तात्पर्य यही है कि तीनों भांति के लोगों को लाभ व प्रसन्नता देनेवाला है और क्यों न ऐसा होय कि भगवत् को अपने भक्तोंके सदृश प्यारा है कि आप सुनते हैं एक वैष्णव गुरुधन

दासनाम ब्रजमण्डल में कामाका रहनेवाला नगर जयपुरमें गया श्री गोविन्ददेवजीके मंदिरके पुजारी ने कि नाम उनका राधारमण था उस वैष्णवसे भक्तमालकी कथाका श्रवण प्रारम्भ किया कथा समाप्त नहीं हुईथी कि वैष्णव सांझरके दिशा चलेगये जब फिरआये तब पूछा कि कथा कहांतक होचुकीथी कोई न बतलासका और श्रीगोविन्दजीने ब-तलाया कि फलाने भक्ततक कथा होचुकीथी इससे निश्चय होगया कि भगवत् आप इस भक्तमालको सुनतेहैं दूसरा यह वृत्तान्तहै कि प्रिया दासजी कि जिसने मूल भक्तमालकी टीकाको कियाहै सो होडलगांवमें ब्रजसे बीसकोसहै तहां गये और लालदास महन्त ठाकुरद्वारे में कथा सुनाई संयोगवश मंदिरमें चोरी होगई और मूर्खोंने कारण चोरीहोने का कथाकोसमझा परन्तु महन्तजीको कुछ दुचिताई न हुई औरस्वामी प्रियादासजीके कथा कहनेकोकहा स्वामीजी बोले कि श्रोता इसकथाके आप भगवत्हैं जबतक सिंहासन भगवत्का फिर न आवेगा तबतक क-था बंदरही और सबलोग ठाकुरद्वारेके ठाकुरजीके वियोगसे उसदिनबे अन्न जल रहे जब रात्रिहुई तो भगवत्ने उन चोरोंको ऐसा भयदिया कि प्रातही सिंहासन भगवत् का शिरपर रखकर सबसामग्री सहित महन्त जीकी सेवामें प्रकट हुये सबको श्रीभक्तमालपर विश्वासहुआ और मूर्ख लोगोंके मुहँमें धूलपड़ी और कथा प्रारम्भहुई यहबात कुछ औघट नहीं है काहेसे कि आप अपने भक्तोंकी सहायकेहेतु निज धामको छोड़कर चले आतेहैं और अनेकप्रकारके अवतार धारण करतेहैं जोकथा उनकी सुनी तो क्या अनुचितहै अबदो एकबात वह लिखी जातीहैं कि जिनके म-नोरथ केवलपोथीके विश्वाससे प्राप्तहुये सुमेरुदेवब्राह्मण नर्मदाकेकिना-रे कोड़बनेकेरहनेवालेने गलताजी में अतिप्रेमसे भक्तमालकी कथा सुनी और पोथी की प्रतिएक लिखाय लेकर घरको चले राहमें ठगोंने मारा व उनकी पोथी सब वस्तु सहितलेगये और यह पोथी जहां रहतीहै मनकी मैलको दूरकरदेतीहै इसहेतु चोरोंको अपने पाप कर्मका पश्चात्तापहुआ और श्रीभक्तमालने स्वप्नमें भयंकर स्वरूपसेदर्शन देकर यह आज्ञाकी कि सुमेरुदेवके शरीर को उसके घर पहुँचा दे और पोथी उसके शीशपर रखदे कि वह जीजायगा ठगोंने उसी भांति किया और तुरन्त सुमेरुदेव जी रावा मानो सोतेसे उठबैठा यह चरित्रको देखकर सबको अचम्भाहु-

आ और भक्तमाल में विश्वास होगया व भगवत्शरण होगये और वै-ष्णव होकर कृतार्थ होगये इसी प्रकार एकवणिकने इसकथाको श्रीप्रियादासजी से सुना और विश्वासकरके पोथी की प्रति लेगया कुछकाल पीछे उसकी मृत्यु आन पहुँची तब यमदूतों के डरसे अपने लड़कोंसे कहा कि पोथी हमारी छातीपर रखदेव जबतक पोथीआवे तबतक उसका प्राण निकलगया घरके सबने मरेपर पोथी उसके शिरपर रखदी उस प्रतापसे यमदूततो भागगये और वणिक उठ बैठा कहने लगा कि यमदूत तो यमलोक को लिये जातेथे भगवद्भक्तों ने छोड़ाया अब मैं बैकुण्ठको जाताहूं और उपदेश किये जाताहूं कि जो कोई मेरे वंशमें हो सोइस पोथी को पढ़ता सुनता रहै और अन्त समय अपनी छाती पर राखै यहकहकर परमधाम को गया और उसके वंशमें अबतक वह परम्परावर्त्तमानहै व लाला गुमानीलाल भाषान्तरकर्त्ता तीसरा अपना वृत्तान्त लिखते हैं कि एक पुत्र उनको बड़ी प्रार्थना से प्राप्तहुआ उसको दुःख मृगीका रहताथा एक दिन लाला गुमानीलाल भाषान्तर लिख रहेथे कि रोने की ध्वनि अपने घरमें सुनी उठकर भीतरगये देखाकि लड़का ज्ञानचेष्टारहित धर्त्ती पर पड़ाहै और माता उसकी रोतीहै उसने शोककी पीड़ासे क्रोधभरी बातें कहीं और पोथीके ऊपर भी एक बात कठोर मुख से निकलगई और लालाको विश्वास दृढ़ इस पोथीपर था इस हेतु वचन कठोर नहीं सहिसके और कहा कि पोथी को इस लड़के के शिरपर रखकर देखो कि भगवद्भक्तों और इस पोथीका कैसा प्रताप है उसने पोथी जो लड़के के शिरपररक्खी मानो प्राण शरीर में डालदिये तुरन्त लड़का उठबैठा और फेर वह दुःख उसको न हुआ प्रयोजन कहने का यह कि जो कुछ महिमा और प्रताप और बड़ाई इस पोथीकी लिखीजावे वह लघुसे लघु है और कदापि आश्चर्य के योग्य नहीं क्योंकि अब इस पोथीकी कृपासे संसार के आवागमन के दुःख दूर होजाते हैं और दुःख संसारी क्या वस्तु है॥

इतिमंगलाचरणम्॥

अथ भक्तमाल ॥

रसके भेदका वर्णन ॥

मङ्गलाचरण समाप्त होगया—परन्तु जो चौबीस निष्ठा लिखी जायँगी उनका सम्बन्ध रसों से है और मूल भक्तमाल में पांचरस भगवद्भक्ति के संयोगी लिखे हैं परन्तु किसी तिलक मूलमें स्वरूप रसों का और जड़ लिखी नहींथी सो निर्णय करके लिखताहूं जानलो जड़ रसों की वेद श्रुति है (रसोवैस) यही श्रुतिहै अर्थ इसका यहहै कि ईश्वर परमात्मा स्वरूप और अर्थ रस के यह हैं कि एकाग्रचित्त की वृत्ती जिस आनन्दके स्वादको चखकर सुख में डूबके वेसुध होजाय तात्पर्य्य यह कि सच्चिदानन्द घन परब्रह्म अपने स्वामीको जो स्वरूप ध्यानमें साक्षात्कार हुआ उसमें वह चित्तकीवृत्ती दृढ़ होजाय वह रस है फिर उसी का दूसरा अर्थ है कि जो स्वरूप भगवत्का शृंगार अथवा वात्सल्य वो सखा इत्यादि रसोंकी सामग्रीसे कि वह सामग्री सब अपनी जगहपर लिखीजायँगी भक्तों के हृदयमें प्रत्यक्षहुआ और उस स्वरूपमें चित्तकीवृत्ती दृढ़ होजाय उसको रस कहते हैं और कोई कोई रसभेद के वर्णन करने वालों ने वह स्वरूप जो हृदय में साक्षात्कार हुआ उसका नाम भाव लिखा और उस भावमें मनकी वृत्ती दृढ़ होजाने को रस निश्चय किया सो वहरस एक और व्यापक पूर्ण ब्रह्म सच्चिदानन्द घनहै उपकरण जो उसके प्रकटहोने के अलग अलग हैं इस हेतु पृथक् पृथक् नामहुये वास्तवमें वहरस एक और व्यापक है जिसप्रकार एक मिट्टीसे बहुतप्रकारके घट अलग अलग नाम और स्वरूप के होते हैं परन्तु मिट्टी सब में एकही और व्यापक है जैसे पा-

नीमें जैसा रंग मिलायाजावे वैसाही दिखलाई देने लगता है परंतु पानी का रंग कई प्रकार नहीं इसी भांति वह रस जिस जगह सौंदर्य्यता और आभूषण और सुकुमारता और कटाक्ष इत्यादिक के अनुकरण सहित प्रत्यक्ष हुआ उसको शृङ्गार कहते हैं और जहां शूरता व बल व शस्त्र व उत्साह इत्यादिक के अनुकरण सहित प्रकट हुआ उसको वीर रस कहते हैं इसी प्रकार दूसरा अनुकरण वात्सल्य और सख्य इत्यादिकके पृथक् पृथक् हैं अर्थात् रस एकहै अनुकरण के विरोधके कारण से अनेक नाम हुये अब एक शङ्का यह प्रकट हुई कि प्रथम तो चित्तकी दृढ़वृत्तिको रस लिखा और फेर रस को व्यापक सच्चिदानन्द ईश्वर वर्णन न किया दोनोंमें ठीक क्याहै सो बात यहहै कि रस भगवद्रूप व्यापक है चित्त की दृढ़वृत्तिको जो रस लिखा तो हेतु यह है कि जैसे कहने में आताहै कि जीवका आहार जीवन नहींहै सो वास्तव में आहार जीवन नहीं परन्तु जीवनका अनुकरण बली है इसी प्रकार वह दृढ़वृत्ती अनुकरण दृढ़ रसका है और उसीको रस कहा जाता है रसोंकी संख्यामें आपुसमें शास्त्रोंमें विरोधहै शृंगार उपासक कहते हैं कि आनन्द स्वरूप केवल शृङ्गार से प्राप्त होताहै दूसरे रस व्यर्थहैं उत्तर यहहै कि जो मूल आनन्द का शृङ्गार होवे तो व्याघ्र वो मेढ़ा वो गज आदिकी लड़ाई देखने और दूसराही ऐसे कार्यों से जीवनका शृङ्गारसे सम्बन्ध नहीं आनन्द होना चाहिये कोशशास्त्रवाले आठ रस कहते हैं शांत रस वर्णन नहीं करतेहैं उपनिषद् शास्त्र वाले शांतरसको मूल वर्णन करते हैं व दूसरे रसों को उसकी शाखा बतलाते हैं साहित्य शास्त्रवाले कि वह शास्त्र प्रेम व काव्य व रस भेद आदिक का है सो नवरस इस विवर्ण से कि शृङ्गार हास्य करुणा रौद्र वीर भयानक बीभत्स अद्भुत शांत कहते हैं व भगवत् उपासक किसीकी हानिनहीं करते परंतु उपासनाके योग्य सम्पूर्ण उन नवरसों में से दोरस एकशृंगार दूसरा शांत व तीसरा अधिक उसमें एकसख्य दूसरा दास्य तीसरा वात्सल्य सब लेकर पांचरस अंगीकार करतेहैं यद्यपि सबरसों के अवलंबसे भगवत्का चिंतवन होसक्ता है क्योंकि भगवत् सबरसों में व्यापक है परंतु उपासना व लानेयोग्य केवल पांचरस अंगीकारकरे तो कारण यहहै कि उनपांचों रसोंको भगवत्के शीघ्र और निश्चय प्राप्त

होजानेमें विशेषताहै दूसरेरसोंसे ऐसीशीघ्र भगवत्की प्राप्तिनहीं और कोईकोई उननवरसोंमें जैसेभयङ्कर और बीभत्स कईएक ऐसेहैं कि कोई उपासक उनरसोंके अवलंबसे उपासना नहींकरता हिरण्यकशिपु और रावण और कंस इत्यादिक को जो उस रूपसे भगवत् ने उद्धार करके मुक्तिदी इसहेतु रसों में उनकीभी गिनती हुई सिद्धान्त उपासनाके सम्बन्धी पांच रसहैं और इस ग्रन्थमें वह पांचो रस निष्ठानाम करके लिखे जावेंगे व दूसरी निष्ठा सब उनरसों के अंगभूतहैं-कोई पुरुष किसी भाव और किसी प्रकार और किसी विश्वास और किसी रीति और निष्ठासे भगवत् आराधन करे रस व्यतिरिक्त नहीं अब जो बातें कि संयुक्त सम्बन्धी सब रसोंकी हैं वह तो यहां लिखी जाती हैं और जो निज रस की सम्बन्धी हैं सो अपने प्रयोजन के स्थान पर लिखी जावेंगी परन्तु अच्छे प्रकार समझनेके हेतु दृष्टांत सब शृंगार रसके सम्बन्धके यहां लिखे जावेंगे अब जानना चाहिये कि वहरस जिसका ऊपर वर्णनहुआ सो चार सामग्रीसे प्रकट होताहै एकतो विभाव दूसरा अनुभाव तीसरा सात्विक चौथा व्यभिचारी अर्थात् प्रिय वल्लभादि रूप विभाव उसको कहते हैं जो कारण और मूल उसरसके प्रकट होनेका हो सो उसके दो प्रकार हैं एक आलम्बनविभाव दूसरा उद्दीपनविभाव सो आलम्बन विभाव दो प्रकार का है एक आश्रयालम्बन जो रसके रहने का स्थान अथवा रसके उत्पत्तिका स्थान सो वह ध्यान करनेवाला अर्थात् भगवद्भक्त और स्नेहासक्त अर्थात् आश्रितहै दूसरा विषयालम्बन अर्थात् मूर्तिशृंगार रस कि जिसका ध्यान कियाजाय तात्पर्य्य भगवत्स्वरूप व जिसपर स्नेहहोय व दूसरा उद्दीपन सो चारप्रकारका है प्रथम गुण यह कि सौंदर्य व स्वरूपकी लावण्यता व नवयौवन व मनमोहन किशोर अथवा बालकस्वरूप व सुन्दरबोलन व प्रीति इत्यादि दूसरा चेष्टा यह कि कांति व झलक व सुकुमारताका गर्व व हावभाव कटाक्ष व सुकुमारताई इत्यादि तीसरा अलङ्कार यह कि वस्त्र व आभूषण की सजावट इत्यादि चौथातटस्थ यहकि अतरपान फूल इत्यादि यहविभाव का वर्णन होचुका दूसरी सामग्री अनुभाव यह कि स्नेह करनेवाला व जिसपर स्नेहहै दोनोंके एकत्र होनेसे जो बात प्रकटमें आवे और उस कारणसे वहरस प्रत्यक्षहोवे वहअनुभावहै यह कि परस्पर मिलना गल-

बाहीं बैठना और खेलना एकशय्या पर लेटना हँसीठट्ठा चुम्बन व आलिंगन इत्यादि यह अनुभावहै अब रही सामग्री तीसरी व चौथी जो सात्त्विक व व्यभिचारी उनकावृत्तांत यहहै प्राचीनलोगों ने उनदोनोंकी प्रीति करनेवाले की चंचलदशा समुझ करके बल व्यभिचारी एकनाम लिखा सो उनका निर्मूल कुछ वर्णन नहीं है जैसे भरतऋषीश्वर ने अपनेसूत्रों में लिखाहै परन्तु नवीनलोगोंने यहसूक्ष्मता निकाली कि जो एकदशा सबरसों में व्यापकता रखतीहोय उसकानाम सात्त्विकहै और जो दशा ऐसी है कि एकरसमें तो व्यापकहोती है और दूसरेरसमें व्यापक नहींहोती वह व्यभिचारी है कि दशरूपक इत्यादि रसभेदके शास्त्र में सात्त्विक व व्यभिचारी पृथक् २ लिखे हैं सो सात्त्विक उसको कहते हैं कि अपने प्रियवल्लभको देखकर अथवा उसकी ओरसे दुःखसुखके पहुँचनेसे जो मनकीवृत्तीको एकदशा प्राप्तहो और वहदशा आठहै औरजिस प्रकार सामग्री प्रथम व द्वितीय जैसे विभाव और अनुभाव सबरसोंके अलग २ हैं तिसप्रकार यह सात्त्विक जो सामग्री तीसरी सबरसों को भिन्नभिन्न नहीं एकहीभांति व्याप्त सबरसोंमें है प्रथमदशाका नामस्तंभ है ज्योंकात्यों रहजाना दूसरी दशा प्रलय नाम मूर्च्छा तीसरी रोमांच अर्थात् शरीर पर रोम खड़ेहोजाने चौथी दशा स्वेद पसीना होआना पांचईं विवर्ण मुखका रंग और होजाना छठईं कम्प शरीर कांपना सतईं अश्रु आंसू बहना आठईं स्वरभंग शब्द में भेद पड़जाना और यह भी ज्ञातरहे कि यह आठोंदशा और एकदशा मरण कि वह व्यभिचारी के वर्णन में लिखी जायगी सो अत्यन्तहर्ष व अत्यन्तशोक अथवा वियोग व संयोग दोनों अवस्था में एकहीभांति बराबर होती हैं और जो मृत्युदशा सबरसों में बराबर व्यापक नहींहोती है इस हेतु से उसको व्यभिचारी की सम्बन्धिनी में ज्ञातालोगों ने गिनती करी है और सामग्री चौथी व्यभिचारी उसको कहते हैं कि जो दशा रसके दृढ़ होनेके पहिले अथवा पीछे प्रकट होकर फ़िरजाती रहै सो दशा तेंतीस हैं और सबरसों में बराबर उन सबकी व्यापकता नहीं है ॥ प्रथम निर्वेद ॥ निर्वेद उसको कहते हैं कि प्यारे का वियोग अथवा दूसरे के साथ अपने प्यारेकी प्रीति अथवा कोई बात विपरीत समझ लेने का दुःख १ ॥ ग्लानि ॥ उसको कहते हैं कि बल घटजाना और उमंग का

न रहना २ ॥ शंका ॥ यह कि प्यारे के मिलने में किसी विघ्न के संदेहका ध्यानहोना ३ ॥ श्रम ॥ यह कि पंथचलने से अथवा संभोगके पीछे थकजाना ४ ॥ धृति ॥ मनकीसंतुष्टता ५ ॥ जड़ता॥ यह कि वियोग इत्यादिक की व्यथा के दुःख से ज्योंकात्यों रहजाना ६ ॥ हर्ष ॥ यह कि प्यारेको देखकर अथवा उससे वार्त्तालाप होने से कै कोई दूसरेहेतु से हर्षितहोना ७ ॥ दीनता ॥ यह कि बेचैनीसे मनछोटा होजाना और वियोग होनेको न सहसकना ८ ॥ उग्रता ॥ यह कि अवज्ञा जो प्यारे से हुई इसकारण क्रोधका आजाना ९ ॥ चिन्ता ॥ यह कि प्यारे के मिलने के निमित्त शोचना १० ॥ त्रास ॥ यह कि अचानक किसी भय का आजाना ११ ॥ ईर्षा ॥ अपने प्यारे में दूसरे की प्रीतिका साझीपना न सहिसकना १२ ॥ अमर्ष ॥ यह कि प्यारे में अवज्ञा जो किया उस का दुःखहोना और न सहारना इस दशामें और नम्बईदशामें भेद बहुतहैं १३ ॥ गर्व ॥ यह कि अपने से दूसरे को अधिक न जानना १४ ॥ स्मृति ॥ यह कि अपने प्यारेको अथवा उसके गुणोंको स्मरण करना १५ ॥ मरण ॥ यह कि मरने का उपाय करना अथवा मरजाना १६ ॥ मद ॥ यह कि हर्ष व गर्व के एकत्र होने से जो दशा होतीहो अर्थात् कार्य्याकार्य्य का विवेक न करना १७ ॥ निद्रा ॥ यह कि बाहर के अनुसंधान से अन्तरकी वृत्ती में एकाग्रचित्त का होना जैसे स्वप्न १८ ॥ सुषुप्ति ॥ यह कि घोरनिद्रा १९ ॥ अवबोध ॥ यह कि अवधानता बेसुधि भये पीछे सुधिहोनी २० ॥ व्रीड़ा ॥ यह कि लज्जा २१ ॥ अपस्मार ॥ यह कि दुःख और आशा और अन्यसे मनको तापहोनी २२ ॥ मोह ॥ यह कि मनके डगमग और दुःख व भयसे जो अनवधानता होय २३ ॥ मति ॥ यह कि आदि सिद्धांत जो पथ हैं विचार करके निश्चय कर लेना २४ ॥ आलस ॥ यह कि कार्यों में उपायकी अनवधानता २५ ॥ आवेस ॥ यह कि मनकी रुचि अथवा अनरुचिका अचानक प्रकट होजाना और इस हेतु मनका डगमग होना २६ ॥ वितर्क ॥ यह कि संदेह से नानाप्रकार का ध्यान होना २७ ॥ अवहित्था ॥ यह कि हर्ष अथवा शोकके कारण करके अपनेजानेहुयेको छिपाना २८ ॥ व्याधि ॥ यह कि वियोगमें शरीरसेदुःखी होजाना २९ ॥ उन्माद ॥ यह कि जड़ चैतन्य को बराबर जानलेना अर्थात् मतवाराजैसे ३० ॥ विषाद ॥ यह

कि जो अपने मनके विरुद्धहै उसकेदूरकरनेका उपाय दिखाई न पड़ना ३१॥ औत्सुक॥अपने प्यारेके मिलनमें विलम्बका न सहारना३२॥ चपलता॥यह कि मित्र और शत्रुकेकारणसे मनका स्थिर न होना३३॥इति॥

वर्णन चारों सामग्रीका होचुका अब स्थायीभाव उसको कहतेहैं कि जो रस अपने सजाती व विजातीसे दूर न होसकै और बराबर अपनी दशापर बनारहै वह स्थायीभावहै रसोंके वर्णनके आरम्भमें जिसकी चरचाहुई सजाती यहकि रससे रसका मिटजाना जैसेलड़के हँसी और ठट्ठा अर्थात् हास्यरसमें मग्नहैं कि किसी बड़ेने क्रोध अर्थात् रौद्ररससे रस हँसीको निवृत्त करदिया और विजाती यह कि जैसेलड़के हास्यरस में मग्नहैं फिररोटीखाने चलेगये और वहरस निवृत्त होगया तात्पर्य यह कि रससे रस निवृत्त न हुआ दूसरीवस्तुसे निवृत्तहुआ अभिप्राय यह कि किसी अभिघात और किसीप्रकार परमन भगवत् स्वरूपके ध्यान और चिंतवनसे न हटे वहपदवी अन्तकी और दृढ़भावहै॥ इति ॥

अब तुलसीरामकी प्रार्थना ॥ हे रघुनन्दनस्वामी कृपासिन्धु दीनवत्सल हे करुणाकर हे पतितपावन अधम उधारण महाराज मैं कैसा अधम और मतिमन्द हूं कि आपतो अनुक्षण व सर्वकाल स्पर्द्धा व कपट व क्रोध व अभिमान व मिथ्या बोलना व हिंसादिक सहस्रों अपराध मे प्रवृत्त रहताहूं भूलकरभी आपकीओर सावधान नहीं होता और दूसरे लोगोंके कर्म व आचरण पर व्यंग व दंशकरके उनके निमित्त शिक्षा लिखताहूं मेरा वही हाल है ५८ ॥ आप पापके नगर बसावत सहि न सकत परखेरो ॥ जो यह विनती करूं कि कुछ मेरे ऊपर भी कृपा की दृष्टि हो तो कौन मुख लेकर निवेदन करूं कि एक बात भी अच्छी नहीं है जो विनती करूं तो दूसरा उपाय नहीं सूझता सो अब एक बात दृष्टि में आई है कि सब पापिन में अनूपमान वो अद्वितीयहूं सो राजसभामें सब प्रकार के कलाके बड़े प्रवीणों का प्रयोजन होता है इस निमित्त जो यह गुण मनोवृत्त्यनुकूल होय तो संक्षेप यह प्रार्थना अंगीकार होवे कि कोई देहमें मेरा जन्महो और नरकमें जाऊं अथवा स्वर्ग में परंतु यहस्वरूप आपका मेरेमनमें बसा रहै सरयू के निकट अयोध्या निजधाम में जो राजद्वारी और उसमें निजसभाका मंदिर बनाहुआहै जिसका द्वार और प्रकार व भूमि भांति

भांतिके मणिगणसे जटितहै और तहां एक ऐसा मण्डप स्वर्णसूत्रका है कि जिसकी झालरोंमें दिव्यस्वर्ण सूत्रों के गुच्छे और मोती टँके हुये हैं उसकेनीचे रत्नसिंहासनहै कि जिसके जड़ाऊ मणिगण को देख कर नेत्रको चकचौंधी होतीहै उससिंहासनके ऊपर आप इसशोभा से कि किशोर अवस्थाहै और मुखकी सुन्दरतासेभी सुन्दरता पातीहै कि किरीट मुकुटधारण कियेहुये कानों में कुण्डल और उसमें श्रीमहारानी जी ने फूलोंकेगुच्छे गुंधकर डालेहैं बड़ेसजावटके साथ दिव्य वस्त्राभरण जगर मगरकी पहिरेहुये और उसपर माला मणिगण और फूलों की पड़ी हुई मोतियोंके कण्ठ गलेमें हाथोंमेंकड़े और पहुँची अँगुलियोंमें अँगूठी और चरण कमलों में घुंघुरू और कड़े विराजमान और शोभित हैं और ऐसीही शोभाके साथ श्रीजनकनन्दिनी अखिल ब्रह्मांडेश्वरी वाम अंग शोभायमान हैं और झलकमुक और आभूषण का परस्पर आभूषण वो मुखपर जो पड़ता है तो ऐसी एकधार वो शोभाकी छटा है कि जो वहां प्राप्त हैं सो आपने को भूलकर सुखमें मग्न हो रहे हैं वशिष्ठजी राजतिलक करते हैं भरत लक्ष्मण शत्रुघ्नजी छत्र चवँर धनुष बाण इत्यादिक लिये हुये और हनुमान् जी सम्मुख हाथ जोड़े खड़ेहैं और शिव ब्रह्मादिक देवता और राजा सब देश देशके भेंटलिये हुये प्राप्त हैं और दूसरी सामग्री वा साज राजतिलक का जो भक्तोंके मन में समाया है सो प्राप्तहै और यह दासभी अपने ओहदे उपानत् की सेवापर प्राप्तथा ॥

दो०. कामिहि नारि पियारि जिमि लोभिहि पिय जिमि दाम।
ऐसे होय के लागहू तुलसी के मन राम ॥

आरम्भ निष्ठों की प्रथम धर्मनिष्ठा॥

प्रथम श्रीकृष्ण स्वामी के चरण कमलों के अंकुश रेखाको दण्डवत् है कि जिसका ध्यान करने से मन जो मतंग गजके समानहै तुरन्त वश में होजाता है और भगवत् के मीन अवतार को दण्डवत् है कि जगत्की शिक्षा के निमित्त राजा श्रुतदेव को धर्म उपदेश किया और अपनीमाया उसको दिखलाकर रक्षा करी वेद और सूत्रों के अनुकूल जो आचरण शुभकर्म लिखेहैं वह धर्म है और उसके प्रतिकूल अधर्म

हैं तो अंगीकार करना आचरण शुभ और छोड़ना कर्मनिन्दित वेदकी आज्ञा के अनुरोध अत्यन्त उचित है और जो कोई वेदआज्ञा विरुद्ध कर्म करते हैं सो नरकगामी होकर अतिकठिन यातनाका दुःख भोगते हैं इसके ऊपर चौरासी लक्ष शरीरमें जन्म होनेका ऐसा कठिनदण्ड है कि वर्णन नहीं होसक्ता काहेसे कि नरक से उद्धार होने का तो कालका प्रबन्ध हैं परंतु आवागमन जन्म मरण के दुःख से छूटने का कोई प्रबंध निबंध नहीं इस हेतु कि आवागमन रहँटके चक्रकी भांति है कि इस योगवश मनुष्यशरीर मिलता है व संसार समुद्र तरने के निमित्त नौका के सदृश है जो इस शरीर को पाकर अपने छूटने का उपाय किया तो बेड़ा पार है नहीं तो फिर उसी दुःख में बद्ध होता है कर्मशास्त्र की आज्ञामें युक्त रहना सीढ़ी के सदृश है कि शीघ्र वो विना परिश्रम उत्तम पदको पहुँच जाताहै और जो कोई इससे निराश हैं सो सदा उद्धार से निराश हैं कोई कोई मनुष्य ऐसे देखे कि कर्मकरने में तो प्रीति नहीं और उत्तम पदकी बातें बनातेहैं ऐसे लोग कदापि सिद्धपदको नहीं पहुँचेंगे विचार करना चाहिये कि आप भगवत् वेदआज्ञा व कर्मशास्त्र के प्रकाश व प्रवृत्ति कारणके निमित्त अवतार लेताहै जो कोई विना कर्म करने के उद्धारचाहे यह कब होसक्ताहै व जब आप भगवत् ने अपने आपको कर्म करने से निवृत्त न किया और श्रीगीताजीमें भगवत्‌का वचन है कि मैं आप कर्म करता हूं जो कर्म न करूं तो दूसरे लोगभी छोड़ देवें तो मैंहीं जगत् का वर्णसंकर व नाश करनेवाला होजाऊं श्री रघुनन्दनस्वामी को रावण के विजय किये पीछे यह ज्ञात हुआ कि रावणका जन्म ब्राह्मणवंशमें था पाप दूरहोने के निमित्त एक अश्वमेधयज्ञ किया व कर्मशास्त्र की मर्य्याद से चरण बाहर न रक्खा तो इस मनुष्यकी क्या बात है कि विनाकर्म करने के आवागमनके दुःख से छुट्टी पावे जो यह शंकाहोय कि कर्म तो आप जड़ है इस मनुष्य चैतन्य को किस प्रकार छुड़ावेंगे सो उत्तर यहहै कि जिस प्रकार नौका जड़है कैवर्त्तके हाथके सहारे से सहस्रों को पार उतार देती है अथवा सीढ़ी जड़ है परंतु विना उसके कदापि अटारीपर न जासका इसी प्रकार कर्म हैं संसार सागरसे पार उतारने के निमित्त सहाय होते हैं व उत्तम पद को पहुंचाय देते हैं

जो यह शंकाहोय कि जो शुभकर्म्म करैंगे तो उनके भोगने के निमित्त शरीर अवश्य होगा व जब कि शरीर हुआ उसको एकदिन मृत्यु आवेगी और इसीप्रकार जन्म मरणमें रहैंगे शुभकर्मसे छूटने के प्रकारकी रचना क्याहोगी सो वृत्तान्त यहहै कि शुभकर्म्म दो प्रकारके हैं एक सकाम कि जो किसी कामना के सिद्ध के निमित्त करेजावें वे तो अवश्य आवागमन के कारण होते हैं काहेसे कि जब उस कर्मका फल इतिश्री होगया तब स्वर्गादिकसे पृथ्वीपर जन्मलेताहै दूसरा निष्काम कि वह उद्धार व छूटनेका कारणहै निष्कामके अर्थ यहकि विना किसी कामना के करने में आवे तात्पर्य्य यह कि जो कर्मकरै तो फल उसका कदापि न चाहै भगवत्‌के अर्पण करदेवै क्योंकि भगवत् अच्युत व अनन्त व अविनाशी है इस कारणसे वह फल जो भगवत् को अर्पण कियागया सो भी अनन्त व अच्युत व अविनाशी होजाताहै और उसी प्रसन्नता से भगवत् अपना स्वरूप उस मनुष्यके हृदयमें प्रकाश करताहै अर्थात् भगवत् चरणों में प्रीति होजाती है जिसप्रकार कोई कंगाल मनुष्य कि महाराजाधिराज की सेवामें कोई वस्तु दो चार पैसेकी लेजावे तो राजा उसको उस वस्तुका मोल विचारके अथवा उस मनुष्यकी मर्य्यादके योग्यका द्रव्य नहीं देताहै किन्तु अपनी ओर देखकर देताहै और उसका दरिद्र दूर करदेता है उसके अलग लोगों की रीति है किसी ने किसीको कोई वस्तु विना मोल दी तो उसके कृतको मानिके कार्य्य कर देते हैं इसीप्रकार वह भगवत् कि सब कृतज्ञताकी मितिके जाननेवालों का मुकुटमणि है सब कार्य करदेता है अभिप्राय यह कि जब इस मनुष्य की भगवत् में प्रीतिहुई और नित्यके कर्म्म सहायकहुये दिन दिन भगवत् की प्रीति बढ़ावतेहुये ऐसे अनन्त होजाते हैं कि हृदय निर्म्मल होकर भगवत्‌की भक्तिदृढ़ होजाती है और उस भक्तिकी कृपासे कृतार्थ होकर भगवत् पदको पहुँच जाताहै और जन्म नहीं होताहै और फिर यह कर्मशास्त्र भगवत्‌की आज्ञाहै और रीतिहै कि जो कोई सेवक अपने प्रभुकी आज्ञापालन में तत्पर रहता है तो वह प्रभु उस भृत्यपर प्रसन्न होकर सब मनोरथ सिद्ध करदेताहै तो भगवत् कि जो सब प्रभुलोगोंका प्रभुहै जो सेवक उसकी आज्ञा को पालन करेगा उसपर प्रसन्न होकर क्यों नहीं कार्य्य सिद्ध करदेगा और क्यों नहीं आवागमनकी पीड़ा से

छुड़ावेगा और चमत्कार यह कि निष्काम कर्मोंके कारणसे संसारी कामनाभी आप भगवत् करदेते हैं कि प्रह्लाद अर्जुन युधिष्ठिर ध्रुव इत्यादि भक्तोंकी कथासे प्रकटहै अब शंका वह भारीहुई कि भला शुभकर्म तो इस हेतु न रहे कि भगवत् में जा मिले परन्तु अशुभकर्म भी तो इस मनुष्य से होजाते हैं वे किसप्रकार जावेंगे सो बात यहहै कि कर्म्म दो प्रकारके हैं एक अज्ञात दूसरा ज्ञात सो अज्ञात कर्म तो नित्यके सन्ध्या व बलिवैश्वदेव व श्राद्ध व अभ्यागत पूजन इत्यादिकसे दूर होजाते हैं और वही भगवत् को पहुँचकर अनन्त फलके देनेवाले होते हैं और ज्ञातकर्मरहा सो उनका हाल यह है कि जिसकी निष्ठा शुभ कर्मों में है उससे महापातक होताही नहीं और जो कोई दैव योगसे होभीगया तो जो भगवत् शुभकर्मका स्वामी होताहै वहही अशुभकर्मों के पातकको मार्जन करदेताहै सो वेद श्रुति प्रकट लिखती है और न्यायसे भी जानने योग्यहै कि जिसने शुभकर्म्मों का तो फल भगवत् को दिया अशुभ कर्म उसके निमित्त क्यों रहेंगे इस व्यवहारसे काम और निष्काममें एक दृष्टान्त स्मरण होआया कि जो कोई चाकर या ठेकेदार किसीका होता है और उससे कुछवस्तु की हानिहोजावै तो उसीके ऊपर देनउतरताहै और जो घरके दासीपुत्रसे हानिहोजावै तो स्वामीपर उतरताहै दाससे कुछ सम्बन्धनहीं तात्पर्य यह कि सकाम कर्मकरनेवाला चाकर ठेकेदारके सदृशहै और निष्काम कर्म करनेवाला जैसे दासीपुत्र सिद्धान्त यह कि निष्काम कर्मोंका करना वेदकी आज्ञाके अनुसार उचितहै जो ज्ञानी और भक्त अगले समयमें हुये और जो कि अबहैं व जो आगे होंगे केवल कर्मों के प्रभावसे वह पद उत्तम उनको प्राप्तहुआ औ होंगे जैसा कि भगवद्गीता में लिखाहै कि कर्मोंही के प्रभाव से जनक इत्यादि को मनकी स्थिरता सिद्धिभई फिर लिखाहै कि विनाकर्म करने के कदापि नहीं छूटते सर्व्वशास्त्र इसबात में युक्तहैं कि विनाकर्म उद्धारनहीं और वेदआज्ञा में बुद्धि से तर्ककरके कहना कि यह वेदआज्ञा है सो इस लाभके हेतु होगी यह बात वर्जितहै और यह बात स्मृति में भी लिखीहै परन्तु प्रयोजन पायकरके लिखाजाताहै कि विधिनिषेध जो हैं वेदाज्ञा सो यद्यपि परलोकके हेतुहैं तथापि संसारके लाभको भी विशेष हैं जैसे प्रभातका उठना व स्नानकरना माता पिता गुरुकी वन्दना सत्य

बोलना सुहृदता मीठे वचन विवेकी जनन का सङ्गकरना विद्या पढ़ना और किसी को बुरा न कहना जिसका लोनखाइये तिस पालन करनेवाले की सेवा निश्छल धर्मसे करना मित्रसे कपट न रखना व जो कोई कुछ विद्या सिखलावै व शिक्षा करके भगवत् की ओर लगावै तिसको गुरु जानना व भगवद्भजन इत्यादि सहस्रों प्रकारके शुभकर्म का अंगीकार करना व मिथ्या बोलना चोरी परस्त्रीगमन हिंसा जूवाका खेलना मद्यपान असाधुजनका संग मिथ्या उत्पात कपट मिताई मूर्खता अकृतज्ञता इत्यादिका त्यागकरना व नदी में नहातेहुये पानीवरसते में चलतेहुये बार बनवातेहुये दूसरी ओर चित्त न करना बासी अथवा गरिष्ठ किसी का जूठा व तीक्ष्ण व खट्टा व क्षार इत्यादिक का न खाना स्निग्ध सुस्वादु मिष्ट कोमल रंग आहारका भोजनकरना रातको पहाड़ पर न चलना ऐसे २ सहस्रों आज्ञाधारण करने के योग्य हैं कि इस संसारमें कैसे लाभकेदेनेवाले हैं इति ॥ कोई कर्म ऐसे हैं कि जो नित्य उस कर्मको न करे तो मनुष्य अपने ज्ञातीसे पतित होजाते हैं परंतु ऐसी दुर्भाग्यता ने बल बांधरक्खाहै कि कदापि उस ओर चित्तकीवृत्ती नहीं होती बरु बहुतलोग यह कहते हैं कि अजी साहब शास्त्रके अनुसार किससे कर्म होसक्ता है पायँधरनेका भी ठिकानानहीं कहो न कहो का व्यवहारहै सो समझमें आताहै कि उनलोगोंको उस आज्ञाका पालन तो अलगरहा सुनने का भी संयोग न हुआ काहेको जो आज्ञा विधि निषेध हैं ऐसी सहज हैं कि सब कोई उसपर चलसकै और जहां कोई ऐसी भी विधिकीगति लिखी हैं कि वह अति कष्टसे साध्यहोय तो उसी के समीपही दूसरी रीतिकी आज्ञा ऐसी लिखदीहै कि सबकष्ट सुलझावैं जैसे दीपक व तेल हाथ में लगजाय तो इतनी मिट्टी लगाकर धोने को लिखाहै कि बड़ाकष्टहै तहांहीं यह बात लिखदीहै कि धरतीसे हाथरगड़ कै धोडालै बहुत जगह कि पापके प्रायश्चित्तके निमित्त चान्द्रायणव्रत लिखतेहैं और उसी जगह यह भी लिखाहै कि जो न होसकै तो कृच्छ्र नहीं तो तीनदिन अथवा एकदिनका व्रतकरै तात्पर्य यहहै कि शास्त्राज्ञा सब ऐसी हैं कि सहज से होसकैं परंतु प्रथम तो समझना और फिर करनेपर फेटबांधना कठिन होरही है और यह भी तो अनुमान करना योग्यहै कि जो अंगीकार उन आज्ञाओं का न होसकने के योग्यहोता

तो शास्त्र में लिखीही काहेको जातीं वहुतसी जाती जो नास्तिक और म्लेच्छ कहेजाते हैं तो कारण यहहै कि वे लोग वेदकी आज्ञा को नहीं मानते और विरुद्ध आचरण हैं तो जो कोई वेदशास्त्र की आज्ञा पर प्रवृत्ति न करै सो नास्तिक और म्लेच्छ हैं और जो कोई वेदशास्त्र को मिथ्या कहते हैं अथवा अन्य सामान विद्याके सदृश समझते हैं उनकी दुर्गति होने में तो कुछ संदेहही नहीं है और जो नरक स्वर्गको मिथ्या कहते हैं वेभी निस्सन्देह दुर्गती हैं यह सब वचनस्मृति के वार्ताकरके लिखेगये हैं अब कथा व नाम उन महात्मालोगों का संक्षेप से लिखेजाते हैं कि जो इस निष्ठामें दृढ़होकर और भगवद्भक्तों को पाकर भगवत् परायण हुये ॥

दो० रूप राशि आनन्द घन गौड़ श्याम कमनीय।
युगुल किशोर बसो सदा जन प्रतापके हीय १ ॥

कथा राजा हरिश्चन्द्र की॥

ये राजा हरिश्चन्द्र सूर्य्यवंशी अयोध्याके राजा बड़े प्रतापीहुये जिनकी कथा शास्त्र व पुराण में प्रसिद्ध है विश्वामित्र को यज्ञकी दक्षिणा में राज्यादिक सब देकर तीनभारसुवर्ण के हेतु राजा व रानी कुँवररोतास किसीनगर में विकने को गये वह भी नगर राजाका था विश्वामित्र ने वशिष्ठजी की शत्रुता से व धर्मकी परीक्षाके अर्थ न अंगीकार किया राज्यके अंतर्गत वह राजासे कल्पित ठहराया वशिष्ठजी ने राजा को सैनसे जनाया कि काशीके राज्यमें नहीं है वहांजावो राजाकाशीजी में चांडालके यहांबिके उसने मृतक घटियापर वस्त्र व करलेनेकी सेवा सौंपी रानी व कुँवर एक ब्राह्मणके यहां बिके विश्वामित्रने तब सांपहोकर कुँवर रोतासको काटा रानी रोदन करती हुई मृतकको जलाने के हेतु घाटपर गई राजा ने वहां कर के निमित्त रोका रानीने बहुत करुणावचन सुनाया पर राजा धर्ममें दृढ़था ऐसी दशामें भी धर्म न छोड़ा रानीके पास कुछ नहीं था कि कर दे रातको गंगाकिनारे बैठीरही तब विश्वामित्र काशीराज के लड़के को मारकर रानीके पासरखके प्रभात को काशीराज से जनाया कि गंगाकिनारे एक स्त्री रहतीहै लड़कों को खाती है उसीने यह कर्म कियाहोगा लोगों ने उस लड़के को मृतक स्त्री के पास पाया काशीराजने विना विचारे उस चांडाल को स्त्री के वधकरने

की आज्ञादी उसने राजा हरिश्चन्द्र के पास वधकरने के हेतु भेजदिया राजा की आज्ञा सुनतेही तुरन्त तरवार खींचकर उठा चाहा कि रानी के गलेपर मारे कि धरती कँपने लगी व आकाश से हाय हाय शब्द हुआ ब्रह्मा विष्णु महेश और सब देवताओं ने राजा का हाथ पकड़ लिया भगवत् ने प्रसन्न होकर कहा वरमांग राजा ने कहा भक्ति छोड़ दूसरेकी चाह नहीं भगवत् ने भक्तिवरदान देकर कुँवर रोतास व काशी-राजके लड़के को जिलाकर अयोध्याके राज्य करनेकी आज्ञादी सम्पूर्ण वयक्रम न्याय अरु भक्ति में व्यतीतकर और भगवद्भक्तिकी रीति में प्रजालोगों को प्रवृत्तकरके अंत समय कुँवर रोतास को राज्य देकर परमधाम को गया अब विचारना चाहिये कि धर्म की दृढ़ता व निर्वाह कौन कौन पदार्थ दुर्लभ को नहीं देता है ॥

कथा राजाबलिकी ॥

ये राजावलि विरोचन के पुत्र व प्रह्लाद के पौत्र परम भगवद्भक्त व प्रतापीहुये जिसके यहां आप भगवत् ने भीखमांगी व अपनी पीठको नपायदिया व अवतक जिसके द्वारपर आप भगवत् वामनरूप से खड़े रहते हैं कथा लोकमें उनके यशकी प्रसिद्ध है यहां ध्यान करके देखना चाहिये कि भगवत्ने अपने भक्तसे छल व कपटकिया तिसके हेतु अपने उस रूपको यह दण्डदिया कि राजाके द्वारपाल होगये तो भला और कोई भक्तोंकेसाथ छल व कपटकरैगा तिसको न जानै कैसादण्डकरैगा ॥

कथा राजादधीचिकी ॥

राजादधीचि ज्ञानी भक्त परोपकारी ऐसेहुये कि अपने अस्थिको देवता लोगों को दे डाला और इन्द्रने वज्र वनवाकर उसी से वृत्रासुर का वधकर सुखपाया कथा प्रसिद्ध है अब विचार करलेना चाहिये कि जो लोग सिद्ध अवस्थाको प्राप्त थे कर्म करने न करने का प्रयोजन कुछ न था तिनको भी कर्मशास्त्र की आज्ञापालन में कैसी निष्ठा थी अब हमारी यह गति है कि शास्त्र आज्ञाको पालन करना तो अलग है यह भी नहीं जानते कि कर्मशास्त्र किसको कहते हैं धन्य है ॥

कथा दशरथ महाराजकी ॥

दशरथ महाराजाधिराज परमभागवत धर्म कर्मनिष्ठ हुये इनकी बड़ाई व भाग्यका वर्णन किससे होसक्ताहै कि पूर्णब्रह्मभगवत् ने वश

होकर जिसके पुत्र होकर बालचरित्र आदिक से आनन्द दिये ये महाराज पहिले जन्ममें स्वायंभुवमनु थे और शतरूपा उनकी रानी थी तप करके भगवत् से वरदान मांगा कि आपके सदृश हमारे पुत्र होय व हमारे जीवन का सम्बन्ध आपके दर्शन से रहै वही दशरथहुये व भगवत् आप उनके पुत्र होकर प्रकटहुये अयोध्याजी में रामरूपसे नानाप्रकार के चरित्र किये वाल्मीकि ऋषीश्वरने सौ कोटि श्लोकमें वर्णन किये रामचन्द्र महाराजाधिराज के चरित्र तीनोंलोक में सूर्य के सदृश व्याप्त व प्रकाशित हैं कैकेयीरानी को पूर्व वरदान दियाथा राजाने तिस कारण से श्रीरामचन्द्र ने चौदह वर्ष वनवासकिया रावणादिक दुष्टों का वध करके अपने यशकासेतु संसार समुद्र में बांधा व दशरथ महाराज ने रघुनाथजी के वनगमन होतेही तनुको त्यागकरके स्वर्गवासकिया ॥

कथा भीष्मपितामह की ॥

भीष्मजी परम भगवद्भक्त रहे और बारह महाभागवतों में उनकी गिनती है इस कर्मनिष्ठा में उनको लिखा सो कारण यह कि प्राप्तहोने भक्ति व ज्ञानके भी प्रवृत्ति आज्ञा कर्मशास्त्रका कर्तव्य समझते रहे कि श्राद्धकेसमय उनके पिताका हाथ निकला परन्तु हाथपर पिण्डा न दिया वेदीपर रखदिया और दुर्योधन के लोन से पालित अपने को जानकर युधिष्ठिरकी ओर न गये गंगाजी के उदरसे उत्पत्ति उनकी है जब गंगाजी स्वर्ग चलीगईं व शंतनु महाराज विकलहुये तब योजन सुगन्धाको आप राजा न होनेका वाचाप्रबन्ध करके लेआये इसीहेतु अपना विवाह न किया काशीराजकी लड़की अम्बानाम तिससे विवाह नहीं किया परशुरामजी गुरुसे लड़ाई का संयोग पहुँचा परन्तु न विवाह किया व दयालुता यहांतकरही कि युधिष्ठिर महाराज महाभारतमें रातको जाकररोये तब अपने वधका उपाय आप बतलाया तब दूसरे दिन अर्जुन ने उसीरीतिसे शिखण्डीको बीचमें खड़ाकरके बाणमारे तब शरशय्या पर शयन किया और भगवत् ने अपना प्रण छोड़कर भीष्मजी का प्रण रक्खा रथका चक्रलेकर उनपर दौड़े और अपने पिताके आशीर्वाद से मृत्यु उनकी उनके आधीन रही इसीकारणसे बावन दिनतक शरशय्या पर रहे और तनु त्यागकर श्रीकृष्णचन्द्र महाराजकी आंखों के आगे देखते परमधाम को पधारे ॥ इति ॥

कथा सुरथसुधन्वाकी॥

ये दोनों भाई संग राजा नीलध्वजके पुत्र परमभागवत रहे राजाने सुधन्वाको विना विचारे आज्ञाभंगके अपराधका दण्ड मंत्रीकी शत्रुतासे दिया तेलके कड़ाह जलते में डलवादिया तेल ठंढाहोगया जैसे प्रह्लाद की गतिहुई सोई हुआ फिर सुधन्वा ने अर्जुन से अश्वमेध के घोड़े रोकनेमें अत्यन्त युद्धकिया अन्तमें दोनोंभाई खेत आये भगवत्को प्राप्त हुये व शिर उनका महादेव ने अपने मुण्डमाल में लिया॥ इति॥

कथाहरिदासकी॥

राजाहरिदास परमभक्तहुये धर्मशास्त्रकी आज्ञापर बहुत दृढ़रहे इस हेतु इस निष्ठामें लिखेगये यह राजा पाटननगरके जाति राजपूत तोदर शरनपाल राजाशिबिर के समान व दानदेने में राजादधीचि के सदृश अपने वचनके पालने में राजाबलि के समान व भगवद्भक्ति में प्रह्लाद के तुल्य व रिझवार राजाजगदेव के समानहुये कि वृत्तान्त उस का इस जगह लिखाजाताहै कि राजाजगदेव बड़े शूरवीर व न्यायनिष्ठा व उदाररहे और रिझवार निष्ठा इतनीरही कि एक नटिनी ने तमाशा राजाके सम्मुख किया उसके राग व नाचपर कला इत्यादिकसे प्रसन्न होकर कुछ प्रसन्न द्रव्य देने के हेतु चिन्ता करनेलगा॥ परन्तु उसके गुण के सम्मुख कुछ ध्यानमें न आया सिवाय इसके कि शीश अपना दे डालें नटिनी ने निवेदन किया कि जब मुझको आपके शिरका प्रयोजन आनपड़ेगा तब लेजाऊंगी और राजासे निश्चय किया कि रिझवारता तुम्हारे ऊपर अंतहोचुकी अब मेरादहिना हाथ किसी के आगे कुछ लेनेको नहीं फैलेगा पीछे दूसरे राजाकेयहां उसकी नृत्यकलाहुई राजारीझकर कुछदेनेलगा नटिनीने बायांहाथ पसारा राजाने क्रोधकरके कारण पूछा नटिनी ने कहा कि मेरा दहिना हाथ राजाजगदेव के भेंटहो चुकाहै उससे सिवाय कौन दानी है जिसके आगे फैलाऊं राजाने कहा मैं दशगुण अधिक उससे देसक्ताहूं कह उसने क्यादिया है पीछे बहुत बातचीत होनेके राजाने प्रतिज्ञा किया कि दशगुण अधिक देऊंगा निश्चयजान तब नटिनी राजाजगदेव के पासआई उसका शिर लेकर राजाके पासआई कि राजाजगदेवने यह शिर अपना हमको दानदिया रहा यह कहकर शिर राजाके सम्मुखरखदिया व बोली कि तूभी अ-

प्रतिज्ञा पूरीकर राजा लज्जितहोकर उठगया फिर मुख न दिखाया व नटिनी ने शिर राजा जगदेव का उसके धड़पर रखकर वही राग कि जिसपर राजारीझाथा गाया तुरंतजी उठा, और यह रिझवारताकी बात राजा जगदेवकी संसार में फैली और एक प्रसंग राजा जगदेवका यह है कि कोई राजाकी लड़की उसपर आसक्त हुई विवाहका संवाद भेजा राजा जगदेवने अंगीकार न किया लड़की की माताने किसी बहाने से राजाको अपने नगरमें बुलाया व राजाको मन्त्रियों की द्वारा बहुत समझाया राजाने न माना उस लड़कीने भी अपने प्रेम व आसक्तताके दुःखको प्रकट किया परन्तु उस जगदेवने न अंगीकार किया यहांतक हुआ कि उस लड़की दुष्टाने राजा जगदेवका शिरदेखने के निमित्त कटवा मँगाया परन्तु इस दशामें भी भगवत्‌ने राजाकी ऐसी प्रतिज्ञा पूरी की कि मृतकाशिरने उस लड़की के मुखको न देखा कईबार वह शिरके सम्मुखगई परन्तु जब सम्मुख आवे तबशीश उसके दूसरी ओर फिर जाय तात्पर्य यह निकला कि स्त्रीसे पराङ्मुख होय तो इसप्रकारहोय व निश्चय करके स्त्रिनकासंग मुमुक्षुको ऐसा दुःखदायीहै कि कबहीं भगवत् प्राप्तके आनन्द को समीप आने नहींदेता अभिप्राय इस प्रसंग कहनेका यह कि यह राजा हरिदासभी रिझवारनिष्ठामें ऐसेहीरहे मानो तोदरकुल में सूर्य के समानहुये कलियुग में धर्मात्मारहे तिलकमालासे प्रीति रही कि वर्णन नहींहोसक्ता बात यह है कि एक बैरागी दुष्ट उस लड़कीकेसाथ रातको सोताथा आंखसे देखा परन्तु क्षमाकरगये वहदुष्ट डरकर भागनेलगा तब यहबोले कि ऐसे कर्मों से वेषकी निन्दा होती है इतनाही कहने से उस बैरागीको ज्ञानहोगया वनमें निवासकर भगवद्भजन करनेलगा ॥ इति ॥

निम्बादूसरीधर्मप्रचारक ॥

श्रीकृष्णचन्द्र महाराज के व्यास अवतारको दण्डवतहै कि जगत्‌के उद्धार के हेतु वेदोंको विशेष प्रकाशित और ब्रह्मसूत्र और महाभारत और अठारह पुराण व स्मृतिको बनाय कै भागवतधर्मकी प्रवृत्ति की और चरणकमलकी कुलिशरेखाको दण्डवतहै कि महाघोररूप वृत्रासुर और पापके पहाड़ों को नाशकरनेवाला है भागवतधर्म इसको कहते हैं कि भगवद्भक्ति केसम्बन्धसे जो कुछ कियाजाय सेवा पूजा भजन स्मरण

कीर्त्तनइत्यादि जो किसीको संदेहहोय कि धर्म्मनिष्ठा और भागवतधर्म में क्या अंतरहै सो बात यहहै कि धर्मनिष्ठाका अभिप्राय कर्मसे है चाहै वह कर्मसकामहो अथवा निष्काम और भागवतधर्म उसको कहतेहैं कि जो निष्काम कर्म्म इस जन्ममें चाहे अगिले जन्मोंमें किये हैं और उनको भगवत् अर्प्पण करके भगवद्भक्ति प्राप्तहुई होय उस भक्तिके सम्बन्ध से जो कुछ करना योग्यहै वह भागवतधर्म है जब कि भागवतधर्म में सावधान होकर भक्तका मन लगा और प्रतिक्षण उसीओर बाहर भीतर के चित्तकी वृत्तिहुई तो और कर्म करने न करनेका स्वाधीनहै व बहुत आचार्य्योंका मत इस बातपरहै कि कर्मों के प्रभावसे भगवद्भक्ति प्राप्त हुईहै जबतक देहानुसंधान को भूलिकै मग्न न होजाय तबतक संध्या इत्यादिक जो आवश्यक कर्म उनको करतारहै और समझना चाहिये कि यद्यपि देखनेमें यह बात विरुद्धसी समझनेमें आती है परन्तु सिद्धान्तमें कुछ विरुद्धनहीं काहेसे कि जो कोई भागवतधर्म में एकाग्र चित्तहै वह जो कर्म्म करताहै सो सब भगवद्भक्ति के सम्बन्धके हैं उनको कर्म न समझनाचाहिये सो उस भागवतधर्मके कि जिसका वर्णन हुआ प्रचारक उसकी नौकाके समान हैं कि आपभी पारजावै और दूसरोंको उतारदेवे तरणतारण जो पद विख्यातहै सो ऐसेही भक्तों के निमित्तहै यद्यपि भागवतधर्मके प्रचारक आप भगवत् हैं कि ब्रह्माजी को वेदका उपदेश किया और वेदके अनुकूल भागवतधर्म्म ने प्रवृत्तिको पाया परन्तु विशेष कृपालुता के हेतु उस धर्मकी प्रवृत्ति में इतनी निरन्तर कृपादृष्टिकी कि वेद और ब्रह्मापर भी प्रबन्ध उसका न रक्खा और कई युक्ति और प्रकट करदी यह कि भक्तों और ऋषीश्वरों के मुखसे सूत्र और तंत्र और स्मृति और वेदांत पातंजलिमीमांसा इत्यादि छओंशास्त्र व वाल्मीकिरामायण व महाभारत इत्यादि इतिहास व पुराण वर्णन व रचना कराया कि उसके अनुकूल प्रवृत्ति उसकीहुई और लोग उनका श्रवण व कीर्त्तन करिकै कृतार्थहुये और होते हैं पश्चात् जब भगवत्ने देखा कि लोगों के चित्तकी चाह काव्यके पद पदार्थकी है तो नाटक व चम्पू व काव्य व साहित्य शास्त्रों के योगसे शिक्षाको किया और उनके बोधसेभी लोगोंकी बुद्धि अमित व असित देखी तो टीका करनेका प्रचार चलाया और जब उनकोभी लोग अच्छे प्रकार न समझसके तो सूर-

दास व तुलसीदास व नाभा व अग्रदास व नन्ददास व कृष्णदास इत्यादि को कलियुगमें प्रकट करके भाषामें चरित्र व भागवतधर्म्मों को रचना कराया व जगत्में प्रवृत्त किया उसके अलग उस भागवतधर्मके प्रवृत्त होनेके निमित्त दूसरा उपाय यह किया कि आप अपने मुखारविन्दसे उन धर्म्मों को स्पष्टकरके समझाया और लक्ष्मीजी व अपने पार्षद व ब्रह्मा व शिव व सनकादिक व नारद व शुक्राचार्य्य व वृहस्पति व वशिष्ठ व व्यास इत्यादि सहस्रों को गुरु बनाकर उपदेश व विशेषताई इन भागवतधर्म्मोंकीकरी और कलियुग में शंकराचार्य्य और रामानुज स्वामी व निम्बार्कस्वामी व माधवाचार्य्य व विष्णुस्वामी व वल्लभाचार्य्य व हित हरिवंशजी इत्यादिक सैकड़ों आचार्य्य अपनी विभूति और कला व अंश व आवेश अवतारसे प्रकट करिकै अवतक जिनकी कृपासे करोड़ों जीव महापापात्मा सबोंका उद्धार होताहै फिर तीसरा विचार यह किया कि अपना मन्दिर व मूर्त्ति और भजन व तपका स्थान जैसे बदरिकाश्रम आदि और अपने धाम जैसे मथुरा अयोध्या आदि और तीर्थ जैसे गंगा यमुना पुष्कर आदि प्रकट किये कि उनके प्रभाव से भक्तिका प्रचार हुआ तात्पर्य्य इस लिखनेका यह कि भगवत्को प्रवृत्त करना अपने भागवतधर्मका और दृढ़ रखना उसका इतना अङ्गीकारहै कि जबकभी थोड़ाभी उसमें विघ्नआय पड़ताहै अथवा कोई विघ्न करने को उद्यत होता है तो आप भगवत् अवतार लेकर उन विघ्न करनेवालोंका वध करदेते हैं और अपने धर्म को स्थिर रखते हैं गीताजी में भगवत् का वचन है कि हे अर्जुन जब धर्ममें हानि होती है और अधर्म की वृद्धि होती है तो मैं आप अपने भक्तों के सहाय के हेतु और नाश करने दुष्टों के और स्थिर करने अपने धर्म के अवतार लेता हूं तो आवश्यक व बहुत प्रयोजन है कि जहांतक होसके भगवद्धर्म के प्रचार करने में परिश्रम व यत्नकरै कि उससे प्रसन्नता भगवत् को होती है और प्रचार करने वाला इस धर्मका भगवत् की विभूति अवतार में विचार कियाजाता है एक जगह शास्त्र में लिखाहै कि जो कोई एक जीव विमुख को भगवत् सम्मुख करदेता है उसको दशहजार अश्वमेधयज्ञका फल होताहै भगवत् कथा कराना ठाकुरद्वारा भजन कुटी धर्म्मशाला वाटिका कूप तड़ाग पाठशाला इत्यादि और ऐसे मन्दिर कि जिससे भगवद्-

जन करनेवालों और संसारको आरामहो रचनाकरावना और भगवत् चरित्रों को वनावना और प्राचीन पोथियों की टीका वनावना अधर्मसे हटाकर भगवद्धर्म में लगाना सदाव्रत्त इत्यादि सब जगह और विशेष करिकै जैसे बदरिकाश्रम व अयोध्या व हरद्वार आदिक स्थानमें प्रवृत्त करना व एकादशी आदि भगवत्के व्रतके दिनमें जागरण करना व भगवत् कीर्त्तनका समाजहोना और जिसदिन भगवत्के अवतारहुयेहैं उसदिन और दूसरे व्यवहार जो भगवत्के हैं तिनको भगवत् का व्यवहार जानकर अतिआनन्द और स्नेह और धूमधामके साथ उत्साह कराना और विद्याके पढ़ने पढ़ाने में परिश्रम व उपायकरना ऐसेही और काम कि जिनके कारण करिकै लोगोंको भगवत्की ओर मन सम्मुख करना यह सब सामग्री वढ़ाने भागवतधर्मकी हैं जो कोई कि भगवद्भक्त हैं और केवल लोगों के उद्धार व उपकार के निमित्त जिनकी मनोवृत्ति है उनकी वड़ाई व वर्णन तो किससे होसक्तीहै कि वे कृतार्थरूप हैं और जो कोई अपने यश व संसार के दिखाने के हेतु इस भगवद्धर्म का प्रचार करताहै वह भी भगवत् को प्याराहै कि उसके प्रभावसे सहस्रोंको शुभगतिहुई व उस धर्म्मके पुण्यसे अथवा किसी भक्तके आशीर्वादसे उसका मनभी भगवत्में लगिजायगा महिमा भागवतधर्म प्रचारकोंकी शास्त्रोंमें इस आधिक्यतासे लिखी है कि जिसका वर्णननहीं हो सक्ता और एककथा अनंताचार्य्यकी जो पोथी प्रपन्नामृतमें लिखीहै स्मरणहुई कि उससे महिमा ऐसेभक्तोंकी प्रकटहोतीहै ठाकुरद्वारे व नगरके मार्गजाने आनेके बीचमें एकगड़हा पड़गया व रास्ता क्लिष्टहोगया अनन्ताचार्य्यजी आप टोकरी और फावड़ालेकर उसगड़हेको भरनेलगे इस हेतु कि लोगोंको आनेजानेका क्लेश न होवै और स्त्री उनकी कि वह गर्भवती रही उसको भी इस धन्धेमें शामिल किया जब प्रसवकाल समीप आया और उस स्त्रीको टोकरी के ढोनेसे क्लेशहोनेलगा तो भगवत् ने पनिहारेका रूप बनाकर उसकी स्त्रीको आज्ञाकी तुम्हारे बदले में टोकरी ढोताहूं तुम विश्रामकरो पश्चात् थोड़ेही विलम्बमें अनन्ताचार्य्यने देखा कि स्त्री के धन्धेपर कोई पनिहार टोकरी ढोताहै सोंटालेकर दौड़े और कहा कि तू कौनहै जो हमारे भागमें बलात्कार सा भीहोताहै जब समीप पहुंचे तो भगवत् को एक भागने विना दूसरा उपाय न सूझा और मंदिर

में जा घुसे व अनन्ताचार्य्यजी सोंटालिये पीछेरहे जो मंदिरमें पहुंचे तो भगवत् का श्रीअंग मिट्टी और धूलमें भराहुआ देखकर बूझगया कि आप भगवत् स्वीपर दयाकरके टोकरीढोतेरहे अनन्ताचार्य्यजी ने हाथ जोड़कर प्रेममें मग्नहोके विनयकिया कि महाराज कृपाकरिके किङ्करोंको उचितहै न कि स्वामीको ऐसे विचारसे सबलोगों को उचित व योग्यहै कि अपने अपने अभिलाष व विश्वासके अनुसार इस परम धर्म्म के प्रवृत्त करने में सब तन मन प्राणसे उपाय व परिश्रमकरैं जिस किसीको जिस बोलीमें विद्याप्राप्तहुई है और काव्यरचना में चित्तकीवृत्ती है तो भगवत् चरित्रोंही की रचनाकरै परन्तु सैकड़ों काव्यकर्त्ता देखने में आये कि बिना अनाप सनाप बकवाद के भगवत्चरित्रों के ओर तनक भी एकाग्रचित्त नही होते और कोई कोई से बात कहने में आई कि तुम भगवत् यश वर्णन करके अपनीवाणी व अन्तःकरणकोक्योंनहीं पवित्र करतेहो तोउत्तरदेते हैं कि महाराज हम अभेदका वर्णन करते हैं और कोई कहते हैं कि समयका जैसा चलनहै वैसेही पद पदार्थ की रचना का करना अच्छाहोताहै और कोई कहते हैं कि कविलोगोंका मन पद व अर्थ की रचना के चिन्तन व्यतिरिक्त दूसरी ओर नहींजाता यहभी तो भगवद्भजन है बस ऐसेही ऐसे उत्तर अयोग्य निरर्थक देते हैं उनका वर्णनकरना व्यर्थ है तात्पर्य्य सब कहनेका यह कि जिसकाव्य व रचना व चित्रपदमें भगवत्चरित्रों का वर्णन नही वह काव्य निराला निष्फल व अधमहै जैसे कोई परमसुंदरी चन्द्रवदनी स्त्री है औ बिनावस्त्र नंगी होवै व और अधिक व्यवहार संसारका वैभव व धनपर निबन्ध है सो धनवान् लोगोंको अच्छेप्रकार ज्ञात व प्रकटहै कि धन किसी के घर न पहिले रहा न अब रहैगा शून्य हाथआये और इसीप्रकार चलेजावैंगे इस धनका नाम माया है और लक्ष्मी अर्थात् भगवत् पतिव्रता स्त्री है जहां उसका स्वामीरहैगा वहीं वह रहैगी नहीं तो तुरन्त चली जायगी अभिप्राय यह है कि जो धनको सदा स्थिर करनेको चाहै तो भगवत् पन्थ में उसको लगाके सदा सेवा वो भजन में काल व्यतीत करै सहस्रों साहूकार और ऐश्वर्य्यवान् होगये किसी का नामभी कोई नहीं जानता और जिन लोगोंने ठाकुरद्वारा तड़ाग भजन कुटी इत्यादि बनवाया अबतक उनका नाम प्रकाशित है और रहैगा अब बड़े शोच

व मसोस की बातहै कि धनको पाइके भगवद्धर्म्मका प्रचार न करै ईश्वर और जीव और संसार और स्वर्ग और नरक और भक्ति और ज्ञान और वैराग्य और सब रीति सम्प्रदाय व मतका जानना विद्या के आधीनहै जबसे चारों वर्ण ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्रमेंसे शास्त्र का पढ़ना उठगया तबसे सब धर्म्मों का नाश होगया दक्षिणदेश चीनापट्टन व तैलङ्ग व द्राविड़ व बारह मल्हार में रीति है कि जो किसी का लड़का शास्त्र पढ़ने में मन न लगाके क्रूरता करताहै तो उसके बड़े लोग वहां के देशाधिपति से आज्ञालेकर पैरों में बेड़ी डालकर पाठशाला में भेज देते हैं और जबतक शास्त्र न पढ़लेवे बेड़ी नहीं निकालते इसकारण से उसदेश के सबलोग धर्म्मों में स्थिर हैं और ब्राह्मण से लेकर नीच जात पर्य्यंत कोई मनुष्य इष्ट उपासना से शून्य और अज्ञ नहीं और विरुद्धधर्म्मी लोगों के वचन फाँस में थोड़े फँसते हैं इसहेतु जहांतक होसकै और अपने वो बिराने को शास्त्र पढ़ने की सहायताकरे जो संस्कृत न पढ़सकै तो भाषा का पढ़लेना मनोरथको पहुँचादेताहै सूरसागर तुलसीकृत रामायण को भगवत् ने ऐसा प्रतापदियाहै कि जो नेम करके पढ़ते हैं वो निश्चय भगवत् के प्यारे होजाते हैं और इसी प्रकार नन्ददास वो कृष्णदास वो अग्रदास वो छीतस्वामी इत्यादि की वाणी को प्रतापहै औ भक्तमालका वाक्य तो प्रारम्भही में लिखागया भगवत् कथा कहलाना और उसके सुननेकी शिक्षा देना और अपने अनुगामी व पुत्र पौत्रादि को जिसप्रकार व्यवहार सांसारिकके सिद्धके हेतु प्रवृत्त माना विद्याको पढ़ातेहैं वो शौच करतेहैं इसी प्रकार भगवत् की ओर लगाना और भगवत् सहस्रनाम वो गीता वो स्तवराज इत्यादिक स्तोत्रों का पढ़ादेना अति प्रयोजन से है और जो कोई अपने वंशको और अनुगामी लोगों को भागवतधर्म में नहीं लगा देते व भगवद्धर्मके सम्बन्धकी विद्या नहीं पढ़ाते तो जो पाप जीवन पर्य्यंत उनसे होतेहैं उनके बड़ोंके शिरहैं क्योंकि पढ़ादेना उन विद्याओंका उनपर अवश्यथा सो न किया व जिनके वंशमें भगवद्भक्त होते हैं तो अपने पुरुषोंको भी नरकसे उद्धार करके मुक्तकरदेतेहैं इसमें प्रह्लाद आदिक भक्तोंकी साक्षी हैं हे कृपासिंधु हे दीनबंधु हे श्रीव्रजचन्द्र महाराज कुछ इस घरजाये किंकरकी ओरभी निगाहहै कि बिन आपके चरणकमलों के और

शरण और रक्षक मेरे नहीं जो मेरे कर्मोंकी ओर दृष्टिकरोगे तो अगणितजन्मोंतक मेरा ठिकाना नहीं लगैगा इसहेतु केवल कृपा व दयाका आसरा है व यद्यपि यह बात जानताहूं कि जितना विमुख व संसारीलोगोंकी स्तुति व आराधना व मुखजोहन व मनरञ्जन करताहूं व भयसे उनसे कम्पमान रहताहूं जो उसके सहस्रवें भागमें एकभागभी आपका भयकरिके भजन स्मरणमें व्यतीत करूं तो एकक्षणमें बेड़ापार होताहै परन्तु यहमन ऐसा भाग्यहीन व दुष्टपापीहै कि भूलके भी उसओर नहीं लगता जो अबभी मूर्ख मतिमन्द मन ऐसा चिन्तवन आपका करता रहै तो शीघ्र अपने परम मनोरथको प्राप्तहोसक्ताहै श्रीयमुनाजी के किनारे एकवाटिका परम मनोहरहै कि जिसमें सुन्दर मार्ग व क्यारियों में जल चलरहाहै और सब प्रकारके फल व फूलों के वृक्षोंपर हरीलहलही डहडही बेलछायरहीहैं व बीचमें फुलवारी नानारङ्ग के फूलोंकीछविदेती है मयूर कोकिल शुकसारिका कपोत सारस हंसआदि अपने मधुर शब्द व चहचहाहटसे बरबस मनको मोहित करतेहैं उसवाटिका में श्री नन्दनन्दन शोभाधाम अपने सखन के संग भांति भांति के आनन्द व खेल कररहे हैं मुखारविन्दकी शोभाकी उपमा सूर्य्य चन्द्रमा मणिगण अथवा कोईफूल कमल व गुलाब आदिकी दीजाय तो उनमें एकही एकप्रकारकी शोभाहै व इस मुखारविन्द मनोहरमें उनसबकी शोभा एकही जगह सम्पूर्णहै मुकुटजड़ाऊ मोरपक्षका शीशपर कानोंमें कुण्डल कि उनमें फूलों के गुच्छे गुँथेहैं विराजमानहैं गलेमें मोतियोंकी कण्ठी व मणिगण की माला उसपर फूलोंकी मालाहै कड़े और पहूँची हाथोंमें सुवर्णतारी दुपट्टा जैसा कि खेलने के समय बांधना चाहिये बँधाहुआ व पीताम्बरकी धोती पहिनेहुये चरण कमलों में कड़े व झांझ शोभितहैं और खेलकी दौड़धूपमें जो पसीना आगयाहै तिसकी छोटी छोटी बूंदें मुखपर झलकतीहैं और अलकैं घुंघुरवारी जो पवनके लगने व दौड़ने से बिथुरिके कपोलोंपर आईहुई हैं ऐसी शोभा व आनन्द प्रकट करती हैं कि देखने वालों का मन बरबस हाथ से जाताहै ॥

कथा ब्रह्माजी की ॥

ब्रह्माजी जगत् के पिता व भगवद्भक्तों व सबधर्म प्रचारकों में श्रेष्ठहैं व भगवद्विभूति स्वरूप हैं जब नाभिकमल से उनका जन्म हुआ व तप

करनेके पश्चात् अपनी व संसारकी उत्पत्ति करनेकाज्ञान व सामर्थ्यपाई तो भगवद्धर्म्मों को संसार में प्रवृत्त किया और अबतक ब्रह्माजी का उपदेश चलाजाता है जिसप्रकार कि ब्रह्मलोक में नारद सनकादिकों को उपदेश करते हैं और जो कोई उत्तम कर्मकरके उनके लोकमें जाताहै उसको उपदेश भक्ति व ज्ञानका करते हैं कि उस प्रभाव से मुक्ति होजाती है यहबात सब पुराणों से व्यवस्थित है जब कबहीं उसभगवद्धर्म्म में बाधापड़ती है व उस कारण से देवता व भगवद्भक्तों को क्लेश होता है तब ब्रह्माजी भगवत् के अवतार होनेका उपाय करते हैं और दुष्टोंका नाशहोकर भगवद्भक्तिकी प्रवृत्ति होतीहै ब्रह्माजी की कथा पुराणों में सब प्रसिद्ध लिखीहै इसीहेतु यहां संक्षेपसे लिखागया ॥ इति ॥

कथा शिवजी की ॥

शिवजी की पदवी भक्तराज है व भगवद्धर्म्म प्रचारकों में राजा हैं भक्तिके प्रचार करने में यहांतक उद्यत हैं कि आप आचार्य्य होकर संसार को उपदेश करते हैं विष्णुस्वामी सम्प्रदाय के आचार्य्य शिव जी हैं व जब सेवड़े बढ़े तब स्मार्त्तसम्प्रदायमें शंकराचार्य्य का अवतार लेकर स्मार्त्त मत प्रवृत्त किया व क्षीरसागर से हलाहल निकला सब देवता भस्म होनेलगे तब दयाकरके आप पान करगये ऐसी कृपालुता है व रसिक भक्तराज ऐसे कि सती ने बनमें रामचन्द्र की परीक्षा लेनेको जानकीजीका स्वरूप धारण किया तिसहेतु त्याग किया जब सती ने उस तनुको छोड़कर हिमाचल के यहां जन्म लिया तब बड़ी तपस्या करने से अंगीकार किया पार्वतीजी से कहा कि रामनाम लेने से हजार नाम का फल है पार्व्वती जीने विश्वास दृढ़ करलिया व सहस्र नाम पाठ के पूर्णता को एक नाम लेकर शिव जी के बुलाने पर चली आईं आप अतिप्रसन्न होकर अंग में बायें ओर रखलिया एक समय भगवत् प्रसाद सनकादिक ने दिया आनन्द से बेसुधि होकर भोजन करिगये पार्व्वती को भूलिगये पार्व्वती ने शापदिया तुम्हारा निर्म्माल्य आजसे जो खायगा नरकमें जायगा इसहेतु शिवनिर्माल्य त्याग है एक समय शिवजी पार्व्वती के सहित चलेजातेरहे दोऊ जगह उजाड़में वाहन से उतर उतर साष्टांग दण्डवत् किया पार्व्वती जीने कारण पूछा तब शिवजी ने कहा कि एकजगह तो एक सहस्रवर्ष

व्यतीत हुआ कि एक भगवद्भक्त यहां हुआ रहा दूसरी जगह यहहेतु है कि सहस्त्रवर्ष व्यतीत होजायगा तब एक भगवद्भक्त यहां होगा इस हेतु ये दोनों खेरे दण्डवत् व पूजन के योग्य हैं ऐसे अनेक चरित्र हैं कोई कहते हैं शिवजी रामचन्द्रजी के बालस्वरूप के उपासक हैं सो ठीकहै परन्तु जो दूसरी निष्ठाहैं उन सबमें भी वैसीही प्रीतिहै कि श्री कृष्णचन्द्र महाराज के रासविलास के समय सखी रूप होकर पहुँचे व वीररसकी शोभा बड़े उत्साह से जायके देखी इससे शिवजी महाराज ज्ञानी भगवत्के भक्तहैं ॥

कथा अगस्त्यजी की ॥

अगस्त्यजी ऋषीश्वर परमभक्त रामोपासक वो बहुत विद्याके आचार्य्यहैं अगस्त्यसंहिता जिनकी बनाई हुई विख्यात है घटसे जन्महै समुद्रको गंडूकमें धरके पानकरगये देवता दानवके बोझसे धरतीउत्तर ओर नीची व दक्षिण ऊंची होगई तब अगस्त्यजी दक्षिण जा रहे तब उनके प्रभाव से उत्तर ऊंची दक्षिण नीची होगई मन्दराचल पहाड़ पड़ा है खड़ा नहींहोता अगस्त्यजी ने मांगा कि जबतक हम न आवैं तबतक तू पड़ारह इसीकारणसे उत्तरको अगस्त्यजी नहीं आते हैं वो मन्दराचल ज्योंका त्यों पड़ाहै ॥ इति ॥

कथा रामानुजस्वामी की ॥

जिसप्रकार भगवत्ने संसार के उद्धारके हेतु चौबीसअवतार धारण किये इसीप्रकार कलियुगमें चार अवतार धारणकरके भागवतधर्मको प्रकाश वो प्रवृत्तकिया व चारसंप्रदायको स्थापितकिया एकसनकादिक संप्रदाय उसके आचार्य्य निम्बार्कस्वामी हैं दूसरा श्रीसंप्रदाय कि उसके आचार्य्य रामानुजस्वामी हैं तीसरा शिवसंप्रदाय उसके आचार्य्य विष्णुस्वामी हैं चौथे ब्रह्मसम्प्रदाय उसके आचार्य्य माधवाचार्य्य हैं सबका वृत्तान्त संक्षेपमे लिखाजायगा रामानन्द व्यास हित हरिवंशआदिनेजिन सम्प्रदाओंको प्रकट किया तो अन्तर्गत चार संप्रदायकी हैं वो चारों संप्रदाय भक्तिरूपी भूमिके स्थिर रखने को दिग्गजों के सदृश हैं चारों सम्प्रदाओं में श्रीसम्प्रदाय के आचार्य्य जो रामानुज स्वामी हुये कि जिनके प्रभाव करके कोटान कोट महापापी व पातकी संसार समुद्रको तरिगये व तरते हैं भक्ति व प्रताप की महिमा उनकी सूर्य्य के समान

प्रकट व विख्यात है व जन्मसे लेकर परमधाम जाने के दिनतक का वृत्तान्त स्वामी रामानुजजी के प्रपन्नामृतग्रन्थमें सम्पूर्ण लिखाहै व गुरु परम्परा प्रारम्भसे रामानुज स्वामीतक यहां लिखीहै और आगे केवल एकगादी कि रामानन्दजी की कथा में लिखीजायगी और चौहत्तरगादी की परम्परा मिलनी अत्यन्त दुर्लभ है १ नारायण २ लक्ष्मीजी ३ विष्वक्सेन ४ सटकोप ५ श्रीनाथ ६ पुण्डरीकाक्ष ७ राममिश्र ८ यमुनाचार्य्य ९ पूर्णाचार्य्य १० रामानुजस्वामी॥

कथा स्वामीरामानन्दजी की॥

यह रामानन्द स्वामी परम भगवद्भक्त व सिद्ध व आचार्य्य व भक्ति के प्रचार करनेवाले ऐसे हुये कि संसार समुद्र के उतरने के हेतु अपनी कृपा व सम्प्रदायका सेतु बांधा व अनन्तानन्द व सुरेश्वरानन्द व सुखानन्द व भावानन्द व पीपा व सेन व धनाजाट व रैदास व कबीर को उन्हीं की कृपा व प्रभाव और उपदेश से हुआ रहा यह स्वामी दक्षिण देशमें एक संन्यासी का उपदेश लेकर स्मार्तकी रीतिसे भगवत् आराधनकिया करतेरहे एकदिन फूलोंके लेनेको फुलवाड़ीमें गये वहां राघवानंद स्वामी जो रामानुज सम्प्रदायकेरहे उनका दर्शनहुआ उन्होंने कहा कि तुमको कुछ अपना वृत्तान्त भी ज्ञातहै कि तुम्हारी आयुर्बल शेषनहीं रही इस अन्तसमय में भगवत्शरण होजाना चाहिये रामानंदजी ने अपने गुरु संन्यासी के पास आयके सब बात कही उन्होंने भी अपने ध्यान में देखा कि सचहै रामानन्दजी की आयुगत होगई परन्तु कुछ उपाय न होसका दोनों राघवानन्दजी की सेवामें आयके शरणहुये राघवानन्दजी ने उनपर दयाकरिकै मन्त्र उपदेशकिया और रामानन्दजी के प्राणको योगाभ्यास से दशवेंद्वार ब्रह्माण्डमें पहुँचा दिया जब मृत्यु की घड़ी टलगई तब फिर जिलाकर चैतन्य करदिया व बहुत जीनेका वरदान दिया रामानन्दजी ने बहुत काल गुरुकी सेवाकी फिर तीर्थाटन करते बदरिकाश्रमकी ओर आये कुछकाल काशीवास किया पञ्चगङ्गा घाटपर निवासरहा वहां खड़ाऊं उनकी विराजमानहैं फिर जब गुरुकी सेवामें गये तब आचारी लोगोंने क्रिया व आचारका वृत्तान्त पूंछा व जाना कि कभी जो निश्चय आचार धर्म में भेद पड़गया है तब अपने में से न्यारे करदिया राघवानन्द उनके गुरुने आज्ञादी कि तुम अपना

पंथ अलग चलाओ सो रामावतनाम करिकै सम्प्रदाय चलाई वही रामानन्दी भी कहलाते हैं इस सम्प्रदायमें श्रीरघुनन्दन व जानकी महारानीका ध्यान उपासनाहै व आचारी लोगोंकी रीति आचारनहीं है शास्त्र को मनसे यह सिद्धान्त करलिया कि जो कोई भगवत् शरण हुआ उस को बंधन वर्ण आश्रमका नहीं सब अच्युतगोत्र होगये सबका भोजन एक पंक्तिमें होताहै सो यह शास्त्र के अनुसार है नारद पंचरात्र इत्यादिकमें लिखाहै कि जैसे चारों आश्रमहैं इसीप्रकार भगवद्भक्ति आश्रम है यह कि सब भगवद्भक्त एकवर्ण हैं भागवतमें लिखाहै कि जो ब्राह्मण अपने सबकर्म्मों में सावधान है परन्तु भक्तनहीं तो उससे कोई नीच वर्ण जो भगवद्भक्त होय सो वरिष्ठ है और एक यहभी प्रमाण प्रसिद्ध है कि भगवत् ने राजायुधिष्ठिर के यज्ञ होजाने के पीछे बाल्मीकि श्वपचको भगवद्भक्ति के कारण सब वर्णाश्रमवालों से अधिक प्रतिष्ठित किया इस बात में बहुत प्रमाणहैं सो यहरीति जो वर्ण आश्रम धर्म्म में है तिनमें नहीं है जो कोई गृहत्यागके किसी सम्प्रदायमें भगवत्शरणहोकर विरक्तहोगये उनमें अब तक प्रवृत्तिहै व कपिलजीका स्थान गङ्गासागर में लुप्तहोगया रहा उसको रामानन्दजी ने निर्देशकरके प्रकटकिया गुरुपरम्परा रामानुज से लेकर गोविन्ददास तक और दो गद्दी गलता व रामगढ़की अबतक की लिखीजाती हैं १ रामानुज २ देवाचार्य ३ प्रधानानन्द ४ राघवानन्द ५ रामानन्द ६ अनन्तानन्द ७ कृष्णदास ८ कीलहदास ९ अग्रदास १० नारायणदास ११ गोविन्ददास ॥

कथा कृष्णदास पयाहारी की ॥

कृष्णदासजी अनन्तानन्द के चेला व ब्राह्मण कुलमें जन्मले ऐसे परम भगवद्भक्तहुये कि लाखोंको संसार से उद्धारकिया कील्ह व अग्रदास केवलराम व हठीनारायण व पद्मनाभ व गदाधर व देवा व कल्याण इत्यादि सैकरों चेले ऐसे सिद्ध व प्रेमभक्तहुये कि लाखोंका उद्धारकिया पहिले गलताजी में योगीरहतेरहे कृष्णदासजी ने अपनी सिद्धतासे निकालकर पृथ्वीराज राजाको चेताया व एकदरिद्री लड़के को राजा बना दिया ऐसे ऐसे अनेक प्रभाव व प्रताप जिनके हैं ॥

कथा गोविन्ददास की ॥

गोविन्ददास नारायणदास जो नाभाजी का नामहै तिनके चेला रहे

व बड़े भक्तहुये नाभाजीने प्रथम भक्तमाल उन्हीं को पढ़ाई पीछे इन्हीं ने भक्तमाल को जगत् में प्रकाश किया ॥

कथा विष्णुस्वामी की ॥

विष्णुस्वामी महाराज परमभागवत और प्रवृत्ति करनेवाले भगवद्भक्तिकेहुये दक्षिणदेश ब्राह्मणवंश में हुये चारोंसंप्रदायमें जो रुद्रसंप्रदाय विख्यात है उसकेआचार्य्य स्वामीजी हैं यद्यपि यह संप्रदाय प्राचीनहै परन्तु विशेषकरके प्रकाश विष्णुस्वामी से है और शिवजी के नामसे विख्यात होनेका कारण यहहै कि मुख्य आदि आचार्य्य इससंप्रदाय के शिवजी महाराज हैं इसहेतु कि प्रथम इस उपासनाका उपदेश शिवजी ने प्रेमानंदमुनि को किया इससंप्रदायमें ईश्वरको शुद्ध अद्वैत मानतेहैं और वह ईश्वर नन्दनन्दन वृन्दावनचंद्र गोलोक निवासी सर्वदा सातवर्ष की अवस्था अपने सखाओं के साथ खेलविहार करताहै ब्रज भूमि और गोलोक में कुछ न्यून विशेष नहीं तिलक व संन्यासका हाल वेषनिष्ठामें वर्णनहोगा व जो रीति मुख्य इससंप्रदायवालों की है उसके वैष्णव व तदनुवर्त्ती गुजरातदेश मे विशेष हैं परन्तु वल्लभाचार्य्य की प्रवृत्तिकीहुई रीति के अनुसार अति अधिक प्रवृत्ति इस सम्प्रदायकीहै यद्यपि रीति प्राचीन व विष्णुस्वामी व वल्लभाचार्य्य में कुछ भेद नहीं कि सब बालस्वरूप के उपासकहुये परन्तु वल्लभाचार्य्यजी ने कोई कोई भाव व रीति अपने अन्तःकरण के प्रेमकी तरंग के अनुसार ऐसी निकाली कि बरबस चित्तको खोजती है सो हाल उनका कुछ सूक्ष्मकरके वल्लभाचार्य्य की कथा में व वात्सल्यनिष्ठा में लिखाजायगा और बाबा लाल कि जिसका बड़ा विश्राम आलमगीर के भाई दाराशिकोह बादशाहको रहा सो वह भी इसीनिष्ठा और संप्रदायमें रहे कोई कोई माध्वी संप्रदायमें कहते हैं परन्तु निश्चयकरिकै इसीसंप्रदायके अनुगामीहुये उन्होंने एक दो रीति में कुछ घट बढकरके अपनी रीतिपर प्रवृत्ति इस संप्रदायको किया व विष्णुस्वामी महाराजकी संप्रदायमें करोड़ोंभक्त इस उपासना के प्रतापसे भगवत्पद को पहुँचे व मुख्य गुरुद्वारा विख्यात गोकुलमें है और गुजरातदेशमें है पर गोकुलकासानहीं ॥ गुरुपरंपरा १ शिवजी २ परमानंदमुनि ३ आनंदमुनि ४ प्रकाशमुनि ५ श्रीकृष्णमुनि ६ नारायणमुनि ७ जयमुनि ८ श्रीमुनि ९ शंकरभट्ट १० पद्मभट्ट ११

गोपालभट्ट १२ श्रीधरभट्ट १३ श्यामभट्ट १४ रामभट्ट १५ सेतभट्ट १६ कृष्णभट्ट १७ दिवाकरभट्ट १८ कृपालभट्ट १९ विद्याधरभट्ट २० दिनकरभट्ट २१ मधुनिधानभट्ट २२ ज्ञानदेवभट्ट २३ सुखदेवभट्ट २४ शिवदेवभट्ट २५ शांतभट्ट २६ दयालदेव २७ क्षमादेव २८ संतोषदेव २९ धीरजलदेव ३० ध्यानदेव ३१ विज्ञानदेव ३२ महाचार्य्य ३३ तत्त्वाचार्य्य ३४ नृसिंहाचार्य्य ३५ सुभ्राचार्य्य ३६ सुबुद्धाचार्य्य ३७ प्रबुद्धाचार्य्य ३८ प्रबोधाचार्य्य ३९ असूयाचार्य्य ४० रुद्राचार्य्य ४१ भगवंताचार्य्य ४२ रामेश्वराचार्य्य ४३ ब्रह्मविधिचर्याचार्य्य ४४ सुदयाचार्य्य ४५ लक्ष्मीनारायण आचार्य्य ४६ ज्ञानदेव ४७ नामदेव ४८ तिलोचनदेव ४९ श्रीविष्णुस्वामी ५० लक्ष्मणभट्ट ५१ ॥

कथा वल्लभाचार्यजी की ॥

वल्लभाचार्य्य परम भागवत व प्रेमी व संप्रदाय के आचार्य्य संसार समुद्र से पार उतारनेवाले हुये अपने स्थान जन्मभूमि को छोड़कर प्रथम गोकुल में और फिर वृन्दावन में आये भगवत् आराधन करनेलगे भगवत् से यह मनोरथ किया कि वात्सल्यनिष्ठा की रीति संसार में फैले इसहेतु गोकुल में निवासकरके भगवत्सेवा पूजाकी ऐसी रीति व पद्धति वात्सल्यनिष्ठाकी बांधी कि वर्णन उस भावका नहीं होसक्ता व स्वप्न में भगवत् ने आज्ञा विवाह करलेनेकी दी हेतु यहहै कि जो कोई भक्त जिस दृढ़ भाव से भगवत् आराधन करता है तो भगवत् उसके हृदय में सिद्धपद को पहुँचजाने पर प्रेम भक्ति के साक्षात् उसी भाव से दर्शन देते हैं सो भगवत् ने एक ब्राह्मण को प्रेरणाकरके लड़की उसकी भेट करायदी विवाहहुआ कुछ दिन पीछे विट्ठलनाथ महाराज ने जन्म लिया कि वात्सल्यनिष्ठा के भक्तों में उनकी कथा लिखीजायगी उनके सात पुत्रहुये व सब पुत्रों के नामसे सातगद्दी अबतक गोकुलमें विराजमान हैं कोई गद्दी में सातवार कोई गद्दी में नववार सेवाकी रीति है श्रीराधिका महारानी को स्वकीयाभावसे भगवत्प्रिया जानकर आराधन करते हैं परन्तु पूर्णब्रह्म सच्चिदानन्दघन श्रीकृष्ण महाराजको मानते हैं इस संप्रदाय के अलौकिक भावकी कथा कुछ कही नहीं जाती जो बाबानन्द और यशोदा महारानी लाड़लड़ाते होंगे उसीप्रकार गोसाई गोकुलकाभाव है आंगनसे घरको बहुत ऊंचा नहीं रखते इस विचारसे

कि ऐसा न हो कि लड़का घुटुवन चलते गिरपड़े शयनके समय ऊंचे शब्दसे नहीं बोलते इसहेतु कि प्रेमसुकुमार लड़का कच्चीनींदमें न जाग पड़े ऐसे ऐसे सहस्रों अलौकिकभाव हैं और यहांतक पक्क और दृढ़ भाव अपनी निष्ठामें है कि जिससमय भगवत् शयन करते हैं अथवा वे समय कोई मनुष्य सम्पूर्ण संसारका धन चढ़ानेवाला आजावै तो क्या बात कि मन्दिर खोलें वरु जयपुरके राजा इसबातकी परीक्षाभी लेचुके हैं और अबतक वहीभाव व रीति वर्त्तमान है किसी गद्दीमें पचासहज़ार किसी में तीसहज़ार चालीसहजार रुपैया सालकी आमदनीहै सब भगवत् आराधन और सजावट शोभा व सामग्री बालस्वरूप व रागभोग इत्यादिक में उठाय देते हैं इसपर ऋणीरहते हैं यह गोसाईं गोकुलस्थ पदवी से विख्यात हैं जैसा उत्तम भाव इन गोकुलस्थ गोसाइयों का देखा और सुना सो लिखने में नहीं आसक्ता और उनके चेलोंको जैसी भावभक्ति गोसाइयों में है वहभी वर्णन नहीं होसक्ती मारवाड़ और गुजरात में सेवक इससंप्रदायके बहुत हैं बल्लभाचार्य्यके कुलमें बहुतलोग भक्तपहुँचेहुये और सिद्धहुये और जो उनकी कृपाके अवलम्बन से भगवत् परायण हुये उनकी गिन्ती कौन कर सक्ताहै और बल्लभाचार्य्य स्वामी के भावको ध्यान करके देखना चाहिये अपना नामभी अपने भावके अनुकूल विख्यातकिया यह कि बल्लभ गोपजाति को कहते हैं जिसजाति में बाबा नन्दरायजी रहे सो अपने कुलको बल्लभकुल अर्थात् गोपकुल विख्यात किया एकसमय एकसाधु ब्रजमें आया बटुआ शालग्रामका छोड़कर वृक्षकी डालपर झुलाकर बल्लभाचार्य्यजी के दर्शनों को गया जब आया तब बटुआ न मिला तब आचार्य्यजीकेआगे वृत्तान्तकहा तब उन्होंने आज्ञाकी कि तुमकैसे सेवक हो स्वामीको छोड़कर इधर उधर फिरतेहो साधुने विनयकरके फिर आकर जो देखा तो सैकड़ों बटुआ एक भांतिके उस वृक्षपर देखे फिर आचार्य्यजी से जाकर वृत्तान्त निवेदन किया आपने आज्ञाकरी कि तुम कैसे सेवक जो अपने स्वामीको नहीं पहिंचान सक्तेहो साधुचुपरहा अन्तःकरणका अभिप्राय बल्लभाचार्य्यजीका समझकर चरणों में पड़ा और अपना बटुआ शालग्रामजी का लेकर भगवत्आराधन में लगा अभिप्राय यह कि उपासक को चाहिये कि जैसे मूर्खको अपने शरीर में

गोपालभट्ट १२ श्रीधरभट्ट १३ श्यामभट्ट १४ रामभट्ट १५ सेतभट्ट १६ कृष्णभट्ट १७ दिवाकरभट्ट १८ कृपालभट्ट १९ विद्याधरभट्ट २० दिनकरभट्ट २१ मधुनिधानभट्ट २२ ज्ञानदेवभट्ट २३ सुखदेवभट्ट २४ शिवदेवभट्ट २५ शांतभट्ट २६ दयालदेव २७ क्षमादेव २८ संतोषदेव २९ धीरजलदेव ३० ध्यानदेव ३१ विज्ञानदेव ३२ महाचार्य्य ३३ तत्त्वाचार्य्य ३४ नृसिंहाचार्य्य ३५ सुभ्राचार्य्य ३६ सुबुद्धाचार्य्य ३७ प्रबुद्धाचार्य्य ३८ प्रबोधाचार्य्य ३९ असूयाचार्य्य ४० रुद्राचार्य्य ४१ भगवंताचार्य्य ४२ रामेश्वराचार्य्य ४३ ब्रह्मविधिचर्याचार्य्य ४४ सुदयाचार्य्य ४५ लक्ष्मीनारायण आचार्य्य ४६ ज्ञानदेव ४७ नामदेव ४८ तिलोचनदेव ४९ श्रीविष्णुस्वामी ५० लक्ष्मणभट्ट ५१ ॥

कथा वल्लभाचार्यजी की ॥

वल्लभाचार्य्य परम भागवत व प्रेमी व संप्रदाय के आचार्य्य संसार समुद्र से पार उतारनेवाले हुये अपने स्थान जन्मभूमि को छोड़कर प्रथम गोकुल में और फिर वृन्दावन में आये भगवत् आराधन करनेलगे भगवत् से यह मनोरथ किया कि वात्सल्यनिष्ठा की रीति संसार में फैले इसहेतु गोकुल में निवासकरके भगवत्सेवा पूजाकी ऐसी रीति व पद्धति वात्सल्यनिष्ठाकी बांधी कि वर्णन उस भावका नहीं होसक्ता व स्वप्न में भगवत् ने आज्ञा विवाह करलेने की दी हेतु यहहै कि जो कोई भक्त जिस दृढ़भाव से भगवत् आराधन करता है तो भगवत् उसके हृदय में सिद्धपद को पहुँचजाने पर प्रेम भक्ति के साक्षात् उसी भाव से दर्शन देते हैं सो भगवत् ने एक ब्राह्मण को प्रेरणाकरके लड़की उसकी भेट करायदी विवाहहुआ कुछ दिन पीछे विठ्ठलनाथ महाराज ने जन्म लिया कि वात्सल्यनिष्ठा के भक्तों में उनकी कथा लिखीजायगी उनके सात पुत्रहुये व सब पुत्रों के नामसे सातगद्दी अबतक गोकुलमें विराजमान हैं कोई गद्दी में सातबार कोई गद्दी में नवबार सेवाकी रीति है श्रीराधिका महारानी को स्वकीयाभावसे भगवत्प्रिया जानकर आराधन करते हैं परन्तु पूर्णब्रह्म सच्चिदानन्दघन श्रीकृष्ण महाराज को मानते हैं इस संप्रदाय के अलौकिक भावकी कथा कुछ कही नहीं जाती जो बाबानन्द और यशोदा महारानी लाड़लड़ाते होंगे उसीप्रकार गोसाईं गोकुलकाभाव है आंगनसे घरको बहुत ऊंचा नहीं रखते इस विचारसे

कि ऐसा न हो कि लड़का घुटुवन चलते गिरपड़े शयनके समय ऊंचे शब्दसे नहीं बोलते इसहेतु कि प्रेमसुकुमार लड़का कच्चीनींदमें न जाग पड़े ऐसे ऐसे सहस्रों अलौकिकभाव हैं और यहांतक पक्क और दृढ़ भाव अपनी निष्ठामें है कि जिससमय भगवत् शयन करते हैं अथवा वे समय कोई मनुष्य सम्पूर्ण संसारका धन चढ़ानेवाला आजावै तो क्या बात कि मन्दिर खोलैं वरु जयपुरके राजा इसबातकी परीक्षाभी लेचुके हैं और अबतक वहीभाव व रीति वर्त्तमान है किसी गद्दीमें पचासहज़ार किसी में तीसहज़ार चालीसहज़ार रुपैया सालकी आमदनीहै सब भगवत् आराधन और सजावट शोभा व सामग्री बालस्वरूप व रागभोग इत्यादिक में उठाय देते हैं इसपर ऋणीरहते हैं यह गोसाईं गोकुलस्थ पदवी से विख्यात हैं जैसा उत्तम भाव इन गोकुलस्थ गोसाइयों का देखा और सुना सो लिखने में नहीं आसक्ता और उनके चेलोंको जैसी भावभक्ति गोसाइयों में है वहभी वर्णन नहीं होसक्ती मारवाड़ और गुजरात में सेवक इससंप्रदायके बहुत हैं वल्लभाचार्य्यके कुलमें बहुतलोग भक्तपहुँचेहुये और सिद्धहुये और जो उनकी कृपाके अवलम्बन से भगवत् परायण हुये उनकी गिन्ती कौन कर सक्ताहै और वल्लभाचार्य्य स्वामी के भावको ध्यान करके देखना चाहिये अपना नामभी अपने भावके अनुकूल विख्यातकिया यह कि वल्लभ गोपजाति को कहते हैं जिसजाति में बाबा नन्दरायजी रहे सो अपने कुलको वल्लभकुल अर्थात् गोपकुल विख्यात किया एकसमय एकसाधु ब्रजमें आया बटुआ शालग्रामका छोड़कर वृक्षकी डालपर झुलाकर वल्लभाचार्य्यजी के दर्शनों को गया जब आया तब बटुआ न मिला तब आचार्य्यजीकेआगे वृत्तान्तकहा तब उन्होंने आज्ञाकी कि तुमकैसे सेवक हो स्वामीको छोड़कर इधर उधर फिरतेहो साधुने विनयकरके फिर आकर जो देखा तो सैकड़ों बटुआ एक भांतिके उस वृक्षपर देखे फिर आचार्य्यजी से जाकर वृत्तान्त निवेदन किया आपने आज्ञाकरी कि तुम कैसे सेवक जो अपने स्वामीको नहीं पहिँचान सक्तेहो साधुचुपरहा अन्तःकरणका अभिप्राय वल्लभाचार्य्यजीका समझकर चरणों में पड़ा और अपना बटुआ शालग्रामजी का लेकर भगवत्आराधन में लगा अभिप्राय यह कि उपासक को चाहिये कि जैसे मूर्खको अपने शरीर में

गोपालभट्ट १२ श्रीधरभट्ट १३ श्यामभट्ट १४ रामभट्ट १५ सेतभट्ट १६ कृष्णभट्ट १७ दिवाकरभट्ट १८ कृपालभट्ट १९ विद्याधरभट्ट २० दिनकरभट्ट २१ मधुनिधानभट्ट २२ ज्ञानदेवभट्ट २३ सुखदेवभट्ट २४ शिवदेवभट्ट २५ शांतभट्ट २६ दयालदेव २७ क्षमादेव २८ संतोषदेव २९ धीरजलदेव ३० ध्यानदेव ३१ विज्ञानदेव ३२ महाचार्य्य ३३ तत्त्वाचार्य्य ३४ नृसिंहाचार्य्य ३५ सुश्राचार्य्य ३६ सुबुद्धाचार्य्य ३७ प्रबुद्धाचार्य्य ३८ प्रबोधाचार्य्य ३९ असूयाचार्य्य ४० रुद्राचार्य्य ४१ भगवंताचार्य्य ४२ रामेश्वराचार्य्य ४३ ब्रह्मविधिचर्य्याचार्य्य ४४ सुदयाचार्य्य ४५ लक्ष्मीनारायण आचार्य्य ४६ ज्ञानदेव ४७ नामदेव ४८ तिलोचनदेव ४९ श्रीविष्णुस्वामी ५० लक्ष्मणभट्ट ५१ ॥

कथा वल्लभाचार्यजी की ॥

वल्लभाचार्य्य परम भागवत व प्रेमी व संप्रदाय के आचार्य्य संसारसमुद्र से पार उतारनेवाले हुये अपने स्थान जन्मभूमि को छोड़कर प्रथम गोकुल में और फिर वृन्दावन में आये भगवत् आराधन करनेलगे भगवत् से यह मनोरथ किया कि वात्सल्यनिष्ठा की रीति संसार में फैले इसहेतु गोकुल में निवासकरके भगवत्सेवा पूजाकी ऐसी रीति व पद्धति वात्सल्यनिष्ठाकी बांधी कि वर्णन उस भावका नहीं होसक्ता व स्वप्न में भगवत् ने आज्ञा विवाह करलेने की दी हेतु यहहै कि जो कोई भक्तजिस दृढ़ भाव से भगवत् आराधन करता है तो भगवत् उसके हृदय में सिद्धपद को पहुँचजाने पर प्रेम भक्ति के साक्षात् उसी भाव से दर्शन देते हैं सो भगवत् ने एक ब्राह्मण को प्रेरणाकरके लड़की उसकी भेट करायदी विवाहहुआ कुछ दिन पीछे विट्ठलनाथ महाराज ने जन्म लिया कि वात्सल्यनिष्ठा के भक्तों में उनकी कथा लिखीजायगी उनके सात पुत्रहुये व सब पुत्रों के नामसे सातगद्दी अबतक गोकुलमें विराजमान हैं कोई गद्दी में सातबार कोई गद्दी में नवबार सेवाकी रीति है श्रीराधिका महारानी को स्वकीयाभावसे भगवत्प्रिया जानकर आराधन करते हैं परन्तु पूर्णब्रह्म सच्चिदानन्दघन श्रीकृष्ण महाराज को मानते हैं इस संप्रदाय के अलौकिक भावकी कथा कुछ कही नहीं जाती जो बाबानन्द और यशोदा महारानी लाड़लड़ाते होंगे उसीप्रकार गोसांई गोकुलकाभाव है आंगनसे घरको बहुत ऊंचा नहीं रखते इस विचारसे

उन्नीसवीं निष्ठामें होगा ध्यान और चिन्तवन करते हैं यद्यपि माधुर्य्य निष्ठा में युगल स्वरूपका ध्यान और चिंतवन योग्य हैं और युगल स्वरूपही का आराधन वा सेवा इस संप्रदाय में प्रवर्तमान है और राधिका महारानी में परकीया भाव रखते हैं परन्तु ईश्वरता औ अद्वैतता और पूर्णब्रह्मता श्रीकृष्ण स्वामी में चिन्तवन करते हैं कि उनके भाष्य और दूसरे ग्रन्थोंसे वह बात प्रकाशितहै इस संप्रदायमें लाखों भक्त और सिद्धनामी होगये और होते हैं और आवागमन के दुःखको दूर करने के निमित्त भगवत् ने एक उपाय ऐसा विचारिके कियाहै कि विना परिश्रम इस संप्रदायके अवलम्बसे कड़ोरों महाअधम भगवत् को प्राप्त होते हैं यद्यपि दक्षिणदेश में प्रकाश इस उपासनाका वहुतहै गुरुद्वारे वड़े वड़े वहां हैं परन्तु इससमय ब्रजमें और वंगाले में भी यह संप्रदाय विशेष प्रकाशित है और वृन्दावनमें कई गुरुद्वारे विख्यात व प्रसिद्ध हैं जैसे मन्दिर गोविन्ददेव और मदनमोहन वा शृंगारवट इत्यादि हैं कि जिनका प्रभाव प्रसिद्ध है जिनको भगवत् के दर्शन और दीक्षा लेनेका विचारहोताहै वह वहां दीक्षा लेताहै परीक्षा माधवाचार्य्य स्वामीकी लिखने का कुछ प्रयोजन नहीं इतनीही वहुतहै कि जिनका नाम लेकर और उनकी पद्धति सिद्धान्त के अभ्यास से कड़ोरों महापापी भगवद्भक्त होकर अपने वांछितपदको पहुँचे अव उनके घरकी गुरुपरम्परा गुरु चेलेके रीतिकी एक दो गुरुद्वारेकी लिखी जाती है इससंप्रदायमें सहस्रों गुरुद्वारे हैं सबकी परम्परा मिलना और लिखना कठिन है एक लिपि से श्रीकृष्ण चैतन्य महाप्रभु के चेले स्वरूप दामोदर और उनके चेले गदाधरभट्ट और उनके चेले कृष्ण ब्रह्मचारी जानेजाते हैं यह थोड़ा विरुद्ध है सो कुछ बात नहीं परम्परा में भक्तमाल के अनुसार जो निश्चय समझने में आया सो लिखा। श्रीनारायण॥ ब्रह्मा। नारद। वेदव्यास॥ सुबुद्धाचार्य्य। नरहराचार्य्य॥ माधवाचार्य्य। जाह्नवीतीर्थ। विद्यामुनि। महानन्दतीर्थ। राजेन्द्रमुनि। जयधर्ममुनि। ईश्वरपुरी। वेणीमाधवपुरी॥

कथा नित्यानंदजी की॥

नित्यानन्दजी महाराज ऐसे परमभक्त और भगवत् धर्म्मके प्रचारक हुये जिनकी महिमा और प्रताप संपूर्णसंसारमें विख्यातहै जिन्होंने गौड़

प्रीति और अहंकारहोताहै वैसीही भगवत्में निष्ठा व प्रीतिराखै यह नहीं कि स्वामी डारमें आप बाजार में अब वल्लभाचार्य्यजी की गुरुपरम्परा लिखीजाती है परन्तु सातगद्दी में कई गद्दी न होने पुत्रके पुत्रीके वंशके पासहैं दो तीन गद्दी निज विट्ठलनाथजी के वंशके पासहैं समझकर उन में से एकगद्दी की परम्परा लिखना बहुतहै सो लिखीजाती है। विष्णुस्वामी। लक्ष्मणभट्ट। वल्लभाचार्य्य। विट्ठलनाथ। गोकुलनाथ। रघुनाथ। यदुनाथ। घनश्याम। बालकृष्ण। गोविन्दस्वरूप। गिरिधरराय। वृन्दावनदास। कृष्णदास दामोदरदास। स्वामीशुकदेव। स्वामीहरिचरण। स्वामीतुलसीदास। हरिशरणजीव। मोहनदास। सीताराम। मनसाराम आदि विद्यमानहैं॥

कथा माधवाचार्य्य की॥

माधवाचार्य्य स्वामी ब्रह्मसंप्रदाय में परम भागवत व भक्त आचार्य्य व प्रवृत्ति करनेवाले इस संप्रदायकेहुये यद्यपि संप्रदाय प्राचीन है परन्तु माधवाचार्य्य स्वामीने सम्पूर्ण संसारमें प्रकाशितकी माधवी संप्रदायकरिके विख्यात इसीहेतुहुई ब्रह्मसंप्रदाय इसहेतुसे कहते हैं कि प्रथम भगवत् ने इससंप्रदायकी रीति ब्रह्माजी से वर्णनकी ब्रह्माजीने गुरु चेलेकी परम्परा करिकै जो भक्तलोग परम्परामें लिखेगये हैं तिनको उपदेश करिके प्रवृत्तकिया और कोई कोई गौडिये और कोई महाप्रभु संप्रदाय वर्णन करतेरहैं तिसकाहेतु यहहै कि श्रीकृष्ण चैतन्य महाप्रभु गौड़देशके रहनेवाले इस संप्रदायमें आचार्य्य और भक्तनामी भगवत् अवतारहुये सम्पूर्ण गौड बंगाले देशको शिक्षाकरिके भगवत्सम्मुख किया इसहेतु महाप्रभु गौड़िये नामसे भी विख्यातहुये उड़पी माधवाकरिकै भगवत् माधवाचार्य्यजी ब्राह्मण वेष द्राविड़देशमें उडपी कृष्णागांवमें कांचीपुरी से पश्चिम दक्षिण कोने पर हैं तहांहुये शारीरकसूत्र और गीताजी पर भाष्य रचना किया निश्चय इस उपासनावालों का यहहै कि ईश्वर तटस्थहै उसकी प्रेरणासे माया जगत्को रचती है और यद्यपि इसनिष्ठामें ध्यान और आराधन विष्णुनारायणका प्राचीन रीतिसे है परंतु अब वह माधवाचार्य्य महाराजके समयसे उपासना श्रीकृष्ण अवतारकी इससंप्रदायमें वर्त्तमान हैं और ईश्वर पूर्ण सच्चिदानन्दघन श्रीकृष्ण कामी गोलोकनिवासीको मानते हैं और माधुर्य्य निष्ठा से कि उसका वर्णन

उन्नीसवीं निष्ठामें होगा ध्यान और चिन्तवन करते हैं यद्यपि माधुर्य्य निष्ठा में युगल स्वरूपका ध्यान और चिंतवन योग्य है और युगल स्वरूपही का आराधन वा सेवा इस संप्रदाय में प्रवर्तमान है और राधिका महारानी में परकीया भाव रखते हैं परन्तु ईश्वरता औ अद्वैतता और पूर्णब्रह्मता श्रीकृष्ण स्वामी में चिन्तवन करते हैं कि उनके भाष्य और दूसरे ग्रन्थोंसे वह बात प्रकाशितहै इस संप्रदायमें लाखों भक्त और सिद्धनामी होगये और होते हैं और आवागमन के दुःखको दूर करने के निमित्त भगवत् ने एक उपाय ऐसा विचारिके कियाहै कि विना परिश्रम इस संप्रदायके अवलम्बसे कड़ोरों महाअधम भगवत् को प्राप्त होते हैं यद्यपि दक्षिणदेश में प्रकाश इस उपासनाका बहुतहै गुरुद्वारे बड़े बड़े वहां हैं परन्तु इससमय ब्रजमें और बंगाले में भी यह संप्रदाय विशेष प्रकाशित है और वृन्दावनमें कई गुरुद्वारे विख्यात व प्रसिद्ध हैं जैसे मन्दिर गोविन्ददेव और मदनमोहन वा शृंगारवट इत्यादि हैं कि जिनका प्रभाव प्रसिद्ध है जिनको भगवत् के दर्शन और दीक्षा लेनेका विचारहोताहै वह वहां दीक्षा लेताहै परीक्षा माधवाचार्य्य स्वामीकी लिखने का कुछ प्रयोजन नहीं इतनीही बहुतहै कि जिनका नाम लेकर और उनकी पद्धति सिद्धान्त के अभ्यास से कड़ोरों महापापी भगवद्भक्त होकर अपने वांछितपदको पहुँचे अब उनके घरकी गुरुपरम्परा गुरु चेलेके रीतिकी एक दो गुरुद्वारेकी लिखी जाती है इससंप्रदायमें सहस्रों गुरुद्वारे हैं सबकी परम्परा मिलना और लिखना कठिन है एक लिपि से श्रीकृष्ण चैतन्य महाप्रभु के चेले स्वरूप दामोदर और उनके चेले गदाधरभट्ट और उनके चेले कृष्ण ब्रह्मचारी जानेजाते हैं यह थोड़ा विरुद्ध है सो कुछ बात नहीं परम्परा में भक्तमाल के अनुसार जो निश्चय समझने में आया सो लिखा । श्रीनारायण । ब्रह्मा । नारद । वेदव्यास । सुबुद्धाचार्य्य । नरहराचार्य्य । माधवाचार्य्य । जाह्नवीतीर्थ । विद्यामुनि । महानन्दतीर्थ । राजेन्द्रमुनि । जयधर्ममुनि । ईश्वरपुरी । वेणीमाधवपुरी ॥

कथा नित्यानंदजी की ॥

नित्यानन्दजी महाराज ऐसे परमभक्त और भगवत् धर्म्म प्रचारक हुये जिनकी महिमा और प्रताप संपूर्ण संसारमें विख्यातहै जिन्होंने गौड़

देश बंगाले में पाखण्ड और अधर्म्मको दूरकरके भगवद्भक्ति और उपासना का प्रचार चलाया जन्म महाराज का नदियाशांतीपुर बंगाले देशमें हुआ श्रीकृष्ण चैतन्य महाप्रभुके भाई रहे गौड़देश के लोगोंको भागवतधर्मसे विमुख देखकर दयाआई क्लिष्ट तपकरके भगवत्को प्रसन्न किया वरदान हुआ तब भगवद्भक्तिको संपूर्ण उपदेश में नित्यानंदजी ने गुरु और महंत रूप होकर फैलाया अबतक उसदेश में इस प्रकार भक्तिका प्रचार है कि बहुत भगवत् परायण होते हैं व घर छोड़कर श्रीवृन्दावन वास करते हैं जो भाव और प्रेम उसदेश के रहनेवालों का श्रीवृन्दावनमें देखा लिखा नहीं जासक्ता अबभी वृन्दावनमें आधे वेही लोगहैं भगवद्भजन और कीर्तनमें रहते हैं॥

कथा श्रीकृष्ण चैतन्य महाप्रभुकी॥

श्रीकृष्ण चैतन्य महाप्रभु नित्यानंदजीके छोटे भाई श्रीकृष्ण महाराजके अंशावतारहुये गीताजीमें भगवत्कावचनहै कि जब धर्मका नाश और अधर्मकी प्रवृत्ति होती है तब धर्मके स्थापन और अधर्म के नाश के हेतु मेरा अवतार होताहै सो गौड़देश बंगाले में भागवत धर्म्म व भगवद्भक्ति नहीं रही विपरीत धर्म्म प्रवृत्त हुआ रहा इसहेतु भगवत् ने वेदमार्ग स्थित करने के लिये जैसे ब्रज में अवतार लियाथा इसीप्रकार बंगाले में शचीजी के उदर द्वारा प्रकाश किया सातवर्ष के वयक्रम में केशवभट्ट काश्मीरी ब्राह्मणको वादमें क्षणमात्र में जीतकर कृपाकरके भगवद्भक्त करदिया कि स्पष्ट वृत्तान्त केशवकी माधुर्य्य निष्ठामें लिखा जायगा एकसमय महाप्रभु जगन्नाथरायस्वामी के आगे कीर्त्तन में ऐसे बेसुध प्रेम में होके तन्मयहोके चतुर्भुजी रूप होगये तब सब लोग कहने लगे कि इसपुरीका प्रभाव है सिद्धताई क्या है तब महाप्रभु ने अनुजाई व सेवक आदि के विश्वास व भक्तिके दृढ़ताके हेतु छः भुजा धारणकी अबतक सबको दृढ़ विश्वास हुआ सो पुरी में महाप्रभु के छः भुजा स्वरूपके अद्यापि दर्शन होते हैं॥

कथा रूप सनातनजी की॥

रूप और सनातनजी दोनोंसगेभाई प्रेमभक्त वा भागवतधर्म प्रचारक हुये ये दोनोंभाई गौड़देश बंगालेके रहनेवाले और बादशाही अधिकार वाले रहे धनवान् बड़ेरहे एकरात रुपैया गिनते गिनते प्रभात होगया

तब दोनोंभाइयोंको ग्लानि आई व आपसमें विचार किया कि देखो जो भगवद्भजन व समाज में बैठते तो घड़ी घड़ी बूझते रहते कितनी रात गई इसव्यर्थ कार्य्य भूठे में कुछ ज्ञान न रहा कि कितनी रातगई यह विचारकर अपने गुरु नित्यानन्द महाप्रभु के पास आयके शिक्षा मांगी गुरुने आज्ञादी कि ब्रजभूमि में जाव वहांके वन और स्थान सब श्री-कृष्णस्वामी के विहारके जो कालपायके गुप्तहोरहेहैं तिनको प्रकटकरो और ग्रंथचरित्र व लीलामाधुर्य्य व रसविलासको फैलाओ उसीआज्ञा के अनुसार दोनोंभाई आयके ब्रजभूमिमें पहुँचे पहुँचतेही आपसेआप रम्यता उस भूमिकी कियो पवन सुखदायी व हरियाली आकर्षणकरने वालोंमें रूपमाधुरी में श्रीप्रिया प्रियतमके उन्मत्तव बेसुधिहोगये और ऐसी गन्धप्रेम प्रियाप्रियतममहाराजकी प्राणकेमस्तकमेंपहुँची कि दुःख सुख सब भूलके प्रेम आनन्दमें मग्नहोगये जब सुधिहुई तबब्रजगांव के लोगोंसे पूछा कि ब्रजकहां है एकने उत्तर दिया कि तेरा बाप अन्धा होगया है यह ब्रजनहीं और क्याहै गोसाईं महाराज इस गलीसे बड़े आनन्दित हुये प्रेमआनन्दमें छकेहुये पहिलेश्रीमथुराजी फिर वृन्दावन में पहुँचे देखा कि श्रीयमुनाजी प्रवाहवान्हैं वन सघन हरित ऐसा छाय रहाहै कि सूर्य्य का उदय अस्त नहीं दिखाई देता बहुत ढूंढ़नेसे दुइचार घरोंकीबस्तीमिली और रहनेवाले वहांकेवृन्दादेवीकी पूजाकरनेकोगये हैं तब वहांसे वृन्दादेवी को ढूंढ़ते चले देखा कि वे लोग एकजगह भूमि पर दूध दही चढ़ाकर चलेगये उसी जगह टिके रातको वृन्दादेवीने द-र्शनदियाकहा कि हमारास्वरूपइसीजगहहै निकालकर स्थापितकरो गो-साईंजीनेस्थापितकिया अबतक विराजमानहै गऊबच्चादेतीहै तबपहिले उनको दूधचढ़ाते हैं और गोविन्ददेवजीने गोसाईंरूपजीको स्वप्नदिया तब गोसाईंजीने उनको निकालकर स्थापितकिया और पूजाकरनेके नि-मित्त अपने भतीजे जीवगोसाईंको कि वेभी त्यागलेकर आयगयेरहे आज्ञादी फिरपीछे राजामानसिंह आमेर से राजमन्दिर बनवाया उन्हीं दिनों अकबराबादका क़िला बनताथा पत्थरलाल कहीं नहीं जानेपाता रहा राजाने बादशाहसे आज्ञा लेकर मन्दिर लालसङ्गीन निर्मित किया तेरहलाखरुपैया केवलमसाले मँजूरी में लगा अबतक वह मंदिर वृन्दा-वनमेंप्रकट वोविख्यातहै और मुहम्मदशाहबादशाहके समय राजाजय-

सिंहने वाराहपुराण में सुना कि गोविन्ददेव के दर्शन करने से जीवका आवागमन छूटजाता है बड़ीप्रीति व प्रार्थनासे वह मूर्त्ति जयपुरलेगया वहां विराजमानहै वृन्दावन में दूसरी मूर्त्ति स्थापित हुई व गोसाईं रूप जी ने गुरुकी आज्ञा व शिवजी के स्वप्नदेने से बहुतग्रंथ भक्ति रसामृत के रससिद्धान्त व भगवत् अमृत इत्यादि सब पांचलाख श्लोक में र-चना किये एकश्लोक में प्रियाजी की वेणीकी उपमा लिखी कि नागिनी के सदृशहै गोसाईं सनातनजीका यह विचारहुआ कि रूपजीकीकाव्य अधिक मधुरहै परन्तु प्रिया प्रियतमका भाव अच्छेप्रकार नहीं समझा क्रूरजन्तु की उपमा वेणीकीदी कि वे परमसुकुमारी चित्रके साँपकोभी देखते भयकरती हैं यहां ध्यानपर खटकतारहा एकदिन वनमें घूमतेदेखा कि एक वृक्षकेनीचे एक लड़का परमसुन्दर व कईएक लड़कियां परम सुन्दरी तिसमें एकलड़की ऐसी सुन्दरी कि कभी ऐसी सुन्दरी न देखीरही हिंडोरा झूलते हैं यह लड़की परमसुन्दरी चुनरी ओढ़े है तिसमें वेणी श्याम नागिनीसी ऐसी लहलहाती है कि नागिनी में और उसमें तनक भेद नहीं गोसाईं सनातनजी देखकेघबराये पुकारा मारमारकर कहा कि कोई दौड़कर नागिनीको इस सुन्दरीके शिरपरसे उतारो यह कहिके बे-सुधि होगये जब सावधानभये तब श्लोक रूपगोसाईंजीका स्मरणहुआ और जाना कि लाड़िलीजी ने उस श्लोकके भावके सन्देह दूरकरनेके कारण यहचरित्रकियाहै रूपजीके पास आये परिक्रमा करिके सब बात कही देखिये गोसाईं सनातनजी बड़ेभाई रूपगोसाईंजीके थे परन्तु भक्ति में उनको बड़ाजानकर दण्डवत् और परिक्रमा करि गोसाईंरूपजी मोटे रहे और गोसाईं सनातनजी सुकुमार और नित्य परिक्रमा ब्रजकी किया करतेथे एकदिन परिक्रमा करे पीछे जो रूपगोसाईंके पासआये तो रूप गोसाईं को यहध्यान चित्तपर आया कि सनातनजी अपने घरपर ऐसे पदार्थ भोजन दिव्य व मधुर खातेरहे कि सबको नहीं मिलसक्ता अब सूखी रोटी मधुकरीवृत्तिसे कैसे तृप्त होते होंगे यह ध्यानहीथा कि श्री लाड़िलीजी दूध व चावल व और सब सामग्रीसमेत ब्रजवासी की ल-ड़की का स्वरूप धरके लेआईं व अतिकोमल वचन से बोली कि ह-मारी गाय आज बच्चाजनाहै मेरी माने यह सामग्री तुम्हारे लिये भेजी है दोनों गोसाईंयों ने उस सामग्री का भोजन बनाकर भोगलगाया वह

स्वादु पाया कि कभी अपनी अवस्था भरमें किसी वस्तुमें न प्राप्तहुआ रहा सनातनजी ने रूपजी से इसका कारण पूंछा तब उन्होंने मनकी बात सब कही तब सनातनजी ने कहा कि सब ऐश्वर्य्य वा सम्पत्ति के त्याग देनेपर भी जिह्वा का स्वादु रहिगया कि जिसके हेतु लाड़िलीजी को परिश्रमहुआ अब आगेको चेतरहे एकदिन वृंदावनमें समाजहुआ सब भगवद्भक्त व साधु इकट्ठेहुये ऐसे प्रेम व अनुराग के साथ कीर्त्तन व भजनहुआ कि जितने लोग रहे सो सब प्रिया प्रियतम के प्रेममें छकके वेसुधि होगये परंतु रूपजी गोसाईं अपने चित्तको दृढ़ करके खड़े रहे गोसाईं करनपुरीजी ने देखा कि रूपजी महाराज सब प्रेमियों के अग्रणीय हैं उनको जो प्रेम भगवत्का न आया तो औरों के निमित्त अच्छानहीं रूपजी के पास गये समीप पहुंचे तो उनके श्वास की ऐसी तप्त पवन गोसाईं करनपुरीके शरीर में लगी कि फफोले उपटआये गोसाईंरूपजीने आज्ञाकी कि जिनको कुछ शरीरका सम्बन्ध रहगया है असावधानताई उनको है और जिनलोगोंको शरीर से सम्बन्ध नहीं है उनका मन देखना चाहिये शरीर नहीं यहांतक कथा रूपगोसाईंकी लिखीगई सनातन जी सिवाय कमण्डलु कोपीनके और कुछ नहीं अपने पास रखतेरहे विचरते हुये एक भाटके घर पहुँचे उसके घरमें स्वरूप मदनमोहनजी का विराजमानरहा सनातनजी दर्शन करके आसक्तहोगये और नित्य उसकेघरपर जायाकरते और आँखोंसे आँशुकाजल बहाकरता उस भाटने किपहिले साहूकारी करतारहा अब दरिद्री होगया रहा समझा कि जैसा इस मूर्त्तिने हमको दरिद्री व भिखारी किया क्याजाने इसको भी ऐसाही भिखारी किया हो कि इसमूर्त्तिको देखकर रोया करताहै भाटनेगोसाईंजीसे पूंछा कि महाराज क्या तुमकोभी धनसम्पत्ति घरबारसे इसमूर्त्तिने बेचैन करदिया है गोसाईंजी व विश्वासता भाटकी विचारिके बोले कि भाई तेरे साथ इस मूर्त्तिने कुछ भी नहीं किया जो मेरे साथ कियाहै भाटने कहा कि क्या उपायकरूं गोसाईंजीने कहा कि इस भगवान् को शीघ्र अपने घरसे बाहर निकाल नहीं तो न जाने अब क्याकरै उसने कहा कि जो यह ऐसा क्रूरस्वभाव है तो कौनलेवेगा गोसाईंजी ने कहा कि मेरे साथ जो कुछ इसको करनारहा सो करचुका मैं लेजाऊँगा सो लेआये और वृन्दावनमें विराजमान करके पूजा सेवा प्रारम्भ किया भिक्षामांग के

भगवत् को भोगलगाया करते एकदिन भगवत् ने स्वप्न में आज्ञादी कि थोड़ासा लोन भी लायाकरो जबलोन लानेलगे तब आज्ञादी कि थोड़ासा घी भी लायाकरो तब घी भी भिक्षा मांगके लायाकरैं तब बोले कि वनमें से तरकारी लेआना सहज है वहभी लायाकरो तब सनातनजी ने प्रेमकी दृष्टि से ध्यानकिया कि मदनमोहनजी चटोरे होगये मेरे वैराग्यको धूलमें लाकर मुझकोभी चटोराकिया चाहते हैं तब विनती की कि जो ऐसाही स्वादु जीभका है तो कोई धनाढ्य किंकर ढूंढ़ लीजिये और यह कहकर बाहर आय बैठे संयोगवश किसी साहूकारकी नाव मालभरी हुई अकबराबादको जातीरही जब वृन्दावनमें कालीदहके समीप पहुंची तो रुकिगई साहूकारने विकलहोकर अपने आदमियों को चारोंओर भेजा कि देखो इस वनमें कोई फ़कीर साधुहै कि जिससे इसकी निवेदन करैं आदमियोंने जाकर कहा एक साधु बैठाहै साहूकार आयके चरणों में पड़ा गोसाईंजीने उसको भगवत् के आगे लेजाकरकहा कि जो कुछ करतूतिहै इसबाबाकी है विनतीकरले साहूकार हाथजोड़कर उसकी सेवाकी आज्ञा की आशाकर खड़ाहुआ भगवत् की आज्ञाहुई कि मन्दिर अच्छा सङ्गीनबनवादे व राग भोगके बन्धानकरदे साहूकारने अङ्गीकारकिया नाव रवाने हुई साहूकारने मन्दिर बड़ाभारी बड़ीभक्तिसे निर्मित किया व राग भोगके निमित्त महीना बन्धान करदिया जब सबसामग्री भगवत् सेवाकी जुटिगई तब सनातनजी वहांका अधिकार कृष्णदास ब्रह्मचारी कोदेकर आप ब्रजमण्डलकी परिक्रमा को चलेगये एकबेर मानसरोवर के तटपर नन्दगांव के समीप एकहींसके वृक्षके नीचे तीनदिन बैठेरह गये चौथेदिन भगवत् सुन्दर मनोहर स्वरूप एकब्रजवासीके लड़केका स्वांगधर लालचीरा शिरपर महीन पीताम्बरी पहिने कटि पीतपटसे कसे हुये एक रङ्गीन छड़ी कुक्षिमें दबायेहुये थाली दूधभातकी लेकरआये गोसाईंजीको दी व कहा किसहेतु गांवकेसमीप जायके नहीं बैठता यहां वनमें कौन तेरेनिमित्त खानेकोलायाकरै भगवत्नेहाथपांवदियेहैं बिना सुकृतका माल खाना अच्छा नहीं गोसाईंजी इन बातोंकोसुनकर परम आनन्दमें मग्नहोगये इसीप्रकार तीनदिन भोजन ब्रजचन्द्र महाराज पहुंचातेरहे तब गोसाईंजी अपने प्यारेको श्रमदेना उचित न समझकर पता नाम गांवका पूंछकर दूसरेदिन बहुतढूंढ़ा कहीं पता न लगा तब

बहुत विकलहुये और अनेकभांति शोच करनेलगे तब स्वप्नहुआ कि वहलड़का हमहीं हैं जैसी तुम्हारी इच्छा होय हमकरैं तब गोसाईंजी ने विनयकिया और उसस्वरूप अनूपके ध्यानरूपी आनन्द के समुद्र में मग्न होगये ॥

कथा गोसाईं नारायणभट्टकी ॥

गोसाईं नारायणभट्ट प्रेमीभक्त भागवतधर्म के प्रवृत्त करनेवालेहुये और ये गोसाईंजी चेले कृष्णदास ब्रह्मचारी चेले सनातनजी पुजारी ठाकुरद्वारे मदनमोहन के सेवकहुये गुरुसे कथा श्रीभागवत दशमस्कन्ध बालचरित्र इत्यादिक जो सुन सखनके संग खेल व गोपियों के संग रासविलास सब गोसाईंजी के हृदय में समायगई तब यह अभिलाषहुआ कि वह सब स्थान जहां जहां जो क्रीड़ा कियाहै दर्शन करते सो उनका पता मिल न सका क्योंकि पांचहज़ारवर्ष भगवत्अवतार को व्यतीतहुये गोसाईंजी परमभावसे आराधन भगवत्में लीनहुये भगवत् ने अपने भक्तका मनोरथ पूर्णकरनेको हृदयमें प्रकाशकिया व सब स्थान वाराहसंहिता में जैसे लिखे हैं सब दिखलाय दिये उसी अनुसार नारायण भट्टजी ने वन व उपवन व गृह व कुञ्ज व विहारस्थान प्रकटकिये सो सबका वर्णन कौनसे होसक्ताहै परन्तु मुख्य २ स्थानों को लिखते हैं ॥

वर्णन स्थानों का गोकुल व महावन का ॥

रोहिणी मन्दिर व श्याममन्दिर कि जहां जन्म भगवत् का हुआ क़िला महावन में विख्यात है ॥

ब्रह्मघाट जहां नन्दनन्दनमहाराजने माटी खाई व अपनी माता यशोदाजी को अपने मुख में सब दिखलाये ॥

पूतनाखार जहां पूतनाका प्राण दूध के बहाने खींच लिया ॥

घाट सब जैसे वैराग्यघाट रामघाट व अक्रूरघाट व वैकुण्ठघाट व बङ्गालीघाट व सूर्यघाट इत्यादि वि-

गोपकूप कि सोमवती अमावसके दिन किनारे तक जल होकर फिर ज्योंका त्यों होजाता है ॥

दर्शन नन्दबाबा व यशोदा माता विवरणस्थान सबमथुराजी-विश्रांत जहांकंसको मारकर विश्राम किया॥

सात समुद्र कूप ॥

दर्शन द्वारकाधीश कि जो अब पारख नामें साहूकार ने बनवाया रावणकुटी छाकविहारी कृष्णगङ्गा कण्ठाभरण ॥

ऊपरकिनारे श्रीयमुनाजी काली-

भगवत् को भोगलगाया करते एकदिन भगवत् ने स्वप्न में आज्ञादी कि थोड़ासा लोन भी लायाकरो जबलोन लानेलगे तब आज्ञादी कि थोड़ासा घी भी लायाकरो तब घी भी भिक्षा मांगके लायाकरैं तब बोले कि वनमें से तरकारी लेआना सहज है वहभी लायाकरो तब सनातनजी ने प्रेमकी दृष्टि से ध्यानकिया कि मदनमोहनजी चटोरे होगये मेरे वैराग्यको धूलमें लाकर मुझकोभी चटोराकिया चाहते हैं तब विनती की कि जो ऐसाही स्वादु जीभका है तो कोई धनाढ्य किंकर ढूंढ़ लीजिये और यह कहकर बाहर आय बैठे संयोगवश किसी साहूकारकी नाव मालभरी हुई अकबराबादको जातीरही जब वृन्दावनमें कालीदहके समीप पहुंची तो रुकिगई साहूकारने विकलहोकर अपने आदमियों को चारोंओर भेजा कि देखो इस वनमें कोई फ़क़ीर साधुहै कि जिससे इसकी निवेदन करैं आदमियोंने जाकर कहा एक साधु बैठाहै साहूकार आयके चरणों में पड़ा गोसाईंजीने उसको भगवत् के आगे लेजाकरकहा कि जो कुछ करतूतिहै इसबाबाकी है विनतीकरले साहूकार हाथजोड़कर उसकी सेवाकी आज्ञा की आशाकर खड़ाहुआ भगवत् की आज्ञाहुई कि मन्दिर अच्छा सङ्गीनवनवादे व राग भोगके बन्धानकरदे साहूकारने अङ्गीकारकिया नाव रवाने हुई साहूकारने मन्दिर बड़ाभारी बड़ीभक्तिसे निर्मित किया व राग भोगके निमित्त महीना बन्धान करदिया जब सबसामग्री भगवत् सेवाकी जुटिगई तब सनातनजी वहांका अधिकार कृष्णदास ब्रह्मचारी कोदेकर आप ब्रजमण्डलकी परिक्रमा को चलेगये एकबेर मानसरोवर के तटपर नन्दगांव के समीप एकहींसके वृक्षके नीचे तीनदिन बैठरह गये चौथेदिन भगवंत् सुन्दर मनोहर स्वरूप एकब्रजवासीके लड़केका स्वांगधर लालचीरा शिरपर महीन पीताम्बरी पहिने कटि पीतपटसे कसे हुये एक रङ्गीन छड़ी कुक्षिमें दबायेंहुये थाली दूधभातकी लेकरआये गोसाईंजीको दी व कहा किसहेतु गांवकेसमीप जायके नहीं बैठता यहां वनमें कौन तेरेनिमित्त खानेकोलायाकरै भगवत्नेहाथपांवदियेहैं विना सुकृतका माल खाना अच्छा नहीं गोसाईंजी इन बातोंकोसुनकर परम आनन्दमें मग्नहोगये इसीप्रकार तीनदिन भोजन ब्रजचन्द्र महाराज पहुंचातेरहे तब गोसाईंजी अपने प्यारेको श्रमदेना उचित न समझकर पता नाम गांवका पूँछकर दूसरेदिन बहुतढूंढ़ा कहीं पता न लगा तब

वे गोकुल में और कोईकोई मथुरा में टिकरहते हैं वे लोग जन्माष्टमी करके दशमी के दिन सांझतक मथुराजी में आके न्हातेहैं और एकादशी से यात्रा आरम्भ होती है पन्द्रहदिन में सम्पूर्ण यात्रा परिक्रमा व्रजमण्डल चौरासी कोशकी करके भादोंसुदी दशमी अथवा एकादशी तक मथुराजी में आजाते हैं और द्वादशी के दिन मथुराजी की परिक्रमा होती है दूसरीयात्रा वल्लभाचार्य्यके कुलवालोंकी तात्पर्य गोकुलस्थ गोसाइँयोंकी होती है परन्तु प्रतिवर्षका नियम नहीं ये गोसाईं आश्विनबदी द्वितीया को यात्राके निमित्त उठतेहैं दीपमालिका जो दीवाली सो गोवर्द्धनजी में करिके कार्तिकसुदी द्वितीया को मथुराजी के मेलोंमें आ मिलतेहैं यहयात्रा बड़ेसुख व आनन्दसे होतीहै व बहुतलोग उनके अनुयायी उस यात्रामें मिलके जाते हैं अब विवरण टिकान्त व स्थान दर्शन यात्रा पन्द्रहदिनवाले की लिखीजाती है॥

पहिले दिन॥

प्रातःकाल विश्रान्तघाट स्नान करिके यात्राके निमित्त पांयपियादे नंगे पाँयन उठते हैं और भगवद्भजनका नेम उचित है पहिली मंजिल में दर्शन व यात्रा मधुवन व तालवन व कुमुदवनकी होजातीहै कल्याण नारायण व यशोदानन्दन व कपिलमुनि व गिरिधररायजी के होते हैं व शांतनुकुण्ड के स्नान॥

दूसरे दिन॥

बहुलावनमेंटिकांतहोताहै और वहांदर्शनठाकुरद्वारेमोहनलालजीके हैं॥

तीसरे दिन॥

गोवर्द्धनजी में पहुंचतेहैं॥

चौथे दिन॥

वहां टिकांत होताहै गिरिराजजी की परिक्रमा होतीहै हरदेवजी व नाथजी विराजमान हैं एकमन्दिर व गुरुद्वारा श्रीसम्प्रदायवालोंकाभी है मानसीगंगा व संकर्षणकुण्ड व अप्सराकुण्ड व पुछँडीकुण्ड व र[illegible]ली व गांठौली व गुलालकुण्ड व हरजीकुण्ड व रुद्रकुण्ड व विजयनाम सरोवर व राधाकुण्ड व कृष्णकुण्ड व कुसुमसरोवर व नारदकुण्ड व ऐरावतकुण्ड व सुरभीकुण्ड और दूसरा सरोवरकुण्ड और भरतपुर के राजालोगों के बनायेहुये स्थान दर्शन व स्नानहोते हैं व दीपमालिकाको

वरण स्थान सब श्रीवृन्दावन के ॥

मंदिर श्रीगोविन्ददेवजी व गोपीनाथजी व मदनमोहनजी व राधावल्लभजी व बांकेविहारी व अटलविहारीजी व चौरासीखंभा व आठखंभा दही विलोवने यशोदाजीका स्थान॥

रमनरेती जहां नन्दनन्दन महाराजने अपने सखनसंग भांति भांति की लीलाकरी ॥

यमलार्जुनवृक्ष ऊखलसे अटकाय के नंदनंदन महाराजने गिराये ॥

दर्शनसातगद्दी गोकुलस्थगोसाईं लोगोंकी जिनका वर्णन वल्लभाचार्य्यकी कथामें हुआ ॥

रानीघाट व यशोदाघाट व वल्लभाघाट इत्यादिकमंदिर केशवदेवजी जहां चतुर्भुजरूप होकर प्रकट हुये रंगभूमि जहां कंसको मारा ॥

कंसखार जहां कंसको मारकर डाला ॥

दर्शन ठाकुर व्वाराहजी ॥

क्षेत्रादिक इधर उधरजेहैं मथुरा देवी भूतेश्वर महादेव सप्तर्षि देवी वलिटीवा दशाश्वमेध चक्रतीर्थ ध्रुव क्षेत्र सरस्वतीकुंड योगमार्ग ॥

दहघाट व विष्णुघाट व लुकलुक व विहारघाट व चीरघाट व केशीघाट व सूर्यघाटइत्यादिक घाट बहुतहैं रसिकविहारीजी व राधारमणजी व शृंगारवट व छैलचिकनियांजी विख्यातहैं और दोमन्दिर नये भारी हैं ॥

भारी एक कृष्णचन्द्रमा जी का लालाबाबू बंगाली दूसरा रंगनाथ जी का राधाकृष्ण भाई लक्ष्मीचन्द्र साहूकार ने बनवाया अधिक इससे सहस्रोंदूसरे हैं निधिवन व सेवाकुंज ये भगवत्के लीला और विहार के कुञ्जहैं और जो राजोंने व अमीरोंने व साहूकार इत्यादिकों ने कुञ्ज व मन्दिर बनाये सो अलग हैं ॥

ब्रह्मकुण्ड व गोविन्दकुण्ड व वेणुकूप इत्यादिके सैकड़ों कूपहैं ॥

धीरसमीर व वंशीवट व ज्ञानगूदरी व मौनीदासजीकी टट्टी व दूसरेस्थान सब साधुलोग इत्यादिकों के निवासस्थल विख्यात हैं ॥

राधाबाग व मधुवन व देवीसिंह वालाबाग और दूसरे बाग जहां सब हरियाली छाई सघन दर्शन योग्य विराजमान हैं ॥

विवरण उनस्थान इत्यादिका कि वनयात्रा के समय जिनके दर्शन होते हैं और यह जानिये कि वनयात्रा करनेवाले भादोंबदी छठितक मथुराजी में पहुँचजाते हैं जिनको जन्माष्टमी वृन्दावन में करनी अंगीकार होती है ते मथुरा के घाटोंका स्नान व दर्शन करके वृन्दावन को चलेजाते हैं और जिनको गोकुल में जन्माष्टमी करनी स्वीकार होतीहै

वे गोकुल में और कोईकोई मथुरा में टिकरहते हैं वे लोग जन्माष्टमी करके दशमी के दिन सांझतक मथुराजी में आके न्हातेहैं और एकादशी से यात्रा आरम्भ होती है पन्द्रहदिन में सम्पूर्ण यात्रा परिक्रमा व्रजमण्डल चौरासी कोशकी करके भादोंसुदी दशमी अथवा एकादशी तक मथुराजी में आजाते हैं और द्वादशी के दिन मथुराजी की परिक्रमा होती है दूसरीयात्रा वल्लभाचार्य्यके कुलवालोंकी तात्पर्य गोकुलस्थ गोसाइँयोंकी होती है परन्तु प्रतिवर्षका नियम नहीं ये गोसाईं आश्विनबदी द्वितीया को यात्राके निमित्त उठतेहैं दीपमालिका जो दीवाली सो गोवर्द्धनजी में करिके कार्तिकसुदी द्वितीया को मथुराजी के मेलोंमें आ मिलतेहैं यहयात्रा बड़ेसुख व आनन्दसे होतीहै व बहुतलोग उनके अनुयायी उस यात्रामें मिलके जाते हैं अब विवरण टिकान्त व स्थान दर्शन यात्रा पन्द्रहदिनवाले की लिखीजाती है॥

पहिले दिन॥

प्रातःकाल विश्रान्तघाट स्नान करिके यात्राके निमित्त पांयपियादे नंगे पाँयन उठते हैं और भगवद्भजनका नेम उचित है पहिली मंजिल में दर्शन व यात्रा मधुवन व तालवन व कुमुदवनकी होजातीहै कल्याण नारायण व यशोदानन्दन व कपिलमुनि व गिरिधररायजी के होते हैं व शांतनुकुण्ड के स्नान॥

दूसरे दिन॥

बहुलावनमेंटिकांतहोताहै औरवहांदर्शनठाकुरद्वारेमोहनलालजीके हैं॥

तीसरे दिन॥

गोवर्द्धनजी में पहुंचतेहैं॥

चौथे दिन॥

वहां टिकांत होताहै गिरिराजजी की परिक्रमा होतीहै हरदेवजी व नाथजी विराजमान हैं एकमन्दिर व गुरुद्वारा श्रीसम्प्रदायवालोंकाभी है मानसीगंगा व संकर्षणकुण्ड व अप्सराकुण्ड व पुछँडीकुण्ड व र[illegible]ली व गांठौली व गुलालकुण्ड व हरजीकुण्ड व रुद्रकुण्ड व विजयनाम सरोवर व राधाकुण्ड व कृष्णकुण्ड व कुसुमसरोवर व नारदकुण्ड व ऐरावतकुण्ड व सुरभीकुण्ड और दूसरा सरोवरकुण्ड और भरतपुर के राजालोगों के बनायेहुये स्थान दर्शन व स्नानहोते हैं व दीपमालिकाको

गोवर्द्धनजी में मेला बड़ाभारी होताहै व दीपदान ऐसा कहीं नहींहोताहै व कार्तिकसुदी प्रतिपदाको अन्नकूट व पूजा गिरिराजकी उत्साहपूर्वक धूमधाम से होती है॥

पांचवें दिन॥

इससमय डीघमेंटिकांतहोताहै वहां बहुत बड़ेबड़े स्थान राजाभरत-पुरके हैं अगिले समयमें वहां टिकांत नहीं होतारहा॥

छठवें दिन॥

कामामें पहुँचतेहैं वहां दर्शन ठाकुरगोकुलचन्द्र व विजयगोविंद व गोपीनाथजी व वृन्दादेवी व राधावल्लभ व सीतारामजी के होतेहैं व भो-जन थाली वो घिसिनीशिला परिक्रमामें आतेहैं सातवें दिनतक रहकर॥

आठवें दिन॥

बरसाने में जो जन्मभूमि श्रीलाड़िलीजीकी है वहां पहुंचतेही श्रीला-ड़िलीजीका मन्दिर बहुत ऊंचा वो भारी पहाड़ के ऊपर है वो बाबावृष-भानु व कीर्तिजी व श्रीदामाजी के दर्शन होतेहैं और दानगढ जहांदान-लीला हुई और मानगढ़ जहां वृषभानुकिशोरीने नन्दकिशोर से मान किया व विलासगढ़ जहां प्रिया प्रियतमने विहार व विलास किया व मोर-कुटी जहां मोरकी नाई बोलके लाड़िलीजी को बुलाया वो सांकरीखोर जहां अकेली देख नन्दकिशोर ने लाड़िलीजी को पकड़लिया और जो चाहा सो किया और गह्वरवन जो वह भी विहारस्थान है और दूसरे स्थान वो मन्दिरोंके दर्शनहोतेहैं वो भानुसरोवर वो श्रीपोखर वोप्रेमस-रोवर इत्यादि कुण्ड वो लाड़िलीजीके झूलने और खेलने के ठौर सबहैं और ऊंचागांव जो जन्मभूमि गोसाईंनारायणभट्टजीकी कि जिनकीकथा में यह सब वृत्तान्त लिखाजाताहै बरसाने के समीप है और एक मन्दिर में बलदेवजीका भी दर्शन होताहै और देहकुण्ड वो त्रिवेणी वहां हैं॥

नवें दिन॥

नन्दग्राम बाबानन्दजी के स्थानमें पहुंचते हैं वहां बाबानन्दजी व यशोदामाताजी व यशोदानन्दन व बलदेवजी व विहारी विहारनके म-न्दिर व मानसरोवर व ललिताकुण्ड व विशाखाकुण्ड व यशोदाकुण्ड व मधुसूदनकुण्ड व मोतीकुण्ड व कृष्णकुण्ड व कदमखण्डी इत्यादिक तीर्थ हैं व मथानी कि जहां यशोदा महारानीने दूधविलोया व हाऊ कि

जहां नन्दनन्दन को हाऊ कहकर डरपाया वहां है जाव वट कि जहां ल-ड़िलीजी के चरणोंमें जावक लगाया कोकिलावन कि जहां कोकिलाकी भांति बोलके लाड़िलीजीको बुलाया रासौली कि जहां रास किया बठैन कि जहां लाड़िलीजी की वेणीगूंथी व रङ्गमहल व संकेतविहारी ठाकुर व संकेतदेवी विराजमान ॥ दशवेंदिन ॥

शेषशायी में पहुँचते हैं वहां शेषशायी महाराज विराजमान हैं इस हेतु करके उस गांवको भी शेषशायी कहते हैं विष्णुनारायणका मंदिर व क्षीरसमुद्र तीर्थ है व मार्गमें कदमखण्डी व क्षीरवन दर्शन होते हैं यहां से बहुतलोग राधाष्टमी करने के हेतु बरसाने को चलेजाते हैं और कोई वृन्दावनकोचले आते हैं और लोग ब्रजमण्डलकी परिक्रमा पूरी करने को यमुनापार उतरते हैं ॥

ग्यारहें दिन ॥

शेरगढ़ होकर चीरघाट जहां कात्यायनीदेवी के दर्शनहोते हैं शेरगढ़ में दो मन्दिर हैं व चीरघाट के थोड़ीदूर नन्दघाट है तहां उतरके भद्रवन व भाण्डीरवन व बेलवनकी यात्रा होती है ॥

बारहें दिन ॥

माटवन में विश्राम होता है भगवत्मन्दिर वहां है परन्तु प्राचीन व विख्यात मंदिर कोईनहीं है ॥ तेरहें दिन

लोहवनमें टिकांत होती है व पक्षमें नन्दादेवी व वन्दीदेवीके दर्शन होते हैं ॥ चौदहें दिन ॥

बलदेवजी में पहुँचते हैं व बलदेवजी महाराजके दर्शन होते हैं एक मन्दिर भगवत्का व दो तीर्थ भी वहां हैं ॥

पन्द्रहेंदिन ॥

मथुरामें पहुँचते हैं पंथमें गोकुल व महावनके दर्शन होते हैं कि वहा के स्थानों व तीर्थोंका विवरन पहिलेही लिखचुके हैं जो सब लिखआये ऊपर तिससे अधिक वन व स्थान बहुते हैं सब यात्रा के समय पन्थमें नहीं पड़ते हैं ॥

जब सब स्थान व वन जो ऊपर लिख आये प्रकट होगये तब नारा-यणभट्टजीको यह अभिलाषाहुई कि जिसप्रकार ब्रजचन्द्र महाराज ने इन स्थानों पर रास विलास व चरित्रकिये वह सब प्रत्यक्ष व साक्षात्

देखें सो भगवत्ने उनको आज्ञाकी कि वल्लभनामा नृत्यक बादशाही सेवा छोड़कर वृन्दावन वास करताहै तुम और वह ब्राह्मणों के लडको को मेरा और गोपिकाओं का रूप बनाकर लीलानुकरन से मेरे चरित्रों का अवलोकन करो तब गोसाईंजीने वल्लभनामा नर्तकको आज्ञादी उसने एक ब्राह्मण बालकको श्रीव्रजचंद्रका रूप एकको लाड़िलीजीका रूप और आठ लड़कोंको ललिता विशाखा इत्यादि सखियों का रूप बनाकर सब साधना नृत्यगाने की सिखाई और जहां जहां जो चरित्र और रास विलास भगवत् किये रहे सब चरित्र किये मानो श्रीकृष्ण अवतारको नवीन करदिया और अबतक वह रासलीलाकी परम्परा प्रवर्त्तमानहै जब यह सब उपकार जगत् के वास्ते प्रकट कर दिया तब इच्छा परमधाम गोलोककी और अपने सेवकन से आज्ञा किया कि हमारा शरीर त्रिवेणीपर लेजाना सबने बूझात्रिवेणी कहां हैं बतलाया कि ऊंचागांवमें बरसाने के निकट त्रिवेणीहैं गोसाईंजी एक यह भी तीर्थ प्रकट किया और अबतक गोसाईंजी के वंश उसगांव में वर्त्तमान हैं जब रास अथवा समाज होता है तब पहिले उनके वंशको अधिष्ठाता व मुखिया समझकर सत्कारपूर्वक आगे बैठालते हैं ॥

कथा निम्बार्कस्वामी की ॥

निम्बार्क स्वामी परमभक्त ऋषीश्वर भागवत धर्मप्रचारक हुये महाराष्ट्र ब्राह्मण मुंगेरमें गोदावरी के निकट अरुणऋषेश्वर की जयंती धर्म पत्नी के गर्भ से जन्महुआ सनकादिक सम्प्रदाय जो विख्यात है उसके प्रवृत्ति करनेवाले वआचार्य्य ये स्वामी हैं यद्यपि परम्परा इस सम्प्रदाय की भगवत् के हंस अवतार से है परन्तु इससंसार में निम्बार्कस्वामीसे प्रकाशमानहुई इसहेतु निम्बार्कस्वामी के नामसे विख्यात हुआ और हंस भगवान् ने प्रथम उपदेश सनकादि को कियारहा इसहेतु सनकादि संप्रदाय कहते है गुरु परम्परासे वृत्तान्त गुरु व चेले शाखोपशाखा का ज्ञातहोगा यद्यपि सेवकलोग इस संप्रदायके शरीरक सूत्रोंपर निम्बार्कभाष्य वर्णन करते हैं परन्तु इस देशमें नहीं मिलता जो स्तोत्र निजरचित स्वामीजीके हैं वे विशेष करके मिलते हैं उन स्तोत्रोंमें रीति उपासना और ईश्वर माया जीव का निर्द्धार और पद्धति उपासना की कथित है और व्याख्या उनकी विस्तारके सहित है कि स्पष्टकरके वृ-

त्तान्त उपासनाका उनसे ज्ञातहोताहै उन स्तोत्रोंमें मुख्यतर दशश्लोकी स्तोत्रहै उन स्तोत्रों के अनुसार तात्पर्य निश्चय यह संप्रदायका यह सिद्धांत समझने में आताहै कि ईश्वर द्वैताद्वैत है जैसे सर्पका कुण्डल सर्प से भिन्ननहीं और पानी तरंगसे भिन्न नहीं इसीप्रकार यह जगत् ईश्वर से भिन्ननहीं परन्तु नाममात्र को भिन्नकी भांति दिखाई देताहै वह ईश्वर एक पूर्णब्रह्म सच्चिदानन्द घन श्रीकृष्ण गोलोक निवासी हैं और माधुर्य्य जो शृंगार की एक शाखा है और अच्छीप्रकार उसका वर्णन तो दशवींनिष्ठा में होगा उसीमाधुर्य्य की रीतिसे ध्यान व चिन्तन करते हैं यद्यपि इस उपासनामें युगलस्वरूप श्रीराधाकृष्ण का ध्यान और सेवाकी रीति पुष्टहै परन्तु आदि आचार्य्यके बनायेहुये ग्रन्थों से पूर्णब्रह्मता श्रीकृष्ण स्वामीकी और उनकाही ध्यानकरना पाया जाताहै जैसे कि संक्षेप सिद्धांत निम्बार्कस्वामी का यहहै कि नहीं देख पड़ती कोई गति बिनाकृष्ण चरणारविन्दके कैसे हैं वह चरण कि ब्रह्मा और शिव उनको दण्डवत् करते हैं और श्रीकृष्ण महाराज कैसे हैं कि भक्तोंके अभिलाषा हेतु भाँति भाँतिके अवतार धारण करते हैं और मन व बुद्धिके तर्कमें नहीं आसक्ते हैं जिसकी मूर्त्ति और जिसका अवतार विचार में नहीं आसक्ता है गूढ़ है भेद जिसका एक जगह युगल ध्यान लिखाहै और दूसरी जगह केवल श्रीकृष्ण स्वामी का यह कुछ वास्तव करिके विरोध नहीं यह विचार करलेना चाहिये कि जब गोलोक निवासी की उपासना दृढ़ ठहरती तो युगल स्वरूपका ध्यान व चिन्तवन आपसे आप सूचित व उचित हुआ व तिलक आदिक का वृत्तान्त वेषनिष्ठा में लिखा जायगा व अलौकिक चमत्कार निम्बार्क स्वामी के बहुत हैं परन्तु उनमें से एक चमत्कार यह लिखते हैं जिस कारण से निम्बार्क नाम विख्यातहुआ एकसमय एक संन्यासी स्वामी के स्थानपर उतरा उसका शिष्टाचार स्वामी ने किया परन्तु रसोई के सिद्ध करने में संध्याहोगई संन्यासी संध्याभये पीछे भोजन स्वीकार न करे स्वामीजी को दया आई तब आंगन में निम्बका वृक्षरहा उसपर अर्क अर्थात् सूर्यको दिखादिया कि संन्यासीने सन्तुष्ट होकर भोजन किया जब भोजनकर उठा तब चारघड़ीरातबीती देखी उसदिनसे नाम स्वामीका निम्बार्क करके विख्यातहुआ और कोई मुख्यनाम अर्क क-

हते हैं नामी गुरुद्वारा एक स्थान अरुण दक्षिण देश में दूसरा स्थान सलेमाबाद है और तो हजारों स्थान हैं ॥

हंस भगवान् १	सनकादिक २	नारद ३	निम्बार्कस्वामी ४	श्रीनिवासाचार्य्य ५
विश्वाचार्य्य ६	पुरुषोत्तमाचार्य्य ७	श्रीविलासाचार्य्य ८	श्रीस्वरूपाचार्य्य ९	श्रीमाधवाचार्य्य १०
श्रीपद्माचार्य्य ११	श्रीश्यामाचार्य्य १२	बलभद्राचार्य्य १३	गोपालाचार्य्य १४	कृपाचार्य्य १५
देवाचार्य्य १६	सुन्दरभट्ट १७	पद्मनाभभट्ट १८	उपेन्द्रभट्ट १९	चन्द्रभट्ट २०
वामन भट्ट २१	कृष्णभट्ट २२	पद्माकरभट्ट २३	श्रवण भट्ट २४	भूरि भट्ट २५
माधव भट्ट २६	श्यामभट्ट २७	गोपाल भट्ट २८	बलभद्र भट्ट २९	गोपीनाथ भट्ट ३०
केशव भट्ट ३१	गांगलभट्ट ३२	केशवकाश्मीरीभट्ट ३३	श्रीभट्ट ३४	हरिव्यासदेवजी ३५
परशुरामदेवजी ३६	हरिवंशदेवजी ३७	नारायणदेव ३८	गोविन्ददेव ३९	गोविन्दशरणदेव ४०
ईश्वरशरणदेव ४१	श्रीनिम्बार्कशरण देव ४२	श्रीव्रजराजशरण देव ४३	गोपेश्वरशरणदेव ४४	विराजमान ४५

– गोपेश्वर शरणदेव महाराज विख्यात श्रीजी–संवत् १९१३में सलेमाबादकी गद्दीपर विराजमानहुये ॥

कथा हरिव्यासजीकी ॥

हरिव्यासजी सुसुखनशुक्ल ब्राह्मणके पुत्र निम्बार्क संप्रदायमें परमभक्त ऐसेहुये कि अबतक जिनकी कृपासे लाखोंको भगवत्भक्ति प्राप्तिहोती है तिलक मालासे अत्यन्तप्रीति जिनकी हुई पूर्व्वनाम उनका हरीराम रहा और रहनेवाले बोड़छे के थे संवत् १६१२ में अपने घरको छोड़कर पैंतालीसवर्ष की अवस्थामें वृन्दावनमें आये भागवत् धर्म्मकी प्रवृत्ति

चलाई हज़ारोंको सेवककरके भक्त करदिया परन्तु बारह सेवकतो ऐसे सिद्ध और परमभक्त और प्रतापीहुये कि जिनके नामसे अलग २ गुरुद्वारेचले और अबतक गुरुद्वारों से व्रढवारी भगवद्भक्तिकी सत्रकोहैं गुरुद्वारे सत्रआदि परम्पराकी रीतिसे निम्बार्क संप्रदायके विख्यात हैं और कईप्रकारकी रीति जोआप व्यासजीने चलाई सो गुरुद्वारे अलग बारह गुरुद्वारे से हैं यह कि निज जो वंश व्यासजी के हुये उस पद्धतिकी रीति से उनका गुरुद्वारा है और उनका पट्टगोसाईं करके वृन्दावन विख्यात है और इस गुरुद्वारे के सेवक हरिव्यास करके विख्यात होते हैं जब व्यास जीने वृन्दावनमें वासकिया तब ऐसीप्रीति उस परमधाममें और भगवत् में हुई कि एकदमभी वृन्दावनसे अन्यत्र रहि न सकैं वरन और कोई जो जाने के निमित्त कहता तो अत्यन्त इससे दुखित होते रहे मुद्गरनाभी वोड़छे का राजा व्यासजीका सेवक रहा अपने यहां लेजाने की कामना करके वृन्दावन में आया और बड़ी विनय प्रार्थना की तब व्यासजी ने कहा कि वृन्दावनके द्रुमलता शाखा व वनकी छायाके शरणमें सदारहाहूं उनसे विदा होकर चलूंगा सो विदा होने के निमित्त चले व राजा भी साथहुआ जिस वृक्षके नीचे जाते हाथ जोड़कर विनती करते कि महाराज तुम्हारी शरण आयारहा अब क्या आज्ञा है राजाने अपने मनमें समझा कि इसीप्रकार कहते कहते देश को चले चलैंगे तबतक एक भंगिनि गोविन्ददेवजी के मन्दिर से पत्तल साथ प्रसादी हरिभक्तोंका और भगवतका प्रसाद उठाकर उस राहसे जाती रही व्यासजी ने पूंछा कि क्याहै भंगिनि ने उत्तरदिया कि महाप्रसादहै व्यासजी ने दौड़कर एकफुलौरी महाप्रसादकी उससे लेकर भोजनकर लिया राजाने यह जाना कि गुरुदेव महाराजको चित्तभ्रमहोगयाहै जो देशमें जावेंगे तो लोगोंको वेधर्म करैंगे इस हेतु विदाहोके अपने आप चलागया और व्यासजी ने उसकाजाना भगवत् की बड़ी कृपा समझकर धन्यमाना सर्वकाल श्रीकिशोर किशोरीजी की सेवा पूजा में रहते रहे एक दिन शृङ्गारके समय जरकशी का चीरा बांधते रहे सो जरीकी चिकनाई के कारण से बांधते में सुन्दर नहीं आतारहा कईबार बां[illegible] परन्तु सुन्दर नहीं उतरा व्यासजी ने क्रोधित होके कहा कि जो ल[illegible] काईपन में यह दशा ढिठाईकी है तो फिर न जाने क्याहोगा जो[illegible]

धना नहीं भावताहै तो आप बांधलेव और यह कहकर कुञ्जसे बाहर जा बैठे थोड़ेकाल पीछे जोलोग दर्शन करके गये तो व्यासजी से कहा कि आज भगवत्का चीरा बहुतसजीला बँधाहै व्यासजी अभिलाष भरेहुये आये देखकर कहनेलगे जहां अपने हाथ ऐसे प्रवीणता व सुघरताहै तो दूसरेकी कब मनभायसक्की है एकदिन हरिभक्तोंका समाज भोजन करने को बैठा था व्यासजी की स्त्री परोसतीरही संयोगवश दूधकी मलाई व्यासजी के कटोरे में गिरपड़ी व्यासजी ने यह जाना कि पतिभाव की प्रीतिके वश हमको अधिक दियां है तुरन्त पंगत से निकाल दिया स्त्री ने विनतीकिया कुछ न सुना तब तीनदिन विना दाना पानी रहगई और सब हरिभक्तों ने व्यासजी को समझाया तब अंगीकारकिया परन्तु दण्डमें सब गहना बेंचके साधोंका भण्डारा करदिया व्यासजी के लड़कीकी सगाई रही और पकवान कई प्रकारका बरातके निमित्त बना हुआ रहा व्यासजी ने वह सामग्री सुन्दर मधुर भगवद्भक्तों के योग्य समझ तुरन्तछिपायकर भगवद्भक्तोंको भोजन करादिया जब बरातआई और कोठे पकवान को रीतापाया तब तुरन्त लोगों ने पकवान बनाकर बरातको जिमाया घरके लोग व्यासजी से बहुत उदासहुये व्यासजीने तुरन्त एक विष्णुपद बनाकर भगवत् भेंटकिया अर्थ उसका यहहै कि जिन लोगोंको समधी प्यारेहैं और वेलोग भगवद्भक्तोंको सूखा आटादेते हैं और समधी को भोजन मीठे तो ऐसे विमुखों को यमके दूत खींचते खींचते हारजाते हैं एकसमय व्यासजी भगवत् के हाथमें बांसुरी चांदी की देतेरहे उसकी कोरसे उँगली छिलगई रुधिर निकल आया व्यास जी ने चिंतामें होकर भगवत् अँगुलीपर कपड़ा पानीसे भिगोकर बांधा कि अब तक यह रीति किशोर महाराज के शृंगार के समय वर्त्तमान है इस चरित्र से भगवत् अपने भक्त के माधुर्य्यभाव को पक्का व दृढ़ करके उपदेश व प्रेमके पंथको दिखलाते हैं कि जिसभावसे मेरेभक्त मेरा आराधन करते हैं उसीभावसे प्रकट होताहूं एकब्राह्मण वोड़छे का रहने वाला व्यासजी के पासआया और जहां हरिभक्तों के निमित्त रसोईं बनती रही तहां भोजन करना अंगीकार न किया व्यासजीने उसको अन्न दिलादिया वह ब्राह्मण चर्म्म के छागलमें जललाकर रसोईं करनेलगा व्यासजी जूती में घी उसके निमित्त लेगये और रसोई में रखदिया ब्रा-

ह्मण क्रोधयुक्त उदासहोकर उठा व्यासजी ने हाथ जोड़कर कहा कि आपके उदासीकी कोई बात नहीं हुई जिस धातुका बरतन पानी के निमित्त आप अपने पास रखतेहैं उसीधातुके कटोरे में पीलायाहूं वह ब्राह्मण लज्जित होकर अभिप्राय व्यासजी के मनका समझकर भगवत् शरणहोकर भगवद्भक्तहोगया एक साधु बहुत दिन तक मन्दिर में व्यासजीकी सेवामें रहा किशोर किशोरीजी के सम्मुख कीर्तन अच्छा किया करताथा जब इच्छा चलनेकी करता तब व्यासजी उसको समझाकर ठहरालिया करते कि वृन्दावन को छोड़कर कहां जातेहो एक दिन हठकरके विदाहुआ और बटुआ शालग्रामजी का जो कि मन्दिर में पधराय दियारहा मांगा व्यासजी ने एक गौरैआ चिड़िया डिब्बे में बन्दकरके साधूको दिया साधू भोला लेकर चलागया जब यमुनाजी के किनारे पर सेवा पूजाके निमित्त डिब्बाखोला तो चिड़िया उड़गई वह साधू व्यासजी के पासगया कि महाराज मेरे ठाकुरस्वामी इस ओर आये हैं ढुंढ़वादेव व्यासजीने उत्तरदिया कि सत्यहै तुम्हारे स्वामी दरश परस किशोर महाराजसे होगये हैं क्याजाने उसी स्नेहसे चलेआये होंगे सो ढूंढ़ेंगे और यह कहकर मन्दिरमें गये आकर साधूसे कहा कि तुम्हारे स्वामी किशोरजी के पास बैठे हैं तुम्हारे स्वामी वृन्दावन से जाया नहीं चाहते तो तुम किसहेतु जातेहो उस साधू ने सब ओर के जाने आने की इच्छा त्याग करके वृन्दावन में वास किया शरदपूनों को भगवत् का रास समाज वृन्दावन में होतारहा सब रसिकजन प्रिया प्रीतमकी छविसे छकेहुये प्रेममग्न रहे नृत्य में प्रियाजी के चरणसे नूपुर टूटगया और ताल के समा में भेद आने लगा व्यासजी ने तुरन्त अपना जनेऊ तोड़कर नूपुर गूंथकर पहनादिया और कहा कि अपनी अवस्थाभर इस यज्ञोपवीत को गलेका भार जानतारहा आज उसका रखना सुफलहुआ भक्तमालमें जो व्यासजी के वर्णनमें नाभाजी ने यह पद लिखाहै कि भक्त इष्टआदि व्यासके यह सुनकर एकमहन्त परीक्षा लेनेके निमित्त लाहौर से आया जमात भारी साथ में रही सब साधू संगके भूख जनावने लगे व्यासजीने कहा अब रसोई बनकर भगवत्को भोग लगाया जाता है कुछ विलम्ब नहीं है परन्तु साधुलोग मानें नहीं व्यासजीपै जो भगवत्प्रसाद रहा साधुनके आगेलाये वे लोग

दोचार ग्रास भोजन करके और कुछ दर्दका बहाना करके उठखड़ेहुये व्यासजी ने उन साधुओंकी सीथप्रसादी को बहुत यत्नसे रखलिया और हाथ जोड़कर विनयकिया कि आपने अत्यन्त दया से पालनकिया कि अपनी जूठनको कृपाकरके दिया और कुछदिनके भोजनके निमित्त पूंजी होगई अब कृपाकरें कि दूसरा भोजन बनताहै उसको अंगीकारकरें सब महंतों को व्यासजी में दृढ़विश्वास आया और जाना कि इसप्रकार निश्चय भक्तोंका विना व्यासजी के और किसकोहोगा व्यासजीने एकपद भगवत् भेंटकिया कि उसमें महिमा सीथप्रसाद भगवद्भक्तों की प्रकट होतीहै अर्थ उसका यहहै कि जो हरिभक्तोंका सीथ नहीं खातेहैं उनके मुख शूकर और कूकरके मुखके सदृशहैं इसहेतु कि लड़का छोटी अवस्था का जिसके नाकसे रेंट बहताहै और गालोंतक लगाहुआहै उसका मुख चूमतेहुये और काम के वशमें होकर स्त्रीकी राल चाटतेहुये तो मनको घृणा नहीं होती और भगवद्भक्तोंका सीथप्रसाद खातेहुये घृणा करते हैं तो क्यों न दुर्गती होंगे व्यासजीके तीन पुत्र रहे सो झगड़ा निवृत्तके हेतु विभाग करदेना सम्पत्तिका उचित समझकर तीनभाग बनाये एकभाग तो सम्पूर्ण द्रव्य का और दूसरा श्रीकिशोर किशोरीजी महाराजका और तीसरा तिलकछाप और श्यामबन्दनीका सो भाग पहिला और दूसरा तो रामदास औ विलासदास पहिले और दूसरे पुत्रोंने लिया और किशोरदासजीके बांटमें तिलक इत्यादिक आया उन्हों ने वह तिलक और छापलेकर और स्वामी हरिदासजी से छाप धारण कराकर भगवद्भजन आरम्भकिया और थोड़ेहीकालमें सिद्ध और शुद्धचित्त होकर भक्त दृढ़ होगये एक दिन किशोरदासजी और व्यासजी स्वामी हरिदासजी के साथ यमुनापर गयेथे वहां एक विष्णुपद भगवत् के रासविलास का अपना बनाया हुआ गानकिया और चले आये व्यासजी ने उसी विष्णुपदको नित्य रासके निज भगवतपुराणमे ब्रह्माको ललिताजी के मुखसे कहाहुआ सुना व्यासजी ने इसकारण से किशोरदासजी की भक्तिको निश्चय किया हरिव्यासजी महाराजके चेले सिद्ध और बड़े योग्य भये उनमें से परशुरामदेवजी की गुरु परम्परा निम्बार्कस्वामी की कथामें लिखीगई और शोभूरामजी का वृत्तान्त उनकी कथा में लिखाजायगा और यद्यपि परम्परा बिन्दुवंश और नादवंश हरिव्यास जी का भी

विवर्ण सहित प्राप्त हुआथा परन्तु सन्देह कुछ होगया इसहेतु न लिखा यहीं दो परम्परा विशेष समझना ॥

कथा शोभूरामजी की ॥

शोभूरामजी जातिके ब्राह्मण रहनेवाले ओड़ियाके चेला हरिव्यास जी के जिनकी कथा ऊपरहुई परमभक्त निम्बार्क सम्प्रदाय में हुये अब तक मन्दिर व वाटिका उनके निवासका ओड़िये जगाधरी के समीप एक कोशपर विराजमानहै और ऐसाप्रतापी गुरुद्वाराहै कि लाखोंको जिसके प्रभाव करिके भगवद्भक्ति प्राप्तहुई व होती है शोभूरामजी की कृपाकरके उस देशमें भक्तिका प्रचारहुआ एकबेर यमुनाजी चढ़ीं नगर डूबनेलगा सबने आयके पुकारा तब आपने विनयकिया व कहा कि ऐसीही इच्छा है तो मैंभी सहायताको प्राप्तहूं यह कहिके फावड़ालेके पानी आनेकीराह बनावनेलगे यमुनाजी हटगईं व आरती के समय शंखध्वनि हुआ करतीथी हाकिमने सुनी और क्रोधयुक्त होकर विचारा कि इसको कालामुँह कर गधेपर चढ़ानाचाहिये शोभूरामजी वैसाहीरूप बनाकर उसके द्वार पर गये देखिके आधीन होगया व लज्जित होकर अपराधक्षमाकराया व आत्माराम जिनके भाई उनकी कृपा व दीक्षासे सब गुण करके युक्त परमभक्तथे मानो कृष्णभक्तिके खंभहुये व सन्तदास व माधवदास दो भाई दूसरे उनकी भी भक्ति और महिमा वैसाही हुई कि माधवदासजी ने योगियों को ज्ञानसमर में विजय किया एकबेर योगियों के स्थान में उतरे आगजलाकर बैठरहे योगियों का स्वामी क्रोधयुक्त हुआ तब सब अग्नि बलतीहुई अपने अचलासे उठाकर लेजाके अलग जाबैठे योगी यह चरित्र देखकर आधीन होगया चरणों में पड़ा इन दोनों भाइयोंने भक्तिके प्रकाश करनेको मानो अवतार लियाथा एकही समय में दोनों भाइयोंने यह प्रकाश किया ॥

अथ गुरुपरम्परा हरिव्यासदेवजी की ॥
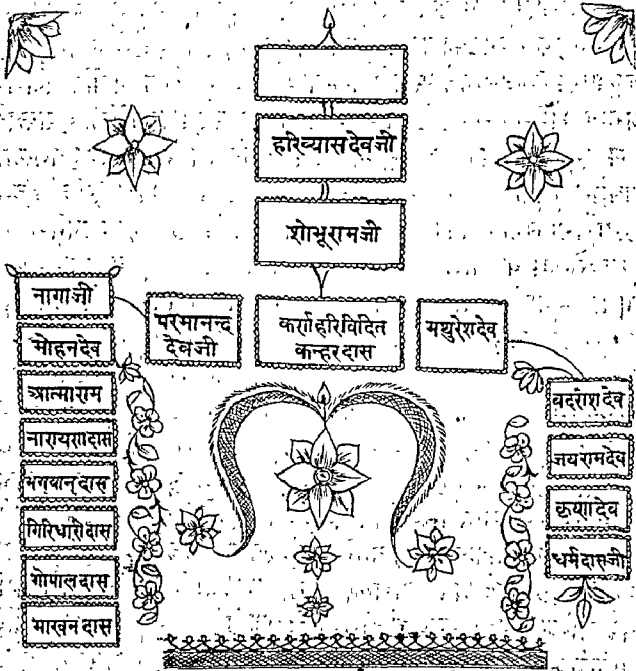
कथा हित हरिवंशजी की ॥

हितहरिवंशजी गोसाईंजी के भजन और भावको ऐसा कौनहै जोवर्णन करसके कि जिनसे राधिकामहारानीकी प्रधानता करके मनको दृढ़विश्वाससेलगाया और प्रियाप्रियतम के नित्यविहार और कुंजमहलमें मानसी ध्यानकरके प्राप्तहोकर सखीभाव से टहल व सेवा शृङ्गारआदिकी करी

व भगवत् के महाप्रसाद में ऐसा विश्वास था कि अपना सर्वस्व जानते रहे व विधिनिषेध के व्यवहारसे अलगहोकर अनन्य दृढ़भक्तिमें मग्न रहतेरहे व्याससूनुके विश्वास और मार्गपर जो कोई होवै वहभी अच्छे प्रकार उस पन्थको जानसक्ता है नाभाजी ने जो व्याससूनु यह पद मूल भक्तमाल में लिखा तो उसके अर्थ से शुकदेवजीका भी बोध होताहै और हरिवंशजी का भी क्योंकि उनके पिताका नाम व्यास रहा ये गोसाईं महाराज राधावल्लभजी संप्रदायके आचार्य्यहुये कि जिनके प्रभाव से सहस्रों भगवत् सम्मुख होकर संगतिको पहुँचे हैं व्यास उनके पिता गौड़ ब्राह्मण रहनेवाले देवनन्दन इलाके सरकार सहारनपुरमें बादशाही अधिकारी रहे परन्तु वंश नहीं था नरसिंह आश्रम बड़े भाई उपासक नृसिंहजी के आशीर्वाद व कृपासे हरिवंश जी तारानाम व्यासपत्नी के गर्भ से संवत् १५५९ में उत्पन्न हुये पहिलेही से भक्ति श्रीराधाकृष्ण महाराजकी रही राधिकामहारानी ने पीपलके वृक्षपर मंत्रकापता स्वप्न में दिया व एक भगवन्मूर्त्ति का पताभीकूपमें जनादिया गोसाईंजी ने वह मंत्र और मूर्त्तिप्राप्त करके मंत्रका तो जप आरम्भ किया और भगवन्मूर्त्ति व राधिकाजीकी गादी विराजमान करके सेवा पूजा करनेलगे रुक्मिणी नाम स्त्री के गर्भ से दो पुत्र और एक पुत्री जन्मे व विवाहादि उनका होगया तब वृन्दावन सेवन की इच्छा करके चले चरथावल ग्राम में भगवत् आज्ञाकरके एक ब्राह्मणने अपनी दोलड़की और राधा वल्लभजी की मूर्त्ति भेंटकरी वृन्दावन में पहुँचकर मन्दिर बनवाया और भगवन्मूर्त्ति व राधिकाजीकी जगह गादी स्थापनाकरके पद्धति राधावल्लभी संप्रदायकी चलाई इस संप्रदायमें राधाकृष्ण युगलस्वरूपकी उपासनाहै परंतु राधिकामहारानीकी भावना विशेषहै अपने आपको सखी और दासी श्रीराधिकाजी की जानकर ध्यानयुगल स्वरूप और शृंगार-राधिकामहारानी में मग्नरहते हैं और यह उनको निश्चयहै कि कृपा व अनुग्रह राधिकामहारानीका होना चाहिये श्रीकृष्णस्वामी आपसे आप कृपाकरैंगे वृत्तान्त शृंगार व तिलक आदिका निष्ठाशृंगार और वेष में लिखाजायगा राधासुधानिधि ग्रन्थ संस्कृत में कि उसकी प्रेमभक्ति व काव्यकी रचनापदकी मधुरताई वर्णन में नहीं आसक्ती है और भाषा में हित चौरासी रचना कियाहुआ गोसाईंजी का प्रसिद्ध व विख्यातहै

गोसाईंजी को भगवत्प्रसाद में ऐसी निष्ठारही कि पानका बीड़ा भगवत्प्रसादी को करोड़ एकादशी व्रतपर अधिकतर समझते रहे कोई कोई माध्वसंप्रदायवाले पूर्व कुछसेवक होने माध्वसंप्रदायका गोसाईंजी को कहते हैं परन्तु कुछ बात नहीं हरिवंशजी राधिकाजीकी कृपाकरिके स्वयंसिद्धभये इसमें कुछ संदेह नहीं व रीति भजनकी नई रसभक्ति प्रेममयी निकाली व निम्बार्कसंप्रदाय व माध्वसंप्रदायसे सिद्धांत उपासना चुनकरिके अद्भुतरसभजन की रीति पुष्टकरी इससंप्रदायमें राधिका महारानीमें परकीया भावहै व वंश गोसाईंजीके देवनन्दन व वृन्दावन दोनों जगह विराजमान हैं औ श्रीराधावल्लभलालजी के उपासनाका उपदेश प्रसिद्ध व प्रभाव संसारमें प्रकटहै ॥

कथा चतुर्भुजजी की ॥

चतुर्भुजजी चेले हितहरिवंशजी के भगवद्भक्त ऐसेहुये कि भगवद्भक्ति और भजन का प्रताप बहुत लोगों के हृदय में दृढ़करके भगवत् की ओर लगादिया और श्रीराधावल्लभलालजी के ऐसे चरित्र पवित्र काव्य किये कि हज़ारों उनको पढ़सुनकर संगतिको प्राप्तहुये हरिभक्तों की ऐसी सेवाकरी कि उनके चरणरजको अपने शिरका भूषण समझा और सत्संगका यह विश्वासरहा कि उसी में मग्न रहतेथे जिन्होंने गुरु चरणकी कृपासे गोड़वाने देशको भगवद्भक्त करदिया यह कि उसदेशके आदमियों को कालीजी की उपासना थी आदमी को मारकर चढ़ाते थे भगवद्भक्तिका प्रवेश निर्मल तनक नहींरहा चतुर्भुजजी का संयोग उस देशमें जानेकाहुआ यह दशादेखी तो पहिले कालीहीको भगवद्भक्त करना प्रयोजन जानकर भगवन्मन्त्र सुनाया काली जब हरिभक्तहुई तब लोगोंको स्वप्नमें शिक्षाकिया कि तुमलोग स्वामी चतुर्भुजजी के शीघ्रही सेवकहोकर भगवद्भक्ति अङ्गीकारकरो नहीं तो सबका नाश होजायगा सब कोई दौड़े आये और चेलेहुये माला तिलक धारण करके भगवद्भक्त होगये और पूर्वके पापोंसे छूटगये स्वामीजी ने कुछदिन उस देश में रहकर भगवत् आराधना और उत्साह व साधुसेवा को अच्छा फैलाया और श्रीमद्भागवत सुनाकर भगवत्प्रेम में पूर्ण करदिया एक उचक्का किसी धनिकी थैली उठाकर चला धनी पीछेपड़ा उचक्केने जब कोई जगह छिपनेकी न देखी तो स्वामीजीकी कथामें जाबैठा उससमय

यह कथा होतीथी कि जो कोई शास्त्र विहित दीक्षा लेताहै उसका जन्म नवीन होजाता है यह सुनकर वह उचक्का भी चेला स्वामीजी का होगया तिसके पीछे थैलीवाला बनियां भी जा पहुँचा और लोहेका गोला तप्तकरके हाथपर रक्खा साधुने राजाके सामने सौगन्ददी कि इसजन्म में किसी का धन नहीं चुराया निदान साधु जीतगया राजाने बनियें को शूलीदेने की आज्ञादी जब साधु ने सब वृत्तान्त वर्णन किया तब राजा ने बनियें को छोड़ा भगवद्भक्त होगया एकदिन स्वामीका खेत पकाथा साधु आते रहे उसमें घुसके खानेलगे रखवाले ने पुकारकिया कि स्वामी चतुर्भुजी काहै साधुओंने कहा तो हमाराही है शोर क्यों करतेहो यह सुन स्वामी आयके साधुओं को लेगये भोजन कराये व आनन्द के जल आंखों से बहाये कि आज साधुओं ने हमारी चीजोंको अपना समझा ॥

कथा शङ्करस्वामी की ॥

शङ्करस्वामी कलिमें धर्म्म के रक्षक और भागवतधर्म्म के प्रवर्त्तक शिवजी का अवतार और आचार्य्य हुये जितने अनीश्वर वादी और जैनधर्मी और पाखण्डी और विमुख और दुर्बुद्धी थे सबको ध्वस्त करके शास्त्रोंकी पद्धतिपर चलाया दक्षिणदेशमें विक्रमादित्य के समय में स्वामीका अवतारहुआ स्मार्तमतकी रीतिसे दण्ड धारणकर संन्यासी हुये और उसी धर्म्मकी पद्धति से भागवतधर्म्मको फैलाया सैकड़ोंको शास्तकिया मण्डन मिश्र जिनको ब्रह्माका अवतार कहते हैं मीमांसा मतवादी रहे उनको वादमें निरुत्तर किया मीमांसा कर्म्मही को ईश्वर मानताहै पीछे मिश्रजीकी स्त्री ने वाद आरम्भ किया और कामशास्त्र में प्रश्न करनेलगी और ये स्वामी यती संन्यासीरहे उसगली से तनकभी बोध न था इसहेतु राजा अमरुकके शरीरमें कि उसीदिन मरगयाथा योगबलसे अपने प्राणको उसमें प्रवेश करके छः महीनेतक उसशरीरमें रहे एकग्रन्थ अमरुकशतक बहुत ललित उस शरीर में रचना किया जितनी रानी राजा अमरुक की रहीं सबने जानलिया कि यहकोई योगीहै और निजदेह इसका कहीं गुप्तहोगा सो उसको जलादेना चाहिये कि जिसमें यह शरीर और राज्य और हमारा सुहाग बनारहे इसहेतु उस शरीर को ढुंढ़वाके जलादेने की आज्ञा देदी आगदियेहीरहे कि स्वामी के प्राणने राजाका तनु छोड़कर निजशरीरमें प्रवेश किया और अग्नि

से रक्षाके हेतु नृसिंहजीका स्मरणकिया प्रभुने उसअग्निको शीतलकर दिया स्वामीने चितासे निकलकर मण्डनमिश्र की स्त्रीको निरुत्तर कर दिया मिश्रस्वामीके चेलेहोगये पश्चात् चारवाक मतवालों को परास्त करके धर्म्ममें प्रवृत्तकिया सो अब चारवाक मतका अनुगामी दृष्टान्त कोईभी नहीं मिलता मुसल्मानों में सुने जाते हैं जो कि दहरिया कहाते हैं फिर सांख्यशास्त्र और हठयोगवालों को शिक्षाकिया तब पीछेसे बड़ों के साथ मतवाद युद्ध बड़ाभारी आनपड़ा निदान पहिले वादमें जीतकर फिर उनकी धूर्त्तताई व मन्त्र चेटक आदिको दूरकिया और इन्द्रजाल उन्होंने किया तो वहभी उनकेही गलेपरपड़ा इसप्रकार कि कोठेपरसे गिरकर मरगये और कुछ नदीमें डूबे और जो रहेबचे तिनको उससमयके देशाधीशने नावों में भरवाकर नदी में डुबवायदिया और जितने भगवत्के शरणमें हुये वे सब उपद्रवसे बचगये तात्पर्य्य यहकि जो कोई भगवत्से विमुखरहा अथवा वेद विरुद्ध चलताथा उसको विद्याके बल से व प्रभावदिखाके अथवा जिसप्रकार उसनें बोधचाहा भागवतधर्म्म पर दृढ़करदिया फिर पीछे ठौर ठौर मन्दिर व शिवालय आदि बनवाये और हरएक देवताके वर्णनमें स्तोत्र रचनाकिया और रीतिपूजा इत्यादिकी शिक्षाकरी गीताजी व शारीरकसूत्र व विष्णुसहस्रनाम पर भाष्य अलग अलग रचनाकिया तिलकआदिकी पद्धतिका वैष्णवनिष्ठामें वर्णन होगा विस्तार करके कथा स्वामीकी शङ्करदिग्विजय में लिखी है यहां एक नाममात्र सूक्ष्म वृत्तान्त लिखागया निर्गुण उपासक तो यहबात कहतेहैं कि ये स्वामी केवल निर्गुणब्रह्मके उपासकरहे और सगुणउपासकोंका यह वचनहै कि वैष्णवरहे और वाद सुष्ठुतर उनके वैष्णव होने की ठानते हैं कि स्मार्त सगुणउपासनाकी पद्धति यहहै कि अपने इष्टको अंगी और दूसरे देवताओंको अंग मानतेहैं एकतो भगवत्की जिसप्रकार दूसरी संप्रदाओंमें दृढ़है इसीप्रकार इससंप्रदाय में भी पूजा व स्मरणजप इत्यादि वैसाही व निर्गुणब्रह्मका वर्णन इसपोथीके अंतमें लिखा जायगा शङ्करस्वामीके बहुतसे चेले ऐसेहुये कि उनसे इससंप्रदाय की प्रवृत्ति अधिकतरहुई उनकी गुरुपरम्परा से उनके नाम खोलेजायँगे व मठगुरुद्वारे भी बहुत हैं परंतु चार स्थान चारों चेलों के सबमें मुख्यहैं कि उन मठों का नाम चारों चेलों के पास लिखाजाताहै और गुरु

हारे सहस्रों हैं इस हेतु उनकी गुरुपरम्परा इससमय तककी नहींलिखी केवल शंकर स्वामी के चेलोंतक की लिखी ॥
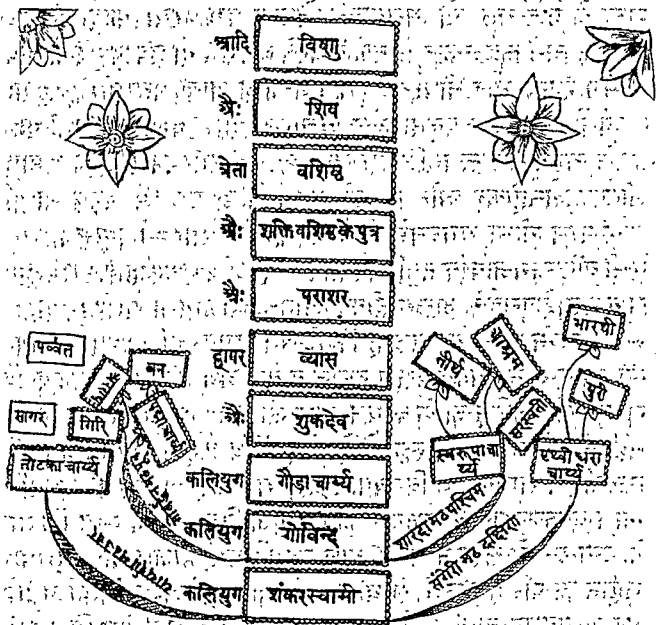
निष्ठा तीसरी ॥

साधुसेवा व सत्संग जिसमें तिसभक्तोंकी कथाहै ॥

श्रीकृष्णस्वामी के चरणकमल की अम्बर रेखाको और वाराह अवतारको दण्डवत्है कि निजधाम ब्रह्मपुरी में वह अवतार धारण करके पृथ्वी को समुद्रसे निकाला और हिरण्याक्ष को वधकिया व सब शास्त्रों

का सिद्धान्तहै इस जीवको आवागमनके बंधनसे छूटने के हेतु सत्संग व्यतिरेक और कुछ साधन नहीं जिसके प्रभाव से शीघ्र भगवत्प्राप्ति होती है महिमा सत्संगकी अपारहै तथापि किञ्चिन्मात्र लिखीजाती है और सत्संग की प्राप्ति साधु सेवा करिके है इस हेतु साधु सेवाकी महिमा भी इस निष्ठा में लिखी जायगी और यद्यपि वास्तव अर्थ सत्संग शब्द के ये हैं सत् जो भगवद्भक्त तिनका संग परन्तु कोई उस सत्संग के अर्थ कई प्रकार से वर्णन करते हैं उनमें दो प्रकार मुख्यहैं एक सत्संग शास्त्र और तीर्थों का दूसरा भक्तोंका शास्त्र सत्संग से यह तात्पर्य्य है कि उसका पढ़ना और विचारना और अभ्यास रखना और उसके अनुकूल चलना जिससे सार और असार और ईश्वर माया जीवका ज्ञानहोकर और नरकके दुःखों से डरकर रूप अनूप माधुरी और परम शोभा भगवत्में कि सब शास्त्रोंका सार और मुख्यलाभहै ऐसी बुद्धिलगिजावै कि दृढ़स्थिर होकर यह जीव कृतार्थहोकर सब दुःख सुख भलाई बुराई से अलग होकर आनन्द होजायगा सो पढ़ने व अभ्यास रखने योग्य ये शास्त्र हैं कि जिनमें भगवच्चरित्र और भगवत् स्वरूप व गीता आदि पुराण स्मृति व वेद अथवा दूसरे ऋषीश्वरोंके रचित और हरिभक्तों के कथित और जो उनके पद में व अभ्यास में नहीं जानने से वाणी संस्कृतके हेतुसे दुर्बोधिता होय तो भाषाग्रंथ जैसे तुलसीकृत रामायण व विनयपत्रिका व सूरसागर व दशम व ब्रजविलास व कृष्णदास व नन्ददासकी वाणी आदिका पढ़ना सदा कि उस के अवलम्बसे संस्कृत से जो बोध होताहै सोई होजायगा व दो चार महीने का परिश्रम करने से थोड़ेही में भाषा पढ़नेकी गति होजातीहै पर असावधानता व दुर्भाग्यताकी बात न्यारी है बहुतलोग विरुद्ध धर्मियों के रचेहुये को भाषान्तर करने में विशेषकरके काल व्यतीत करते हैं सो मेरे विचारमें वे त्याज्य हैं जो वह विवाद कि जिस हेतुसे भाषान्तर ग्रन्थ धर्मविरोधियों का पढ़ना अयोग्य है विस्तारकरके लिखैं तो बहुत है परन्तु एक दो बात लिखीजाती हैं प्रथम उन भाषान्तर करने वालों में मुख्य अभिप्राय उस ग्रन्थका निर्वाह नहींहोसक्ता यह कि कोई श्लोक भागवत व गीता व महाभारत का तर्जुमा जिसको भाषान्तर लिखाहै पढ़कर फिर अपने धर्म के आचार्य्योंका तिलकहै तिससे मिलान

करै कि मुख्यअभिप्राय लुप्त व ध्वस्त है दूसरे कोई तर्जुमा ऐसा नहीं कि तर्जुमा करनेवालों ने अपने दीनके विरुद्ध व द्वेषकेकारणसे उनमें प्रकट अथवा कोई व्याज करके अथवा कटाक्ष लेकर हिंदूके दीनकी निन्दा न लिखीहोय जैसे अबुलफ़ज़लने महाभारत आदिग्रंथोंके तर्जुमोंका प्रारंभकिया वह जलादेने योग्यहैं और उनमें विशेष अर्थोंका तर्जुमा लिखा है व तर्जुमे योगवाशिष्ठ व भागवत्से प्रकटहै और जो किसीने दूषणरहितका तर्जुमा करदियाहै तो इसभांतिकी लिखावटहै कि भगवत् व महात्माओंके सम्बन्धमें तनक मर्याद नहीं और वचन कठोर व तीक्ष्ण जैसे बाण हृदयमें लगते हैं तीसरे ऋषीश्वरों व भक्तोंकी वाणी में जो प्रभावहै अन्य मतवालोंके तर्जुमे में नहीं और प्रतिकूल होताहै यह कि जैसा विरुद्धभाव तर्जुमा करनेवालोंका है वैसाही पढ़ने सुननेवालों का होजाता है इसहेतु कोई आरूढ़पद को नहीं पहुँचता व आजतक उन तर्जुमोंके पढ़नेवालों को भगवद्भक्त न देखाहोगा परन्तु इतना विशेष होगा कि ब्राह्मणों को वादकरके दुःखित करना व सत्संग में विश्वास नहीं चौथे यह कि जो मंत्र ऋषीश्वर और भगवद्भक्तों ने मूलग्रंथों में गुप्त अथवा प्रकट लिखेहैं वे मन्त्र उन तर्जुमों में नहीं कि जिसके प्रभाव से मन भगवत्में लगै इस भेदकरके उनका पढ़ना उचित नहीं और अच्छे प्रकार विचारकर देखिये कि जिन लोगोंने संस्कृत व भाषा थोड़ीसीभी पढ़ीहै वे सबलोग थोड़े बहुत भगवत्के मार्गपरहैं और जिनलोगोंने केवल तर्जुमे भागवत् व रामायण व महाभारत व योगवाशिष्ठ व दूसरे सैकरों किताब तर्जुमा की हुई विरुद्धधर्मियों की पढ़ीं और अभ्यास किया कभी किसीको कुछभी गुण न किया भला यहबात रहनेदीजिये जो ऐसाही हठ है कि बिलातर्जुमे फ़ारसी के हमारा अभिप्राय नहीं निकलता तो तर्जुमा हिन्दुओंका किया भी तो प्राप्तहै उनको क्योंनहीं पढ़ते जैसे रामायण तर्जुमा किया टोडरमल व तर्जुमा भागवत् किया हुआ एक कोई कायस्थका व तर्जुमा गीताकिया कोई काश्मीरीका ऐ बहुत लोगों के ॥ इति ॥

और तीर्थ सत्संगसे हेतु स्नान गंगा व यमुना व पुष्कर आदि और यात्राआदिसे है उसमें कोई का यह सिद्धान्तहै कि तीर्थोंको भगवत् ने यहप्रताप दियाहै कि उनके दर्शन और स्नान

करनेसे हृदय पवित्र होजाताहै और कोई यह कहतेहैं कि भगवद्भक्त लोग एककोई नियत समयपर एक जगह इकट्ठे होतेहैं इस हेतु उसस्थानका नाम तीर्थ कहाजाताहै और उन भक्तोंके संगका पुण्य और जलकेस्नान आदिके प्रभाव कि जिस जलमें चरण उन भक्तोंके पड़ें मनुष्योंको चित्त की उज्ज्वलता प्राप्त होतीहै इस वचनसे शास्त्रने तीर्थोंसे अधिकबड़ाई भगवद्भक्तिकी प्रकटकी परन्तु दोनोंदशा में निस्सन्देह तीर्थोंकेसत्संग व यात्रासे ये मनुष्य पवित्रहोकर भगवत् में लगजाते हैं और रीति तीर्थ-स्नानकी धामनिष्ठामें लिखीजायगी प्रथमप्रकारके सत्संगका निर्णयतो होचुका अब वर्णन द्वितीयप्रकारका होताहै और जो महिमा सत्संगकी निष्ठाके प्रारंभमें लिखीगई और कुछ वर्णन ग्रन्थके आदिमें हुआ और सब शास्त्रों ने जो सत्संग वर्णन किया उसका तात्पर्य्य भगवद्भक्तोंसे है निस्सन्देह जिस किसीने भगवद्भक्तोंका सत्संगकिया अपने बाञ्छितअर्थ को प्राप्तहुआ भक्तोंकामिलना भगवत्हैं सो भगवत्का वचनहै कि एक क्षण सत्संगके सम्मुखपर स्वर्ग्ग व अपवर्गका सुख बराबर नहींहोसक्ता दशमस्कन्धका वचनहै कि इससंसारसे छुटने का और अपवर्ग व मुक्ति के प्राप्तहोनेका सत्संगही उत्तम उपायहै एकादश में भगवत्का वचनहै कि मैं योग इत्यादि से वश नहीं होता परन्तु सत्संग से व पद्मपुराण व स्कन्दपुराण व विष्णुपुराण आदिमें भी यही निश्चय वचनहै अबयह सन्देह उत्पन्नहुआ कि सब साधन तीर्थादिसे जो भगवद्भक्तों के सत्संग को बड़ा व अधिक लिखा इसका कौन कारणहै सो यहहै कि प्रथमतो भगवत् और शिवजीका वचनहै कि जहां भगवद्भक्त रहतेहैं तहां आप भगवत् विराजमान रहतेहैं सो जब इसपुरुषको भगवद्भक्तोंका सत्संग होगा निस्सन्देह भगवत् मिलजायँगे कि यहवृत्तान्त प्रचेता औरनारद जीकी कथा जो भागवतमें लिखीहै उससे अच्छेप्रकार समझनेमें आ-सक्ताहै दूसरे अन्य साधन जो तीर्थ व्रत व जप तप व नेम व संयम आदि सब ऐसे हैं कि अनुक्षण भक्तका मन उनमें नहीं लगता दूसरी ओर होकर संसारके स्वादमें जा लगताहै और भगवद्भक्तों के सत्संगसे अ-नुक्षण भगवत् में रहताहै इस हेतु कि वहां भगवच्चरित्र और कथा व सेवा व भजन कीर्त्तनआदिके विना और कुछ काम नहींहोता जोकिसी कालमें मनदूसरीओर गया तो फिर भगवत्के सम्मुख होजाताहै तीसरे

अन्य साधन तीर्थ शास्त्रआदि का यह वृत्तांत है कि कहीं भगवद्भक्तिका साधन वस्तु प्राप्ति है पर साधनेवाले जो भक्तजन सो नहीं और कोई जगह भक्त साधना करने को उद्यत हैं परन्तु उनको पद्धति नहीं मिलती और कोई जगह ऐसा संयोग है कि भक्त और पद्धति सब एकत्रहैं परंतु सन्देह निवृत्त करनेवाला कोई नहीं अथवा कोई ठग उस पंथका जैसे काम क्रोध लोभ मोह मद मत्सर ईर्षाआदि आयगया कि उसने सब पूंजी बटोरीहुई को एक निमिषमें लूटलिया सो दूसरे साधन तो इस हेतु न्यून-तरहैं कि वह सब वस्तुके प्राप्त करनेवाले नहीं और भगवद्भक्तों के स-त्संगको इस हेतु बड़ा कहें कि जिस वस्तु का प्रयोजन लगे वह सब वस्तु एकजगह प्राप्तहै और वास्ते पहुंचाने भगवत्पद तक भक्ति ज्ञान वैराग के ओड़ा लेकर सम्मुख हैं सो जिस किसी को चाह भगवत्भक्तिकी है और इस संसारसमुद्रको उतरना चाहताहै तो सत्संगकरे और यह भी जानले कि सत्संग सब जगह वर्त्तमान व प्राप्तहै परंतु यह अपनी कुतर्क व कुचेष्टा है कि सूझनहीं पड़ती काहेको आप पाप और अवगुण युक्त होनेके हेतु से दूसरे कोभी अपनेही सदृश जानते हैं और उसके अच्छे स्वभाव और भजन आदि पर दृष्टि न करके और उसके अवगुण व शुद्ध स्वभाव के अङ्गीकार की दृष्टि होय तो सत्संग के सब जगह प्राप्त होने में क्या सन्देह है जो ऐसेही दुर्भाव व अवगुण दूषण देखनाहै तो कोई जड़चेतन अवगुण रहित नहीं इसके सिवाय तीर्थ के स्थानों में जैसे वृ-न्दावन व चित्रकूट व प्रयाग व अयोध्या व काशी व जगन्नाथपुरी व उज्जैन व काञ्ची व हरिद्वार व पुष्करआदि सैकड़ों स्थानपर सत्संग जैसा चाहे मिलताहै परन्तु भक्त यह बात समझेरहैं कि सत्संगका यह अर्थ नहीं है कि चलो साहिब कोई साधु आये हैं दर्शन कर आवें सत्संग उसका नाम है कि भक्तों को भगवद्रूप जानकर उनके वचनपर ऐसा विश्वासपक्काहो कि कबहीं वेविश्वास न होयँ और वह सत्संगका अनु-क्षण तबतक अत्यन्त प्रयोजन है कि जबतक अच्छेप्रकार दृढ़स्थिर भ-गवच्चरणों में न होजावे अब अधिक विस्तार करना प्रयोजन नहीं नारद और व्यास वाल्मीकि अजामिल शबरी बारमुखी व अगस्त्य व प्रचेता व ध्रुव व प्रह्लादआदिक सहस्रोंभक्तोंकी कथा जो पुराणोंमें लिखी है और कोई इस भक्तमाल में पढ़सुनलेवे कि सत्संग के प्रभाव करके

कैसे कैसे पापियों को क्या क्या पदवी प्राप्तहुई है सो वह सत्संग इस समय इस मनुष्य को विना प्रयास मिलता है जैसे भगवत्की सेवा में निष्ठा भगवद्भक्तों को होती है जो वैसेही भगवद्भक्तोंकी सेवामें तन मन लगै भागवत् में भगवत्का वचन है कि ऋषीश्वर मेरे भक्त मेरा शरीर हैं और वेही पूज्य हैं और उपाय छोड़कर उनहींकी सेवाकर पद्मपुराण में भगवत्का वचनहै कि मेरे भक्तों को भोजनकरावना व सेवाकरना वह भोजन व सेवा निज मुझको होताहै और जिसप्रकार मेरेभक्त मुझको भोजन कराये विना कुछ नहीं खाते इसीप्रकार मैं विना उनको भोजन कराये कुछ नहीं खाता और पुराणों में भगवत् ने कहाहै कि जो मेरे भक्तों के भक्तहैं वे मेरे भक्तहैं फिर भगवत्का वचनहै कि गङ्गातो पाप और चन्द्रमाताप व कल्पवृक्ष दरिद्रको दूर करतेहैं और मेरेभक्तों का दर्शन कैसा है पवित्रकिये तीनों दुःख क्षणमात्रमें दूर होजाते हैं फिर ऋषीश्वरों का वचनहै कि तीर्थादि पवित्र नहीं करसक्ते जैसा कि संत शीघ्र इसलोक और परलोकसे निर्भय और पवित्रकरदेतेहैं इसप्रकार शास्त्रोंका वचन है सो जिस किसीको चाहना भगवत्के नित्यानन्द और संसारसे छुटनेकी है उसको भगवद्भक्तोंकी सेवा मन व प्राणसे उचित है और कुछ विचार जातिपांति आदिका तनक नहीं चाहिये जो कोई भी जाति भगवद्भक्त होवै वह भगवद्रूप है महाभारत में भगवद्वचन है कि जो कोई हरिभक्तों में जाति आदिका विभेद करके उनकी सेवा नहीं करते वे नास्तिक हैं साधुसेवा के पंथमें पांच ठगहैं एकतो जातिकागर्व कि साधुको छोटी जाति जानकर सेवा न करै दूसरे विद्याका गर्व कि नहीं पढ़े हुये साधुको छोटा जानै तीसरे ऐश्वर्य्य का गर्व कि उसके मदमें कुछ भलाबुरा समझ न पड़े चौथा साधूका कुरूप देखकर सेवासे विमुखरहै अथवा रूपके गर्वसे कुछ ध्यान में न लावै पांचवां वस्त्र शरीर का कि उसके गर्व से भी भले बुरेका विचार नहीं रहताहै सो इन पांचों गर्वको तो ताकपर रखदेवै और वे चरित्र भगवत्के अनुक्षण स्मरण रक्खे कि भगवत् ने आप वाल्मीकिश्वपचको युधिष्ठिरकी निज रसोई के घरमें बैठाकर द्रौपदी के हाथ से सेवाकराई और आप श्रीरघुनन्दन स्वामीने भीलनीके जूठे फल खाये एक साधुसेवीका वृत्तान्तहै कि वह दुःखी था अपनी स्त्रीको साधुकी सेवाके निमित्त दृढ़ायके कहा उसने अपने शिर

दुखने का वहाना किया संयोगवश उसीसमय दामाद आगया वह स्त्री तुरन्तउठी और मोहनभोग आदिक बनानेलगी साधुसेवीने तुरन्त उस स्त्रीको घरसे निकालदिया और कहा कि जब मेरा दामाद आया तबतो शिर दुखनेलगा और जब तेरा दामादआया तब वह शिरका दुखना तुरन्त दूरहुआ तात्पर्य्य यहकि जिसप्रकार कामी और झूठेको स्त्री और लोभी का द्रव्यप्यारी है इसीप्रकार भगवद्भक्तों को अपना निजप्यारा समझकर और सांचीप्रीति जानकर तनमनसे सेवाकरै जिसको भगवद्भक्तों में प्रीति नहीं कदापि कोई मनोरथ इसलोक और परलोक का सिद्ध न होगा और आजतक ऐसा संयोग कबहीं नहींहुआ कि भगवद्भक्तोंकी सेवा करनेवालेका मनोरथ इसलोक व परलोकका सिद्ध न हुआ हो जो कोई भक्तों से विमुखहैं और निन्दाकरते हैं भगवत् के घरसे निकालेहुये हैं जो भक्तों के साथ शत्रुता करते अथवा दुःखदेतेहैं उनका नाशहोजाताहै रसातलको जातेहैं रावण दुर्य्योधन कंसआदि भगवद्भक्तों के साथ बैर ठानकर ध्वंसको प्राप्तहुये भगवत्को हिरण्यकश्यप पर कबहीं क्रोध न आया देवता सबदुःख रोये भी परन्तु जब प्रह्लाद भक्त को दुःखदिया तब नहीं सहिसके तो दूसरोंकी क्याबातहै भगवद्भक्तों के द्रोही तीनों लोकमें दुःखपाते हैं जिसप्रकार दुर्वासा कि जहांगये किसीने शरण नहींदिया अब इसदासकी विनती भगवद्भक्तोंकी सेवामें यहहै कि कुछ कृपाकी दृष्टि इस अपराधकर्म्मी परभी होवै जो मेरे अपराधों पर निगाहकरोगे तो उसवचनमें विरोध आवैगा कि साधु सजलमेघके सदृशहैं शत्रु मित्र साधु असाधुपर बराबर दयाकरतेहैं इसहेतु अपने ऊपर कृपादृष्टि योग्यहै मेरे अपराधोंपर दृष्टि योग्य नहीं सिवाय इसके एक प्रकारसे आश्रितभी हैं कि तुम्हारा भाटभीहूं कदाचित् यह कहोगे कि यह विरद रचना तेरे अन्तष्करणसे नहीं ऊपरही गावताहै तो यह विनयहै कि सबभाट ऊपरही स्तुति विरदकी किया करते हैं परन्तुयजमान उनको विमुखनहीं करता व इसके ऊपर एक सम्बन्धभी तुम्हारे चरण से है कि श्रीकृष्णमहाराज का घरजाया चेराहूं जो यह कहोगे कि ऐसे पूर्णब्रह्म सच्चिदानन्द घनका दासहोकर हमसे क्या चाहना करताहै और किसकाभयहै सो विनय यह है कि अवगुणी चेराहूं स्वामीकी आज्ञाके अनुकूल आचरणनहीं और भूलकरभी सम्मुख कबहूं नहीं होताहूं सब

बातें बतानेसे मेरा तात्पर्य्य यह कि कोई प्रकारसे यह दुष्टभाग्यहीन मन भगवच्चरणों में लगै और जो मन उससमाजके चिन्तवन में लगै तो आनन्द पदके प्राप्तमें क्या सन्देहहै कि अयोध्या निजधाममें कल्पवृक्ष के नीचे महामण्डप है वहां पुष्पकसिंहासन पर कि जिसका प्रकाश करोड़ों सूर्य्य के समानहै आप वसन आभूषण समाजी अंगपर सजेहुये वीरासन विराजमानहैं और वामभागमें श्रीजनकनन्दिनी शोभितहैं ऐसा मनोहररूप अपार है कि लक्ष्मी और विष्णुभी लज्जित होकर क्षीर समुद्र में जा छिपे भरत लक्ष्मण शत्रुघ्न सेवामें तत्पर हैं चारों वेद व नारद व सनकादिक व ब्रह्माआदि स्तुति करते हैं और एकओर सुग्रीव विभीषण आदि और दूसरी ओर सब राजमंत्री और सामनेहाथ बांधे हनुमान्‌जी खड़े हैं॥ कथा विदुरजीकी॥

विदुरजी रहनेवाले गांवछटेरा राज्य जोधपुर साधुसेवी हुये एकसाल अवर्षणहुआ खेत सूखगये साधुओंके भोजनकी चिन्ता करके घबराने स्वप्नमें आज्ञाहुई कि सूखा खेतकाटके मलके झाड़ो दो हज़ार मन अन्न होगा वैसेही करनेलगे सबलोग हँसी करते रहे दोहज़ारमन अन्नढेर लगा क्या आश्चर्य्य कि साधुसेवा इसलोक व परलोकमें सूखे वृक्षको फल फूल लगादेती है॥ कथा भगवान्‌दासकी॥

ठाकुर भगवान्‌दास भीमसिंह राजपूत तोदरके बेटे परमभक्त भगवद्भक्तोंकी सेवामें सावधान व दृढ़ विश्वास करनेवालेहुये प्रतिवर्ष मथुराजीमें जायके साधु ब्राह्मणोंका भण्डारा बड़ा करतेरहे और रास विलास उत्साहमें बड़ारुपया उठायके घर चलेआतेरहे समयके फेर करके व धन के बहुत उठावनेसे धनका संकोच आयगया तौभी ऋण लेकरके मथुरा आये कुछ कमकरके देनेका विचारकिया तब चौबेलोग अड़े कि जितना मिलतारहा उतनाही मिलेगा तो लेंगे ठाकुरसाहबने सब रुपया जो पासथा सबकेआगे रखदिया तब यह ठहरा कि अब इसका सूका अन्न साधु ब्राह्मणोंको बँटजाय एक कोठरीमें नाज व रुपया इकट्ठेकरके बँटनेलगा भक्तोंके द्रोहियोंने यह विचारा कि इनकानाम हँसाजाय सो एकसीधे की जगह दशसीधे दिलानेलगे प्रभु भक्तवत्सलने ऐसी लज्जा भक्तकी राखी कि अनगिनत लूट चांदी सोने की होगई द्रौपदी के चीरकी नाईं कोई वस्तु न घटी सब द्रोही लज्जितहुये भक्तिपर सबको निश्चयहुआ॥

कथा वारमुखी की॥

एक नगर वलाद दक्षिणदेश में वारमुखी बड़ी धनवाली रहतीथी उसके द्वारपर एक वृक्ष हरितछाया नीचे सुन्दर वेदी बड़ी विमल बनी हुई रही एकदिन साधुलोग टिकगये सन्ध्याके समय वारमुखी द्वारपर निकली देखा विचारकिया कि मेरानाम सुनैंगे तो साधु उठजायँगे अपने घर में छिपगई और रातके समय कुछ मोहर रुपैया एकथाली में रखके भेंटलेकर साधों को दण्डवत् किया साधों ने जबसब वृत्तान्त जातिका व धनका सुना तब उपदेशदिया कि एक मुकुट बनाकर रंगनाथकी भेंटकर तब धन शुद्ध होजायगा तब उसने तीनलाख रुपयेका एक मुकुट ज़ड़ाऊ बनवाया और बड़ीप्रीति व विश्वाससे नाचती गाती बाजे बजवाती मुकुट लेकर चली जब श्रीरंगनाथके मन्दिर के समीप पहुँची तब रजोधर्म होगया तब शोकसे विकल होकर गिरपड़ी उसके प्रेमको अन्तर्यामी प्रभुने देखा तो पुजारियों को आज्ञाहुई उन लोगों ने सामने प्रभु के पहुँचादिया जब मुकुट पहिनाने को हाथ उठाया तो सिंहासन ऊंचा तिससे हाथ न पहुँचा शोचतीही रही तबतक रंगनाथजीने अपना शिर झुकादिया उस बड़भागिनीने पहिनादिया और महा बड़भागिनियोंकी गणना में विख्यातहुई अहो धन्य है कि एकक्षणमात्र के सत्संगकी यह महिमाहै हे मेरे मनकठोर तुझको भी धन्यहै कि ऐसे चरित्रोंको लिख पढ़केभी कोमल होकर प्रभुकी ओर सम्मुख न हुआ॥

कथा तिलोकजीकी॥

तिलोकजी जातिके स्वर्णकार पूरबदेशके एक नगरमें हुये भगवद्भक्तोंकी सेवा में बड़ीप्रीति रही जो कुछ उद्यम में लाभहोता सो सेवामें लगादेते रहे उस देशके राजाने लड़की के विवाह समय बहुत रुपया गहना बनानेको दिया सो सब साधुसेवामें उठादिया तगादा हुआ तब आजकालह करके जैसी सुनारोंकी चालहै टालतेगये जब सम्मुखपहुँचा तब परभातको देना निश्चय करके चलेआये साधु आये उनकी सेवामें लगे रातको राजाका डरहुआ भोरही एक जङ्गलमें छिपकर बैठरहे भगवत् अपने दासोंकी लज्जा रखनेवाले सब गहना तिलोकजीका रूप धर राजाके पास लेगये इनाम लेआकर तिलोकजीके घर महोत्सव करके साधु ब्राह्मणों को भोजन कराया प्रसादलेकर तिलोकजीको जाकर

दिया तिलोकके घर महोत्सवहुआ तुमको प्रसादहै उन्होंने पूछा कौन तिलोक जवावदिया जिसके वरावर तिलोकमें कोईनहीं समझगये प्रभु के चरित्रहैं घरआये साधुसेवा व भजन सुमिरनमें मग्नहुये॥

कथा तिलोचनदेवकी॥

तिलोचनदेव वैश्यवर्ण चेले ज्ञानदेव के भगवद्भक्त विख्यात हुये विष्णु स्वामी सम्प्रदायके थे साधुसेवामें बड़ाप्रेम रहा एक स्त्री व आप दोहीरहे चिन्तना करतेरहे कि एक चाकर ऐसा मिलता कि साधुओंके मनकी जान जान सेवा करता भगवत् आप एकटहलुआका रूप वना कर टूटीजूती फटीकमलीसे आन पहुँचे तिलोचनजीने उनकाघर मा वाप सव पूछा तव उत्तरदिया मा वाप घरवार कुछ नहीं रखता टहलुआ हूं पांच सात सेर खाताहूं चारोंवर्णकी पद्धतिमेरे हाथमें है भक्तोंकी सेवा अच्छी करसक्ताहूं अन्तर्यामी नामहै तिलोचन वहुत आनन्दहुये नहलाकर कपड़े वदलाकर रक्खा सेवा भक्तोंकी सौंपी स्त्रीसे भोजनको वहुत समझायके दृढ़ाय दिया अन्तर्यामी ने सवप्रकारसे साधुओंकी ऐसी सेवाकरी कि तिलोचनजीका नाम विख्यातहुआ तेरह महीने इसी प्रकारसे व्यतीत हुये एक दिन तिलोचनजीकी स्त्री परोसिनके घरगई उसने दुर्बलताका कारण पूछा इसने कहा कि रातदिन आटा पीसते रोटी पोते गत होताहै मेरे स्वामी ने एकटहलुआ रक्खाहै वहुत खाताहै इतना मुखसे निकलतेही अन्तर्य्यामी अन्तर्द्धान होगये इसहेतु कि पहिले दिन वहुतभोजनका गिल्ला होनेपर नहीं रहने का प्रवन्ध करलियाथा पीछे तिलोचनजी शोकयुक्तहुये तीन दिन विना अन्नजल पड़ेरहे तव आकाश वाणी हुई कि तिलोचनजी तुम्हारे मनकाहेतु बूझकर वह टहलू में था जो तुम्हारी इच्छा अवभी हो तो हमको अङ्गीकार है तव तिलोचनजी को वड़ापश्चात्ताप हुआ सन्तों ने समझाया सेवा स्मरण भगवत्की करनेमें लीनहुये॥

कथा जस्सूस्वामी की॥

जस्सूस्वामी रहने वाले दुआवे गंगा व यमुना के वीचके भगवद्भक्त हुये खेती से जो लाभहो सो साधुसेवामें उठादेते एकसमय चोर उनके वैल चुरालेगये भगवत्ने जैसे व्रजमें वैसेही वछरावालक रचकर ब्रह्मा का मोहदूरकिया तैसेही वैल जस्सूस्वामी के यहां प्राप्तकरादिये फिर चोर

सब आये यहां देखा कि वही बैलहैं तब घरदौड़ेगये वहां वही बैल देखा फिर दौड़आये यहां वही देखा कईबार दौड़े तब चकित होकर स्वामी से सब वृत्तान्त कहा स्वामी ने कहा ये भगवत् के चरित्र हैं तुम अपना काम करो हम अपना काम करते हैं चोरोंको दृढ़ विश्वासहुआ बैललाकर स्वामीको दिये तब मायाके बैल गुप्त होगये वो चोर चोरीका धंधा छोड़कर स्वामी के चेले होगये और भगवद्भजन करनेलगे ॥

कथा रामदासजी की ॥

रामदासजी रहनेवाले ब्रजके परमभागवत और साधुसेवी ऐसेहुये जिसप्रकार कमल सूर्य्यको देखकर फूलताहै इसीप्रकार हरिभक्तको देख कर प्रसन्नहुआ करतेथे एकबेर कोई साधु रामदासजीकी बड़ाई सुनकर आया पूंछा रामदास कहां हैं रामदासजी उठे और उस साधुके चरणधो चरणामृत लेकर विनय किया कि रामदास भी आयाजाताहै आप भोजन प्रसादकरैं साधुने कहा हमको रामदास से मिलना है तब विनय किया कि रामदास यही सेवकहै साधु बहुत प्रसन्नहुआ चरणोंको पकड़ लिया रामदासजी के लड़की के विवाहमें पकवान बनके धराथा साधुकी जमात आगई ताला तोड़कर साधुओंको भोजन करायदिया साधुसेवा व विहारीलालजी के स्मरण भजन में सारा वयक्रम व्यतीत किया ॥

कथा सन्तभक्त की ॥

सन्तभक्त रहनेवाले जोधपुरके भगवद्भक्त साधुसेवीहुये गांवों में से मांगलाते साधुसेवा करते विख्यात होगये एकदिन साधुआये स्त्री सन्त भक्तकी घरमेंरही पूंछा संतभक्त कहां हैं उसने उत्तरदिया चूल्हेमें हैं साधुओंने सुनकर राहली उधरसे सन्तभक्त जो मांगने गये थे आतेरहे वहां साधुओं ने पूंछा कहां गयेरहे सन्तभक्तकी स्त्री ने जो उत्तर दियारहा सो सेवाके प्रभाव करके हृदय विमल होरहाथा जानगये थे सोई बात बोले कि चूल्हे में गयेथे साधु चकितहुये तब कहा कि चूल्हे में जानेसे यह तात्पर्य्य है कि प्रभातही से साधुओं को रसोई की चिन्ता होती है कि कबहोगा कि उनका सीथ प्रसाद मुझको मिलैगा साधुलोग सुनके बहुत आनन्दहुये उनके घरगये भोजन भजन सत्संग के सुखमें मग्नहुये ॥

कथा सेनभक्त की ॥

सेनभक्त जात हज्जाम चेला स्वामी रामानन्द के रहनेवाले माधवगढ़

के ऐसे प्रेमीभक्त हुये कि जैसे गऊ अपने बछड़े की पालना करती है इसी प्रकार उनकी पालना और सहाय प्रभुनेकरी वृत्तान्त यहहै कि सेनसाधु सेवीरहे एक दिन तेल लगाने राजाके जातेरहे वाटमें साधु मिलगये उनको अपने घरपर लाकर भोजनआदि सेवामेंलगे राजाका भय कुछ न रहा जब राजाकी सेवाका समयहुआ तब आप भगवत्सेनभक्तका रूप धरके राजाकी सेवा तेल मर्दन आदि करके राजाको प्रसन्नकर चलेआये पीछे सेनपहुँचे विलम्ब होनेका अपराध क्षमाकराने लगे भगवत्स्पर्श होनेसे राजानेप्रभाव भक्तिका जानलिया सेनकेचरणोंमेंगिरा उनकाचेला होकर भजनकरनेलगा अबतक उनके वंशमें सबसेनवंशके चेलेहोते हैं ॥

कथा सदाव्रती की ॥

साहूकार सदाव्रती वैश्यवर्ण परम भगवद्भक्तहुये साधुसेवा बड़ीप्रीति व विश्वाससे किया करतेरहे एक साधु उनके घरपर टिका था साहूकार का एक छोटा लड़का कि जिसकी साधुकेसाथ प्रीति होगई उस साधुके पास खेलाकरता था उसको एक दिन साधुने जंगल में लेजाके मारकर गाड़दिया जब सांझतक लड़का न आया तब उसकी माने पुकारकरि ढूंढ़नेदौड़ी तब एक संन्यासीने साहूकारको वह जगह जहां लड़का गाड़ारहा दिखादी और कहा जो साधु तुम्हारे घरमें रहताहै उसी ने यह कर्म कियाहै साहूकारने मरना लड़केका अपने कर्मका फल समझ दण्ड देना उस साधुका सेवा धर्म से अयोग्य जानकर उस बातके छिपाने को यह युक्तिविचारी कि उसी संन्यासी को पकड़ा कि तैंनेही मारा है जब संन्यासी व्याकुल हुआ तब साहूकारने कहा कि यह बात मतकहे और इसनगरसे चलाजा तो तुझको छोड़देंगे उसने अंगीकारकिया तब छोड़ दिया जब साहूकारने उससाधुको लज्जितदेखा तब उसकेसंकोच मिटाने के हेतु अपनी स्त्रीसे विचार पूछा उसने कहा कि जो लड़की बिनब्याही है उसके साथ ब्याह दीजाय तो भरोसा साधुके रहनेकाहै दूसरा उपाय देखनहीं पड़ता साहूकार अपनी स्त्रीपर बहुत प्रसन्न हुआ और धन्य मानकर उस साधु को बुलाकर पहिले अपने भाग्यका खोट व हरिकी इच्छाकी बात सब कहकर अपना विचारथा सो कहा वह साधु अपने अपकर्म से महाग्लानि को प्राप्तरहा बोला हमारे ऐसे अधर्मपर ऐसी दया अयोग्य है यातनाके साथ वध उचितहै साहूकारने समझा बुझा

के सावधान करके अपनी लड़की से विवाह करदिया यह वृत्तान्त व यश संसारमें फैला तो साहूकारके गुरुनेभी भगवत्की आज्ञासे आय के साहूकारका घर पवित्र किया साहूकार ने सेवापूजाको बड़े आनन्द व हर्षसे किया गुरु ने पूंछा कि तुम्हारा लड़का कहां है साहूकारने जवाबदिया कि थोड़े दिनहुये मरगया पूंछा कैसे मरा साहूकार बोला कि हे महाराज आप तो जानतेही हैं कि संसार इसजगत्का नामहै मृत्युका कौन कारण वर्णनकरूं गुरु ने उसीकी परीक्षाकरी तब लड़का घरतीसे निकलवाकर जिलादिया सबलोगों को विश्वासभक्ति और साधुसेवाका हुआ॥

कथा केवलकूवांकी॥

केवलकूवां जातके कुम्हार ऐसे परमभक्त साधुसेवी हुये कि अपने कुलको पवित्र करके भगवत्को प्राप्त करदिया एकबेर उनके घर साधु आये घर में कुछ न था ऋणभी न मिला नितान्त कुवां खोददेने के प्रबन्धपर एक दूकानदारने सामग्री रसोईकीदी साधुओंकी सेवाकरी जब कुवां खोदने लगे तब दशबीस गजपर रेतनिकला टूटके सब केवलजी परपड़ा मरा जानकर सबलोग चलेआये कि हजारोंमन मिट्टीके नीचे कब जीतेहोंगे एकमास पीछे किसीने वहां शब्द रामराम सुनकर गांव में सबसे कहा सबगांव आया हाथोंहाथ मिट्टी टालकर देखा केवलजी आसन लगाये बैठे हैं एकलोटा जल आगेधराहै एक ओर महीने दिन के भोजनके पनवाड़े हैं बाजा बजाते घरलाये मिट्टी गिरनेसे कुछ कुबड़े होगये तबसे केवलकूवां विख्यातहुये किसी समय साधु भगवन्मूर्त्ति स्थापन करनेके लिये जातेरहे केवलजीके घर उतरे वह मनोहररूप देखकर केवलजीको इच्छाहुई कि हमारे यहां रहते तो अच्छा था प्रभातको साधुमूर्त्तिको उठा थके न उठी वहांईरही स्थापन करके सेवा करने लगे भसेरागांव जहां केवलजी रहे वह मूर्त्ति विराजमान है अब तक केवलजीके घरमें है अपने भक्तके हृदयकी प्रीति जानकर रहगये इस से जानराय उसमूर्त्तिका नामहै एक बेर केवलजी को शङ्ख चक्र लेनेको द्वारावती जानेकी इच्छाहुई भगवत ने आज्ञाकी तुमको घरबैठे सब हो जायगा कहीं मतजाओ शरीर पर सब चिह्न होगये ऐसे ऐसे कितनेही प्रभाव केवलजीके हैं समुद्र व गोमतीके बीचमें बड़ीरेती है जब लहर आवे तब समुद्र गोमती मिलकर रेतीजल में होजाय फिर खुलजाय

एकसमय लहर आना बन्दहोगया रेतीखुली रहगई हवासे रेतीके उस देशकेलोग दुःखीहुये केवलजीकी मालागई तबसे समुद्र गोमती में मिलनेलगा यह प्रभाव देखकर बहुतलोग चेले केवलजी के हुये भक्तिकी रीति उस देशमेंचली एकदिन केवलजीके घर साधुआये उनके निमित्त उनकी स्त्रीने सूखीरोटी बनाई संयोगवश उसस्त्रीको भाई उसीसमय आगया उसके निमित्त खीरबनाई केवलजी देखकर उसको पानीलाने को भेजा खीर साधुओंको खिलादी स्त्रीने आनकर क्रोधकिया उसको घर से निकालदिया उसने दूसरा खसमकरके बेटा बेटी जन्माया एकसमय अकालपड़ा तब अन्नकी व्याकुलतासे केवलजीकेयहां आई देखा भंडारा चेतरहाहै केवलजी को दयाआई बोले कि अरी निगोड़ी जो खसम करना अंगीकार था तो ऐसाखसम क्यों न किया जैसा मेराखसमहै कि तेराखसमभी जिसका भिखारीहुआ केवलजी साधुओं के आने जानेकी राहमें झाड़ूदेना उसको कहदिया सुकालहुआ तब बिदाकर दिया॥

कथा ग्वालजी की॥

ग्वालजी परमभक्त साधुसेवीहुये अपने उद्यमसे जोकुछ लाभहोता साधुओंकी सेवाकरते एकसमय बनमें साधुसेवामें रहे उनकी भैंस चोर लेगये घरमें अपनी मा से कहा कि एक ब्राह्मण घीकेदाम समेत भैंसको देनेका प्रबंध करके लेगयाहै मा उनकी जानगई पर कुछ न बोली पुत्र स्नेह करके एकदिन दीपदानको चोरोंने भैंसके गलेमें चांदीकी हँसुली डाली भगवत् जोकि ब्राह्मणोंके ब्राह्मणहैं रस्सी तोड़कर भैंसको ग्वाल जीके घर पहुँचाया ग्वालबोले री मा देख कैसासच्चा ब्राह्मणहै घीके दाम की हँसुली समेत भैंस पहुँचाय गया॥

कथा गोपालजी की॥

गोपालजी भक्त कृष्णउपासक जयपुर के राज्यमें हुये साधुसेवा की उनकी बड़ी ख्याति हुई तब उनके कुल में कोई विरक्त होगया रहा सो परीक्षा लेनेको आया अच्छेप्रकार उनकी सेवाकरी घरमें भोजनकराने को लेगये उन्होंने कहा स्त्रीको हम नहीं देखते गोपालने कहा सब अलग होजायँगी भोजन करनेलगे तो झरोखेसे भक्तकी स्त्री दर्शन करने लगी तब विरक्तने एक तमाचा गोपाल के मुहँपर एकओर मारा दूसरी

और बाक़ीरहा उसे फेरकर विनयकिया कि इसको भी पवित्र करिये वह विरक्त बोला कि ऐसेही वंशसे कुलका उद्धार होताहै ॥

कथा गोपाल विष्णुदास की ॥

गोपालजी रहनेवाले बावली काशीके समीप व विष्णुदास रहनेवाले काश्मीर देश दक्षिणके दोनों गुरुभाई भक्तोंकी सेवा परमभावसे करते थे और जो कुछ धर्म अच्युतगोत्रके कुलको चाहिये सो दोनों भाइयोंने ऐसा पालन किया कि विख्यात होगये भंडारे महोत्साहमें जो कोई उनको बुलावै तो गाड़ी में सामग्री भरके लेजाते कि कोई बातकी घटीआने से भंडारेवाले की निन्दा न होय गुरु उनके सिद्ध थे दोनों भाइयों ने विनय किया कि आज्ञाहोतो महोत्साह करें गुरुने आज्ञादी औ बुलानेके निमित्त अपने चारोंओर जल डालकर बोले कि तुम सामा महोत्साह ो बनाओ जो दिन उत्साहकाहै उसदिन सबसाधु आवैंगे गुरुके वचन र निश्चय कर किसी को बुलाने को कहीं न भेजा सामग्री को इकट्ठा किया उस दिन पर सारे संसार के साधु पहुँचे सबकी रीति मर्यादकर ण्डारा बड़ी धूमधाम से हुआ पांच दिनतक भांति भांति के भोजन रवाये सबको वस्त्र द्रव्य भेंटकिया गुरुने आज्ञाकी कि इस मेले में नामवजी व कबीरजी भी आये हैं पता बतलादिया व कहा कि दोनों महा रुषों का दर्शन करआओ दोनों भाई दौड़ नामदेवजीका चरण प्रीति पकड़लिया नामदेवजी कृपाकरके बोले कि जहां भगवद्भक्तोंकी प्रीति हीं तहां हम नहीं जाते जहां प्रीति व सेवा भक्तोंकी होती है तहां निचय करके आते हैं तुम्हारी साधुसेवा देखकर बहुत प्रसन्न हुये अब म कबीरजी का भी दर्शन करो तब दोनों भाइयों ने राहमें कबीर जी ा दर्शनकिया उन्होंने भी वैसेही कृपाकी विदा होकर दोनों भाई गुरु निकट आये भगवत् से मिलने का दृढ़ अवलम्ब साधुसेवा को समझकर स्मरण भजन करतेरहे ॥

कथा गणेशदेईरानी की ॥

रानी गणेशदेई मधुकरसाह राजा ओछड़ेकी धर्मपत्नी भगवद्भक्ति में दृढ़तरही राज्यसे जो मिलै साधुसेवामें लगाती एक साधुने धनके ठिकाने की जगह रानी से पूँछा रानी ने कहा साधुसेवा अन्य है तिसपर ानी की जानुमें छूरी मारकर वह साधु भागगया कितने दिनों रानी व-

होना रजोधर्म व बेचैनी शरीरकी करके राजाकी सेजपर न गई इसहे
कि यह घाव देखकर राजा सब साधुसे भाव घटादेगा नितांत ।
पास गई देखकर राजाने पूँछा तब वृत्तान्त कहा राजा अति प्रसन्नहु
अपना भाग्य सराहा ॥ कथा लाखाभक्त की ॥

लाखाभक्त हनूमान्वंशमें रहनेवाले मारवाड़देशके हंसके सदृशहु
राममंत्रोपासक साधुसेवी विख्यातहुये अकालपड़ा साधुओं का आन
जाना बहुत हुआ दूसरी जगह कहीं जा बैठनेका विचारकिया भगव
ने स्वप्न में कहा कि इसीजगह रहो प्रभात एकगाड़ी गेहूं और एक भैंस
आवेगी गेहूं तो कोठी में रखना जितना प्रयोजन होगा उतना निकलत
रहेगा घटेगा नहीं व घी दूध मठा भैंस से होगा जब प्रभातहुआ त
गेहूं व भैंस एक आदमी पहुँचायगया लाखा शुचि जीते होकर सा
सेवा करतेरहे उस भैंस व गेहूं के पहुँचाने के हेतु भगवत् ने यह चरि
किया कि किसी ने किसी को बोलमारा कि देखैंगे तू गेहूं व भैंस लाख
भक्तको देआवेगा वही देगया फिर लाखा साष्टांग दण्डवत् करते एव
सुमिरणी भेंट लेकर जगन्नाथजी गये थोड़ीदूर जब मन्दिर रहा जगन्ना
थरायने पालकी भेजकर दर्शनदिये सुमिरणी अङ्गीकारकी कुछदिन पुर
में रहे एक लड़की कँवारीरही साधुसेवा के लालच व्याह में चित्तउठ
विना रुपया कौन करे जगन्नाथजी ने आज्ञादी हमारे भण्डार से लेक
व्याह करो अङ्गीकार न किया पुरी से चलखड़ेहुये तब जगन्नाथजी ने
एकराजाको स्वप्नदिया तब उसने एकहज़ार मुद्रा भेंटकिया भगवत् आ
ज्ञाजानी अङ्गीकार किया घर आनिके लड़की का व्याह कर जो बचा
साधुओं की सेवामें लगाया ॥

कथा रसिकमुरारि की ॥

रसिकमुरारिजी परमभक्तहुये सेवा पूजा उत्साहसहित करते व प्रिया
प्रियतमके रंगमें रँगेयुगलछवि माधुरीके आनन्दमें मग्नरहा करते सदा
चरणामृतपीते जलनहीं एकसमय भण्डारा हुआ चरणामृत सन्तों का
लिया स्वादु न पाया कारण लेआनेवाले से पूछा तो एककुष्ठी साधुका
चरणामृत घृणासे नहीं उतारा था उसका भी चरणामृत उतरआया तब
स्वादुपाया एकसाधुने अपने सोंटेकाभी पारसमांगा न पाया तबजाकर
पत्तल आधीखाई रसिकमुरारिजीके शिरपर मारा उससमय बारह राजा

चेले मुरारिजीके उसको मनानेको उठे सबको मनाकरके आपजाकर वि-
नय करी कि आज सीथप्रसाद कृपाकर आपने दिया और दिन चरणा-
मृत मिलताथा यह कहकर कईपारस दिलवाये. एकबेर बगीचे में साधु
उतरे आपके जानेपर एकसाधु हुक्कापीतारहा संकोचकर छिपाया आपने
देखकर आदमियों से कहा हुक्का भरला दर्दहोताहै जब आया तब थोड़ा
पीकर उस साधुको दिया उसे साधुनेपिया एकबेर जागीरके गांव दोचार
रहे सो राजाने निकाललिये श्यामानन्द गुरुदेवने लिखा जिसदशामेंहो
वैसेही आओ भोजनकर उठे थे जूठेही हाथ मुंह गुरुके पास पहुँचे गुरु
ने प्रसन्नहोकर राजाकेपास जानेको आज्ञादी जब राजासे भेंटकरनेचले
पालकीमें तब राजाने एक बौड़हा मत्त हाथी राहमें छुड़वादिया सब भाग
गये कहारभी भागे तब हाथी से कहा कि हरेकृष्ण हरेकृष्ण क्यों नहीं कह-
ता सुनतेही वह हाथी शोरगुल सबछोड़कर चरणोंपर मस्तक झुकाकर
आँखोंसे जलप्रेमका गिरानेलगा गोसाईंने माला गले में पेन्हाकर भग-
वन्नाम कानमें उपदेशकर गोपालदास नाम रखदिया राजा सुनके दुष्ट-
ताछोड़ चरणों में आनकर गिरा अपराध क्षमा कराया चेलाहुआ गांव
छोड़दिये और भी दिये हाथी साधुसेवा करनेलगा बनजारों की जिन्स
लाकर भण्डारा महोत्साह करता सबकी हानिकावृत्तान्त जब पहुँचा तब
गोसाईंजी ने हाथीको समझादिया तबसे पांच सातसौकी जमात सा-
धुओंकी लेकर महन्तके डौलसे रमितकरनेलगा जहां पड़े तहां भेंट व
सामग्री सबकोई पहुँचाय देते यह वृत्तान्तसंसारमें विख्यातहुआ देशके
आमिलने भी सुना पकड़नेका उपायकिया हाथ न आया एककोई सा-
धुकारूप बनाकर सहज में ले आया कारागारमें बन्धनकिया वह गोपा-
लदास विना भगवत्प्रसाद व सीथप्रसाद के कुछ और नहीं खातारहा
तीनदिन विन अन्नजल खड़ारहा आमिलने कहाकि गंगाजी में लेजाव
गंगाजलतो पानकरैगा जब गङ्गामेंगया तो शरीरको छोड़ परमधामको
गया यहां एकबात अतिकोमल व सूक्ष्मभी है एककारण करके वर्णननहीं
करसक्ता सबकोई अपने अभिलाष व विश्वास के अनुकूल समझलेवें
गो ब्राह्मण व हरिभक्त और हरिभक्तों की कृपा॥

कथा मनसुखदासकी॥

मनसुखदास जी जातिकायस्थ ऐसे भगवद्भक्त हुये जिनको भगवत्

ने साक्षात् दर्शन दिये साधुसेवा में बडी प्रीतिरही कंगालता आयगई उपवासों से दिनकटतेथे ऐसीदशामें किसीदुष्टके बहकानेसे एक साधुने मिठाईका भोजनमांगा तब स्त्रीसे आपने उपाय पूंछा उसने नाकमें से नथ उतारकर हाथपर रखदी गहने धरके साधुसेवाको भगवत् मनसुखदास के रूपसे रुपयादेकर नथ बनियांके यहांसेलाये वह बड़भागिनी चौका देतीरही बोली पहिनादेव प्रभुने श्रीहस्तसे पहिनाई मनसुखदाससे स्त्री की भक्ति अधिकजानेकर स्त्रीको दर्शनदिया क्योंकि ऐसी दरिद्रतामें तन में केवल एकगहना सोभी नाकका जिसकरिकै सुहागिन कहलाती है सो उतारदिया साधुसेवाको किया तो भगवत् क्यों न दर्शनदें जब मनसुख दासने देखा सब वृत्तान्तसुना तो जाना भगवत्के चरित्रहैं सबबातें समझकर आनन्दमें मग्नहोगये अब अपने भाग्यको शोचनेलगे स्त्री के भाग्यको धन्यमाना अन्नजलछोड़कर दर्शनकी अभिलाषाकर भजनकरनेलगे स्वप्नहुआ काशीमें दर्शनहोगा वहां जाकर काशी में भजन करने लगे चतुर्भुज रूपसे प्रभुने दर्शनदिये वर यहीमांगा कि यही रूप मनमें बसारहै अन्तमें उसीरूपको प्राप्तहुये ॥

कथा हरिपाल निष्कञ्चन की ॥

हरिपालब्राह्मण ऐसेभक्त और साधुसेवीहुये कि धन सब साधुसेवा में उठायदिया ऋणसे जहांतक मिला वहभी साधुसेवामें उठाया भगवद्भक्तों को खिलादिया निष्कञ्चन विख्यात हुये तब चोरी ठगी करने लगे जिसको तिलक कण्ठी अथवा भक्तजानैं तिससे न बोलैं भगवत्सेवी मुख्य जानते तिसको हाथ न लगाते एकजमात साधुओंकी आई टिका कर भोजनकी सामग्री की चिन्तामें निकले कुछ हाथ न लगा विकलहुये भगवत्को भी भक्तोंके विकलहोने से चिन्ताहुई द्वारका से रुक्मिणीजी समेत चले श्रीकृष्णजी साहूकारके रूप रुक्मिणी साहूकारिणी के रूपसे आये निष्कञ्चनजी से कहा कि उस गांवतक पहुँचादेव एक रुपया दिया निष्कञ्चनजी तीर कमान लेकर चले पंथमें शोचनेलगे कि यह साहूकार अच्छा चिकना चाँदना मोटा ताजाहै और भगवत् से विमुख दिखाई पड़ताहै कि तिलकमाला नहीं रखता इसका माललेना चाहिये जंगलमें पहुँचे तब तरवारखींच डरवाकर सब आभूषण उतरवा लिये एक छल्ला साहूकारिणी की अँगुली में रहगया निष्कञ्चनजी उसको भी

बलकरके उतारनेलगे साहूकारिणी बोली अरे निगोड़े तू बड़ा बेदर्द व कठोरहै कि मेरा सारा गहना लेलिया अब एक छल्लेके कारण मेरी अँगुली मरोड़ता है निष्कञ्चनजी बोले चल बावली कहांकी कठोरता और कोमलता लाई है तेरा खसम तुझको सो छल्ले गढ़ादेगा मैं इस छल्ले विना दश हरिभक्तोंकी सेवा कहांसे करूंगा यह सुनतेही आप प्रभु प्रकट हो छाती से लगाकर राजा यह पदवी निष्कञ्चन को देकर अन्तर्द्धान होगये अब विचारना चाहिये साधुसेवा की महिमा को जिसके प्रभाव करके पापकर्म पुण्यरूप और भगवत् जो कालका भी काल और भय का भी भय है सो वशीभूत होकर भक्तके मनोरथ पूर्णकरने को निजधाम छोड़कर आता है॥ कथा हरीरामकी॥

हरीरामजी ऐसे भगवद्भक्त रहे कि भजनके आगे सर्वसाधन तुच्छ समझते रहे बड़े प्रतापी व बुद्धिमान् चतुर व प्रेमकी मूर्त्तिरहे और प्रिया प्रियतमके ध्यानमें दिन रात व्यतीत होतारहा व साधुसेवा का वर्णन उनका कौन करसकै एक साधुकी धरती एक संन्यासी ने राजाके समीप बैठने व राजाकी मित्रताके गर्व से छीनली उनने राजाके सन्मुख दुःख निवेदन किया तो धरती न मिली और धक्के पाये तब उस साधुने हरीरामजी से वृत्तान्त कहा हरीरामजीने राजाके आगे जाकर वृत्तान्त निवेदन कराया जब न माना तब वचन कठोर भगवद्भक्तोंका व दुष्टों का हिरण्यकशिपु आदि का कह धरती साधुको दिलाई सचहै कि सन्तजन काल यम किसी से नहीं डरते राजाकी कितनी बातहै॥

कथा रानी व राजाकी॥

एक राजा परम भागवत साधुसेवी ऐसाहुआ कि साधुओंकी भीड़ उसके यहां बनीरहतीथी अपने हाथ सेवा करता एक महंत परमभक्त और ज्ञानीसे बड़ी प्रीति होगई जाने नहीं देते एकवर्षपर्यंत महंत टिके रहे प्रभात जानेका निश्चय किया राजाने बहुत विकल होकर रानीसे कहा रानीने देखा कि महन्त के जानेसे राजा नहीं जीवेगा तब विचार किया कि लड़केको विषदे कि इसहेतु कुछदिन महंत ठहर जायँगे सोई किया राजमन्दिरसे महारुदनकी ध्वनिहुई महंतभी दौड़कर गये लड़के को श्यामदेखा जाना कि विषदियाहै वृत्तान्त पूंछते पूंछते राजाने कहा तब महंत उनके प्रेमको समझकर बेसुधहोकर मग्न होगये सब साधु-

ओंको बुलाकर भजन प्रारम्भ किया थोड़ी विलम्ब में लड़का जीउठा खेलनेलगा फिर महन्त साधुओंको बिदाकर आप राजा रानीके प्रेममें बँधकर रहगये सच है जो जन भगवद्भक्तों की महिमा और सत्संग के सुखको जानते हैं उनको वियोग भगवद्भक्तोंका करोड़ नरकके दुःखसे भी अधिक दुःख देनेवाला है ॥

कथा एकराजाकी लड़की की ॥

एकभक्त साधुसेवी राजाकी लड़की जो ऐसे विमुखके साथ व्याही गई कि वह कुछ न जानताथा कि भगवत् व भक्ति व साधु किसको कहते हैं अपने ससुराल में गई तब अति विकलभई साधुका दर्शन दुर्लभ हुआ तब एक लौंड़ीसे कहा कि जब साधु आवें तब कहना एकजमात साधुओंकी वाटिका में उतरी सुनकर उस लड़कीने अपना दो तीन वर्ष का लड़का रहा उसको विष दिया मरगया राजा उसका खसम रोदन करनेलगा तब वह लड़की बोली कि मैंकेमें हमने देखाहै साधुके चरणामृतसे लड़का निस्संदेह जियेगा उसने कहा साधु कैसे होते हैं तब लौंड़ी के साथकर दिया उसने दण्डवत् आदिकी विधि जनादिया वह जाकर साधुओंको दण्डवत् वंदनकर साधुओंको घरलाया उस लड़की ने दर्शनकर धन्यमाना साधुलोगोंने चरणामृत मुखमें लड़केके देकर भगवत् ध्यान व भजन प्रारम्भकिया लड़का उठबैठा वह राजा भगवद्भक्त होकर उसदेशको भक्तकिया देखा चाहिये सत्संगकी महिमाको एक लड़की बड़भागिनीके प्रतापसे कितने लोगोंका उद्धारहुआ और भगवद्भक्त जन्म व मरणका दुःखदूरकरके लाखों करोड़ों को अमर करदेते हैं एक लड़का जिला दिया तो क्या बड़ीबातहै ॥

कथा नीवांजीकी ॥

नीवांजी राजपूत ऐसे भगवद्भक्त साधुसेवीहुये कि जेभक्त उनके घर आवें अतिप्रेमसे उनको दण्डवत् कर चरणोंको धोकर अपने घर ठहराते जगह जगह कथा बैठाकर अपनी मधुरवाणी और सेवासे प्रसन्न रखते इसीप्रकार जबतकरहे वयक्रमभर उनके प्रेमको भगवत्नेनिबाहा॥

कथा कृष्णदासजी की ॥

कृष्णदासजी गलताजी जयपुरके राज्यमें भगवद्भक्त हुये रघुनन्दन स्वामीके चरणकमल में मन भवँरकी भांति लगाये रहते सुख, दुःख

शत्रु, मित्र बराबर जानते स्त्रीको नहीं देखते अभ्यागतकी सेवा करते कलियुग को मानो जीतलिया जो दधीचि ऋषीश्वरने किया सो किया एकदिन गुफामें बैठे भजन करते द्वारपर व्याघ्रआया अभ्यागत जान कर अपने जानुका मांस काटके डालदिया भगवत्ने प्रसन्न होकर दर्शन दिया विचार करना चाहिये इसधर्म को अब हमलोग थोड़ासा पानी और चुटकी आटादेते रोते हैं॥

कथा राजाबाई की ॥

राजाबाई धर्मपत्नी रामराजा पुत्र खेमाल भगवत् और गुरु और भक्तों की ऐसी भक्ति व सेवा करनेवाली हुई कि संतोंने कृपाकरके दोनों लोकसे निर्भय करदिया और जिसने अपने स्वामीकी शिक्षा के अनुकूल आचरण किया और नवधाभक्तिको मुख्यतर समझकर अन्यधर्म सब छोड़दिये और उस भक्तिकी प्राप्तिका हेतु सिवाय भगवद्भक्तों की प्रीतिके दूसरा न जानकर सार असारके मूल तत्त्वको अच्छे पहुँचकर भगवत् की अनन्यदास्यता में दृढ़हुई उदारता इतनीरही कि एकबेर अपने पतिके सङ्ग मथुराजी गई वहां सब धन जो पासरहा साधु ब्राह्मणों को देदिया कुछ राहके निर्वाहको भी न रक्खा उसीसमय नाभाजी कर्त्ता भक्तमालके आगये हाथों में केवल कड़े एकसौपांच रुपये के दाम के रहगये थे जो वेचकर घरजानेका विचार कियाथा उसको रानी साहबने भेंटकरदिया और राजासेकहा आजतक शरीरपर बोझरहा आज काम आया राजा प्रसन्नहुये किसीप्रकार करके राजधानीपर पहुँचे सत्य है कि जिसने साधुसेवाके समय कल्हकी चिन्ताको किया सो साधुसेवा क्याकरैगा ॥

कथा नन्ददासजी की॥

नन्ददास ब्राह्मण रहनेवाले बरेली के परमभक्त साधुसेवी हुये खेती से जोलाभ होता साधुसेवा भगवत् उत्साहमें लगादेते एक दुष्ट विमुखने एक मरी बछिया उनके खेतमें डालकर उनको हत्यालगाई नन्ददासजीने उसको जिलादिया सबको भक्तिका निश्चय व विश्वासहुआ

कथा हरिदासजी की ॥

हरिदासजी योगानन्द महाराजके वंशमें परमभक्तहुये वामनजीकी भांति उनकी भक्ति थोरेहीकालमें बढ़गई साधु के अपराध कबहूं चित्त पर न लाये भक्तोंको गुरुतुल्य जानते तिलकमालासे अत्यन्त प्रीतिरही

रघुनन्दन महाराज के उपासक व गृहमें रहनेपर वैराग्य जनक महाराज के सदृशरहा ॥ कथा कान्हड़जी की ॥

कान्हड़ विट्ठलदासजी के पुत्र जातके चौवे रहनेवाले मथुराके भगवत् महोत्साह ऐसा करते रहे कि चारोंवर्ण चारों आश्रम और कंगाल व राजा सब इकट्ठे उस महोत्साह में होतेरहे सबका शिष्टाचार करते कोई विमुख न जाता चन्दन पान व वस्त्रसे भगवद्भक्तोंकी सेवा सत्कार करते और समाज ऐसी होती मानो अमृतकी वर्षा होती है जब भगवद्भक्तोंको सेवा सत्कार करके विदा करते तो प्रेम में बेसुध होजातेरहे सो कारण दो प्रकारका समझमें आताहै एक तो भक्तोंका वियोग कि अपनेको बड़भागी जानकर प्रेममें मग्न होजातेरहे और उसी महोत्साह में सब कोई इकट्ठे होकर नाभाजी जिनने भक्तमाल रचना किया उनको गोसाई पदवी दी थी ॥ कथा माधवग्वाल की ॥

माधवग्वाल ऐसे भक्त साधुसेवीहुये कि दिन रात भगवद्भक्तोंके सुख के हेतु चिन्ता रहतीथी व नवप्रकारकी नवधा भक्ति दशवीं प्रेम लक्षण सोई मानसरहै तिसके मराल थे सबकी भलाई की चाहना सदा भगवत् चरित्रोंके स्मरणमें रहते क्षमाशील सबसे बराबर सबकेमित्र व निर्मल चित्त प्रेमकी खानिहुये ॥ कथा गोपाली की ॥

गोपाली गिरिधरग्वाल कि जिसका वर्णन वेषनिष्ठा में होगा तिसकी माता भगवद्भक्तों के पालनका यशोदाका अवतारहुई मनमोहन महाराज से ऐसी प्रीति रही कि व्रजचन्द्र महाराज के माधुर्य्यरस और प्रेम भक्तिके रंगमें भरीहुई दिन रात श्रीगोविन्द श्रीगोविन्द यही ध्वनि लगी रहतीथी संतोंके चरणों में दृढ़प्रीतिरही ॥

निष्ठाचौथी

माहात्म्य श्रवण जिसमें चार भक्तोंकी कथा ॥

श्रीकृष्णस्वामी के चरण कमलकी कमलरेखाको और कपिलदेव अवतारका दण्डवत्है कि जगत् के उद्धारके हेतु सांख्य शास्त्रका तत्त्व विचार करके फैलाया भगवत् चरित्रों का सुनना उद्धार व भगवत्पद प्राप्तके हेतु और जबतक उन चरित्रों को न सुनेगा तो भगवत्में मन किसप्रकार लगेगा ध्यान व मंत्रका जप और पूजा व मनन व व्रत व

नेम आदि सब साधनका सम्बन्ध केवल श्रवणसे है कि जब गुरु और शास्त्रों से सुना तब उसके अनुकूल साधन किया और अच्छेप्रकार विचार करके देखा जाता है तो सम्पूर्ण कार्य्य यह लोक व परलोक के श्रवणको पायकर प्रवर्त्तमानहुये व होते हैं ब्रह्माजी को भगवत् ने सृष्टि रचनेकी आज्ञादी तो कुछ न होसका जब शब्द तपकरनेका सुना और उसके अनुकूल साधनकिया तब इस संसारकी रचनाकी कोई मतांतर वाले नाद ब्रह्मका सुननाही मुक्ति मानते हैं कि भागवत में इसका वृत्तान्त लिखा है और यहां उसके वर्णनका प्रयोजन नहीं समझा क्योंकि यह पथ औरहै और वह इस पथसे अलगहै अभिप्राय यह कि विना सुने कुछ नहीं होसक्ता और भगवत् के मिलने को तो सिवाय भगवत् चरित्र श्रवणके और कोई मार्ग सुखसाध्य नहीं महिमा सत्संगकी जो ठौर ठौर शास्त्र व पुराणों में लिखी है उससे यही तात्पर्य्य है कि भगवत्चरित्र सुने और शीघ्र भगवत्पदको प्राप्तहो भगवत् महिमा श्रवण निष्ठा कि आप निज श्रीमुखसे वर्णनकिया व पुराणों में ठौर ठौर लिखा है हरिवंश में लिखाहै कि जहां भगवत् कथाको सुनते हैं वहां वेद और सब शास्त्र प्राप्त रहते हैं जिनको मुक्तिकी चाहना होवे भगवत् कथा सुनैं भागवतका वचनहै कि जो भगवत् कथारूपी अमृत को कर्णपुटकरिकै पान करते हैं वे सब पापों को दूरकरि भगवत्परम्पद को जाते हैं फिर भागवत में लिखा है कि जो कोई भाग्यहीन भगवत् कथा को छोड़कर निन्दित सारहीन कथा श्रवण करते हैं वे लोग ऐसे हैं जिसप्रकार शूकरकी विष्ठा में रुचि होती है और अच्छे प्रकार विचार करनाचाहिये कि जो कोई भक्तहुये अथवा अबहैं व आगेहोंगे वह सब प्रताप श्रवण का है यद्यपि सुनना भगवत्चरित्रोंका सबप्रकार मंगलरूप है परन्तु जो विधिपूर्व्वक विश्वास करिकै सुनै तो उसका क्या कहना है यह कि व्यासको भगवत् रूप जाने व हरिचरित्रों और उस शास्त्र में हृदय से प्रेम हो व सुनकर समझकर अच्छेप्रकार मननकरै और उसके अनुकूलवर्त्ते भागवत कथा से तृप्ति न होय ऐसी प्रीतिहोवै हरिचरित्रों को नितनवीन समझै यह नहीं कि एकबार जो सुना उसके सुननेका क्या प्रयोजन है पृथुमहाराजने भगवत् चरित्रों के सुननेको दशहज़ार कान मांगे भागवत से नवधाभक्ति में जो प्रथम श्रवण लिखा है सो यही अ-

रघुनन्दन महाराज के उपासक व गृहमें रहनेपर वैराग्य जनक महाराज के सदृशरहा ॥ कथा कान्हड़जी की ॥

कान्हड़ विट्ठलदासजी के पुत्र जातके चौबे रहनेवाले मथुराके भगवत् महोत्साह ऐसा करते रहे कि चारोंवर्ण चारों आश्रम और कंगाल व राजा सब इकट्ठे उस महोत्साह में होतेरहे सबका शिष्टाचार करते कोई विमुख न जाता चन्दन पान व वस्त्रसे भगवद्भक्तोंकी सेवा सत्कार करते और समाज ऐसी होती मानो अमृतकी वर्षा होती है जब भगवद्भक्तोंको सेवा सत्कार करके विदा करते तो प्रेम में वेसुध होजातेरहे सो कारण दो प्रकारका समझमें आताहै एक तो भक्तोंका वियोग दूसरे अपनेको बड़भागी जानकर प्रेममें मग्न होजातेरहे और उसी महोत्साह में सब कोई इकट्ठे होकर नाभाजी जिनने भक्तमाल रचना किया उनको गोसाईं पदवी दी थी॥ कथा माधवग्वाल की॥

माधवग्वाल ऐसे भक्त साधुसेवीहुये कि दिन रात भगवद्भक्तोंके सुख के हेतु चिन्ता रहतीथी व नवप्रकारकी नवधा भक्ति दशवीं प्रेम लक्षणा सोई मानसरहै तिसके मराल थे सबकी भलाई की चाहना सदा भगवत् चरित्रोंके स्मरणमें रहते क्षमाशील सबसे बराबर सबकेमित्र व निर्मल चित्त प्रेमकी खानिहुये॥ कथा गोपाली की॥

गोपाली गिरिधरग्वाल कि जिसका वर्णन वेषनिष्ठा में होगा तिसकी माता भगवद्भक्तों के पालनका यशोदाका अवतारहुई मनमोहन महाराज से ऐसी प्रीति रही कि ब्रजचन्द्र महाराज के माधुर्य्यरस और प्रेम भक्तिके रंगमें भरीहुई दिन रात श्रीगोविन्द श्रीगोविन्द यही ध्वनि लगी रहतीथी संतोंके चरणों में दृढ़प्रीतिरही॥

निष्ठाचौथी

माहात्म्य श्रवण जिसमें चार भक्तोंकी कथा॥

श्रीकृष्णस्वामी के चरण कमलकी कमलरेखाको और कपिलदेव अवतारका दण्डवतहै कि जगत् के उद्धारके हेतु सांख्य शास्त्रका तत्त्व विचार करके फैलाया भगवत् चरित्रों का सुनना उद्धार व भगवत्प्राप्तके हेतु और जबतक उन चरित्रों को न सुनेगा तो भगवत्में मन किसप्रकार लगेगा ध्यान व मंत्रका जप और पूजा व मनन व व्रत

नेम आदि सब साधनका सम्बन्ध केवल श्रवणसे है कि जब गुरु और शास्त्रों से सुना तब उसके अनुकूल साधन किया और अच्छेप्रकार विचार करके देखा जाता है तो सम्पूर्ण कार्य्य यह लोक व परलोक के श्रवणको पायकर प्रवर्त्तमानहुये व होते हैं ब्रह्माजी को भगवत् ने सृष्टि रचनेकी आज्ञादी तो कुछ न होसका जब शब्द तपकरनेका सुना और उसके अनुकूल साधनकिया तब इस संसारकी रचनाकी कोई मतांतर वाले नाद ब्रह्मका सुननाही मुक्ति मानते हैं कि भागवत में इसका वृत्तान्त लिखा है और यहां उसके वर्णनका प्रयोजन नहीं समझा क्योंकि वह पथ औरहै और वह इस पथसे अलगहै अभिप्राय यह कि विना सुने कुछ नहीं होसक्ता और भगवत् के मिलने को तो सिवाय भगवत् चरित्र श्रवणके और कोई मार्ग सुखसाध्य नहीं महिमा सत्संगकी जो ठौर ठौर शास्त्र व पुराणों में लिखी है उससे यही तात्पर्य्य है कि भगवत्चरित्र सुने और शीघ्र भगवत्पदको प्राप्तहो भगवत् महिमा श्रवण निष्ठा कि आप निज श्रीमुखसे वर्णनकिया व पुराणों में ठौर ठौर लिखा है हरिवंश में लिखाहै कि जहां भगवत् कथाको सुनते हैं वहां वेद और सब शास्त्र प्राप्त रहते हैं जिनको मुक्तिकी चाहना होवे भगवत् कथा सुनैं भागवतका वचनहै कि जो भगवत् कथारूपी अमृत को कर्णपुटकरिकै पान करते हैं वे सब पापों को दूरकरि भगवत्परम्पद को जाते हैं फिर भागवत में लिखा है कि जो कोई भाग्यहीन भगवत् कथा को छोड़कर निन्दित सारहीन कथा श्रवण करते हैं वे लोग ऐसे हैं जिसप्रकार शूकरकी विष्ठा में रुचि होती है और अच्छे प्रकार विचार करनाचाहिये कि जो कोई भक्तहुये अथवा अबहैं व आगेहोंगे वह सब प्रताप श्रवण का है यद्यपि सुनना भगवत्चरित्रोंका सबप्रकार मंगलरूप है परन्तु जो विधिपूर्व्वक विश्वास करिकै सुनै तो उसका क्या कहना है यह कि व्यासको भगवत् रूप जाने व हरिचरित्रों और उस शास्त्र में हृदय से प्रेम हो व सुनकर समझकर अच्छेप्रकार मननकरै और उसके अनुकूलवर्त्ते भागवत कथा से तृप्ति न होय ऐसी प्रीतिहोवै हरिचरित्रों को नितनवीन समझै यह नहीं कि एकबार जो सुना उसके सुननेका क्या प्रयोजन है पृथुमहाराजने भगवत् चरित्रों के सुननेको दशहज़ार कान मांगे भागवत से नवधाभक्ति में जो प्रथम श्रवण लिखा है सो यही अ-

कथा कहने व खेलकूद नाच तमाशा देखने और ऐसेही ऐसे प्रकार के निष्फल आचरणों के सिवाय और कुछ कामनहीं और जो भाग्यवश कोई संयोगसे चलाभी गया तो तनकमन न लगा और जातेही निद्राविलासमें प्राप्तहुये और जब और किसीने पूंछा तो कथा और पण्डित दोनों की निन्दाकरनेलगे बस वह कथा कहलानेवाला अकेला सुनतारहा जब समाप्तहोनेका दिनआया और उनलोगोंको बुलाया तो दशबीसबारके बुलाने से निज रुपया चढ़ानेके समय आये इसहेतु कि कोई अक्षर कान में न पड़जाय और जो कथाके पूर्णहोने में कुछ विलम्बहुआ तो बुलाने वाले आदमी पर क्रोधकिया कि इतना पहिले क्यों बुलालाया और कोई पण्डितजी से कहताहै कि महाराज शीघ्रताकरो संध्या निकटआई और कोई गरदन उठाकर पत्रेकीपाती देखताहै कि लालपाती अन्तकीआई कि नहीं और कोई उसघरके अधिष्ठातासे कहताहै कि आरती आदिकी सामा सावधानीसे तैयार कररक्खो कि विलम्ब न हो और कोई मनही मनमें कहताहै कि किस उत्पातमें आनफँसे और किसीने मुद्राही भेज दिया और चरणको दुःख न दिया किसीप्रकार इस वृत्तान्तसे कथापूरी हुई पर इतना औरभी अधिक है कि जो वशचला तो खोटारुपया चढ़ागये वाह क्या बड़ाई कीजिये कि जो नाचमें जावैं तो स्वप्नमें भी नींद न आवै और उसके प्रेममें भूख प्यास सब भूलजावैं और सबसे पहिले जावैठें और भगवत्चरित्रों के सुननेका और कथामें जानेका यहवृत्तान्त कि मानो किसीने तोपके मुखपर खड़ाकरदियाहो हाथ बांधकर यह विनतीहै कि इस अवगुणीने अपना वृत्तान्त लिखाहै किसीको दुःख न होय यहवृत्तान्त मेरा करोड़ भागोंमें से एकभागहै हे श्रीकृष्णस्वामी हे दीन वत्सल हे प्रणतारतभञ्जन हे दीनबन्धु कोई दिन ऐसाभी आवैगा कि आपके चरित्र पवित्र तो चन्द्रमा के सदृशहोंगे और मेरामन चकोरकी भांति और कौन वह घड़ीहोगी कि आपके रूप अनूपका चिन्तवन और ध्यान ऐश्वर्य्य व धन सदृशहोगा और मेरा मन लालची पुरुष के सदृशहै हे करुणाकर महाराज जो अपनी भाग्यहीनता और अपराधों को विचार करताहूं तो करोड़ों जन्मतक कुछठिकाना नहीं दीखता और पतितपावन दीनवत्सल अधमउधारण करुणानिधान आदि नामोंपर दृष्टिहोती है तो कोई चिन्ता और भयका स्थाननहीं पर इस

भिप्राय है कि विना श्रवण भगवत्चरित्रों के भक्ति प्राप्ति नहीं होती यद्यपि आपसकी वार्त्तालाप में भगवत् चरित्रों का सुनना व विष्णुपद आदि का श्रवण सब श्रवणनिष्ठाही में प्राप्त होते हैं पर दृढ़तर श्रवण वहहै कि भगवद्भक्तों के सत्संगमें चरित्र सुनेजावैं किसहेतु कि उस श्रवणका साधन भी वहां प्राप्त होताहै और जोकुछ सन्देह व भ्रम होता है सो तुरन्त निवृत्त होजाताहै अथवा पुराण आदिकी कथा कराना यह भी अच्छीरीति श्रवणकी है किसहेतु कि आपसे आप सत्संग लाभ होताहै सो कथा करानेकी रीति कहीं कहीं है पर जोलोग ऐश्वर्य्यवान् और सरदार और मुलाजिम सरकारहैं उनकी कथा करानेका वृत्तान्त अद्भुतहै थोड़ासा लिखताहूं प्रथम तो भगवत् चरित्रों में किसीकी प्रीति ही नहीं वरु कोई कोई मन्दभागियों का यह वचन है कि साहब कथा सुनने से क्या होताहै करणी प्रमाणहै और उन दुष्टों असुरबुद्धियों को इस बातका विचार नहीं कि लिखना पढ़ना व व्यवहार के काम करने व चतुराई सम्पूर्ण कार्य्य लेन देन व कार्य्य सरकारी आदि सब श्रवणं के अवलम्ब से उनके ज्ञान ध्यान में आये हैं तो जबतक भगवत् कथा न सुनैंगे तबतक भगवत्कारूप किसप्रकारसे बुद्धिमें आवैगा और किसी के कुलमें यह वृत्तान्त अपनी आंखोंसे नहीं देखा कि कभी उनके कुल में कथा नहीं हुई वरु अमंगल और कारण आजाने किसी उत्पात और मरजाने किसी प्रियबन्धुका समझते हैं सो ऐसी बुद्धि और बोलन उन की उनके सत्यानाश जानेके निमित्तहै जो किसीने गलादबानेसे अथवा संकोचसे किसीकी कथा कहलाई तो ऐसे आदमीसे कि इकट्ठेका रहने वाला भड़कदार अथवा पुरोहित अथवा लड़काईकी जवानी का यार अथवा सदासेवी होवै किसी प्रेमी व भगवद्भक्तको ढूंढ़कर कहलानेकी तो कुछ बातही नहीं भला अब जब कथा प्रारम्भहुई तो कोई सुननेको नहीं आता कोई सावकाश नहीं पानेकी बात कहताहै कोई कार्य्यकी भीड़का परिश्रम बतलाताहै कोई कहताहै कि क्या हमने पापकियाहै जो कथासुनें और कोई कहताहै कि जिसदिन सम्पूर्णहोगी उसदिन आजावैंगे और कोई अपने आपको बड़ा आदमी अथवा बड़ा ओहदेवाला समझकर कंगाल अथवा छोटे ओहदेवाला जानकर उसकी कथामें नहींजाता और देखिये तो उन साहबोंको सिवाय सतरञ्ज व गञ्जीफा खेलने व कुत्सित

कथा कहने व खेलकूद नाच तमाशा देखने और ऐसेही ऐसे प्रकार के निष्फल आचरणों के सिवाय और कुछ काम नहीं और जो भाग्यवश कोई संयोगसे चलाभी गया तो तनकमन न लगा और जातेही निद्राविलासमें प्राप्तहुये और जब और किसीने पूंछा तो कथा और पण्डित दोनों की निन्दाकरनेलगे बस वह कथा कहलानेवाला अकेला सुनतारहा जब समाप्तहोनेका दिनआया और उनलोगोंको बुलाया तो दशबीसबारके बुलाने से निज रुपया चढ़ानेके समय आये इसहेतु कि कोई अक्षर कान में न पड़जाय और जो कथाके पूर्णहोने में कुछ विलम्बहुआ तो बुलाने वाले आदमी पर क्रोधकिया कि इतना पहिले क्यों बुलालाया और कोई पण्डितजी से कहताहै कि महाराज शीघ्रताकरो संध्या निकटआई और कोई गरदन उठाकर पत्रेकीपांती देखताहै कि लालपांती अन्तकीआई कि नहीं और कोई उसघरके अधिष्ठातासे कहताहै कि आरती आदिकी सामा सावधानीसे तैयार कररक्खो कि विलम्ब न हो और कोई मनही मनमें कहताहै कि किस उत्पातमें आनफँसे और किसीने मुद्राही भेज दिया और चरणको दुःख न दिया किसीप्रकार इस वृत्तान्तसे कथापूरी हुई पर इतना औरभी अधिक है कि जो वशचला तो खोटारुपया चढ़ागये वाह क्या बड़ाई कीजिये कि जो नाचमें जावें तो स्वप्नमें भी नींद न आवे और उसके प्रेममें भूख प्यास सब भूलजावें और सबसे पहिले जावैठें और भगवत् चरित्रों के सुननेका और कथामें जानेका यहवृत्तान्त कि मानो किसीने तोपके मुखपर खड़ाकरदियाहो हाथ बांधकर यह विनतीहै कि इस अवगुणीने अपना वृत्तान्त लिखाहै किसीको दुःख न होय यहवृत्तान्त मेरा करोड़ भागोंमें से एकभागहै हे श्रीकृष्णस्वामी हे दीन वत्सल हे प्रणतारतभञ्जन हे दीनबन्धु कोई दिन ऐसाभी आवेगा कि आपके चरित्र पवित्र तो चन्द्रमा के सदृशहोंगे और मेरामन चकोरकी भांति और कौन वह घड़ीहोगी कि आपके रूप अनूपका चिन्तवन और ध्यान ऐश्वर्य्य व धन सदृशहोगा और मेरा मन लालची पुरुष के सदृशहै हे करुणाकर महाराज जो अपनी भाग्यहीनता और अपराधों को विचार करताहूं तो करोड़ों जन्मतक कुछठिकाना नहीं दीखता और पतितपावन दीनवत्सल अधमउधारण करुणानिधान आदि ना मोंपर दृष्टिहोती है तो कोई चिन्ता और भयका स्थाननहीं पर इस

पदवी मिली तो श्रवण के अवलम्ब से इसहेतु श्रवणनिष्ठा में लिखा नारदजी भगवत्के मन हैं और ब्रह्माजी के पुत्र हैं जगत् के उपकार में इतनी प्रीति है कि दो घडी से अधिक विलम्ब कहीं नहीं करते वाल्मीकि रामायण व श्रीमद्भागवत ये दो जहाज़ संसार समुद्र से जीवों को पार लगाने को जो बने सो नारदजीहीने उपदेश कियाहै जिनपर कृपाकिया वे भगवद्रूप होगये जैसे प्रह्लाद ध्रुव साठहजार दक्षप्रजापति के पुत्र व प्रचेता आदि लाखों जिनकी गिनती नहीं होसक्ती जिनपर क्रोधकिया वह भी अन्तमें भगवत् को प्राप्तहुआ चरित्र नारदजी के अपारहैं पर पूर्व्वका चरित्र जिसकरके श्रवणनिष्ठा में लिखेगये सो लिखाजाता है भागवतमें लिखाहै कि पहिले कल्प में नारदजी दासी पुत्ररहे दुःख पड़ने से माता उनकी ऋषीश्वरों के यहां टहल करके अपनी व नारदजी की पालना करती थी जब कामको जाती तब ऋषीश्वरों के पास छोड़जाती तहां जो कथाका सत्संग हुआ करता उसको सुनते सुनते ज्ञान वैराग्य भक्तिको प्राप्तहुये जब माता उनकी मरगई तो वनमें जाकर भगवतका ध्यान करनेलगे एकबार भगवत्के रूप अनूपका प्रकाश उनके हृदय में प्रकटहोकर फिर अन्तर्द्धान होगया नारदजी उसीरूप अनूपके प्रेम में विकल होकर भगवद्भजनमें प्रवृत्तहुये अन्तमें फल यहनिकला कि इस कल्पमें ब्रह्माकेपुत्र ऐसेहुये जिनकीमहिमा ब्रह्माजीभी वर्णननहींकरसक्ते।

कथा गरुड़जी की॥

गरुड़जी भगवत्पार्षदों में हैं इसहेतु सेनानिष्ठा में लिखना उचित रहा पर एकसमय उनको मोहहुआ सो काकभुशुण्डिके यहां कथासुनी तब ज्ञानहुआ इसहेतु श्रवणनिष्ठा में लिखा जब श्रीरामचन्द्र महाराज लंकाके विजयको चढ़े और रावण का बेटा लड़ाई करनेआया तो सम्पूर्ण सेना और दशरथराजकुमार महाराज को कि जिनकी मायाके पाश में अगणित ब्रह्माण्डोंके ब्रह्मादिक देवता फँसेहुये हैं और जिनके एक बार नामलेने से जीवकी जन्म मरणकी फांसी कटजाती हैं नागपाशमें बांधलिया नारदजीने गरुड़को भेजा तब उन्होंने सब सांपों को खाया इन्द्रजीतकी मायादूरहुई तो गरुड़को मोहभ्रमहुआ ब्रह्माके पासगये तब शिवजीके पासआये उन्होंने काकभुशुण्डि के पासभेजा कि पक्षीकीबोली पक्षी अच्छेसमझेगा वहांगये तब समीप नीलाचलके जातेही मोहदूर

हुआ फिर रामायण वहां सम्पूर्ण श्रवण किया नित्यज्ञान को प्राप्तहुये सत्यकरके भगवच्चरित्र अज्ञानतमको सूर्य्य हैं और कामनाके कल्पवृक्ष और कामधेनु ॥

कथा राजा परीक्षित की ॥

राजापरीक्षित अभिमन्युके पुत्र अर्जुनके पौत्र श्रवणनिष्ठा में मुख्य अग्रणीयहुये उन्हींसे श्रीमद्भागवतकी प्रवृत्ति संसारमें हुई जिससे कोटों जीवोंको परमपद प्राप्तहुआ और होती है व होगी जब पाण्डवोंने संसार त्याग किया परीक्षितको राज्य देदिया परीक्षितने नीतिपूर्वक प्रजा का पालनकिया दिग्विजय व धर्मके पालनको निकले कुरुक्षेत्रमें कलियुगने छलकिया जिसकरके राजाको ऋषिबालकका शापहुआ तब राजा ने जनमेजय अपने बड़ेपुत्रको राजगद्दी देकर तुरन्त गंगातटपर उत्तर मुखआनबैठे-और अपने उद्धारके हेतु ऋषीश्वरों व ब्राह्मणोंको बटोरा संयोग वश शुकदेवजी आये श्रीमद्भागवत श्रवण कराया-जब विराम किया तब तुरन्त राजा अपने शरीरकी सुधि भूलकर भगवत्के चरणों में लीनहोकर मग्न व समाधि में होरहा उसीसमय तक्षकनागने ऋषि का वचन पूर्णकरदिया राजा शरीर छोड़कर उस परमधामको गया कि फिर नहीं फिरता सत्यकरके जो ऐसामन भगवच्चरित्रों में लगावै उस को अर्थ धर्म काम मोक्ष सब इसी शरीर में प्राप्त हैं ॥

कथा लालदासजी की ॥

लालदासजी ऐसे परमभक्त हुये कि हृदय उनका भगवच्चरित्रोंका स्थान होगया जैसी भगवत्में प्रीति उसीभांति गुरुमें और लोभ निकट न आया जैसे कमलपत्र जलमें रहताहै तिसप्रकार संसार में रहे भगवच्चरित्रों में राजापरीक्षितकी भांति थे और उसीप्रकार भगवद्धामको गये अर्थात् बघेरा गांवमें कथा श्रीमद्भागवतकी होरहीथी जब सम्पूर्ण हुई उसी समय भगवत् के ध्यानकी समाधि लगाकर शरीरत्याग उसी परमपदको पहुँचे जहां राजापरीक्षित गये ॥

निष्ठा पांचवीं ॥

कीर्त्तन के वर्णनमें पन्द्रह भक्तोंकी कथा है ॥

श्रीकृष्णस्वामीके जब चरणकमलोंको और दिति अवतारको दण्डवत्है कि अत्रिऋषीश्वरके घर चित्रगिरि पहाड़पर वह अवतार धारण करके अलर्क और प्रह्लाद आदिको भगवत्का ज्ञान उपदेश किया य-

द्यपि कीर्त्तनशब्दका अर्थ यहहै कि जो कहनेमें आवै पर शास्त्र व पुराणके अभिप्राय करके यहपद निज भगवच्चरित्रों के विषय होगया है दूसरे बोलचालके हेतु नहीं रहा सो वह कीर्त्तन कईप्रकारकाहै आपसमें भगवत् की चर्चा अथवा गाना अथवा भगवच्चरित्रोंको काव्य में रचना करना अथवा कथा कहनी अथवा मन्त्र और नामका मुखसे उच्चारण करना अथवा स्तोत्र आदिका पाठ अथवा पढ़ाना इसहेतु कि जिसप्रकार भक्त कोई प्रकारसे परायण होवै उनको इसनिष्ठामें लिखा पर यहभी जानरक्खो कि सबभक्त जितने आगेहुये और अब हैं और आगेहोंगे कीर्त्तननिष्ठामें सबको विश्वास दृढ़हुआ और इसीनिष्ठाके अवलम्बसे भक्तहुये सो सबका लिखना इसनिष्ठामें होनहींसक्ता इसहेतु थोड़े भक्तोंकी कथा इस निष्ठामें लिखीगई और नामनिष्ठा अलग वर्णनहुई इसहेतु नाम उपासकोंका वर्णन उसनिष्ठामें होगा इस कीर्त्तननिष्ठाकी महिमा और बड़ाई किससे वर्णन होसक्ती है तरण तारण पद जो संसारमें विख्यातहै सो इसी निष्ठाके उपासकोंके निमित्त सत्यहै निश्चयभक्ति और मुक्तिकी सब इसी निष्ठा अर्थात् भगवच्चरित्रों के कीर्त्तनपरहै जो कोई जिसपदवीको पहुँचा केवल कीर्त्तनके अवलम्बसे पहुँचा दूसरेप्रकार नहीं श्रवणनिष्ठामें जो यह वर्णनहुआ कि श्रवण के प्रभावसे भगवत् मिलता है तो तात्पर्य्य यहहै कि जब भगवत्की महिमा और भगवच्चरित्रों का श्रवण करेगा तब भगवच्चरित्रों का कीर्त्तन करैगा और किसी ने भगवच्चरित्रों को केवल सुनिमात्र लिया और फिर कीर्त्तन नहीं किया तो कैसे भगवत् मिलैगा सिद्धान्त यह हुआ कि भगवत् कीर्त्तनके हेतु श्रवण एक साधनहै और फल उसका कीर्त्तन और इसी हेतु श्रवणको पश्चात् कीर्त्तन शास्त्रोंमें लिखाहै और यह बात देखने में भी आती है कि हजारों आदमी भगवत् कथा आदि सुनते हैं पर सुने पीछे जो भगवत्कीर्त्तन नहीं करते इसी हेतु कोई वाञ्छित फलको नहीं प्राप्तहोते और बुद्धि से भी जानाजाता है कि जबतक देखे व सुनेहुये सौन्दर्य्य अथवा दूसरी कोई वस्तु का वर्णन न होगा तो किसप्रकार मन में रहैगा भगवत् का वचनहै और पुराणमें लिखाहै कि मैं न वैकुण्ठमें रहताहूं और न योगियों के हृदय में केवल मैं वहां रहताहूं जहां मेरे मेराकीर्त्तन करते हैं भागवतके एकादशमें लिखाहै कि सतयुगमें ध्यानसे और त्रेतामें यज्ञ

। और द्वापरमें भगवत् पूजासे मुक्तिहोतीरही और कलियुग में भग-
त्कीर्त्तन प्रमाण है विष्णुधर्म्मोत्तर में लिखा है कि भगवत्का कीर्त्तन
ब सुखोंका देनेवाला और पापोंका नाश करनेवाला और मनको वि-
लता देनेवाला और धर्मका बढ़ानेवाला और भुक्तिमुक्तिका देनेवाला
और परमसार है वेद विरुद्ध मतवाले भी इस बातमें युक्त हैं सिद्धान्त
ह कि विना भगवत्कीर्त्तन कोई उपाय जन्म मरणके फन्देसे छूटनेको
ख नहीं पड़ता पानीके मथनेसे घी और रेतमेंसे तेल प्राप्त होजाय तो
ोजाय पर विना भगवद्भजन संसार सागरको उतरजावे यह कदापि हो-
ी नहीं और भगवत्कीर्त्तनके विधान में यह लिखा है कि मनसे उस
कीर्त्तनमें मग्नहोकर देहकी दशा भूलजाय यहां एक वार्त्ता स्मरण हो
आई कि दो मनुष्योंने निरन्तरमें भगवत् कथा कहीसुनी दोनों बेसुधि
ोकर वहीं मरगये लोगों ने दोनों को इकट्ठे जलादिया उनकी स्त्रियों ने
आकर अपने अपने पतिकी हड्डियां अलग चुनलीं किसी ने पूछा कि
ुमको अपने अपने पतिकी हड्डियोंकी प्रतीति किसप्रकार हुई कीर्त्तन
करनेवालेकी स्त्री बोली कि मेरापति भगवच्चरणों के रस में ऐसा मग्न
ोगयाथा कि हड्डीतक गलगईथीं इसीसे पहचानकर चुनलिया दूसरी
ने कहा कि भगवच्चरित्रों के तीर जो कीर्त्तन करनेवाले के मुखरूपी
चुटकीसे छूटे तो मेरेपतिके हृदयमें ऐसेलगे थे कि हड्डियों में बेधहोगये
े इससे पहचानलिया सो इसप्रकार कीर्त्तन और श्रवण में प्रीतिहोवे
ार यह वचन शास्त्रों में लिखाहै कि कीर्त्तन भगवत् का अन्तःकरण से
अथवा ऊपरसे देखलाने के हेतु अथवा कोई फलके हेतु किसीप्रकार
े होवे निश्चय करके भगवद्भक्ति प्राप्त होजायगी व मन भगवत् स-
म्मुख होजायगा इस बातका वर्णन कुछ नाम निष्ठामें होगा सबकीर्त्तन
के प्रकारमें एक प्रकार भगवत्कथा कीर्त्तनकी जो विख्यात है तो इस
समय उसका आश्चर्य्य वृत्तान्त है कि कीर्त्तन करनेवाले तो विना हेतु
केवल भगवद्भजनके निमित्तसे कीर्त्तन नहीं करते व पढ़ना पुराणों का
जीविकाके प्राप्त के हेतु समझते हैं व श्रवण करनेवालों का वृत्तान्त थो-
ड़ासा श्रवणनिष्ठामें लिखागयाहै बहुत करके ब्राह्मण जो भागवत कांख
में दबाये कथाकी ओड़करके फिरते हैं और उनकी कथा नहीं होती तो
कारण यह है कि जिसदिनसे उन्होंने उस कथाको पढ़ा तो फिर

कबहूं उसको विचारा न देखा जो नित्य उसका कीर्त्तनकरें तो विना घूम ने फिरने के आपसे आप हजारों पुरुष कथा करने निमित्त उनको बुलाया करें इसकारणसे कि भागवत व रामायण आदि पुराण सब भगवद्रूपहैं जो कोई भगवत्कीर्त्तन आराधन करैगा निश्चयकरके उसकी कामना सिद्धहोगी अर्थात् सुननेवाले जो यह बात कहते हैं कि आजकल्ह कोई कथा कहनेवाला प्रेमी और भगवद्भक्त नहींमिलता यह वचन उनका निपट झूंठहै हजारों लाखों पण्डित प्रेमी मिलते हैं पर हम लोगोंको उनका ढूंढ़ना नहीं और अपने अवगुणके कारणसे उनकेगुणों को अवगुणके समान करलेतेहैं प्रेम और भक्तिपर दृष्टि नहींजाती जिस प्रकार दो पुरुष एक सरायमें रातको टिककर सारीरात अपने अपने प्रेममें जागते रहे प्रभातको जो दोनों ने परस्पर देखा विषयी मद्यपान करनेवालों ने भगवद्भक्तको यह समझा कि इसने सारीरात हमसेभी अधिक आनन्दकिये होंगे और जो पुरुष भगवद्भजनमें जागतारहा उसने उस विषयी को अपने से अधिक भजन आनन्दमें जाना इसके सिवाय जो हमलोग भगवद्भजन करनेवाले और प्रेमी होवें तो कथा करनेवाले अनायास मिलजावें व वे लोग आप हमको ढूंढ़लेवें जैसे शुकदेवजी ने राजापरीक्षितको और सूतजी ने शौनकआदि को आप ढूंढ़लिया यह रीति सिद्ध है कि जैसेको तैसा आ मिलता है इसके ऊपर जो प्रेमी और भक्तनहीं मिलते हैं उन्हींपर विश्वास उचितहै व योग्यहै कि हमसे अधिक ज्ञाताहैं पहिले तो शास्त्रको अच्छेप्रकार जानतेहैं दूसरे ब्राह्मण हैं ब्राह्मणोंकी महिमा वेद और शास्त्रोंमें लिखीहुई है कि भगवद्रूपहैं व भगवत्का वचन है कि ब्राह्मण विद्यायुक्तहोवै अथवा विद्याहीनहोय वह मेरा अङ्गहै कोई कोई दोचार फारसी तर्जुमे की पोथियों को पढ़कर और अपने आपको ज्ञानवान् व सर्वज्ञ समझकर अथवा बड़े ओहदेपर होकर और धन ऐश्वर्य्य पाकर कहते हैं हम में और ब्राह्मणों में क्याभेद है ब्राह्मण वहहै जो ब्रह्मको जानै जैसे वह मनुष्यहै वैसेही हम हैं सो जान रक्खो ब्राह्मण मनुष्य नहीं देवताहैं भूसुर और भूदेव उनकानामहै और जो वे विश्वासियों को आदमी देखनेमें आवैं तो दूसरे आदमियों से इतना भेदहै जैसे तारोंसे सूर्य्यको और दूसरे पशुओं से गऊको एक वृत्तान्त स्मरण होआया यह कि कोई पीपल के नीचे लघुशंका किया करता था

ब्राह्मणों ने मनाकिया न माना फिर अधिकतर वर्जन किया तो क्रोध कर कहनेलगा कि सब वृक्ष बराबर हैं एक ब्राह्मण युक्त बोलनेवाले ने कहा कि तुम्हारी जोरू और तुम्हारी मा में क्या भेद वहभी बराबर हैं तात्पर्य्य यह कि ब्राह्मणों को सब प्रकार से बड़ाई है सिवाय इसके सब विधिविधान दोनों लोकका ब्राह्मणों ने विस्तार कियाहै और पूर्वयुग में अथवा अब जिसको बड़ाई प्राप्तहुई और भगवद्भक्तिका प्रकाशहुआ तो सबको ब्राह्मणोंही के कार्य्य और सेवकाई से मिला और अब भी गुरु आचार्य्य ब्राह्मण हैं तो बड़ी भाग्यकी खोट है कि उनमें निश्चय न होय जो किसी के आचरण व कर्म्म कलिके प्रभाव करके दुष्ट भी देखने में आवें तौभी वे विश्वासमता अयोग्यहै यद्यपि राखमें अग्नि दबजाय तौभी तेज मिट नहींजाता जितने महापुरुष व साधु आदि कहलाते हैं सब ब्राह्मणों के प्रभाव करके हुये कि उनको अथवा उनके गुरु अथवा परम गुरुको ब्राह्मणों से उच्चपदवी उपदेशहुई जिस किसी को ब्राह्मणों में विश्वास नहीं हो भगवत् के घरसे निकालेहुये हैं और दोनों लोकसे भाग्यहीन हैं जिसने ब्राह्मणों से द्रोह किया सो सुगति को नहीं प्राप्तहुआ जिसने सेवाकी सो इस संसार में यशी होकर भगवद्भक्तों में गिनागया सो कथा करने के हेतु जैसेही ब्राह्मण मिलते हैं वैसेही आचार्य्य और भगवद्रूप हैं विश्वास तत्त्वहै अभिप्राय यह सब लिखनेका इतना है कि भगवत्कीर्त्तन मुख्योंपर मुख्यतर है कि विना परिश्रम लोक परलोक दोनों प्राप्त होते हैं हे नन्दनन्दन दीनबन्धु हे करुणाकर हाय कि यह मनपापी मतिमन्द ने आजतक कबहीं आपके कीर्त्तन और चरित्रों में चित्त लगाने नहींदिया लड़कपनतो खेलते खाते में खोया और जवानी भांति भांति के अपकर्म और संसारके स्वादुमें अब वृद्धापनपहुँचा तो भी किसीप्रकार आपके चरण कमलोंकी ओर सावधानता नहीं करता यद्यपि भलीप्रकार यह बात जानताहै कि विना आपके शरणहुये ब्रह्मा भी इस संसार से नहीं छुटासक्ताहै पर मायाके जाल में ऐसा फँसरहा हूं कि अपनी हानि लाभपर तनक दृष्टि नहींकरता और सिवाय चरणारविन्दके और कुछ रक्षाका ठिकाना नहींरखता इसहेतु दया व करुणा की आशाकरके कुछ निवेदन करताहूं कि यह समाज आपका मेरे हृदय के दुःखको दूर करके नित्यानन्दका देनेवाला होय यह कि सरयूके किनारे

पर अखाड़ा परम शोभायमान कि दीवारें उसकी छोटी और उन पर चित्र विचित्र चित्राम और स्वर्ण जलसे वेल बूटे बने हुयेहैं, सांझसवेरे आप भाइयों और अपने छोटे वयक्रमियों के सहित वहां जाकर भाँति भाँति की वाजी और खेलमें तत्पर होते हैं कवहीं तो सारुक और शुक और कबूतर और लाल और हंस और सारस व मयूर आदि पक्षियों के खेल और नाच और लड़ाने का मन विश्राम है और कबहीं पतंग उड़ाने का और कवहीं घोड़ों के फ़ेरने दौड़ाने और सवार होनेपर परिश्रम करने का प्रेम करते हैं और कबहीं गुरु जब ठाटा बनेजा व तीरंदाजीका और कबहीं चौगान का अपने मित्रोंके साथ खेलहै और कवहीं मल्लयुद्धका और कबहीं तमाशा हाथी मेढ़ा आदिकी लड़ाईका देखते हैं और कबहीं उमङ्ग अपने वयक्रमियोंकेसाथ हँसी और ठठा दङ्गामुस्तीका कभी नावपर सवारहोकर अवलोकन सरयूका और कबहीं नाच राग इत्यादि देख सुनकर मनवाञ्छित द्रव्य और आभूषण प्रसन्न होकर देते हैं कबहीं गजशाला और घुड़शालाका अवलोकनहै और कबहीं सत्रशाला और सामग्रीशालाकी निरीक्षण और कबहीं ब्राह्मणों और भक्तोंके ऊपर दया और कृपाकी दृष्टिहै और कवहींदास औघरजायें चेरोंपर पालनाकी चितवन ब्रह्मा व शिव व सनकादिक व नारदादि दर्शनोंको नित्य आतेहैं और मनको चरणारविन्दों पर निछावरकरके वियोगकेदुःखसे आँखें आंसू चुवाती और जलतीहुईछाती सहित चलेजाते हैं व मुखारविन्दोंपर कि करोड़ों कामदेव और चन्द्रमा वार जाते हैं अलकें घूंघरवालीछूटीहुई कानोंमें कुण्डल और शिरपर जड़ाऊ किरीट मुकुट छोटासा बुलाक नाकमें बाजूबन्द कड़े पहुँची हाथों में की अँगुलियों में अँगूठी और छल्ले पीताम्बरी जामाकी उसपर मुकेशआदि जगह जगह टँकाहुआहै शोभायमान और ज़री के दुपट्टे से कटि कसीहुई वनमाला के ऊपर मणि और मोतियों की माला पड़ीहुई हैकल पहिने हुये धोती पीताम्बर विराजमान चरणकमलों में घुंघुरू और शोभित वैस बारहवर्ष की और ऐसेहीसाजऔर शृङ्गारके सहित भरत लक्ष्मण शत्रुघ्न और दूसरे राजकुमार व सखासंग हैं छोटी छोटी कमान और तीर हाथोंमें मानो शोभा और शृङ्गार स्वरूपवान् होकर धरतीपर आये हैं और शोभा और सजावट सब ब्रह्माण्डों की इकट्ठी होकर अयोध्यापुरी में देखनेवालों के दृत्तिको अपने बलात्कार से लूटती हैं ॥

कथा वाल्मीकिजी की॥

वाल्मीकिजी ब्राह्मणवंश में जन्मे किसी संयोग से लड़काई में भील के हाथ आगये उसने पुत्रमान के पालनाकरी औ भीलकी लड़की के साथ विवाहभी करदिया आदिसे उद्यम राह लूटने व ठगी व्याधकर्म्म करते रहे एकबार कश्यप अत्रि भरद्वाज वशिष्ठ गौतम विश्वामित्र जमदग्नि सप्तऋषि उस ओर आगये वाल्मीकिजीने उनके लूटनेका मनोरथ किया ऋषीश्वरों ने पूछा कि किस कारण ऐसा दुष्टकर्म्म करता है उत्तर दिया कि बालबच्चों के पालनके निमित्त फिर पूछा कि वे सब तेरे पाप व दुःखमें साझी होंगे तब पूछने गया तब सबने साझा पापमें अंगीकार नहीं किया तब आयके वर्णन किया तब ऋषीश्वरों ने कहा कि वे तेरेपाप में साझीनहीं होते तो तू उनके हेतु अपनापरलोक क्यों बिगाड़ता है इतनेही सत्संग और उनके दर्शन से वाल्मीकिजी को वैराग्य और भय उत्पन्न हुआ अपने कल्याणकीराह हाथजोड़कर पूछी नेत्रोंमेंजल भरआया ऋषीश्वर दयाकरके रामनाम उपदेश करके चले गये पर राम राम के स्थान मरामरा स्मरण रहा एकाग्रचित्त करके जपने लगा कुछ कालपीछे फिर सप्तऋषि जो उधरको आनिकले व वाल्मीकिजी की अन्वेषण करी तो यह लीलादेखी कि एकबामी के समीप जो पशुपक्षी जाताहै रामनाम कहनेलगता है इस चिह्नसे जाना तब निकाला और देखा कि सबप्रकार से शुद्ध और सिद्ध होगये और किसी वेद व शास्त्र व धर्म्म कर्म्म सिखाने का प्रयोजन नहींरहा कि आपसे आप नामके प्रताप से सब जानलिया है बिदाहुये और वाल्मीकिजी के शरीर पर मिट्टीजमकर बामी के स्वरूप होरही थी सर्पादिने उसमें घरकरलियाथा इसहेतु वाल्मीकि नाम रक्खा वाल्मीकिजी सर्वज्ञ व त्रिकालदर्शी जब होगये विचारा कि जिसके नामके प्रभाव से यह हुआ तिसका वर्णन करना चाहिये यह ध्यानकरतेही भीलरूपसे भगवत्‌ने आज्ञादी व नारदजी ने आनकर उपदेश किया और भविष्य रामचरित्र ध्यानमें वाल्मीकिजी के दिखला दिये उसी अनुकूल रामावतार से दशहज़ार वर्ष पहिले सौकरोड़ श्लोक में रामचरित्र वात्सल्य उपासना अपनीभाषामें रचना किया अर्थात् राजपुत्र करिकै श्लोकों में कहा उस रामायण को शिवजीने तीनोंलोक में फैलाया देखना चाहिये कि पहिले वाल्मीकिजी

तो ऐसेथे कि छायास्पर्श ऋषीश्वर नहीं करते और फिर रामनाम के प्रभाव और कीर्त्तन से सोई बाल्मीकि उस पदवीको पहुँचे कि जिनकी कथा व कथन संसारताप के दूरकरनेको छत्रछाहँ होगया व बालचरित्र देखनेकी अभिलाषा बाल्मीकिजीको हुई तब जानकीजी उनके आश्रम में लवकुश सहित रहीं नानाप्रकार बालचरित्रकिये अश्वमेध में घोडा बाँधलिया हनुमान् आदि सबको जीतके बन्दिमें किया पीछे बाल्मीकि जीके साथ अयोध्याजीमें गये यह रामाश्वमेध में कथाहै सो रामनाम की महिमा जहांतक कोई वर्णन करे वह सब थोड़ी है ॥

कथा शुकदेवजी की ॥

ऐसा जगत्में कौनहै जो शुकदेवजीकी महिमा वर्णन करसके जिनके मुखसे श्रीमद्भागवत रूप अमृत की नदीनिकली वह सब पानकरनेवालों को अमर करदेती है एकसमय देवस्त्रियोंने स्नान करते शुकदेवजी से लज्जा न की और व्यासजीको देख लज्जितहोकर वस्त्रलिया व्यासजी ने पूछा तब उत्तर दिया कि शुकदेवजी सिवाय भगवद्रूप के जगत्को दूसरा नहींदेखते और आपको नानाप्रकार का ज्ञानहै इसहेतु तुमसे लज्जा है शुकदेवजी माताके गर्भही से भगवद्भक्त और ज्ञानवान् हुये कारण यहहै कि पार्वतीजी ने शिवजीसे तत्त्वज्ञानपूछा तब शिवजी अपने आश्रम के सबजीवों को अलग करके उपदेश करनेलगे पार्वती को नींद आगई भगवत् इच्छा करके एकशुकका बच्चा उस आश्रममें रहगया सोई पार्वतीजी की जगह हूंहूंकरतारहा वह ज्ञानसुनकर अमरहोगया पीछे शिवजीने जाना तब क्रोधकर मारने के हेतु उद्यतहुए तब वह भागा व्यासजीकी पत्नीके उदरमें बारह वर्षरहा पीछे देवता और ऋषीश्वरोंकी प्रार्थनासे शुकदेव महाराजने जन्मलिया और तुरन्त बन को गमन किया व्यासजी पीछेपीछे हे पुत्र हे पुत्र करते मोहकेवश चले तबसब ओरकेवृक्षोंसे जङ्गलमें धुनिहुई कि मैं और तू दुःख और सुख यह सब भ्रमहै इस संसारमें न जाने तुम केवेर मेरेपिताहुये और हम तुम्हारे और जो देखने में आता है सो सब भगवद्रूप है विद्याका जानना भगवत्के जानने के हेतुहै जो द्वैतपन न छूटा तो विद्या सब निष्फल है व्यासजी यह उत्तर पाकर फिरआये पर इसीविचार व उपायमें रहे कि शुकदेवजी फिर आयरहैं इसहेतु कितने लड़कोंको श्रीमद्भागवत के

श्लोक सिखाकर जिस वनमें शुकदेवजी रहाकरतेथे वहांभेजदिया एक दिन शुकदेवजीने किसीलड़केकेमुखसे यह श्लोक सुना आश्चर्य किया यह पापात्मा पूतना स्तनमें विष लगाकर मारनेके लिये गई पर उसको वह गति प्राप्तहुई कि दूसरे को न मिलसकै सो ऐसा दयालु तो और कौन है कि जिसके शरण जावैं शुकदेवजी सुनकर स्नेहबद्ध होगये और लड़कों से आनकर पूछा उन्होंने व्यासजी से सीखने का वृत्तान्त कहा शुकदेवजी आये अत्यन्त प्रेमसे श्रीमद्भागवतको पढ़ा पीछे यहइच्छा हुई कि किसी प्रेमीको सुनानी चाहिये परकोई अधिकारी देखने में न आया नितान्त राजापरीक्षितको योग्य समझा और गंगाके किनारे पर राजाको सुनाकर सात दिन में भगवत्परायण और मुक्त करदिया और जिसजिसने उससभामें सुनी सब भगवत्परायण हुये और अबभी जो कोई सुनताहै परमपदका अधिकारी होताहै ॥

कथा जयदेवजी की ॥

सब कवि मण्डलीक राजों के सदृश हैं उनके राजा चक्रवर्त्ती स्वामी जयदेवजी हुये गीतगोविन्द तीनों लोकमें ऐसा प्रकाशित किया कि कोक और काव्य और नौरस और शृङ्गार का समुद्र है जिसकी अष्टपदीको जो कोई पढ़ताहै निश्चय बुद्धिमान् और ज्ञाता शास्त्रोंका होजाताहै और जहां जो कोई कीर्त्तन करताहै अरु सुनने के निमित्त निश्चयकरके भगवत् प्रसन्न होकर आतेहैं और भगवद्भक्त जो कमल सदृशहैं उनके फूलने और आनन्दके हेतु सूर्य्य के सदृश हैं और भगवत्का आनन्द देनेवाला भी वैसाही है और यह जानरक्खो कि कोक और शृङ्गारपद से विषयी लोगों के मन व बुद्धिमें जो कोक व शृङ्गारवर्त्ति रहाहै उसका निश्चय न होवे शृङ्गारपद से भक्तमालआदि की रचना करनेवाले का यह तात्पर्य्य है कि वह शृङ्गार जिसका वर्णन केवल भगवत् शोभा व भगवत्में होवे कुछकुछ इस ग्रंथके आदिमें लिखा और तेईसवीं निष्ठामें लिखा जायगा और रसराज जिसका नामहै और जिसके वर्णन में वेदकी यह श्रुति है कि जिसको प्राप्त करके निश्चय भगवत् का आनन्द मिलता है सो रस जयदेवजीने इस गीतगोविन्द में वर्णन किया है और कोक उसकी एक शाखाहै स्वामी जयदेवजी कुड़बिल्वमें कविराजहुये रसराज जो शृङ्गार तिसके मूर्त्ति थे पर उस रसका स्वादु अपनेही मन में लेने रहे [illegible]

यह कि वैराग्य इतना था कि किसी रात एकपेड़के नीचे नहीं रहतेरहे और सिवाय एक गुदरी व कमण्डलुके कुछ अपने पास नहीं रखतेथे म-सिहानी लेखनी व पत्रिका तो कौनबातहै भगवत्को उस रसराजकीप्र-वृत्ति अङ्गीकारहुई इस हेतु यह उपाय किया कि एकब्राह्मणको प्रतिज्ञा रही कि अपनी लड़की जगन्नाथजीको भेंटकरूंगा जब लड़कीलाया तब स्वामी की आज्ञाहुई कि जयदेव मेरास्वरूपहै यह लड़की उसीकोदेव तब जयदेवजी के पास लड़कीसहित जाकर प्रभुकी आज्ञाकावृत्तान्त निवेदन किया उन्होंने कहा कि लड़की योग्य धनवान्को देना उचित है विरक्त फक्कड़ोंको नहीं ब्राह्मण न बोला भगवत् आज्ञामें मेरा क्या वश जयदेवजी बोले वे प्रभुहैं हजारों लाखों स्त्री उनकी शोभित हैं हमको एकपहाड़के समान है नितान्त समझाते समझाते ब्राह्मण न हारा तब लड़की छोड़कर चलागया व धर्म्म लड़की को दृढ़ाय गया जयदेवजी लड़की को भी समझा थके तब भगवत् आज्ञासे बेवशहोकर एक छोटी कुटी बनाकर भगवत् सेवा पधराकर भगवत् सेवा में रहनेलगे और गीतगोविन्दकी रचनाके प्रारम्भमें एक अष्टपदी में प्रियाजी के मानके वर्णन में यह भाव ध्यान में लाये कि श्रीकृष्णस्वामी मनावनेके समय इस दीनता सहित प्रियाजी से विनती करते हैं कि कामदेवका विष दूरकरनेवाला जो आ-पका पवित्र चरणकमल उसको मेरे मस्तकपर शोभायमान करो पर ढिठाई शोचकर न लिखसके दूसरे भावको चिन्तन करते स्नान करने चलेगये भगवत् आप जयदेवजी के रूपसे आकर जो भाव जयदेवजी ने पहिले अपने मनमें विचाराथा उसीको रचिके लिखगये कि भाव उ-सका ऊपर लिखागया जब जयदेवजी स्नान करके आये और अपने विचारित भावको सुन्दर पदन से रचिके लिखा देखा तब पद्मावती अ-पनी स्त्री से पूछा तब उत्तरदिया कि आपही अबहीं आयके लिखगये फेर पूछतेहौ जयदेवजीने भगवच्चरित्र जाना व गीतगोविन्द को परम पवित्र समझा इस गीतगोविन्द की ख्यात थोड़ेदिनमें जहां तहां हो-गई और सबको अंगीकृत हुआ जगन्नाथपुरी का राजा पण्डित रहा उसने भी एक गीतगोविन्द रचना किया जयदेवजी का गीत व राजा का दोनों जगन्नाथके मन्दिरमें रखदियेगये जगन्नाथरायजीने जयदेव जीके गीतगोविन्द को छातीसे लगालिया राजा लज्जित होकर समुद्र

में डूबनेचला प्रभुने आज्ञाकी कि यहकर्म्म उचित नहीं न्याय उचितहै जयदेवजी की भक्ति और कविताई को तुम्हारी नहीं पहुँचती अच्छा जयदेवजी के गीतगोविन्द में प्रतिसर्ग में एकश्लोक तुम्हाराभी रहेगा पर नाम जयदेवजीका ख्यात होगा बारह सर्ग गीतगोविन्दहै एक मालीकी लड़की यह अष्टपदी पांचवें सर्ग गीतगोविन्द की गातीहुई बैंगन तोड़ती फिरती थी जगन्नाथ स्वामी उसके पीछे जिसओर वह जातीथी सुनते हुए फिरने लगे कांटेसे झँगाफटगया राजा दर्शन के समय झँगादेखकर चकितरहा पण्डों से पूछा नितांत जगन्नाथ स्वामी ने राजाके हृदयमें वृत्तान्त प्रकाश करदिया राजाने निश्चय करके डौंड़ी फेरवादी कि जो कोई गीतगोविन्द पढ़ै तो पवित्र स्थान व शुद्धमें पढ़ै कि आप भगवत् सुनने को जायाकरते हैं एक मुगल बड़े प्रेमसे इस पोथी को पढ़ा करताथा एकदिन घोड़ेपर सवार और प्रेमभावसे मग्न होकर अष्टपदी को गाताथा उसको दर्शन हुये कि सुननेको साथहैं इस गीतगोविन्दकी महिमा और प्रताप कौन वर्णन करसक्ताहै स्वर्गलोकमें देवकन्या गानकरतीहैं एक समय जयदेवजीको राहमें ठगलगे तब यह शोचा कि पापकामूलधनहै और रोगका मूल अत्यन्त भोजन है व दुःख का मूल स्नेह है सो इनतीनों का त्याग उचित है यह शोचकर जो कुछ पासरहा सो ठगोंको देदिया ठगोंने जाना कि यह बड़ा धोखेबाज़है कुछ उत्पात पीछेकरैगा अनेकबातें विचारनेलगे निदान हाथ पांव काटकर एक कुँवेमें जयदेवजी को डालदिया एकराजा भगवत् इच्छासे आय गया निकाला हाथ पाँय नहीं देखकर पूछा जयदेवजीने कहा कि माता के गर्भसे ऐसेही जन्म मेराहुआ वार्त्तालाप होनेसे राजा जानगया कि कोई प्रतापी भगवद्भक्तहै भाग्यसे मुझे दर्शन हुआ अपनी राजधानी को लेगया हाथजोड़के कुछ सेवाके निमित्त विनती किया जयदेवजीने साधुसेवाकी आज्ञादी राजा अङ्गीकार करके साधुसेवा करनेलगा जब ख्यातहुआ ठगभी साधुकारूपबनाकर पहुँचे जयदेवजीने राजासे कहा कि यहलोग हमारे बड़ेभाई व बड़े महापुरुष हैं अच्छेप्रकार सेवाकरो राजाने वैसाही किया पर ठगोंने भी जयदेवजीको पहिंचानलिया इस हेतु त्रासयुक्त बिदाहोनेकी विनती नित्यकरते थे निदान एकदिन बहुत रुपया दिलादिया व बिदा करादिया कुछ सिपाही घरतक पहुँचाने को

पठये सिपाहियोंने पूछा कि स्वामीजीसे कैसीप्रीति व सम्बन्ध है जो ऐसे मर्य्याद से विदाई हुई ठगबोले कहनेयोग्य बातनहीं सिपाहियोंने वचन दिया कि किसीसे न कहेंगे वे ठग बोले कि एकराजाके यहां हम लोग और तुम्हारे स्वामी चाकरथे किसी अपराध करने के कारण बध करने की आज्ञादी सो हम लोगोंने हाथपांव काटलिये जानछोड़दी इसी हेतु यह सेवा हम लोगोंकी कराई यह अपवाद भक्तका प्रभु न सहिसके धरती तुरन्त फटगई व ठगसब पाताल में चलेगये सिपाहियों ने सब वृत्तान्त जयदेवजी से आकर कहा वे दयासे कम्पमान होकर हाथपांव मलने लगे तो हाथ पांव निकलआये जैसे पूर्व्वहीरहे वैसेही होगये यह दोनों वृत्तान्त सिपाहियों ने राजासे कहे राजाने आयके स्वामीजी से पूछा कुछ न बोले जब बहुत पूछा तब सब वृत्तान्त कहसुनाया राजा अतिविश्वासयुक्त सेवा करनेलगा सच करके भगवद्भक्तों की रीति है कि जो कोई उनकेसाथ दुष्टताकरै वे अपनी साधुतासे चूकते नहीं जैसेदुष्ट अपनी दुष्टतासे नहीं चूकता जयदेवजीने अपने देशके जानेका विचार किया तब राजाने बहुत प्रार्थना करके न जानेदिया आप जाकर पद्मावतीजी स्वामीजी की पत्नीको लेआकर राजमन्दिर में निवासकराकर रानीको सेवामें पद्मावतीजी के बहुत दृढ़किया उस रानीका भाई मर गयाथा उसकी स्त्री साथ सती होगईथी रानीने एक दिन पद्मावतीजीके आगे एक आश्चर्य्य सहित अपने भाई भावजकी बातकही पद्मावती जी सुनकर हँसीं रानीने कारण हँसनेका पूछा तो उत्तर दिया कि शरीर का जलादेना पतिके साथ इसमें प्रीतिकीरीतिकी हानि है मुख्य प्रीति व स्नेह वहहै कि तुरन्त अपने पतिकी मृत्यु सुनतेही उसीक्षण अपना प्राण निछावर करै रानी बोली इस समय में तो ऐसी सती आपही हैं और पद्मावती जी की परीक्षा लेनेको पीछे पड़ी राजासे जाकहा कि स्वामीजीको एकदिन फुलवाड़ी में लेजाव और नगरमें विख्यात करदेव कि स्वामी जी मरगये राजाने उस रानीको समझाया कि ऐसी बात जिस में मेरा शीशकटै न करनी चाहिये नितान्त न मानी राजाने वैसही सब किया तब आंखोंमें आंसू भरे रानीपद्मावतीजीके पास जाबैठी उन्होंने कारण दुःखितहोने का पूछा रानी रोनेलगी पद्मावतीजीने कहा स्वामी जी आनन्दसे हैं तब रानी लज्जितहुई दश बीसदिन पीछे फिर वैसीही

ात उठाई पद्मावतीजीने समझा रानी परीक्षाके हेतु पीछे पड़ीहै रानी
के मुखसे वह बात सुनतेही प्राणको छोड़दिया यहदशा देखतेही रानी
ा राजाका रंग सफेदहोगया और इतने शोकान्वित हुये कि जीना विष
होगया व अपने जलने के निमित्त चिताको रचाया स्वामी जी यह स-
माचार सुनतेही तुरन्तआये राजाको मृतकप्राय देखा व शोकसे जलने
को तैयारहै बहुत समझाया न माना स्वामीजीने विचारा कि विनाजिये
पद्मावतीके राजाका जीना कदापि नहीं होगा अष्टपदी गीतगोविन्द की
गाई कि पद्मावतीजी उठबैठीं और साथ गानेलगीं तौभी राजा साव-
धान न हुआ स्वामीजीने बोध करके अपघातसे बचाया कुछदिन पीछे
अपने स्थानपर गये कुड़बिल्व गांवमें घर था वहां पहुँचे गंगाजी अ-
ठारह कोसपर रहीं नित्यस्नानको जाते वृद्धता देखि गंगाजीकी एकधारा
जिसकानाम जयदेई गंगाहै स्वामीजीकीकुटीकेनीचे बहनेलगी अद्यापि
बहती है जयदेई गंगानाम विख्यात है॥

कथा तुलसीदासजीकी॥

गोसाईं तुलसीदासजी को भक्तमालके कर्त्ताने बाल्मीकिजी का अ-
वतार लिखा है सो इसमें कुछ संदेह नहीं कि उनकी वाणी में प्रभाव
देखाई पड़ता है कि हृदयमें चुभिजाती है और रामचरित्र रूपी अमृत
की धाराको इस कलियुगमें प्रवाहमान कियाहै व सबको सुलभहै और
चौदह रामायण अर्थात् चौपाईबन्द जो विख्यात हैं व विनयपत्रिका व
गीतावली व कवितावली व दोहावली व रामशलाका व हनुमान्बाहुक
व जानकीमंगल व पार्व्वतीमंगल व कड़काछन्द व बरवाछन्द व रो-
लाछन्द व झूलनाछन्द एक दूसरा कि प्रेमियों को व उपासकों को सब
जगह मिलसक्ते हैं और भक्तोंके मुखसे निश्चय होचुकाहै कि जो कोई
नेम करके नित्य किसी रामायणका पाठ करताहै निश्चय श्रीरघुनंदन
स्वामीके चरणों में प्रीति होजाती है व कामना करके कांडका पाठकरै
तो सिद्ध होजाताहै व रामशलाका में जो प्रश्नकरै तो ऐसे दोहे निकलैं
कि जो होनेवाली बातहो सो ज्ञात होजाय और तुलसीकृतरामायणको
काशीजी के सब पण्डितों ने सभा करके सम्पूर्ण पढ़ा आदि अन्त सब
वेद शास्त्र पुराण गीताजी के अनुकूल देखकर सबने अंगीकार लिख-
दिया,कोई कोईने द्वेष करिकै वाद ठाना तो विश्वेश्वरनाथजी के अंगी-

कार करनेसे सबको अंगीकृत हुआ गोसाईं तुलसीदासजी कान्यकुब्ज ब्राह्मण रहे अपनी स्त्री से स्नेह विशेष रखतेथे एकदिन स्त्री अपने मैकेमें मा बापसे मिलने को गई गोसाईंजी को इतना वियोग हुआ कि सहन न होसकी अपनी ससुरारिमें पहुँचे स्त्रीको लज्जा आई क्रोधकरके गोसाईं जीसे बोली कि यह शरीर अस्थि मांसका अनित्यहै रघुनन्दन स्वामी नित्य निर्विकार पूर्णब्रह्महैं तिनसों क्यों नहीं स्नेह करते कि दोनोंलोक में लाभहो इतने कहने से गोसाईं जी पण्डित और ज्ञानवान् थे पूर्व पुण्यके पुञ्ज उदयहुये ज्ञान वैराग्य की आँखें खुलगईं काशीजी में आकर श्रीरघुनन्दनस्वामी के भजन कीर्त्तनमें लगे गोसाईंजी दिशाफिरने वनमें जायाकरते तो पानी शौचशेष को एक जगह नित्य डालदियाकरते थे वहां एकभूत रहताथा उस पानीसे उसकी तृषा मिटती थी एकदिन प्रसन्न होकरबोला कि तुमको कामनाहो सो कहो गोसाईंजीने कहा रघुनन्दनस्वामी का दर्शन करादे भूतने कहा कि यह सामर्थ्य मेरेमें नहीं पर हनुमानूजीका पता यह बतलाताहूं कि अमुकस्थान में कथा रामायण होतीहै और हनुमानूजी सबसे पहिले ऐसे कुरूपसे कि जिसको देखते डरलगै और घृणाहोय आते हैं सबसे पीछे जाते हैं इस पहिंचान से गोसाईंजी हनुमानूजी के पीछे चलेगये वनमें चरण पकड़लिया न छोड़ा हनुमानजी ने दर्शनदिया कहा जो चाहनाहो कहो विनय किया रघुनन्दन स्वामीका दर्शन चाहताहूं आज्ञादी कि चित्रकूटमें दर्शनहोगा गोसाईंजी अतिअभिलाष से चित्रकूट में आये एकदिन इस स्वरूपसे दर्शन हुआ कि रघुनन्दनस्वामी श्यामसुन्दर राजकुमार के स्वरूप से वसन भूषण बहुमूल्य के पहिने धनुषबाण लिये घोड़पर सवार और लक्ष्मणजी गौरमूर्त्ति वैसेही सजावटके सहित साथ एकहरिण के पीछे घोड़ा डालहुये जाते हैं यद्यपि स्वामीकीमूर्त्ति मन और आंखों में समाय गई पर यह न जाना कि ये स्वामी हैं पीछे हनुमानूजी आये गोसाईंजी से पूछा कि दर्शनकिये गोसाईंजीने विनय किया कि दो राजकुमारदेखे हैं हनुमानूजी बोले कि वही रामलक्ष्मणथे गोसाईंजी उसी रूपकाध्यानकरते हुये मुख्य मनोरथ को प्राप्तहुये एकहत्यारा पहिले रामका नाम टेरकर कहाकरता कि हत्यारेको भिक्षादेव गोसाईंजी को आश्चर्यहुआ कि यह कैसापुरुष है कि पहिले रामनाम लेताहै फिर अपने आपको

हत्यारा कहताहै व ठहराता है बुलाया और प्रेम शुद्ध जानकर उसको अपने साथ भगवत् प्रसाद जिमाया काशीके पण्डितोंने सभाकरी और गोसाईंजीको बुलाकर पूछा कि प्रायश्चित्त विना किसतरह इसका पाप दूर हुआ गोसाईंजी ने कहा एकवार रामनाम लेनेका क्या माहात्म्य है शास्त्रमें देखो इसने तो सैकड़ोंवेर नाम उच्चारणकिया तो शास्त्रके वचन पर जो विश्वास नहीं तो अज्ञानका अंधकार दूर नहीं होसक्ता पण्डितों ने यद्यपि शास्त्रको माना तथापि वेविश्वाससे यह ठहराया कि विश्वेश्वरनाथ का नाँदिया इसके हाथसे भोजनकरै तो सत्यमानें सो नाँदिया ने उसके हाथसे धरायाहुआ प्रसादको भोगलगाया सब पण्डितों ने लज्जितहोकर नामकी महिमा व गोसाईंजीकी भक्तिपर निश्चय किया एकदिन गोसाईंजीके स्थानपर रातको चोर चोरी करने को आये तो श्री रघुनन्दनस्वामी धनुषबाणलेकर चोरोंकोडरवाते फिरे चोरीकरने न पाये गोसाईंजीसे प्रभातको आके पूछा कि महाराज वह श्यामसुन्दरकिशोर मूर्त्ति परममनोहर कौन है जो रातको चौकी देताहै गोसाईंजी सब वृत्तान्त सुनकर प्रेममें डूबगये फिर विचारा इससामग्री के हेतु परिश्रम व रातको जागरण स्वामीका अच्छा नहीं बहुत रोनेलगे.उसीघड़ी सबधन सामग्री दानकरदिया चोर यह वृत्तान्त देखकर घरवार छोड़कर भगवत् शरणहोगये और एकब्राह्मण मरगया उसकी स्त्री विमानकेसाथ सतीहोने जातीथी गोसाईंजीको दण्डवत् किया गोसाईंजीके मुखसे निकलगया सौभाग्यवती उसने कहा मेरापति मरगया यहदासी सती होनेजाती है सौभाग्य कहां है गोसाईंजीने उसके कुलमें भगवद्भक्ति करनेकी प्रतिज्ञा करायके पतिको जिलादिया जब यह बात विख्यातहुई तो बादशाहने बड़े आदरसे बुलाकर उच्चआसनपर बैठालकर सिद्धाई दिखलानेको विनयकिया गोसाईंजी बोले सिवाय रघुनन्दनस्वामीके दूसरी सिद्धाई कुछ नहीं जानताहूं और न इस झूठे खेलसे कामरखताहूं बादशाहने कहा कि अपने स्वामीहीके दर्शन करादेव यहकहकर बंदिमें किया गोसाईंजी ने हनुमानजीका स्मरण किया उसीघड़ी वानरों की अगणित सेनाने बादशाही क़िलेमें ऐसा उत्पातकिया कि प्रलयकाल दिखलाईपड़ा बादशाह जब पलँगपरसे उलटागया तब ज्ञानशुद्धसे गोसाईंजीकी शरणमें आया चरणपर गिरा तब सब वानरीसेना अन्तर्द्धान होगई तब तुलसीदासजी

ने आज्ञादी कि तुमदूसरा किला रहनेको देखलेव यह स्थान रघुनाथजी का हुआ बादशाहने तुरन्त छोड़दिया तुलसीदासजी काशीको चलेआये एक कोई भक्तों के वैरीने गोसाईंजी के मारने को अनुष्ठान जपका किया गोसाईंजी ने एक पद महादेवजी का बनाया कुछ न हुआ वह आप लज्जित होरहा फिर गोसाईंजी वृन्दावनआये नाभाजी से मिले उनकी रचना भक्तमालकी देख सुनकर बहुत प्रसन्नहुये और यहबात जो फैली है कि गोसाईंजी ने मदनगोपालजी के दर्शन के समय यह बात कहीथी कि धनुषबाण धारण करोगे तब दण्डवत् करूंगा सो यह बात निपट झूठ और बिना शिरपैरकी है काहे कि कृष्णावली में कृष्णयश गोसांईं जीने गायाहै सो प्रसिद्ध है सिवाय इसके सब जगत्को दण्डवत्किया है—सियाराम मय सब जगजानी। करौं प्रणाम सप्रेम सुबानी॥ यह चौपाई जिसकी कही है भला सो कब भगवत् के साम्हने ऐसी हठबानी कहसक्ताहै इसबातके फैलनेकी बात यह है कि उपासक जिस देवताके मंदिरमें जाताहै अपने इष्टकारूप ध्यानकरताहै यहरीति शास्त्रके सम्मत के अनुकूल गृहीतहै सो गोसाईंजी दर्शनकोगये व परम मनोहर मूर्त्ति को देखा तो श्रीरघुनन्दन धनुषबाणधारी का ध्यानकरके दण्डवत् किया सो गोसाईंजी भक्तसांचे व सिद्धथे इसहेतु मदनगोपालजी ने भी उनके ध्यानके अनुकूलरूप दिखादिया जो कोई उससमय दर्शन करनेवाले थे उनकोभी धनुषबाणधारी दृष्टिमेंआये इसहेतु वह बातफैली और किसी ने एक दोहरा भी बनालिया वृन्दावनमें किसीने गोसाईंजीसे प्रश्नकिया कि श्रीकृष्ण महाराज पूर्णब्रह्म और अवतारी हैं और नृसिंह, बामन, परशुराम, रामचन्द्र आदि उस अवतारी के अंशकला से अवतार हैं तुम श्रीकृष्ण महाराजकी उपासना क्योंनहीं करते यद्यपि शास्त्रप्रमाण से गोसाईंजी उत्तरदेनेको समर्थ थे पर माधुर्यभाव में प्रेमभक्तिको दृढ़ करतेहुये ऐसा उत्तरदिया कि वह चुपहोरहा और सिद्धांत बनारहा सो वह यह है कि श्रीरामचन्द्र दशरथनन्दनको बहुत सुन्दर सुकुमारअंग मनोहरमूर्त्ति परम शोभायमान देखकर हमारामन लगगयाहै कि नहीं छूटता अब जो तुम्हारे वचन से उनमें कुछ ईश्वरताभी है तो और अधिक व मनभाई भई॥ कथा सूरदासजी की॥

सूरदासजी की रचना सुनकर ऐसा कौन है जिसका मन प्रेम से न

उमँगे और शिर न हिलजाय जिसमें अर्थभाव और स्वाद और ललित अक्षरोंकी बैठक और अनुप्रास और भगवत् प्रेमका निबाह व सलिल अर्थ व तुलेहुये व विकलित बहुत हैं और भगवत् ने जो चरित्र किये ऐसा विस्तारसहित वर्णनकिया कि मानों देखतेथे ऐसा विमलहृदय जिसकाहै अथवा भगवत्ने आप उनचरित्रोंका प्रकाश उनके हृदयमें झलकायदिया भगवत्के जन्म और कर्म्म और गुण और रूप ऐसे प्रकट किये कि जो उनको पढ़ता है अथवा सुनता है निश्चय बुद्धि निर्मल व मनपवित्र होकर भगवत्परायण होजाता है उद्धवजी जो श्रीकृष्ण महाराजके सखा व मित्रथे उनके अवतारहैं यद्यपि विष्णुस्वामी सम्प्रदाय में रहे व बालचरित्रों में चित्तकी चाह बहुतथी पर शृंगारनिष्ठा और सखाभावका प्रेमभी अत्यंत था कि सूरसागरसे प्रकटहै महिमा सूरदास जी की और सूरसागरकी किससे वर्णन होसक्तीहै कि जिनकी कृपा से सहस्रों अपराधी सिद्ध और शुद्ध भगवद्भक्त होगये उनका संकल्प यह रहा कि सवालाख विष्णुपद में भगवच्चरित्रों का कीर्त्तन करें पर जब पचहत्तर हज़ार रचना करचुके तब परमधामको चलेगये पचास हज़ार आप श्रीकृष्ण महाराज ने रचना करिके अपने भक्तका संकल्प पूराकरदिया और सूरश्याम के नामसे भोगरखदिया खानखाना वज़ीर बादशाह अकबरका विद्या संस्कृत व भाषा में पण्डितरहा कवि भी था उसने सूरदासजी के पद जहां तहांसे ढूँढ़ ढूँढ़ कर इकट्ठेकिये और एक पद एकमोहरका ठहरगया बहुतलोग मोहरके लोभसे नये पद बना बनाकर सूरदासजी के भोगमें नाम डालकर लेगये जब भीड़हुई तो यह विचारकिया कि एकपद सूरदासजीका तौलका बाटखरा रखलिया नये पद जोआवैं उसीसे तौलना आरम्भकिया जो पद नयाहोता सो कागज़ मोटाभी हो व पदभी बड़ाहो तौभी बराबर न तुलता व सूरदासजीका बनायापद छोटापदभी हो व कागज़महीन तौ भी बराबर होजाता इसी परीक्षा से सूरसागरको रूपमान ग्रन्थकिया किसी की यह कहावत है कि अकबर बादशाह ने सूरसागर इकट्ठा किया और दोलाख विष्णुपदका संयोगपहुँचा तब अग्निमें डालदिया सूरदासजी का न जला औरों का बनाया जलगया तो दो कहावतों में जो सचहो पर बड़ाई व प्रभाव से व्यतिरिक्त सूरसागर नहीं और यह कहावत न विख्यालहोती तो क्या

सूर्य छिपारहता है सूरसागर को भगवत् ने वह प्रताप व प्रभाव कृपा किया है कि एक एक अक्षर मंत्र के सदृश हैं ॥

कथा नन्ददास जी की ॥

नन्ददासजी पुत्र चन्द्रहास जाति ब्राह्मण रहनेवाले रामपुरके भगवद्भक्त प्रेमी व नामी विख्यात हैं कि अनुक्षण सिवाय भगवत् व कीर्त्तन के दूसराकाम नहींथा रचना उनकी जैसे पञ्चाध्यायी व रुक्मिणीमंगल व दशमस्कन्ध व नाममाला व अनेकार्थ व दानलीला व मानलीला आदि हज़ारों विष्णुपद उनकी भक्तिके सदृश सारे संसार में विख्यात हैं उनके काव्यकी श्लाघामें कविलोगों को यह कहाहै कि । और सब घड़िया, व नन्ददास जड़िया, अष्टछापके भक्तों में इनकी भी गिनती है जानरक्खो आठभक्त जिन्हों ने श्रीकृष्णस्वामी के चरित्र कीर्त्तन किये और उनके विष्णुपद ब्रजमें भगवत्के सम्मुख कीर्त्तन कियेजाते हैं उनकी गिनती अष्टछापमें है और नाम मंगलरूप उनके यहहैं १ सूरदास २ कृष्णदास ३ छीतास्वामी ४ नन्ददास ५ परमानन्द ६ चतुर्भुज ७ व्यासजी ८ हरिदास ॥

कथा चतुर्भुज जी की ॥

चतुर्भुजजी भगवद्भक्त परमरसिक हुये नित्य श्रीवृन्दावन में विहारीजी के मन्दिर में अत्यन्त प्रेम व भावसे नृत्य करतेथे एकदिन नृत्यकरते में लँगोटी खुलगई दोनों हाथोंसे झांझ बजारहे थे ताल व समके भंगहोने के भयसे लँगोटी न सम्हाली व लोगोंके ठट्ठाकरने की चिन्ता भी हुई तबतक परमरिझवार विहारीने दोभुजा और उत्पन्नकरदीं और अपनेभक्त की लज्जा रखली ॥

कथा मथुरादास जी की ॥

मथुरादासजी जो चेले वृद्धमानजी के ऐसे भगवद्भक्त धर्म्म में सावधान हुये कि नन्दनन्दन महाराजका दृढ़ विश्वास और वल रखते थे प्रीति ऐसी की कि अपने शिरपर कलश जलका रखकर लेआते और ऐसे प्रेम व भक्तिसे रासचरित्र का शृङ्गार किया करते कि मानो उनका हाथ भगवच्चरित्र और माधुर्य्य के दर्शाने को सूर्य्य के सदृश था एक समय कोई साधु वेषसे वृन्दावनमें आया चेटक यह करता कि शालिग्राम सिंहासन पर डोलते रहते सो मथुरादासजी भी चेलों के कहने से

ये जानेसे चेटक बन्दहोगया तब उसने मूठमंत्रमारा सोभी उलटकर सीपर पड़ा मरने के योग्यहुआ तब मथुरादासजी ने जिलाया॥

कथा सुखानन्द जीकी॥

सुखानन्दजी संसार के आवागमनके भयके दूरकरने को एकहीहुये काव्यरचना उनकीगुरुमंत्र व तंत्रशास्त्रके तुल्य विख्यातहै भोगमें जहां अपना नाम लिखा तहां भगवत्का नाम सुखसागर लिखा जैसे जैसे चन्द्रसखी ने बालकृष्णनाम व मीराजी ने गिरिधरनागर नाम लिखा है भगवद्गुण चरित्र कीर्त्तन भजन अतिप्रेमसे करते व भक्ति कमलके सेवा करने में मानो सरोवर थे॥

कथा श्रीभट्टजीकी॥

श्रीभट्टजी ने आनन्दकन्द ब्रजचन्द महाराज औ वृषभानुकिशोरी के भजन स्मरणका ऐसा सामान दृढ़ इस संसार में करदिया कि संसार समुद्र के उतरने को नौकाके सदृश है अर्थात् माधुर्य्य उपासना के जो शोभायमान चरित्र प्रिया प्रीतम के हैं सो अपने युगलशत आदि ग्रंथ में रचना इस मिठाई व मधुबानी व सुन्दरताके सहित वर्णनकी कि निश्चयकरिकै मनद्रवीभूत होकर नवलकिशोर और नवलकिशोरी महाराज के चरित्र और प्रेम में मग्नहोता है और अज्ञानरूपी अन्धकारके दूरकरने को जिनका सुयश चन्द्रमा है॥

कथा वर्द्धमान गंगलकी॥

वर्द्धमान व गंगल दोनोंभाई बेटे भीष्मभट्ट परमभक्तके थे दोनों भक्तिके दृढ़करनेवालेहुये भगवच्चरित्र और श्रीमद्भागवत के कीर्त्तनकीनदी बहाई और इस संसारको पापोंसे पवित्र और निर्मल करदिया व भक्तों से ऐसी प्रीतिरही कि सर्वकाल भीड़ रहतीथी और यशोदानन्दन महाराजके स्मरण भजनसे प्रेमथा व दीनजनोंपर कृपा अत्यन्त थी॥

कथा कृष्णदासजी की॥

कृष्णदासजी विख्यात चालककी रचना चर्चरी छन्द व विष्णुपद आदिकी ऐसी विख्यातहुई कि समुद्रपर्य्यंत पहुँची अलग अलग ग्रंथ सब चरित्र जैसे गुरुधनचरित्र व पञ्चाध्यायी व रुक्मिणीमंगल भगवद्भोजन विधि इत्यादिकी रचनाकी सुखदेनेवाले घटाके सदृशहुये भगवत् सम्मुख करने के हेतु उनका अवतार हुआ॥

कथा नारायणमिश्र की॥

नारायणमिश्र नवलावंश में परमभक्तहुये भागवत के कीर्त्तन में तो मानो वेही एक जन्मेथे क्योंकि जिनको बद्रिकाश्रमकी ओर शुकदेवजी ने आप भागवत पढ़ाई जिनके पास भक्तोंकी समाज नित्य रहा करती थी नवधाभक्तिको जिसने भलीप्रकार साधा सबशास्त्रोंको अच्छे समभ कर तत्त्व चुनलिया जो बृहस्पति और शुकदेव और सनकादिक व व्यास और नारदादिकों को अंगीकार व हृदयस्थ है सुधाबोध थे गंग तुल्य जिनका दर्शन था॥

कथा कमलाकर की॥

कमलाकरभट्ट परमभक्त और पण्डित सर्वशास्त्रों के ज्ञाताहुये उपासना शास्त्रके तो ध्वजाहीरहे कि भक्ति विरोधियोंको शास्त्रार्थ में जीतक भगवद्भक्तिपर स्थिरकिया माध्वसंप्रदायमें मानो माधवाचार्य्यके अवतार हैं माधवाचार्य्य ने जो दिग्विजयटीका भागवतकी रचनाकरी है उसी के अनुकूल भागवतका कीर्त्तन और वर्णनकिया करतेथे स्मृति व पुराण के अनुकूल भगवत् के शङ्ख चक्रकी महिमा वर्णन करके आप चिह्न उनके धारणकरे व सब अवतारोंको पूर्ण समझा किसी में कुछ भेदनहीं किया॥

कथा परमानन्दजी की॥

परमानन्दजी गोपियों के सदृश श्रीकृष्णजी के स्नेह व प्रेममें बेसुध व मग्न रहतेथे व्रजकिशोर स्वामी के चरित्र बारहवर्षकी अवस्थाके ऐसे कीर्त्तनकिये कि विख्यातहैं और जो उन्हों ने शोभा व सुन्दरता और माधुरीरूप और लीलानटनागर महाराजकी अतिप्रेमयुक्त वर्णन करी सो कुछ आश्चर्य नहीं कि वह शोभा व चरित्र उनके बाहर भीतरकी आंखों के आगेथा प्रेमका जल आंखों से बहता और रोमांच अनुक्षणरहताथा व स्वरभंग शोभाधाम महाराजकी शोभामें पगेहुये व उस रंग में रँगेहुये थे और अपने काव्य में सारंगनाम भगवत् का विशेषकरके लिखते व रचना उनकी भगवत्प्रेम की बढ़ानेवाली ऐसी है कि भगवत् के ध्यान

निष्ठा छठवीं॥

वेष वर्णन जिसमें कथा आठ भक्तों की है॥

श्रीकृष्णस्वामी के चरणकमलोंकी ध्वजारेखाको दण्डवत् करिके यज्ञ अवतार को प्रणाम करता हूं जिससे वैवस्वत आदि राजालोग यज्ञ और धर्मका उपदेश पायकर संसार समुद्र से पारहुये जानरक्खो कि भगवत्के मिलनेके निमित्त दोप्रकारका वेषहै एक तो आन्तरीय अर्थात् अंतरका विचार दूसरे सोचना और समझना सार और असार काम वैराग्य अर्थात् त्यागकरना ब्रह्मलोक पर्यन्तसुखका ३ शम अर्थात् मन का निग्रह करना ४ दम अर्थात् संयम और नेम अवलम्ब से इन्द्रियों को अपने वशमें करना उपरति अर्थात् मनको फिर उनस्वादोंकी ओर न जानेदेना ५ तितिक्षा अर्थात् दुःख सुख भलाई बुराईका सहना श्रद्धा अर्थात् गुरूका उपदेश ६ और भगवत्में विश्वास समाधान अर्थात् ७ भगवत्के ध्यानकी समाधि दूसरावेष बाह्य अर्थात् बाहर ८ जो देखने में आवैं कि जिनको पांच संस्कार कहते हैं। प्रथम ऊर्द्धपुण्ड्र अर्थात् तिलक २ दूसरा मुद्रा अर्थात् शंख चक्र भगवत्शस्त्रों के चिह्न शरीर पर लगाना ३ तीसरामाला ४ चौथामन्त्र ५ पांचवांनाम और कोई नामकी जगह विचारभी कहते हैं॥ और यह पांचों संस्कार गार्हस्थाश्रममें होके त्यागीही को सब उचित हैं कि पद्मपुराण और हारीतस्मृति और परा-शरस्मृति आदिपुराणों व स्मृतिकावचन इसकेविधानमें युक्तहै और वेद श्रुतिकी निजआज्ञा मिलती है भेद इतनाहै कि जो गृहस्थहैं उनकानाम प्रकट वही रहता है जो गृह में धरागयाथा और गृहस्थाश्रम को त्याग किया विरक्त होगये उनका नाम वही विख्यात होताहै जो संस्कारभयेके समय गुरूने कृपाकरिके दिया वेषकी महिमा व बड़ाई क्या लिखूं कि भगवत् के मिलने के हेतु सब से दृढ़ अवलम्ब मुख्य यहहै पद्मपुराण में लिखा है कि जिनके गले में तुलसी लगीहुई अर्थात् कंठीकी माला और कमलके फूलोंकी माला पहिने हुये भगवत्शस्त्रों का चिह्न बाहुपर तिलक मस्तकपरहै ऐसे वैष्णव शीघ्र संसारको पवित्र करदेते हैं आग-मसार तन्त्रका वचन है कि जो केवल मालाधारी वैष्णव है वह ब्रह्मा आदि करिके भी पूज्य है मनुष्यों की कौन बात है फिर मन्त्रशास्त्र का वचन है कि माला और तिलक और भगवत्शस्त्रों का चिह्न जि

किसी के शरीर पर है जो वह चाण्डालभी है तौ भी पूजन के योग्य है महाभारत के भीष्मपर्व में लिखाहै कि ब्राह्मणहै अथवा क्षत्रिय अथवा वैश्य कि शूद्र जिसने वेष वैष्णव धारण कियाहै वह पूज्यहै और दण्डवत् करने के योग्य और वहही कर्मों में युक्तहै जो शूद्रभी है तौभी ऐसाहै कि ब्राह्मणों की धरतीपर मिलना छिष्टहै ऐसे सैकरों हजारों श्लोकहैं और क्यों नहीं ऐसी महिमा और बड़ाई इस वेषकी होवे कि विना इसके कोई मार्ग्ग उद्धारके निमित्त देखने में नहीं आता भला किसी ने सम्प्रदायके भजनकीर्त्तनकी इच्छाकी तौ वह भजनकीर्त्तनकी पद्धति और पथसे क-रैगा कै तो यह बात होगी कि नहीं मिलने कोई राह और पद्धतिकेकारण से भजनकीर्त्तनकी इच्छा छोड़ देगा और जो इच्छा दृढ़ होगी तो हारि झखमारकर किसी न किसी सम्प्रदाय को अंगीकार करेगा काहेसे कि जिसरीति व पद्धति को लेकर भजन आरम्भ करेगा वह निश्चयकरके किसी न किसी सम्प्रदायके अनुकूल होगा और जब कि किसी सम्प्रदाय के मतके अनुसार हुआ तो निश्चय पद्धति उस सम्प्रदायकी अंगीकार करनी पड़ेगी और जब कि पद्धति को अंगीकार किया तो सबसे मुख्य रीति संस्कारकी है और सब वैष्णव और शैव व स्मार्त्त व शाक्तआदि इस बात में एक मतहैं सो जितने ऋषीश्वर और भक्त ब्रह्मातक जो हुये हैं सबको पहिले संस्कार और गुरुमन्त्र उपदेश हुआ है विना मन्त्रादि किसीका उद्धार आजतक न हुआ न होगा और शास्त्रकी आज्ञा प्रसिद्ध सब ठौर पर है कि ब्राह्मण बालकका संस्कार आठ वर्ष की अवस्था में और क्षत्रियका ग्यारह बारह वर्षके और वैश्यका सोलह वर्षके वयक्रममें न होजावे तो वह अपने वर्णसे पतित होजाता है तो सब प्रकारसे सं-स्कारोंका होना सिद्धान्त व मुख्य करके कर्त्तव्य है जो किसीको यह क-थन होय कि ऊपरका वेष बनानेसे क्या लाभहोगा मनका वेष संवारना चाहिये तो जानरक्खो कि पहले तो इस सिद्धान्तमें बोलचाल व प्रश्न व सन्देहकी समवायी व पहुँचही नहीं है क्योंकि शास्त्रकी आज्ञामें किसी को पराक्रम वादकरनेकाहै कान लटकाकर उस आज्ञाकेअनुकूल साधना करना उचित है नहीं तो विचार लेना चाहिये कि किसी को आजतक जन्मके दिनसे संसारमें एकहीबेर विना ऊपरके वेष व भजनको अन्तः-करणकी उज्ज्वलता प्राप्तभई है जब ऊपर भजन व्रत नेम जप तप आदि

करते हैं तब सैकरों जन्मों में भीतरकी पदवी मिलती है सिवाय इसके प्रगट है कि पारसपाषाण लोहेको सोना करदेताहै सो यह भेषरूपर का पारसमणि के सदृश है निस्संदेह अन्तःकरण के अवगुणों को दूर करदेगा फिर तुलसी और भगवत् के शङ्ख चक्रआदिका सत्संग है और सत्संग का माहात्म्य पहिले लिखचुके हैं फिर तीर्थके सदृशहै कि हृदय को पवित्र करदेना तीर्थों का स्वभाव है व सिपाही तब कहलाता है कि जब तरवार बाँधता है विना ध्वजाअलग अलग के ठाकुरद्वारे व शिवालेकी समझ नहीं होती है वैलपर त्रिशूलकाअङ्क लगादेते हैं शिव जीका नाँदिया विख्यात होजाता है कालूकहार जो कहारों का गुरु है उसकीवार्त्ता है कि किसीराजा धर्म्मात्मा के राजमें मछली पकड़तारहा राजाको आवते देखकर जालपोखरे में छोड़दिया अपने प्राणके भयसे तालावकी मिट्टीको तिलकलगा व जालके दानोंकी मालालेकर साधोंके रूपसे बैठगया राजाने उसको साधुजाना दण्डवत्कर और कुछभेंटधरे चलागया व कालू उसीघड़ी भगवत्शरण हुआ और यह दोहरापढ़ा दो० ॥ वानावड़ो दयालुको तिलकछापअरु माल। यमडरपै कालूकहै भयमानो भूपाल ॥ इसहेतु बहुत उचित व करनी यह चाहिये कि भेष सद्गुरुसेले सो पांचोसंस्कार में पहिले ऊर्द्धपुण्ड्र तिलकहै उसके निमित्त अथर्वणवेद के उपनिषद् में यह आज्ञाहै कि भगवच्चरण के चिह्न अर्थात् तिलक जीव के कल्याणके हेतु जो कोई धारण करता है और वह तिलक मध्यमें छिद्रहोवै और खड़ाहो वह मनुष्य भगवत्को प्यारा है और धर्म्मात्मा व मुक्तिवाला है दूसरे पुराणों का वचन लिखदेने से वेद श्रुति के प्रमाण लिखनेपर प्रयोजन न समझा सो वेद व पुराणों की आज्ञा के अनुकूल चारोंसम्प्रदाय में प्रणाली तिलककी है पर तिलकके स्वरूप बनाने में आपुसमें कुछभेद है श्रीसम्प्रदाय में दोनों ओर वीच में ललाट के भगवच्चरणों के चिह्न बनाकर दोनों भौंहके वीचमें सिंहासन लगाते हैं और बीचमें रोलीकी पीली कै लाल लकीर दीपकज्योति के आकार खींचते हैं कि उसकानाम श्री है और कारण अधिककरने श्रीके निमित्त के दो विचार इसमें हैं कि यहचिह्न उन चरणकमलों काहै जिनका सेवन श्री अर्थात् लक्ष्मी अनुक्षण करती हैं माध्वसम्प्रदायमें दोलकीर महीन ऊंचीलगाकर दोनों भौंहके नीचे सिंहासन लगाते हैं

और सिंहासन के नीचे एकचिह्न कटारके फलके आकार नाकतक देते हैं निम्बार्क सम्प्रदाय में दोलकीर महीन के बीच में एकबिन्दी छोटी श्यामबन्दिनी अथवा श्वेतलगाने की रीति है उसको कमल कहते हैं और सिंहासन महीन लकीरका जैसा तिलकका और विष्णुस्वामी सम्प्रदायमें दो लकीर महीन और नीचे उसके सिंहासन लगाकर बीचमें शून्य छोड़देते हैं व्यासजी ने जो नई परिपाटी अपनी सम्प्रदायकी की तो निम्बार्क सम्प्रदायसे उनके तिलकमें थोड़ा भेदहै यह कि निम्बार्क सम्प्रदाय में तिलकका सिंहासन दोनों भौंहके नीचे लगाया जाता है और व्यासजीकी सम्प्रदायमें सिंहासन नासिका के अग्रभाग से तिलक आरम्भ करते हैं हित हरिवंशजी की सम्प्रदायका तिलक निम्बार्क सम्प्रदायके आकार है और रामानन्दजी की सम्प्रदायका श्रीसम्प्रदाय के अनुसार है चारों सम्प्रदायों में द्वादश अंगपर तिलककरना लिखा है और सब तिलकों के मन्त्र अलग अलग हैं निम्बार्क सम्प्रदाय में दोनों लकीर के बीच में बिन्दीका लगाना और माध्ववी विष्णुस्वामी सम्प्रदाय में रिक्तका और श्रीसम्प्रदाय में गोपीचन्दन छोड़कर और तीर्थोंके जैसे चित्रकूट व तोताद्री आदिकी मृत्तिका का तिलकलगाना विधिहै व तैसेही रामानन्द सम्प्रदाय में और तीनों सम्प्रदाय में गोपीचन्दनका व बेवशके समयदूसरे तीर्थोंकी मृत्तिकाका पर विष्णुस्वामी सम्प्रदायमें केशर आदिकाभी लगाते हैं ॥ तिलक निम्बार्क सम्प्रदाय का ॥ तिलक माध्वसम्प्रदाय का ॥

दूसरा संस्कार मुद्राहै औ अथर्वणवेद के श्रुतिकी आज्ञाहै कि जो कोई पुरुष भगवत्‌के शङ्ख चक्र आयुधकी तप्तमुद्रा दोनोंभुजापर धारण करताहै सोविष्णुमहाराजके परमपदको जाताहै और इसीप्रकार दूसरी

श्रुति थोड़े अक्षरोंके न्यूनविशेषकी है व पद्मपुराणमें भी ऐसीही आज्ञा है यद्यपि चारों सम्प्रदायवाले इस आज्ञाके अङ्गीकारमें एक मतहैं पर श्रीसम्प्रदायमें तो यह रीतिहै कि दीक्षादेनेके समय तुरन्त तप्तमुद्राधारण करादेते हैं गृहस्थ होय अथवा त्यागी होय और तीन सम्प्रदाय में एक पुराणके श्लोकके प्रमाणमें शीतल मुद्राकी रीति है और यद्यपि अगिले आचार्यों ने पुराणके प्रमाणसे तप्तमुद्रा धारण करना एकस्थान द्वारकामें लिखाहै पर गृहस्थों में यह चलन नहीं गृह त्यागके पश्चात् उचित व अवश्य करनी यहहै तीसरा संस्कार मालाहै तुलसीकी अथवा कमलके फलकी विहितहै तुलसीजीका माहात्म्य बहुत जगह पुराणों में लिखाहै इस हेतु विस्तार करके तर्जुमा लिखना प्रयोजन नहीं समझा सारांश यहहै कि तुलसी के धारण करनेवाले को निश्चय भगवत् की प्राप्ति होती है और मरणके समय तुलसीकी माला के तुलसीदल अथवा कण्ठी जिसके शरीरपर होय तो यमराजका भय नहीं होता सद्गति को जाता है पद्मपुराणमें जो कदम्बआदि वृक्षोंके काष्ठकी माला वृन्दावनकी बनीहुईका माहात्म्य तुलसी के मालाके सदृश देखने में आया चौथा संस्कार मन्त्रहै सो उसकी महिमा सब कोई जानते हैं कि सब सम्प्रदायों की जड़ और सब वेदशास्त्रोंका सारांश और शीघ्र भगवत् को मिलादेनेवाला और भुक्ति मुक्तिकी कामना पूर्ण करनेवाला है भगवत्में और मंत्रमें बाल बराबरभी भेद नहींहै भगवत् मंत्रके आधीन हैं सब वेद व पुराण उसमन्त्रकी महिमा को वर्णन करते हैं इस हेतु किसी श्रुतिका तर्जुमा करना प्रयोजन न समझा सो मंत्र चारों सम्प्रदायका अलग अलग है जो यह वादहो कि एक स्वरका मन्त्र अलग २ किस हेतुहै तो यह दृष्टान्त अच्छे प्रकार उस वादको निरवार देताहै नाम व रीतिसे पुकारते हैं और वह मनुष्य सब नाम व रीतिसे सावधान व सन्मुख होताहै इसीप्रकार वह भगवत् जिसनाम और मन्त्रसे स्मरण कियाजावे सन्मुख होताहै पांचवां संस्कार १ नाम २ दूसरा करनेकाहै उसके निमित्त कुछ प्रमाण व वादका प्रयोजन नहीं जिसवर्गमें जो कोई होताहै उसीभांतिका नाम रक्खाजाताहै पलटनमें भरतीहो तो सिपाही कहते हैं और सवारों में हो तो सवार चारों सम्प्रदाय के जो संन्यासी होते हैं त्रिदण्डी कहलाते हैं एक दण्ड लकड़ी पलाशका दूसरा शिखा

तीसरा सूत्र अर्थात् यज्ञोपवीत विशेष करके नाम गिरिपुरी तीर्थ मुनि संन्यास धारणके समय रक्खेजाते हैं व कपड़ाश्वेत अथवा गेरूके रंग का कै सिंगरफी रंगका पहिरते हैं और संन्यास लेनेके पहिले सब सम्प्रदाय में सब रंगकी पहिरन सिवाय नील आदि जो शास्त्रमें निषेधहै पहिनते हैं स्मार्त्तसम्प्रदाय जो चारोंसम्प्रदायोंसे अलगहै और उसके आचार्य शङ्करस्वामी हुये उसके तिलककी रीति त्रिपुण्ड्र अथवा वटाकार अर्थात् चिह्न वरगदके पत्रके सदृश चन्दन अथवा भस्म कै गोपी चन्दन या तीर्थकी मृत्तिकासे है ॥

और माला तुलसी व कमलाक्ष व रुद्राक्ष व जयापुता आदिकी व गायत्री आदि सब प्रकारके मंत्रहैं मुद्रा लगानेकीरीति नहीं त्याज्यजानते हैं नाम वही रहता है जो जन्म होनेपर धरागया और यज्ञोपवीतके समय जो संस्कार हुआ उसीको सब प्रयोजनके अर्थ वहुतकर समझते हैं फिर गुरु नहीं करते हैं संन्यासकी इस सम्प्रदाय में यह रीति है कि शिखा सूत्र दूर करदेते हैं केवल एक दण्ड लकड़ीका रखते और नाम भी उसीसमय दूसरा धराजाताहै और इसकी सम्प्रदायमें संन्यासियों के दशनाम हैं जोकि शंकरस्वामीकी कथा में लिखेगये हैं गेरू या सिंगरफके रंगका कपड़ा पहिनना व तिलक त्रिपुण्ड्र भस्मका ब्राह्मणके सिवाय और किसी के हाथका भोजन न करना कर्मों का करना न करना वरावर समझना और दूसरे धर्म सब संन्यासियों के वरावर हैं मुख्य संन्यासी वे हैं जो दण्डधारण रखतेहैं और सब सम्प्रदायमें दण्डीस्वामी वोलेजाते हैं विशेपकर जो काशीजी व मथुराआदि में आते हैं हे श्री कृष्णस्वामी हे दीनवत्सल हे दीनदयाल हे करुणाकर कवहीं कृपाकरके इस अपने घरजाये चेरेकी ओरभी कृपादृष्टि करोगे हे नाथ भलाहूं कि

बुरा जैसाहूं आपकाहूं जिस प्रकार लाखों करोड़ों जन्मतक इसमेरे मन ने मुझको अपने वशमें रक्खा है इसीप्रकार कभी मुझको भी तो ऐसा करदेव कि मैं मनको अपने वशमें करलूं और सचकरके जो सदा का अपराधोंसे भराहूं पर मेरी ओर देखना क्या प्रयोजनहै आप अपनेविरद पतितपावनता की ओर देखें कि कोटानकोटि महापापी और पातकी एक नामके अवलम्बसे शुद्ध और पवित्र हुये और होते हैं और यह निवेदन मेरी ऐसी नहीं कि जिसका पूरा करना कुछ क्लिष्ट हो थोड़ीसी बात यह चाहता हूं कि वह समाज आपका जो आरम्भ ग्रन्थमें लिख आयाहूं सदा मेरे मनमें बसारहै स्वर्गमें के नरकमें कहींरहूं॥ कवित्त॥
बसीरहैशशिछबिज्यों मनचकोरनके अलिमतिमालतीसुमननमें बसीरहै।
बसीरहै गजमनरेवाकी रुचिररेण मोरनकी रुचि घनाघनमें बसीरहै॥
बसीरहै श्रीपतिसदनकमलाजू जैसेमदनक्षुधाज्यों युवायोनिमें बसीरहै।
बसीरहैत्योंहींतेरेछविकी लगनकृष्ण मूरति बिहारसिरेमनमें बसीरहै॥
॥ कथा रसखानकी॥
रसखान जो परमभक्त भगवत्के हुये पहिले मुसलमानथे अपनेपीर के साथ राह चलते श्रीवृन्दावनमें आपहुँचे तो अनेकजन्मों के पुण्य उदय हुये अर्थात् श्रीव्रजचन्द महाराजके दर्शनहुये दर्शन होतेही कुछ औरही दशाहोगई उसरूप अनूपमें छककर बेसुध होकर गिरपड़े उनका पीर उसपीरको न समझा मूर्च्छा समझकर औषधि करनेलगा और पुकारा आंखें खोलीं रसखानकी उसी क्षण सब विद्या व काव्य सबगुण की खानि होगये उस मनोहरमूर्त्तिकी छवि एक कवित्तमें वर्णनकी अन्त में कहा कि आंखें क्या खोलूं वह मूरति मनमें बसगई है पीर ने कहा कावेको चलो तब बोले कि जोहै सो सब यहांही प्राप्तहै मैं व्रजका होचुका अब कहां जाताहूं और एक कवित्तमें कहाहै कि पत्थरहूं तो गिरिराजका जो पशुहूं तो नन्दरायकी धेनुमेंचरूं जो मनुष्य शरीर मिले तो व्रजके ग्वालबाल में रहूंगा जो पक्षी हूं तो व्रजके वृक्षोंका उनके पीरने चाहा कि बलसे रथमें डालकर लेजावें वृन्दावनके वनोंमें भागकर जा छिपे वृन्दावन वास करिकेहजारों कवित्त वृन्दावनकी शोभाकेवर्णनऔर प्रिया प्रीतमकी शोभा विहारकी रचना करी वैष्णवी भेष रखतेथे माला बहुत पहिनतेथे किसीने पूछा कि एक दो माला बहुनहैं २८

क्या प्रयोजनहै उत्तर दिया कि माला संसारसमुद्रसे पार उतार देती है सो जो छोटेपत्थर हैं उनको एकही दो माला बहुत हैं और मैं कि बड़े पत्थरके सदृशहूं मुझको बहुत माला रखना चाहिये॥

कथा भगवान्दासजीकी॥

भगवान्दासजी रहनेवाले मथुरा भगवद्भजन भाव में दृढ़ व बड़े गुणवान् भगवत्के प्रेमी श्रोता और रहस्य व रसके ज्ञाता भगवद्भक्तों में विश्वास और ऐसेसुन्दर कि जिनके देखने से मनको सुखहो और भगवत्के जो धामहैं उनके टहल करनेवाले सब भावकरके श्लाघ्यहुये एक बेर बादशाह ने परीक्षाके हेतु डौंड़ीको फेरवाय दिया कि जो कोई माला तिलक धारण करैगा गरदनमाराजायगा इस बातपर बहुतों ने छोड़दिया पर भगवान्दासजी न डरे अपने अनुगामियों समेत और दिनसे अधिक प्रकाशित तिलक दोहरीमाला धारण कर बादशाह के सामने जानके आये बादशाह ने बुरामानकर आज्ञा न मानने का कारण पूछा भगवान्दासजी नेअशङ्क उत्तरदिया कि हमारे दीनमें माला तिलक सहित प्राणजायतो उद्धार होती है अब इस समय कि हमको अपनी मृत्युज्ञात होगई तो तिलक औरमाला अच्छेप्रकार धारणकिये कि विनापरिश्रम उद्धारहो बादशाह यह विश्वास दृढ़ देखकर अतिप्रसन्नहुआ कहा कि जो चाहनाहो सो मांगो भगवान्दासजी बोले मथुराजीसे बाहरजाना नहीं चाहता बादशाहने लिखदिया कि मथुराकी आमिली जबतक मनचाहे तबतक करें सो बहुतकाल मथुराकी आमिली भगवान्दासजी ने करी हरदेव जीका मन्दिर और मानसीगङ्गा पोखरा गोवर्द्धनजी में उनका बनवाया है॥

कथा चतुर्भुजजीकी॥

चतुर्भुजजी राजा करौली ऐसे भगवद्भक्त साधुसेवी हुये कि उनके दृष्टान्तको कोई राजानहीं मिलताहै भक्तोंके आनेका वृत्तान्त सुनकरइस प्रकार लेनेको आगे जाते थे कि जैसे सेवक व चाकर अपने स्वामीकी सेवामें जाताहै घरलाकर राजा व रानी अपने हाथोंसे चरणधोते पूजा करते नगरके चारोंओर चार चारकोसपर चौकीथी कि जो कोई मालाधारीआवे उसका समाचार पहुँचावै एक दूसरा कोई राजा यह वृत्तान्त भेषसेवाका सुनकर कहनेलगा कियोग्यअयोग्यकी समझनहीं तो भक्ति

की बड़ाई क्याहै उसके पण्डितने उत्तरदिया कि मनमें समझ लेते होंगे राजाने भाट विमुखको परीक्षाके हेतुभेजा व समझा दियाकि माला तिलक धारणकर स्वामी हरिदासजी बनकर राजाके पासजाना वह भाटआया अपने स्वामीका कहना भूलगया भाटोंकी रीतिफैलाई जबप्रवेश राजा तक दुरूहदेखा तब अपने राजाकी शिक्षास्मरणहुई व उसी भांतिसेगया द्वारपालने कुछ रोकटोक न किया जबसामनेगया तो राजाने अपनेस्वभावके अनुकूल आगतस्वागत सब किया भगवत्प्रसाद जिमाया भगवच्चर्चा आरम्भ किया वह भाट हूं हां करतारहा राजाने जानलिया किसीने परीक्षाको भेजाहै बिदाई दिया और एकडिबियामें एकफूटी कौड़ी धरके ऊपरसे कीनखाप व मुशज्जर से लपेटकर ऊपर मुहर छापलगा उसको देदिया भाट जब अपने राजाके पास आया तो सब वृत्तान्त भक्तिभाव का राजा चतुर्भुज का वर्णन किया व सब बिदाई समेत डिबिया राजा के आगेधरदी डिबिया खोलकर देखा भेद न पाया तब उसी पण्डित ने समझाया कि खुली बातहै कि ऊपर भेषऐसा और भीतर भाटहै भक्तिनहीं राजाचतुर्भुज यहीकहताहै वहराजा लज्जित हुआ उस पण्डित को भेजा पण्डित सत्संग को धन्य मानिगया राजा चतुर्भुज सुनकर आदर से दण्डवत् करलेगया बहुत दिनतक सत्संगका सुखलिया निश्चय जब चलनेकी इच्छाकरी राजाने भण्डार खोलकर कहा जो इच्छा हो सो लेजाइये पण्डित ने कुछ न लिया एक मैनापक्षी राजाको प्यारा था राजा साधुसेवी ने देदिया मैना लेकर राजाके समीप पहुँचा मैना सभाको भगवद्विमुख देखकर कहनेलगी कि कृष्ण कृष्ण कहो जो तुम्हारा उद्धारहो यह संसारअसार व आगमापायी है विना कृष्णभजन किसीप्रकार उद्धार नहीं होगा राजाने सब वृत्तान्त पूंछा पण्डितनेकहा कि एक मैनासे सब समझलेव औ हम करोड़ों मुखसे भक्तिभाव राजा चतुर्भुजका वर्णन नहीं करसक्तेहैं राजाको बड़ा विश्वासहुआ भगवद्भक्ति साधु सेवा अंगीकार की पीछे जब भावभक्ति राजाको होगई तब मैना बिदाहोकर राजा चतुर्भुजके पास पहुँची राजा बड़ा प्रसन्न हुआ॥

कथा एकराजाकी॥

एकराजा भगवद्भक्त ऐसाहुआ कि संसार के सुख और ऐश्वर्य को अनित्य समझकर सदा भगवत्के स्मरण भजन में रहता था । जि

कण्ठी तिलक धारणकिये देखता भगवद्रूप जानके दण्डवत् करता व धन भगवत्उत्साह व भक्तों के हेतु लगाता भांड़आदि जो भगवद्विमुख हैं इनको कुछ न मिलता भांड़ मन्त्रणा कर साधोंका भेषबनाकर आये राजाने अपने भावके अनुसार पूजन व सत्कार किया भांड़ साज सम्हाल रागनाच व हँसनेका रूप बनानेलगे राजा प्रसन्न होकर बोला धन्यहै भगवद्भक्तोंको कि अपने सेवकोंको ढोलबजाकर नाच गायकर कृतार्थ करते हैं बड़े आदर पूर्वक प्रसाद जिमाया एक थालमें मुहर भरकर विदाके समय आगे धरदिया भांड़ोंने विश्वास राजाका देखकर और सत्संग जो हुआ तो सब भगवत्शरण होगये॥

कथा गिरिधरग्वालकी॥

गिरिधर ग्वालजी भगवत् में सखीभाव रखतेथे और अनुक्षण भगवत् के समीपे और हँसी खेलमें मिले रहतेथे अपने अन्तरके प्रेमको बहुत छिपाये रहते पर भगवच्चरित्रों को कीर्त्तन करते गद्गदवाणी हो जाती प्रीति कहां छिपसक्ती है तब वनमें जाकर कीर्त्तन व नृत्य करने लगे एक बेर मौजे मल्लिपुरामें भगवत् का रासचरित्र कराया व प्रेममें विवश होकर सब धन व वस्तु भगवद्भेट करदी भक्तोंमें ऐसी प्रीतिरही कि जिसको साधुभेष देखते भगवद्रूप जानते एकबेर कोई साधुमरा देखा उसकाभी चरणामृत लिया दूसरे ब्राह्मणों ने यह स्वभाव अयोग्य विचार कर मनाकिया पर न माना उत्तर दिया कि भगवद्भक्त को कबहूं मृत्यु नहीं यह तुम्हारा व विश्वास है जो मृतक कहते हो और ग्वाल पद्द इस कारण से विख्यात हुआ कि सखारहे॥

कथा लालाचार्य्यकी॥

लालाचार्य्य रामानुजस्वामी के जमात में ऐसे भगवद्भक्त हुये कि जिनकी कथा सुनकर निश्चय भगवच्चरणों में प्रीति होती है गुरूने आज्ञादी कि भगवद्भक्तों में जितनी प्रीति व विश्वास हो सो अच्छा पर बड़े भाई से कम उनको न जानना सो उस आज्ञाके अनुकूल वर्त्तेतेरहे एक समय कोई माला तिलकधारी को नदीमें बहतेजाते से निकालकर अपने घरलाये औ विमान बनाकर भगवत्कीर्त्तन करते नदीपर लेजाकर दाहक्रिया करके फिर महोत्सव में ब्राह्मणों सगोत्रों को नेवतादिया ब्राह्मणों ने अंगीकार न किया कहने लगे कि इनका कोई न था जाने कौन

जातिका मृतकरहा लालाचार्य्य सुनकर चिन्ता करनेलगे और अपने गुरूके पास गये वे स्वामी रामानुजके पासलेगये दण्डवत् कर सब वृत्तान्त निवेदन किया व स्वामीने कहा कि वे लोग भगवत्प्रसादकी महिमा नहीं जानते हैं तुम चिन्तामतकरो भोजनकी सामग्री बनाओ भगवत् पार्षद वैकुण्ठ से आकर भोजन करेंगे सो उसदिन पर भगवत्पार्षदों का झुण्ड ऐसे स्वरूप औ वस्त्र अलंकार से कि किसी ने स्वप्नमें भी न देखाहो आकर जो प्रसाद बनाहुआथा अति प्रेमसे भोगलगाया ब्राह्मणोंको पहिले तो आश्चर्य्यहुआ कि ऐसे ब्राह्मण कहांसे आये हैं फेर द्वेषबुद्धि करके यह मंत्र ठहराया कि जब भोजन करके आवें तो ऐसी हँसी करो कि लज्जितहों भगवत्पार्षद उनके कुमंत्रको जानगये भोजनकरके आकाशमार्ग होकर चलेगये ब्राह्मणों ने जो यह चरित्र और प्रतापदेखा तो बहुत लज्जित हुये और अहंकारको छोड़कर आये और लज्जा करके लालाचार्य्यके सामने आखें बराबर न करसके और पनवाड़े भोजन किये हुये पार्षदों के पड़े थे उनमें से सीथ प्रसाद लेकर खानेलगे फिर लालाचार्य्यके चरणों में दण्डवत् करके प्रार्थनाकी कि अब हमको अपना सेवककरो और कृपाकरो लालाचार्य्य ने कहा कि तुम्हारे ऊपर तो भगवत्की कृपाहुई कि भगवत्पार्षदों के दर्शन तुमको हुये इससे अधिक क्या कृपा चाहतेहो ब्राह्मणोंने विनय किया अब हमको लज्जित करना क्या प्रयोजन अनुग्रह करना प्रयोजनहै सो सब भगवत्शरणहुये और भगवद्भक्ति और भेषनिष्ठाका प्रताप सब संसार में प्रकाशित और प्रकट हुआ ॥

कथा मधुकरसाहकी ॥

राजा ओड़छे भगवद्भक्ति में भी राजाहुये साधुभेषमें अत्यन्त प्रेम व विश्वासथा सचकरके जैसा मधुकरनामथा वैसीही रीतिभी रही अर्थात् भ्रमर सारग्राही होताहै वैसेही सारग्राही थे उनकी रीतिथी कि जो कोई कण्ठी तिलक मालाहो तिसका चरणामृतलेते और परिक्रमाकरते राजा के भाई बंधुओंको यह बात अच्छी न लगी एक गदहेको बहुतसी माला पहनाकर तिलककरके महलमें भेजदिया राजा उठा उसका चरणधोकर परिक्रमा करिके कहा कि आज निहाल करदिया पीछे प्रसाद जिमाकर बिदाकरदिया दुष्टों को लज्जाहुई और विश्वासहुआ राजाने जो वचन निहाल करनेका कहा तो अभिप्राय यहहै कि मेरे बड़े भाग्यहैं जो मेरे

राज्यमें गदहे भी माला तिलक धारण करते हैं जो कोई माला तिलक धारण नहीं करता निस्सन्देह वेदुमका गदहाहै वरु गदहेसेभी वत्तर ॥

कथा हंसप्रसङ्गकी ॥

एकराजाको कुष्ठथा औषधवहुतेरीहुई रोग न छूटा किसी वैद्यकेकहने के अनुसार राजाने व्याधोंको हंसपकड़नेको मानसरोवर में जहां रहते हैं भेजा जब हंस इन व्याधोंके हाथ न आवैं तब सब साधुकारूप बनाकरगये हंस व्याधोंका कपट जानगये पर भेषको न मानना भगवद्धर्म से बुरा जानकर जानिके पकड़ायेगये व्याध उनको बन्धमें करिके राजाके पासलाये तबतक भक्तवत्सल महाराज वैद्यबनकर आये नगरके बाज़ार में अपनी वैदाईकी दूकान अच्छी लगाई फिर राजाके पासपहुँचे राजाने अपने दुःखका वृत्तान्त और हंसपकड़वा मँगानेका सब वर्णन किया वैद्य महाराजने उनको आश्वासनकर कहा कि तुम्हारा बहुत शीघ्र दुःख दूर होजायगा इन पखेरुओंको बन्धनसे छोड़ो बन्दी में डार रखना कुछ प्रयोजन नहीं कुछ औषधको शरीरपर लगवादिया तुरन्त शरीर निर्म्मल होगया राजाने तुरन्त आनन्द होकर हंसोंको छोड़ दिया राजाने वैद्यके आगे हाथ जोड़कर विनय किया कि यह राज्य व सम्पति सब आपकाहै वैद्यने कहा सच करिकै सब हमाराहै अब तुम भगवद्भक्ति और साधुसेवा अंगीकार करके मनुष्य शरीर जोकि बड़े क्लेशसे मिलाहै उसको सुफल करो फिर तो राजा ऐसा भक्तहुआ कि सब राज्यमें भक्तिकी प्रवृत्ति हुई यह हंसप्रसंग समझने योग्यहै कि जानवरोंको तो ऐसी भक्तिहो और मनुष्य जोकि ज्ञान करिकै युक्तहै सो विमुख होवै तो वह मनुष्य जानवर है कि नहीं और वह नरकगामी होगा कि नहीं ॥

निष्ठा सातवीं ॥

गुरूकी महिमा वर्णन जिसमें ग्यारह भक्तोंकी कथा ॥

श्रीकृष्णस्वामी के चरणकमलों की गोपद रेखाको दण्डवत् करके पृथु अवतारको दण्डवत् करताहूँ कि अयोध्याजी में प्रकट होकर सब धर्मकी मर्य्याद फेरसे नवीन बांधी और धरती को बराबर करके सब औषधी निकालीं शास्त्रका वचनहै कि गुरू तीनहैं प्रथम गुरू पिता दूसरा संस्कारकर्त्ता कि जिसने यज्ञोपवीत आदि दियाहो तीसरा भगवत् मन्त्र और भगवद्धर्मका उपदेश करनेवाला और एक वचनसे स्त्री का

गुरू उसका पतिहै सो यद्यपिमर्य्याद और महिमामें बराबरहै पर इस निष्ठामें उस गुरूका वर्णन होताहै कि जो गुरू भगवत्के मिलनेकेहेतु कियाजावै सो जानेरहो वेद व सब शास्त्र इसबातपर युक्त हैं कि गुरू और भगवत् में कुछ भिन्नता नहीं भागवत के एकादश में भगवत्का वचनहै कि गुरुको मेरा रूपजान भक्तमालके कर्त्ताका वचन पहिलेही लिखागया कि भक्त और भक्ति और गुरू और भगवत् कहनेमात्र को चारहैं पर सत्यकरिकै एक स्वरूपहैं गुरू कैसाही कामी क्रोधी लोभी मोही बुद्धिहीन कुरूपहोवै उसको भगवद्रूप जानना चाहिये किसी पुराणमें वर्णनहै कि जो गुरू कामी है तो श्रीकृष्ण स्वरूपहै जो क्रोधी है तो नृसिंह जो लोभी है तो वामन स्वरूप और जो धर्मात्माहै तो रामरूप भागवत में लिखाहै कि जो कोई मनुष्य भगवत् के ज्ञानदेनेवाले गुरूको अन्यमनुष्यके सदृश जानताहै उसकी बुद्धि हाथीके सदृशहै कि अन्हाय के फिर धूल मस्तकपर डालताहै आजतक न किसीको देखा न सुना कि विनागुरू ईश्वरको प्राप्त हुआहो और विचार करनेकी ठौर है कि प्रकट विद्या सब विना गुरूके प्राप्त नहीं होती तो भगवत् विना गुरू कैसे मिलैगा महाभारत में लिखाहै कि जबतक गुरू नहीं करते तबतक कुछ प्राप्तनहीं होता इसहेतु गुरू करना निश्चय प्रयोजनहै और आज्ञाहै कि वेद पुराण शास्त्र जप तप आदि विनागुरू निष्फलहैं और वेदकी आज्ञा है कि विना गुरूउपदेशके जो पूजा इत्यादि करते हैं सब व्यर्थ है तो उचितहै कि जो भगवत् और भक्तिके प्राप्तकी चाहना हो तो गुरूके शरणहो कोई जातों में परम्परा है कि संस्कार होने पीछे गुरू नहीं करते और कोई जातमें यह रीतिहै कि संस्कारभये पीछे भगवत् प्राप्तके अर्थ गुरू अलग करते हैं सो ज्ञात होजाने प्रयोजन व नहीं प्रयोजन दूसरे गुरू करनेका व लाभ हानिके निमित्त एक दृष्टान्त स्मरण होआयाहै कि अँधेरी कोठरी में एकसुई सूक्ष्म है उसको एक तो इस भांति जानताहै कि निश्चय सुई इस कोठरी में है और दूसरेको यह कि वह सुई ठीक २ जिस जगह दीवार में गड़ीहुई है ज्ञात है दोनोंकेचेले उस सुई के ढूँढ़नेकोगये पहिलेका चेला तो ढूँढ़ता फिरनेलगा मिलगई तो मिलगई नहीं तो हारकर चलाआया जो ढूँढ़ता रहगया तो जाने मिलैके न मिलै और मिलै तो जाने कबतक और दूसरेका चेला अपने

गुरू का पताबतलायेहुये के अनुसार सीधाचलाआया और विनापरि-श्रम वह सुई मिलगई और यह नहीं होसक्ता कि न मिलै अभिप्राय इस लिखने से यह है कि संस्कार होजाने पीछे जब कुछ समझहो तो भगवत्के जाननेवाले को गुरू निश्चय करिकै करै बिना गुरू कुछ नहीं होसक्ता और जो उस गुरूसे भी कुछ सन्देह रहजाय अपने लाभ व इच्छाकी पूर्णताको प्राप्त न हो तो दूसरा गुरू करते हैं कुछ हानि नहीं शास्त्रकी आज्ञाहै जैसे देखो दत्तात्रेयने चौबीस गुरू किये यद्यपि धर्म्म गुरू और चेलेके शास्त्रों में बहुत लिखे हैं पर गुरूके चारधर्म्म आव-श्यक निश्चय हैं एक तो शास्त्रको जाननेवालाहो दूसरे भगवद्भक्त ती-सरे समदर्शी चौथे वेदकी आज्ञा के अनुकूल वर्त्तनेवाला इसके ऊपर एक धर्म्म सब जगह लिखाहै कि गुरू अज्ञानके दूरकरने के निमित्त है तो जिसप्रकार होसकै चेलेको भगवत् सम्मुख करदेवे और इस आज्ञा को आप गुरुशब्दका अर्थ निश्चय करताहै गुरू जो अज्ञान व अंध-कारको दूरकरै वह गुरू है इसीप्रकार चेलेके निमित्त चारधर्म्म दृढ़हैं प्रथम सेवागुरूकी तनमनसेकरै दूसरे सेवाके समय सुख स्वादुकात्याग तीसरे गर्बकात्याग चौथे गुरुमें दृढ़ विश्वास सो वेदकी श्रुती कहती है कि जिसकी भक्ति भगवत् और गुरूमें बराबर है तो उस महात्माको सब मनोरथ आपसे आप प्राप्त होजाते हैं सो वह विश्वास ऐसाहो जैसे भगवद्भक्तों को भगवत्में होताहै और सेवा ऐसीहो कि जिसप्रकार अ-ज्ञानी अपने शरीरकी करते हैं महाभारतके आदिपर्व में लिखा है कि धूम्र ऋषेश्वरके चारचेलेथे चारों दृढ़विश्वास व गुरूकी सेवाकरके के-वलगुरूके आशीर्वादसे सब विद्याके ज्ञाता और दोनों लोकके फलको प्राप्त होगये जो यह प्रतिवादहो कि बिना परिश्रम केवल विश्वास से कैसे सब विद्या इत्यादि लाभहुई तो जानरक्खो कि गुरुमें जो विश्वास किया तो भगवद्रूप जानकर किया सो भगवत् ने गुरुद्वारे से उनके म-नोरथ सिद्धकरिदिये व सिवाय इसके कई जगह वर्णनहोताहै कि अमु-कऋषि ऐसे प्रतापवान्थे कि उनके स्थानमें बकरी व व्याघ्र एकजगह पानी पीतेथे सो व्याघ्रका ऐसा स्वभाव होजाना यह प्रभाव उस स्थान काहै जो व्याघ्रको व्यापिगया इसीप्रकार गुरूकाभी अपने प्रतापके प्रभाव करिके एकक्षणमें वाञ्छितपद को पहुँचादेता है बहुत ऐसाहुआ और

कुछ अयुक्त नहीं कि निर्मलजल कपड़े के मैलको दूरकर विमल कर-
देताहै भलेका आशीर्वाद व शाप शीघ्र व्यापि जाताहै इस सिद्धान्तसे
यह सिद्धहुआ कि गुरू महात्मा योग्य चाहिये और ऐसे गुरू इससमय
में नहीं मिलते पर ऐसे हैं कि उनको केवल द्रव्य आकर्षण में प्रयोजन
है चेलाचाहे नरक में जाय के स्वर्ग में छमाही अथवा सालमें पधारे
और उसपर दुकानदारी फैलाई जो हाथ आगया सो लेगये और जो
केसी चेलेने कोई बात अपने संदेह निवृत्तिकेहेतु पूंछी तो उसके उत्तर
का तो कुछ ठिकाना नहीं और उसको वे विश्वास व नास्तिक व कथनी
कथनेवाला ठहराया व सबसे उसकी निन्दाकहते फिरनेलगे औ चेलों
का यह वृत्तान्तहै कि गुरूजीकी शिक्षा ग्रहण करना और मंत्रको जपना
तो कुछ बातही नहीं जो वर्ष दो वर्षपर गुरूजी रामभक्त करते पधारे तो
मानों यमदूत दिखाई पड़े इसहेतु कि पांच चारदिन रहेंगे भोजन अ-
च्छेलेंगे और बिदाई भी देनी पड़ेगी भला जब इससमय के गुरू चेलों
की यह गतिहो तो कहां गुरू व कहां चेला और यह भी जानो कि गुरू
बहुत मिलते हैं पर चेलोंकी आंखें बन्दहैं कि उनको देखें जो थोड़ासाभी
परलोक का भय करके भगवत् और गुरूको ढूंढ़ें तो ऐसा नहीं कि न
मिलें लोकोक्ति है कि जिन ढूँढ़ा तिनपाया और जब कि घरसे पांवबाहर
नहीं निकलता और परलोक का भय नहीं और न भगवत्की चाह है
तो कहां से गुरू मिलै कि किसीको छप्पर फाड़कर धन नहीं मिलता
अब इस लिखने से कोई ऐसा न समझ लेवै कि जब गुरू योग्य मि-
लेंगे तबहीं गुरूकरैंगे यह समयका वृत्तान्तहै निज अभिप्राय इस लिख-
ने का यह है कि गुरू निश्चय करना चाहिये जैसामिलै केवल इतना
देखलेना बहुत है कि उपासना का जाननेवाला हो और उसको मन्त्र
गुरुदीक्षा से मिलाहो यह नहीं कि पोथी देखकर मन्त्र देदिया चेला
बनालिया और गुरूके उपदेश वचनपर दृढ़ विश्वासहो बस वह गुरू
है तिसको हाथोंहाथ संसार समुद्रमें उतारदेगा धर्म कर्म उसगुरूके बुरे
हों के भले इस पुरुषको सब धर्मरूप हैं काहेसे इसको विश्वास दृढ़ है
व गुरूरूप भगवत् आपहैं वही राह दिखाकर दोनों लोकके अर्थ को
सिद्धकरदेगा जो विश्वास न होगा तो कैसाही महात्मागुरूहो मिलै कुछ
लाभ न होगा और विचारलेना चाहिये कि जो मनुष्य भगवत्से विमु-

गुरु का पताबतलायेहुये के अनुसार सीधाचलाआया और विनापरि
श्रम वह सुई मिलगई और यह नहीं होसक्ता कि न मिले अभिप्र
इस लिखने से यह है कि संस्कार होजाने पीछे जब कुछ समझी
भगवत्‌के जाननेवाले को गुरू निश्चय करिके करे विना गुरू कुछ
होसक्ता और जो उस गुरुसे भी कुछ सन्देह रहजाय अपने ल
इच्छाकी पूर्णताको प्राप्त न हो तो दूसरा गुरू करते हैं कुछ हा
शास्त्रकी आज्ञाहै जैसे देखो दत्तात्रेयने चौबीस गुरू किये यद्य
गुरू और चेलेके शास्त्रों में बहुत लिखे हैं पर गुरुके चारध
श्यक निश्चय हैं एक तो शास्त्रको जाननेवालाहो दूसरे भग
सरे समदर्शी चौथे वेदकी आज्ञा के अनुकूल वर्त्तनेवाला
एक धर्म सब जगह लिखाहै कि गुरू अज्ञानके दूरकरने

कुण्डल कि उसके मोतियोंकी झलक कपोलोंपर और कपोलोंकी झलक मोतियों पर पड़तीहै नाकमें छोटासा बुलाक कि उसमें सब्ज़ापड़ाहुआ है कण्ठा पचरङ्गी माला जवाहिरात और मोतियों और सुगन्धवारेफूलों के गले में हार और सुकुमार शरीरमें बागा सुनहरी तारकी उसपर मुकेश में मोतीगूंथकर गोपियों ने झालरकी भांति लगादिये हैं उसके ऊपर हैकल जड़ाऊ झलकती है धानरङ्ग दोपट्टाजरीका उसको कटिमें कसेहुये हाथोंमें कङ्कन पहुँची और बाजूबन्द जड़ाऊ अँगुलियों में अँगूठी घुटन्ना गुलेनारी गुलबदनका कि गोटे और पट्टेकीगुलकारी उसपर होरही है शोभायमान चरणों में महाउर लगाहुआ उसपर घुंघुरू और कड़े हैं और किसी गोपिकाके साथ जो कुछ छेड़छाड़ करीथी और उसने केसरकेछींटे देदियेथे वह मुखारविन्द पर झलकरहे हैं और उस गोपिकाके छेड़ने की और उससे उत्तरपाने की हँसी अबतक नहींगई फूल जहांतहां गुथेहुये हैं और मुरली फेंटमें बस यह देखकर गुरूजी विवश होकर पुकारे कि अरे तू किस ढिठाई से हाथ पकड़रहाहै यह नन्दनन्दन महाराज पूर्णब्रह्म सच्चिदानन्दघन हैं और मैंभी आताहूं यह कहकर गुरूजी तो आतेहीरहे कि आप नटनागर महाराज उस लड़के सहित अन्तर्द्धान होगये गुरूजी जो आये तो कुछ नहीं देखा कभी अपने चेले के विश्वासपर दृष्टिकरिकै अपने ऊपर धिक्कार और कभी दर्शनपानेसे अपने भाग्यको धन्य कहकर त्यागी होगये व अपने चेलेके निश्चयके प्रभावकरिकै भगवत्‌को प्राप्तहुये सो गुरूमें विश्वास करनाही उद्धारका कारण है रेमन मूरख कभी तो उस स्वरूपकी ओर तू सम्मुखहो जो ऊपर लिखआया और विचारकर कि भगवच्चरणकमलों के विना किसीको भी कुछ प्राप्त हुआहै ब्रह्मादिक देवता तो जिसके चरणकमलोंकी रजको अपने धन्यभाग्य समझते हैं और तू ऐसा असावधान कि कभी उस ओर न लगै तो तेरी अभाग्य दशा यहहै दूसरी बात नहीं सो तू अबभी समझ और कृपाकरकेउस रूप अनूपका चिन्तवन कियाकर कि सबसे पहिले तेरी नाव उस किनारेपर पहुँचे ॥

कथा पादपद्माचार्य्यकी ॥

पाद पद्माचार्य्यजी परमभगवद्भक्त गुरुनिष्ठ गंगाजी के तटपर गुरू सेवामें रहाकरते एक समय गुरू तीर्थको जानेलगे तब पाद पद्माचार्य

खहो उसको तो गुरूके अवलम्बसे ईश्वर मिलसक्ता है और जो गुरु न किया अथवा उसके वचनपर विश्वास न किया तो फिर कहां ठिकाना है बहुधा ऐसा हुआहै कि चेलोंके विश्वाससे गुरूभी तरगये हैं कि गुरु: भक्ति कोई कोई की इस निष्ठामें लिखीजावेगी उनसे सिवाय एक और वार्त्ता है किसी खत्री के लड़के ने अपने गुरूसे सुना कि श्रीनन्दनन्दन महाराज ब्रजमें नित्यरहते हैं जो मनलगाकर ढूँढ़े तो मिलजाते हैं यह लड़का अत्यन्त दर्शनका आकांक्षी होकर ब्रजमें गया और ढूँढ़ा कुछ पता न लगा लोगोंसे पूछा किसी ने कहा गोलोकमें हैं और किसी ने वैकुण्ठको बतलाया और किसी ने कहा कि जो ब्रजमें हैं तो देखने में नहीं आते और किसी ने कहा परमधाम को गये इस लड़के को किसी के वचनपर विश्वास न हुआ और कहनेलगा कि मेरे गुरूका वचन कभी झूठनहीं पर मेरे ढूँढनेका आलसहै तब खाना सोना सब छोड़कर बेचैन होकर ढूँढनेलगा जब कुछ दिनबीता न खाया न सोया न बैठा जहांतहां फिरताहीरहा तो करुणाकर दीनवत्सल प्रकट हुये और कहा कि जिसको तू ढूँढ़ता फिरता है वह मैंहूं यह लड़का रूप माधुरी और छवि अनूप देखकर चरणों में गिरपड़ा और विनयकिया कि कुछ सन्देह नहीं आप वही हैं कि जिनको मैं ढूँढताथा पर मैंने सुनाहै कि आप चोर और छलिया भी हैं जबतक मेरे गुरू तुमको पहिचानकर निश्चय न करदेंगे तबतक हमको विश्वास नहीं भक्तवत्सल महाराज उसके प्रेम वं विश्वास के वशहोकर कुछ न कहसके साथ होलिये और उस लड़के नें छल व कपट के डरसे हाथ पकड़लिया बस तुरन्त जहां उनके गुरू रहे आनपहुँचे आधीरात थी गुरूजी अटापे शयनमें थे इस लड़के ने पुकारा कि महाराज ब्रजसुन्दर मनमोहन महाराज को लायाहूं आप पहिचान करलें दो चारबेरके पुकारने में गुरूजी को सुनपड़ा उसके व-चनको मिथ्यासमझा पर उजेरा मुख झलक व आभूषण शोभाधामकी जो विलक्षण चांदनी सी छिटकरही थी झरोखों के राह से देखा तो घबराकर उठे और दरीचे से झांका तो क्या देखते हैं कि सचहै कि नट-नागर ब्रजचन्द्र छविसमुद्रहैं कि मुखारविन्दके झलककी चांदनी चारों ओर खिलरही है और घूंघरवाली अलकैं छूटीहुई अरसीली आँखों में काजल की रेख मोरमुकुट जड़ाऊ जवाहिरात का शिरपर है कानों में

कुण्डल कि उसके मोतियोंकी झलक कपोलोंपर और कपोलोंकी झलक मोतियों पर पड़तीहै नाकमें छोटासा बुलाक कि उसमें सब्ज़ापड़ाहुआ है कण्ठा पचरङ्गी माला जवाहिरात और मोतियों और सुगन्धवारेफूलों के गले में हार और सुकुमार शरीरमें बागा सुनहरी तारकी उसपर मुकेश में मोतीगूंथकर गोपियों ने झालरकी भांति लगादिये हैं उसके ऊपर हैकल जड़ाऊ झलकती है धानरङ्ग दोपट्टाजरीका उसको कटिमें कसेहुये हाथोंमें कङ्कन पहुँची और बाजूबन्द जड़ाऊ अँगुलियों में अँगूठी घुटन्ना गुलेनारी गुलबदनका कि गोटे और पट्ठेकीगुलकारी उसपर होरही है शोभायमान चरणों में महाउर लगाहुआ उसपर घुंघुरू और कड़े हैं और किसी गोपिकाके साथ जो कुछ छेड़छाड़ करीथी और उसने केसरकेछींटे देदियेथे वह मुखारविन्द पर झलकरहे हैं और उस गोपिकाके छेड़ने की और उससे उत्तरपाने की हँसी अबतक नहींगई फूल जहांतहां गुथेहुये हैं और मुरली फेंटमें बस यह देखकर गुरूजी विवश होकर पुकारे कि अरे तू किस ढिठाई से हाथ पकड़रहाहै यह नन्दनन्दन महाराज पूर्णब्रह्म सच्चिदानन्दघन हैं और मैंभी आताहूं यह कहकर गुरूजी तो आतेहीरहे कि आप नटनागर महाराज उस लड़के सहित अन्तर्द्धान होगये गुरूजी जो आये तो कुछ नहीं देखा कभी अपने चेले के विश्वासपर दृष्टिकरिके अपने ऊपर धिक्कार और कभी दर्शनपानेसे अपने भाग्यको धन्य कहकर त्यागी होगये व अपने चेलेके निश्चयके प्रभावकरिकै भगवत्को प्राप्तहुये सो गुरूमें विश्वास करनाही उद्धारका कारण है रेमन मूरख कभी तो उस स्वरूपकी ओर तू सम्मुखहो जो ऊपर लिखआया और विचारकर कि भगवच्चरणकमलों के विना किसीको भी कुछ प्राप्त हुआहै ब्रह्मादिक देवता तो जिसके चरणकमलोंकी रजको अपने धन्यभाग्य समझते हैं और तू ऐसा असावधान कि कभी उस ओर न लगै तो तेरी अभाग्य दशा यहहै दूसरी बात नहीं सो तू अबभी समझ और कृपाकरकेउस रूप अनूपका चिन्तवन कियाकर कि सबसे पहिले तेरी नाव उस किनारेपर पहुँचे ॥

कथा पादपद्माचार्य्यकी ॥

पाद पद्माचार्य्यजी परमभगवद्भक्त गुरुनिष्ठ गंगाजी के तटपर गुरुसेवामें रहाकरते एक समय गुरू तीर्थको जानेलगे तब पाद पद्माचार्य

को अपने वियोगसे विकल देखकर आज्ञाकी कि गंगाजीको हमाराही रूप ध्यानकरना पद्माचार्य्यजी गंगाजीका पूजन करते व चरण गंगामें नहीं रखते कूपजल से स्नानादि क्रियाकरते दूसरेसाधु वहां थे वे लोग इसबातें में प्रसन्न न थे जब गुरूआये तब सबने निन्दा करी गुरूपद्माचार्य्यके हृदय की जानगये कि मर्य्यादके भयसेचरण गंगामें नहीं देते पर सबका मोह दूरकरनेको एकदिन गुरूने गंगामें स्नानकरते में पद्माचार्य्य से अँगौछा मांगा पद्माचार्य्य को इधर गुरूरूप गंगामें चरणदेना ढिठाई उधरगुरू आज्ञा साधना इसी चिन्तामें शोचतेही थे कि कमलकेफूल गंगामें प्र- कट होआये उसीपर चरण देते जाकर अँगौछा दिया व फिर तटपरलौट आये गुरूने यह विश्वास व प्रभाव देख छाती से लगाया व चरण भी पकड़ लिये पाद पद्माचार्य्य नाम धरा ॥

कथा विष्णुपुरी की ॥

विष्णुपुरी ऐसे भगवद्भक्त हुये कि भागवत धर्म्म के आगे और सब धर्म्म असार समझते थे श्रीमद्भागवत जो समुद्र है तिसमें से श्लोक रूपी अमूल्य रत्नोंको निकाला और कलिके जीव इस धनके दरिद्र हैं तिनको निहाल करदिया यह विष्णुपुरी जो माध्व सम्प्रदायमें श्रीकृष्ण चैतन्य महाप्रभु के चेलेहुये जगन्नाथपुरी में बात चले पर दूसरे साधों ने प्रतिवाद किया कि मुक्तिहोने के हेतु काशीपुरी में टिके हैं श्रीकृष्ण महाप्रभुजी ने उत्तरदिया कि उनको न मुक्तिसे प्रयोजनहै न किसी दे- वतासे न काशीसे सिवाय श्रीकृष्णचरण कमलों के किसी और भूलकर भी उनके चित्तकी वृत्ति नहीं जाती केवल सत्संगके अर्थ काशी में टिके हैं पर लोगोंने न माना तब महाप्रभुने विष्णुपुरीसे रत्नकी मालाके भे- जनेके हेतु चिट्ठी भेजी विष्णुपुरीजीने हृदयकी समझकर भागवत समुद्र से पांच सौ श्लोकरूपी रत्नचुनकर और भक्तरत्नावली नाम रखकर अ- पने गुरूको भेजा साधों ने जो देखा पढ़ा भक्तिरस में मग्नहोगये वि- श्वास हुआ कि विष्णुपुरीजी परम अनन्य भक्तहैं तैसेही गुरूनिष्ठा में हैं जानेरहो भक्तरत्नावली के तेरहें अध्यायमें अलग अलग क्रमसे नवधा भक्ति व ज्ञान वैराग्यका वर्णन है ॥

कथा पृथ्वीराजकी ॥

पृथ्वीराज कछवाहे आमेर के राजा ऐसे भक्त व गुरुनिष्ठ हुये कि

घर बैठे द्वारकानाथ महाराज के दर्शनपाये और शङ्ख चक्र का छाप शरीर पर प्रकट हुआ और कृष्णदासजी की कृपासे सवधर्म्म व उपासना के ज्ञाता होगये भीष्मपितामह के सदृश निष्पाप व युधिष्ठिर के सदृश धर्म्मात्मा व पूजा करनेवाले प्रह्लाद के सदृश हुये जैसे चेले कृष्णदास जीके हुये सो कृष्णदासजी की कथामें कहा है पृथ्वीराज ने जब कृष्णदासजी के साथ द्वारका जाने की इच्छा व सजाव सब किये तब राजमंत्रियों ने कृष्णदासजी से विनय किया कि राजाके जाने से इस देशमें भक्तिका प्रकाश बढ़ता जाता है सो घटती होनेलगैगी कृष्णदासजी ने अपने राज्यपर रहने की आज्ञादी राजाने विनय किया वा उदास होकर बोले कि एकतो आपके चरणका संग दूसरे द्वारकानाथ का दर्शन गोमती का स्नान व भगवत्‌शस्त्रों का चिह्न प्राप्त होने का लाभ था सो अब मैं उनलाभों से विमुख होताहूं कृष्णदासजी ने आज्ञाकी कि शोच करना कुछ प्रयोजन नहीं वह सब तुमको इसी जगह प्राप्त होजायगा यह कहकर चलेगये राजा साथके वियोग से धार धार रोनेलगा तीन दिन बीते थे अर्द्धरात्रिके समय राजा ने कृष्णदासजी का पुकारना सुना दौड़कर गया देखा आप द्वारकानाथ महाराज हैं प्रेममें विवशहुये दण्डवत् परिक्रमा करी फिर आज्ञापाकर गोमती में स्नानकिया शरीर पर शङ्ख चक्रके चिह्न अंकित होगये रानी भी राजाकी आज्ञा से गोमती में स्नान करके कृतार्थ होगई प्रभातको यह वृत्तान्त सारे संसार व देश देशमें फैला नगर के लोग व जहां तहां के सन्त महन्त दर्शनोंके लिये भेंट नानाप्रकारकी आगे धरे गुरुभक्ति व भागवतभाव का विश्वास दृढ़ हुआ पीछे राजाने मन्दिर बनवाया मूर्त्तिविराजमान करके दिनरात सेवा पूजामें रहनेलगा एक अन्धा ब्राह्मण बैजनाथजी के द्वारपर सूझनेके लिये पड़ारहा बहुतदिन बीते तब शिवजीने दयाकरके कहा कि पृथ्वीराजका अँगौछा आँखों पर मलदे खुलजायँगी ब्राह्मण आया राजाने नवीन अँगौछा अपने शरीरपर लगाकरदिया कि तुरन्त आँखें खुलगईं॥

कथा तत्त्वाजीवा की ॥

तत्त्वाजीवा दोनों भाई ब्राह्मण पद्मनाभदेश जो कमलके सदृश है तिसको प्रफुल्लित अर्थात् भक्त करनेको सूर्यके सदृश हुये अथवा भगवद्भक्ति जो अमृत का समुद्रहै तिसके दोनोंतट हुये जिनके प्रभावकरिके

लाखों को भगवद्भक्ति प्राप्तिहुई रघुकुलवालों के सदृश भये एक लकड़ी सूखी द्वारपर गाड़ धे व प्रण था कि जिसके चरणामृत से यह लकड़ी हरी होजावै उसको गुरु करेंगे सो कबीरजी के चरणामृतसे हरी होगई कबीरजी के चेलाहुये कबीरजी चलते समय कह गये जब प्रयोजन पड़े तब हमको स्मरण करना तिसके पीछे ब्राह्मण व उनके सगोतियों ने जुलाहेके चेला होनेसे उनकोजातिसे निकाल दिया और उनकी लड़की का ब्याहलेना अंगीकार न किया चिन्ता में होकर संदेशा गुरुके पास कहला भेजा कबीरजीने उत्तर भेज दिया कि ये लोग भगवत् से विमुख हैं तुम्हारे सम्बन्ध योग्य नहीं तुमलोग दोनों भाई आपसमें अपने लड़कोंका सम्बन्धकरलेव उसआज्ञाके अनुसार इच्छा को किया सब घबराये और सब ने इकट्ठे होकर दोनों भाइयों से कहा कि ऐसी रीति उचित नहीं है उत्तर दिया कि हमको सिवाय गुरु की आज्ञाके अपने दूसरा कुछ करना अंगीकार नहीं है वे सबलोग इस विश्वासके वशहोगये फिर इसबातके बन्द करनेको विनयकिया तब दोनों भाइयोंने कबीरजी से जाकर कहा तब कबीरजी ने आज्ञाकी कि जो वे लोग भक्ति अंगीकार करें तो करो चिन्ता नहीं सो उन लोगोंने भगवद्भक्ति स्वीकार करी तब नातेदारी होनेलगी जब सबने भक्तोंका समाज व प्रभाव भक्ति का देखा तब सब भगवत् शरणहोकर कृतार्थ होगये॥

कथा खोजीकी ॥

खोजी परम भगवद्भक्त और गुरुनिष्ठ रहे उनके गुरुने एक घंटा स्थानमें लटका दियाथा औ चेलोंको समझा दिया रहै कि हम जब परमधाम को जावेंगे तब यह घंटा बजैगा जब गुरुने देहत्यागा तो घंटा न बजा चेलोंको चिन्ता हुई खोजी वहां उस समय न थे जब आये तो सुना तब जिस जगह गुरुने देह त्याग किया लेटकर देखा तो एक आंब पका लगाहै उसको तोड़कर टुकड़ा किया तो देखा कि एक क्रिमि उस में है और उसी क्षण वह कीड़ा मरगया और घण्टा बजा सबको निश्चय हुआ सो इसमें गुरुने चेलोंको एक उपदेश करादिया कि अन्तकालमें जहां मन लगैगा सोई होगा गीताजी में भगवत् वचन है तिस को निश्चय कराया ॥

कथा गुरुनिष्ठकी ॥

एक गुरुनिष्ठ भगवद्भक्त ऐसे हुये कि गुरुके सिवाय दूसरे साधु

सन्तकी सेवा नहीं जानता गुरुकीइच्छा यहरही कि साधुओंकी भी सेवा करै तो अच्छी बातहै पर विना परीक्षा इस बातके कि आज्ञाकरैं कै न करैं कह नहीं सके यह परीक्षा विचारी कि जब वह तीर्थ को जानेलगा तब उससेकहा कि जब तुम आवोगे तब एक बात कहकर शिक्षाकरैंगे तीर्थ करके जिस दिन वह पहुँचने को था तब गुरु ने प्राण छोड़दिये लोग जलानेको लेगये तबतक गुरुनिष्ठ पहुँचा सुनकर रोता दौड़ा लोथको रोंका कि हमारे गुरुका वचन है जब तीर्थकर आवेगा तब कुछ शिक्षा कहूंगा सो वचन मेरे गुरुका मिथ्या नहीं नितान्त किसीप्रकार गुरुके शरीरको फेरलाकर सिंहासनपर धरायके विनय किया कि अपने वचनको पालन करिये मेरी आशा लगी है गुरुजी उसके विश्वास पर अति प्रसन्न होकर जीकर उठबैठे साधु सेवाके निमित्त शिक्षाकरी गुरु निष्ठने विनय किया कि आप तो परमधामको जाते हैं मेरी साधुसेवा कौन देखैगा गुरु इस वचन औ चतुराई से प्रसन्न होकर एकवर्ष और जीते रहे ॥

कथा घाटमकी ॥

घाटम जात के मीना रहनेवाले गांव घोड़ी राज जयपुर के गुरुभक्ति व वचनके निश्चय से उत्तम पदको पहुँचे और कृतार्थ होगये ठगीका रोजगार करते थे कुछ मनमें विवेक आया किसी हरिभक्त के पास गये उसने शिक्षाकिया चोरी ठगी छोड़देव घाटमने कहा मेरी जीविका वही है हरिभक्तने कहा उसके बदले चारबात अंगीकार करो १ एक सत्य बोलना २ दूसरी साधु सेवा ३ तीसरी भगवत् अर्पण किये पीछे कुछ चीज़ खाना ४ चौथी भगवत् आरती में जा मिलना सुनतेही चारोंबातों को अंगीकार किया तब हरिभक्त ने घाटमको भगवन्मन्त्र उपदेश करके चेलाकिया घाटम गुरुकी चारों बातोंपर अभ्यास रखतेरहे एकदिन घर में कुछ न था साधु आगये खलिहानसे किसीके गेहूं चुरा लाकर साधु सेवाको किया पर सेवा करते में कुछ डर मनमें होजाताथा कि पता लगाकर गेहूंवाला आकर पकड़ न ले नहीं तो साधुओंकी सेवामें विघ्न होगा सो आंधी पानी ऐसी आई कि पता पांवका सब मिटगया सुचित्त होकर सेवाकिया एकसमय गुरुने भगवत् उत्साहमें घाटमको बुलाया उससमय साधु सेवा के करने से कुछ पास न था चिन्तामें हुये राजा के मकान पर आये डेवढ़ीदारों ने पूंछा तब उत्तर दिया चोरहूं घाटम

मेरा नामहै वे लोग पहिराव उत्तम उनका देखकर जानगये कि हँसी की राह अपने को चोर कहताहै कुछ न बोले घोड़सार के भीतर जाकर एक उत्तम घोड़ा मुशकी रंग चुन करके सवार होकर चलेद्वारप द्वारपालों ने रोंका फिर उसीप्रकार सांच सांच कहकर चलेआये गुरु की ओर चले सन्ध्या के समय एक नगरमें किसी ठाकुरद्वारेमें आरती होतीथी वहां गये भजन करने लगे राजाके यहां उस घोड़ेकी ढूंढ़पड़ी कोतवाल बहुत सिपाहियों सहित घोड़े के पांव का पता लगाता हुआ उसी मन्दिर के द्वारपर जहां घाटम आरती में थे पहुँचा भगवद्भक्त वत्सल महाराज को चिन्ताहुई कि यह कोतवाल घोड़े को पहिचानकर मेरे भक्तको दुःखदेगा इसहेतु घोड़ेको लुकारारंग करदिया औ घाटम जब सवार होकर निकले तब कोतवाल देखकर लज्जित व शोचमें भर गया कि घोड़ा वही पर रंग दूसरा अब राजा जाने हमैं कैसा दण्ड करैगा घाटमजी ने उनसे वृत्तान्त सब सुनकर दयाकरके बोले कि वह चोर मैं हूं और यह घोड़ाभी वही है भगवत् इच्छासे यह रंग होगया मेरी रक्षाके हेतु सो चिन्ता न करो घोड़े समेत तुम्हारे राजाकेपास मैं चलता हूं यह कहकर राजाके पास आये राजा सब वृत्तान्त सुनकर चरण पर पड़ा और रुपया मोहरें सब देनेलगा घाटमजी ने कहा घोड़े से प्रयोजनहै और कुछ न चाहिये राजाने और कुछ सहित घोड़ा घाटमजीको भेंट किया घाटमजी ने वह सब लेजाकर गुरुजीको भेंट करदिया कुछ संदेह नहीं किया भगवद्भक्ति का ऐसाही प्रताप है सो आप गीताजी में भगवत् ने कहा है कि किसीके आचार दुष्टभी हैं पर मेरा भजन ऐसा करताहै कि दूसरे को कदापि नहीं जानता उसको निस्संदेह साधु जानना चाहिये काहेसे कि जो निज तात्पर्य्य और सारांश शास्त्रों का है उसको वह पहुँच गयाहै व निश्चय करिकै बुरे आचरणभी उसके शीघ्र छूटजावैंगे और मुझको प्राप्त होगा और अर्जुन सचजान मेरे भक्तका कभी नाश नहीं होता॥ कथा नरवाहनकी॥

नरवाहनजी राधावल्लभी रहनेवाले भौगांव के हित हरिवंश जी के चेले भगवद्भक्त साधुसेवी परम गुरुनिष्ठ हुये एक साहूकार की नावको लूटलिया और उसको और धनको लेनेके हेतु बंधन में डारा नरवाहन जीकी लौंडी दयावान् थी उस वणिक् को खाना पहुँचाया करती उसने

उसको यह उपाय बतलाया कि आधीरात के समय राधावल्लभ हित हरिवंश राधावल्लभ हित हरिवंश पुकार पुकार कहता जिसमें नरवाहन के श्रवण में पहुँचे और जब कुछ पूछे तो हित हरिवंशजीका चेला अपने को कहना उसने वैसाही किया नरवाहनजी सुनतेही नाम राधावल्लभ और हित हरिवंशजी के बेसुधि दौड़े साहूकार को दण्डवत् करके वृत्तान्त पूछा उसने कहा कि हित हरिवंशजी का चेलाहूं और राधावल्लभजीका विना मोलका चेराहूं नरवाहनजी लज्जित और ग्लानि युक्त हुये और सब धन उसका फेरदिया और अपने अपराधको क्षमा कराया व चरणों में पड़कर विनय किया कि तुम बड़े भाईहो मुझको अपना दास जानकर इतनी मेरी पालना करो कि यह वृत्तान्त स्वामी जी तक न पहुँचे वह साहूकार यह दशा नरवाहनजी की देखकर उसी घड़ी भगवत्के शरणहुआ और हितहरिवंशजी के पासआया और चेला होकर भगवद्भक्त होगया गोसाईंजी भी नरवाहनजी के निश्चयपर बहुत प्रसन्नहुये अब यहां एकप्रतिवाद यह खड़ा हुआ कि एककथा तो घाटम की लिखि आये कि वह चोरी किया करताथा यह नरवाहनजीकी लिखी कि ठग थे तो क्या भगवद्भक्त चोरी और ठगी को पाप नहीं समझते उत्तर यह है कि भगवद्भक्त निश्चय करके चोरी और ठगीको पापकर्म समझते हैं और ऐसे कर्मों के निकट नहीं जाते भगवद्भक्तों के बराबर संयमी कोई नहीं और यह चरित्र जो घाटमजी से औ नरवाहनजी से हुआ तो चोरी में नहीं गिनाजाता चोरी वह है जो अपने शरीरके हेतुहोय और उससे लड़के बालोंका खाना कपड़ा चलता हो अब और शंका उत्पन्न हुई कि इस लिखने से चोरी करना अच्छा कर्म ठहरा कि लोगों का धन भले लूटाकरें और शंख झांझ बजैं साधु सेवा कियाकरैं उत्तर यहहै कि कदाचित् चोरी करके साधुसेवा करनी उचित नहीं सुकृतके धनसे साधुसेवा करनी उचितहै और अभिप्राय मेरा यह नहीं था कि जोकुछ समझकर शंका करदिया तात्पर्य यहथा कि जब अन्तःकरण की निर्मलता प्राप्त होती है और यह संसार अनित्य दिखाई देनेलगा और द्वैतताका आवरण उठगया उससमय जो कर्म भक्तोंसे होते हैं वह सब अच्छे हैं जो चोरी व ठगीकरैं तो उस दोषमें वह भक्त दंडके योग्य नहीं होता निश्चय इसका गीताजी के अध्याय पांचवें व श्लोक सातवें से अ-

च्छेप्रकार होताहै और घाटमकी कथा भी निश्चय करानेवाली है कि भगवत्ने पांवके चिह्न दूर करनेके निमित्त आंधी और मेह बर्षादिया और घोड़ेका रङ्ग मुशकी से सफ़ेद करदिया और अपने भक्तके कर्म धर्म व पुण्यरूप समझकर उसके पक्षपरहुये सिवाय इसके सब धर्म कर्म भगवद्भक्तिकी प्राप्तिके अर्थ हैं जिस कामसे भगवद्भक्तिहो वह चोरी में गिनती नहीं बरु जैसे अन्य साधन सब हैं तैसे है सो घाटम व नरवाहन दोनों से प्रसन्नता भगवत् और गुरुकीहुई जो वे लोग चोर औ ठगहोते तो भगवत् कब प्रसन्नहोते सिवाय इसके समर्थको कुछ दोष नहीं होता जिसप्रकार गङ्गाजी में सबप्रकार जल मिलकर गंगाजल और प्रज्वलित अग्निमें सब वस्तु अग्नि होजाते हैं तो जान रखना कि साधु सेवा वह परम धर्म है कि उसके निमित्त भगवद्भक्तों ने निज भगवत्का आभूषण उतारकर बेंचडाला है दूसरे कर्मकी कौन बातहै बरु आप भगवत् साहूकार बनकर अपने भक्तों के हाथ से ठगी कराते हैं और उसचरित्र से प्रसन्न और संतुष्ट होते हैं कि निश्चय इसका हरिपाल निष्कंचन की कथा से होताहै प्रीति सांची और विश्वास दृढ़ उचितहै घाटमके विश्वासको देखना चाहिये कि कैसे गुरुकेबचनपर स्थिर औ सच्चेथे कि प्राणका भी लोभ न किया और नरवाहनजी के विश्वासको देखना चाहिये कि अपने गुरु व इष्टका नाम सुनकर तीनलाख व तीस हज़ारका धन फेरदिया और अपने आपको भक्त के दुःख देने व सताने का अपराधी समझा निदान्त अर्थ यह कि भगवद्भक्तिमें विश्वास होना सब सुकर्म से शिरोमणि है सिवाय इसके एक यहहै कि जिस अपराध से बाली और रावण भगवत् के घरसे निकाले गये और वधको प्राप्त हुये सोई अपराध सुग्रीव और विभीषणसे हुआ पर वे भक्तिके प्रताप से महाभागवत और भगवत् सखाओं में गिने गये तो भगवद्भक्तिका यह प्रतापहै कि सब अपराध उलट के पुण्य होजाताहै॥

कथा गजपतिकी॥

गजपति राजापुरुषोत्तमपुरी के भगवद्भक्तहुये गोसाईं श्रीकृष्णचैतन्य अपने गुरुमें ऐसा विश्वास दृढ़ रखतेथे कि जब दर्शन करलेते तब राज्य काज किया करते एक दिन गुरु गोसाईंजीने उनको दर्शन करने को आनावर्जितकिया राजा संन्यासीरूप होकर दर्शन के हेत इधर उध

फिरनेलगा पर दर्शन न पाया एक दिन रथयात्राके समय देखा कि रथ के आगे गोसाईंजी नृत्य कररहेहैं दौड़ के चरणों में पड़ा गोसाईंजी ने राजाका प्रेम व विश्वास देखकर छातीमें लगालिया व प्रेम आनन्द में मग्न करदिया॥ कथा चतुरदासजीकी॥

स्वामी चतुरदास परम भक्त व वैराग्यवान् हुये भगवद्भजन के आनन्द में मग्न रहकर सदा भगवत् के रङ्गमें रँगे रहतेथे मथुरा और व्रजमण्डल में फिरतेहुये ठौर ठौर सत्संग के सुखको लेतेरहे गुरुभक्ति में ऐसे हुये कि कोई न होगा उनके गुरु सदा घर पर आया करते भगवत्रूप जानकर सेवा पूजा किया करते स्त्री स्वामीजी की नवयौवना व रूपवती थी उसको गुरुकी सेवा में तत्पर करदिया कि जो आज्ञाहो सो सम्हारना और आप अपने धर्म पर ऐसे दृढ़रहे कि कभी विश्वास में तनक भेद न आया नितन्ति सब सामग्री और धन व स्त्री गुरु की भेंट करके दण्डवत् करके आज्ञा से व्रजमण्डल में आये प्रभात की मंगल आरती के दर्शन गोविन्ददेवजी के किया करते और शृंगार आरती केशवदेवजी की औ राजभोग नन्दगांव का देखकर गोवर्द्धनजी में राधाकुण्ड पर होते हुये वृन्दावन में आते एक वेर नन्दगांव में मानसरोवर पर बे अन्न जल रहे सो नन्दगांव के स्वामी नन्दबाबा हैं सत्कार पथिक लोगोंका कि जो उनके स्थानपर आवें उन्हींपर उचित है इसहेतु नन्दजी के कुमार सुकुमार भक्तवत्सल महाराज अपने मेहमान को बिन अन्न जल न देख सके बारह वर्ष के लड़के के स्वरूप से दूध लेकर कटोरेमें स्वामी चतुरदास को दिया स्वामी चतुरदासने उस रूपके फिर देखने के लालच जलमांगा जब बहुत देरतक वह निडर चंचल लड़का पानी न लाया तब बहुत बेचैन व बिकल हुये भगवत्ने स्वप्नमें आज्ञाकी कि पानीका कुछ प्रयोजन नहीं तुमको दूध सब व्रजवासियों से मिलता रहेगा स्वामी ने विनय किया कि दूध व्रजवासियों को बड़ा प्यारा है कि यशोदाजी ने दूधके हेतु आपका छोड़ दिया था फिर वे लोग दूध किसप्रकार देंगे भगवत्ने आज्ञाकी कि निश्चय कर मिलैगा सो स्वामी चतुरदास को दूध सब कोई देनेलगे और अबतक स्वामीके वंशमें चेले जहां चहैं व्रजमें तहां दूध लेतेहैं सत्यहै गुरु सेवा पै कौन पदार्थ नहीं मिलता है॥

कथा राघवदासकी ॥

राघवदास जी परमभक्त भगवत् के हुये अपनी रचना में अभोग दुबरिया रखते थे इसहेतु लोग दुबला कहते थे पर भक्तिभावमें मोटे व महन्त थे शास्त्रोक्त जो भगवद्धर्म है सो साधना अच्छेप्रकार से कै और गुरु चेलेका धर्म ऐसा निबाहा जो किसीसे न होसके अर्थात् वायु पुराण में लिखाहै कि जो मन्त्रहै वहही गुरुहै और जो गुरुहै वही भगवत् है जब गुरु प्रसन्न होगा तो भगवत् आपसे आप प्रसन्न व वशीभूत होजावैगा सो राघवदासजी ने अपने गुरुकी ऐसी सेवा करी कि गुरु और भगवत् को सन्तुष्ट करलिया और जिसको अपना चेला किया उसको आवागमनसे छुड़ाकर भगवत्में मिलादिया और अन्तर बाहर ऐसे विमलहुये कि कलियुगकी काई समीप न आई दिन रात सिवाय भगवत् चरित्र कीर्त्तनके दूसरा कार्य्य न था कठोरवचन कभी मुख से न निकला नाभाजी ने जो दृष्टान्त उनके निमित्त हीराका लिखा सो अभिप्राय यहहै कि जिसप्रकार हीराको अहरनपर रखकर घन मारते हैं और वह टूटता नहीं उस अहरनमें धसि जाताहै जब दूसरा हीरा उस का सजातीय सम्मुख करते हैं तो अहरनसे निकलआताहै इसीप्रकार राघवदासजी थे कि पवन शरदी व गरमी दुःख व सुख संसार का उनके हृदय को चलायमान न करसका और सत्संगको देख इसप्रकार आमिलते थे कि जिसप्रकार हीरा अपनेसजातीयको देखकरआमिलताहै॥

निष्ठा आठवीं ॥

प्रतिमा व अर्चा के वर्णन में पन्द्रह भक्तों की कथा है ॥

श्रीकृष्ण स्वामी के चरण कमलों की शंखरेखा को दण्डवत् करके फिर हंसअवतार को दण्डवत् करताहूँ कि ब्रह्मपुरी में प्रकट होकर ब्रह्मा का उपदेश किया शास्त्रों का सिद्धान्त है कि भगवत् की प्राप्ति के हेतु भगवत्‌ही की पूजा अर्चा जप मन्त्र आदि साधन हैं और पूजा अर्चा विना उसके कि जिसका पूजन करना चाहिये नहीं होसक्ती और विना पूजा अर्चा भगवत्‌की प्राप्ति दुरूह है इस हेतु करुणाकर दीनवत्सल महाराजको यह शोचहुआ कि मेरी प्राप्ति जो मेरी पूजाके ऊपर सिद्धांत ठहरा तो विना प्राप्ति के पूजा नहीं होसक्ती तो उद्धार जीवों का किसप्रकार होगा तब आप भगवत् ने जिसप्रकार भक्तों के हेतु अवतार

धारण कियेथे और करता है उसीप्रकार प्रतिमारूप होकर इससंसार में प्रकटहुआ सो बारह प्रतिमा जैसे बदरीनारायण व रंगनाथ स्वामी व गोविन्ददेवजी आदि स्वयं व्यक्ति हैं व जगन्नाथरायजी व वरदराज आदि कई प्रतिमा ब्रह्मा व शिवादिक देवताओंकी स्थापित कीहुई हैं और कोई मुनीश्वर व ऋषीश्वरोंकी स्थापितहैं जब इन मूर्त्तियोंसे भी भगवत्‌ने सब किसीको प्राप्त न देखा तब शालग्राम रूप होकर प्रकट हुये कि अधिक करके सबको प्राप्तहो पीछे जब यह देखा कि यह भी सब किसीको प्राप्त नहीं है तब आज्ञाकी कि सोने चांदी और पाषाण आदिकी प्रतिमा बनाकर और वेदमंत्रों के अनुकूल प्रतिष्ठा करके पूजन करें और सब प्रतिमाओंके पूजन और दर्शन में चमत्कार दिखाया कि जिसने अनन्य होकर आराधन किया सिद्धपदको पहुंचगया और यहांतक करुणा और दयालुता को विस्तार किया कि जो कोई चित्र लिखवाकर औ भगवत् जानकर पूजन करता है भगवत्‌को प्राप्त होता है सो इस भगवद्विग्रह पूजन दर्शन को भक्तोंने कईप्रकार पर माना है कि कोई तो उस प्रतिमाको निज स्वयम भगवत्‌की प्रतिमूर्त्ति जानकर इस प्रकार पर पूजन करते हैं कि पहले मानसी पूजन और फिर उस मूर्त्तिका और किसीका यह विश्वासहै कि उस प्रतिमाको पूर्णब्रह्म सच्चिदानन्दघन मानते हैं मानसीपूजन आदि का कुछ प्रयोजन नहीं और तीसरे यूथका यह वचनहै कि वास्तव मूर्त्ति उस सच्चिदानन्द घनकी लोगोंके ध्यान में शीघ्र नहीं आयसक्ती इसहेतु मुख्य भगवत् स्वरूप में इस मनके जमजाने के निमित्त इस मूर्त्तिका दर्शन और पूजन करते हैं औ सब कोई अपने विश्वास व निश्चय के अनुसार मनोरथ को पहुंचते हैं सो जब कि यह बात प्रकट होगई कि आप भगवत् ने जगत् के उद्धार के निमित्त अपना रूप प्रतिमा स्वरूप से प्रकट किया है तो अत्यन्त उचित हुआ कि भगवद्विग्रह को ईश्वर जानकर दृढ़विश्वास से दर्शन और पूजन किया करें हज़ारों और करोड़ोंका उद्धार प्रतिमाओं के विश्वासके प्रभावसे हुआ और होता है भागवत का वचन है कि मुकुन्द भगवान्‌की मूर्त्तिका दर्शन और उस मूर्त्तिके दर्शन करनेवाले का मिलना अथवा मूर्त्तिके चढ़े हुये फूलों का सूंघना और तुलसीदल का खाना और भगवन्मन्दिर में जाना और

दण्डवत् करना ये सब भगवत् लोकको प्राप्त करते हैं नारदपंचरा॰ में लिखाहै कि शालग्रामजी का स्नान जिस वर्त्तन में कराया जाता है उसका सातवीं वेरका धोवन गंगाजलके बराबरका माहात्म्य रखता है सो माहात्म्य दर्शन आदिका इसीसे विचारलेना चाहिये कि कितना होगा पर यह पूजन आराधन भगवन्मूर्त्तिका कुछ ऐसी सहजबात नहीं है कि राह चलते उत्तमपदको पहुंचाय देवै अर्थात् बहुतकठिन है—क्या बातहै कि शास्त्रोंके अनुसार भगवत् एकव्यापक और ब्रह्मस्वरूप हैं जबतक अन्य विश्वास को और भांति भांति के शङ्का संदेह और मन की कचाई को हृदयसे दूर करके निज उस मूर्त्तिमें मन न लगैगा तब तक किस प्रकार मिलना भगवत्का होसक्ता है और वहमन ऐसा लगै कि दूसरी ओर न जाय और न दूसरेकी शरण का भरोसा होवे एक वार्त्ता है कि एक कोई अर्थार्थी को भगवत् पूजनसे धन न मिला तो किसी के उपदेशसे भगवन्मूर्त्ति को ताखमें रखकर दुर्गामूर्त्तिका पूजन करनेलगा एकदिन यह विचारा कि धूप जो दुर्गाको देताहूं पहिले भगवत्को पहुंचती होगी इस हेतु भगवत् प्रतिमा की नाकमें रुई भरने लगा उसक्षण भगवत् प्रसन्नहुये और बोले कि जो चाहनाहो सो कहो उसने विनय किया कि पूजासे कबहीं प्रसन्न न हुये और इस ढिठाई से बहुत कृपायुक्त हुये इसका क्या कारण है बोले कि जब तू पूजन करता रहा तब पत्थर की मूर्त्ति जाना करता था और इससमय सब ओरसे मनको खींचकर भगवन्मूर्त्तिको पूर्णब्रह्म सच्चिदानन्दघन जाना इस हेतु प्रसन्न हुये एक बाईकी कथा है कि गुजरात में भगवन्मूर्त्तिकी आराधना वात्सल्य भावसे करतीथी जहां रहती रही उस गांवमें भेड़ियों की प्रबलता हुई और कई लड़कों को भेड़िये उठा लेगये यह सुनकर इसबाई की सुधिगई और मूसल हाथमें लेकर सारीरात जागने लगी बहुत दिन यह दशा रही कि दिनको भोग व रसोई व शृंगार में भगवत् के रहती व रातको रखवारी में भेड़िये की भगवत्को बड़ी करुणा हुई और साक्षात् प्राप्तहुये बाई ने जो धुनि झमझमाहट व घुंघुरू आदि आभूषण की सुनी तो मूसल उठाकर दौड़ी देखा कि कोई लड़काश्यामसुन्दर मोहनीरूप है पूछा कि तू कौनहै उत्तर दिया कि मैं वही ईश्वर परमात्माहूं कि जिसकी मूर्त्तिको तू बालक जानकर आराधन करती है

सो जो तुमको चाहनाहो मांगो बाई प्रसन्नहोकर बोली कि तू ईश्वर है तो यह वर मांगती हूं कि इस मेरे लड़के को भेड़िया न लेजाय बाहर बाई यशोदा के कौशल्यारूप तात्पर्य्य यहकि निश्चय दृढ भगवन्मूर्त्ति में इसप्रकार काहो कि जो आप भगवत् प्रकटहोकर आवैं तबभी अपना इष्ट उस मूर्त्तिकोही समझता रहै और जो दूसरीओर मनगया तो प्रेम कहां और स्त्रीको जिसप्रकार दूसरे पुरुषकी शोभा वर्णन करना वर्जितहै इसीप्रकार अपनी सेवा मूर्त्तिकी बराबर और किसीकी शोभा मनमें न लावे कि मूर्त्तिकी पूजाप्रकार में यहबात लिखी है और जिसप्रकार कोई सेवक अपने स्वामी को प्राणसे अधिक जानताहै और सबप्रकारकी सामग्री बनाकर बारबार उसके आगे धरताहै इसीप्रकार अपनी सेवा मूर्त्तिकी सेवा उचित है जैसे ग्रीष्मऋतु है तो टट्टी या खसखस और पंखा औ सुगन्ध औ पानीका छिड़काव और मन्दिर हवादार औ फूल औ वस्तुअलङ्कार उत्तम चमक दमक वाले बनाकरके एक दिन में कईवार भगवत् का शृंगार करै और इसीप्रकार वर्षाऋतु और जाड़े की ऋतुमें सामग्री सब उस ऋतुके अनुकूल कियाकरै अर्थात् जो कुछ अपने प्राण और सुख और अपनी शोभाके हेतु जो सजाव औ बनावट सामग्री औ शृंगारकी वस्तु हरप्रकार की और खाने पीने के पदार्थ इत्यादि की वार्त्ता है उसमें दशगुणित भगवत्के निमित्तकरै और जिसदिन कोई त्यवहार जैसे होली औ दीवाली औ दशहरा औ वसन्तपंचमी आदि अथवा सांझी का समय या सावन के महीने में हिंडोरा झुलाने के चरित्र औ भगवज्जन्म उत्साह जैसे रामनवमी औ जन्माष्टमी औ नरसिंहचतुर्दशी वामनद्वादशी इत्यादि अथवा तीर्थ और व्रतका दिन होय ऐसी धूमधाम के साथ उत्साह औ शोभा की सजावट इत्यादि कियाकरै कि जिसप्रकार अपने लड़के के विवाहमें अथवा पुत्रके जन्महोने के दिन किया करते हैं कहांतक वर्णन कियाजाय कि यह बात अपने हृदयकी प्रीतिसे सम्बन्ध रखतीहै और भगवत् कृपा भाग्यके उदय से होती है यह उत्सव और देशमें स्वप्नप्राय व आश्चर्य है दक्षिणमें अथवा मथुरा व वृन्दावन व अयोध्याजी आदिमें है एक कोई गोसाईं वृन्दावनीने एक कोई कामवालेके स्थान पर देश पंजाबमें वसन्त पंचमी के दिन फूलडोल बनाया वेश्या सब जो

कारदारके घरपर उस व्यवहार के इनामकेलिये आई तो उसने गोसाईं जीके संकोचवश राग न सुना और विदा करदिया गोसाईंजी ने कहा कि भगवत् के सामने राग क्यों नहीं होता कारदार ने पूंछा कि क्या भगवत् के सामने भी वेश्याकानाच राग होताहै गोसाईंजी ने कहा कि जो भगवत् नाच औरशगके प्रेमी न होते तो संसारमें यह फैलने क्यों पावता जो कुछ सुख आनन्दका साज व समाज गुप्त व प्रकटकी आंखों को जहांतक देखनेमें आताहै सब भगवत्के हेतुहै कि मूल सब कार्य्यों का भगवंत् से है सोलह उपचार जो पूजनके विख्यात हैं सो भगवन्मूर्त्ति और मानसी पूजनके निमित्त बराबर हैं भेद इतना है कि मूर्त्ति पूजनके निमित्त तो सामग्री प्रकट करनी पड़ती है और मानसी पूजन के निमित्त मनमें सब सोलह प्रकारमें पहिले आवाहन सो आवाहन उस देवताका करना पड़ताहै किजिसकी कभी कोई दिन पूजाकरनीहो और भगवत् पूजनका आवाहन इतनाही मानते हैं कि प्रभात अपने स्वामीको जगाना और दण्डवत् करना और श्लोक व पद जगानेका पढ़ना गान करना दूसरा आसन सिंहासन पर बिछावना सुन्दर बिछावना और मन्दिर की झाड़ू बहारी करनी तीसरा पाद्य भगवत्का चरणअँगोछे से पोंछना अर्घ हाथ मुँह धोलाना पांचवां आचमन दतवन कुल्ली कराना छठवां स्नान कराना अँगौछेसे शरीर पोंछना धोती कराना सातवां वस्त्र अलङ्कारसे भूषित करना आठवां यज्ञोपवीत स्वर्ण का अथवा पाटका कैसूत्रका पीला रंगकर पहिनाना नवां गन्ध अर्थात् सुगन्ध जैसे चन्दन और केशर व कस्तूरी व इत्र इत्यादि लगाना दशवां पुष्प अर्थात् फूल भगवत् के मुकुट औ झूमक आदि में गूंथना और माला फूलों की बनानी ग्यारहवां धूप अगुरु आदिकी धूमकी देना बारहवां दीप गोघृत कर्पूरादि से प्रकाशित करना तेरहवां नैवेद्य अर्थात् सबप्रकार के पवित्र मधुर भोजन कराना व आचमन कराना जल पिलाना कुल्ला करानाहाथ धुलाना अँगौछे से हाथ मुँह पोंछना बीड़ी बनाकर देनी चौदहवां दक्षिणा अर्थात् भेंट आगे धरना पन्द्रहवां नीराजन अर्थात् आरती करनी प्रदक्षिणा करनी अर्थात् अपनपौ को वारिजाना औ पुष्पांजलि देनी अर्थात् फूलऊपर बखेरना सोलहवां विसर्जन और यहां अभिप्राय विसर्जन से यह है कि पलँग व तोशक

बिछौना व तकिया व चादर व दुलाई आदि सजना इत्र पान व कुछ भोजन के पदार्थ व पीने के पलँग के समीप रखदेना और शयन के समय भगवत् का चरण पलोटना जानेरहो कि इस सोलह प्रकार का आराधन जैसेजगन्नाथरायजी व बदरीनारायणजी व अयोध्या व रंगनाथ व वृन्दावन में नित्य सातबेर होता है और कोई जगह पांचबेर और बहुत जगह तीनबेर अर्थात् एक प्रभातकाले मंगल आरती द्वितीय मध्याह्नकाल राजभोग तृतीय सायंकाल नियत आरती सो पूजन और दर्शन करनेवालेको सातबेर आराधन अतिप्रयोजन है नहीं तो तीन बेर से कम न हो और जाने रहो कि तंत्रशास्त्र व पुराणों के वचन के अनुसार जो मूर्त्ति स्वयंव्यक्त जैसे बदरीनारायण व रंगनाथस्वामी व गोविन्ददेव इत्यादि शालग्राम मूर्त्ति व पुष्कर व निम्बखार आदि तीर्थ हैं वे बारह बारह कोसतक शुद्ध व पवित्र करते हैं और जो मूर्त्ति कि देवताओं ने स्थापित किया वे चार चार कोसतक और जिन्हें ऋषीश्वर और सिद्ध लोगों ने विराजमान किया वे दो दो कोसतक और जो मूर्त्ति दूसरे लोगों से शास्त्र विहित मंत्रों के अनुसार स्थित हुई वह एक एक कोस तक और जो मूर्त्ति केवल घरमें विराजमान करलेते हैं वह उसी घरको पवित्र और शुद्ध करती है भगवत् ने कृपाकरके सब सामग्री को इस जीव के उद्धार के हेतु बनायदिया कि किसीप्रकार मन चरणारविंद में लगे पर कोई ऐसा कर्म कठोर और न करे आगे आये रहेहैं कि ऐसे सुगम मार्गपर भी मन नही लगता कोई नगर और ग्राम नहीं कि वहां भगवन्मन्दिर और ठाकुरद्वारा न हो परन्तु पुजारी के सिवाय क्या बात है कि कोई दर्शनों के निमित्त जावे विशेष करके धनवान् और उनमेंभी नौकरी करनेवाले घूमने और देखने शोभा चकलेके हेतु जहांतक कोई लेजावे हजारमन और चरणों से चले जायँ और जो कोई ठाकुरद्वारे के चलने को कहै तो मानो दम निकल गयाहै और घूमते फिरते जो राहमें कोई मन्दिर आजाय तौ यहकहैं कि अजीसंध्या होगई सावकाश नहीं फिर किसी समय दर्शन करैंगे और जो घनाक्षर न्याय कभी जानेका संयोग होभी गया तो सारे संसार के झगड़े औ बकवाद डिगरी डिसमिस आदि की बातैं वहां स्मरण हो आईं जब तक बैठे रहैं यही बात रही कौन बात है कि एकबेर भगवन्नाम मुखसे

निकले वरु जो दूसरा कोई भजन करता होय तो उसकोभी अपनीओर सावधान युक्त करलें यह वृत्तान्त कुछ सुनाही नहीं है आंखोंकी देखीहै कहांतक लिखूं कि ग्रंथके विस्तारभय से और अप्रसन्नहोने उनलोगों के कि जो मेरेलिखे को अपने ऊपर समझा लेवें व्यापवान् हैं उनमें पहिले गणना इस मतिमन्दकी है सो क्या वर्णन करूं कि कर्मतो ऐसे सुन्दर और कामना वह कि निश्चय परमधामको जावेंगे क्यों न सद्गति होगी अरे मन पापी अबभी लजावो ध्यानकरके देख कि मनुष्य शरीर बार २ नहीं मिलता न जानें कौन पुण्यसे यहशरीर मिला है इस देहको पायके श्रीनन्दनन्दन स्वामीके चरणकमलों में न लगा तो तुझसे अधिक और कौन भाग्यहीनहै बहुत रुपया उत्पन्न करना झूठ सच्च बोलकर लोगोंको वशीकरलेना तुलसीदासजी ने कहा है कि यह ढँग वेश्याओंको भी अच्छेप्रकार आताहै और जो यह शरीर संसारसे विषय भोगही के निमित्त समझरक्खाहै तो शूकर और कूकर व गर्दभ आदि को भी सबसुख विषय भोगके प्राप्त हैं मनुष्य शरीर और उन शरीरोंमें इतनाभेद है कि इसशरीर के प्रभावसे भगवत् की प्राप्तिहोती है जो भगवच्चरणोंमें मन न लगा तो शूकर और कूकर आदिसे भी अधिक अधर्मी व पापी है क्योंकि उन शरीरोंमें आगेके निमित्त पापनहीं लगता केवल अगिले पापों को भोगतेहैं और मनुष्यको तो नहींकरने भगवद्भजनके हज़ारों पाप मुण्डपर चढ़तेहैं तो इससे अब तुझको उस रूप अनूपका चिन्तवन करना उचित है ॥

कवित्त ॥

मोरपखा शिरऊपर राजत केशरखौर दिये रुचिभालहि ।
अंजनसे दोउरञ्जितकीन्हें जुखञ्जन कञ्जसेनयन विशालहि ॥
गोल कपोलनपै कलकुण्डल रूप अनूप प्रताप रसालहि ।
रेमनमन्द अनन्दकोकन्द तू क्योंनभजै नँदनन्द गोपालहि ॥१॥

कथा राजाचन्द्रहास्य की ॥

राजा चन्द्रहास्य बालपने से ऐसे भगवद्भक्त हुये कि महाभागवतों में गिनेगये और अबतक उनकायश चांदनीकी भांति शास्त्रोंमें लिखाहै च्यवनअश्वमेध में लिखाहै कि मेधावी नाम राजा केरलदेशके घरजब चन्द्रहास्य का जन्महुआ तो एक पांवमें छः अँगुली थी कि सामुद्रिक

में अपलक्षण लिखेहैं जन्मसे थोड़ेही दिन बीतेपर कोई शत्रु चढ़आया और मेधावी उस लड़ाई में मारागया चन्द्रहास्य की माता सतीहोगई और धाय उनको लेकर कुन्तलपुरमें चलीआई कुन्तलपुरके राजाके वजीर का नाम धृष्टबुद्धि था उसके घर रहने लगे फिर वहां धाय भी मरगई और चन्द्रहास्य जी अनाथ पांचवर्षके नगरमें फिरने लगे जो कोई कुछ देता उसी से उदर पालन करलेते एकदिन नारदजी आये एक शालग्रामजीकी प्रतिमादेकर आज्ञाकी जो कुछ भोजनआदिकरो सो इस प्रतिमा को दिखला लेना चन्द्रहास्यजी उस मूर्त्तिको मुखमें रखते और नारदजी की आज्ञाके अनुकूल वर्त्ततेरहे थोड़े दिनमें भगवत् की प्रीति होगई एक दिन उस वज़ीरके घरमें ब्रह्मभोज में ब्राह्मण आयेथे उसने ब्राह्मणों से पूछा किमेरी लड़की कोवर कौन और कैसा मिलेगा उन्होंने चन्द्रहास्यजी को बतलाया कि यह लड़का इसकापति होगा वज़ीर को बड़ी ग्लानि आई कि हाय मेरी लड़की दासीपुत्र की भार्य्या होगी वध करनेवालों को बुलाकर कहा कि इस लड़के को जंगलमें लेजाकर मारडालो वे सब जङ्गल में लेगये और वज़ीरकी आज्ञा सुनाकर कहा कि अब तुम्हारा रक्षक कौनहै चन्द्रहास्यजी को तनक शोच व चिन्ता अपने वधकी न हुई और कहा कि एकघड़ी मेरे वध में धीरधरो पीछे शालग्रामजीका पूजन किया और वधिकों को संज्ञा वध करनेकी करके भगवद्ध्यानकी समाधिको लगायलिया भगवद्भक्तरक्षक महाराजने उनवधिक निर्दयियोंकेहृदयमें ऐसीदया डालदी कि एकअँगुली अधिक जो रही वज़ीरके दिखलाने को काटलेगये और चन्द्रहास्यजी को उसी जंगलमें छोड़गये चन्द्रहास्यजी तीन दिनतक भगवद्ध्यानमें मग्न और आनन्दित फिरतेरहे जिससमय धूप लगती तो पक्षी अपने परोंसे छायाकरते और रात्रिके समय व्याघ्रादिक उनकी रक्षाके निमित्त चौकी देनेको आते संयोगवश कलिन्दनामे राजा चन्दनावती नगरीका शिकार खेलता उस वनमें आया चन्द्रहास्यजी को अपने घरलेगया उसके कोई लड़का नहीं था इन्हीं को अपना बेटा जानकर सब विद्या पढ़ाकर युक्त किया और पीछे राज्यतिलक देकर सम्पूर्णराज्यभार सौंपदिया और आप भगवद्भजन करनेलगा यह राजा कलिंद कर देनेवाला राज्य कुन्तलपुरका था जब समय पर कर न पहुँचा तो

धृष्टबुद्धि वज़ीर सेना सजिकै आया राजा कलिन्द सुनकर मिलने के निमित्तगया बड़ी रीति मर्य्याद से नगर में लाया चन्द्रहास्यजी सेभेंट कराई और राज्य देनेका वृत्तान्तसबकहा वह धृष्टबुद्धि चन्द्रहास्यजी को पहिचान कर बड़ेशोचमें होकर मारनेके उपाय में हुआ और यह उपाय सूझा कि चन्द्रहास्यजी को कुन्तलपुरमें भेजकर वहां मरवा डालनाचाहिये इसहेतु राजा कलिंदको डरपाया कि तुझको उचित नहींथा विना हमारे राजाकी आज्ञा चन्द्रहास्यको राजतिलक करदेना अब चन्द्रहास्यको अपने मदननामा पुत्रके नाम के पत्र सहित कुन्तलपुर भेजताहूं कि वह राज्यतिलक अंगीकार करादेगा सो चन्द्रहास्यजी पत्र समेत चले और कुन्तलपुरकेनिकट उसीवज़ीरके बागमें ठहरे स्नान पूजा करि भगवत् प्रसाद भोजन करिकै पथिश्रमसे सोगये संयोगवश उसी वज़ीरकी लड़की विषयानामा बागकी शोभा देखने को आई सखियों से अलग होकर जहां चन्द्रहास्यजी सोतेथे तहां पहुंची चंद्रहास्यजीकी शोभा देखतेही तुरन्त आसक्तहोगई और भगवत्से प्रार्थना की कि यह पुरुष मेरापतिहोय फिर जो निगाह उसकी चन्द्रहास्यजी की कमरकी ओर गई तो एकपत्री कमरमें देखकर निकाललेी और पढ़ा अर्थ उसका यहथा कि हे मदन चिट्ठी लेजानेवाले को तुरन्त विषदेदेना जो विलम्बहोगा तो हमारे क्रोधका हेतु होगा वज़ीरकी लड़कीने पढ़कर शोचकिया कि हाय यह महबूब मनोहर वृथा विन अपराध माराजायगा और फिर यह विचार किया कि मेरा बाप बहुत दिनों से सुन्दर पुरुष के ढूंढ़ने में मेरे निमित्तथा और चलतीबेर बहुत शीघ्र विवाह करदेनेका मुझसे वचन देगयाथा सो इसपुरुषको मेरे निमित्त भेजाहै और जल्दी में लिखाहै इसहेतु अक्षर (या) जो विषके पीछे लिखना था सो भूल गया सो अक्षर बनादेना चाहिये सो अपनी आँखोंके काजलकी स्याहीसे बनाकर पत्री चन्द्रहास्यजी की कमरमें रखकर चली आई चन्द्रहास्यजी मदनके पासपहुँचे और पत्रीदी वह बहुतप्रसन्नहुआ और उसी घड़ी चन्द्रहास्यका विवाह अपनी बहिनके साथ करदिया जब वज़ीरने अपने बेटेके पत्रसे यहवृत्तांत सब जाना तो अत्यन्त खिन्नमन व क्रोध युक्त हुआ और दुःखसेदुःखीहो उसी क्षण चलके अपने घरआया अपने लड़के को धिक्कार आदि कहनेलगा मदन उसके लड़के ने उसकी पत्री

आगे धरदी और अपना कुछ अपराध नहीं जो लिखा सो किया वज़ीरने अपने मनमें यह निश्चयकिया कि लड़की विधवा रहै तो रहै पर चन्द्रहास्यका बधकरना उचितहै इसहेतु बधकरनेवालोंको बुलाकर आज्ञादी कि प्रभात समय जो कोई दुर्गाभवनमें आवै उसको मारडालना और चन्द्रहास्यजीसे कहा कि हमारे कुलमें विवाहके पीछे दुर्गापूजन उचित है तुम प्रभात दुर्गापूजनकरआवो वज़ीर दुर्बुद्धीने तो यह उपायरचा और भगवत्‌की यहइच्छाभई कि कुन्तलपुरकाराज्यभी चन्द्रहास्यजीको मिलजावे इसहेतु कुन्तलपुर के राजाके मनमें ज्ञानदिया कि राज्य और शरीर दोनों नाशवान् हैं और भगवद्भजनसे अधिक दूसरा कोई काम नहीं आता सो यह राज्य तो वज़ीरका लड़का चन्द्रहास्य जो कि लायक़ और योग्यहै देना चाहिये और जो कुछ वयक्रम शेषहै सो भगवद्भजन में लगाना उचित है प्रभातको जिसप्रकारसे चन्द्रहास्य दुर्गापूजनको चले तो राजाने मदन जो वज़ीरका लड़काथा उससे बुलाकर कहा कि हम राजतिलक चन्द्रहास्य को देते हैं उसको शीघ्रलाओ वह इस आनंदसे कि राज्य अपनेघरमें आताहै शरीरमें न समाया और चन्द्रहास्य जीके पासआकर उनको तो राजाके पास भेजदिया और दुर्गाभवनमेंपूजा करने को गया राजा ने चन्द्रहास्यजी को तुरन्त राजतिलक करदिया मदन नाम वज़ीरका बेटा जब दुर्गाभवन में पहुँचा तो मारागया और वज़ीर मदन का माराजाना सुनकर शिरपर धूल डालता हुआ उसके शरीर के पास पहुँचकर पत्थरसे शिर मारकर मररहा यह वृत्तान्त चन्द्रहास्य जीने सुना औ दुर्गाभवन में आकर दया और करुणा से विकल होगये पीछे उन सब के जीने के हेतु दुर्गाजी की स्तुति की जब कुछ उत्तर न पाया तो तरवार निकालकर अपने को घात करने को उद्यतहुये दुर्गा महारानी प्रकटहुई हाथ पकड़लिया और कहा कि भ्रष्टबुद्धि शठ दुष्ट सदा तुम्हारे मारने के उपायमें रहताथा कि उस कर्म के फल से पुत्र सहित मारागया अब जिलादेना उचित नहीं चन्द्रहास्यजी ने विनय किया कि सत्य है पर आपको यह भी तो सामर्थ्य है कि उनके मन को निर्म्मल करके भगवद्भक्त करदेवैं कि फिर किसी के साथ दुष्टता न [illegible] [illegible]र्गामहारानी प्रसन्नहुई दोनों को जिलादिया वज़ीर ने जो प्रताप [illegible] [illegible]द्भक्ति और भक्तोंका देखा तो विश्वासयुक्त हुआ और चन्द्रहा[illegible]

चरणों में बड़ी प्रीति से गिरकर भगवच्छरण होगया चन्द्रहास्य जीने तीनसौ वर्ष राज्यकिया भगवद्भक्तिका प्रचार चलाया कि सब देश भक्त होगया जब राजायुधिष्ठिर ने अश्वमेध यज्ञ किया और घोड़ेको चन्द्रहास्यजी ने पकड़लिया तो भगवत् श्रीकृष्ण महाराज ने समझा कि भक्तको कोई जीत न सकैगा तब अर्जुन से मेल कराके घोड़ा छुड़ादिया पीछे चन्द्रहास्यजी अपने बड़े पुत्र को राजतिलक देकर आप राजा युधिष्ठिर केयज्ञमें आनिमिले अब विचार करना चाहिये कि कैसी शिक्षा भक्तों के निमित्तहै पहिले तो प्रतिमानिष्ठाका फल दूसरे यह कि भगवद्भक्त मृत्युसे भी नहीं डरते तीसरे यह कि कोई कठिन आपत्तिके आनेपर भी भगवद्भजन नहीं छोड़ते चौथे यह कि कोई उनके साथ दुष्टता करताहै उसको भी सुखही देते हैं सिवाय इसके यह बात तो विख्यातहै कि भगवत् अपनी प्रसन्नतासे अधिक मानते हैं सो चन्द्रहास्यजी से आप यज्ञके घोड़ेको छुड़ाया जायके मेलकराया बलको कुछ न चलने दिया नहीं तो एक क्षणमें करोड़ों ब्रह्माण्डको सृष्टि और लय करसक्तेहैं॥

कथा नामदेवकी ॥

नामदेव चेले ज्ञानदेवजी के विष्णु स्वामी सम्प्रदायवाले संसार में भक्तिके प्रकाश करने को सूर्यके सदृशहुये बालपन में अपने भक्तिभाव से भगवत्को वश करलिया भगवत्अंशसे उनका जन्म है उसका वृत्तान्त यहहै कि पाण्डरपुर में वामदेव नामे जातिका छीपी भगवद्भक्तथा उसकी लड़की बालविधवा होगई जब बारह वर्ष की हुई तो वामदेव ने भगवत्सेवा पूजनकी शिक्षाकरके कहा कि जो हृदयकी प्रीति होगी तो तेरा सब मनोरथ व चाहना भगवत् पूर्ण करदेगा उस लड़की ने उसी दिनसे अतिभक्ति व विश्वास से ऐसी पूजा अंगीकार करी कि थोड़ेही दिनोंमें भगवत् प्रसन्न होगये यहांतक कि जवानी के आने से जो उसको चाहना कामकी हुई तो वह भी भगवत् ने पूर्णकरी और उस लड़की के गर्भरहगया सारेसंसार व जाति भाई में यहबात विख्यात हुई और लड़की से पूछा कि यह क्या अभाग्यता तेरी है उसने कहा कि तुमने कहाथा कि सबचाहना तेरी भगवत्से प्राप्तहोगी सो जो कुछहुआ वह भगवत्से हुआ वामदेव इस सुखसमाचारसे ऐसे आनंदहुये कि शरीरमें न समाये और जब लड़का उत्पन्नहुआ तो सब धन संपत्तिको उस

के जन्म उत्सवमें लुटादिया नामदेव नाम रक्खा और प्राणसे अधिक प्यारा जाना बेविश्वासी व और अयोग्यों की शंका व सन्देह दूरकरनेके हेतु पुराणोंकी कथा आदिसे अलग भगवत्का वचन स्मरण होआया भागवतके दूसरे स्कंधमें लिखाहै कि निष्काम अथवा कामना अथवा मुक्तिके हेतु मुझको दृढ़भावसे जो सेवन करते हैं तो आप मैं सब कामनापूर्णकरताहूं एकादशमें लिखाहै कि अपने भक्तोंको मुक्तिपर्य्यन्त सब देताहूं संसारी कामनाकीतो कितनी बातहै और इसको अलग रहने देव जब कि भगवत् अपने भक्तोंके हेतु अपना निजधाम छोड़करके चले आते हैं और ऐसे शरीर बनालेते हैं कि जो बुद्धि व विचारमें न आसके तो गो किसी अपने भक्त कामसुखकी चाहना करनेवालेकी कामना पूर्ण करी तो क्या आश्चर्य है जो भगवत्के अवतार व गोपिका वो कुब्जा आदिके चरित्रों पर विश्वास है तो नामदेवका जन्महोना निज भगवत् से सर्वथा सच और युक्तहै कथा संक्षेप जन्महीसे नामदेवजीको भगवत् का प्रेमहुआ जब दोचार वर्षके हुये तो खेल भगवत् आराधनके खेलते अर्थात् भगवतमूर्त्ति बनाकर आभूषण वस्त्र पहिनाकर जिसप्रकार उन का नाना सेवा आरती किया करताथा तब यह कहताथा कि यह भगवत्मूर्त्ति मुझको देदेव और वह बालक जानकर बहाना करदियाकरता एकदिन कहा कि मैं किसी गांव जाताहूं चार दिनमें आऊंगा तुम सेवा पूजा कीजियो जो भगवत्ने तुम्हारा भोग लगाना अंगीकार करलिया तो सेवा तुमको सौंपदेंगे नामदेवजी बहुत प्रसन्नहुये और दिन गिनने लगे नानासे नित्यजाने का दिन पूछा करते और बहुत अपने मन में आनन्द हुआ करते जब वह दिन आया उनका नाना सबरीति भगवत् सेवा की समझाकर चलागया नामदेवजी को सन्ध्याही से प्रेम हुआ और जब गऊके आने में विलम्ब हुआ तो आप वन में जाकर लाये फिर माता ने अनुशासन किया कि दूध पिलाने का समय आगया इसहेतु दूध बहुत शीघ्रता से उष्ण किया और सुगन्ध व मिश्री मिलाकर बड़ेप्रेम और उत्साह से कटोरा भगवत् के आगे लेगये पर यह डर मन में रहा कि मुझ से कुछ अपराध न होगया हो भगवत् के सामने हाथ जोड़कर बड़ी दीनतासे विनय किया महाराज दूधहै मुझ को अपना दास जानकर पानकीजिये और अपने दासको परमआनन्द

दीजिये दूध न पिया नामदेवजी लड़के थे यह बात जानते थे कि भग-वत् भी जैसे सब लड़के दूध पिया करते हैं पीते हैं इस हेतु भगवत् के चुप रहने से बहुत उदासहुये और सामने से अलग होकर बहुत शोच करने लगे जब निराशहुये तो रोने लगे और कहा कि महाराज अच्छे प्रकार गरम किया है मिश्री बहुत डाली है जब न पियें तो रोते रोते विना भोजन किये भूखे प्यासे पड़े रहे इसीप्रकार दो दिन बीते तीसरे दिन कि उसके भोर उनका नाना आनेवाला था यह विकलता हुई कि दूध न पियें तो सेवा मुझको न मिलैगी इस हेतु दूध बनाकर सामने लेगये कईबार विनय किया नहीं माने तब छूरी निकालकर अपना गला काटने पर प्रकर्षहुये भगवत् ने जो यह दृढ़ विश्वास देखा तो एक हाथ से उनका हाथ पकड़लिया और दूसरे हाथसे कटोरा दूध का उठा-कर पीने लगे जब कटोरे में दूध थोड़ा रहा तब नामदेवजी ने कहा नित्य भर भर कटोरा पीते हो मैं तीनि दिन का भूखा हूं कुछभी तो छोड़ो भगवत् हँसे अपना अधरामृत युक्त महाप्रसाद दिया निश्चय स्कन्दपुराण का वचन है कि भगवत् न काष्ठ की मूर्त्ति में हैं न पाषाण की न दूसरी जगह केवल इस पुरुष के विश्वास में विराजमान हैं इस हेतु विश्वास दृढ़ चाहिये भोर को नामदेवजी का नाना जब आया तब सब वृत्तान्त सुना तो परम आनन्द में मग्न होगया और कहा कि हम को भी तो दिखलाओ नामदेव जी उसी प्रकार कटोरा दूध का सँवार करलेगये कुछ विलम्ब हुआ तो वह चाकू दिखलाया कहा कि मेरे पास है भगवत् ने तुरन्त पान किया वाह वाह भगवद्वत्सलता और प्रेम की रिझवारता कि जिसको वेद नेति नेति कहते हैं और शिवादिक जिस हेतु भांति भांति की समाधि लगाते हैं वह अपने भक्तों की भक्ति और प्रीति के ऐसा वशमें है कि उनके मनोरथ के अनुकूल सब कुछ करताहै इस बात की ख्यात होगई बादशाह ने बुलाकर कहा कि तुम को ईश्वर मिला है सो हमको भी दिखाओ अथवा अपनी सिद्धाई दि-खादेव नामदेवजी ने कहा हमारे में सिद्धाई होती तो छीपीकी आजी-विका क्यों करते और दिन भरते जो कोई साधु सन्त आजाता है आध सेर आटा बांट खाते हैं कि उसके प्रभाव करके आपने बुलालिया है बादशाह बोला कि तेरी कपट की बातें कुछ नहीं सुनते गऊ मरी है इस

को जिलादेव नहीं तो तुमको क़तल करदेंगे नामदेवजी ने एक विष्णु पद बनाया पहिला तुक यह है ॥ विनती सुन जगदीश हमारी ॥ तुरन्त सुनतेही उस विष्णुपद के गऊ जी उठी और बादशाह चरणों में पड़ा कहा कि द्रव्य व गांव परगना जो आज्ञा हो नामदेव जी बोले कि हमको कुछ प्रयोजन नहीं बिदामात्र का प्रयोजन है बादशाह ने एक पलँग सोने का ज़ड़ाऊ भेंट किया उसको मूँड़पर रखकर चले और बादशाहके भृत्यलोग जो साथ आये थे सबको बिदा करदिया राहमें एक नदी थी उसमें पलँग को डालदिया बादशाह ने सुनकर उसी पलँग को मांग भेजा इस बहाने कि उसनमूने का बनवाया जायगा नामदेवजी ने उस पलँग से उत्तम उत्तम पलँग अगणित नदीसे निकालकर डालदिये और आदमियों से कहा कि अपना पहिँचानकर लेजाव तब तो बादशाहकी बुद्धि गई आकर चरणों में पड़ा नामदेवजी ने कहा कि फिर किसी साधु को क्लेश न देना और न कभी हमको बुलाना एकदिन पण्डरपुरके ठाकुरद्वारेमें दर्शनकोगये बड़ी भीड़ लोगोंकी देखकर दर्शनमें दुचिताई रहे यह विचार करके जूती कमरमें बांधकर मन्दिरमें गये संयोगवश किनारा जूती का किसी ने देखलिया मारते मन्दिर से बाहर करदिया नामदेव जी मन्दिर के पीछे बैठरहे और भगवत्से विनय करी कि दण्ड किया तो उचित किया पर मुझको आपके सिवाय कुछ ठिकाना नहीं और न कुछ चाहनाहे जो दर्शन और लोगोंको है तौ कान मेरे कीर्त्तन की ओर हैं यह विनय करिके कीर्त्तन करने लगे और विष्णुपद व्यंग लिये और अपनी हिनाई को भी गावा पहिली तुकयह है ॥ हीन है जाति मेरी यादवराय ॥ भगवत् सुनतेही करुणा से विकल होकर मन्दिर को जड़ से फेरिके द्वार उसका नामदेवजी की ओर करदिया यह चरित्र देखकर सब चकित होरहे और महन्त आदि ने चरणों में पड़कर अपराध क्षमा कराया अब तक द्वार उस मन्दिर का दक्षिण मुँह है एक दिन अचानक नामदेव जी के घर आग लगगई तो जो वस्तु घरसे अलग थी आग में डालने लगे और विनय किया कि सब को अंगीकार करिये भगवत् बहुत हँसे और कहा कि क्या आगमें भी मुझको जानता है कहा कि यह घर आपका है दूसरा कौन स्पर्श कर सक्ता है भगवत् ने प्रसन्न होकर आप नवीन छप्पर ऐसा

सुन्दर छादिया कि किसी ने न देखा था जब लोगों ने देखा तब पूछा कि किसने यह छायाहै और मजूरी क्या लेताहै नामदेवजी ने कहा मजूरी बड़ी कड़ी है अर्थात् तन मन चाहता है औ पहिले यह मजूरी लेलेता है तब दिखाई देता है पण्डरपुर में एक साहूकार ने तुलादान किया सारे नगर में सोना बहुत बांटा किसी के कहने से नामदेव जी को भी बुलाया नामदेवजी ने दो वार कहला भेजा हमको द्रव्य का प्रयोजन नहीं तीसरी वार गये साहूकार ने कहा कि कुछ थोड़ा आपभी अंगीकार करें कि मेरा भलाहोय नामदेवजी ने मन में शोचा कि इसका गर्व धनका दूर होगा तब भला होगा इसहेतु एक तुलसीदल पर (रा) अक्षर कि भगवत् का नाम है लिखकर उसके बराबर सोना मांगा पहिले साहूकार ने जैसे बलि वामनजीसे कहा उसीप्रकार बोला पीछे घरका व औरों से मांग मांग कर धरा बराबर न तुला तब लज्जित हुआ नामदेव जी ने विचारा कि धन का गर्व तो दूर हुआ पर पुण्य इसने कियाहै तिसका गर्व दूर किया चाहिये बोले कि जो तूने अपनी अवस्था भर पुण्य किया है सो भी संकल्प करदे क्या जानैं बराबरहोजाय साहूकारने वह भी संकल्प करदिया जब तराजूमें बराबर न तुला तो संकुचित होकर कहनेलगा कि जो है सोई लेजाव नामदेव जी बोले अरे अज्ञानी यह धन हमारे कौन काम का है एक भगवद्भक्ति धन चाहिये कि जिसके आधीन सबदेवता और सब ऐश्वर्य्य दोनों लोकके हैं साहूकार लज्जितहोकर विश्वासयुक्त भगवद्भक्त होगया इसके पश्चात् भगवत्ने एकादशी व्रतकी परीक्षा के हेतु एक अतिदुर्बल ब्राह्मण के रूपसेआय नामदेवजी से भोजनमांगा उन्हों ने एकादशी व्रत जानकर न दिया ब्राह्मण बोला भोजन विना अब मेरा प्राण निकला चाहता है शीघ्र भोजन देव नामदेव जी कहैं कि आज एकादशी को न देंगे इसी हठाहठीमें दोनों झगड़पड़े शोरगुल हुआ लोग बटुरआये सबने कहा रसोई बनवायके खिलादेव नामदेव जी ने न माना संध्याके समय ब्राह्मण मरगया लोगों ने कहा नामदेवजीको हत्याहुई नामदेवजीको कुछ भय न था चितामें ब्राह्मणकी लोथ समेत बैठकर लोगों से कहा आग लगादेव इतने में भगवत् हँसपड़े विश्वास पर नामदेवजीके प्रसन्नहुये लोग यह चरित्र देखकर नामदेवजी के चरणों में पड़े नामदेव जी के

घर पर एकादशी को जागने में हरिभक्तों को जलतृषा हुई बावली में एक बड़ाप्रेत रहता था उस डरसे कोई न जासका नामदेवजी कलश लेकर आधीरात को वहां गये वह प्रेत विकराल व भयङ्कर रूपआया नामदेवजी ने यह पद ताल लेकर किया तुक उसका यहहै॥ ये आये मेरे लम्बक नाथ॥ धरती पांव स्वर्ग लौ माथो योजन भर २ हाथ॥ भगवत् उसी भूतमें प्रकट हुये और वह भूतभी नामदेवजीकी कृपासे भगवद्धाम को पहुँचा नामदेवजी एकादशी के जागरणमें ऐसे दृढ़प्रेमी शिरोमणि हुये कि अबतक रीति है कि जहां जागरण एकादशीका होता है पहिले नामदेवजी का पद मंगलाचरणमें गाते हैं॥

कथा अल्हजीकी॥

अल्हजी परम भगवद्भक्त हुये तीर्थ यात्रा में कहीं एक राजा के बागमें उतरे सेवा पूजाको किया आमके नीचे बागवान से आम मांग भगवत् को भोग लगानेको उसने कहा जो आम खायेविना नहीं रहाजा-ताहै तो तुम तोड़लेव बस तुरन्त आमकी डाली सब ऐसी झुकगईं कि आम सिंहासनपर व भूमिपर आयगये आम ठाकुरजी को भोगलगाया उस बागवान ने जाकर राजासे यह चरित्र कहा राजा दौड़ाआया च-रणों में पड़कर विनय किया आपके चरणों के प्रभाव से मैं और यह बाग व सब देश पवित्रहुआ अब कुछ कृपा विशेष करना चाहिये अल्ह जीने दया करिके उसको भगवच्छरण व भक्त करदिया जानेरहो भग-वद्भक्ति और भक्तोंका यह प्रतापहै कि शिव ब्रह्मादिक जिनके चरणोंमें अपना मस्तक झुकाते हैं जो एक वृक्ष झुका तो क्या आश्चर्य्य है॥

कथा पृथ्वीराजकी॥

पृथ्वीराज राजाबीकानेर बेटा कल्याणसिंहके भगवद्भक्त हुये कवित्त दोहा भाषामें श्लोक संस्कृत में रचना करिके अतिप्रेम से कीर्त्तन किया करते थे पिंगल इत्यादि के बड़े ज्ञाता व काव्य बड़ीललित उनकी थी भगवत् सेवामें बड़े निष्ठथे और त्यागी इन्द्री सुखके ऐसेथे कि अवस्था भर स्त्रीकी ओर नहीं देखतेथे कहीं परदेशमें संयोगवशगयेथे तो मंदिर में सेवा मूर्त्तिका ध्यान मानसी करते थे दोदिन ध्यानमें वह स्वरूप न देखा तीसरे दिन दर्शन मानसमें हुआ पर वृत्तांत बूझनेके हेतु सांड़नी दौड़ाई तो राजमन्त्रियोंने पत्री लिखी कि मन्दिर की मरम्मत होने से

दोदिन श्रीजी दूसरे स्थानमें थे मन्दिरमें नहीं गये. राजाका तब सन्देह दूरहुआ और बड़े आनन्दहुये राजाने अपने मनमें मथुराजी में देह त्यागनेका प्रणकिया था इस वृत्तान्तको बादशाहने सुनकर द्वेष करिकै उनको काबुलकी लड़ाई पर तैनात करदिया राजाको इस यात्रासे एक एक दिन कल्पके समान वीततेथे क्योंकि अवस्था जीने की थोड़ी आय रहीथी जब दिन उनके प्रणका निकट आया तो भगवत् ने उसदिन राजा को जनायदिया तुरन्त साँड़नी पै वैठकर मथुराजी में आये और प्रण पूर्णहुआ शरीर त्यागकरके परमधामको पहुँचे जयजयकी ध्वनि सारे संसारमें पहुँची और निर्मलयश भगवद्भक्ति और भक्तोंका संसारमें वि- ख्यातहुआ एक वृत्तान्त राजाका और भी तीसरे तर्जुमा करनेवाले ने लिखाहै कि एकबेर विदेशयात्रामें संयोगवश जङ्गल में वासहुआ और वहां लश्करको कुछ सामा खानेपीने की न मिली भगवत् ने भक्तवत्स- लता करिकै एक नगर बड़ाभारी प्रकट करदिया कि सब प्रकारसे सुख सारे लश्करको हुआ ॥ कथा धनाभक्त की ॥

धना जातिके जाट परमभक्तहुये उनके भक्त होनेका वृत्तान्त यहहै कि जब लड़के थे तब उनके घर एक ब्राह्मण भगवद्भक्त आया, भगवत्की सेवा पूजा करताथा धनाभक्त ने उससे कहा कि मूर्त्ति हमको भी देव कि जैसी तुम सेवा पूजा करतेहो हमभी करें पहिले वहाना किया जब हठदेखा तो एक छोटासा पत्थर काला देदिया धनाजी ने बड़ी प्रीतिसे शिर व नेत्रों से लगाया सेवा प्रारम्भ की पहिले आप स्नानकिया और फिर भगवत् को स्नान कराकर तालाबकी मिट्टीका तिलक लगाया और तुलसीदल के स्थानपर हरीपत्ती चढ़ाई और बड़ीप्रीति और हर्षसे साष्टांग दण्डवत् की जब उनकी माता रोटीलाई तो भगवत् के आगे रखकर और आंखै वन्दकरके बैठगये बड़ी देरतक बाट जोहतेरहे कि भगवत् भोग लगावैं पर जब न खाई तब उदास व दुःखित होकर बारबार हाथ जोड़े तब फिर लड़कई हठ करके बहुत प्रार्थना किया तौभी न भोजन किया तो रोटी को तालाबमें डालदिया और आपभी वेअन्न जल रहगये कईदिन इसी प्रकार वीते और भूख प्याससे विकलहोकर मरनेके निकट पहुँचे भगवत् को द्रवहुआ प्रकट होकर रोटी खाना प्रारम्भ किया जब आधा भोजन किया तब धनाजी बोले क्या सब तूही खायजायगा कुछ मुझकोभी देगा

के नहीं भगवत्ने हँसकर बचीरोटी धनाकोदी इसीप्रकार नित्यकी व्य-वस्था होगई धनाजीने जो परम मनोहररूप भगवत् का देखा तो ऐसी प्रीति होगई कि एकक्षण उसरूपको ध्यानमें अथवा प्रकटमें न देखें तो बेचैन होजाते भगवत्ने देखा कि जिसकी रोटी वेपरिश्रम खाते हैं उसकी टहलभी कुछ कियाचाहिये कि विना परिश्रम किसीकाखाना अच्छीबात नहीं सो धनाभक्तसे पूंछकर गऊ चुगाय लायाकरते एकबार वही ब्राह्मण आया सेवा पूजा धनाको करते कुछ न देखा कारण पूंछा धनाजीने कहा कि महाराज भलीपूजा देगयेथे कि कितने दिनों मुझको भूंखोंमारा अब बड़ी कठिनसे ऐसा सीधाहुआ है कि गायतक चुगायलाता है ब्राह्मणको आश्चर्य्यहुआ कहा कि हमको भी दिखला धनाजीने ब्राह्मणकोभी द-र्शन कराया वह ब्राह्मणभी कृतार्थ होगया औ धनाभक्तजी भगवत् की आज्ञासे काशीजी में रामानन्दजी से मन्त्र उपदेश लेकर गुरूकी आज्ञाके अनुसार घरमें आयके साधुसेवामें लीनरहे एकदिन खेत वोनेको गेहूं लियेजाते रहे साधु आयगये वह गेहूं साधुसेवामें लगादिये माता पिता के भयसे खेतको जैसा वोनेपर वनाके छोड़देतेहैं वैसाहीकरके छोड़दिया भगवत्ने विचारके सबसे अच्छा उस खेतको जमाया कि सबलोग ब-ड़ाई करनेलगे धनाजी ने लोगों की बड़ाईकरना खेतके जमनेकी हँसी ठट्ठा समझा एकदिन जो खेतकी ओरगये तो कहना सबका सत्य देखा भगवत्की कृपासे वारवारजाके प्रेम व आनन्दमें डूबगये और अधिक भगवत् और भक्तोंकी सेवामें लौलीनहुये और राजाइन्द्र तू कैसा ज्ञान-वान् व बुद्धिमान्है कि वज्रके वनानेके हेतु दधीचिऋषीश्वरको दुःख दिया मेरे इस मन अभागे को क्यों न उठाकर लगाया कि कठोर वज्रसे भी कठोरहै जो यह कथा धनाभक्तकी कहकर और करुणा और भक्तवत्स-लता और रिझवारता परमदयालुकी सुनकर तनकभी नरम नहीं होता॥

॥ कथा देवाकी ॥

उदयपुर के निकट एक मन्दिर रूपचतुर्भुज स्वामीकाहै वहांका पु-जारी देवानाम ब्राह्मण वृद्धहुआ एकदिन जब रानाउदयपुरका गद्दीका मालिक आयगया और देवा रातको शयनके समय भगवत्को शयन कराके माला फूलोंकी उतारी तो अपने शिरपर लपेटकर कपाट मन्दिर के बन्द करचुकेथे देवाने वह माला उतारकर जब राना मन्दिरमें पहुँच-

गया रानाके गलेमें डालदी संयोगवश एक केश सुपेद उस माला में रानाको देखपड़ा देवा पुजारीसे पूंछा क्या भगवत्के केश श्वेतहोगये देवाने कहा हां महाराज सुपेद होगये रानाने कहा हमभी प्रभात देखेंगे यहकहकर चलागया देवाजी के मुखसे जो यहबात निकलगई तो भय युक्त होकर सिवाय भगवत्के और दूसरा रक्षक न देखा बहुत दुःखीहो-कर कहनेलगे कि हे हृषीकेश हे स्वामिन् आपकी भक्ति मेरेमें है न सेवा पूजामें विश्वास पर आपके चरणकमलों के सिवाय कोई शरण व रक्षा का स्थानभी नहीं कि वहां जाऊं अब मेरी लज्जा आपहीको है चाहो सो करो भगवत् यह विनती अपने भक्तकी सुनकर करुणायुक्त होकर उसीक्षण अपने श्रीअंगपर श्वेतकेश धारण करलिये प्रभात को देवाने मन्दिरके कपाट खोले और श्वेतकेश श्रीअंगपर देखतेही भगवत् के करुणा व दयालुताके प्रेममें ऐसे बेसुधि होगये कि कुछसुधिबुधि शरीरकी न रही पीछे सुधिभई भगवत्के करुणा दीनवत्सलता आदि गुणोंको और अपनी विमुखता को शोचते भक्ति और भावमें छकेहुये भगवत् की महिमा अपने मनमें वर्णन कररहे थे कि राना आया और भगवत् के शरीरपर केश सुपेद देखकर ध्यानमें आया कि इस ब्राह्मणने किसी के बाल लगादिये हैं परीक्षाके हेतु एककेशखींचा भगवत्को क्लेशपहुँचा और नासिकाको चढ़ाई फिर वह केश टूटगया और रुधिरकी धार इस वेगसे निकली कि रानाके कपड़ोंतक पहुँची राना यह वृत्तान्त देख मूर्च्छाखाकर गिरपड़ा एकपहरतक अचेतपड़ारहा फिर उठकर देवाके चरणों में पड़ा और क्षमा करने अपराध के निमित्त विनय व प्रार्थना की तब आज्ञा हुई कि अबसे रानाके वंश में जबतक कुवँर रहे तबतक दर्शनको मन्दिर में आवै और जबसे राजतिलक होय तबसे मन्दिर में न आवै जावै सो अबतक यहरीति वर्त्तमान है ॥

कथा दो लड़कियोंकी ॥

एक लड़की किसी जमींदार की और दूसरी राजाकी भगवत्कृपा के प्रभाव करिके उस पदवी और भक्तिको पहुँची कि जिनकी कथा अब तक भक्तोंके मुखसे होती है वृत्तांत यह है कि एकबेर राजाके गुरू आये थे दोनों लड़कियोंने भगवत्मूर्त्ति मांगी उन्होंने बालापन देखकर एक टुकरा पत्थरकादेकर नाम शिलपली बतलादिया और इतना उपदेशकर

देया कि मन लगाकर सेवा पूजा करतीरहो संसार समुद्रसे पार होजा-ओगी वे दोनों बड़भागिनी अत्यन्त विश्वास और प्रेमसे सेवा पूजा करनेलगी यहांतक कि भगवत्‌कारूप उन्होंके हृदयमें प्रकाशित हुआ इतनीकथा दोनोंकी एकट्ठी वर्णनहुई अब अलग अलग लिखीजाती है ज़मींदारकी लड़कीका चचा अपने भाई से अर्थात् उस लड़की के बाप से शत्रुता रखताथा वह उसपर चढ़आया गांवको लूट लेगया उसलूटने में उस लड़कीकी सेवाकी मूर्त्तिभी गई वह लड़की अत्यन्त विकल भई व सारा संसार उसको अँधियालाहोगया और जीमें प्राण पीड़ाहोगई जब सोना, खाना, पीना सब छूटगया तब सबके कहने से अपने चचा के पास जहां वह अपने चौवारे में बैठाथा और गांवके सब आदमीभी थे वह लड़की गई और मूर्त्तिमांगी वह बोला पहिचानकर लेजा किसी ने कहा तू टेरदे जो ठाकुरको तेरेसाथ प्रीतिहोगी तो आप चलेआवेंगे वह लड़की कि रोते रोते आँखें सूज आईथीं व गला पड़गयाथा बड़े कष्टसे दीनहोकर पुकारी हे शिलपली महाराज अपनी दासी को क्यों छोड़ आये कहांहो भगवत् सुनतेही शब्दके तुरन्त आकर उस बड़भागिनी की छाती से लिपटगये और उसको प्राणदान देकर जिवाय लिया और दोनों गाँववालों को निश्चय अपनी भक्तिका किया और राजाकी लड़की भगवत्‌प्रेम में ऐसी रँगिगई कि रंगीन होगई परन्तु एकआदमी भगवद्विमुख के साथ उसका विवाह होगयाथा वह लेजाने को आया उसको बड़ीचिन्ता भगवत्‌सेवा कीहुई नितान्त जब माताने विदाकरदिया अपने प्राणप्रीतम को डोलामें बैठालिया और कोईलौंड़ी बांदीको साथ न लिया राहमें वह विमुख पासआया और बोलने बोलानेको चाहसे बोलाया वह कुछ न बोली तब उसने कहा तुम क्यों नहीं बोलती हो और तुमको कौन दर्द है कि उसका उपाय कियाजाय उस लड़की ने उत्तर दिया कि तुमको चाहना हमसे बोलने की है तो भगवद्भक्ति अंगीकारकरो नहीं तो हमको स्पर्श न करो उसको क्रोधआया और पिटारी भगवत्‌सेवाकी नदी में डाल दी यह लड़की अति व्याकुल व स्वामी के वियोग से दुखित हुई और अन्न, जल विष होगया उस विमुख ने उसको प्रसन्न करने को अनेक उपायरचे पर कुछकाम न आया अपने घर में आया तब राहका यह वृत्तान्त सब जनादिया

स्त्रियों ने बहुतभांति समझाया और सासु अपने हाथसे भोजन कराने लगी परन्तु उस बड़भागीका मन भगवच्चरणों में दृढ़ लगरहाथा किसी की कुछ न सुनी और न कुछ खाया पिया जब सब उपाय करके सासु इत्यादि हारीं तब सब उसी नदीपर आये जहां पिटारीको पानी में डाल दिया था और वह बड़भागी करुणासे भरीहुई रुदन करतीहुई पुकारी कि हेस्वामी शिलपली महाराज कहां हौ आप दासीसे किसहेतु रूठगये हौ जो बहुत पानी में नहाना आपको था तो मैं गंगाजी में स्नानकराती अब कृपाकरो दर्शन देव भगवत् अपने भक्तके पराधीन ऐसे हैं जैसे कामी पुरुष सुन्दरी नायका के आधीन व वशीभूत होता है वह शब्द करुणा से भराहुआ सुनकर तुरन्त अपनी वियोगिनी विरहिनिकोदर्शन देकर प्राणको रखलिया सबको भक्तिका विश्वासहुआ और भगवद्भक्ति व साधुसेवा सबकोई करके कृतार्थ होगये॥

कथा सन्तदासजी की॥

सन्तदास जी निवाई गांवमें विमलानन्दके प्रबोधनवंशमें परमभक्त हुये जिस प्रकार राजापृथु ने अपनी स्त्री समेत भगवत्सेवा करी उसी प्रकार सन्तदास जी ने करी अपनी वाणी की रचना में भगवत् और भक्ति और भक्तोंका प्रताप बराबर लिखा और काव्य उनका सूरदास जीके बराबर था भगवत् के जन्म व कर्म्म व लीला व चरित्रोंकोऐसी मधुर व ललित वाणी में बनाया कि निश्चय मन नरम होहोकर भगवच्चरणों में लगजाता है एकबेर उनके मनमें यह आया कि भगवत्को छप्पन प्रकारका भोग लगानाचाहिये सो ध्यान में भोग लगाया जगन्नाथरायजी ने अपने सच्चेभक्तका मानसीभोग अंगीकार किया और पुजारियोंका धरा थाल भोग न लगाया और राजाको स्वप्नमें आज्ञाकी कि सन्तदास के घर हमारा नेवता था उसने ऐसा भोजन कराया कि स्वादिष्ट व मधुरता से बहुत खागये कि भूख नहीं है राजाने सन्तदास जी की भक्ति व प्रतापका विश्वास किया और भक्तोंको भगवद्भक्ति और भावकी वृद्धिहुई॥

कथा साखीगोपाल की॥

दो ब्राह्मण गौड़देश के रहनेवाले उस में एकबूढ़ा व कुलीन और दूसरा जवान और सामान्य कुल का तीर्थयात्रा में एक साथ रह जहां तहां दर्शनकरके जब वृन्दावन में आये तो बूढ़ा ब्राह्मण बीमार होगया

जवान ब्राह्मण ने उसकी सेवा को अच्छे प्रकार से किया जब आराम हुआ तो उसने प्रसन्न होकर व्याह करदेने अपनी लड़की का वचन दिया और जवान ब्राह्मण ने बहुत कहते सुनते अंगीकार किया साक्षी चाहा तो वृद्धब्राह्मण ने श्रीगोपालजी को साक्षी दिया जब दोनों अपने घर आये तब उस युवा ब्राह्मण ने कहा कि वचन पूरा करो तो स्त्री व पुत्रने बूढ़े ब्राह्मण को अपनी कुलीनता व प्रतिष्ठा के कारणसे न माना तब पंचाइत बटुरी पञ्चों ने साक्षी मांगा उसने उत्तर दिया कि जहां गोपालजी साक्षी हैं तो और साक्षी का क्या प्रयोजन है पञ्चों ने कहा कि जो गोपाल जी आयकर गवाही देवैं तो निस्संदेह विवाह होजावे और इस बात का लिखना भी होगया वह ब्राह्मण वृन्दावन में आया श्रीगोपाल जी के मन्दिर में जाकर चलने के निमित्त निवेदन किया कितने दिनतक इसी आशा में फिरता रहा जब भगवत् ने अच्छे प्रकार विश्वास मनका देख लिया तब बोले कि प्रतिमा भी कहीं चलती है तब ब्राह्मण ने विनय किया कि जो चलती नहीं तो बोलती कैसी है योगेश्वर भगवान् निरुत्तर हुये और साथ होलिये पर उस ब्राह्मण से कहने लगे कि जब तू पीछे फिरकर देखेगा उसी जगह खड़ा हो जाऊंगा उसने कहा कि जो ऐसा ठग हो कि हजारहों उपाय और परिश्रम से भी महादेव इत्यादि के मन में से भागजाता है और जिसने गोपियों का माखन और दही चुराकर अच्छे प्रकार से खाया और उन्हों ने पकड़ने का मनकिया फिर भागगया उसका कैसे विश्वास होवे कि पीछे पीछे आताहै या नहीं इस हेतु साथ साथ चलना चाहिये भगवत् ने हँसकर कहा कि हमारे नूपुरकी ध्वनि तेरेकानमें पड़ती रहैगी उसने मानलिया जब घरके समीप पहुँचा तो ब्राह्मण को कामनाहुई कि अबतो रूप अनूप को आँखभर देखलेना चाहिये सो इस चाहना में प्रबंध की बात को भूलगया और पीछे फिरकर देखा तो भगवत् वहीं खड़े होगये और ब्राह्मण आज्ञापाकर गाँवमें गया वृत्तान्त आवने आप श्रीगोपालजी महाराज का कहकरके पंचोंको लेआया और भगवत् ने दोनों ब्राह्मणों में जो प्रबंध थासो कहदिया सबको भगवत् और भक्ति और भक्तों का विश्वास हुआ और उस ब्राह्मण का विवाह बड़े हर्ष से हुआ अबतक श्रीगोपालजी महाराज घुड़दानगाँव में श्रीजगन्नाथराय

जी के मन्दिर में पांचकोशपर विराजमान हैं और नाम साखीगोपाल विख्यात है जो कोई जाता है दर्शन पाता है॥

कथा सीवांकी॥

सीवांबेटा सांगन राजा अपनी कावा जाति के द्वारका देश में परम भक्तहुये यद्यपि कामध्वजजी बड़े त्यागी विख्यात हैं परन्तु यह राज्यकाज करते हुये और सब पदार्थ ऐश्वर्य्य पायके कामध्वज से अधिक त्यागी मन से थे वीर व उदार व पराक्रमी ऐसे थे कि भगवत्की सहाय करी वृत्तान्त यह है कि अजीजखां नामी बादशाही नौकर बड़ा कटक लेकर द्वारकापर चढ़गया रनछोरजी के मन्दिर और पुरी में आग को लगा दिया और लोगोंपर नानाप्रकार का उत्पात प्रारंभ किया भगवत् ने सीवां से सहायता चही सीवां ने कुछ सवारों समेत द्वारका में पहुँच कर सबों का वध किया बड़ा युद्ध करा अजीजखां को यमलोक में पहुँचाय के आप भगवत् लोकमें वासकिया॥

कथा सदनकी॥

सदनजी जातिके कसाई परम वैराग्यवान् भक्तहुये जिसप्रकार सोना कसौटी से अवगुण रहित होजाताहै इसीप्रकार सदनजी ने पिछले जन्मों के पाप दूरकरदिये मांस औरों से मोल लेकर बेंचा करते थे हिंसा नहीं करते थे शालग्रामकी मूर्त्ति पासथी उसीसे सेर अथवा मन जो चाहताथा तौलदेते थे एक वैष्णव ने देखकर मनमें कहा कि यह मूर्त्ति ऐसी वृत्तिवाले के पास कहां उचित है इसहेतु सदनजी से मांगी उन्होंने तुरंत देदी साधुको स्वप्नमें कहा कि जहां से लाया तहांहीं पहुँचा दे साधु ने कहा कि महाराज कसाई के यहां आपका निवास अयोग्य है तब आज्ञाहुई कि हमको उससे बड़ी प्रीति है हमको पलरेपर रखता है तौ हम झूला झूलते हैं व मोलकी जो जो बात चीत करता है सो हम कीर्त्तन मानतेहैं साधु ने जाकर सदनजी से सब वृत्तान्त कहकर शालग्राम की मूर्त्तिको देदिया सदनजी घरबार त्यागकर उसमूर्त्तिको शिरपर रखके जगन्नाथरायजी को चले राह में कहीं एक स्त्री सदनजी को सुन्दर व युवा देखकर आसक्त होगई अपने यहां टिकाया अच्छा भोजन कराया रातको कहा कि हमको अपने साथ लेचलो उन्हों ने कहा कि मेरी गर्दन काटडालो तब भी यह नहीं होगा उसने कुछ और ही समझकर

तुरन्त घरमें जाकर अपने पतिका शिर काटकर फिर आकर वृत्तान्त कहा कि अब बेखटके तुम साथ ले चलो सदनजी ने कहा कि ऐ मतिहीन यह हमसे कदापि न होगी उसने शोर किया कि इस आदमी को साधु जानकर टिकाया सो मेरे पतिका शिरकाटकर हमको साथ लेजाने को कहता है सदनजी पकड़कर हाकिम के यहांगये पूंछागया तब सदन जीने कहा हां हमसे अपराधहुआ हाकिम ने हाथ सदनका कटवादिया ऐसे कष्टमेंभी सदन अपने पूर्व पापका फल समझकर भगवत् के ध्यान स्मर्णसे आनन्दरहे व जगन्नाथजीकोचले जगन्नाथराय महाराज प्रसन्न होकर निज सवारी की पालकी सदनजीके निमित्त भेजी पर सदन जी मर्य्यादको देखकर न चढ़े जब सब ने बहुत कहा तब आज्ञा भगवत्की उलंघ करना उचित न जानकर सवार होके श्रीदरवार में पहुँचे और भगवत् के दर्शन को पाकरे कृतार्थ अपने आपको जानकर दण्डवत् किया उसीक्षण हाथ जैसेथे वैसेहोगये और सब दुःख जन्मान्तरके दूर होगये निश्चय करके भगवद्भक्ति का ऐसाही प्रतापहै सो महाभारतमें भगवत् का वचन है कि जिसको मेरी भक्ति नहीं और चारोंवेद पढ़ाहो वह हमको प्यारा नहीं और जो कोई मेराभक्त है और यद्यपि वह चांडाल भी है पर हमको अत्यन्त प्याराहै और वही पूजा योग्यहै और एकादशस्कन्ध में भगवत्नें उद्धव से इसको श्लोककी भांति कहा है ॥

कथा कर्म्मानन्दजीकी ॥

कर्म्मानन्दजी जातिचारण रजवाड़े में भगवद्भक्त औ वैराग्यवान्हुये काव्य उनका ऐसा प्रभावयुक्त है कि कैसाही कठोर चित्तहो पढ़सुनकर द्रवीभूत होजाताहै उन्होंने संसारको असार व अनित्य जानकर त्याग किया और तीर्थयात्राको चले भगवत्सिंहासन शिरपर और हाथ में एकछड़ी लेली जहांकहीं टिकते वह छड़ी धरतीपर गाड़देते और बटुवा शालग्रामजी का उसीकी शाखापर झूलेके भांति विराजमान करदेते एकवेर वह छड़ीभूलगये चित्त भगवच्चरणों में था इसकारण राह में भी सुधि न हुई टिकान्तपर पहुँचे जब प्रयोजन भगवत् के विराजमान करने का हुआ तब स्मरण हुआ और अत्यन्त प्रेम से कहनेलगे कि झाड़ू देनेवाला व पानी भरनेवाला व रसोई व सेवा करनेवाला व सवारी देनेवाला निश्चय करिकै यह दास है क्या जो कार्य्य कि आपको

अधिकार है वह भी इससेवक को सौंपागया अर्थात् अन्तष्करण के प्रेरक तो आप हैं छड़ी भूलगई न स्मरणहुआ तो विचार करलें कि इसमें दोष किसकाहै भगवत्ने जो बोलन प्रेमयुक्तिकी सुनी तो प्रसन्न हुये व तुरंतछड़ी को मँगादिया ॥

कथा कूल्हअल्हकी ॥

कूल्ह व अल्ह दोनों भाई रजवाड़ेमें हुये कूल्हभाई बड़े आदिसे भगवद्भक्त व वैराग्यवान् व त्यागी व भगवत्रूप माधुरी के ध्यान में मग्न और भगवच्चरित्र और गुणोंके कीर्त्तन करनेवाले हुये व अल्हजी छोटे भाई मद्यमांसके पीनेखाने में रहकर वहुतसे राजाओं के यशके कवित्त बनाया करते और कभी घनाक्षरन्याय भगवच्चरित्र का भी कीर्त्तन कर पर बड़े भाईकी आज्ञामें रहतेथे एकदिन बड़ेभाईने कहा कि यह मनुष्य जन्मदुर्लभ वृथाजाताहै और यह संसार अनित्यहै उचितहै कि द्वारका जीमें भगवत्के दर्शन करआवें सो दोनों भाई द्वारकामें आये कूल्ह बड़े भाई ने अपने बनाये कवित्त और छन्द भगवत् रनछोरजीकी भेंटकिये और अल्ह छोटे भाईने अतिलज्जासे शिर नीचेकरके आंखों में आंशू भरलिये और अपने अपकर्म्मोंको शोचके विकलचित्त होकर दोचार कवित्त पढ़े भगवत्ने जो अत्यन्तप्रीति हृदयकी देखी और अपने पाप कर्मोंकी लज्जासे लज्जित देखा तो प्रसन्नहोकर अल्हजीके कीर्त्तन पर सावधानहुये और हुँकारी भरनेलगे अभिप्राय यह कि हम सुनते हैं कुछ और कहो और पुजारीको निजमाला देनेके निमित्त आज्ञाको किया अल्हजीने विनयकिया कि कूल्हजी बड़े भाई इसकृपायोग्य हैं मैं अपराधी इसयोग्य नहीं पुजारी ने उत्तरदिया इसदरवार में बड़ाई छोटाई हृदयकी प्रीतिकी देखीजाती है और हमको केवल आज्ञा पालन उचितहै यह कहकर मालाको अल्हजीके गलेमें डालदिया कूल्हजीको अति दुस्सहहुआ और अपनी बेमर्य्यादी समझकर बड़े दुःख व ईर्षासे डूबनेका मनोरथ करिके समुद्रमें कूदपड़े मुख्यद्वारकामें जा पहुँचे भगवत् का दर्शनपाकर कृतार्थ होगये जब भोजन करनेगये तब भगवत्ने आज्ञाकी कि दो पनवाड़ों में पारसकरो कूल्हजी ने पूंछा दूसरा पारस किस के निमित्तहै भगवत्ने कहा तुम्हारे छोटे भाईके हेतु सुनतेही बड़ा दुःख फिर हुआ और विषके समान होगया भगवत्ने कहा दुःखकी कुछ बात

नहीं है तुम्हारा छोटा भाई मेरा परमभक्त है और वृत्तान्त उसका यह है कि अगिले जन्ममें राजाथा और राज्य छोड़कर जङ्गलमें हमारे स्मरण भजनमें रहाकरताथा संयोगवश एक राजा वहां आयके टिका और उसकी सजावट भोग विलास व रागरंग इत्यादिको देखकर उस सुख की चाहना को किया इस हेतु यह शरीर पाया अब वह तुम्हारे श्लेष से खाना पीना सोना सब छोड़कर मृतकप्राय है, शीघ्र जाकर सुधिलेव कूल्हजी प्रसाद लेकर अपनेडेरे पर जहां टिकेथे एकक्षणमें पहुँचे और अल्हजीको वहां न पाया घरजानेकी सुधिपायकर गृहकोचले अल्हजी अपने भाई के वियोगसे महादुखित रोयाकरते थे कूल्हजी को कुशल पूर्वक पत्थरके साथ आते सुनकर अति हर्षितहोकर आगे जाकर लिया दण्डवत्करके दोनोंभाई प्रेमसे भरेहुये मिले कूल्हजीने सब वृत्तांत कहा दोनोंभाई ऐसे प्रेममें पूरणहुये कि घरबार त्यागकरके वनमें चले गये भगवत्सेवा भजन में शरीर समाप्तकिया ॥

कथा जगन्नाथकी ॥

जगन्नाथजी रहनेवाले थानेसर परमभक्त और श्रीकृष्ण चैतन्य महाप्रभुके सेवक पार्षदके सदृशहुये सेवक होनेका यह वृत्तान्तहै कि तीन दिनतक महाप्रभुको अपने घरपर विराजमान देखा और उनके प्रताप का प्रभाव घर में प्रकटपायके आधीन व विश्वासयुक्त हुये और सेवक होकर कृष्णदासनाम पाया पर लोग कृष्णनाम कहाकरते थे बहुतकाल मानसीपूजा और ध्यानकरते रहे एकदिन यह अभिलाषहुआ कि जो चर्चा मूर्त्ति भगवत्की मिले तो स्थापनकरके सर्वकाल सेवा पूजामें रहा करूं भगवत् ने कृपाकरके अपनास्वरूप एक कुएँमें बतलाया उसको लाकर स्थापनकिया और ऐसी सेवा पूजामें लवलीन रहाकरतेथे कि रात्रि दिन भगवत्के शृङ्गार व राग भोग व उत्साह और लाड़ लड़ाने के सिवाय दूसरा कुछ काम न था उनकेपुत्रका नाम रघुनाथजी था वह लड़काई से ऐसा भक्त और प्रेमी हुआ कि भगवत्ने स्वप्नमें एक श्लोक अपने प्रेम और भक्तिका शिक्षाकिया ॥

कथा रामदासजीकी ॥

रामदासजी रहनेवाले डाकोर द्वारका के निकट बड़े प्रेमी भक्तहुये एकादशी व्रत बड़ीप्रीतिसे रहकर जागरणके हेतु रनछोरजीके मन्दिर

में द्वारका जायाकरते जब वृद्धहुये तब रनछोरजीने आज्ञाकी कि अब तुम घरहीमें स्मरण भजन कियाकरो रामदासजीने यद्यपि वचन अंगीकारकिया पर जब तरंग प्रेमकी उठै तो बेबशहोकर चलेजाते भगवत् को राहका परिश्रम व क्लेश आने जानेका अपने भक्तका सहानहीं गया और आज्ञाकी कि तुम एकगाड़ी लेआवो हम तुम्हारे घरचलेंगे रामदासजी अगिली एकादशीको गाड़ीलिये आपहुँचे और लोगोंने जाना कि बुढ़ाई के कारण से गाड़ीपर आयाहै द्वादशी के दिन बतलाये हुये भगवत् मन्दिरमें गये और गाड़ीपर सवार कराकर चले पर गहनेसब भगवत्के मन्दिरमें छोड़दिये प्रभातको पुजारी लोगोंने मन्दिर खोला व भगवत्को न देखा तो जानगये कि रामदास लेगये सब पीछे पड़े और रामदासजी को उनके आनेसे चिन्ताहुई भगवत्ने कहा कि समीपही एक बावड़ी है उसीमें हमको छिपादेव रामदासजी ने वैसाही किया वे लोग जो आये तो पहिले रामदासजी को मारापीटा घायलकिया जब गाड़ी में न देखा तो लज्जित होकर पश्चात्ताप करनेलगे पीछे किसीके बतलाने से बावड़ी को देखा कि रुधिरसे भरी है चकृतहुये भगवत्ने कहा कि रामदास हमारी आज्ञासे हमको लायाहै तुमने जो उसको घाव दिया सो हमने अपने शरीर पर रोकाहै इसहेतु बावड़ी रुधिरसे भरीहै अब तुम फिरजावो तुम्हारे साथ न जायँगे पुजारियोंने बड़ी प्रार्थना व करुणासे विनयकिया कि महाराज जो आप न चलें तो हमारी क्या गतिहोगी भगवत्ने कुछ न सुना बहुत कहते सुनते यह ठहरा कि भगवत् मूर्त्ति बराबर सोना तौलदे सो पुजारीलोग इसबातपर मानिगये रामदास जी ने कहा कि महाराज मेरे घर सोना कहां है भगवत्ने कहा कि तुम्हारी स्त्रीके कानमें बाली सोनेकी है हमारे तौलकी बराबर वही बहुतहै जब उससोनेकी बालीकेसाथ भगवत्मूर्त्तिको तौलनेलगे तो बालीवाला पलरा धरतीपर होगया व भगवत्मूर्त्तिवाला पलरा स्वल्पता से ऊपर उठगया पुजारी सब लज्जित होकर अपने घरको चले गये रामदास जी ने भगवत् को अपने घरपर लाकर विराजमान किया और सेवा भजन करनेलगे इस चरित्र से प्रकटहै कि राजा बलिके यहां तो उसके बांधलेनेके पीछे उसके यहां टिके और यहां तो रामदासजी के घायल होनेके पीछे टिके और सदा भगवत्के यहां रहनेका यह चिह्नहै कि अब

भी भगवत्मूर्त्ति किसी और आदमी से नहीं उठती जब कोई रामदास जीके वंशमेंका उठाताहै तो तुरन्त उठआती है मन्दिरकी मरम्मत के समय इस बातकी परीक्षा होचुकी है ॥

निष्ठा नवीं ॥

जिसमें महिमा लीलानुकरण अर्थात् रामलीला व रासलीला इत्यादि जिसमें सब भक्तोंकी कथाहैं ॥

श्रीकृष्णस्वामीके चरणकमलोंके चक्ररेखाकी दण्डवत् करके कमठ अवतारको दण्डवत् करताहूँ कि समुद्र मथनेके समय वह अवतार समुद्रमें प्रकट करके मन्दराचल पहाड़को अपनी पीठपर धारण किया और देवताओं के दुःखदूर किये रासलीला व रामलीला व नृसिंहलीला बनाकर जो भगवत्का आराधन पूजन करते हैं उसका नाम लीलानुकरण है यह निष्ठा परमपुनीत ऐसी है कि सैकड़ों हजारों महापापी जिसके प्रभाव करिके भगवत् परायण हुये और भागवत से प्रसिद्धहै कि जब रासलीला के प्रारम्भ में भगवत् गोपियों से अन्तर्द्धान होगये तो वे मतवारी विरह व बावरी रूप अनूपकी होकर वन और कुञ्जनमें सब द्रुम और लता गुल्मसे पूंछतीहुई ढूंढ़नेलगीं और रोना व आंशूबहाना व विनय प्रार्थना व गिड़गिड़ाना व स्तुति जो कुछ उपाय सूझपड़ा सब करीं पर भगवत् प्रकट न हुये नितांत सब गोपियां भगवत्के कियेभये चरित्रों को करने लगीं अर्थात् कोई गोपी तो श्रीकृष्णरूप बनी और कोई बालक और कोईगऊ और कोई बछड़ा और जिसप्रकार जन्मोत्सवसे लेकर जो जो लीला भगवत् ने करीथी सबकरीं भगवत् प्रसन्न होकर प्रकट हुये तो सिद्धांत यह बात होगई कि भगवत् अपने लीलानुकरण से ऐसे रीझते हैं कि आप प्रकट होआते हैं किन्तु रासलीला भगवत् ने आप आज्ञा देकर संसार में प्रकट करी कि यह वृत्तान्त नारायणभट्टजी की कथामें लिखागया इससेभी निश्चय होताहै कि भगवत् को अपनी लीलानुकरण अपने निज चरित्रों के सदृश प्यारा है और प्रसिद्ध है कि शास्त्रोंमें मूर्त्तिकी उपासना व पूजन के निमित्त आज्ञाहै और वह मूर्त्ति पाषाण व दारु व धातु इत्यादि की होती है और आदिमी आप उनको बनालेते हैं और बहुत भीत इत्यादि पर चिह्न खींचकर अथवा वेदी व पीठ बनाकर पूजा इत्यादि करते हैं और

के प्रभाव से अपने विश्वास के अनुरूप अपने वाञ्छित फलको प्राप्त होते हैं अब विचारकरना चाहिये कि यह लीलानुकरण मूर्त्ति पहिले तो ब्राह्मण बालक होते हैं कि भगवत् व वेदके वचनसे जन्मसेही भगवत् रूपहैं फिर उन्होंने अपना शृङ्गार भी भगवत् के सदृश बनाया तो जो कोई विश्वास करिकै उनका पूजनकरैगा तो क्यों न अपने मनोरथ को पहुँचेगा बरु दूसरी मूर्त्तिसे तो विलम्बकरिकै मनोरथ सिद्धहोताहै और इनलीला मूर्त्तियों से तो शीघ्र हृदयकी निर्म्मलता व भगवत् की प्राप्ति होजाती है इसहेतु कि अर्चा मूर्त्ति आदिसे भगवत्की प्राप्ति तब होती है कि पहिले तो उस मूर्त्ति में अच्छे प्रकार मन लगे कि दूसरीओर न जाय दूसरे भगवच्चरित्रों का श्रवण कीर्त्तन व सत्संग होय सो दूसरेमूर्त्ति शिलाआदि में ऐसा मन बड़ी प्रीतिसे कम लगता है कि जिसको दृढ़ स्नेह कहते हैं सो घुनाक्षर न्याय और श्रवण व कीर्त्तन व सत्संग यह खोजने से मिलता है और लीलानुकरण मूर्त्तिपूजन सेवनसे वह सब बात एकजगह एकसमय प्राप्त होजाती हैं क्या अर्थ कि प्रत्यक्ष सुन्दर-ताई और वस्त्रालंकार चमक दमक के कारण से प्रीति तो तुरन्त उ-त्पन्न होती है और भगवच्चरित्रों का कीर्त्तन श्रवण और भगवद्भक्तोंका सत्संग विना खोजे प्राप्त रहताहै सिवाय इसके पूजन भगवत्मूर्त्तिका इसहेतु है कि उसके सहारे से मुख्य भगवत्मूर्त्ति के ध्यानमें मन दृढ़ होजाय सो जब कि लीलानुकरणमूर्त्तिके अवलम्बसे मुख्य भगवत्की प्राप्तिहोना बहुत शीघ्र निश्चय होय तो इस लीलानुकरण निष्ठासे और कौनसीमूर्त्ति व निष्ठा उत्तमतरहै इस हेतु बहुत उचित औ अति प्रयो-जन होनेवाली बातहै कि भगवत् लीलानुकरण मूर्त्तिको निजमूर्त्ति भ-गवत्की जानकरके मन विश्वासयुक्त करिके पूजाकरै विना सन्देह अ-पने वाञ्छित अर्थको पहुँच जायगा कलियुग के महापापात्मा लोगोंके उद्धारके हेतु भगवत्ने सब कुछ उपाय सहजसे सहज बनाया कि तुरन्त बेड़ापार होजावै पर हमारे लोगोंकी अभाग्यताको हजार धन्यहै कि उन मूर्त्तियों को भगवत्रूप जानना और चरित्रों में चित्तलगाना तो एक ओर रहा ढिठाई व अविश्वासी इसप्रकार अधिकहै कि जिसका वर्णन विस्तार का कारणहै बरु वे कहैं अच्छा विना सन्देह ऐसे महापापी वि-श्वासहीन व ढीठ नरकमें जापड़ेंगे और किसीप्रकार पापों से न छूटैंगे

और जानेरहो कि मनुष्यको विश्वासही मुख्यसाधन है जो अच्छा वि-श्वासहुआ तो उत्तम पदकोगया जो अनिष्टहुआ तो पातालको पहुँच गया क्योंकि वेद शास्त्रों ने भगवत् को अच्छे व बुरे कर्म्मों के फल देने में कल्पवृक्षके सदृश लिखाहै इसहेतु एक दृष्टांत कल्पवृक्षका लिखना उचित हुआ कल्पवृक्षका स्वभाव है कि वाञ्छित फल देता है एक प-थिक संयोग वश कल्पवृक्ष के नीचे पहुँचा और मनोरथ किया कि ठंढी पवन चलती तो अच्छाथा सो पवन ठंढी चलनेलगी फिर शी-तलजलसे पूर्ण एकतड़ाग व एक हरे बागकी चाहनाकरी वह भी प्राप्त होगया फिर दिव्यवस्त्र आभूषण व सामग्री भोगविलास व रागरंग व सुन्दरी नायकाओं की चाहना हुई वहभी सब प्राप्तहुये जब उन नाय-काओं के साथ सुख व विलास में लीनहुआ तो यह चिन्तनाहुई कि ऐसा न हो कि इनका मालिक दण्डदेनेलगे सो तुरन्त जूती पड़नेलगीं और शिर पिलपिला होगया इसीप्रकार भगवत् विश्वास के अनुसार सब फल देताहै और गीताजी में भगवत्का वचन है कि निश्चय मन-ही मनुष्यों को बंध और मोक्षका कारण है भगवत् का वचनहै कि जो कोई जिस विश्वास से मन लगाता है वैसाही फल उसको मिलता है विश्वासही मूल है यद्यपि कथा उन भक्तों की कि जो लीलानुकरण के प्रभाव करिकै परंपदको गये विस्तार करिके लिखी जायँगी पर दो एक बात यहांभी लिखताहूं मीरमाधवजी जो भगवद्भक्त विख्यातहैं उनकी भक्तिका आरंभ व कारण लीलानुकरण से हुआ वृत्तान्त यहहै कि अ-मीर कबीरथे व मजहब महम्मदी रखते थे राहचलते मथुरा वृन्दावन में पहुँचे अपने मुन्शी से कि भगवत् उपासक था बड़ाई रासलीला की सुनकर देखने की चाहहुई मुन्शी ने उनकी बड़ी प्रीति देखकर पूजा करना व मर्य्यादसे बैठालना व बैठना यहसब ठहराकर रास करनेवालों को बुलाया और अमीरने प्रेम व मर्य्याद से सब भगवच्चरित्रोंको देखा मन और प्राणसे चाह करनेवाले वास्तव स्वरूप श्रीनन्दनन्दन महा-राजके होगये और माल व रुपैया सब भगवत् के आगे भेंट करदिया पीछे गृहबार संसार व्योहार त्याग करिके पीछे कपड़े पोशाक सब को त्याग करदिया श्रीकृष्ण श्रीकृष्ण कहते श्रीवृन्दावन की कुंजनमें निज अपने प्राण प्यारे को ढूँढ़ते फिरनेलगे अनुक्षणनाम जो भगवत् का

मुखसे निकलता था इस हेतु लोगों ने मीरमाधवनाम रखदिया और भगवद्भक्तों में गिना काव्यरचना उनकी में बालचरित्र भगवत् के बहुत हैं उसमें से एक कसीदे की पहिली तुक फ़ारसी में है सो यहहै ॥ ताके जे खुदरानी सखुन श्रीकृष्णगो श्रीकृष्णगो। बुगजारकब्र व मावो मन श्रीकृष्णगो श्रीकृष्णगो ॥ अर्थ इसका यह है कि जबतक वचन बोलना तेरे आधीन है श्रीकृष्ण कहु श्रीकृष्ण कहु अभिमान व हम व हमारा यह सब छोड़ श्रीकृष्ण कहु श्रीकृष्ण कहु ॥ थोड़े दिनों में भगवत् का रूप उनके हृदय में प्रकटहुआ और सिद्धहोगये उसरूप अनूप के रस में मत्त रहनेलगे और श्रीमद्भागवत सुनने की इच्छाहुई पर किसी ने मन्दिर में जाने न दिया भगवत् ने एक अपने भक्त गोसाईं को सुनाने की आज्ञादी उन्हों ने बड़े आदर से कथा सुनाना आरंभकिया एकबेर कथा कहते बहुतरात बीतगई और मीरमाधव मंदिरमें सोरहे आधी-रातको भूंखलगी भगवत् ने विचार किया कि आज मीरमाधव हमारे पाहुन हैं बड़े शोचकी बातहै कि भूखेरहैं इस हेतु अपने निज भोगके थालमें लड्वा व जलेबी और लोटे में जल दश बारहवर्ष के लड़के के स्वरूपसे लेकर आये और कहा कि गोसाईंजी ने भेजाहै मीरमाधवजी ने लेकर खालिया और सोरहे प्रभातको थाल सोनेका व लोटा न पाया तो पुजारी खोजनेलगे मीरमाधवजी के पासपड़ाहुआ देखकर पुजारियों ने अज्ञान से अच्छा मारा फिर जो भगवत् मंदिर में गये तो सब वस्त्र भगवत्के टुकड़े टुकड़े पाये और भगवत् मूर्त्तिकी भी चेष्टा अतिउदास व क्रोधयुक्त देखी तुरन्त गोसाईं जी के पासगये सब वृत्तान्त कहा गो-साईं जी नंगेपायँ दौड़ आये और मीरमाधवजी के चरणों में शिररख कर बहुत विनय व प्रार्थनाको किया जब मीरमाधवजी ने पुजारियोंका अपराध क्षमाकिया तब भगवत् भी प्रसन्नहुये शिक्षाहुई कि मेरे भक्त को मुझसे कम न समझाकरैं कथा के श्रोता लोगों को गोसाईं जी पर सन्देहहुआ कि मुसल्मान को अपने पास बैठाकर कथा सुनाते हैं एक दिन गोसाईंजी ने परीक्षा के हेतु श्रोताओं से पूछा कि कल्ह कथा कहां तक हुई थी किसी ने कुछ न बतलाया मीरमाधवजी ने कथा के आर-म्भसे अन्ततक सब श्लोक और अर्थ और जो अक्षर गोसाईं जी के मुखसे निकले थे सुनादिये सब सन्देह करनेवाले लज्जितहुये एक बेर

किसी राजा ने अतर श्रीविहारी जी को भेजा मीरमाधवजी ने हरकारे से लेकर धरतीपर डाल दिया सब मन्दिरके भीतर सुगन्ध छायगई व विहारीजी का श्रीअंग व वस्त्र अतरसे तर होगया जैसे हरिदासजी का वृत्तान्त लिखाहै वैसीही बातहुई दूसरी एकबात चन्दानामे डाकूकी यह है कि वह ठगी व डाका मारा कियाकरताथा एक बड़े आदमी के यहां रास चरित्र होनेका समाचार पाया और यह भी सुना कि लाख रुपये का जेवर व असबाब रासहोने के समय इकट्ठा होगा पीठा ठोंठ पांचसौ आदमी हथियारबन्द के समेत आय पहुँचा और उसके आतेही राह में हलचल व शोर पड़ा देखने वाले अपना अपना जीव लेकर भाग गये भगवत् स्वरूप जो रास में थे उन्हों ने उस बड़े आदमी से पूंछा कि क्या शोरगुलहै उसने वृत्तान्त डाकूके आनेका कहा भगवत्मूर्त्तिने कहा कि क्या डरहै आनेदेव इसी कहने सुननेमें थे कि डाकू सीधा बेडर निर्भय सिंहासनके समीप आपहुँचा और चाहाथा कि गहने व असबाब पर हाथडाले आप भगवत्मूर्त्ति ने सिंहासन परसे उठ कर और हाथ चन्दाका पकड़कर एक मुष्टिक मुँहपर मारी और कहा कि इतनी ढिठाई सो वयक्रम भगवत्स्वरूपका दश बारहवर्षसे अधिक न था पर वह पहलवान डाकू मुष्टिककी चोटसे ऐसा लोटगया कि लँगोटकी भी सुधि न रही और उसके साथी ज्ञानहाथसे खोकर पांवसे माथे तक चित्र की पुतली होगये पीछे जब उस डाकूकी मूर्च्छा जगी तो अपने हथियारों को भगवत्के आगे रखकर चरणकमल इस प्रीति व प्यारसे पकड़लिया कि फिर हृदयसे न छोड़ा और सब त्यागकर भगवद्भक्त व परायणहोगया तीसरा और एक वृत्तान्त कि किसी बड़े आदमी ने यमुना जीके किनारे पर रासलीला कराई कालीके नाथनेका जो चरित्र आरम्भ हुआ तो उसने लोगोंसे पूंछा कि क्या भगवत्स्वरूप यमुनामें कूदेंगे जो कमर कसते हैं यह बात भगवत्स्वरूप के भी कानमें पड़ी और आप बोले कि हां और यह कहकर यमुनाजी में कूदपड़े और एक सांप ऐसे भारीको जो दश बीस आदमीसे न उठसके पकड़लाये उस घड़ी उस बड़े आदमी ने भगवत्रूपी का प्रकाश व झलक ऐसा देखा कि आंखें चकचोंध के ओंधगईं और बेसुध होकर गिरपड़ा पीछे जब शरीर का ज्ञानहुआ तो कृष्णचरणका ध्यान हृदयमें धरके सब त्याग दिया भग-

वत् परायण होगया काशीजी में पाठकजी परमभक्त रघुनन्दन महाराज के हुये भगवत्से साक्षात् दर्शनोंकी वाञ्छाकी शिक्षाहुई कि रामलीलामें दशहरे के दिन भरतमिलाप में दर्शनहोंगे और परीक्षा इसकी तब जानना कि जब कोई वस्तु हम आप तुमसेमांगें तो जिसदिन भरत मिलाप का दिन आया पाठकजीभी देखनेगये थे मिलाप होने पीछे जिससमय भरतजी आंखों से आनन्द व प्रेमका जल बरसाते हुये श्रीरघुनन्दन स्वामीके चरणारविन्द पकड़रहे थे उससमय उस राममूर्त्तिने पाठकजी को बुलाया लोगोंके ढूंढ़नेसे आये भगवत्स्वरूप ने आज्ञाकी कि कुछ मिठाई प्रसादके निमित्त और थोड़ाजल लावो पाठकजीने तुरन्त प्राप्त किया भगवत् ने थोड़ा भोग लगाकर और जलपीकर पाठकजी को वह महाप्रसाद दिया और ऐसी झलक उस मनोहरमूर्त्तिकी कि जैसी शास्त्रों में लिखी हैं पाठकजी ने देखी कि बेसुधहोगये इसीप्रकारकी कितनी कथाहैं कि विस्तारके भयसे नहीं लिखते और दो चारबेर रामलीलामें कितने मनुष्य ऐसे देखने में आये कि अत्यन्त प्रेमकरके अचेत व बेसुध हो जातेथे और कितने मनुष्य ऐसे देखनेमें आये कि प्रेमसे रासलीलामें अत्यन्त बेसुधबुध होजातेथे और कितने ऐसे देखने में आये कि पहिले केवल देखनेके निमित्त सांभीबनाने रामलीलाके हुये पीछे उसी प्रभावसे निन्दितपथ छोड़कर कुछ भगवत्की ओर सम्मुख होगये क्या अच्छी बात हो कि यह मेरा मन पापी अपने चंचल स्वभाव को छोड़कर इसी लीलानुकरण के अवलम्बसे भगवत् के सम्मुखहो और बड़ा आश्चर्य्य यहहै कि संसारके सहस्रों प्रकारके दुःख प्रतिदिन देखताहै पर कबहीं उनका भयकरके भगवच्चरणों में नहीं लगता जो सुख और धन इत्यादिक आपसे आप प्राप्तहोनेवाले हैं उनके हेतु सहस्रोंप्रकार के उपाय और अधर्म्म व मिथ्या बोलना इत्यादि करता है और जो भगवत् कि करोड़ों जन्मोंतक नहीं मिलता उससे ऐसा असावधान व विमुख कि निर्मूल उसका चिन्तनभी नहीं करता वाहरे मन तेरीबुद्धि व चतुराई अरेअभागे अबभी चेत और उससमाज और शोभाको कि जो ग्रंथके मंगलाचरण में कहि आये हैं सदाचिन्तवन किया करता कि यह जन्म मरणकी अपारनदी सूखजाती और दुःख सुख संसारका छूटकर परम आनन्दरूप होजाता ॥

दो० नील सरोरुह नील मणि नील नीर धर श्याम।
लाजहिं तन शोभा निरखि कोटि कोटि शत काम॥

कथा अलीभगवान् की॥

अलीभगवान् पहिले रघुनन्दन स्वामीमें निष्ठारखतेथे पर वृन्दावन में आकर उनकी कुछ औरही गतिहोगई अर्थात् जब रास चरित्रमें भगवत्का मनमोहनीस्वरूप देखा तो वह छवि माधुरीके प्रेमसे अपनी इष्ट उपासना सब भूलगये और श्रीप्रियाप्रीतमके रूपअनूप में मग्नहोके उसी ओर के हो रहे बिहारीजीका चरित्र और रासलीलाके चिन्तनऔर पूजामें मन लग गया और वही स्वरूप हृदयमें बसिगया उनके गुरूने जो यह वृत्तान्त सुना तो वृन्दावनमें आये अलीभगवान् किसी वनमें चले गये और वहां गुरूके दर्शनहुये दण्डवत् करके विनय किया कि महाराज मेरे गुरू और स्वामी आपहैं पर बरबस ब्रजनागर जीने मेरे मन को अपनी ओर लगालिया है गुरूने जो दृढ़प्रीति देखी तो प्रसन्नहुये और श्रीकृष्णस्वामी के चरित्रों और प्रेमका उपदेश करके चले आये जानेरहो कि गुरूके आने का अभिप्राय यह था कि अलीभगवान् पहिले तो श्रीराम उपासक था अब रासलीलाको देखकर कृष्णउपासक होगया कलहको किसी और मत मतान्तरवाले के पास बैठेगा तो उसी ओर होजायगा इसमें किसी ओरकाभी न होगा और दोनों लोक से जातारहेगा काहे से कि स्वरूप भक्तिका शास्त्रों में यह लिखाहै कि मन की वृत्ती अचल एक ओर लगीरहै सो जब अलीभगवान् के मन को दृढ़ देखा तो प्रसन्नहुये॥

कथा विपुलविठ्ठलकी॥

विपुलविठ्ठल जी स्वामी हरिदासजी के चेले निधवन में भगवद्भक्त माधुर्य्य उपासक हुये जब स्वामी हरिदासजी भगवत्के परमपद को गये तो उनके चरणकमलों के वियोग से अत्यन्त शोकयुक्त रहा करते एकबेर रासलीला में हरिभक्तों ने उनको भी बुलाया हरिभक्तों की आज्ञा उल्लंघ न करसके जब वहां गये और प्रिया प्रीतमके स्वरूप को देखा तो भगवत्का नृत्य और कीर्त्तन और भाव मनमें समाय गया और निज भगवत् स्वरूप में मग्न और तद्रूपहोगये स्वामी हरिदास जी के दर्शन उसी दशा में हुये और परमआनन्द द्विगुणहुआ फिर तो

भगवत् के छवि समुद्र में ऐसी डुबकियां लगाईं कि फिर न निकलसके उसीरूप और भाव में मिलकर भगवत् के नित्य विहार में जामिले ॥

कथा रामराय की ॥

रामराय राठौर बेटा राजाखेम्हाल के परमभक्त हुये भगवद्भक्ति और भावको ऐसादेश में प्रवृत्तकिया सबको भक्ति सहजहोगई जिस प्रकार शिवजी महाराज ने इस परमधर्मको संसारमें फैलाया और आप आचरण किया इसीप्रकार रामरायजी हुये जो लोग भगवद्भक्तिसे विमुख थे उनका त्यागकिया और जिनको योग्य उपदेश के जाना उनको उपदेश कराकर बड़ी पदवीपर किया प्रतापराजा भरत के सदृश था कि जिनका बेटा लड़काई में व्याघ्रका कान पकड़कर जंगलसे लेआया था अर्थात् उससमय में और कोईराजा उनके दृष्टान्तके योग्य न था और किसप्रकार उनके भाव की बराबरी किसी से होसके कि अपनीलड़की को गन्धर्व विवाहकी रीतिसे भगवत्मूर्त्तिके अर्प्पण करदिया वृत्तान्त यह है कि शरद्पूनों अर्थात् जिसरात ब्रजचन्द्र महाराजने रासचरित्र कियाथा राजाने समाज रासलीला का कराया भगवत् के स्वरूप और चरित्र और राग रंग और नृत्यको देखकर प्रेम में विह्वल होगये एक ब्राह्मण जो मंत्रीथा उससे पूंछा कि भगवत्को क्या वस्तु भेंटकरनी चाहिये ब्राह्मणने कहा जो वस्तुआपको प्यारीहो राजाचुपहोगया विचार करके बोला म्हाको म्हांकी डावरी प्यारीछे अर्थात् हमको अपनी लड़की प्यारी है यह कहकर महलमें गये और लड़की को शृङ्गार आभूषणआदिसे शृङ्गारकरके लेआये और गांधर्वी रीतिसे भेंटकिया पीछे धन व असबाब इतना दिया कि जीवन पर्य्यंत सैकड़ोंवर्ष वह लड़कीको दुःख न होय नेवछावरि करके भक्तिभावका अन्त इससंसार में सूर्य्य के सदृश प्रकाशित करदिया ॥

कथा खड्गसेनकी ॥

खड्गसेनजी जाति कायथ रहनेवाले ग्वालियर भगवद्भक्त रासनिष्ठ और प्रेमीहुये पदरचना बहुत ललित करतेथे ब्रजगोपिका व ब्रजग्वालों के मा बापका नाम ग्रन्थसे ढूंढ़ ढूंढ़कर एक ग्रंथ बनाया और दानलीला और दीपमालिका का चरित्र ऐसा ललित बनाया कि जिसके पढ़ने सुनने से भगवत् में निश्चय करिके प्रीति होजाती सम्पूर्ण अवस्था

को श्रीब्रजचन्द्र महाराजके और उनके सखा सखियों के चरित्रोंमें व्यतीतकिया औ श्रीनन्दनन्दन स्वामीके चरणकमलों में ऐसीप्रीति और लगन थी कि सिवाय उनके चरित्रों के और कोई बात नहीं रुचती थी और रासलीला और दूसरे चरित्रों का समाज उत्साह सदा रहा करता था पर शरदपूनों को यह प्रण दृढ़था कि बहुत द्रव्य लगाकरके रास लीला करायाकरतेथे एकबेर प्रिया प्रीतमके रासविलासकी दशामें हँसी और खेल व राग व नृत्य और परस्पर देखना व मुसक्याना व सकुचाना और श्रीलाड़िलीजी का मान और आप श्रीलालजीका मनाना देखकर ऐसे बेसुध व तदाकार होगये कि देहको उस रासलीलाके प्रिया प्रीतमके नेवछावर करिके प्राण मुख्य रसरास और नित्यविहार में प्राप्त किये और प्रेमकी दशा और रासनिष्ठाकी महिमाको उसके प्रभावकरिके नित्यरासविलास और भगवत्स्वरूप प्राप्तहोताहै लोकमें प्रकट करके भगवद्भक्ति और भावको शिक्षा किया ॥

कथा वल्लभ की ॥

वल्लभजीचेले नारायणभट्टजीके ऐसेभक्त और प्रेमीहुये कि जिन्होंने उस ब्रजवल्लभ महाराज परमानन्दघनको जो आनन्दका भी आनन्द और सुखकाभी सुखहै रासचरित्रमें नृत्य और कीर्त्तनसे और अपनीआंखोंके हावभाव और मन्द मुसक्यानसे आनन्द और सुखदिया अर्थात् रासचरित्रमें कबहीं ललिता और कबहीं विशाखाकारूप बनाकरते और ऐसे प्रेम और प्रीतिसे भगवत् को रिझायाकरते कि तद्रूप ललिता व विशाखाके होजाते वृन्दावन वासकरके अपने भक्तिभाव और उदारता व प्रभाव से लोगोंका उद्धारकिया और भगवत्के महोत्साह करके लोगोंको परम आनन्द दिया ॥

कथा नाथभट्ट की ॥

नाथभट्टजी फणी अर्थात् शेषजीके वंशमें परमभक्तहुये फणीवंशका यह अर्थहै कि बलदेवजी महाराज शेषका अवतारहुये और बलदेवजी का अवतार नित्यानन्दजी सो नित्यानन्दजीके वंशमें जो होय उसको फणीवंश अर्थात् शेषजीका वंशकहना योग्यहै सो नित्यानंदजी के चेले सनातनजी और सनातनजी के कृष्णदास कृष्णदासजीके नारायणभट्ट और नारायणभट्टके चेलेसनातनजी और सनातनजीके कृष्णदास और

कृष्णदासजीके नारायणभट्ट और नारायणभट्टके चेले व पुत्र गोपालभट्ट और गोपालभट्ट के पुत्र नाथभट्ट जो हुये ऊंचेगावँमें रहतेथे तंत्र शास्त्र व वेद व पुराण और सब शास्त्रोंको विचारकर उनका जो सार व अभिप्राय भगवद्भक्ति और प्रेम है उसको अपने मनमें दृढ़स्थितकिया रूप और सनातन व जीवगोसाईं व नारायणभट्ट ने जो कुछ अपनी काव्य रचनामें भगवत्का माधुर्य्य व शृङ्गार रस वर्णन कियाहै उसको अपना सर्वस्व जानकर उसके अनुसार आचरण किया और शृङ्गार व माधुर्य्य भावके स्वरूपहुये रसिकविहारी महाराजकी रासलीला आनन्द व विश्वास से बनाते और रासनिष्ठा में परमप्रेम और निश्चय था विमल हृदय व प्रियवचन बोलने में एकहीथे व रास उपासनाके भक्तोंमें मुख्य अर्थात् राजाहुये और जानेरहो कि रासनिष्ठा नाथजी के घराने में प्राचीन इसकाल पर्यंत संग्रहीत बनाहै ॥

दशवीं निष्ठा ॥

दया व अहिंसाके वर्णनमें कथा छः भक्तोंकी है ॥

श्रीकृष्णस्वामी के चरणकमलके स्वस्तिक अर्थात् सथियेकी रेखा को दण्डवत् करके धन्वन्तरि अवतारको दण्डवत् करताहूं कि जगत्के उद्धारके हेतु समुद्रमें अवतार धारण करके फिर इस संसारमें प्रकटहुये दया भगवत् का स्वरूपहै महाभारत में लिखाहै कि सब धर्म्मों में दया परमधर्म्म है जबतक दया नही तबतक कोई धर्म्म नहीं गिनेजाते हैं भगवत् व स्कंदपुराण में दयाके गुण वर्णन करके अन्त मे कहा है कि जिसको दयाहै उसने सब धर्म करलिये नारदजीसे भगवत्ने सबधर्म वैष्णवों के वर्णन करके कहाहै कि दया व भजन व साधुसेवा सब धर्मों में मुख्यतर है और उनमेंभी दयाका स्वरूप यहहै कि दूसरे किसी जीव के दुःख देखकर हृदय द्रवीभूत और दुःखित होना और वह दुःख व द्रव्य विनाकारण व सम्बन्धके हो और जबतक उसकादुःखदूर न होलेवे तब तक द्विगुण दुःख उस दयावान्को रहै उसदयाके दोप्रकारहैं एकसंसारी दुःख देखकर किसीका अपने को दुःख व दयाहोना और उसके दूरकरने का उपाय मन कर्म वचनसे करना और क्रोधको न आना व मधुरवचन बोलना और किसी को दुःख न देना और उदारता व दातव्य और किसीका न्यून शोचना धरती को देखते चलना इसीप्रकार और दूसरे

कार्य्य सब कि जिससे किसीको दुःख न होय और अथवा किसीकादुःख दूर होताहोय यह सब अंग दयाके हैं दूसरा पारमार्थिक दया अर्थात् पारलौकिक दुःख देखकर दयाहोना और वह यहहै कि अनादिकाल से जो जीव जन्म मृत्यु नरकादि अनेक भांतिके दुःख व यातनामें फँसा है उनदुःखों को देखकरदयाहोना और जिसप्रकार से होसके भगवत् के सम्मुख उस जीवको करिके जन्म मरणके दुःखोंसे छुड़ाकर कृतार्थ कर देना सोई दोनों प्रकार में पहिला प्रकार तो साधक को होता है और सिद्ध और भगवद्भक्तों और विरक्तोंको दोनों प्रकारका शास्त्रोंमें महिमा दान व कृपाआदि एक अंग दयाके इसभांति लिखे हैं कि उनमें से किसी एकपर दृढ़होजाय तो उसके सहारे से भगवत् मिलजाता है जो कोई दयापर दृढ़है उसकी महिमा किससे वर्णन होसक्ती है एक साहूकार कालके फेरकरके दरिद्री होगया चार यज्ञ उसने किये थे किसी ऋषीश्वर के उपदेशसे एक यज्ञके फललेने को धर्मराज के पासचला एक कालके भोजनकी सामग्री पासथी उसकी रसोई बनाकर जबखाने को बैठा तब एक कुतिया उसी घड़ीकी जनीहुई भूख से विकल आई साहूकारको दया उत्पन्नहुई चौथाई भोजन उसको देदिया पर भूख न गई तब दूसरी चौथाई दी फिरभी वही दशारही फिर चारबेर में सब भोजन देदिया और पानी पिलादिया संतुष्टहोकर चलीगई और साहूकारभूखा प्यासा धर्मराजके पासपहुँचा हिसाब के समय धर्म्मराज ने कहा कि पांचयज्ञमें एक यज्ञ अक्षयहै जिसका कबहीं नाश न हो तू किसका फल चाहता है साहूकारने चकितहोकर विनय किया कि महाराज मैंने चार यज्ञकिये हैं पांचवांयज्ञ कौनसा है धर्मराजने कहा कि पांचवां यज्ञ अक्षय वहहै कि तूने कुतिया पर दया करके अपना सब भोजन देदिया अभिप्राय यहहै कि थोड़ीसी दया यज्ञके फलको देती है कोई का सिद्धान्त यहहै कि जो दयाहोगी तो जीवघात करनेसे आपसे आप किनारा करेगा और कोई यहकहते हैं कि दया अहिंसाका एकअंगहै और गीताजी में भगवत्ने अहिंसाधर्म्म अलगगिना और दया अलग सो इनके विरोधका निर्णय व वाद लिखना सब व्यर्थ है शास्त्रमें जो दया व अहिंसाके अंग सब सुनने में आये तो बराबरहैं इसहेतु दोनोंको वट व वटबीज न्याय समझलेना चाहिये सो यह अहिंसाधर्म्म वहहै कि जि-

सके वर्णनमें शास्त्रों ने यह कहा है कि अहिंसा सब धर्म्मोंका नायक है सोरह अध्याय भगवद्गीतामें भगवत्ने सब धर्म्मोंसे प्रथम अहिंसा को वर्णन किया और इसीप्रकार दशवेंअध्यायमें पतञ्जलि महाराज ऋषीश्वरने जहां आठसिद्धि वर्णनकी तहां सबसे प्रथम अहिंसासिद्धि लिखी है इस कारणसे कि जो अहिंसासिद्धी सिद्धिहोजावे तो अन्यसिद्धि आप से आप प्राप्तहोजावें किसकारणसे कि जब अहिंसासिद्धीकी ओर मन दृढ़हुआ तो सबजीव भगवत्रूप विचारमें आवेंगे और जब भगवत् को सब जगह प्राप्तदेखा तो भगवत् मिलगया और जब भगवत् मिला तो सब कुछ मिलगया जानेरहो कि अहिंसा आदि आठ सिद्धी पातञ्जलिमें भगवत्की प्राप्तिहोने के हेतुहैं और अणिमादिक आठसिद्धीसंसारके अर्थ उनसे अलग ठग व डांकू भगवत् प्राप्तिकी राहके हैं अरे मन विचारकर कि यहसमय फिर हाथनहीं आवेगा जो अबभी श्रीकृष्ण स्वामी के चरणमें न लगा तो फिर कहीं ठिकाना नहीं और विचारकर कि हिरण्यकश्यप व रावण व सहस्रबाहु आदिक सैकड़ों ऐसे २ होगये कि जिन्होंने यमराजकोभी अपने वशमें करलिया था जब कि वे सब मृत्यु से न बचे तो तेरी क्या गिनती है जिनके साथ तू प्रीति करके अपना जानताहै वे केवल इस शरीर और अपने सुखके साथी हैं संसारसमुद्र के उतारने में कोई तेरा सहायकरनेवाला नहीं फिर तू उनकेहेतु क्यों अपने परलोकका नाशकरताहै अब अपनी हानि लाभको समझ और इस समाजके चिंतवनमें रहाकर कि दोनों लोक तेरे बनें जिससमय जनक पुरवासियों के करोड़ों जन्मोंके जप तप पुण्यके फलउदयभये और राजा जनकके ज्ञान वैराग्यके वृक्षफले अर्थात् श्रीरघुनन्दन स्वामी शोभाधाम ने उनलाखों राजोंकी सभामें कि जो सुमेरु व कैलासको राईके दाने के सदृश उठासक्ते थे और उस राजमण्डपमें कि जिसकेद्वार व दीवार सब स्वर्णमय भांति २ के जवाहिरातसे जड़ेथे और चँदोवा जरीका कि जिस में झालरें मोतियोंकी लगीथीं छाईथीं शिवजीका धन्वात्रणकेसदृश तोड़कर डालदिया और धरती आकाशसे फूलोंकी वर्षा व जयजयकार व नेवछावर व वधाव बजना आरम्भ हुआ उस समय जनकनन्दिनी अखिल ब्रह्माण्डेश्वरी जयमाला पहिराने को चलीं शोभा जगज्जननी की यह मतिमंद तो क्या लिखसक्ता है इस ध्यान में शारदा गूंगी और

शेषजी विनाजीभ हैं सखियों के समाजमें कि वह सब शोभा व छविकी मूर्त्तिथीं धीरेधीरे बड़े उत्साह और उमंगसे मन परमानन्दसे भराहुआ गुरुजन लोगों की लज्जासे लजातीहुई शोभाधाम महाराजके सम्मुख पहुँचीं और कहने से सखी सहेलियों के दोनों हस्त कमल उठाकर जयमाला दशरथनन्दन महाराज के गलेमें पहिराई जिससमय दोनों का मुख चन्द्रमा एकसे एक बराबरहुआ सब ओरसे मन एकाग्र होकर परस्पर रूप अनूप देखनेमें नयन एकसे एकका मिलकर रहगये उस समयका समाज और समा देखकर देवताआदि तो अपने अपने स्थानपर भीतके चित्रसे होगये और जनकआदिको महाआनन्द व प्रेमसे बेसुधिता होगई दशरथनन्दनके श्यामसुन्दर कपोलोंपर कुण्डलके मोतियों की झलक ऐसी छविदेतीथी कि बरबस मन हाथसे जाताथा और ऐसाही भाल पर केशर व गोरोचन का तिलक विराजमान शिरपर जवाहिरात जड़ा किरीटमुकुट आंखें अरसीली व रसीली की चंचल चितवन गले में कंठी व फूलोंकी माला बागा धानी जरीका शोभायमान कमरकसे हुये हैकल जड़ाऊ दोनों ओर पड़ेहुये एकओर तरकस शोभितहै और दूसरी ओर कमान व जनकदुलारी के दोनों हाथ मालालिये कांधेपर आयेहुये और मन्द मुसक्यान दोनों सम्मुख परस्पर विराजमान॥

कथा शिविकी॥

राजाशिविकी कथा पुराणोंमें और विशेषकरके महाभारतमें लिखी है कि दया दान व शरण देनेवाले और धर्मात्माहुये अश्वमेधादिक बहुत यज्ञ करके ब्राह्मणों को हरएक प्रकारके दानदिये भगवंत् प्रेरणा करके राजाइन्द्रको दया व शरणागत वत्सलताकी परीक्षाकी चाहनाहुई अग्नि देवताको कबूतर बनाकर आप बाजकारूपधरके आया कबूतरने बाजके भयसे कांपता राजाके दामनमें शरणली व बाजसे व राजासे बड़ावादहुआ बाजकहै कि हमारा आहार छीनतेहो राजाकहै कि शरणमें आयेकोन रक्षाकरना अधर्म्म है नितान्त अपने शरीरके मांसदेने पर बाज मानरहा जब मांसपलरेपर काटकेधरा तो कबूतरका पलरा धरती न छोड़ै मांस काटकाट धरते धरते नहीं बराबरहुआ तब राजा शिरकाटकर धरनेलगा तब दोनोंदेवता प्रकटहुये वरदानदेकर स्तुतिकी व शरीर जैसाथा वैसा करके चलेगये भगवद्भक्तभी भगवत्रूपहैं जो कुछकरैं आश्चर्य्य नहीं॥

कथा राजा मयूरध्वज की ॥

राजामयूरध्वज और उनकी धर्म्मपत्नी और ताम्रध्वज उनका पुत्र ऐसे परमभक्त दयावान्हुये कि भगवत्ने घरबैठे दर्शनदिया और परीक्षासे दृढ़देखा वृत्तान्त यह है कि जब राजायुधिष्ठिर ने अश्वमेधयज्ञ किया और अर्ज्जुनको रक्षाके निमित्त साथ करके घोड़ा यज्ञका छोड़ा तो उसी समय राजा मयूरध्वजने भी यज्ञ आरम्भकिया था व ताम्रध्वज घोड़ेके साथ था राहमें दोनोंका भटभेराहुआ ताम्रध्वज ने उस अर्जुन को कि जिसने महाभारत में विजय को पायाथा और उन श्रीकृष्ण महाराज को कि शुद्ध सच्चिदानन्दघन पूर्णब्रह्म हैं और जिनके नामकी कृपासे जयकानाम भी जयहै जीतके घोड़ेको बलसे छीनलिया भक्तानुकूल महाराजने देखा कि यहां दोनों भक्त हैं एकको जय दीजाय तो दूसरे की अभिलाषा भंगहोगी इस हेतु परीक्षा के निमित्त आप वृद्ध ब्राह्मणबनि और अर्ज्जुन को लड़केका रूपबनाकर राजा मयूरध्वजके द्वारपरगये राजा यज्ञशालामें था दण्डवत् करके आदर व विनयपूर्वक पूंछा कि आगमनका हेतु क्याहै ब्राह्मणने कहा कि जंगलमें एकव्याघ्र है उसने इसबालकके खानेकी इच्छाकी बहुत मैंनेकहा कि इसकेबदले हमकोखाले पर उसने न माना कहा कि तू बूढ़ाहै तेरामांस मेरेकामका नहीं नितान्त बड़ी प्रार्थना व रोदन करनेसे यह ठहरा कि जो राजाका आधाशरीर लादे तो इस बालक को छोड़देवैंगे इस हेतु तुम्हारे पास आयाहूं जो बनसके तो इस बालककी रक्षाकरो राजाको बड़ीदया आई और कहा कि निश्चय यह शरीर एकदिन जानेवालाहै ऐसेकाममें आवै तो इससे अच्छा क्याहै ब्राह्मणने कहा कि एक वचन व्याघ्रका यह भी है कि जिस आरेसे राजाका शरीर चीराजाय वह आरा एक ओर राजाके बड़ेबेटे के हाथ में होय और दूसरी ओर राजाकी स्त्रीके हाथ में होय और किसी प्रकारका किसीको शोक व दुःख न हो राजाने इसबात को भी अंगीकार किया ताम्रध्वजने ब्राह्मणसे कहा कि शास्त्रके मतसे बेटाभी बापका रूपहै जो मेरा आधाशरीर लियाजाय तो अच्छी बात है ब्राह्मणने कहा कि तू राजा नहीं फिर राजाकी स्त्री ने कहा कि मैं भी राजाकी अर्द्धांगीहूं जो राजाके आधे शरीरके बदले मुझको लेजावे तो व्याघ्रकी और अधिक संतुष्टताहोय ब्राह्मणने कहा कि तू स्त्री है राजा

नहीं फिर तो ब्राह्मणने ताम्रध्वजको राजाके साम्हने इसकारण कि परस्पर देखकर मोहउत्पन्न होजाय व पीठपीछे स्त्रीको खड़ाकिया औरदोनों आरा राजाके शिरपर रखकर खींचनेलगे जब आरा राजाकी नाकतक पहुँचा तो वामनेत्र से राजा के पानी निकला ब्राह्मण ने कहा बस यह शरीर मेरे कार्य्य के योग्य नहीं कि राजा दुःखित होकर देताहै राजाने विनयकिया कि महाराज कृपाकरो क्रोध न करिये जिस ओर की आंख से पानी निकलाहै उस ओरके शरीरको यह दुःख है कि मैं बड़ापापी हूं कि किसी काममें न आया दाहिना अंग बड़ा बड़भागी है कि ब्राह्मण के काम आया भगवत् करुणासिन्धु इस वचन के सुनतेही भक्ति और विश्वास से अत्यन्त प्रसन्नहुये कि प्रेम में विह्वल होगये और राजाको आरेके नीचे से उठाकर छाती से लगालिया और निज रूपसे राजाको दर्शनदिया भगवत् के स्पर्श होतेही राजाके शिरका घाव अच्छाहोगया और भगवत् ने कहा कि तुम्हारी धर्मनिष्ठासे बहुत प्रसन्नहूं जो चाहना हो सो कहो पूर्णकरूंगा राजाने हाथ जोड़कर निवेदन किया कि हे करुणासिन्धु महाराज आपने अनुग्रह किया तो और कौन पदार्थ अब रहगया जो मांगूं केवल चरणकमलों की प्रीति चाहताहूं और एक प्रार्थना यहहै कि कलिकाल आगेपर आनेवालाहै सो अब ऐसी परीक्षाओं से भक्त बचे रहैं भगवत् ने अङ्गीकार किया और फिर अर्जुन और राजाका भेंट मिलाप कराकर मेल करादिया राजाने बहुत हर्ष से घोड़ा फेरदिया इस चरित्र से भगवत् को कुछ अर्जुन का गर्व दूरकरना प्रयोजनथा सो भी होगया॥ कथा भवनकी॥

भवन राजपूत चौहान के राना सरकारमें दोलाख रुपया के उत्तम पदवीवाले राजसेवक और भगवद्भक्त दयावान् और साधुसेवीहुये एक बेर रानाके साथ शिकारमें एक हरिणी के पीछे घोड़ाडाला और उसको तलवार से मारा वह गर्भ से थी बच्चे सहित दो टुकड़े होगई भवन को बड़ी दया और लज्जाहुई मनसे कहनेलगे कि प्रकटमें तो मैं ऐसा कि भगवद्भक्तों में गिना जाताहूं और आचरण यह कि जो भगवद्विमुख भी न करै उसी समय प्रणकिया कि लोहेकी तलवार रखनी प्रयोजननहीं सो एक तलवार काठकी और मूठ उसकी लोहेकी बनवाली जब कबहीं राना के दरबारमें जाते उसी तलवार को साथ लेजाते एक पट्टीदार भाई

को यह वृत्तांत ज्ञातहुआ राना से कहदिया राना को विश्वास न आया उसने सौगन्द खाकर कहा तब भी रानाने इसके निर्णय करने में एक वर्ष बिताया जब उस चुगुलीखोर ने यह हठकिया कि जो झूंठ ठहरे तो मुझको वधका दण्ड दियाजाय तब एक जगह सभाकी और सब उत्तम राजसेवक इकट्ठेहुये पहिले राना ने अपनी तलवार निकालकर लोगों को दिखलाया फिर बारी के साथ सबकी तलवार देखी जब बारी भवन महाराज की पहुंची तब तलवार निकालकर यह कहा चाहते थे कि जो चाहो सो करो तलवार मेरी दारु अर्थात् काठकी है पर भगवत् इच्छासे यह वचन मुखसे निकला कि सार अर्थात् पोलादकी है यह कहकर तलवार को मियानसे खींचा और ऐसी निकली कि मानों हज़ार बिजली एक बेर बादलसे निकली उजेरी व तड़पसे सबकी आंखें बन्द होगईं रानाने कहा कि मारो चुगुल अभागे के शिरपर और यह कह कर उसके वधकी इच्छाकी भवन ने विनय किया कि इसने कुछ मिथ्या नहीं कहा है भगवत्की इच्छासे यह तलवार पोलादकी होगई है नहीं तो वास्तव करके लकड़ी कीथी राना को भक्तिका विश्वास हुआ और चाकरी के परिश्रमसे छुट्टी करके पट्टा जागीरका सदाकालका लिखदिया और विनतीकी कि जो दर्शन देनेको आयाकरो तो मेरा निस्तारहै जाने रहो कुछ आश्चर्य्य नहीं जो काठकी तलवारको भगवत् ने पोलादी करदी किस हेतु कि भगवद्भक्तों की इच्छा व वचन तलवार से अधिकहै कि पापियों के पापकी सेना को वध करके दृढ़ राजभक्ति देश को कृपा करके देदेते हैं जो उनके मुख से एक लकड़ी के निमित्त वचन पोलाद निकलगया और उसीप्रकार वह होगया तो क्या आश्चर्य्य है॥

कथा रांकाकी ॥

ये रांका परमभक्त भगवत् के जाति के कुम्हार हुये जो कुछ अपनी जातिवृत्तिसे उत्पन्न करते सो सब हरिभक्तोंकी सेवामें लगादेते एकबेर कच्चे बर्त्तनोंका आँवाँ बनाकर तैयार किया और किसी कारणसे दिनमें आग न डाली रातकेसमय एक बिलाई ने बच्चेदिये और एक कच्चेबर्त्तन में रखकर चलीगई रांकाजी को यहबात मालूम न हुई प्रभातको आग लगादी जब आगने अच्छा प्रकाश व बल किया तब यह बात जानी विकलहोकर बच्चोंके निकालनेके उपायमें लगे पर कुछ नहोसका अधिक

दुःख व शोकहुआ उस रोदन करनेके समय सिवाय एक भगवत्‌के और कोई रक्षा करनेवाला न सूझा जानेरहो कि जो रांकाजीका सब घर जल जाता अथवा उनके प्राणोंको संकट कोई आता तो भगवत्‌से कबही न कुछ कहते किसहेतु कि जब भगवद्भक्त अपने स्वामीसे मुक्तितक की याचना नहीं करते दूसरी बातें तुच्छकी कब चाहना करते हैं और विनामांगे, जांचे उनकी इच्छा सब पूर्णहो जाती है भगवत्‌से, मांगने का प्रयोजन नहीं इस लिखने का प्रयोजन यह कि भगवद्भक्तों की, दया और करुणा पर दृष्टि करना, चाहिये कि एक तुच्छ जीवका दुःख नहीं सहिसक्ते और विकलताई की अवस्थामें जो काम कबहीं न किया सोभी कर बैठते हैं जब भगवत् ने विकलदशा अपने भक्तकी देखी तो यह चरित्र किया कि सबआँवाँ पकगया पर वह बर्त्तन जिसमें बच्चेथे कच्चा रखदिया अग्नि की उष्णताभी न पहुँची, रांकाजी उन बच्चोंको कुशलदेखकर तनुमें न समाये और भगवत्‌को अतिप्रेम से दण्डवत् प्रणाम किया तबसे कुम्हारों में यह रीतिहै कि जब आँवाँ तैयारहो उसीदिन आगलगादेतेहैं॥

कथा केवलराम की ॥

केवलरामजी ऐसे परमभक्त औ, भागवतधर्म्म के प्रवृत्त करनेवाले हुये कि जिनलोगों ने कहीं भक्ति और भगवत्, और गुरु और भक्तोंके नाम कोभी नहीं जानाथा ऐसे लोगोंको पवित्र करके भगवत् में लगा दिया दुःखसुख मित्र शत्रुसे अलग और तिलकमाला नवधाभक्ति के वशीभूत बड़ेदृढ़ थे भगवत्‌के चरणों में प्रीति और भक्ति निष्काम हुई और लोगोंपर दया और कृपाविना कारण सबके घरपर जाकर किया करतेथे कि श्रीकृष्ण स्वामीकी सेवा और नाममें मनलगाओ यहदान हमकोदेव और भागवतधर्म्म उनको समझाया करते जहां कहीं दश बीस साधुदेखते उनको शालग्रामजी और भगवन्मूर्त्ति अपने पाससे देकर पूजा और सेवाकी रीति उपदेश किया करते एकबेर बनजारे ने अपने बैलपर कोड़ामारा स्वामीजी बेसुधि व विमलहोकर धरती पर गिरपड़े लोगोंने दौड़कर उठाया जो शरीरपर निगाहकिया तो साठकोड़ेकी मारका उपड़ाहुआ साफ़ दिखाई पड़ा सबको आश्चर्य हुआ कि यह रीति दयाकी जानें किसीनेसुनी होगी ॥

कथा हरिव्यास की ॥

हरिव्यासजी ऐसे भगवद्भक्तहुये कि देवताओं को अपना चेलाकरके भगवत्का भक्तकरदिया भगवद्भक्तों से ऐसी प्रीति थी कि कबहूं उनसे अलग नहीं होते और जिस प्रकार राजा जनक ऋषीश्वरों के सत्संग और जमावड़ी में रहाकरते थे इसी प्रकार हरिव्यासजी रहाकरते साधुओंकी सेवा करनेवाले ऐसेहुये कि संसार में कदाचित् कोई हुआहो सिवाय भगवत् और भक्तों के चरित्र से दूसरी ओर मन नहीं देते एकबेर चरथावलग्राम में हराबाग़ देखके टिके और इच्छाथी कि भगवत्की सेवा पूजाकरके भगवत्प्रसाद पावेंगे उसी बाग में एक दुर्गाका मन्दिर था किसी ने वहां बकरा मारा हरिव्यासजी को दयालुता करके कि स्वभाव हरिभक्तों काहै बहुत करुणा आई और मनकोव्यथा हुई भूँखेप्यासे भजन करतेरहे दुर्गा महारानी भगवद्भक्तों के दुःखको न सहिसकीं साक्षात् होकर हरिव्यासजीसे कहा कि भगवत्प्रसाद करो हरिव्यासजी ने उत्तर दिया कि जहां ऐसा अन्याय होताहै तहां रसोई किस प्रकार होसक्ती है दुर्गाने कहा कि मेरे ऊपर कृपाकरके अपराध क्षमाकरो और भगवन्मंत्र उपदेश करके इस नगरको पवित्र करदेव हरिव्यासजी ने देखा कि दुर्गाके चेले होनेसे सबलोग दुरुस्त होते हैं इसहेतु भगवन्मंत्रका उपदेश किया जब दुर्गा वैष्णवहुई तब नगरको वैष्णव करना उचित जाना जो सरदार था उसको रातके समय पलँग में डालदिया और कहा कि जो अपना भलाचाहताहै तो हरिव्यासजी का सेवकहोकर भगवद्भक्ति अंगीकार कर नहीं तो सब नगरको नाश करदेऊंगी तुरन्त सबलोग आये चेलेहोकर भगवद्भक्त होगये और जो अपराध किये थे सबसे छुट्टी पाई हरिव्यासजी कुछदिन वहां रहे ऐसा उपदेश किया कि भङ्गीतक हरिभक्त होगये ॥

ग्यारहवीं निष्ठा ॥

व्रत व उपवासके वर्णनमें जिसमें कथा दो भक्तोंकी है ॥

अमृत कुलिशरेखा श्रीकृष्णस्वामी के चरणकमलों को दण्डवत् करके नृसिंह अवतार को प्रणाम करताहूं कि अपने परमभक्त प्रह्लादके निमित्त मुलतान नगर में नृसिंह रूप धारण करके हिरण्यकशिपु को परमधाम दिया उपासक भगवत्प्राप्ति के निमित्त उपायदृढ़है कि सब

कोई विनाअन्य परिश्रम भगवत् को पहुंचसक्ताहै लिखाना श्लोक श्रुति व पुराणोंका कुछ प्रयोजन नहीं किएकादशी व जन्माष्टमी व रामनवमी आदि के माहात्म्य की पोथियां और अन्य व्रतों की विख्याति व सब कोई जानते हैं निश्चय निर्णयव्रत एकादशी का दशमी के ऊपर है इस कारण से कि दशमीविद्धा व्रत सब स्मृति व पुराणों में वर्जित लिखा है और कारण वर्जने का यहहै कि दशमी के दिन दैत्यों ने जन्मलिया जो दशमीविद्धा व्रतहो तो दैत्य और राक्षसों की वृद्धिहोकर धर्मका नाश होजाय और एकादशी के दिन देवता उत्पन्नहुये इसहेतु एकादशी व्रत से देवता प्रसन्न होते हैं और भगवत् प्रसन्न होकर व्रत करनेवाले के हृदय में प्रकाशित होते हैं वेध मेलको कहते हैं अर्थात् पहिले दिन आरम्भ में दशमी हो फिर एकादशी सो वेध के निर्णय में कई विरोधहुये स्कंदपुराण में चालीस घड़ी का वेध लिखा है अर्थात् जिसके आरम्भ में चालीस घड़ी दशमी होय तो उसके प्रभात व्रत करना चाहिये जो चालीस घड़ी से अधिक दशमी होय तो दूसरे दिन अर्थात् द्वादशी को व्रतहोगा सो इस वचन पर निश्चय कालीकंठीवाले रखते हैं जाने रहो कि कालीकंठीवाले बहूजी के चेले कहलाते हैं मत उनका वैष्णवी है दुआबे यमुना व गंगा के सिवाय दूसरे देशमें इस पंथवाले नहीं हैं मौजे रनदेवा सहारनपूर के इलाके में उनका गुरुद्वारा है आचार्य्य इस पंथका योग्य व सिद्ध था रीति उपासनाकी उचित व अंगीकार योग्य है व शास्त्राज्ञा के अनुसार है पर इस समय इस पंथ में कोई पण्डित योग्य व सिद्ध और जाननेवाला भेद उस उपासना का नहीं इस कारण से प्रकाश कम है बरु बहुत घराने से न जानने के कारण वह उपासना त्याज्य होगई है अब स्कंदपुराण में बीसप्रकार का निर्णय इस व्रत में आधा अर्थात् जो किसी ने इकतालीस घड़ी दशमी को उचित जाना तो वह एक प्रकार ठहरी और इसीभांति जिसने पैंतालीस घड़ी को सिद्धान्त किया तो यह दूसरी प्रकारहुई इसीक्रम से साठघड़ी तक बीसप्रकारकी होगई और नाम हरएक केव्याली व महाव्याली व भया व महाभया इत्यादि लिखे हैं सो सिवाय कालीकंठीवालों के और कोई उस पंथका प्रवर्त्तक नहीं इसहेतु विस्तार व वर्णन करना प्रयोजन नहीं समझा और चारों सम्प्रदायके वेधका निर्णय यह है कि निम्बार्क संप्र-

दायवालों ने श्रुति व स्मृति की आज्ञा के अनुसार पैंतालीस घड़ी के वेध को अङ्गीकार किया अर्थात् प्रारम्भ अगिले दिनका पिछली अर्द्ध रात्रि से है जो आधीरात के उपरान्त दशमीहोय तो अगिले दिन व्रत करना न चाहिये क्योंकि दशमी का वेध होगया और इसरीतिको कापालिक वेध कहते हैं विशेषकरके सिद्धान्त जाननेवालों को उपासना का यह निश्चय है कि ग्रीष्मऋतु में सैंतालीस घड़ी पर आधीरात होती है और हेमन्तऋतु में तेंतालीस घड़ीपर सो जिस तिथिमें जितनी रात गत होनेपर आधीरात हो उसको मुख्य जानना चाहिये पैंतालीस घड़ी के प्रबन्ध का प्रयोजन नहीं पर सामान्य विख्यात पैंतालीस घड़ी के वेधकी है और रामानुज सम्प्रदाय में स्मृति व पुराणकी आज्ञाके अनुसार पचपन घड़ी तिथि आजके बीतनेपर अगिले दिनको ग्रहण किया है अर्थात् ब्राह्मीमुहूर्त्त का आठवां भाग रातका है जबसे प्रारंभ हो तब से तिथिका आरम्भ है व प्रमाण रातका भरतखण्ड में चालीस घड़ी तक है इस हेतु आठवां भाग रातका पांच घड़ीहुआ सो इस संप्रदाय के अनुगामी पचपन घड़ी से अधिक होय तो अगिले दिन व्रत नहीं करते जो कमहोय तो करलेते हैं और रही दोसम्प्रदाय एक विष्णुस्वामी व दूसरी माध्वी सो उनका निश्चय भी ऊपरकी लिपि के अनुसार है पर कोई कोई ने आठवांभाग रातका चारघड़ी भी अंगीकार किया है इस हेतु छप्पन घड़ी दशमी का वेध मानते हैं व स्मृति लोगों में न होने एक निश्चय व निष्ठा के कारण से कई मत हैं अर्थात् कोई तो पैंतालीस घड़ी और कोई पचपन घड़ी कोई छप्पन घड़ी मानते हैं और कोई अरुणोदय वेध मानते हैं अर्थात् अट्ठावनघड़ी से अधिक दशमी होय तो अगिले दिन व्रत नहीं करते और कोई तिथिका प्रारंभ सूर्योदय से मानते हैं उस समय दशमी हो तो व्रत नहीं करते नहीं तो साठ घड़ी दशमी तक वेध मानने का प्रयोजन नहीं और कोई ग्यारहका अंक मुख्य जानते हैं यह कि पत्रे में जिस दिन ग्यारहका अंकहो उसी दिन व्रत करते हैं और जो पन्द्रह दिन में एकादशी घटजाय और पत्रे में ग्यारह का अंक न हो तो व्रत नहीं करते काश्मीर इत्यादि देशों में पश्चिम पांच घड़ी दिन चढ़ेतक जो दशमी हो तो उसीदिन व्रत करते हैं पश्चिम देश में दशमीविद्धा व्रतकरनेका कारण यहहै कि शुक्राचा-

७५ ८८५ जौ० राक्षसों के गुरुथे उनको अपने शिष्यों की वृद्धि करनी थी इस हेतु उस व्रत की प्रवृत्ति चलादी पर विष्णुनारायण ने दशमी वेद्धा व्रतको त्याज्य किया और इसका निषेध आप वैकुंठसे आय कर ऋषीश्वरों से कहा कि यहवृत्तान्त पद्मपुराण इत्यादि में विस्तारकरके लेखा है सो उन शुक्राचार्य्य के मतको मूर्खोंने अबतक अंगीकार कर रक्खाहै कोईका यहमतहै कि एकादशीको नाजखानावर्जितहै सो जिस घड़ी एकादशी प्रारम्भहो अन्नजल छोड़देनाचाहिये और जब द्वादशी प्रारम्भ हो पारणकरना उचितहै इसके आचरण न करनेवाले दक्षिण देशमें सुनेजातेहैं सो हरएक देशकी रीति व उपासना का विरुद्ध जो है सो लिखा गया पर शास्त्र के जाननेवालों से विशेष करके तीनप्रकारके वेधकी रीतिहै एक पैंतालीसघड़ी दूसरी पंचपनघड़ी तीसरी छप्पनघड़ी और यहभी जानेरहो कि शास्त्रों में जो त्रस्पर्शक व्रतका पुण्य बड़ा लिखा है उस त्रस्पर्शक काहै कि जो प्रारम्भतिथिमें घड़ी दो घड़ी एकादशीहो और फिर द्वादशी आरम्भहोकर तिथिके बीतनेके पहिले त्रयोदशी आरंभहोजाय और उसत्रस्पर्शक का पुण्य नहींलिखाहै कि जिसकेआरंभ में दशमीहो पीछे एकादशी उसीतिथिमें भोगकरके फिर द्वादशीप्रारंभ करजाय वरु दशमीके वेधके कारणसे यह त्रस्पर्शक त्याज्य और निषेध है॥ जन्माष्टमी व्रतमें श्रीसम्प्रदायवाले सिंहके सूर्य्य में जो अष्टमी हो उसको जन्माष्टमी मानते हैं और उस अष्टमी में कृत्तिका नक्षत्र अथवा सप्तमीका वेध एकादशीके वेधकी रीतिसे मानना योग्यहै जाने रहो कि जन्मोत्सव व सालगिरह इत्यादि में जन्मके नक्षत्रपर दृष्टि होती है सो भगवत् का आविर्भाव रोहिणी नक्षत्रमें हुआ इसहेतु कृत्तिका का वेध मानना योग्यहै और जो सिंहका सूर्य्य भादों महीनेमें पांचदिन पीछेतक अष्टमी से न हो तो आश्विनमें व्रतकरते हैं और दूसरे संप्रदायवाले तीनों भादोंवदी अष्टमीको मुख्य मानतेहैं पर सप्तमीके वेधपर निश्चय करके दृष्टि जाती है जो एकपलभी सप्तमी और सारादिन और रातको अष्टमीहो तो उसदिन व्रत न होगा अगिले दिनहोगा कृत्तिकाके वेधपर निगाह नहीं विष्णुस्वामी सम्प्रदायमें वल्लभकुलवालों के भावकी बातें निराली हैं कि नियमपर प्रेमप्रबल है स्मार्त्त मतवाले चन्द्रोदयके समय अष्टमीका होना सिद्धांत समझतेहैं सप्तमी के वेधपर कुछदृष्टि नहीं रघुन-

न्दन महाराजका अवतार चैत्रसुदी नवमीको और श्रीवामनजी का अव- तार भादों सुदी द्वादशीको हुआ और नृसिंहजीका प्रादुर्भाव वैशाखसुदी चतुर्दशीको हुआ उनव्रतोंमें भी वेध अष्टमी व एकादशी व त्रयोदशीका मानना चाहिये और इसीप्रकार चैत्रसुदी द्वीजको सीता महारानी का और भादोंसुदी अष्टमी को राधिकामहारानीका जन्मोत्सवहोता है उन के जन्मोत्सव व अनन्तचौदश आदि व्रतोंमें वेधकी रीति है पर जाने रहो कि कोई तो भगवत् अवतार और महारानीजी के जन्मके दिनको व्रत मानते हैं और एकादशीकी भांति निर्जल उपवासकरते हैं और भ- गवत् उपासक उत्सव समभकर उत्साह जैसे भगवज्जन्म और साल गिरहको करते हैं और जन्म समयके पीछे पञ्चामृतलेकर सबप्रकारके व्यंजन पक्कान्न अपनी सामर्थ्यके योग्य भगवत्को अर्पणकरके भोजन करते हैं और जेलोग जन्माष्टमीके दिन यह वाद करते हैं कि अर्द्धरात्रि पीछे भोजनकरना निषेधहै उनको यह उत्तरदेतेहैं कि वहरातनहीं करो- ड़ों दिनसे अधिक प्रकाशितहै और यहभाव उनका सत्य व सिद्धांतहै जन्मोत्सवकी उमंग जिसप्रकार भक्त और उपासकलोग करते हैं कोई लिखनहींसक्ता अपने अपने भाव और भक्तिके आधीनहै कितनेलोगों का ऐसा भाव देखनेमें आया कि पुत्र अथवा पौत्रके जन्म अथवा वि- वाहमें जो एक रुपया खर्चकिया तो भगवज्जन्मोत्सवमें उससे दशगुण उत्सवकिया और वह धूमधाम व आनन्दकिया कि अनायास निश्चय करके भगवच्चरित्रोंमें मनलगजाय जेलोग एकादशी नियमके साथ कर- ते हैं उनकी यह रीतिहै कि नवमी के दिन एकभक्त हविष्यान्न जैसे चावल व मूंग व यव व गेहूं व तिल व घीखाते हैं और दशमी के दिन एकभक्त फलाहार और एकादशीको निर्जल व्रत करतेहैं व्रतके दिनको प्रभातसे भगवद्भजनमें व्यतीत करना उचितहै दूसरी ओर चित्त न जाय गवाही और मुन्सफ़ी राहचलना शतरंज गंजीफ़ा यहसब खेलना दिनकासोना स्त्री व मित्रका देखना और दूसरीनिषेध सब जैसेपान व अंजनइत्यादि जो कि विस्तार करके एकादशी माहात्म्यमें लिखाहै यहां विस्तारकरके लिखना व्यर्थ समझा क्रोध व मिथ्याबोलना इत्यादिका तो लिखनेका प्रयोजन नहीं कि वे सर्वथा वर्जित हैं रात्रिको जागरण करना उचित है और जो किसी कारण से समाज भगवत्कीर्तन और भगवद्भक्तोंका प्राप्त

न होसके तो आप अकेला भगवद्भजनमें जागतारहै द्वादशी के दिन भजनपूजन किये पीछे ब्राह्मणों को यथाशक्ति श्रद्धा भगवत् प्रसाद भोजनकराकर और रुपया व बर्त्तन व अन्न व वस्त्र यथा श्रद्धादामदेकर और फल उसव्रत आदिका भगवत् अर्पण करके तब आप भोजनकरै पारण द्वादशी में उचितहै और जिसदिन कि वेधके विचार से व्रत द्वादशीको होगा तो पारणत्रयोदशी में आपसेआप उचितहोगा और जानेरहो कि द्वादशी शुक्लपक्ष आषाढ़ व भादों व कार्त्तिकमें बीस बीस घड़ी अनुराधा व श्रवण व रेवती नक्षत्रों की पारण के निमित्त त्याज्य हैं जो उन बीस घड़ीमें पारणकरै तो बारह एकादशीके व्रतका फल जातारहताहै बीस बीस घड़ी तीनों नक्षत्रों के निषेध का निर्णय कईप्रकारपर लिखा है पर बहुत लोगोंका सम्मत शास्त्रके प्रमाणसे निश्चय इसबातपरहै कि अनुराधा नक्षत्रकी बीसघड़ी नक्षत्रके प्रारम्भसे पहिली में व श्रवणनक्षत्र की बीसघड़ी बीचलीमें व रेवतीकी बीसघड़ी अन्तवाली में पारण निषेध है उन बीसघड़ीके आगे पीछे किसीसमय करलेवे और यहभी जानेरहो कि जो निर्जल व्रत न होसके व निर्बलतासे भगवद्भजनमें बाधादेखपड़े तो ऐसीदशामें इतना फलाहार और दूध अथवा जलकालेना उचित है कि सामर्थ्य जागरण और भगवद्भजनकी बनीरहै और जो एकादशी व्रतके दिन शरीर ज्वरादिक करिके क्लेशित होजाय तो मूंग और गेहूं का भोजनकरना वर्जित नहीं है ऐसीरीति और भगवत्प्रीतिसे जोकोई व्रत करते हैं उनके मुक्त व सद्गतिमें क्या संदेहहै और एकादशी व्रतका जन्म व फल और व्रतों से सद्गतिहोनेका हेतु व सबवृत्तान्त एकादशी माहात्म्य इत्यादिमें लिखाहै इसकारण यहां नहीं लिखा और जितनी बातें प्रयोजनकी हैं उनको लिखदिया अब हमारे व्रतका वृत्तान्त सुनिये कि प्रीतितो ऐसी कि कबहीं यादनहीं रहती जो यादपड़गया तो दशमी से चिन्ता उपजी अर्थात् रात्रिके समय अच्छे प्रकार पेटभरके खाया और फिर विचारहुआ कि प्रभातको क्या क्या फलाहार होगा जब प्रभातहुआ तो नाना फलाहारका प्रारम्भहुआ और दोपहरके पहिले खानेको बैठगये और इतनाखाया कि दशमीकेदिन भी कबहीं न खाया होगा तिसके पीछे आतेही पलँगपर आरामकिया और जो दही व कूटू व सिंघारा व तरकारी अथवा पेड़ा हलुआ भोजन उष्ण व गरिष्ठ व

तीक्ष्णखाया था इसहेतु कईवेर पानीपिया कि पेट फूलगया और चार-
पाईपर लोटते रहे व अवहीं भोजन पचानहीं तवतक और उसऋतुके
मेवे तथा दवायें उसीसमय मँगाकरखाये पीछे रातहुई दूध और पेड़ा
खाये और ऐसी शीघ्रतासे चारपाईपरगिरे कि एकक्षण न वैठसके सारी
रात गदहेकी भांति लोटतेरहे अगिलेदिन चारघड़ी दिनचढ़े सुधिभई
और भजन इत्यादिकी वातक्याहै यहभी न वना कि एकवारभी भगवत्
का नाम मुखसे निकला होवै वाहवाह यहतो व्रत और भजन तिसपर
चाहना सद्गति और भगवत्‌धामकी हजार धिक्कार ऐसे जन्म और स-
मझ और वे विश्वासी पर अरे मनपापी अवभी समझ और तनक
विचारकर कि भगवच्चरणों से विमुख किसीनेभी सुखपायाहै जो तू इस
समाज में दृढ़ होजाय तो तेरेउद्धारमें क्या सन्देहहै कि मौसमवरसात
में जो सावनका महीना आया तो प्रिया प्रियतमको उमंगझूला झूलने
की हुई तो सब सखियों के सम्मतसे वरसानेका पहाड़ इस समाजके
निमित्त ठहरा जिसके चारोंओर वनकी हरियाली और कल्पवृक्ष व तं-
माल व कदम्ब व पाढ़ल व मौलसिरी व चम्पाआदि वृक्षोंपर वेलि
छाईहुई सुगन्धवाले फूल मौसमी व वे मौसमी भगवत् सेवा के निमित्त
फूलिरहेहैं और जहांतहां झरने झररहेहैं घटाउमड़ीहुई वादलोंकी मन्द
मन्द गर्जनमें कभी कभी विजलीकी चमक मयूर व सारस व कोकिला
व चकोर इत्यादि पक्षियों का शब्द मनोहर शीतल मन्द सुगन्ध पवन
अर्थात् किशोर किशोरी के आनन्द व प्रसन्नता के निमित्त वह पहाड़
ऐसा शोभायमान व आनन्द वढ़ानेवालाहुआ कि वरवस स्नेह व शृंगार
व प्रेम व प्रीति सब जगहसे उत्पन्न होतीथी वहां एक कल्पवृक्षके पेड़में
सखियोंने व स्वर्णसूत्र आदिकी डोरका झूलाडाला और उसमें सिंहासन
रत्नजटित डालकर जरी व मखमल व कीमखावका विछौना मोतियों की

समाज दर्शी कि ब्रह्माणी व पार्वती व इन्द्राणी आदि सब भीतकी चित्र होगईं और सब राग व रागिनी बेसुधि बुधि होरहीं उससमयकी शोभा व शृङ्गार व सामान व बहार व हँसी ठठ्ठा व आनन्दका किससे वर्णन होसक्ताहै सारा वन व पहाड़ परम आनन्द व मंगल का देनेवाला होरहाथा और हरएक सखी मोहिलेने के निमित्त उसे मनमोहन के कि जिसकी मायाके कटाक्ष में करोड़ों ब्रह्माण्ड नाचते हैं मोहनीरूप सबके गोरे मुखचन्द्रमापर अलकोंकी लटें छुटी हुईं माथेपर टीका व बेंदी उसके ऊपर चन्द्रिका कानोंमें करणफूल और झुमका पचलड़ी व चम्पकली व हैकल आदि गलेमें हाथों में बाजूबन्द व चूड़ी व कंगन जड़ाऊ व अंगुलियों में अँगूठी छल्ले आरसी और डुपट्टे लहँगे सुरुख व सब्ज व गुलेनारी व धानी व बैंगनी व नारङ्गी आदि रङ्गों को अपने अपने अङ्गों व रूपरंग के जरी गोटेपट्ठे से भरे पहिने हुये पांवों में पायजेब व झांझें व बिछुये व सजिके पगफूल उन सब सखियों के समाज में नटनागर ब्रजचन्द्र महाराजकी कैसी शोभाहै कि जिसप्रकार करोड़ों छवि मूर्त्तिमानों में शृंगार विराजमान हो शोभा व सजावट व दमक, झमक, वस्त्र, अलंकार ऐसा मनोहर व चित्त को हरै है कि सब सखियां मुख चन्द्रमा की चकोर होरही हैं एक हाथ किशोरीजी के गले में और दूसरे हाथ से अलकें जो पवन के झोंके से उरझ गई थीं सुलझाते हैं कबहीं चन्द्रावली व ललिता आदि से ठठ्ठा व छेड़छाड़ है और कबहीं तिरछे नयनों से नयन मिलाकर सुन्दरता व विलास देखते हैं और कबहीं राग गाने व सुनने पर चित्तहै और कबहीं वृषभानुनन्दनी से हँसी व खेल व अंकभरहै इसके आगे इस रसका अंत नहीं जो इतिश्री लिखूं॥

कथा अम्बरीषकी॥

राजा अम्बरीष चक्रवर्त्ती परमभक्तहुये जिनके गुण व दान व यज्ञका यश पुराणों में प्रसिद्ध है और सर्वसुख जो इन्द्रादिकको कठिन से मिले सो सब प्राप्त था पर कबहीं उनमें मन न लगाया भगवत् सेवा में ऐसी प्रीति व निश्चय था कि सब कैंकर्य्यता भगवत् की अपने हाथसे करते थे किसी सेवकको नहीं करनेदेते और एकादशी व्रतकी जो आज्ञा शास्त्र की है तिसको राजा ने अत्यन्त पालनकिया नवमी व दशमीके नेम व संयमके पश्चात् एकादशी व्रत करके जागरण किया करते थे और द्वा

दशी के दिन सबप्रकार द्रव्य व वस्त्रादि व कई करोड़ गऊदान करै और ब्राह्मणों को सबप्रकार के भोजन प्रसाद जिमाकरके तब आप पारण करते एकबेर दुर्वासा ऋषीश्वर आये राजा ने सत्कार व दण्डवत् करके भोजन के निमित्त विनयकिया दुर्वासा ने कहा कि स्नान करआवै सो स्नान करनेगये संयोग वश उसदिन द्वादशी दो दंडरही राजा को पारण की चिन्तापड़ी व ब्राह्मणों के सम्मत व आज्ञा से नारायण का चरणामृत पानकरलिया जब दुर्वासाजी आये और यह वृत्तान्त सुना तो क्रोधाग्नि से ज्वलित होकर राजाके मारने को उद्यतहुये औरअपनी जटा से कालकृत्या नामी अग्निकी ज्वाला ऐसी उत्पन्नकरी कि वह राजाके भस्म करनेको दौड़ी भगवत् जो कि सर्वकाल अपने भक्तों की रक्षाके चिन्तामें रहते हैं दुर्वासा के गर्वको न सहिसके चक्रसुदर्शन को आज्ञादी उसने पहिले तो कालकृत्याकी ऐसी सुधिली कि भस्मकरादिया फिर दुर्वासा ऋषीश्वरकी सेवाकी सुधि लेनेको चले दुर्वासाजी अपने प्राणके भय से भाग निकले और चक्रसुदर्शनजी ने रगेदलिया सारेसंसार व ब्रह्मलोक और कैलास आदिमें सब लोकपाल व देवता आदि की विनय व प्रार्थना करते फिरे पर कोई उनकी रक्षाकरने को समर्थ न हुये और निश्चय यह बातहै कि ऐसा कौनहै कि भगवद्भक्तके द्रोहीको रखसकै जब कहीं शरण न पाई तब वैकुण्ठनिवासी विष्णुभगवान् के पासगये और वहां से यह उत्तरपाया कि यद्यपि मैं तुम्हारी रक्षा करसक्ता हूं पर विचार करना चाहिये कि जो मेरे भक्त सब सुखछोड़कर मेरे शरण हुये हैं और मुझसे सिवाय और कुछआश्रय उनको नहीं तो किस प्रकार उनका अपमान हमसे सहाजाय कि तुम्हारी रक्षाकरूं सो तुमको उचित यही है कि तुम राजा अम्बरीषकी शरणजाकर अपनाअपराध क्षमाकराओ यह सुनकर दुर्वासा निराशहुये फिर राजाकी शरणमें आये दण्डवत् करिकै त्राहि त्राहि पुकारे राजाने स्तुति व प्रार्थनासे सुदर्शनचक्रको शीतल करिकै दुर्वासाजीका मान सन्मान ऐसा किया कि सब दुःख भूलगये और यह जानिये कि दुर्वासाजी एक वर्षतक व्याकुल भ्रमते रहे पर राजा ज्यों का त्यों दयाकरिकै युक्त एक स्थानपर खड़ारहा और दुर्वासाके क्लेश का शोच करतारहा सत्यहै कि भगवद्भक्तों को किसीके साथवैर नहीहोता क्योंकि उनकी दृष्टि में यह जगत् भगवद्रूप है अथवा भगवद्भक्त रूप है

पीछे राजाने दुर्वासाजीको भोजन कराया आप भोजनकिया यह दयालुता भक्तोंकी देख यशगातेहुये अपने आश्रमको गये इस कथामें एक सन्देह उत्पन्नहुआ कि भगवत्‌का प्रणहै कि कैसाही पापी शरण आवै अभय करदेताहूं अब दुर्वासा शरणगये न रक्षाकी तो प्रणमें विरुद्धपड़ा सो जानेरहो कि पहिले तो भगवत्‌ने आप दुर्वासाको उत्तरदेनेके समय संदेह यह दूर करदिया सो ऊपर लिखआये के सिवाय इसके भगवत् का वचनहै कि सब पाप क्षमाकरताहूं पर दो पाप नहीं एक यह कि मेरे भक्तोंका जो अपराधकरै जैसा दुर्वासाने किया और दूसरा जो मेरेनाम का अपराधकरै अर्थात् इस नियतसे पापकरै कि पाप करने पीछे नाम अथवा मन्त्र जपकर शुद्ध व पवित्र होजायँगे तो जब भगवत्‌का ऐसा वाचा प्रबन्ध है तो प्रणमें विरुद्ध कहां है जो यह कोई न मानै तौभी अच्छेप्रकार विचारकर देखा जाताहै तो शरणागत में भी कुछ विरुद्ध भगवत्‌के प्रणमें नहींहुआ क्योंकि दुर्वासा अपने प्राणकी रक्षाके हेतु भगवत्‌शरणहुये सो उपाय भगवत्‌ने बतलाया व दुर्वासाका प्राणबचा तो सन्देहको ठौर नहीं है और यहभी जानेरहो कि दुर्वासाजी पर राजा अम्बरीषका कुछ क्रोध नहीं आयाथा वरु भगवत्‌का क्रोधहुआथा कि चक्रसुदर्शनको आज्ञा दण्डकी दीथी यह प्रताप शरणागतका हुआ कि दुर्वासाका प्राणबचा नहींतो कहां उसप्रभुका क्रोध व कहां दुर्वासा बिचारा और मुख्यकारण इसचरित्रका यहहै कि भगवत् अपने भक्तोंके सब अपराधों पर तनक अवलोकन नहीं करते पर एक अहंकारपर तुरन्त दृष्टि होती है किसहेतु कि गर्व व अहंकारसे भजन व सेवामें बड़ा विघ्न होताहै इसहेतुसे अपने भक्तके गर्व को दूर करदेते हैं कि गरुड़ मार्कण्डेय व नारदआदिकी कथा साक्षी इसबातकी है सो दुर्वासाजीको गर्व अपनी सिद्धता व बड़ाईका हुआथा कि राजाकी परीक्षाके हेतु गये थे इसकारण भगवत्‌ने राजाही के शरणभेजकर दुर्वासाजीका गर्व दूर करदिया इस चरित्रसे एक उपदेश भगवत्‌का औरभी है और वह यह है कि जब भगवत्‌ने दुर्वासाजीको शरणसे निराश करदिया तो दुर्वासाजीको क्रोध आया भगवत् को शापदिया और उसके कारणसे दशबेर भगवत्‌को अवतार धारण करनापड़ा उपदेश इसमें यह हुआ कि जब हमारे ईश्वरको भी शरणनहीं देनेसे दशदेह अंगीकार करनी पड़ी तो

दूसरे मनुष्य जो शरणआयेकी रक्षा न करेंगे तो न जाने उनकी क्यागति होगी जब राजाकी भक्ति और भाव विश्वमें विख्यातहुई तब एक कोई राजाकी लड़की ने कि भगवद्भक्तथी राजा अम्बरीषसे अपने विवाहकी बात चलाई राजाने उत्तरदिया कि हमको भगवत्सेवासे छुट्टी नहीं व न स्त्रीकी चाहनाहै वह लड़की अधिक प्रेमयुक्त होगई बारम्बार हठकिया राजा उसके प्रेमके वशहोकर आप तो न गये पर अपनी तरवार भेजदी उसीसे विवाहका नेगचार सब हुआ जब वह रानी आई तब एकमहल अलग बना उसमें रहनेलगी एकदिन वह रानी पूजाका मन्दिर राजा का देखनेकोगई राजाजगे नहींथे रानी मन्दिर बहार लीपकर जलशुद्ध रखकर सबसाज पूजाकी तैयार करके चलीआई राजा जब पूजा करने आये तब सामग्री सजीदेखी बड़े आश्चर्य्य में हुये जब कितनेदिन ऐसेही वृत्तांत देखा तो एकरात राजा जागतेरहे और जब रानीआई तो पूंछा कि तू कौनहै जो मेरी सेवामें चोरी करती है उसने उत्तरदिया कि नई दासीहूं राजाने उसकीभक्ति देखकर आज्ञाकी कि अलगसेवा कियाकरो सो उसने ऐसे प्रेमसे सेवा पूजाको किया कि भगवत् व राजा दोनों प्रसन्न होगये विस्तार करके कथा इसनारीकी प्रेमनिष्ठामें लिखीजायगी दूसरी रानियों ने भी राजाकी प्रसन्नता देखकर सबने भगवत्सेवा पधराई सब कोई के प्रेमको देखकर राजा सबके महलों में जानेलगे पुरवासियों ने भी ऐसेही प्रेम सेवा उठाई वहां भी राजा जाते सब नगर भगवत् परायणहोगया अर्थात् जब राजा भगवद्धामको जानेलगे तो संपूर्ण अयोध्यावासियों को अपने साथलेतेगये और सब उसपदको पहुँचे कि योगीजन अनेक जन्मतक परिश्रम व क्लेश करके नहीं पहुँचते॥

कथा रुक्मांगदकी॥

राजा रुक्मांगद की कथा एकादशी माहात्म्य व पुराणों में प्रसिद्ध है उनकी एक फुलवारी ऐसी सुगन्धित व शोभायमानथी कि देवताओं की स्त्रियां वहां के सुख लेनेको उतरतीथीं एकदिन उनमेंसे किसीके बेर का कांटालगगया उसकी अशुद्धतासे उड़ न सकी मालीकी लड़की से कहा कि कोई एकादशी व्रत जोकिया हो तो उसका पुण्य मुझको दिलादेव कि स्वर्गजाऊं यह बात सुनकर राजाआया देवांगनासेकहा यहांव्रत कोई जानता नहीं उसने बतलाया तबराजाने एकसाहूकारकी लौंडी जो

मारने से भूंखी प्यासी सारादिन व रात जागतीरही तुलधाकर पुण्य दिलादिया कि देवांगना स्वर्ग गई व राजाने सारेदेश व नगरमेंडौंड़ीएका-दशीकी फेरवायदी हाथी घोड़ेतकउपास करतेथे अंतमें सबसमेत राजा वैकुण्ठ गया राजाकी लड़की भी एकादशी व्रतकी निष्ठायुक्त ऐसीथी कि एकादशी के दिन उसका पतिश्राया देखादेखी व्रतरहा पीछे भूंखसे वि-कलहोकरभोजनचाहा उसने माहात्म्यसे प्रवीणथी न दिया दोचारघड़ी पीछे वह मरगया भगवद्धामको गया उसकी स्त्री ने वड़ा उत्साहमाना स्तुति करतेकरते वह भी भगवद्धाम को चलीगई ऐसी ऐसी कथा एका-दशी माहात्म्य में बहुतहैं जिसकी इच्छाहो सो देखले ॥

बारहवीं निष्ठा ॥

महिमा महाप्रसाद जिसमें चारभक्तोंकी कथा है ॥

श्रीकृष्णस्वामी के चरणकमलोंके जम्बूफल रेखाको दण्डवत् करके हयग्रीव अवतार को दण्डवत् करताहूं कि कामरू देशमें देवताओंकी सहायता व दुष्टोंके नाशकेहेतु अवतार धारणकिया गीताजी में भगवत् की आज्ञाहै कि जो कुछ करै जो भोजनकरै जो यज्ञकरै जो देवै जो तप करै सब मेरे अर्पणकरके शुभ अशुभ कर्मों के बंधनसे छूटजावेगा इस हेतु उचितहै कि जो कुछ खाना पीना व सामा नवीन तैयार हो सो सब पहिले भगवत्अर्पणकरै तब अपनेअर्थ लगावै कि भगवत् वह अर्पण किया हुआ भक्तका अंगीकार करते हैं सो गीताजी में भगवत्ने कहाहै कि पत्र पुष्प फल जल जो वस्तु भक्तिसे हमको निवेदन करतेहैं प्रसन्न होकर खाताहूं भगवत्प्रसादके भोजनसे व शास्त्रोक्त कर्मोंके करने से कितना गुण भारीहै कि बहुतशीघ्र अन्तःकरण निर्मलहोकर भगवच्चर-णों में प्रीति होजातीहै और पुराणोंमें लिखाहै कि हजार एकादशी और सौ द्वादशीका फल भगवत्प्रसादके एक कणके सोलहवां अंशके मा-हात्म्य को नहीं पहुँचता है गरुड़पुराण में भगवत् की आज्ञाहै कि जो भगवत्प्रसाद करके भोजन करते हैं उनके मनके सब रोगोंका नाशहो-जाताहै और पवित्र होतेहैं फिर लिखा है कि जो कोई सामग्री खानेपीने की मेरा प्रसाद करके खाते पीते हैं वे मेरे समीपपहुँचते हैं भगवत्की आज्ञाहै कि जो कोई विना भगवत् को भोग लगाये खाते पीते हैं तो भक्ष्य उनका शूकरके भक्ष्य सदृश व पानी रुधिरके सदृशहै और ऐ-

साही वचन विष्णुपुराणका है सो देखो भगवत् अर्पण करने से कुछउस वस्तुमें से घटती व हानिभी नहींहोतीहै केवल इतनीही बातहै कि जब रसोई खानेको बैठे तो भगवत्का ध्यानकरके भगवत्अर्पण करदिया और इतना औरभी ध्यान करलिया कि भगवत् ने इस भोज्यवस्तु व पानीको भोग लगाया पीछे भोजन करलिया इसीप्रकार सम्पूर्णसामा व वस्तु जब घनके व सज के आवैं भगवद्भेंट कियाकरें जो भगवत्मूर्त्ति न होय तो ध्यान में भगवत्अर्पण करके तब अपने अर्थ व काममें लगावें और जो ऐसा संयोग पड़े कि रसोईकी सामग्री को पहिले कुछ किसीने खालियाहो तो ऐसा विचार करलेना कि पहिले भगवत्अर्पण होगयाहै उसमें का शेष यह है पर भगवद्ध्यान करके कुछ भोग लगानेका चिन्तवन करलेना निश्चय चाहिये क्योंकि विना भोगलगाये भगवत् प्रसाद नहीं होसक्ता अर्थात् सर्वथा कोईवस्तु विना भगवत्अर्पण किये त्याज्य व महा हलाहल विष है महा हलाहल इस से है कि विष खाने से एकबेर मरता है व इस विषसे चौरासीलाख वेर मरना पड़ता है एक किसीको संदेह हुआ कि सैकड़ों हज़ारों लोग भगवत्प्रसाद व चरणामृत ठाकुरद्वारों में खाते पीते हैं और बहुत लोग शालग्राममूर्त्ति अपनेपास रखते हैं और विना भोग लगाये कुछ नहीं खाते परन्तु हृदयकी निर्मलता और भगवत् की प्राप्ति किसी किसीको होती है इसका कारण क्याहै सो जाने रहो कि इसमें विश्वास कारणहै जैसे जैसे विश्वासकी वृद्धिहोगी तैसेतैसे हृदय भी निर्मल होताजायगा अन्तको निर्मलता व भगवत्प्राप्ति होजायगी जैसे पारसमणि अर्थात् पारस व लोहेके बीचमें एक महीन वस्त्रका भी अन्तर जबतकरहैगा तो लोहा सोना नहीं होगा परन्तु लोहा व पारसमणि एकत्ररहैंगे तो वह वस्त्र थोड़ेही कालमें रगड़खाकर उड़जायगा व लोहा सोना निश्चय करके होगा और यहभी जानेरहो कि भगवत्प्रसाद व चरणामृत खानेपीनेवाला यद्यपि दृढ़ विश्वास युक्त नहीं है तथापि यमयातना व नरकोंका दुःख नहीं पावेगा भगवच्चरणामृत व महाप्रसाद की महिमा तो कौन वर्णन करनेसक्ता है भगवद्भक्तों का चरणामृत व जूठन का यह प्रताप है कि जिसके प्रभाव करके हज़ारों परमपातकी व अधम शूद्रभी भगवत् निकटनिवासी होगये कथा नारदजी व नाभा जिसने भक्तमालको रचना किया इसके निश्चय व साक्षीके निमित्त प्रत्यक्ष

हैं सिवाय इसके भगवत् अपने महाप्रसाद व चरणामृत की महिमा द्रौपदी व अम्बरीष आदि की कथासे प्रकट दिखाते हैं अर्थात् दुर्व्वासा जीने चरणामृतके लेनेके अपराधसे अम्बरीष को दुःखदियाथा उनकी क्या गतिहुई और द्रौपदी की कथामें लिखाजावेगा कि वनवासके समय राजा युधिष्ठिर को सूर्य्यने एकटोकनी दी गुण उस में यह था कि नित्य जबतक द्रौपदी भोजन न करती वांछित भोजन अपार उसमेंसे निकलता जाता एक दिन द्रौपदी के भोजन करलेने पीछे दुर्व्वासाजी दशहज़ार शिष्यों सहित आये राजा चिन्तामें पड़े श्रीकृष्ण महाराज पधारे एक पत्ता शाक का टोकनीमें से ढूंढके खा गये उसका यह प्रभाव हुआ कि दुर्व्वासाजी दशोंहज़ार अपने चेलोंके सहित ऐसे अघाय गये कि बाहर बाहर भाग खड़े हुये विचार करना चाहिये कि क्या भगवत् विना शाक के खाये दुर्व्वासाजीको नहीं अघाय सक्ते थे अक्षय अघाय सक्ते पर हठ करके शाक खानेका अभिप्राय केवल यह था कि भगवत् अपने महाप्रसाद का प्रताप दिखाते हैं कि जो कुछ मेरे अर्पण होताहै वह ऐसा अनन्त होजाताहै कि जैसा मैं हूं और करोड़ोंको अघवा कर सक्ताहै द्रौपदी ने पहिलेजन्म में थोड़ासा कपड़ा एक ऋषीश्वर को भगवत्की राहपर दियाथा वह ऐसा अनन्त हुआ कि दुःशासन खींचते खींचते हारगया एक बुन्द जो सिंधुमेंडाले तो बुन्दभी सिन्धु होजाताहै इसी प्रकार जो पदार्थ अनन्तको अर्पण कियाजाय अनन्त होजाताहै और जब ऐसा अनन्तहुआ तो उसके खाने पीने से हृदय निर्मल क्यों न होगा होवेहीगा विस्तारकरके लिखाजाता है अर्थात् रीतिहै कि जो पवित्रवस्तुहै सो अशुद्ध व अपवित्रको शुद्ध व पवित्र करदेतीहै यह बात अग्नि व जल व पवन के दृष्टांतसे अच्छेप्रकार निश्चय होती है इसीप्रकार वह भोजन व जल जिस समय भगवत् परम शुद्ध व परमपावन को पहुँचा तो उसीसमय शुद्ध व परमपावन होगया उस शुद्ध और पावन भोजन व जलको जबभक्तने सेवन किया तो उसभक्तकोभी शुद्ध व विमल व अनन्त करदिया विश्वास मूलहै देखो प्रसिद्ध है कि महात्मा सिद्ध राहचलते बहुतआदमी पापी व अपावनको अपनाजूंठन खिला कर अथवा शरीरसे शरीर मिलाकर एकक्षणमें अपने ऐसा निर्मल व पापोंसे मुक्त करदिया तो कारण इसका यही है कि वह महात्मा सि-

पावन व निर्मलथा अपनी विमलतासे दूसरेके हृदयका मल क्षणमात्र में दूरकर दिया तात्पर्य्य कहनेका यहहै कि कोई वस्तु विना भगवत्अर्पण किये कदापि अपने अर्थ न लगावै और यहभी लिखागया कि कुछ बड़ेक्लेश की बातनहीं एकबात की बातहै और केवल मन में ध्यान करलेना है पर यह दुर्भाग्यता हमलोगों की और कलियुग का प्रताप है कि थोड़ीसी बातनहीं होसक्ती हाय अफसोस कि मन भाग्यहीन ने मुझको बहुत भ्रमाया और इसी दुष्ट के करने से इस दशाको पहुँचाहूं कि जानै कबसे करोड़ों जन्म भांति भांति के लेकर अनेक प्रकार की पीड़ामें फँसाहूं पर अब मेरा भी अच्छा दांवलगाहै कि श्रीकृष्ण स्वामी के चरण कमलों की छांह मिलगई है देखूंगा कि इस मन दुष्टका बल चलताहै कि मेरे स्वामी पतितपावन दीनवत्सलके विरदकी रे मन तेरे बुरे चलनपर जो दृष्टिकरूं तो तू कदापि इस योग्य नहीं कि तेरी भलाई के निमित्त परिश्रम कराजावे परन्तु सदा मेरे पास रहताहै इसहेतु शिक्षा करताहूं कि इस रूप अनूप का चिन्तवन कियाकरे कि तेरे दोनोंलोक सुधर जावें दशरथ महाराजाधिराज का परमसुन्दर मंदिर है और दर व दीवार व क्षिति व छत्रआदि सुवर्ण व रूपमयी तिसमें हीरा लाल पन्ना आदि रत्नों से जड़ाऊ शोभायमान उसमें चारोंभाई मानों चारोंमुक्ति अथवा चारोंफल अथवा चारोंव्यूह अथवा चारोंउपासना अर्थात् नाम १ धाम २ लीला ३ रूप ४ स्वरूपवान् अपने खेल व बालचरित्रों से सब माता व दशरथ महाराजको परम आनन्द से पूर्ण करते हैं कबहीं तो माता के साथकोई खिलौना मांगने की हठ है कबही दशरथ महाराज के साथ घोड़ेपर चढ़ाने व तीर व कमान मँगा देने की हठ कबहीं दीवारी में चित्र व रंग रंगके जड़ाव व बेल बूटा सुनहरे देखकर प्रसन्न होते हैं और माता से पूंछते हैं कि यह क्याहै और कबहीं रत्नों में अपने प्रतिबिम्बको देखकर बूझते हैं कि यहकिसके लड़के हैं कबहीं खातेखेलते फिरते हैं और पक्षियोंको बटोर करके खिलाते हैं कबहीं उनके पकड़ने को दौड़ते हैं और उड़जानेपर मातासे हठहै कि तू पकड़करलादे और कबही चारोंभाई परस्पर हाथ पकड़कर नाचते हैं कबहीं रातके समय चन्द्रमा को देखकर माता से कहते हैं कि हमको भी ऐसाही मँगादेअर्थात् यह लीला व चरित्र परम मनोहर हैं कि ब्रह्मा शिवादिक देखकर

कबहीं तो परम आनन्द में मग्न होते हैं और कबहीं माया के जाल में फँसजाते हैं चारों भाइयों के मुख की शोभा ऐसी है जिसको देखकर आनन्द को भी आनन्द होता है व सम्पूर्ण शोभा व शृङ्गार व दृष्टान्त भालके श्रीपर निछावर होकर दर्शन में बेसुधि होजाते हैं जरदोज़ी काम व गोटेपट्टे व जवाहिरात से भरीहुई टोपी शिरपर घूंघरवाली जुल्फैं छुटी हुई भालपर गोरोचनका तिलक कानों में छोटे छोटे कुण्डल और झुमका बुलाक जिस में सबजा पड़ाहुआ है पहिनेहुये झलकदार कपोलों पर डिठौना लगाहुआ गले में कंठी व कठुला जड़ाऊ व बघनखा व जुगनू शोभित हाथों में बाजूबन्द पहुँची कड़े चरण कमलों में घुंघुरू व झांझें व नाजुक अतिसुकुमार शरीरों में जर्द सबुज धानी सुरुख कुरते महीन कौशल्या कैकेयी सुमित्रा आदि माता बालचरित्रों को देखतीहुईं आनन्द में मग्न व बेसुधि अपने भाग्यकी बड़ाई करतीहुई चारोंओर विराजमान हैं॥ कथा अंगदकी॥

अंगदजी चचा राजे सिलहदीरायसेन क़िल्ले में जाति राजपूत परमभक्त भगवत् के हुये प्रथम का वृत्तान्त यह है कि भगवत् से विमुख थे स्त्री उनकी परमभक्त साधुसेविनीथी एकसमय उस स्त्री के गुरूआये महल में भगवत् उपदेश व कथा कररहेथे अंगदजी आयगये बुरामाना गुरू चलेगये स्त्री भगवत् कथा व गुरूके दर्शन बंद होनेसे खाना पीना कहना सुनना त्यागकर दुःखित रहनेलगी अंगदजी उसके रूपमें आसक्त थे विकलहुये बहुत उपाय किया यहांतक कि शिर अपना उसके चरणोंपर धरदिया परन्तु प्रसन्न न हुई जब अंगदजी ने भी खानापीना त्यागकिया व वचन प्रबंधकिया कि जो तू कहैगी सोई करूंगा तब राजी हुई और कहा कि भगवद्भक्ति अंगीकार करो और गुरूजीके चेलेहोकर उनकी सेवा कियाकरो अंगदजी जाकर उस गुरूके चलेहुये माला तिलक धारण किया फिर उनको अपने घरपर लेआये और भगवद्भजन व साधुसेवा ऐसी प्रारम्भकी कि थोड़े दिनों में हृदय विमल व भगवत् की सच्ची प्रीति होगई एकबेर राजा किसी शत्रुसे युद्धकरने को चढ़ा व विजयपाई शहर लूटने के समय अंगदजी को एकताज अर्थात् बादशाही टोपी ऐसी मिली कि उसमें एकसौ एक हीरेलगे थे सौ हीरे तो बेचके साधु सेवा व भगवत् उत्साह में लगाये और एकहीरे को बहुत

मूल्य व उसके सदृश मिलने योग्य दूसरा नहीं तिसको पगड़ी में अपने यत्नसे बांधलिया श्रीजगन्नाथराय की भेंटके निमित्त रक्खा इस हीरेकी ख्यालहुई राजाने सब लूटको माफकिया उस हीरेको मांगा अंगदजी ने लोगों के समझानेपर भी न माना व उत्तरदिया कि यह हीरा श्रीजगन्नाथरायजी को भेंट होचुका है अब किसीको नहीं मिलसक्ता अंगदजी की बहिन थी उसके हाथकी रसोई भगवत् को भोग धराकरते थे और उसकी एक छोटी लड़की भोजन के समय साथ खाती थी राजाके लालच के फन्द में आयके उस स्त्रीने रसोई में विष डाला अंगदजी भगवत्को अर्पणकरके प्रसाद भोजन करने बैठे तब उस लड़की को बुलाया उसको उसकी माने छिपारक्खा जब वह न आई तब अंगदजी ने भी भोजन न किया तब उस लड़की की मा धिक्कार अपने को मानकर रोने लगी व अंगदजी से सब वृत्तान्त विष मिलाने व लड़की को छिपारखने का कहकर मिलकर रोई अंगदजी अपने को विष देनेपर कुछ मनमें न लाये परभगवत् को अर्पण होने का क्रोध हुआ उसको निकाल दिया और आप उस प्रसादको अमृत जानकर भोजन करगये प्रेम व आनन्द में मग्न होकर भगवद्भजन में लगे राजाको यह सब समाचार पहुँचे इस अभिलाष में रहा कि अब अंगदजी के मरनेकी खबर आती है और अंगदजी को महाप्रसाद में अमृत का दृढ़भाव रहा इस हेतु उसने अमृत का फल दिया और क्षण क्षण शोभा मुख की और हृदय को आनन्द अधिक होतागया और विषदेने दिलानेवाले अभागों को लज्जा व शोक प्राप्तहुआ पीछे अंगदजी उस हीरेको जगन्नाथरायजी की भेंट करने के निमित्त लेकर चले राहमें राजाके चाकरों ने घेरलिया कहा कि हीरादेव नहीं तो लड़ो हमारे साथ अंगदजी ने कहा कि एक क्षणमात्र विलम्बकरो यह कहकर तालाब के किनारे पर गये और भगवत् से विनय किया कि महाराज यह आप की अमानत मेरे पासथी सो आप सम्हाल लें यह कहकर और सबको दिखाकर उस हीराको तालाब में डाल दिया भगवत् अपने भक्तकी विनती सुनकर सात सौ कोस आनकर पानीतक पहुँचने न दिया लेगये और अपनी भक्ति और भक्तोंकाप्रताप प्रकटकिया सो अबतक भुजामें शोभितहै दर्शन होतेहैं और राजाके चाकरलोग व आप राजाने उसतालाबका पानीउलच-

वायके तलाश किया कराया पर हाथ न लगा लज्जितघरगये और अंगदजी अपने घर चलेआये राजा अंगदजीको विश्वास करके मानने लगा और पुजारियों ने जगन्नाथरायजी की आज्ञापाकर उसहीरेके पहुँचनेका समाचार अंगदजी के पास भेजदिया अंगदजी अति हर्षित होकर जगन्नाथपुरी को गये उसहीरे सहित दर्शनकरके आनन्दमें मग्न होगये राजा अंगदजीके जानेसे अतिविकलहुआ ब्राह्मणोंको वास्ते लेआने अंगदजीके भेजा अंगदजी ने न माना तब सबअन्नजल छोड़कर धरना बैठे तब अंगदजीआये व राजाने आगमन सुनकर आगे जाकर लिया व देखकर चरणोंसे लिपटगया अंगदजीने उठाकर छातीसे लगा लिया राजाको भगवद्भक्ति व साधुसेवाका उपदेशकिया राजाने धनसंपत्ति अंगदजीपर निछावर किया और भगवत्शरण होकर कृतार्थहोगया॥

॥ कथा पुरुपोत्तमपुरी के राजाकी ॥

पुरुषोत्तमपुरी के राजा परमभगवद्भक्त हुये और महाप्रसादमें ऐसी निष्ठाथी कि थोड़ी अवज्ञासे अपना हाथ कटवाडाला वृत्तान्त यहहै कि एकबेर चौसरखेलतेथे पुजारी जगन्नाथरायजीका महाप्रसाद लेकरआया राजाने दहिनेहाथमें पांसारहनेसे बांयाहाथ फैलाया पुजारी महाप्रसाद की अवज्ञा समझकर क्रोधयुक्त होकर महाप्रसाद फेरलेगया राजा इस अपराधसे लज्जितहोकर दौड़े पुजारीसे विनयप्रार्थना करके महाप्रसाद लिया शिरपर धारणकिया चूकके पश्चात्तापमें बहुत चिन्तायुक्त विना खायेपिये त्राहित्राहिकरते घरमें जाकर पड़रहे इस उपायमेंहुये कि किसी प्रकारसे दाहिने हाथको दूरकरना चाहिये कि भगवत् प्रसादसे विमुख हुआ फिर चिन्ताकरैं कि मेरेहाथको कोई कब काटसक्ता है इस शोच में मनमलीन चिन्तायुक्त रहतेथे एकदिन कारण इस मानसीव्यथाका मन्त्री ने राजासे पूंछा राजाने कहा कि रातके समय एक भूत आता है झरोखेकी राह हाथ डालकर शोरगुल कियाकरताहै सो तुम रातको मेरे मकानमें रहो जब वह प्रेत अपना हाथ झरोखे में डाले तब काट डालो कि उसीरात मन्त्री चौकीपर रहा राजाने झरोखे में हाथ डालकर शोर किया मंत्री ने ऐसी तरवार मारी कि हाथ साफ अलग जापड़ा जब मंत्री को मालूमहुआ कि राजाका हाथहै बड़े शोच व लज्जा में पड़ा राजाने कहा कि भूत व प्रेत वहीहै जो भगवत्से विमुखहै तुम चिन्ता मतकरो

हमको यह करना योग्य था भगवत् करुणासिंधुने अपने भक्तकी ऐसी निष्ठादेखके आज्ञाकी कि राजाको महाप्रसाद लेजावो व कटाहाथ उठालावो पुजारीलोग दौड़े व इधरसे राजा दर्शनको चले राहमें पुजारी लोग जब महाप्रसाद आगे लेकर देनेलगे तो राजाने बड़ेभाव व भक्ति से लेनेको दोनोंहाथ उठाये उससमय भगवत् कृपासे कटाहाथ भी नया निकल आया व राजाने दोनोंहाथोंसे महाप्रसाद लेकर अपनी छाती से लगाया और दर्शन करके प्रेमआनन्द में पूर्णहोकर भगवद्भजन में रहनेलगे भगवत्ने कटाहुआ हाथ अपने बागमें लगवादिया कि वह दौनाका वृक्ष सुगन्धवान् फूलोंका होगया कि अबतक उसके फूल जगन्नाथरायजीको चढ़ायेजाते हैं एकपुराणमें लिखाहै कि भगवत् जगदीश का प्रसाद अन्न जलके सदृश नहीं भगवद्रूप है जोकोई और विचार करते हैं सो पापी हैं और उनका नाश होजाता है ॥

कथा सुरेश्वरानन्दजी की॥

सुरेश्वरानन्दस्वामी चेले रामानन्दजी के परमभगवद्भक्त हुये और महाप्रसाद की महिमा ऐसी इस संसार में प्रकाशितकी जिसके प्रभाव करके हजारोंको दृढ़विश्वास होगया अर्थात् एकबेर राहचलते में किसी द्वेषीने दारू व मांसका बरा बनाहुआ आगे ले आकर कहा कि भगवत् का महाप्रसाद है सुरेश्वरानन्दजी ने भगवत् महाप्रसादका नाम सुनते ही भोजन करलिया और चलखड़े हुये पीछे से जो चले आते थे उन लोगों ने भी देखादेखी वही आचरणकिया स्वामीजी ने उनसे क्रोधकरके आज्ञाकी कि तुमने क्या खाया उत्तरदिया कि जो आपने स्वामी जी बोले कि हमने महाप्रसाद का भोग लगाया है यह तो मांस निकला और स्वामीजी के उदरसे तुलसी और गंगाजीकी रेणुका निकली तब चेले चरणों में पड़े और भगवद्भजन व महाप्रसादका विश्वास हुआ निश्चय करके समर्थको विषभी अमृतहै और असमर्थको अमृत विष तुल्यहै सो शिवजीने हलाहल पानकरलिया अबतक उनकेकंठकाआभूषणहै और राहुने अमृत पानकिया कि उसका शिर काटागया॥

कथा श्वेतद्वीपनिवासी भक्तों की ॥

श्वेतद्वीप भगवत्का विहारस्थान है और जो भगवद्भक्त शास्त्रों में चिरंजीव लिखे हैं विशेषकरके इसीद्वीपमें रहते हैं एकबेर नारदजी उस

द्वीपमेंगये और ज्ञानउपदेश करनेको चाहा भगवत्ने रोंकदिया कि यहां के रहनेवाले मेरेप्रेम और भक्ति भाव में आनन्द रहते हैं उससे अलग नहीं होसक्ते तुम अपनी ज्ञानकहानी कहीं अन्यत्र आरम्भकरो नारद जी उदासीन बैकुण्ठमेंगये और वृत्तान्त कहा नारायणने आज्ञाकी कि सत्यकरके श्वेतद्वीपके रहनेवालों का यही वृत्तान्तहै सो चलके अपनी आंखोंसे देखलेव और भगवत् नारदसमेत वहां आये सरोवरके किनारे एकपक्षीको देखा कि भगवद्ध्यान में था नारायणने नारदजी से कहा कि यह पखेरू ऐसा भक्तहै कि हजारवर्ष से इसने जलपान नहीं किया इस हेतु कि भगवत्को भोग लगाहुआ जलनहीं मिला और विनाभगवत् प्रसादके कुछ खाता पीता नहीं परीक्षाके निमित्त भगवत् ने थोड़ासाजल अपना प्रसादी करके सरोवरके किनारे डालदिया कि उस भक्तने तुरंत उस जलको अपनी चोंचमें उठाकर पानकिया नारदजी ने उस पक्षीकी परिक्रमाकरी और सेव्य व पूज्य समझकर प्रेममें पूर्णहुये फिर आगे चले और भगवत्मन्दिर देखा कि उससमय आरती होकर मन्दिरका द्वार ताला मंगल होगया था एक जनको उस मन्दिरकीओर शीघ्रतासे आतेहुये देखा पूंछा कहांजाताहै उत्तरदिया कि भगवत् आरती के दर्शनों के लिये जाताहूं नारायण ने कहा कि आरती होचुकी और द्वार मन्दिर का ताला मंगल होगया वह तुरन्त सुनतेही धरतीपर गिरपड़ा और मरगया तिसके पीछे उसकी स्त्री आई नारायण ने कहा कि तेरा पति मरगया उसका क्रिया कर्म्म करना चाहिये स्त्रीने उत्तर दिया कि तू क्या भगवत्से विमुखहै कि भगवत्के दर्शनोंपर क्रिया कर्मको पति के विशेषताई बतलाता है नारायण ने उत्तर दिया कि भगवत् आरती होचुकी वहस्त्री सुनतेही तुरन्त अपने पतिकेसदृश मरकर होगई तिसके पीछे पुत्रादिक गृहके लोगआये और उनकी भी वही गतिहुई नारायण व नारदजी यह प्रेम व भक्ति उनकी देखकर आगे चले और विचरते विचरते फिर उसीओर आये संयोगवश भगवत् मन्दिर खुलकर दूसरे समयकी आरती आरम्भ हुई और लोग शङ्ख व झांझकी ध्वनिसुनकर भगवद्दर्शनों के लिये दौड़े वह लोग जो मरगये थे उठकर आरती में जामिले भगवद्दर्शन करके बहुत हर्षित अपने घरको चलेगये नारदजी ने जो यह चरित्र देखा तो विश्वासयुक्त होकर भगवद्भक्त हुये.

और उस द्वीपको तीनोंलोक का पूजास्थान व वैकुण्ठके सदृश जाना॥

तेरहवीं निष्ठा॥

जिसमें वर्णन व महिमा भगवद्धाम व आठभक्तोंकी कथा है॥

श्रीकृष्णस्वामी के चरणकमलों और अर्द्धचन्द्ररेखाको दण्डवत् और श्रीवामनअवतार को कि देवताओंके सहाय के निमित्त प्रयागमें धारण किया व ब्रह्मचारी रूपसें वलिराजाके द्वारपरगये उसको छलकरके पातालमें भेजदिया प्रणाम व वन्दना करके धामनिष्ठा लिखताहूं भगवत्काधाम भगवद्रूप हैं सोधामशब्दकाअर्थ किसी जगह भगवद्रूप से सम्बन्ध रखता है और किसीलोक अर्थात् वैकुण्ठादिकसे सम्बन्ध है और जबकि धाम भगवत्का अच्युत अनन्त और मायासे न्याराहै और यहभी गुण भगवत्के वेद और पुराणोंमें लिखेहैं तो भगवद्रूप होने में क्या सन्देह है और विख्यात है कि जब जीव मायासे अलग हो जाताहै तब उसधाम में पहुँचताहैतो निश्चय करके वह धाम भगवद्रूप ठहरगया कि भगवत्की प्राप्तिभीमाया छूटनेपर शास्त्रोंमें लिखीहै जिस प्रकार भगवत्की महिमा और उसकेरङ्ग रूपका वर्णन अतर्क्य व अनिर्वचनीयहै इसीप्रकार भगवद्धामका वर्णनभी नहीं होसक्ता परन्तु भगवत ने जिसप्रकार अपनारूप शास्त्रोंमें वर्णनकियाहै इसीप्रकार अपनेधामका रूपभी वर्णनकरदियाहै कि तात्पर्य यहहै कि वह धाम सच्चिदानन्दघन रूपहै मन्दिर व अट्टालिका व बाटिका फुलवाड़ी व द्रुम लता व विमान व सरोवर बावड़ी नाली इत्यादि सब वहांके दिव्यरूपहैं अर्थात् सच्चिदानन्दघन तत्त्व विना किसी अन्य वस्तुका बना अथवा बनाया हुआ वह धाम नहीं है जिसप्रकार हलवाई खिलौने बनाते हैं और सब आकारसहित वाहन व वाहनी व साज शृंगार अच्छेप्रकार उसखिलौनेमें रचित होतेहैं परन्तु सबखांड़हीखांड़है दूसरीवस्तु नहीं इसीप्रकार उसधामका वृत्तान्तहै कि यद्यपि केवल एक भगवत्मय प्रकाशका वह धामहै परन्तु सब मन्दिर आदिक जो जिस प्रकारके बुद्धिकी दौड़ और चिन्तनामें समावै सो वहां प्राप्त व रचित होरहे हैं जानेरहो वह धाम किसी लोक और ब्रह्माण्डमें नहीं असंख्यात ब्रह्माण्डोंमें जिस किसीको मुक्ति मिलती है तिसको यह धाम मिलताहै और इसधाम में पहुँचकर आवागमन से छूटजाता है सो गीताजी में लिखाहै कि जहांजाय के फेर नहीं संसारमें

गिरता है वह धाम मेराहै भागवतमें लिखाहै कि भगवद्धाम में पहुँच-
कर जीव निश्चल होजाता है और फेर जन्म नहीं होता पद्मपुराण व
स्कन्दपुराण व वाराहीसंहिता में लिखा है कि भगवद्धाम में पहुँचकर
मुक्त होजाता है और दूसरे पुराण सब इसमें युक्तहैं और वेदकी श्रुति
और कितनेही उपनिषद् हैं वे ऐसीही आज्ञा करते हैं बहुत विस्तारका
प्रयोजन नहीं जिस किसी ने एक पुराणभी सुनाहोगा उसको महिमा व
बड़ाई भगवद्धामकी अच्छीप्रकार समझमें आगई होगी सो वह परम-
धाम श्रीसम्प्रदायवालों के निश्चयमें वैकुण्ठ है व रामउपासकों के वि-
श्वासमें अयोध्या व साकेत व सांतानक व कृष्णउपासकों के विश्वास व
सिद्धान्तमें गोलोक इसीप्रकार सब उपासक अपने अपने इष्टका धाम
उसी गुण व महिमा सहित वर्णन करते हैं औ स्मार्त्तमतवालों का सि-
द्धान्त यहहै कि वेलोग उसधामको ब्रह्मलोक कहते हैं और उनका निज
इष्ट जोदेवता होताहै उसकाधाम सबसे अतिऊपर मानते हैं और दूसरे
देवताओं का नीचे जैसे मनुष्यशरीर में हाथ पांव अर्थात् अंग अंगी-
भाव रखतेहैं और कोईकोईको यह निश्चयहै कि वहधाम सच्चिदानंदघन
भगवद्रूप एकहै कोई अन्यस्थान नहीं है जिसप्रकार भगवत् अपनेवाक्य
के अनुसार कि जिसभावसे जोकोई उसका भजन सेवनकरताहै उसको
उसी रूपसे उसीप्रकार मिलताहै इसीभांति वह धामभी जबभक्त उस
धाममें पहुँचते हैं उनके भाव व विश्वासके अनुरूप दिखाई देताहै भग-
वत्ने गीताजी में कहाहै कि जो जिसभावसे मेरेशरण होते हैं उनको उसी
भावसे मिलताहूं नारायण उपनिषद् और कई उपनिषद् व सहस्रशीर्षा
आदिसेभी यही बात प्रकट होती है सो जबकि भगवत् अपने भक्तोंकेभाव
के अनुसार प्रकट होता है तो भगवत्काधामभी कि भगवत्कारूप है
वैसाही होना उचित है भगवत् के प्राप्तहोने में जो आनन्दहै वही इस
धाम में सर्व्वकाल व सब घड़ी सबको प्राप्त रहताहै कि जिसका वर्णन
किसीप्रकार किसी से नहीं होसक्ता शास्त्रों में जो स्वर्ग व पृथ्वीपर धन
व राज्यादिक हजारों सुख लिखे हैं वह सब उसधामके करोड़वां अंश के
सुखको नहीं तुलते अब यह वर्णन विस्तार सहित व निश्चय करना
उचितहुआ कि मधुपुरी व अवधपुरी व काशी आदि जो धाम व पुरी
धरतीपर हैं क्या हैं सो जानेरहो ये धाम वहही हैं जिनका वृत्तान्त ऊपर

लिखआये तनक बाल बराबर भी उस धाम और इन धामों में भेद नहीं वरु वैकुण्ठधाम से इन धामों को एक प्रकारसे विशेषताहै काहे से कि वह धाम तो ऐसा है कि जब मनुष्य अच्छे प्रकार विश्वास दृढ़ करके उपासना करै और सब ओरसे मनको एकाग्र करके लगावै तब न जाने कितने जन्मों में मिलताहै और यह धाम वह है कि कैसेही पापी व अ- धम दे उनकी शरण को लिया वह भगवत् को जा मिला और किसी जन्म में एक बेर भी उन धामों में रहा उसके प्रताप से संगति को प- हुँचा और विचार करनाचाहिये कि वह ईश्वर जिसको वेद नेति नेति कहते हैं अपने निजधामको छोड़कर इन धामों में आताहै और अब भी विराजमानहै तो बड़ाई इन धामों की है कि उस धामकी जो यह कहो कि भला जो यह धाम भी उसी परमधाम के सदृश हैं तो जो आनन्द और सुख वहां है वह क्यों नहीं सो जानेरहो कि सम्पूर्ण सुख व शोभा इनधामों में सदा है और इनहीं धामों के प्रभाव करके उस धामका सुख व शोभा और आनन्द जीवको मिलता है जितना आ- राधन व प्रीति उसधामके प्राप्त निमित्त होती है उससे आधा व चौथाई भी इन धामों म विश्वास करकेहोय तो तुरन्त बेड़ापार होजावै विश्वास और हृदयकी आंखोंको खोलकर देखना चाहिये कि तनकभी भेदनहीं है जीव गोस्वामीकी कथा में वर्णनहोगा कि वृन्दावन की शोभाकी तनक झलक बादशाहको दिखलाई और हरिदासजी का वर्णनहै कि उसस- मयके बादशाहको उन्होंनेभी ब्रजकी छवि और शोभाको दिखाया था और एककोना सीढ़ी किसीघाटका टूटाथा कि सातोंबादशाहतके धनसे भी उससीढ़ीका बनना बादशाह ने कठिन समझाथा सो विश्वास और प्रीतिदृढ़ यहीमुख्यहै और जैसे जैसे मननिर्मल और विश्वासकी बढ़ती होतीजातीहै तैसेही तैसे शोभा और सुखकी बढतीहोतीहै अर्थात् हृदय के नयन से दिव्यरूप की शोभा धामकी देखनेमें आवैगी यह कहो कि भला इनधामों को परमधामके सदृश लिखतेहो और यहांके रहनेवाले ऐसे शठ और धूर्त्त व कुचाली बहुत देखने में आतेहैं कि सारे संसारके पापियों के शिरोमणि है और उचित यह था कि यहलोग ऐसेहोते कि जिनके दर्शन करतेही पापीलोग पापोंसे छूटजाते सो इसका क्याकारण है सो जानेरहो कि रहनेवालोंकेबुरे आचरण देखनेसे भक्तोंको विश्वास

से शिथिल होना नहीं उचित है क्योंकि धामवासियों के अपकर्म से भी भगवद्रूप होना उन धामोंका अच्छेप्रकार निश्चय होगया अर्थात् भगवत् कल्पवृक्षके सदृशहैं सबके भावके अनुसार फलदेतेहैं सो उन बसनेवालों की रुचि समयके कारणकरके पापमें हुई तो भगवत् ने उनकी चाहना के अनुसार पापोंकी बढ़ती को करदिया और इस विवादसे निश्चय होगया कि यह धाम कल्पवृक्षके सदृश भगवद्रूपहै अब यह शंका उचितआई कि जो इनलोगों के पापोंकी बढ़तीहुई तो ताड़न व शासन भी बहुतहोगा और जब कि दूसरों से अधिक ताड़नाहुई तो यह धाम ही दुःखदायीहुआ मुक्तिदायक प्रभाव क्याहुआ और जोदण्ड न होगा तो शास्त्रों में जोआज्ञा विधि निषेध लिखी हैं वह सबव्यर्थ होजावैंगी सो जानेरहो कि रहनेवाले लोगोंको पूर्ण फल भगवद्धाम सेवनका मिलैगा और शास्त्रोंकी मर्य्यादभी बनीरहैगी किसप्रकार कि शास्त्रों के वचनसे प्रसिद्ध है कि जो और जगह के रहनेवाले पापी पातकी हैं वह लाखों करोड़ों वर्षतक नरकों में रहेंगे और चौरासीलाख योनिमें नजाने कितने कितने बेर जन्म पावैंगे और नानाप्रकारका दुःख भोगनाहोगा और इन रहनेवालों को एकही शरीर में थोड़ेही काल जोकि प्रमाण शास्त्रमें लिखाहै दण्ड घोरहोकर उन पापोंसे छूटजावैंगे और भगवत्को प्राप्तहोंगे जानेरहो कि पहिले चेष्टा उनलोगों के पापोंकीओर युक्तहुईरही इस हेतु पापोंकी वृद्धि पहिलेहुई पीछे उसको धामने अपना यह प्रतापकिया कि सब पापोंसे शुद्धकरके परमधामको पहुँचायदिया विचार करनाचाहिये कि जो कर्म्मभलेहोंगे और भगवद्धाममें विश्वास दृढ़होगा तो क्यों बिना दण्डके वह परमधामको प्राप्त न होगा और बढ़ती विश्वास और पुण्यों की पहिले क्यों न होगी अब इसबातका उत्तर लिखनाचाहिये कि बहुत यात्री ऐसे देखने में आये कि यात्राकरनेपर आगेसे और अधिकस्वभाव कठोर व प[illegible] चेष्टा करनेवाले होगये सो जानेरहो कि कल्पवृक्ष का दृष्टान्त यह[illegible]समझलेना चाहिये जैसे विश्वास और मनसे वे लोग यात्राकरतेहैं [illegible]ही कार्य्यमें बढ़ती होजाती है रीति धामोंकी यात्रा और वहांके रहनेकी विधि थोड़े में यह है कि विश्वास शुद्ध उस धाममें होय और जिसदिनसे यात्राकरै काम क्रोध लोभ मोह इत्यादि मनसे दूरकरै मुखसे भगवत्-का नाम और हृदय से भगवच्चरित्रों का चिन्तवन होय

और सत्संग हरिभक्तोंका होवै संयम नियम शम दम तितिक्षा व सत्य व दया व मैत्री व उदारता निश्चयचाहिये और जब वहां पहुँचै तो वह के रहनेवालों और सब द्वार व दीवार को भगवन्मय समझ और जे कुछ दान पूजा स्नान व्रतआदि कर्मकरै सब भगवत् अर्पण करके फल की चाहना न करै और ढूँढ़के भगवद्भक्तोंका सत्संगकरै कि तीर्थयात्र में सत्संग सारहै जब इसप्रकार यात्रा और वहां वासकरै तो पूर्णफल मिलने में क्या सन्देहहै और जो ऊपर लिखने के अनुसार न होसकै तो धाममें विश्वास और भजन व सत्सङ्ग में प्रीति और अपकर्म्मों से निवृत्त रहना उचित है कि भला कुछ ठिकानालगै और उत्तमगति को पहुँचै अब उन लोगोंकी यात्राका वृत्तान्त सुनिये कि जो लोग साधारण व थोड़ी पूँजीवाले हैं उन्होंने तो जब समय यात्रा व पर्व्वकी आई तो यहचर्चा आरम्भकी कि अबकी बेर बड़ाभारी मेलाहोगा और अच्छा नयन विश्राम होगा कि चारोंओर से सब भांति के लोग चलेजाते हैं यह मन करके दश पांच एकसंगके मिलकर चले पन्थमें सिवाय व्यर्थालाप और हँसी व ठट्ठे व वाहियात बोलने व अनाप सनाप बकने व हुक्कापीने के और कुछ न किया जब धाममें पहुँचे तो मेले के देखने में लगे और जब तीर्थस्नानको गये तो स्त्रियों के देखने व ताकने में मन लगाया और चले तब किसीस्त्री के पीछे पले कुत्तेकेसदृश होलिये और उसके टिकान्त तक पहुँचाय आये और जो भगवत्मन्दिर में दर्शन को गये भजन ध्यान इत्यादि न बना कोठा अटारी और दूसरी दूसरी लीला देखते फिरे फेर क्रय विक्रय करनेलगे और सत्संग न ढूंढा अपने मनकी रुचि के अनुसार भँगेरे व चरसवाले व दूसरे कुसंगियों को ढूंढ़ने लगे व हरिभजन व कीर्त्तन को न किया नाच राग लड़कों आदिका देखते फिरे जब टिकान्त पर आये तो आपस में बैठकर जो स्त्रियां कि दिन में देखी थीं उनकी चर्चा करते रहे अथवा वहां के रहनेवालों की निन्दा व बणिक् लोगों के ठगपने केर यहां फिरि फिरि सोरहे जैदिन वहांरहे यहही आचरण रक्खा और जो तीर्थ व यात्रा के फल को मांगा तो अपने भाग्य व कर्म्म के अनुसार और धनवान् यात्री ऐसे हैं कि जब यात्रा की मानसकरी तो पहिलेही उसके फलकी चाहना करली कि अमुककार्य्य हमारा होगा अथवा बेटा होगा व धन

मिलैगा अथवा चाकरी व द्रव्य उत्पन्न की जगह मिलैगी और रास्ते में सिवाय वार्ता डिगरी डिसमिस मुक़द्दमा अथवा जवाबदावी व रद्द जवाबका वर्णन अथवा स्तुति निन्दा मित्र शत्रु व बादशाहों के व हाकिमों की करनी की कथन व रसकी काव्य व विरह की जलन व खाने पहिरने की रचना व सुन्दरताकी इसीप्रकार की बेठौर ठिकाने के और कुछ मुख से न निकला जो हज़ारमें एक दो को विष्णुसहस्रनाम या महिम्न कंठहुआ तो नहाने के पीछे कबहीं पाठ करलिया नहीं तो कुशल क्षेम और जब धाम में पहुँचे तो घोड़े और बैल व दुशाले व सामग्री आदिकका लेनदेन प्रारम्भकिया अथवा कोठा अटारी फुलवारी देखते फिरे कै मित्र व हाकिम व ओहदेदार चाकर कै बड़े लोग जो मेले में आये रहे उनको ढूँढ़ ढूँढ़ मिले कै और लोग मिलने को आतेरहे और जो स्नान को किसी तीर्थपर गये तो मांगनेवालों के डरसे शरीर के

और सत्संग हरिभक्तोंका होवै संयम नियम शम दम तितिक्षा व सत्य व दया व मैत्री व उदारता निश्चयचाहिये और जब वहां पहुँचै तो वह के रहनेवालों और सब द्वार व दीवार को भगवन्मय समझ और जे कुछ दान पूजा स्नान व्रतआदि कर्मकरै सब भगवत् अर्पण करके फल की चाहना न करै और ढूँढ़के भगवद्भक्तोंका सत्संगकरै कि तीर्थयात्र में सत्संग सारहै जब इसप्रकार यात्रा और वहां बासकरै तो पूर्णफल मिलने में क्या सन्देहहै और जो ऊपर लिखने के अनुसार न होसकै तो धाममें विश्वास और भजन व सत्सङ्ग में प्रीति और अपकर्म्मों से निवृत्त रहना उचित है कि भला कुछ ठिकानालगै और उत्तमगति को पहुँचै अब उन लोगोंकी यात्राका वृत्तान्त सुनिये कि जो लोग साधा- रण व थोड़ी पूँजीवाले हैं उन्होंने तो जब समय यात्रा व पर्व्वकी आई

होगये और वृन्दावन में आयकर निश्चल व दृढ़वास किया अर्थात् सिवाय उस परमधामके दूसरी किसीओर चित्त व चाहना न हुई किसी पुराणका वचनहै कि वृन्दावन से बाहर जो करोड़ों चिन्तामणि मिलते हों अथवा आप भगवत् मिलताहो परन्तु वृन्दावनकी रज व धूलिसे यहशरीर कवहीं अलग न होय सो ऐसेही दृढ़भावसे गोविन्ददेवजीकी कुञ्जमें वासकरके मानसीभावसे रूपमाधुरी प्रियाप्रीतमकी तिसमें बेसुधि व मग्न रहाकरते खानेपीनेकी सुधिभी विशेष करके भूलिजाते मन व प्राण व बुद्धि व सुधि और जितनी चित्तकी वृत्तिहै सब रूपअनूप के चिन्तवन में ऐसीलगी कि दूसरीओर कदापि न-चलायमान हुई ॥

कथा काशीश्वर की ॥

गोसाईं काशीश्वरजी परमभक्तहुये पहिले अवधूतरहे पुरुषोत्तमपुरमें आये व श्रीकृष्ण चैतन्य महाप्रभुके चेलेहुये फिर आज्ञासे गुरूके वृन्दावनमें आये प्रेम व आनंदमें मग्न व कृतार्थहोगये थोड़ेही दिनमेंउनकी भावना व प्रीति ऐसी विख्यातहुई कि श्रीगोविंददेवजी महाराज की सेवा पूजा उनको मिली उसी सेवामें रातदिन रहने लगे ॥

कथा प्रबोधानन्द की ॥

प्रबोधानंद सरस्वती संन्यासी चेले श्रीकृष्णचैतन्य महाप्रभुकेपरम रसिक भक्तहुये प्रियाप्रीतम का विहार व, कुञ्जखेल के रसको अपनी काव्यरचना में ऐसा वर्णनकिया कि जिसको पढ़ सुनकर करोड़ों प्रेम व आनंदमें मग्नहुये व होते हैं युगुलस्वरूप मुखचंद्रमें मनको चकोर की भांति लगाया और वृन्दावन वासकी दृढ़शिक्षा जगत्को लखाई कि किसी प्रकार वृन्दावनके बाहर न जावैं ॥

कथा लालमती की ॥

मनुष्यतनको पाकर जो लाभ होनाचाहिये सो लालमतीजीको हुआ कि गौड़स्वामी के चरणकमलों से अन्यत्र किसीओर चित्त की वृत्ति नहीं जातीरही और लालमती जी वात्सल्य उपासक जनाई पड़ती हैं इसीहेतु भक्तमालमें नाभाजी ने गौड़स्वामीकी प्रीतिसे यहपदधरा नहीं तो प्रियाप्रीतम अथवा किशोर किशोरी यह पद धरते लालमतीजीको जैसी प्रीति युगुलरूपमें थी वैसीही यमुनाजी से व ब्रजकी कुञ्जोंसे और वंशीवट इत्यादिक भगवत्के खेलस्थान व ब्रजमण्डल से रही व अ-

वृत्तान्त उनके गुरू और सबसे कहा गोसाईंजी ने कहा कि तुम उनके प्रणकी चिन्ता कदापि मतकरो कल्ह हरिदासजी हमारे पास आये बोल वतराय करके व भगवद्दर्शन करके स्नान यमुनाजीका किया व देहत्या-गदिया सबको भगवद्भजनका विश्वासहुआ इसचरित्रमें जो किसीको शंकाहोय कि जो हरिदासजी ऐसेसमर्थ रहे कि दूसरा शरीर धारणकर लिया तो पहिले शरीरसे क्यों नहीं वृन्दावनमें आये सो जानेरहो कि हरिदास जी को कुछ ऐसी लाग अपने प्रण पूरे होने की नहीं रही चाहे पूराहो य न हो परन्तु आप भगवत् को उनके प्रण पूर्ण होने की लाग पड़ी क्योंकि पद्मपुराण आदिक में वचन भगवत्‌काहै कि मेरे भक्त जो चाहना करते हैं सो पूर्ण किया करताहूं सिवाय इसके भगवत् को यह बात फैलानी जगत् में थी कि मेरे भक्तोंका प्रण कबहूं नहीं विचलताहै एक तन छूटा तो क्याहुआ दूसरे तनसे वृन्दावन में पहुँचगये ॥

कथा मधुगोसाईं की ॥

मधुगोसाईंजी मधु श्रीरंग विख्यात थे परम रसिक प्रियाप्रीतम व श्रीवृन्दावन के हुये दर्शनकी चाह व वृन्दावन वासके निमित्त घरबार छोडकर बंगाले से वृन्दावन में आये जब यात्रा व दर्शन करचुके तब चाहना साक्षात् दर्शनों की हुई और ब्रजकिशोर किशोरीकी परम मनो-हर मूर्त्तिके ध्यानमें छकेहुये सब बन व कुंजमें ढूंढ़ने फिरनेलगे दिनरात खाना सोना शीत उष्णका विचार निर्मल मनसे दूरकिया जबमहाराजने भक्तिभाव व प्रीतिऐसी अपने भक्तकी देखी तो यमुनाके किनारे बंशीबट के निकट इस स्वरूपसे दर्शनदिया कि परम शोभायमान श्यामसुन्दर स्वरूप माथेपर मुकुट कानो में कुण्डल स्वर्णतारोंका बागा व घुटन्ना प-हिनेहुये व मणिगणके आभूषण सब अंगोंपर शोभित एक हाथमें मुरली और दूसरे में छडी अपने सखाओं के संगहँसी खेलकर रहे हैं गोसाईं जीको यह रूप अनूप देखकर कुछ सुधि न रही ब्रह्मानन्दमें मग्नहोकर बेसुध दौडे व चरणारविन्दमें लिपटगये उनके भागकी बड़ाई किसप्रकार लिखीजावे कि जिस पूर्णब्रह्म सच्चिदानन्द घनके चरणरजको ब्रह्मादिक वाञ्छा करते हैं सो उनके भक्ति व प्रेमकेवश होकर आप प्रकटहुये ॥

कथा भूगर्भकी ॥

भूगर्भजी गोसाईं परममाधुर्य्य उपासकहुये घरबार छोड़कर विरक्त

होगये और वृन्दावन में आयकर निश्चल व दृढ़वास किया अर्थात् सिवाय उस परमधामके दूसरी किसीओर चित्त व चाहना न हुई किसी पुराणका वचनहै कि वृन्दावन से बाहर जो करोड़ों चिन्तामणि मिलते हों अथवा आप भगवत् मिलताहो परन्तु वृन्दावनकी रज व धूलिसे यहशरीर कबहीं अलग न होय सो ऐसेही दृढ़भावसे गोविन्ददेवजीकी कुञ्जमें वासकरके मानसीभावसे रूपमाधुरी प्रियाप्रीतमकी तिसमें बेसुधि व मग्न रहाकरते खानेपीनेकी सुधिभी विशेष करके भूलिजाते मन व प्राण व बुद्धि व सुधि और जितनी चित्तकी वृत्तिहै सब रूपअनूप के चिन्तवन में ऐसीलगी कि दूसरीओर कदापि न चलायमान हुई॥

कथा काशीश्वर की॥

गोसाईं काशीश्वरजी परमभक्तहुये पहिले अवधूतरहे पुरुषोत्तमपुरमें आये व श्रीकृष्ण चैतन्य महाप्रभुके चेलेहुये फिर आज्ञासे गुरूके वृन्दावनमें आये प्रेम व आनंदमें मग्न व कृतार्थहोगये थोड़ेही दिनमेंउनकी भावना व प्रीति ऐसी विख्यातहुई कि श्रीगोविंददेवजी महाराज की सेवा पूजा उनको मिली उसी सेवामें रातदिन रहने लगे॥

कथा प्रबोधानन्द की॥

प्रबोधानंद सरस्वती संन्यासी चेले श्रीकृष्णचैतन्य महाप्रभुकेपरम रसिक भक्तहुये प्रियाप्रीतम का विहार व कुञ्जखेल के रसको अपनी काव्यरचना में ऐसा वर्णनकिया कि जिसको पद सुनकर करोड़ों प्रेम व आनंदमें मग्नहुये व होते हैं युगुलस्वरूप मुखचंद्रमें मनको चकोर की भांति लगाया और वृन्दावन वासकी दृढ़शिक्षा जगत्को लखाई कि किसी प्रकार वृन्दावनके बाहर न जावैं॥

कथा लालमती की॥

मनुष्यतनको पाकर जो लाभ होनाचाहिये सो लालमतीजीको हुआ कि गौड़स्वामी के चरणकमलों से अन्यत्र किसीओर चित्त की वृत्ति नहीं जातीरही और लालमती जी वात्सल्य उपासक जनाई पड़ती हैं इसीहेतु भक्तमालमें नाभाजी ने गौड़स्वामीकी प्रीतिसे यहपद धरा नहीं तो प्रियाप्रीतम अथवा किशोर किशोरी यह पद धरते लालमतीजीको जैसी प्रीति युगुलरूपमें थी वैसीही यमुनाजी से व ब्रजकी कुञ्जोंसे और वंशीवट इत्यादिक भगवंत्के खेलस्थान व ब्रजमण्डल से रही व अ-

चलवास श्रीवृन्दावन में करके भक्तिभावको दृढ़किया व यद्यपि वात्स-ल्य उपासना लालमतीजीको रही और गोकुलस्थोंकी सेवकरहीं परंतु धर्मनिष्ठाका विश्वास और जिस विधिसे वहां वास चाहिये सो सब लालमती जी में रहा इसहेतु धामनिष्ठा में लिखागया ॥

चौदहवीं निष्ठा ॥

भगवत् नामकी महिमा जिसमें पांचभक्तों की कथा हैं ॥

श्रीकृष्णचन्द्र स्वामी महाराजके चरणकमलों के षट्कोण रेखा व परशुराम अवतार को दण्डवत् है कि पृथ्वी के भार दूरकरने के हेतु इक्कीसबार क्षत्रियों को बधकरके ब्राह्मणोंको राज्यदिया और यह अव-तार जमीना गांवमें वैशाख शुक्लतृतीयाको हुआ यद्यपि भगवन्नामका लेना कीर्त्तनमें है परन्तु स्मरणसे सम्बन्ध अधिक है इसहेतु अलग निष्ठा स्थापित हुई और जो चार प्रकारकी उपासना अर्थात् नाम, धाम, लीला, रूप शास्त्रों में लिखी हैं तो नाम की उपासना प्रथम अग्रगामी है इसहेतु नामनिष्ठा लिखना उचित समझा महिमा भगवत् नाम की

है स्कन्दपुराण का वचन है कि राजसूय यज्ञ व अश्वमेध और अध्यात्म ज्ञान इत्यादि का सारांश श्रीकृष्ण स्वामी ने अपने नाममें रखदिया है अर्थात् सबका फल नाम से होजाता है जो यह शङ्का कोईकरै कि जिस आदमीका नाम लेकर पुकारते हैं तो तुरंत आ जाता है और ईश्वरका नाम हज़ारों लोगलेते हैं ईश्वर नहींआता है इसका क्या कारणहै सो यह हेतु कि जिस मनुष्य को पुकारा जाताहै किसी प्रकारकी बे विश्वासी उस के जानलेने और पहिंचान में नहीं होती है इसी प्रकार जब नाम व नामी में दृढ़विश्वास होगा तो निस्सन्देह तुरंत भगवत् साक्षात्कार होजायगा और एक दृष्टांत भी है कि धर्मात्मा व न्यायकर्ता राजा को सभामें हज़ारों दुःख कहनेको व न्याय के निमित्त जातेहैं उस में बहुत लोग ऐसे हैं कि न न्याय करवाने की रीति जानते हैं और न राज-सभा में जाने की रीति जानते व न कोई पक्ष उनको है और न राजा का स्वभाव पहिंचानते केवल अपनी दुहाई तिहाई शोरगुल से काम है सो यद्यपि राजा के न्याय व धर्मशील स्वभाव से अपने न्याय को पहुँचते हैं परन्तु जो विलम्ब होता है सो अज्ञानता से उन लोगों के राजाका कुछ दोष नहीं और कितने लोग ऐसे हैं कि राजसभाकी रीति व्यवहार जानते हैं और राजसेवकों से पहिंचान है ऐसे लोग जब सभा में गये उसीघड़ी अपने परिश्रम व राजसेवकों की कृपासे अपना अर्थ सिद्ध करिलाये और केवल राजाकी प्रसन्नताके हेतु सभामें जाते हैं व किसी प्रकारकी कुछ याचना नहीं करते ऐसे लोग बहुत थोड़े हैं सो ऐसे लोगोंका अर्थ राजा आप सिद्ध करदेताहै उनकी विनय व प्रार्थना का प्रयोजन नहीं होता तैसेही यह नाम भी है जापक के विश्वास के अनु-कूल अर्थको सिद्ध करदेताहै यद्यपि तरवार में यह शक्तिहै कि लोहे के तवे को दो टुकड़े करदे परन्तु निर्बलके हाथसे चिह्न भी नहीं उखड़ती और बली के हाथ से तुरन्त दो टुकड़े होजाते हैं यही वृत्तान्त नाम के विश्वासका है अब यह शंका उत्पन्न हुई कि बिना मनके लगाये नामके लेने से भगवत् कैसे मिलजायगा सो जाने रहो कि किसी प्रकार नाम लियाजावै निश्चय करिके भगवत् प्राप्त होजायगा किस हेतु कि नाम और नामी भिन्न नहीं हैं और रीति है कि नामके पुकारने से नामी पहुँच-जाताहै सो भगवत् सब जगह प्राप्त रहनेवाला नामके पुकारने से क्यों

न आवैगा प्रेमसे पुकारे के विना प्रेम पुकारे सो श्लोक सब इसके सा-
क्षीही हैं पर अजामिलकी बात इस निष्ठा में लिखीजायगी कि धोखे से
भगवत् का नाम लियाथा सो परमधाम को गया और बाल्मीकिजीकी
कथाका कीर्त्तननिष्ठा में वर्णन हुआहै कि उनको भगवत्की महिमा का
निर्मल ज्ञान नहीं रहा और न नाम की महिमा जानते रहे और जो
किसी को हठ इस बातका हो कि जब प्रीति दृढ़ व एकाग्रचित्त लगेगा
तबहीं भगवत् प्राप्तहोगा तो जाने रहो कि परम्परा की रीति के अनु-
सार प्रारम्भ में प्रीति व एकाग्रचित्तकी वृत्ति किसीको नहीं होती और
जो होती है तो बहुत कम पर नामहीं वह विश्वास व मनकी लगनको
दिन दिन अधिक करके भगवत्पद को पहुँचाय देता है जैसे बालपन
की विद्या के अभ्यास में प्रथम न मन लगै व न प्रीति उपाध्याय के भय
से अक्षर घोखते घोखते पण्डित होजाता है इसीप्रकार भगवन्नाम की
रटना व विश्वासकर मनकी लगन बढ़ाय के पद को पहुँचाय देती है
इस समय में बहुत लोग प्रकट भजन और नाम लेनेको अच्छा नहीं
कहते हैं व यह बात बनाते हैं कि विना मन लगे क्या होता है सो वे लोग
कबहीं किसी मनोरथकी सिद्धताको नहीं प्राप्तहोते न उनके सन्देह नि-
वृत्तहोते हैं निश्चय करके बौड़हे कुत्तेके सदृश हैं भूंक भूंकके मरजावैंगे
प्रथम तो उनके नाशकरनेको अपराध शास्त्रकी आज्ञा का नहीं अंगी-
कार करना यही प्रबल है अर्थात् शास्त्रों में तो यह आज्ञा होचुकी कि
विना मन ऊपरही से नाम लेने से उद्धार होता है और वे लोग उसके
प्रतिकूल वर्णनकरें तो निश्चय करके असुर व अपराधी हुये और ऊ-
परहीके भजनसे मनभी लगने लगताहै सो जब कि उन असुर बुद्धियों
को पहिलेही पदसे अरुचि भई तो उन को दूसरापद कब प्राप्त होगा
और इसीसे सदा जन्ममरणके दुःखमें बँधेरहैंगे और बौड़हे कुत्तेके दृष्टा-
न्तसे यह अभिप्राय है कि पापकर्मों के मदसे उन की बुद्धि जाती रही
सूक्ष्मअर्थ समझना तो अलगरहा मोटी बातोंपर भी उनका विचारनहीं
पहुँचता अर्थात् शीतल जलका स्नान और अग्नि का सेवन अथवा
ऊपर की सुन्दरताई या किसीकी बात अथवा सुगन्ध व ठंढीपवन व दु-
र्गन्ध इत्यादि तो ऊपरसे हृदयके भीतरभी नजावै और भगवन्नाम ऐसा
हुआ कि वह ऊपरसे कहा हुआ कभी गुण न करै धन्य उनकी समझ

व बुद्धि और शोचकी बात है कि प्रकट विख्यात बातपर दृष्टिनहीहोती
के पारस पाषाण को लोहा जानिके लगिजावै अथवा विनाजाने परभी
निश्चय सोना करदेता है और आगमें कोई वस्तु जानिके डालैअथवा
बेजाने निश्चय करके भस्म होजाती है अमृतको कोई जानिके पीवे अथवा
बेजाने निश्चय अमर होजायगा इसीप्रकार भगवन्नामको कोई मनुष्य
विनाजाने ऊपरसे लेवै अथवा जानिके हृदयसे परंतु निश्चय भगवद्रूप
होजायगा तात्पर्य्य यह कि चारों फलके देनेको और संसार सागरसे
उद्धारके निमित्त मेरे स्वामीका नाम समर्थहै और किसी साधनका प्रयो-
जन नहीं और इससेअच्छा कोई शरण या अवलम्ब दिखाई नहींदेताहै
सत्युग में भांतिभांतिके कर्म व त्रेतामें यज्ञ आदिक और द्वापरमें भग-
वत्पूजन इत्यादि व्यवस्थित रहा और कलियुगमें किपापरूपहै बिना
कृष्ण नामके कोईउपाय अच्छा व सुख साध्य भगवत् और शास्त्रोंनेनही
ठहराया भगवत्का वचनहै कि जब महापापी धोखेसे नाम लेकर संसार
समुद्रको उतरगये तो जानिकै नामलेवैंगे उनका क्याकहनाहै रामस्तव-
राजमें लिखाहै कि राम नाम ब्रह्महत्याका दूरकरनेवाला है भगवत्का
वचनहै कि कैसाही किसीको दुःखहो और कैसाही विषयी पापीहो भ-
गवन्नाम के प्रभावसे सब पापों व दुखोंसे छूटकर परम आनन्दकोप्राप्त
होताहै सो दोनों लोकका साधन भगवन्नाम से अधिक दूसरा दृष्टिमें
नहींआता और यह बात विख्यात है कि जब किसीको कुछदुःखहोताहै
अथवा कुछ कामना होती है तो वरणबिठलाते हैं और मनोरथको प्राप्त
होतेहैं तो जानेरहो कि अभ्यास और जप भगवन्नामका सर्व्वदा व सब
घड़ीअत्यंत प्रयोजन है व अवश्य करनीय है परन्तु अत्यन्त आवश्यक
से आवश्यक यहहै कि साढ़ेतीन करोड़ शरीरपर रोमहैं सो अपने जीवते
भरमें एकबेर प्रतिरोम एकनाम के गणना से साढ़ेतीन करोड़ नामपूरा
करदेना उचितहै और इक्कीसहज़ार छःसै श्वासा रात दिनमें चलती हैं
सो इतनाही नाम नित्य जपलेना चाहिये इसहेतु कि कोई श्वास नाम
व्यतिरिक्त गणनामें न आवै इक्कीसहज़ार छःसौ नामतीन सवातीन घड़ी
में पूरे होजाते हैं अर्थात् सवा घंटे में और यह कुछ प्रयोजन नहीं कि
एकजगह बैठकर लियेजावें चलते फिरते बात करते जिस प्रकार होसके
पूरे करदेने चाहिये सो यह दोनों प्रकारका कर्तव्य उनलोगों के निमित्त

लिखा गया कि जिनको नाम लेनेमें प्रीतिनहीं और जिनको भगवन्नाम में प्रीतिहै और अनुक्षण नाम को रटे हैं उनको एकपल नाम विनानहीं जाता उनके हेतु कोईरीति लिखनी क्याप्रयोजन कि उनका जीवनधन भगवन्नाम है अरेमन तनक तू समझ और चेतकर कि तू भगवत्अंश से हुआ सदा एक रस प्रकाशमानऔर ज्ञानानन्द स्वरूपहे कभीऐसा नहीं हुआ कि तू न रहाहो व आगे न होगा न कभी तुझको मृत्यु है और न कभी जन्मताहै परन्तु श्रीकृष्णस्वामीके चरणकमलोंसे विमुख होकर इसगति को पहुँचाहै कि भांति भांतिके दुःखनरक व स्वर्ग नाना प्रकारकी पीड़ा चौरासी लाख योनिकी तेरे मुण्ड पड़ी है स्त्री व लड़के व धन व गृह मित्र आदि इनको तू अपना और नित्य समझकर उनके चिन्ता व शोच में दुःखित व मग्न रहताहै सो अब तू अपनेऊपर दया और उस स्वरूपके चिन्तवनमें रहाकर जो कि ग्रन्थारम्भमें लिखाहै कि जिसकरके मायाके जालसे तेरी छुट्टी होकर परमानन्द की प्राप्तिहोय॥

कथा अजामिलकी॥

अजामिल पूर्व्वजन्मका ब्राह्मण था और वनमें तपकिया करताथा मरतीसमय एक चाण्डालीमें उसका ध्यानगया और मरगया इसजन्म में भीकान्यकुब्जनगरमें ब्राह्मणके घर जन्मपाया परन्तु पहिलेहीसे पाप कर्म्ममें रतरहा एक पुंश्चली स्त्रीको देखकर आसक्त होगया उसके साथ रहनेलगा व पक्षी मृगा मारना मद्यपान व चोरी व जुआ खेलना ऐसा ही पापकर्म्म उसकी जीविका थी कि वर्णन उन कर्म्मोंका अच्छानहीं एकबेर भगवद्भक्त लोग विनाजाने उसके घरआये उसने प्रेमसे सब सेवा रसोई इत्यादिकी अच्छेप्रकारसे करी और दीनहोकर अपनासब वृत्तान्त कहकर चरण पकड़ लिये हरिभक्तों को दयाआई चलती बेर उपदेश करगये कि अबकी लड़का उत्पन्नहोय तो नारायण नाम धरना अजामिलने वैसाही किया और नारायणनाम लड़केको प्यार बड़ाकरता था जब मरणसमय यमदूतों करके पीड़ितहुआ तब पुकारा हेनारायण तबतक नारायणके पार्षद पहुँचे यमदूतोंको मारकर निकालदिया अजामिल को वैकुण्ठमें लेगये यमदूतोंने जाकर यमराजके पास दुहाईदी कि ऐसापापी सो अपने बेटे को पुकारा कुछ भगवत् को जानकर नहीं सो पार्षद लोगों ने हमको मारकर निकाल दिया उसको वैकुण्ठ में लेगये

यमराजने कहा कि जब मरनेके समय किसीप्रकार भगवन्नामलिया तो अब कौन धर्म कर्म करनेको शेष रहगया तुमको इतनाज्ञान नहींअच्छा हुआ जो तुम्हारा दण्डहुआ आगे पर जानेरहो कि जहां भगवन्नाम का उच्चारण किसी प्रकार हो वहां न जाना क्योंकि जहां भगवन्नाम है तहां यमदूतों का क्या काम है अजामिल जब परमधाम को गया तब उसकी पुंश्चली स्त्री भी मनको लगाकर उसी गतिको पहुँची धन्य है भगन्नामकी महिमा व प्रतापको कहां अजामिल के पाप घोर व क्या पदवी केवल धोखे से नाम लेने के प्रभाव से मिली तो जानकर नाम लेने से कैसी गति मिलैगी इस चरित्र में महिमा सत्सङ्ग और नवें अध्याय गीताजी में जो दृढ़ निश्चय करके कहाहै कि मेरे भक्त का नाश नहीं सो भी प्रकट है॥ २ कथा एक राजाकी॥

एक राजा अन्तर्निष्ठ परम भागवत ऐसेहुये कि भगवत् का स्मरण भजन इत्यादि सर्वकाल मनहीं में कियाकरते औ बाहरकी वृत्ती ऐसीथी कि सबलोग महाविषयी व संसारी जानते थे और रानी हरिभक्त रही उसको भी राजाके अन्तर्निष्ठाका वृत्तान्त ज्ञात न था इस शोचमें रहा करती थी कि राजाको किसीप्रकार भगवत्में प्रीतिहोती एक दिन निद्रा में राजाके मुखसे भगवन्नाम निकलगया रानी ने उसदिन नौबत बजवाई दान पुण्य बड़ाउत्साह किया राजाने उत्साहकाहेतु पूंछा रानी ने विनयकिया कि रात आपके मुखसे भगवन्नाम निकला इसी हेतु उत्साह किया राजाने कहा कि मूलप्राणका तो भगवन्नाम शरीरमें था जो वहही निकलगया तो तन किसकामकाहै यह कहकर तन छोड़दिया तुरन्त परमपदको जा पहुँचा रानी ने जो यहगति गुप्तभक्ति और भाव राजा का देखा तो ऐसे परमपद परमभक्तके वियोग और अपने अज्ञानता के शोकसे अत्यन्त विकल व बेसुधहुई कि राजाके प्रेम व भगवद्भावमें मग्न होकर प्राण त्यागिके जिस परधामको राजा पहुँचे तहांहीं पहुँचीं निश्चय करके जिसको भगवन्नामसे प्रीति नहीं सो मृतकप्राय है और जिसको उस नामसे प्रीतिहै सो सदा अमरहै॥

कथा एक ब्राह्मणकी॥

एक ब्राह्मण भगवद्भक्त अपनी स्त्री को मैके से लिये आताथा राहमें ठगों से भेटहुई और ठगोंने पूंछनेपर कहा कि जहां तुम जातेहौ तहाँहीं

हमभी जाते हैं सो हम सीधीराह देखे हैं तुमभी इसीराह चलो ब्राह्मण को विश्वास न आया तब उनसे चोरों ने रामचन्द्रके नामको बीचदिया तब उस स्त्री ने ब्राह्मणको समझाया कि अब न मानना अयोग्यहै तब दोनों उन ठगों के साथ चले जब महाघन वनमें गये ठगोंने ब्राह्मण को मारकर वस्तु सब और स्त्री को ले चले वह स्त्री पीछे फिर फिर देखत जाय ठगों ने पूँछा कि अब पीछे कौनको देखती हौ खसम तेरा तो मारा गया उसने उत्तरदिया कि जो हमारे तुम्हारे बीचमें है उसको देखतीहूं व सबों ने कहा कि कहने की बातहै कहां अब रामचन्द्र हैं परन्तु उस स्त्रीको दृढ़ विश्वासथा तबतक धनुषधारी महाराज धनुष बाणलिये घोड़े पर सवार पीठठोंक आनपहुँचे ठगों को मार व ब्राह्मणको जिवाय उन दोनोंको घरके समीप पहुँचाय आप अन्तर्द्धान होगये ॥

कथा कबीरजीकी ॥

कबीरजी काशी में भगवद्भक्त ऐसे हुये कि जिनकी भक्ति और प्रताप जगत् में विख्यात है जिन्हों ने भगवद्भक्ति से व्यतिरिक्त कर्म्म को अधर्म जाना अर्थात् योग यज्ञ व दान व व्रत इत्यादि बिना भगवद्भजन व भाव के वृथा समझा और निश्चय करके शास्त्रों का भी यहही अभिप्राय व सिद्धान्तहै कि और साधन शून्य के सदृशहैं और कृष्णनाम अंकके सदृशहैं जो कृष्णनाम अंकप्राप्तहै तो योग यज्ञ दान इत्यादि शून्य कृष्णनाम अंकपर अधिक होकर सब दशगुने होजाते हैं और जो कृष्णनाम रूपी अंक नहीं तो सब व शून्य व्यर्थ व रिक्त किसी प्रयोजनके नहीं रहते तात्पर्य्य इस लिखने का यह है कि जो साधन कर्म्महो सो भगवद्भक्ति प्राप्ति के अर्थ व कृष्णनाम के प्रीतिके निमित्त हो संसार के कार्य्य व स्वर्गादि के निमित्त न होय कबीरजी ने एक ऐसा ग्रन्थबनाया जिसको सब मतवादी अंगीकार करें और सब के उद्धारके निमित्त काम आवे व भगद्भजन में ऐसे दृढ़ थे कि भजन के आगे वर्णाश्रमके धर्म्मको सब वृथाजाना और उनकी कथा यद्यपि बहुत जगत्में लोगकहते हैं परन्तु जो कुछ भक्तमाल के तिलकसे ज्ञात हुआ सो लिखी जाती है प्रारम्भही से अपने जाति व मतकी रीतिको छोड़कर भगवद्भजन में रहा करते थे आकाशवाणी हुई कि माला तिलक धारणकरो व रामचन्द्रजी के चेलेहो कबीरजी ने विनय किया

कि रामानन्दजी मुसल्मानों की परछाहीं भी नहीं देखते हमको चेला किसप्रकार करेंगे तब उसकाभी उपाय भगवत्ने बतलादिया तब कबीर जी उसीप्रकार कुछ रात बाकीरहते राहमें पड़रहे रामानन्दजी स्नानको जाते थे उनका चरण कबीरजी पर पड़ा और रामराम मुख से निकला कबीरने उसीको उपदेशसमझा और तिलकमाला इत्यादि धारणकरके उस महामंत्रकाजप और भजन करनेलगे कबीरजी की माताने जोअपने मतके विरुद्ध आचरणदेखा तो शोर व चिल्लाहटकिया व समझाया कबीरजी ने कुछ न सुना अपने स्मरण भजन में रहते रहे नितान्त इसबातकी पुकार रामानन्दजी तक पहुँची रामानन्दजी ने आज्ञादी कि कबीर को पकड़लावो हमने कब उसको चेलाकिया है कबीरजी गये रामानन्दजी ने परदा डलवाकर वृत्तांत पूछा कबीरजी ने सब वृत्तांत उपदेश का वर्णन किया और यहभी विनय किया कि सबशास्त्रोंका मत युक्त इसबातपर है कि रामनाम महामंत्र है सो तंत्रशास्त्र रामस्तवराज में लिखाहै कि श्रीरामनाम परम जाप्यहै महामंत्र ब्रह्मस्वरूप है और शिवजी ने पार्वती को रामनाम परममंत्र सहस्रनाम के तुल्य उपदेश कियाहै सो उसनाम से कि जिसका उपदेश आपके श्रीमुख से मुझको हुआ दूसरा बड़ामंत्र कौनहै कि जिसका उपदेश आपकरते तब चेला कहवावते और जब कि उसनाम का उपदेश आपके मुखसे हुआ तो आपको गुरू और मुझको चेलेहोने में क्या संदेह अबरहा रामानन्द जी ने प्रसन्नहोकर परदा उठाके कबीरजी को छातीसे लगाया व भगवद्भजन स्मरण व साधुसेवा का उपदेशकिया व बिदाकरदिया कबीर जी प्रयोजनमात्र को उद्यम कपड़ा बुनने का करते थे व मन अनुक्षण राम नाम में रहता था एक दिन कपड़ा लेकर बाजार में बेचने गये किसी साधु ने जांचा वह कपड़ा दे दिया और खालीहाथके कारण से घर न गये छिपरहे घर के सब चिन्तामेंपड़े भगवत् उनके घरवालों के दुःख न सहसके तीन दिन बीते बनजारे का रूप धर बैलोंपर सब प्रकार के अन्न लादेआये कबीरजी के घर डालकर चलेगये पीछे लोग कबीरजी को ढूंढकर घरलाये जो नाज जमा देखा भगवच्चरित्र समझकर आनन्दित हुये साधोंको बुलाकर बांटदिया पीछे अपना उद्यम भी छोड़दिया ब्राह्मणों ने अन्न में कुछ न पाया तिसकरके वटुर के कबीर के

और कहने लगे कि सुनरे जुलाहे तुझको धनका बड़ा गर्व होगया है कि विना हमको जनाये वैरागियोंको कि छोटी जात और शूद्र थे नाज बांट दिया तू इस नगर को छोड़कर दूसरी जगह जाकर बासकर कबीरजी ने कहा क्यों दूसरी जगह छोड़जावैं किसी के घर चोरी करी है कि राहलूटी है ब्राह्मणों ने कहा कि भला इसी में है कि कैतो तू कुछ हमारी भेंटकर नहीं काशीसे बाहरजा कबीरजी उनको अपने घरमें बैठालकर आप कहीं जाछिपे भगवत्‌को अपने भक्तका प्रताप सारेकाशी में विख्यात करनाथा इस हेतु कबीरजीका रूप बनाकर घरआये और रुपया व नाज ब्राह्मणों को इतनावांटा कि सारीकाशीमें यश कबीरजी का हुआ और भगवत् ने ब्राह्मण के रूपसे कबीरसे जाकर कहा कि वनमें क्यों दिनभर रहता है कबीर के घरजाना रुपया सबको बँटता है कबीरजी अपने घरआये देखकर भगवत् कृपाके प्रेम से आनन्दहुये जब यह सिद्धता भगवत्‌कृपा सारी काशी में फैली तो भीड़ लोगों की होने लगी तब यह उपाय किया कि एकहाथ वेश्या के गले में डालकर और दूसरे हाथमें शीशा गंगाजलका मदिराका भ्रम करावते उन्मत्तकी भांति काशी में फिरनेलगे भगवद्भक्तों ने देखा तो कुसंगसे भयमाना व कहनेलगे कि कबीरजी परम भागवत हैं वेश्या के साथ लेने से उनको लोगों ने विषयी समझलिया तो दूसरे लोगों को यह वेश्याओं का कुसंग क्यों न रसातलको पहुँचावैगा और विमुख देखकर हँसे व कबीर जीकी निन्दा करनेलगे तब वहभीड़तो आनेजाने लोगोंकीसम न हुई परनिन्दाकरने के अपराधमें बहुत लोगबधहोनेलगे तब कबीरजी ने यह उपाय किया कि उसी प्रकार वेश्या व शीशालिये राजदरबार में पहुँचे सभामें बैठगये पर राजा व सभाके लोग किसीने आदरसत्कार जैसा करते थे न किया वे विश्वास होगये कबीरजी ने उठकर थोड़ासा गंगाजल धरती पर डाला व रामराम कहकर शोचकिया राजाने कारण डालने व शोचकरने का पूछा कबीरजी ने उत्तर दिया कि इस समय रसोइया श्रीजगन्नाथ जीका आगमें जलनेलगाथा मैंने यह पानी डालकर आगको बुझाके रसोइयाको बचायाहै राजाको आश्चर्यहुआ हलकारा भेजकर समाचार मँगाया तो सत्यठहरा राजा बहुत लज्जितहुआ कि ऊपर के आचरण देखकर ऐसे परमभागवत का आदरसत्कार न

किया नितान्त लकड़ियों का भार शिरपर धरे रानीसहित नंगेपायँन आय के अतिदीन होकर कबीरजी के चरणों में पड़ा कबीरजी ने अपराध क्षमा करके भक्तिका उपदेश किया उस समयका बादशाह सिकन्दर नामीथा काशीजी में आया और ब्राह्मणों और मुसल्मानों के लगाने से कबीरजी पर क्रोधकरके तलबीकी कबीरजीगये लोगों ने बादशाहको सलाम करने को कहा कबीरजी ने कहा कि हमको न सलाम करने आताहै न बादशाह से कुछकामहै एक राम नामको जानताहूं वही मेरा सबकुछ है और मेरा प्राणका आधार वही है बादशाह ने सुनकर क्रोध करके जंजीर से बँधवाकर गंगाजी में डलवादिया न डूबे तब आगमें डलवा दिया न जले तब मतवाला हाथी उनपर छोड़ा हाथी भी भाग गया यहसब प्रभाव कबीरजीका देखकर बादशाह चरणों में गिरा अपराध क्षमाकराया और कहा कि मैं आपका किङ्करहूं धनसम्पत्ति राज्य जो आज्ञाहो सो भेंटकरूं कबीरजीने कहा कि हमको एक रामनामछोड़ और किसीसे कुछ कामनहीं यह कहकर अपने घरचले आये भक्तोंको आनन्द दिया काशीके ब्राह्मणों ने जो यहवृत्तान्त सुना तो लज्जित होकर कबीरजी के दुःख देनेके उपाय में हुये बहुत आदमियों को साधुवेष बनाकर सारेमुल्क में कबीरजी की ओरसे नेवता फेरदिया कि फलाने दिन कबीरजी के यहां भण्डारा है और उसी दिनपर साधोंकी जमात आनिपहुँची कबीरजी को जब समाचार मालूमहुआ तो छिपरहे भगवत्आप कबीरजी के रूपसे आये और ऐसी धूमधाम आदर सत्कार से भण्डारा पूर्णकिया कि वैसा भण्डारा भगवत्से बनिआवै फिर पीछे साधुरूपसे कबीरजी के पासगये सब वृत्तांत भण्डारे का वर्णन किया कबीरजी भगवत्कृपा के आनन्द में मग्न होगये एक अप्सरा स्वर्गकी कबीरजी की परीक्षाके हेतु मोहनीरूप बनाकर आई कबीरजी ने तनक उसकी ओर निगाहको भी न किया ऐसे भगवद्रूप में छकेथे नितान्तचली गई भगवत्ने प्रसन्नहोकर चतुर्भुजरूप प्रकट होकर दर्शन दिया और हस्तकमल उनकेमस्तकपर रखकर आज्ञाकी कि शरीरसमेत परमधाम को चलो कबीरजी भगवद्रूपकी माधुरी देखकर आनन्द होगये और जाने को तैयारहुये परन्तु भगवद्भक्त का प्रभाव प्रकटकरने हेतु एकआश्चर्य चरित्र किया अर्थात् काशीके उसपार मगहदेशहै वहां जो कोई

मरताहै उसको गदहे का तन मिलताहै सो कबीरजी परमधामके जाने के समय उसीदेश अर्थात् गंगापार गये और वहां जाकर शरीर सहित परमधाम की यात्राकी इस चरित्र से यह दिखाया कि जो कोई केवल कर्मशास्त्र निष्ठहै मगहदेश में मरने से गदहे का शरीर उसको मिलता है और जोकि भगवद्भक्तहैं उनको सबदेश व सबस्थान हज़ारों काशीके समानहैं और भक्तिकी यह पदवी व प्रभाव है कि मगह देशमें मरकर भगवद्भक्त शरीर सहित परमधामको जाताहै तिसके पीछे मुसलमानोंने चाहा कि लाशकी कबरदें क्योंकि कबीरजी मुसलमान थे और हिन्दू लोगों ने कहा कि कबीरजी साधुथे हम उनकी लाश जलावेंगे इस पर तकरार हुई चादरा उठाकर देखें तो लाशके स्थान सुगन्धवान् फूलमिले भगवद्भक्ति का विश्वास हुआ॥

५ कथा पद्मनाभ की॥

इस संसारमें भगवत् का नाम महामंत्र व महाधन औरसेवा और पूजा और जप और तप औ योग और ज्ञान व वैराग्य का सार और भगवद्रूपहै नामसे सिवाय और कोई दूसरा नहीं नामहीसे दोस्ती और नामही से नेह और नामही से नाता व नामहीसे विश्वास चाहिये कि यहही भक्तिहै और यहीज्ञान और नामही नामी है और नामही नामहै आप श्रीकृष्ण महाराज अपने नामकी बड़ाई नहीं कहसक्ते इस बात पर सबका मत युक्तहै पद्मनाभजी का वृत्तान्त सुनिये कि उनको कबीर जी अपने गुरूकी कृपासे राम नामकी अच्छेप्रकार परीक्षाहुई काशी जी में एक साहूकारको कुष्ठका रोगथा और कृमि शरीरमें उसके पड़ गये थे गंगामें डूबने को चला संयोग वश पद्मनाभजी भी वहां आगये उसका कष्ट देखकर दयाआई कहा कि तीनबेर रामनाम लेकर गंगामें स्नानकर कि अच्छा होजावेगा वैसाही उसने किया कि तीनबेर राम राम कहकर डुबकी लगाई अच्छाहोगया पद्मनाभजी ने उसको भक्ति का उपदेश किया और वृत्तान्त अपने गुरू कबीरजीको सुनाया कबीर जीने क्रोधयुक्त होकर कहा कि तुमको अबहींतक रामनामकी महिमा मालूम नहींहुई कि एकरोग तुच्छके दूरकरनेको तीनबेर रामनाम कह-लाया रामनाम ऐसा महामंत्र है कि उसके एक बार भी शब्द कानमें पड़जावें तो करोड़ों जन्मके महापातक दूरहोजाते हैं एककुष्ठी का कुष्ठ

ोग कौन बड़ी बातहै पद्मनाभजीको यह महिमा सुनकर और विशेष वेश्वास दृढहुआ दिनरात उसी नामके स्मरण भजन में रहनेलगे॥

पन्द्रहवीं निष्ठा॥

ज्ञान ध्यानकी महिमा जिसमें बारह भक्तोंकी कथाहै॥

श्रीकृष्ण स्वामी के चरणकमलोंकी मीन रेखाको और सनत्कुमार अवतारको कोटानकोटि दण्डवत् है यह अवतार भगवत् ने ब्रह्मपुरी में धारण किया व ब्रह्मज्ञान की विशेष प्रवृत्ति इसी अवतारसे हुई वेद श्रुति व सब स्मृती व पुराण इस बात में युक्तहैं कि बिना ज्ञानके मुक्ति नहीं तो वेदान्त १ सांख्य २ पातञ्जल ३ मीमांसा ४ तर्क ५ वैशेषिक ६ शास्त्रों ने कि वेदके अर्थके कथन करनेवाले व वेदके अंग कहलाते हैं और जहांतक जो कोई मार्ग मतमतान्तर किसी के ध्यानमें आवें और जो प्रवर्तमानहैं उनसबका मूल कारण किसी न किसी एकशास्त्रमें निश्चय करके मिलताहै यह बात कदापि नहीं कि किसीमत व पंथका मूलशास्त्रसे बाहरहोय उसके निश्चयके निमित्त सबने मथन व परिश्रमकिया तो सबने ज्ञानही को मुख्यतरजाना परन्तु सब शास्त्र अपने अपने मत व रीतिसे मुक्तिका वर्णन करते हैं इसहेतु उसज्ञानका स्वरूप देखने में छः प्रकारपर दिखाई देनेलगा अर्थात् हरएक शास्त्रोंके आचार्य ने अपने मूलमतके अनुसार अर्थ ज्ञान शब्द का लिखा व अभिप्राय अपने ज्ञानका ठहराया परंतु परिणाम व फलसबका विचारकरके देखा जावै तो एकही निकल आता है जो सब शास्त्रके मिलाने से थोड़ा भी अर्थ व वृत्तान्त ज्ञानशब्दका लिखाजावै तौभी बात बहुत बढ़जाय और देखनेमें कुछफल विशेष भी लाभ नहींहोता इसहेतु सबशास्त्रोंके मतवाद से किनारा करके जो मुख्यअर्थ व अभिप्राय वेद व बहुत से शास्त्रों के मतयुक्तहैं वह लिखताहूं जानेरहो कि ईश्वर माया जीव इन तीनों का स्वरूप यथार्थ जानकर और ईश्वरके अद्वैततापर मनको दृढ़करके उसी को देखना और जानना यह ज्ञानका स्वरूपहै अर्थात् ईश्वर एक असहाय सबसे असंग और जो गुण वेद व शास्त्रोंने कि सत्चित् आनंदघन व अच्युत अनंत व नित्य व निर्विकार व व्यापक व अविनाशी इत्यादि वर्णन किये हैं तिन गुणोंसेयुक्त और सब गुणोंसे न्यारेहैं भक्तजन उसकी उपासना पांच स्वरूपसे करते हैं प्रथमपरम अर्थात् श्रीविष्णु नारायण

बैकुंठ निवासीका उसस्वरूप व सामा व समाजसे कि जो वेद व शास्त्र ने भगवत्ध्यान के वर्णनमें लिखाहै ध्यान व आराधनकरना परन्तु जानेरहो कि जो श्रीरघुनन्दन व श्रीकृष्णस्वामी के उपासक हैं वह श्री रघुनन्दन स्वामीको परम व अयोध्यानिवासी और श्रीकृष्णस्वामी गोलोकनिवासीको परम अर्थात् परमात्मा मानतेहैं अभिप्राय यह कि जो जिसस्वरूप अर्थात् राम अथवा कृष्ण अथवा विष्णु अथवा नृसिंहके उपासकहैं वह अपने इष्टको परम मानतेहैं मालूमरहै कि यह वह सगुण रूपहै कि जिसको शिव व ब्रह्मा इत्यादि सब योगीजन भांति भांतिकी समाधि लगाकर ध्यान करते हैं और भेद नहीं पावते वेद और शास्त्र व पुराण व स्मृती इत्यादि में हजारहों उपाय धर्म व कर्म व ज्ञान व वैराग्य आदि लिखे हैं सो इसी स्वरूप के प्राप्त के हेतु हैं इसी स्वरूप के प्राप्तहोने से मुक्त व निश्चल व कृतार्थ व कृतकृत्य कहलाते हैं दूसरा व्यूह २ स्वरूप इस संसारको पालन करताहै और फिर नाश करदेता है अर्थात् वासुदेव संकर्षण प्रद्युम्न अनिरुद्ध तीसरे विभूति अर्थात् अवतार सो अधर्मके दूरकरने और वेद मर्यादके दृढ़करने और अपने भक्तोंकी रक्षा करने के निमित्त होताहै सो दोप्रकारका है एक मुख्य अवतार रामकृष्ण इत्यादि हैं जिनका शरीर माया का रचाहुआ नहीं वे मायाके अधीश हैं और पांच उपनिषद वेदके उनके उपासना में गोपालतापिनी व रामतापिनी इत्यादि विख्यात हैं परन्तु यह सिद्धान्त श्री सम्प्रदायवालों का लिखा है जो लोग रामकृष्ण नृसिंह आदि के उपासक हैं वे अपने इष्टको अवतारी मानते हैं व विष्णु व दूसरे लोगों को अवतार दूसरा गौण अवतार उसमें दो भांतिहैं एकतो संसारी लोगों के अज्ञान दूर करने के निमित्त व धर्मकी प्रवृत्ति कर ने को होताहै जैसे व्यास व बलि व पृथु इत्यादि दूसरे परशुराम व शिव व गणेश इत्यादि और कुछ वर्णन अवतारों का दूसरी निष्ठामें किनारे लिखागयाहै और चौथा अन्तर्यामी उसके दो प्रकार हैं एक निरूप अर्थात् ज्ञानानन्द अलख अविनाशी निरीह निरंजन निर्गुणब्रह्म सर्वव्यापक हैं जिसप्रकार तिल व काष्ठ के सब अंगमें तेल व अग्नि प्राप्त हैं परन्तु दिखाई नहीं देते इसीप्रकार वह सब जगह प्राप्त व व्यापकहै और जिसकी सत्ता व प्रेरणा से माया अनन्त ब्रह्माण्डों को रचती है अर्थात्

सगुण स्वरूप शंखचक्रधारी मायासे निर्लेप वासुदेव स्वरूप है और यहही भगवद्विग्रह संकर्षण आदि व्यूह स्वरूप के साथ कि जिनका वर्णन दूसरे स्वरूप में हुआ गिनती होताहै अर्थात् वासुदेव संकर्षण प्रद्युम्न अनिरुद्ध पांचवां अर्चा स्वरूप है कि जिसका वर्णन आठवीं निष्ठा प्रतिमा व अर्चा में लिखागया इतना भगवत् स्वरूपका वर्णन होचुका मायाका स्वरूप यहहै कि जड़ अर्थात् अचलहै स्वतन्त्र किसी प्रकारका कुछ पराक्रम नहीं रखती भगवत् की प्रेरणासे सब कार्य्य करती है कोई का यह वचनहै कि वह माया अनादि शान्त है अर्थात् यह मालूम नही होसक्ता कि कबसे है और कब उत्पन्नहुई परंतु अन्त उसका होजाताहै जब वेद व शास्त्र सिद्धान्त के अनुसार छूटने के निमित्त उपाय किया जाता है तो वह माया दूर होजाती है और कोई यह कहते हैं कि माया नित्यहै व सदा रहैगी कि भगवत्की शक्ति है दूरहोना उसका असंभव है परन्तु जब वेदके अनुसार यह जीव भगवत् आराधन करता है तो भगवत्की कृपासे वह माया उस जीवपर अपना बल जैसा औरों पर करती है नहीं करसक्ती इस बातमें मूल अर्थ दोनोंका एकहै केवल बोलनमात्र है वह माया दो प्रकारकी है एक विद्या कि जिससे अनन्त ब्रह्माण्ड व ब्रह्माण्डों के स्वामी उत्पन्न होते हैं दूसरी अविद्या कि जिस के जालमें यह जीव फँसा हुआहै जीवका स्वरूप कि जिसको आत्मा भी कहते हैं कुछ नामनिष्ठाके अन्तमें वर्णनहुआ अर्थात् भगवत् अंश निर्विकार प्रकाशमान ज्ञानानन्द स्वरूप व तीनोंकाल भूत भविष्य वर्त्तमान में प्राप्त है परन्तु भगवत्के सदृश अनन्त नहीं भगवत् शेष हैं और जीव शेषी है शेष पदका वर्णन विस्तारसे सेवा निष्ठामें होगा सो जीव पांचप्रकार के हैं पहिले नित्य है कि उनका जन्म दूसरे जीवों की भांति संसार में नहीं होता जैसे विष्वक्सेन व गरुड़ आदि दूसरे मुक्त हैं कि भगवत् आराधन व ज्ञानके अवलम्बसे मुक्तहुये तीसरे केवलहैं कि मुक्तहोने के किनारे अपने तप व परिश्रम से पहुँचगये अर्थात् जीवन्मुक्त चौथे मुमुक्षू कि जो मुक्ति चाहते हैं उनके दोप्रकारहैं पहिले वह कि जिन्हों ने नवधाभक्ति करके भगवच्चरणों में चित्तलगाया है॥ दूसरे शरणागतकी भक्ति इत्यादि से कुछ सम्बन्ध नहीं सब प्रकारसे केवल भगवच्चरणों की शरणली है और अपने को सब कार्य्य व साधन में

कि मंदालसा अलर्ककी माता बड़ी ज्ञानी व वैराग्यवान् थी उसने अपने मनमें प्रणकिया था कि जो मेरे उदरसे जन्मले फिर उसको जन्ममरण का दुःख न हो सो जब अलर्कजीने जन्मलिया उनको उपदेश भगवद्धर्म का ऐसाकिया कि घरबार छोड़कर वनको चलेगये औ भगवद्भजन में लगे पीछे और लड़के जोहुये तो उनकी भी मति अलर्कजी के सदृशहुई अन्तमें जो छोटा बेटा सुबाहुनामी हुआ तो राजाने राजके निमित्त मंदालसासे मांगा मन्दालसा ने अङ्गीकार किया परन्तु अपने प्रणकी शोच और चिन्तनारही और एक पत्री यन्त्रकी भांति लिखकर सुबाहुको देदी कि जब बड़ाकष्ट कुछ आनपड़े तो खोलकर पढ़ना जब सुबाहुको राज गद्दी का अधिकारहुआ उसके सुखमें मग्नहुआ तो मन्दालसाने अलर्क जी से कहा अलर्कजीको सुबाहुपर बड़ी करुणा व दयाहुई और चिन्ता को किया कि कौन प्रकार से सुबाहुको संसारकेजालसे छुड़ाकर भगवत् सन्मुख करना चाहिये सो काशी के राजा को आधाराज देनेको वाचा बोल दिया फौज चढ़वाई युद्धभये पीछे सुबाहु की सामर्थ्य युद्धकी न रही शोच में पड़ा तब उस यन्त्रको जो माताने दिया था पढ़ा उसमें लिखाथा कि जब बहुत दुःखहो सत्संगकरना चाहिये और यह संसार अनित्य है भगवत् नित्य और सच्चिदानन्द घनहैं ऐसे स्वामी को छोड़कर जो अनित्य संसारमें मन लगाते हैं सदा आवागमन के जाल में फँसे रहते और जो भगवच्छरण होकर भजन सुमिरण में रहते हैं सो भगवत् के परमपदको प्राप्त होते हैं सुबाहु को इस वचन से कुछ ज्ञान होगया परन्तु सत्संगको भी विशेष जानकर दत्तात्रेयजी के पासपहुँचा उनके थोड़ेही उपदेश से पूर्णज्ञानको प्राप्त होकर सब राजकाज छोड़ अपने बड़ेभाई अलर्क के पासगया हाथ जोड़कर विनयकिया कि आप की कृपा से राज और संसार के बखेड़े से छूटकर भगवच्छरण हुआहूं आप राजगद्दी अंगीकार करिये अलर्कजी बहुत प्रसन्नहुये और कहा कि हमको कुछ चाहना नही है केवल तुम्हारे छुड़ाने के हेतु यह उपाय किया था अलर्कजीने काशीके राजा से कहा कि सुबाहु ने तो राजको त्यागकरदिया तुम राजकरो उसने जो सब वृत्तान्त सुना व संसार की अनित्यतापर विचारकिया तो उसने भी अङ्गीकार न किया अपने राज को भी छोड़कर भगवत् के शरणमें आया और सबने ऐसा भगवत् के

भजन व सेवामें मन लगाया कि थोड़ेही कालमें परम आनन्द व परम पद को प्राप्तहुये॥ कथा श्रुतिदेव बहुलास्व की॥

श्रुतिदेव ब्राह्मण व बहुलास्व राजा दोनों परमभक्त भगवत् के व ज्ञानी अयोध्या में हुये जैसे अपने भक्तों के हेतु भगवत् अवतार धारण किया करते हैं तैसाही चरित्र इन दोनों भक्तों के निमित्त किया अर्थात् जब श्रीकृष्ण महाराज जनकपुर से द्वारका जाने को विदाहुये तो अयोध्या जी में आये ब्राह्मण व राजा दोनों आगे जाकर मिले व दर्शन पाकर कृतार्थहुये और दोनों ने अपने अपने गृहके पवित्र करने के हेतु विनय किया भगवत् ने विचार किया कि दोनोंभक्त बराबर मेरे किसके जाऊं किसके नहीं कृपायुक्त होकर सब ऋषीश्वर व सब सामान सहित दो रूप होकर दोनों भक्तों के गृहको पवित्र किया चारमहीनेतक दोनों भक्तों के घर अयोध्याजी में रहे एक का भेद दूसरे ने न जाना रातदिन नित्य नयेभाव प्रेम से सेवा करतेरहे विदा के समय अनपायनी भक्ति का वरदान पाया॥ कथा उद्धव की॥

उद्धव परमभागवत और ज्ञानीहुये यद्यपि श्रीकृष्ण महाराज कृपासिन्धु उनको मंत्री व एकांती मित्र व नगीची नातेदार समझते थे तथापि उद्धवजी सदा अपने दासभाव से सेवन करतेरहे जब श्री कृपासिन्धु महाराजने व्रजगोपियों के बोध व समझाने के हेतु व्रज में भेजा तो गये व व्रजसुन्दरियों को कि व्रजचन्द्र महाराज के वियोग से बिना जलके जैसे मीन तड़फड़ाती हैं सो दशा थी उन विरहिनियों को ज्ञान व योगका उपदेश करनेलगे परन्तु व्रजकिशोरियों के नयन व मन प्राण सब श्रीमनमोहन श्यामसुन्दर के रूप व माधुरी के अमृतसिन्धु में मग्न और प्रेम व स्नेह के रससे छकी व मतवारी थीं वह उपदेश उद्धवजी का तनक भी उनको न लगा और यह वचनबोलीं॥

सो० सजल मेघ तन श्याम अधर सुधर मुरलीधरे।
मोहीं सब व्रजवाम और न जानाति ब्रह्महम॥

ऐसे ऐसे उत्तर प्रमाणिक दिये कि उद्धव का ज्ञान व योग धूरि में मिलगया और प्रेममें बेसुध व विह्वल होकर व्रजवल्लभाओं के चरणों में लोटनेलगे क्याजाने उस अपने ज्ञान और योग भूलेहुये को ढूंढ़ने लगे होंगे कभी उनके दर्शन से अपने आपको कृतार्थ मानकर अपने

भाग्यकी बड़ाई करते थे और कभी उस परमानन्द से कि जो गोपियों को प्राप्तथा अपने आप को भाग्यहीन जानकर अपने भाग्य से लड़ते थे कि मैं इस व्रज में गोपवधू क्यों न हुआ सो उद्धवजी गोपियों के प्रेम से बेसुध होगये तो कुछ आश्चर्य्य नहीं क्योंकि आप व्रजभूषण महाराजने ऐसी ईश्वरता व प्रभुतासे युक्तकी कि ब्रह्मादिक भी जिसकापार नहीं पाते ऐसे उनके प्रेममें मग्नहैं कि अपने परमधामको छोड़कर उन के हेतु नरशरीर धारणकिया फिर उनकी प्रसन्नता को अपनी प्रसन्नता पर भी अधिक से अधिक जानकर सब प्रकारसे उनकी इच्छा व चाह को पूर्ण किया और उन के अनुकूल चरित्र किये और अब तक ऐसे वशवर्त्ती हैं कि जो कोई उनके चरित्रों को कैसाही पातकी व अपराधी पढ़ताहै अथवा सुनता है उसके हृदयमें आजाते हैं निश्चय करके व्रज सुन्दरियों का चरित्र संसार समुद्रसे पार उतारने के हेतु ऐसाबड़ा जहाज़ है कि अच्छे व बुरे कर्म्मरूप पवन की झोंक नगीच नहीं आती नहीं मालूम कि कितने असंख्य जीव उसके प्रभावसे इस जन्म मरण रूपी घोर नदीसे पारहुये और आगे होंगे जब उद्धवजी ने ऐसा प्रेम व्रजनागरियों का देखा तो अपने ज्ञान व योग को तुच्छ जानकर मथुराको सिधारे और सब वृत्तान्त श्रीनटनागर व्रजचन्द्र महाराज से निवेदन किया वाह वाह धन्यहै गोपियों का प्रेम कि जब आपने वह वृत्तान्त सुना तो यद्यपि हर्ष शोक दुख सुख व माया और मनसे पारहैं परन्तु उसप्रेम में ऐसे मग्न होगये कि जिस प्रेम का प्रवाह हृदयसे उमगकर नयनरूपी झरना से प्रवाहमान होकर निर्गुण निराकार निरञ्जन निर्द्वन्द निर्मोह निर्लेप नाम और गुणोंको बहाताहुआ कपोलोंपर होकर वैजयन्ती और पीताम्बरको भिजाता हुआ वक्षस्स्थलसे चरणकमलों तक पहुँचा पीछे जब कृपासिन्धु महाराज मथुरा को छोड़कर द्वारकाको पधारे तो उद्धव जी ने चरणसेवा न छोड़ी व साथगये जब यादवलोगों को शापहुआ तो भगवत् ने कृपाकरके ज्ञान उपदेशकिया व भक्तिका वरदानदेकर बद्रिकाश्रम को भेज दिया॥ कथा वाल्मीकि श्वपच की॥

वाल्मीकिश्वपच भगवद्भक्तज्ञानवान् हुये जब राजा युधिष्ठिरने इन्द्रप्रस्थमें राजसूय यज्ञ किया तो भगवत्से पूछा कि कैसे परीक्षाहोगी कि यज्ञपूर्ण हुआ भगवत् ने कहा कि जब हमारा शंख आपसे बजै तब

मभक्तलेना कि यज्ञपूर्ण और सिद्धहुआ राजाने शङ्खको भगवत्आज्ञा
के अनुसार यज्ञस्थानमें स्थापितकिया उसयज्ञमें जितने पृथ्वीपर ब्रा-
ह्मण व ऋषीश्वर व ज्ञानवान् व राजा व रंकआयेथे सबकासत्कार दान व
मानसे करके राजायुधिष्ठिरने सन्तुष्ट किया व सब को यथायोग्य रीति
से भोजन कराया परन्तु शंख न बजा तब सन्देहसे युक्तहोकर श्रीकृष्ण
महाराज से कारण पूछा तब आज्ञा हुई कि मालूम होता है कि किसी
भक्त ने अपनी जूठन से इसयज्ञ को सफल नहीं किया इसी कारण से
शंख नहीं बजा राजाने विनयकिया कि महाराज सब देशोंके ऋषीश्वर
और ब्राह्मण आये क्या उनमें कोई तुम्हारा भक्त नहींथा भगवत्ने कहा
कि उन ऋषीश्वर और ब्राह्मणों से पूछना चाहिये सो राजा ने सब से
पूछा तो किसी ने ऋषीश्वर और किसी ने पण्डित और किसी ने वेदपाठी
और किसी ने ब्रह्मवादी और किसीने कर्म्मनिष्ठ अपने आपको बतलाया
परन्तु भगवत् उपासक किसी ने न कहा तब राजा व द्रौपदी व अर्जुन
सब ने बड़ी प्रार्थना से भगवत् से पूछा कि महाराज भक्तको बतलावो
तब उन्हों ने बाल्मीकि श्वपचको बतलाया तब अर्ज्जुन व भीम आदि
राजा के भाई उन के घर गये व प्रणाम करके अपने घर आनेके हेतु
विनय किया बाल्मीकिजी ने पहिले बहुत प्रार्थनाही से नाहीं किया पीछे
भगवत् की इच्छा समझकर राजाके घरआये राजा युधिष्ठिर व भक्त
वत्सल महाराज ने बड़े आदर व सन्मानसे उनको बैठाला द्रौपदी आप
थाल भोजनका तैयार करके लाई व जब बाल्मीकिजी ने भोगलगाया
शंखथोड़ाबजा भगवत्ने छड़ी शङ्खपरमारी व आज्ञाको किया कि अब
किसहेतु थोड़ाबजताहै शङ्खने विनय किया कि महाराज द्रौपदी से पू-
छना चाहिये द्रौपदी हाथ जोड़कर विनय किया कि मेरा अपराध सच
करके है किसहेतु कि जितने भोजन अलग अलग कई प्रकारके बाल्मी-
किजी के आगे गये उन सबको एक में मिलाकर भोग लगाया हमको
बुरा मालूम हुआ और मनमें कहा कि बाल्मीकिजी नानाप्रकारके भो-
जन के स्वादको कुछ नहीं जानते हैं इसी से सब को एक में मिलाकर
खाते हैं भगवत्ने कहा कि अब आगेपर भूलकरभी भगवद्भक्तों को बुरा
और उनके आचरणपर दोष विचार करना न चाहिये पीछे शुद्ध व वि-
श्वास युक्त चित्तसे भोजन कराया तो शङ्ख अच्छे उच्च धुनिसे बजा व

राजाका यज्ञ पूर्णहुआ और भगवद्भक्ति व प्रताप भक्तों का सारे संसार में पहुँचा भजन भावकी प्रवृत्ति अच्छे प्रकार हुई सच बात है॥

चौ० हरिको भजै सो हरिको होय। जाति पांति पूछै नहिं कोय॥

महाभारत में भगवत् का वचन है कि जो चारों वेदका जाननेवाला है परन्तु मेरा भक्त नहीं तो उसमे जोकि चांडाल और पतित भी है और मेरा भक्त है तो वही मेरा प्यारा है उसीको देना चाहिये और वही मिलने के योग्य है और उसीका पूजन उचित है जैसा मेरा॥

कथा ज्ञानदेव की॥

ज्ञानदेवजी परम भागवत विख्यात हैं जिसके चेले नामदेव व तिलोचनजी सूर्य्य व चन्द्रमा के सदृशहुए काव्य उनका सरस्वती व गंगा की भांति जगत् को पवित्र करता है ज्ञानदेव के पिता घरको छोड़कर किसी संन्यासी के पास गये व यह कहा कि हमारे घर स्त्री नहीं है हम संन्यास लेंगे यह कहके संन्यासी होगये उनकी स्त्री पीछे पहुँची व संन्यासी से झगड़ा बखेड़ा करके उनको घरले आई दूसरे ब्राह्मण सजातियों ने उनको जाति से अलग करदिया कि यह संन्यासी होगया जाति में नहीं मिलसक्ता सो अलग रहे तीन लड़के जन्मे बड़े बेटे जो ज्ञानदेव थे लड़काई से श्रीकृष्ण महाराज के चरण कमलों में उन की प्रीति थी ब्राह्मणों के पास जो वेद पढ़नेके हेतु गये तो किसी ने न पढ़ाया कि जातसे बाहर है वेद पढ़ने का अधिकार नहीं ज्ञानदेव जी ने कहा कि ब्राह्मण होना कुछ वेद पढ़ने पर सिद्धांत नहीं है कि पशु पढ़ सक्ते हैं सिवाय इसके वेदको भगवत्से अधिककोई नहीं जानता और वह सब में सब जगह प्राप्तहै यह कहकर एक भैंसेको वेद पढ़नेकी आज्ञादी उस भैंसेने पढ़ना वेदका आरम्भ किया और कई शाखाको ऐसी शुद्ध वाणीसे कि किसी ब्राह्मणको स[illegible] न था पढ़ सुनाया वे लोग यह वृत्तांत देखकर भगवद्[illegible] चरणों में गिरे ज्ञानदेव [illegible]॥

भगवद्भक्ति का न था और वहांके लोग दुर्गाके प्रसन्नताके हेतु मनुष्य बलिदान देते थे लड्डूस्वामी को मोटा चिकना देखकर काली के भेंट के हेतु लेगये सो भगवत् अपने भक्तोंके सहायकेहेतु सदा साथरहते हैं सिवाय इसके लड्डूस्वामीके दृष्टिमें दुर्गाभी भगवद्रूप थी इसहेतु वह प्रतिमा कालीकी फटगई व दुर्गा भयङ्कर रूपसे प्रकट हुई सब दुष्टों को तरवारसे वध किया और भगवद्भक्तके दर्शनसे अतिप्रसन्नहुई भगवद्भक्तिका प्रताप दिखाने के हेतु उनके सम्मुख नृत्यकिया और चरणों को दण्डवत् किया यह वृत्तांत दुर्गामहारानीके विश्वास व सहायका वहांके रहनेवालोंने देखा तो आधीनहुये और भगवद्भक्तिको अंगीकारकिया॥

कथा नारायणदास की॥

नारायणदास उत्तरदेश में वदरिकाश्रमके निकट परम भागवत नारायण स्वरूप हुये भक्ति व भजन में अत्यन्त निष्ठथे मनतो भगवत् स्वरूपके चिन्तवन में मग्न रहताथा और मुखसे अनुक्षण भगवच्चरित्र और नाम लेतेथे भगवद्भक्ति के प्रवृत्त व गुप्तचरित्र व भावके कहनेवाले एकहीहुये भक्तोंकी सेवा भगवत्के सदृश किया करतेथे वदरिकाश्रमसे दर्शनके हेतु मथुराजी में आये केशवदेवजी के दरबारमें रहनेलगे एक दिन शोचा कि जो लोग केशवदेवजी के दर्शनको आते हैं उनकामन जूतियों की चिन्तामें रहताहोगा सो उनकी रखवारी करना आरंभकिया व उनके प्रताप व महिमाको कोई जानतानहीं था इसहेतु किसी ने इस सेवाके करनेमें बर्जना व प्रार्थनाको न किया एकबार एकदुष्ट बड़ीभारी गठरी उनके शिरपर रखबायके लेचला राहमें किसीने पहिचानकर साष्टांग दण्डवत् किया तब वह दुष्ट लज्जित होकर अपराध क्षमाकराने लगा आपनेकहा कि इसशरीर से किसी का कुछ कामनिकले सोई लाभ है तुम शोचमतकरो तब वह रोनेलगा चरणोंमें गिरपड़ा नारायणदासजी ने उसको भगवद्भक्ति का उपदेश करके एकक्षण में भगवद्भक्त व सब अपराधों से निर्म्मल करादिया सत्यकरके भगवद्भक्तों को सब कुछ सामर्थ्य है जो चाहैं सो कर दिखलावैं जो किसीको यह शङ्काहोय कि ऐसे अपराधी पर ऐसी कृपा किसहेतुकरी सो यह लक्षण व धर्म्म शुभदर्शन व साधुताकाहै जैसे मेघकी वृष्टि गाली देनेवाले व स्तुति करनेवाले बराबरहै इसीप्रकार भगवद्भक्तों की कृपा सबपर बराबर होती है

कथा किन्हरदास की ॥

किन्हरदास परम भागवत भजनानन्द हुये भगवद्भक्तो की कृपासे निज भगवत्स्वरूप की माधुरीका उनको लाभहुआ गुरूके शरणहोकर भगवद्भक्ति का स्वरूप अच्छा जानकर संसार के सब धर्म्मछोड़ दिये वस्तु व अवस्तु झूठ सांच ज्ञान व अज्ञान सार व असारको विचारकर सारे जीवनको भगवद्रूपजानकर निश्चयकिया जैसे लोग बतलाया करते हैं कि फलाने वृक्षकी शाखापर वह चन्द्रमा दिखाई देता है और चन्द्रमा उस शाखासे लाखों कोसपर है इसीप्रकार किन्हरदास कहने मात्रको संसारमें होकर वास्तव करके अलगथे कबहीं किसीको कठोर व दुर्वाच्य न कहा भगवत् और भक्तोंके चरित्र सदावर्णन करतेथे॥

कथा पूर्णदासकी॥

पूर्णदासजी की महिमा कौन वर्णन करसके जिन्होंने हिमाचल पर्वतमें गंगाकिनारे योगके प्रकारसे समाधि लगाकर भगवत् के ध्यानमें मनलगाया और रीछ व व्याघ्र आदिका कुछडर न किया प्राणायामकी विधिसे प्राणको जीतकर जीवन मरण अपनेवशमें करलिया साक्षीशब्द व पदनिर्वाण उपासनाके उनके बनायेहुये बहुतहैं व विख्यातहैं॥

सोरहीं निष्ठा॥

वैराग्य व शांतके वर्णनमें जिसमें चौदहभक्तोंकी कथाहैं॥

श्रीकृष्णस्वामीके चरणकमलों की बिन्दुरेखाको दण्डवत् करके श्री नारायण अवतारको वंदनाकरताहूं जिन्होंने बदरिकाश्रममें वह अवतार धारणकरके तप और वैराग्यकी प्रवृत्ति संसार में फैलाई जानेरहो कि तीव्रवैराग्य के परिपक्व होने पीछे शांतकी पदवी प्राप्तहोती है इसहेतु पहिले वैराग्यका स्वरूप तिसपीछे शांतरसका वर्णन इसनिष्ठामें लिखा जायगा सबकोई इसबातको जानताहै कि विना एकाग्रहोने मनके भगवत् नहीं मिलता और मनएकाग्र तब होताहै कि सबसंबंधसे अलग व त्यागहोयसो गीताजीमें जब अर्जुनने भगवत्से प्रश्नकिया कि मनका रोंकना ऐसाकठिनहै कि जैसाकोई वायुके पकड़रखनेका यत्नकरै क्योंकि मनचंचल व बलवान् व हठवाला है तब भगवत्ने उसके उत्तरमें कहा कि अभ्यास व वैराग्यसे मन पकड़ाजाताहै इसहेतु त्यागमुख्य साधन है सो स्वरूप उस वैराग्य का सूक्ष्म यह है कि सारको ग्रहणकरना व

असारको छोड़देना परन्तु व्याससूत्रोंमें उसवैराग्यकी दो अवस्थालिखी हैं पहिली अपर कि उसको वशीकार कहते हैं उसका स्वरूप यहहै कि संसारी सुख आनन्द से लेकर स्वर्ग व ब्रह्मलोक पर्य्यंतके सुख आनन्द से वैराग्य व त्यागहोय व यद्यपि सूत्रके अक्षरसे प्रगट कोई अर्थ इस अवस्था का मालूम नहीं होता परन्तु तात्पर्य्य उससूत्रका चारप्रकार के निर्णयपर है प्रथम यतिमान अर्थात् सार और असार का विचार और उसके त्यागका उपाय १ दूसरा व्यतिरेक अर्थात् यह मन न करना कि इतना अवगुण अन्तर व बाहरका मिटगया और इतना और बाकी है उनका भी त्यागचाहिये २ तीसरे इन्द्र अर्थात् जहांतक स्वाद व सुख व चाह सब देखें या सुने हैं उनकी ओरसे मनको ऐसा रोकना कि फिर मन उनकी ओर न जावे ३ चौथे वशीकार अर्थात् सुख व स्वाद के चाहकी तनकलस मनमें बाकी न रहै ४ दूसरी अवस्थाका नामपरहै उसमें कोई विशेष निर्णय नहीं स्वरूप उसका यहहै कि मायासे मिलेहुये जो तीन गुण अर्थात् सत्व रज तम उनको त्यागकरके केवल भगवत् सच्चिदानन्द घन पूर्णब्रह्म परमात्माके साक्षात् स्वरूपमें मग्न होजाना और मायाके गुणों से सर्वप्रकार वैराग्यहोना इसनिर्णयसे लाभ यह हुआ कि भगवत् की प्राप्ति केवल वैराग्यसेहै जबतक सब स्वाद व सुखकी चाहसे वैराग्य न होगा तबतक कदापि भगवत् न मिलैगा और विचारसे भी मालूम होताहै कि मन एकपात्रके सदृशहै जबतक वह संसारी सम्बन्ध व सुख भोगके चाहसे भराहै तबतक भगवत्के आनेकी व निवासकी कहां ठौर है जो भगवत्को उसमनरूपी पात्रको पूर्णकरना अंगीकारहै तो दूसरे सब सम्बन्ध व सुखभोगकी चाहनासे खालीकरना चाहिये शास्त्रों में जो यहबात लिखी है कि गृहस्थाश्रम के पश्चात् गृह त्यागकरके वनवास करे तो अभिप्राय उसका यहहै कि गृहस्थीदशामें भगवद्भजन नहीं हो-सक्ता जब सब संसारके कार्य्यसे अलगहोगा तब मन एकाग्र होकर भगवत् में लगजायगा जिसकिसीका मन संसारसे त्याग व भगवत्की ओर लगजाय तो वह त्याग इस परम्परा के अनुसार होय जो ऊपर लिखआये अर्थात् सारका ग्रहण व असार का त्याग और उनदोनों के विचारमें लगारहै नहीं तो केवल इसका नाम वैराग्य नहीं कि घरबार स्त्रीको छोड़कर फ़क़ीर होगये और बाबा जी कहलानेलगे जो इसी का

नाम वैराग्यहो तो वनजंतु सदावनमें मग्न रहते हैं अथवा हजारों मनुष्य ऐसे हैं कि दरिद्रता के कारण से शरीरपर वस्त्र नहीं न एक कौड़ी पास है व न स्त्री न बेटा तो क्या वे भगवत्को पहुँचजाते हैं बरु सदा आवागमन के जाल में फँसे रहते हैं और जिनको सार व असार का विचार अनुक्षण रहताहै और उनके ग्रहण व त्यागमें लगे रहते हैं उनको जो गृहस्थ धर्मभी है तो सब संसारी सम्बन्ध वनके सदृश हैं और सब लड़के बाले सत्संग व साधुसेवी हैं सो पुराणों में जनक व प्रह्लाद व राजाबलि आदि की हजारों कथा व इस भक्तमाल में सैकड़ों भक्तों की साक्षी है और जिन लोगों का मन कुटुम्ब व परिवार में फँसाहुआ है और सार असार का विचार नहीं तो वे सब वस्तुको छोड़कर जंगल में चलेजावैं तौभी हज़ार दुनियांदारों के बराबर हैं व मुमुक्षूसाधक को एकबात यह भी जानकारी है कि सार व असारके विचार व गृह कुटुम्बके त्याग करने से मन निर्मल होकर भगवत् स्वरूपका प्रकाश जिस जिस भांति प्रकट व साक्षात् होता जाता है उसी उसी भांति परोक्ष व अभूत बातका जानना व सत्य होजाना वचन आशीर्वाद व शाप और प्राप्त होजाना सामा मन वांछित जोकि अणिमादिक अष्टसिद्धि प्रसिद्ध की सम्बन्धी हैं यह सब अधिक होजाताहै जो तो उस विरक्त योगीका मन उन सिद्धियोंकी ओर लगगया तो सब जातारहा फिर ठिकाना लगना कठिन है सो उससमय मनको ऐसा सम्हालै कि तनक भी मन उन सिद्धियों में न लगै ऐसा त्यागकरै कि जैसे वांत व विष्ठाको घिनावना जानकर छोड़ देते हैं जो उससमय सम्हलगया तो तुरन्त वांछित पद को पहुँचगया जो उन बटमारों ने लूटलिया तो सातवें पाताल को गया व यद्यपि शांतरसका स्वरूप वैराग्य में मिला प्रकट होताहै परन्तु उपनिषद् और रस शास्त्रके अनुसार शांतरस अलग स्थापित कियाहै इसहेतु रसोंकी पद्धति के अनुसार से उस शांतका वर्णन लिखाजाताहै आरम्भ में प्रकट होने सब रसों के हेतु चारि सामग्री अर्थात् विभाव व अनुभाव व सात्विक व व्यभिचारी लिखीगईं सो इस शांतकी प्रथम सामग्री विभाव में भगवत् सब मंगल व आनन्दकी खानि अनगिनत ब्रह्माण्डोंका नायक व रचनेवाला असंख्यात जीवों को व सब जानने वाला तीनोंकाल में विराजमान जिसका नाम पाप व महाकष्टसे छुड़ाने

वाला परमानन्द के देनेवाले जो गुण हैं तिनकी राशि जिसके बराबर अथवा अधिक दृष्टान्तको कोई नहीं पूर्णब्रह्म परमात्मा सच्चिदानन्दघन भगवत् अपना इष्टदेव वह तो विषयालम्बन है और शिव सनकादिक नारद अथवा दूसरे भक्त आश्रयलम्बन हैं व सामग्री दूसरी अर्थात् अनुभाव दृष्टि नासाके अग्रपर व ध्यान अनुक्षण व सब ओरसे निर्मल व दुःख सुखका त्याग इत्यादि व सामग्री तीसरी अर्थात् सात्विककी जो जो आठ दशाहैं उनमें से एकदशा मूर्च्छाकी नहीं होती और सात यथा कथंचित् समयपर होतीहै व सामग्री चौथी व्यभिचारीमें से स्मृती व निर्वेद इत्यादि कई दशा योग्य इसरसके किसी समयमें प्रकटहोकर जाती रहती हैं स्थायीभाव इस रसका वहहै कि सबमें बराबर दृष्टिहो व ब्रह्मलोक तकके सुखोंसे अनरुचिहोय जिन भगवद्भक्तों की वैराग्य के प्राप्तहोने पीछे शांतरस में दृढ़ स्थितका संयोग पहुँचा उनके लक्षण यह हैं कि किसी जीवसे बैर नहीं रखते सबके मित्र सबपर दया करनेवाले होते हैं अहंकार व गर्वसे रहित व दुःख सुख दोनोंको बराबर जानते हैं सहनशील व सब ओर से चित्त संतुष्ट भगवत्के ध्यानमें अनुक्षण मन लगाहुआ दृढ़ और अनन्य विश्वास भगवच्चरणों में सब इंद्री भगवत् स्वरूपमें मग्न किसी को उनसे दुःख नहीं पहुँचता न आप किसी से दुःखी होते हैं सुख व क्रोध व भयसे जो भांति भांतिकी चिन्तना मन में उत्पन्न होती हैं उनसे छूटेहुये न कबहीं प्रसन्न होते हैं न अप्रसन्न न कबहीं किसी बातका शोच करते हैं न किसी वस्तु की चाहना मन विमल व एकाग्र अच्छे व बुरे से अलग बुद्धिमान् व पवित्र शत्रु मित्र दोनों से बराबर संसार से व संसारी कार्य करने से अलग व अनरुचि मान व अपमान निन्दा व स्तुति दुःख सुख शीत उष्णकाल को सम करके मानते हैं क्षुधा शांत के हेतु थोड़ेही से सन्तुष्ट होते हैं घरबारसे न्यारे बुद्धि निर्मल व तीक्ष्ण यहसिद्धान्त श्लोकों में से थोड़े से श्लोकों का अर्थ लिखागया स्तुति व बड़ाई शान्तरस व वैराग्य की लिखने व कथन में नहीं आय सक्ती जिस किसी को जानने और सुनने की विशेष प्रीति होय सब पुराणों से मालूम करसक्ता है हे श्रीकृष्णस्वामी कहां मैं और कहां शांतरस की पदवी यद्यपि आपकी कृपासे सबकुछ लाभ होसक्ताहै कि एक निमिष में मशकको ब्रह्मा और ब्रह्माको मशक

और तृणको कुलिश और कुलिश को तृण करसक्ते हैं परन्तु अपने अपराध व अपकर्म्मकी ओर देखताहूं तो किसी बातके निमित्त नहीं कह सक्ता जो निर्लज्ज होकर वैराग्य व शांत माँगूं तो यह शोच होताहै कि उस श्यामसुन्दर नवलकिशोर रूप अनूपके चिन्तवनके हेतु क्यों न प्रार्थनाकरूं कि जिसके ज्ञान और वैराग्य दोनों सेवकव दासहैं अरेमन इसरूप और समाज के चिन्तवन में जो तू लगै तो तेरी पदवी का कोई नहीं कि चित्रकूट के निकट मन्दाकिनी के किनारे पर एकवन परम शोभायमान तमालव कदम्ब व आम व चम्पा व मौरुसरी इत्यादि वृक्षोंका है और उन वृक्षोंके मध्यमें जो चारवृक्ष एक वट दूसरा पीपल तीसरा प्लक्ष चौथा तमाल है उनपर भांति भांतिकी बहुत ललित हरी लता रंगरंग केसुगन्धित फूलोंकी छाईहुई उन वृक्षोंके नीचे इन्द्रादिक देवताओंने भीलरूप बनाकर परम शोभन कुटी रची है और उसकुटी के आगे बड़ी एक वेदी है कि श्रीजानकी महारानी अखिलब्रह्माण्डेश्वरी ने देवताओं के बनाने पीछे अपने श्रीहस्तकमल से उसकी शोभा को रचा है उसके चारोंओर फुलवारी में रंगरंगके फूल रायबेल व चमेली व दवना व मरुआ व मदनबाण आदिके ऐसी सुन्दरताई के साथ हैं कि जिसओर दृष्टिजाती है बरबस मन अटकताहै उसके बीच में श्रीरघुनन्दन स्वामी शान्तस्वरूप शोभाधाम कि जिनके मुखकी शोभा के आगे नीलमणि व कमल व घन व चन्द्रमाकी उपमा फीकी है मुनिवेष बनाये हुये जटामुकुट शिरपै हैं और उसमें फूल जगह जगह श्रीमहारानीजी ने गूंथे हैं कानों और हाथों में फूलोंके आभूषण वनमाला गले में धनुष बाण धारणकिये विराजमान हैं वामअंग श्रीजनकनन्दिनी शोभित लक्ष्मण महाराज शस्त्र धारण किये सेवामें हाथबांधे तत्परहैं चारों ओर मुनि बैठे हैं कुछ प्रश्नोत्तर होरहाहै ॥

किया व स्त्री पुत्र सहित वनमें जाकर भगवद्भजन करने लगे तो उसद-
शामें भी जो कुछ मिलजाता तो याचक व भूखे को उठादेते थे एकबेर
अट्ठाईस दिन पीछे थोड़ासा नाज भगवत् इच्छासे मिला उसके तीन
भाग करके भगवत्अर्पण करके भोजनकरने बैठे तबतक एकब्राह्मण
आगया और भोजन जांचा राजा ने अपना भाग उठाके दिया तिसपीछे
एक शूद्र आया राजाने अपने लड़केका भाग देदिया फिर एकम्लेच्छ
ने जांचा उसको स्त्रीकाभाग उठादिया और आनन्द होकर भगवद्भजन
करनेलगे भगवत्ने जो राजाको भजन व वैराग्य व दयामें दृढ़देखा तो
प्रसन्नहुये साक्षात् दर्शनदिये बड़ी कृपाकरके आज्ञा कि जो चाहना
होय सो मांगो राजा ने विनय किया कि सिवाय भक्ति के और कुछ चा-
हना नहीं है सो अपनी भक्ति दीजिये और यह संसार भांति भांतिके
दुःख व पीड़ामें फँसा है तो दूसरा वर यह मांगताहूं कि सबका दुःख
मुझको मिलै व मेरे भाग्य में जो कुछ सुख हो सो सबको मिलै भगवत्
इस परोपकार व दयापर अधिकप्रसन्नहुये व जो पद परमयोगियों को
मिलताहै सो उनको दिया जानेरहो कि जो कोई भगवद्भजनसे विमुख
हैं उनको सब सुख व ऐश्वर्य्य संसार के दुःख रूपहोजाते हैं और जो
भगवद्भक्त व भजनानन्द हैं उनको सबदुःख व पाप सबसुख व पुण्य
परमानन्द के सदृश हैं ॥ कथा परशुरामजी की ॥

परशुरामजीने अपनीभक्तिके प्रतापसे जङ्गलदेशके जङ्गली लोगों
को इसप्रकार सत्सङ्गी व पार्षदरूप करदिया कि जिस प्रकार चंदनके
वृक्षोंकी हवा सारे वनको चन्दन करदेतीहै अथवा जैसे बहुकालका अ-
न्धकार दीपकसे तुरन्त दूरहोजाय श्री भट्टजी व हरिव्यासजी का जो
परम्परा मार्ग्ग था उसीपर चलतेथे भगवत्कथा कीर्त्तनका ऐसानियम
था कि हजारों को भगवत्सम्मुख करदिया भक्ति व माला तिलक की
प्रवृत्तिचलाई व राजधानी में रहकर सब ऐश्वर्य्य प्राप्तथा परन्तु उससब
वैभव संसारी से ऐसा वैरागथा कि सब को तुच्छ जानते थे सो यह
दोहरा बनाया उन्हीं का है ॥

दो० माया सगी न मन सगो सगा न ये संसार।
परशुराम या जीव को सगो सो सिरजनहार ॥

कोई साधु इनकी परीक्षाको गया व कहाकि आपको भगवत्से प्रीति

है तो इस वैभव से क्या काम है अलग भजन करना चाहिये परशुराम जी अभिप्राय उससाधुका जानगये और सब छोड़कर कोपीन बांधके एक पहाड़की गुफामें जाबैठे भगवद्भजन करनेलगे संयोगवश वहां एक वनजारा आगया और बहुत धन व पालकी और राजाओं की सामा सब भेंटकरी वह साधु अच्छी प्रकार समझगया कि परशुराम जी को कुछ चाहना वैभवकी नहीं है परन्तु भगवत् इच्छासे आपसे आप आते हैं परशुरामजीके चरणों में पड़ा लज्जित होकर विनयकिया कि मैं अ-ज्ञतासे बोला मेरा अपराध क्षमा कीजिये आपका प्रताप जाना सत्य करके भगवद्भक्त जितना ऐश्वर्यका त्याग करतेहैं उतनीही और बढ़ती होती है तो जो संसारी सुखके चाहनेवाले जितना भगवद्भजनमें लगेंगे उतनाही वैभव सुख उनको मिलैगा और सिवाय उसके परमनिधि भगवद्भक्ति भी उनको लाभहोगी॥

कथा रांकाबांका की॥

रांकाजी परम वैराग्यवान् भगवद्भक्त हुये और बांका उनकी स्त्री रांकाजीसे अधिक भक्तथी पण्डरपुर जहां नामदेवजीका घरहै तहांहीं उनका घरथा जङ्गलसे लकडीलाते बेचके निर्वाह करते दिनरात सि-वाय सुमिरन भजनके और कुछ धन्धा न था एकदिन नामदेवजी ने भगवत्से विनय किया कि बड़े शोचकी बात है कि रांका बांका दोनों परमभक्त ऐसे खाली हाथों से दिनकाटें भगवत् ने कहा कौन उपाय कियाजाय कि वे कदापि धन अंगीकार नहीं करते सो अपनी आंखों तुम यह लीला देखलेव यहकहकर नामदेवजीको अपने साथ वनमेंले गये और जिसराह रांकाबांका लकड़ियोंके लेनेके हेतु जातेथे उसराह में एक थैली मुहरों की डालदी रांकाजीकी दृष्टि जो उसपर पड़ी तो विचार किया कि स्त्री पीछे आती है ऐसा न हो कि उसको लोभ इस द्रव्यका होजावे इसहेतु उसपर धूलिको डालदिया स्त्री जो रांकाजीके निकट पहुंची तो पूछा कि तुम धूलिमें क्या देखतेथे रांकाजीने वृत्तान्त देखने मुहरों की थैलीका व अपने विचार का सबकहा स्त्रीने पूछा कि महाराज मुहर व धूलिमें क्याभेदहै और धूलिपरधूलि डालना क्या प्रयो-जनथा रांकाजी बहुतप्रसन्नहुये और अपनी स्त्रीका बांका नामधरा और कहा कि तेरे वैराग्यने मेरे वैराग्य परभी धूलिको डालदिया भगवत् ने

नामदेवजीसे कहा कि देखो कैसावैराग्य दोनों भक्तोंकाहै फिर पीछे भग-
वत् व नामदेवजी ने भार लकड़ीका बटोरकर इकट्ठा करदिया कि भला
कुछ सेवा तो होय रांकाबांका ने उन लकड़ियोंको किसी दूसरेका बटोरा
समझकर हाथ न लगाया व खालीहाथ घरको चलेआये और यह
निश्चय विचारा कि आजमुहरें दृष्टिमें आई उनके असगुनसे लकड़ी
भी हाथ न आई जो उन मुहरोंको हाथलगाते तो न जानें क्या होता
भगवत्ने वह लकड़ी बटोरीहुई को रांकाजीके घर पहुँचादिया व रांका
जीने भगवत्का भेजा जानकर अंगीकार किया पीछे भगवत् ने दर्शन
दिया और कुछवस्त्रके अंगीकार करनेको आज्ञाकिया रांकारूप अनूप
व छवि माधुरीको देखकर ऐसे दर्शनमें बेसुधि व मग्नहोगयेथे कि कुछ
भान न था इसहेतु भगवत् ने आज्ञाकी तिसका उत्तर न देसके और
नितांत भगवत्प्रसाद को भगवद्रूप जानकर अंगीकार किया पीछे रांका
जीने नामदेवजीसे कहा कि महाराज उस शोभाधाम परमसुकुमार व
फूलसे भी कोमल अंगवारेको कंटक व अनेक भयसेयुक्त जो वन तिस
में लेजाना और परिश्रम देना तुमको कैसे अच्छालगा नामदेवजी और
रांकाजी दोनों भगवद्बालरूपके उपासकथे सो भगवत् उनकी उपासना
के अनुकूल रूपसे प्रगट हुये ॥

कथा रघुनाथ गोसाईं की ॥

रघुनाथ गोसाईंकी भक्ति और भावकी बड़ाई कौनसे कहीजाय कि
जिसकी सेवा आप भगवत्ने करी और सदा भगवत्की परिचर्या में त-
त्पर रहतेथे उत्कलदेशमें थोड़ेसे नगरके रहनेवालेथे और धन सम्पत्ति
बड़ी घरमेंथी सबको असार व अनित्य समझकर छोड़दिया और जग-
न्नाथपुरी में रहनेलगे बाप उनका पुत्रके स्नेहसे सदा कुछ द्रव्य व सामा
उनके खर्चके हेतु भेजता परंतु कुछ अंगीकार नहीं करते केवल भगवत्
रूपके रसमें छकेहुये अपने गुरू महाप्रभूजी की सेवा में तत्पर रहकर
और श्रीजगन्नाथराय स्वामी के दर्शन करके भले बुरे व उष्ण व शीतल
समय के धर्म से अलग रहते एकबेर जाड़े के समय में ठंढलगी श्रीज-
गन्नाथराय स्वामी ने कृपाकरके बानात निज अपनी सेवाकी दी फिर
एकबेर अतीसारका दुःखहुआ श्रीजगन्नाथरायजी ने जैसे माधवदास
जीकी सेवा करीथी उसीप्रकार इन गोसाईंजीकी करी गुरूने वृन्दावन

वासकी आज्ञाकरी तब श्रीवृन्दावनमें आये और राधाकुण्डपर विश्राम किया सदा भगवत्के मानसी पूजनमें रहते थे और छविसुधामें छके दिनरात भगवन्नामका वर्णन व कीर्त्तन का मन विश्राम था एक बेर दूध-भात जो मानसी भोग भगवत्को लगाया तो ध्यान में आप भी महाप्रसाद खाया बहुत भोजन करनेसे गरिष्ठताहुई बीमार होगये वैद्य ने नाटिका देखकर कहा कि दूध व भात खाने के कारण से यह दुःख उत्पन्न हुआहै औषध पाचक व गरिष्ठता दूर करने की करीजाय सो औषध भी लिखी गोसाईंजी ने उत्तरदिया कि जिस भोजनसे गरिष्ठता हुई है वही भोजन अज्ञानरोगके वास्ते औषध सिद्ध व सदा जीने के हेतु अमृत है सो आप औषध अपनी अपने पास रखिये और मुझको जिस दशामें हूं उसी दशामें छोड़दीजिये वैद्यको विश्वासहुआ चरणों में पड़ा वाह वाह इस चिन्तवन व ध्यानकी सिद्धताको कि भगवत् सब को ऐसा करें और कुछ भाग उसमेंसे इस दासको भी देवै॥

कथा श्रीधर स्वामी की॥

श्रीधरस्वामी ने श्रीमद्भागवत की टीका ऐसी रचना करी कि परम अमृत भागवतका निज अर्थ विना परिश्रम सबको प्राप्तहोनेलगा दूसरे तिलककारों के तिलक से तो द्वेष व खैंच प्रकटहै अर्थात् जो कोई कर्मका उपासकथा तो उसने भक्ति व ज्ञानके अर्थको भी कर्म्म की ओर लगाकर टीकाकिया और जो कोई उपासक भक्ति व ज्ञानके थे उन्हों ने अपने अपने मार्गको दृढ़ करदिया किसी ने मुख्य वेद और भागवत पर दृष्टि न किया परन्तु श्रीधरस्वामी ने तीनों काण्ड अर्थात् ज्ञान और भक्ति और कर्म वेदकी पद्धति के अनुसार विना पक्षपात लिखा और जैसा अर्थ जिस जगह चाहिये अपने गुरू परमानन्दजी महाराज से बूझकर वैसाही लिखा और परमसंहिताको वेदकी रीतिके अनुसार दृढ़ रक्खा जब वह टीका रचना होचुकी तो काशीपुरी में पण्डितों की सभाहुई और दूसरे पण्डितों ने भी अपनी टीकाको रखदिया और सब पण्डित अपनी रचनाको दूसरेकी रचनापर श्रेष्ठता बतलातेथे श्रीधर स्वामी को तनक अहङ्कार व हठ अपनी टीकापर न था नितान्त सब पण्डितों के सम्मत से यह बात ठहरी कि बिन्दुमाधव महाराज जिस टीकाको अंगीकार करें उसीकी प्रवृत्ति चलाई जाय सो सब टीकाओं

को भगवत् के मंदिर में रखवायदिया और दिनको वन्द करदिया कुछ वेलम्ब करके फिर मन्दिर जो खोला तो स्वामी श्रीधरजी के तिलकपर दस्तखत मंजूरी के मिले और सब ना मंजूर हुआ सबको विश्वासहुआ और वही श्रीधरी टीका चली व सबको अंगीकार हुआ श्रीधरस्वामी पहिले से भगवत्के परम भक्त थे जिस कारणसे घर वार छोड़ा सो यह है कि धनवान् थे आगरे से कुछ द्रव्य सहित कहीं को जातेथे राह में ठग मिलगये और पूंछा कि तेरे साथ कौन है उत्तरदिया कि रघुनन्दन स्वामी मेरा मालिक व जीवन आधार मेरे साथहै ठगों ने आपुसमें सम्मत किया कि यह आदमी अकेला है मारकर धन असबाब लूटिलेव सो एक जो हथियार चलाने को उद्यतहुआ तो श्रीरघुनन्दन स्वामीको धनुष बाणलिये रक्षा के हेतु साथदेखा इसीप्रकार कईबार मन किया व हरबार उस रक्षक को साथ देखा जब घर आये तो ठगों ने पूंछा कि महाराज वह श्यामसुंदर सुकुमारनवयौवन कौन है जो राहमें तुम्हारी रक्षा करता रहा स्वामी ने उसी घड़ी घरबार व धन सम्पत्ति को त्याग किया कि मेरे स्वामी को उसकेहेतु क्लेशहुआ और वे ठग भी विश्वास करके भगवत् सम्मुख होगये ॥

चौ० रमाविलास राम अनुरागी। तज तन मन जिमि नर बड़भागी ॥

कथा कामध्वजकी ॥

कामध्वजजी जातिके राजपूत व चारभाइयों में अपने आप परम भक्त व वैराग्यवान् हुए कि वनमें रहकर सदा श्रीरघुनन्दन स्वामीकी भजन सेवामें लीन रहते थे किसीसे कुछ मतलब व प्रयोजन नथा एक काल भगवत् प्रसाद के निमित्त नगर में आया करतेथे और उसीघड़ी फिर चलेजातेथे एकदिन उनके भाइयों ने कहा कि जो तुम साथ चल कर रानाजीके सरकारमें हाजिरी देआवो तो तुम्हारा दरमाहाभी लिया जावे कामध्वजजी ने उत्तर दिया कि जिस सरकार में नौकर हूं तहां हाजिर रहताहूं यह नहीं होसक्ता कि वहांसे गैरहाजिर होकर विमुखों में चेहरा लिखाऊं भाइयों ने कहा कि जब मरोगे दाहकर्म कौन करैगा उत्तर दिया कि वहही सब करैगा कि जिसका मैं दासहूं यह कहकर वनको चलेगये कुछ दिन पीछे जब अन्तसमयआया तो श्रीरघुनन्दन स्वामीकी आज्ञासे हनुमान्जी आये चन्दन अगर इत्यादिसे दाहकर्म

कामध्वजजी का किया श्रीरघुनन्दन स्वामी ने अपने भक्तों का प्रताप दिखलाने के हेतु एक चरित्र आश्चर्य जटायु और शवरीके वास्ते यह किया कि जितने भूत प्रेत उसबागमें रहतेथे सब कामध्वजकी चिताको धुआँ लगने से पवित्र होकर परमपदको चलेगये एकप्रेत उस समय कहीं चलागया था जबआया और अपने सजातियों को न पाया तो एक संन्यासी से समाचार सब सुनकर उसी भस्ममें लोटकर सद्गतिको गया जानेरहो भगवत्का वचनहै कि मेरे भक्त तीनोंलोकको पवित्र करते हैं और प्रयाग व गंगा आदिका यह वचनहै कि हम सबके पाप व दुःख दूर करते हैं और हमारे पाप भगवद्भक्तोंकी चरणकृपासे जाते हैं तो क्या आश्चर्य है कि भूत पिशाच इत्यादि शुद्ध होकर सद्गतिको पहुँचे॥

कथा गदाधर दास की॥

गदाधरदासजी परमभागवत और ऐसे प्रेमीहुये कि विहारीलाले जी की सेवा और छवि अभिरामके देखने और शृङ्गारमें सदाआनन्द व लीन रहकर भगवद्भक्तों की रीतिसे सेवा तन मनसे करते थे उदार और भगवच्चरित्रों के कीर्त्तन करनेवाले ऐसेहुये कि वर्णन नहीं होसक्ता भगवत्में अनन्य विश्वास ऐसा था कि स्वप्नमें भी दूसरे देवताकी ओर न देखा संसार को भगवद्भक्तिका बाधक समझकर त्यागदिया व बुर्हानपुरके निकट एकबागमें आकर बैठरहे लोगोंने बस्ती में चलनेको बहुत विनय व प्रार्थनाकी पर न गये सदा भगवत्के ध्यानमें मग्नरहा करते थे एक दिन जल बहुत बरसा भगवत् ने अपने भक्तका क्लेशदेखकर एक साहूकारको आज्ञाकी कि तुम मेरे भक्तके वास्ते मकान बनाकर उसमें टिकादेव मेरी आज्ञा जनादेव उस साहूकारने एक मन्दिर बहुत दृढ़ व सुन्दर बनवाकर उसमें भगवत् आज्ञा सुनाके बलसे ले आकर विराजमान कराया व और मकान साधु लोगोंके टिकनेको व आनेजाने वालोंके निमित्त बनवादिया गदाधर दासजीने श्रीलालविहारी जी की मूर्त्ति अतिसुन्दर विराजमान करके साधुसेवा को आरंभ किया जो कुछ आवै उसीदिन खर्च करदेते थे कुछ नहीं रखते थे परन्तु रसोइया कुछ सामग्री इस विचारसे कि प्रभातके समय भगवत्के भोगको अतिकाल न होजाय रखलिया करता था एकरात साधुआये उनकी रसोईके वास्ते सामग्री ढूंढ़ी गई गदाधरदासजी ने [illegible] ...आकर पूछा उससे

कहा कि भगवत्के भोगके वास्ते भोरकी कुछसामग्रीको रखलिया है सो धरीहै गदाधर दासजीने आज्ञादी कि उसीसामग्री से साधोंकी सेवाकरो भगवत् के वास्ते कलह आयजायगी सो उसीघड़ी भगवद्भक्तों की सेवा हुई प्रभातको तीसरे पहरतक कुछ न आया और भगवत्भोगभी न लगा चेला लोग भूखसे व्याकुल होकर कहने लगे कि देखो अत्यन्त खर्च करने से अबतक सबकोई भूखेहैं न जानैं भगवत् कब गदाधरदासजी के हाथसे छुड़ावेगा उसीसमय एकसाहूकार आगया उसनेदोसौरुपैया भेंटकिये गदाधरदासजीने कहा कि यह रुपैया इन असन्तोषियोंके शिर पर मारो कि हायहाय कर रहेथे साहूकार डरा कि क्या यह रिस कुछमेरे ऊपर है गदाधरदासजी ने सब वृत्तान्त उस साहूकार से कहकर उस की तसल्लीकरी कि वह आनन्दहुआ और भगवद्भक्तों का विश्वास करके भगवत् के शरणहोगया पीछे गदाधरदासजी कुछदिनवहां रहे फिर मथुराजी में आये ब्रजकिशोर के रूप व छविसे छकेहुये सत्संग व भगवत् सेवामें सब वयक्रम व्यतीत किये॥

कथा माधवदास की॥

माधवदासजी की भक्ति और महिमा और प्रताप व वैराग्य और शांति व भावका वर्णन कौनसे होसकता है जिस प्रकार वेदव्यास जी ने अवतार धारण करके वेदों का विभाग किया और पुराणबनाये और महाभारत व सूत्र इत्यादि को जगत् में प्रकट किया और फिर उनका सार और सूक्ष्म करके श्रीमद्भागवत में वर्णनकिया और भगवद्भक्ति और भागवत धर्म्म को संसार में प्रवृत्त किया इसी प्रकार माधवदासजीने मानों वेदव्यास जीका अवतार लेकर भगवद्भक्ति और चरित्रों का सब शास्त्रों का सार निकालकर जगत् में विख्यात किया और भगवन्नाम और लीलाका कीर्त्तन करके हज़ारों लाखोंको संसार समुद्रसे पार उतारा श्रीजगन्नाथरायजी के परम उपासक और वैराग्यवान् और ब्राह्मणों के नायक हुये ये कान्यकुब्ज ब्राह्मणथे जब स्त्री उन की मरगई तो वि[illegible] किया कि यह संसार आगमापायी है मनोरथ यह कियाथा कि [illegible] लड़की होंगेउनका व्याह शादी करेंगे और कुलकी वृद्धि होगी [illegible] वत् ने यह चरित्र दिखाया निश्चय करके यह संसार अनि[illegible] किसीका नहीं है यह शोचकर कि जो घरमें हैं इनकी चिन्त[illegible]

अयोग्य है कि सबका आहार पहुँचानेवाला व पालन करनेवाला भग-
वत् है जो कोई अपना उपाय करै वह बुद्धिहीन है ऐसा निश्चय करके
और सब विकार संसारी छोड़कर अलग हुये और श्रीजगन्नाथपुरी में
पहुँचकर भगवत्के दर्शन किये समुद्रके किनारेपर जाकर बैठ रहे और
जो मन भगवत्के रूप अनूपमें दृढ़ लगगयाथा इसहेतु भोजनकी सा-
मग्रीके न मिलनेसे विकल न हुये तीन दिन बीते कि कुछ न खाया और
भगवत्का ध्यान करते एक जगह बैठे रहगये भगवत् ने शोचा कि ह-
मारे वास्ते नित्य हजारोंमन व्यञ्जन अतिमधुर भोगका बनै और हाय
हाय हमारे भक्तको तीनि दिन तक एक दाना भी न पहुँचा भक्तवत्सलता
ने बेचैन किया और उसीघड़ी निज अपने महाप्रसादका थाल सोनेका
लक्ष्मीजी के हाथ भेजा लक्ष्मी महारानी भोजन लेकर चलीं तो विचार
किया कि पिता तो बालकके पालनसे सुचित्त रहताहै परन्तु ऐसी माता
कोई नहीं कि थोड़े दिनके जन्मेहुये लड़के को पालन न करै माधवदास
भक्तिके घरमें जन्माहुआ बालकहै उसका उपाय व सुधि भोजन की न
लीगई तो बड़ी लज्जा की बात है इसहेतु लक्ष्मीजी माधवदासजी के
पीछे गईं व झनकार पायजेब और प्रकाश मुखका बिजुलीके सदृश मा-
धवदास जीको मालूमहुआ परन्तु भगवद्ध्यान में मग्नथे इसहेतु आंख
न खोली लक्ष्मीजी थाल रखकर चली आईं जब माधवदासजीने थाल
देखा तब आनन्दित होकर भोगलगाया भोजन करके अपने भाग को
सराहा और सोनेके थालको पत्तेके पनवाड़ेकी भांति एक ओर डालदिया
था मन्दिरके पुजारी सब ढूँढ़तेहुये वहां पहुँचे माधवदास जीको पकड़ा
व बेंतमारा चले आये वह चोट बेंतकी भगवत्ने अपने कमरपर ली और
पुजारियोंको बेंतकी चोट जनाकर आज्ञाकी कि वह थाल व महाप्रसाद
माधवदासजीके वास्ते हमने भेजाथा उन को जो विना अपराध दण्ड
दिया वह सब हमको हुआ हम बहुत क्रोधमें हैं पुजारी सब अतिभयसे
व्याकुल होकर माधवदासजीके पास जाकर बड़ी मर्याद से चरणों में
पड़कर प्रार्थना व विनय करके अपना अपराध क्षमाकराया यह वृत्तान्त
सारे संसारमें विख्यात होगया और भगवत्की कृपालुताको भगवद्भक्त
जन सुनकर अतिआनन्द और प्रेमसे शरीरमें न समाये माधवदासजी
को भगवत् स्वरूपमें ऐसा प्रेम और स्नेहथा कि देखते देखते बेसुधि

होकर मन्दिरमें रहजातेथे और जब पुजारी सब मन्दिर बन्द करतेथे तो भगवत् इच्छासे उनको दिखाई नहीं पड़तेथे एक रात जाड़ेकी ऋतु में माधवदासजीको जाड़ालगा भगवत्‌ने पुजारियोंको आज्ञा किया कि हम को ठण्ढ लगी पुजारी सब तुरन्त भांति भांतिकी रजाइयां लाये भगवत् ने अपने निज ओढ़नेकी रजाई व बनात माधवदासजीको कृपा करके दी और आप नई रजाईको लेलिया तब ठण्ढ मिटी एकबेर माधवदास जीके पेटमें मुर्राका रोगहुआ और अतीसार के होनेसे समुद्रके किनारे पर जापड़े जब पानी लेने व शौच करनेकी सामर्थ्य न रही तो आप भगवत् आये व उनके शरीरको धोया शुद्धकिया माधवदासजी ने शोच किया कि यह कौन है जो ऐसी सेवा करता है विचारकिया तो जाना कि आप भगवतहैं हाथ जोड़कर विनय किया कि ऐसा परिश्रम कबउचित है कि दासकी दास्यतामें भेद आवै और स्वामीकी बड़ाई में भगवत् ने कहा कि मेरे भक्तको जब दुःख होताहै तब हमसे रहा नहीं जाता आप चला आताहूं माधवदासजी ने विनयकिया कि रोगको दूर करदेते तो ऐसा परिश्रम न होता भगवत्‌ने कहा कि रोगका होना प्रारब्ध कर्म्मका भोगहै सो प्रारब्धका दूर करना उचित नहीं देखता कि कर्म्म भोगकी पद्धतिसे विरुद्ध पड़ताहै और जब कि मेरे भक्त बिना कष्ट उन प्रारब्ध कर्म्मोंको भोग लेते हैं तो क्या प्रयोजन उनके ध्वंस करनेका है यह रीति दिखाकर वह रोगभी दूर करदिया इस हेतु कि किसी साधक भक्तका विश्वास न छुटजाय जाने रहो कर्म्म तीन प्रकारकेहैं सो सञ्चित व क्रियमाण तो उसी घड़ी दूर होजाते हैं जिस घड़ी यह मनुष्य भगवत् शरण होता है और प्रारब्ध निश्चय करके भोगना पड़ता है जब यह चरित्र माधवदासजी का विख्यात हुआ तो हजारों आदमी की भीड़ रहनेलगी माधवदासजी ने अपनी सिद्धता का विश्वास और भीड़ के दूर करने के हेतु भिक्षा मांगना आरम्भ किया एक के द्वारपर गये स्त्री चौका देती थी उसने शब्द सुनकर वह पोतने का कपड़ा क्रोध करके माधवदासजी के शिरपर मारा माधवदासजी को उसपर दया आई हँस के वह कपड़ा उठालिया उसको पानी से धोकर शुद्धकिया बत्ती बनाकर रातको जगन्नाथ जी के मन्दिर में दीपक बार दिया उसका यह प्रताप हुआ कि भगवत् मन्दिर व उस स्त्री के हृदय में बराबर प्रकाश हुआ

अर्थात् उस स्त्री को तुरन्त भक्ति उत्पन्न हुई दूसरे दिन माधवदासजी जब गये तो दौड़कर चरणों में पड़ी ऐसी दयालुता की बड़ाई किसप्रकार वर्णन होसकै एक पण्डित सब देशों के पण्डितों को चर्चा व शास्त्रार्थ में जीतता और दिग्विजय करता हुआ पुरुषोत्तमपुरी में आया और वृत्तान्त पण्डिताई माधवदासजी का सुनकर उनसे कहनेलगा कि मेरे साथ चर्चाकरो माधवदासजी ने चर्चा न की और कागजपर लिख दिया कि माधवदास हारा वह पण्डित काशी में गया और अपनी बड़ाई व पांडित्य को कहकर कहा कि माधवदासको जीतकर मैं आया हूं जब वह कागज़ पण्डितों की सभा में रख दिया तो उसमें यह लिखा देखा कि माधवदास जीता और पण्डित हारा अतिक्रोधकरके फिर जगन्नाथपुरीमें आया और माधवदासजीको अनेक दुर्वचन कहकर बड़ी उपाधि व बखेड़ा करने को उद्यतहुआ माधवदासजी ने कहा कि जो कुछ तुम कहो फिर लिख देवैं पण्डित ने कहा तू बड़ाधूर्त्त है गदहे पर चढ़ाकर और काला मुँह करके नगर में चारोंओर फिराऊंगा माधवदासजी तो चुप होरहे और वह पण्डित स्नान करनेको चलागया भगवत् पण्डित का रूप बनाकर उसके पास पहुँचे और चर्चा करके जीतलिया उसको गदहेपर चढाकर और सौ दोसौ लड़के बटोर करके और आप भी लड़के के रूपसे साथ होकर उस पण्डित की खूब धूल उड़ाई संयोग वश माधवदासजी भी उसी ओर आगये और भगवत् से विनती की कि ऐसे पण्डित को वे मर्य्याद व मान भंजन करना कौन उचित था भगवत् ने कहा कि बहुत उचित और प्रयोजन था कि यह मूर्ख मेरे भक्तों को गदहेपर चढ़ाकर मुझको गदहेपर चढाया चाहताथा माधवदासजी ने उस पण्डितको आप गदहेपरसे उतारा और अपना अपराध क्षमा कराया एकबेर माधवदासजी के मनमें यह आया कि पुरुषोत्तमपुरी में व्रजके चरित्र बहुत कीर्त्तन हुआ करते हैं व्रजका दर्शन करना चाहिये सो चले मार्ग मे एक बाई भगवद्भक्त भोजन कराने के लिये लेगई जब भगवत् का भोग लगाया तो जगन्नाथरायजी आये और माधवदासजी भोजन करनेलगे वह बाई भगवत् का सुकुमार अंग और सुन्दर मुख थोड़ी वयस देखकर रोनेलगी माधवदासजी ने जब कारण पूंछा तो कहा कि यह लड़का जो तुम साथलाये हो थोड़ी उमरका परम सुकुमार

है इसके माता पिता कैसे जीतेरहे होंगे माधवदासजीने गरदन फेरकर देखा तो अपने स्वामी को देखा भगवत्कृपा और अनुग्रह के प्रेम में बेसुध होगये और उस बाई का बोधकरके आगेचले किसी और गांव में एक महाजन भगवद्भक्त रहता था उसको माधवदासजीने वचन दि-याथा कि हमतेरे घरआवेंगे उसके घरगये वह महाजन किसी कामको गयाथा उसकी स्त्रीआई चरणों में पड़ी एक महन्त उसकी अटारीपर रसोई करताथा स्त्रीने उसमहंतसे कहा कि एकहरिभक्त आगये हैं वहभी तुम्हारे साथ प्रसाद सेवन करलेवेंगे महंतने क्रोध सहित उत्तर दिया कि यहां किसी और की रसोई नहीं होसक्ती लाचार उसस्त्री ने माधवदास जीसे विनयकिया कि सामग्री तैयारहै आप रसोई बनालेवें माधवदास जीने कहा कि और रसोई नहीं बनासक्ते जो कुछ वस्तु भोजनके योग्य होय सो ले आवो वह दूध गरम ले आई और भोगलगाकर वहां से चले और कहा कि अपने पति से कहदेना कि माधवदास जगन्नाथी आयेथे थोड़ीदूर गये थे कि वह महाजन अपने घर आया और वृत्ता-न्त अपनी स्त्री से सुनकर दौड़ा जाकर अति प्रेमसे चरण पकड़ लिया और हाथ जोड़कर अपने घर पधारने के वास्ते विनय किया माधवदा-सजी ने उस को बहुत करके कहा कि तेरे घर तेरी स्त्री ऐसी बड़भागी है कि वर्णन नहीं होसक्ता अब तेरे सद्गति और तेरे उद्धार में क्या संदेह है वह महंत भी माधवदासजी का नामसुनकर महाजनके साथ आयाथा हाथ जोड़कर अपराधक्षमा करानेलगा और शिक्षाचाही माध-वदासजीने कहा कि हरिद्वार में जाकर भगवद्भक्तों की शीतप्रसादी से-वन करो तब कुछ ठिकाना लगजायगा वहां से महाजन व महन्त को बिदा करके वृन्दावन में आये श्रीवृन्दावन और श्री वृन्दावनचन्द्र के दर्शन करके परम आनन्द में मग्न होगये बांकेविहारीजी के मन्दिर में दर्शन करने गये थे वहां चने मिले और द्वारपालों ने कहाभी कि अबभ-गवत् रसोई का भोग लगायाजाताहै तब प्रसाद मिलेगा परन्तु चनेही से क्षुधाकी शांति समझकर यमुना के किनारे पर आये और भगवत् अर्पण करके भोगलगाया जब मन्दिर में रसोई तैयार हुई और भांति भांतिके व्यञ्जन मधुर भगवद्भोग के वास्ते पुजारी लेगये तो भगवत् ने कुछ अंगीकार न किया आज्ञाहुई कि माधवदासजी ने चना हमको भोग

लगाया इसहेतु अब कुछ चाह न रही गोसाईं और पुजारी मन्दिर के दौड़गये और ढूंढ़कर माधवदासजी को लेआये तब भगवत् ने भोग लगाया श्रीवृन्दावन के दर्शनकरे पीछे तब दूसरे ब्रजभूमि के दर्शनको गये और भांडीरवन में खेमनामे साधु रहताथा उसके स्थानपर टिकने का विचार किया उसने टिकने न दिया और कठोरताई बहुतकरी माधवदासजी अलग कहीं जाकर ठहरे जब उस साधुने अपने वास्ते तसमई को तैयार किया और खानेको बैठा तो कृमि सब होगये लाचार होकर आया और माधवदासजी के चरणों में पड़ा माधवदासजी ने उसका अपराध क्षमाकिया और भगवद्भजन की शिक्षाकी पीछे हरिआनेगांव में पहुँचे वहां एक वैरागियों के स्थानमें साधुसेवा हुआ करती है और गऊ बहुत रहती हैं उसस्थलमें कथा भागवतकी होतीथी भगवच्चरित्रों के सुनने के वास्ते कुछदिन वहां टिकगये और टहल वहाँकी अपने अंगसे यह उठाली कि गोबर इकट्ठाकरके उपले पाथ दियाकरते एकसाधु आगया और माधवदासजीको पहिचानकर दण्डवत् किया जब उस स्थलके महन्त आदि ने माधवदासजीको जाना तो सबचरणों में पड़े और बहुत विनय किया कुछ दिन वहांरहे और चलती बेर ऐसा वरदे आये कि अबतक वह स्थल पूर्ववत् बनाहुआहै और साधु सेवा होती है फिरतीबेर अपने घरभीगये और माता व लड़कोंको भगवद्भक्ति उपदेश करके चलेआये जब उस महाजनके गांवके नगीच पहुँचे तब स्वप्न में अपने आनेसे उसको जनादिया वह आया और दर्शन किया वहां से पुरुषोत्तमपुरीको चले और भगवत् दरबार में पहुँचकर ध्यान व भजनमें लगे चरित्र माधवदासजी के बहुत हैं जितना जानने में आया लिखागया ॥

कथा नारायणदास की ॥

नारायणदासजी जाति चारन अल्हभक्तके वेष में भगवद्भक्त व वैराग्यवान् हुये उनका बड़ाभाई तो कमानेवाला था और नारायणदासजी लुटानेवाले एकबेर भाभीने भोजन ठंढा खानेके वास्तेदिया नारायणदासजी नेन खाया गरममांगा भाभी बोली मारी कि क्या तू अपने बाबा अल्हजी के ऐसा भगवद्भक्त है कि [illegible] उ [illegible] ५ [illegible]रें नारायणदासजीको लगगई कि भगवद्भक्ति [illegible] पशाके [illegible] मनुष्यशरीर केवल भगवद्भक्तिके नि[illegible] निमि[illegible]

भगवद्भक्ति सार और यह संसार असार समझकर संसार को त्याग दिया द्वारकामें जाकर ऐसे सेवा भजनमें लगे कि भगवत् उनके भक्तिसे वश होकर जो कृपा उनके बाबा अल्हजी पर करीथी वैसेही होकर उन पर भगवत्ने करी साक्षात्प्रकट दर्शन दिये॥

कथा जीवगोसाईं की॥

इस कलियुग में रूप सनातनजी तो भक्तिके जलके सदृशहुये और जीवगोसाईं महाराज मान सरवर के सदृश व भगवद्भजन उस मानसरवर के दृढ़घाटके सदृशहैं और भक्तिकी दृढ़ता फूले कमल के सदृशहै कलियुगके प्रपंचकी काई जिस सरवर समीप न गई और भगवद्भक्त जो हंसके सदृश हैं उनको परमआनन्दका देनेवाला हुआ जिन्होंने वृंदावनमें वासकरके प्रियाप्रीतम महाराजकी सेवा और भजनमें मनलगाया और जगत्के उद्धारके निमित्त सब शास्त्र व पुराण इत्यादि इकट्ठे करके उनका जो सार व मुख्य अभिप्राय था उसको अच्छा समझकर ऐसी भगवद्भक्ति को प्रवृत्तकिया कि करोड़ों संसार समुद्रके पार होगये और शोक सन्देहके नाशकरनेवाले ऐसेहुये जैसे सूर्य्य अंधकारका शत्रु है और घटाके सदृश सबका उपकार करनेवाले मित्रहुये माधुर्य्य भावसे भगवत्की उपासना करते थे और रासचरित्र और दूसरे विहारलीला को परमतत्त्व जानते थे और उसी को मुख्य तात्पर्य्य समझते थे रूप सनातनजी के भतीजे थे धन ऐश्वर्य्य वड़ारहा सबको अनित्य व असार समझकर त्यागकिया और श्रीवृन्दावनमें आये धोती और चादर रेशमी बड़े मोल की शरीरपर थी रूप सनातनजीने मुलाक़ातके समय हँसकर कहा कि नामतो वैराग्यवान् और पोशाक यह तब जीव गोसाईंजी ने उसको भी त्याग किया और गांवसे अलग यमुनाकिनारे पर कुटी बनाकर भगवद्भजन और ध्यानरूप माधुरी में लगे एकदिन गोसाईंरूपजी उसीओर जापड़े ब्रजवासियोंने कहा कि महाराज हमारे गोसाईं जीका दर्शनकरो रूपजी आये और जीवगोसाईंजी की मग्नदशा देखकर अति प्रसन्नहुये और छातीसेलगाकर प्रेममें पूर्णहोगये फिर अपने पास टिकाकर सब शास्त्र पढ़ाया और रसग्रन्थ व भगवच्चरित्र गोप्य के वचन से शिक्षाकी परम्परा है सो सब अच्छीभांति समझादिया जीवगोसाईं जीने उनको ऐसा प्रवृत्त किया कि सारे संसारको मिल

जहां तहां गोसाईंजी की विद्या और पाण्डित्यकी ख्यातिहोगई और अ-
कबर बादशाहने गंगा व यमुनाके माहात्म्य व बड़ाई के निर्णयके
बुलाया सो वृन्दावन व ब्रजभूमि छोड़कर कहीं रात्रिको निवास नहीं करने
का प्रणथा इसहेतु बादशाहने कई जगह घोड़ोंके रथकी सवारी बैठाकर
एक पहरके भीतर फिर लौटने पहुँचादेने का बाचा प्रबन्धकरदिया सो
आगरेमें आये और ऐसे सुष्ठुवादसे यमुनाजीकी बड़ाईको ठहरायदिये
कि किसीको कुछ अनुवाद की जगह न रही अर्थात् यह सिद्धांत दिखा-
कर बोले कि अल्प विचारके वास्ते वृथा हमको बुलाया कोई एकपुराण
देखलिया होता कि गंगाजी को जिस पूर्णब्रह्मका चरणामृत लिखा है
यमुनाजी उसी पूर्णब्रह्म की पटरानी हैं विचारकरलेना चाहिये कि बड़ाई
किसकी हुई इस उत्तरसे किसीको कुछ सन्देह किसीबातका न होय यह
उपासना व सिद्धांतकी परम पक्कता है जिसओर जिस किसी को जैसा
विश्वास है उसको वह देवता वैसाही फलदेता है बादशाह निर्णय गो-
साईंजी का सुनकर बहुत प्रसन्नहुआ और विनय किया कि कुछसेवाकी
आज्ञाहोय गोसाईंजी ने कहा कुछ प्रयोजन किसी बातका नहीं है जब
बादशाहने बहुत कहा तो आज्ञाकी कि सब पुराण व स्मृति व सबशास्त्र
काशीजी आदिसे मँगवाके वृन्दावनमें इकट्ठे करादेव बादशाहने थोड़ेही
दिनमें आज्ञा गोसाईंजीकी पूर्णकरदी कि अबतक सब पुराण व स्मृति
व शास्त्र वृन्दावन में प्राप्तहैं गोसाईंजीने जिसप्रकार गोविन्ददेव जीका
मन्दिर मानसिंह अजमेर के अधिपतिसे बनवाया सो वृत्तान्त रूप स-
नातनजी की कथामें लिखाहै बादशाह अकबर वृन्दावन में आया व
गोसाईंजी के दर्शन को गया चलती समय विनय किया कि वास्ते बन-
वादेने मकान इत्यादि के कुछ आज्ञाहोय गोसाईंजी ने कहा कुछ प्रयो-
जन नहीं बादशाह ने हठकरके कहा तब गोसाईं जी ने कहा कि हृदय
की आंखों से श्रीवृन्दावन व यहां के सजावट को देखना चाहिये तिसे
पीछे हठ अपने श्रद्धाके अनुकूल उचितहै बादशाहने आंख बन्द करके
देखा तो धरती और मन्दिर सबओर कुञ्जआदि वृन्दावन के सबसोने
के खचित मणिगणके जड़ावसे जड़ित हैं ऐसे दिखाई पड़े कि जिसके
तड़पसे आंखें बन्दहोजाती थीं और दूसरे सामान सब हरएक प्रकार
के ऐसेदेखे कि कान और ध्यानने कबहीं न सुनेथे अधीन होकर बिदा

हुआ रीति गोसाईंजी की ऐसीथी कि जो कोई भेंट पूजा ले आता था यमुनाजी में डालदेते थे अपने पास कुछ नहीं रखते थे सेवकलोगों ने हाथजोड़कर विनय किया कि किसवास्ते यमुनाजी में डालाकरते हो अच्छीबातहै कि साधुसेवा हुआकरै कहा कि साधुसेवा करने के योग्य कोई देखने में नहींआता एक चेलेने कहा जो आज्ञाहोय तो यहदास आपके मनके अनुकूल यह सेवाकरै सो गोसाईंजी ने आज्ञादी उसने साधुसेवाका आरंभकिया एकसाधुने रातकेसमय कुवेला में भोजनमांगा वह सेवाकरनेवाला टहल और परिश्रमसेवा से थकगयाथा रिसकरके बोला कि इस समय भोजनकहांहै प्रभात को मिलैगा जो बड़ीभूखहोतो मुझको खालेव गोसाईं जी सुनकर बोले कि इसी श्रद्धापर सेवा साधों की अंगीकार करीथी कि उनको आदमी खानेवाला कहताहै फिर पीछे हरिभक्तों का माहात्म्य और उनकी बड़ाई और सेवाकाफल सबको समझाया गोसाईं जी श्रीगोविन्ददेवजी की सेवा पूजामें गोसाईंरूप जी की आज्ञासे रहते थे बहुत काल पर्यंत बड़ीप्रीति और स्नेहसे सेवाको किया जब एकचेलेकी भगवद्भक्ति और प्रेमकी सब प्रकारसे परीक्षा करली तब भगवत् सेवा उसको सौंपकर आप श्रीवृन्दावनकी लता व कुंज व यमुना किनारे व बन इत्यादि में भगवद्रूप के मनन व ध्यान से बेसुधि व निमग्न रहनेलगे ॥ कथा सुरसुरीजीकी ॥

सुरसुरीजी परमसती भगवद्भक्त ऐसी हुई कि जिनका सतरखने के वास्ते आप भगवत् स्वरूप धारणकरके आये धन संपत्ति अनित्य व संसार को असार समझकर घर त्यागकरके और अपने पति सुरसुरानन्द के साथ वृन्दावनमें आयके भगवद्भजन व ध्यानमें लगी रूप अति सुन्दर था उनकी कुटी के पास मुसलमानों का डेरा आनि पड़ा उनका सरदार सुरसुरीजीके स्वरूपको देखकर आसक्तहुआ अपने सेवकों को पकड़लाने की आज्ञादी सुरसुरीजी ने धनुषधारीका ध्यानकिया भगवत् ने तुरन्त व्याघ्रके रूपसे प्रगट होकर सब दुष्टों को बिडारा कितनों को मारडाला कितने घायल हुये व्याघ्रके रूपसे इसहेतु प्रगटभये कि तरकशसे तीर निकालते धनुष पर चढ़ाते विलम्बहोगी और व्याघ्ररूपमें सब अंग शस्त्ररूपहैं जल्दी अच्छी दुष्टों के घातसे बनिआवेगी इसहेतु व्याघ्ररूप से प्रगट हुये ॥

कथा द्वारकादासजी की ॥

द्वारकादासजी चेले स्वामी कील्ह के परमभक्त श्रीराम उपासकहुये पातंजल शास्त्र के अनुसार से शरीर त्यागकरके भगवत् का परमधाम पाया कूकसगांवके नगीच नदी बहती है उसके जलमें जाकर भगवत् का ध्यान किया करते थे और रघुनन्दन स्वामी के चरणों में ऐसा दृढ़ विश्वास था कि संसारकी अनेक मोह की फांसी को काटकर एक उसी ओर चित्तको दृढ़करके लगाया ॥

कथा राघवदासजी की ॥

सबको जीतनेवाला कलियुग तिसको जीतकर राघवदासजी ने अपने अधीन करलिया और भगवद्भक्तिको ऐसा निबाहा कि कबहीं किसी प्रकारका भेद न पड़ा काम जो चाहना व क्रोध जो रिस और लोभ जो लालच इनके तनको पवनने स्पर्श भी न किया जैसे सूर्यजल को आकर्षण करके फिर बरस देता है परन्तु सूर्य को न चाहना आकर्षण की है न बरसनेकी अपनी अपनी ऋतुपर आपसे आप आकर्षण व वर्षा होती है इसीप्रकार राघवदासजी को कुछ चाहना किसी ऐश्वर्य्य व संपत्ति के बटोरनेकी न थी आपसे आप द्रव्य आताथा व खरच होताथा भगवद्भक्तों की सेवामें विश्वास व सहिष्णु व प्रिय दर्शन व मीठे बोलने वाले सुन्दर रूप थे अलहरामजी जो रावलकरके बाजते थे अपने गुरु की सेवा भगवत् की सेवाके सदृश करके संसार में विख्यात हुये ॥

कथा हरिवंश की ॥

भगवत्का वचन है कि निष्किंचन मेरा भजन करते हैं उनको शीघ्र मिलताहूं इस वचनपर हरिवंशजी को दृढ़ विश्वास था जैसे उस घसियारे ने कि उसके पास केवल खुरपा जाली था गंगास्नानके समय दान करदिया उसीप्रकार सब वस्तु दान करके व त्यागी होकर भगवद्भजन में लगे और विना भगवद्भजन स्मरण के एक घड़ी व्यर्थ नहीं जातीथी जबतक रहे कोई वचन कठोर न बोले रामानुज संप्रदाय में श्री रंगजी के चेले थे सन्तोषी सहिष्णु प्रिय दर्शन और श्लाघ्य थे ॥

सत्रहवीं निष्ठा ॥

भगवत् सेवा का वर्णन व महिमा जिसमें दश भक्त उपासकों की कथा हैं ॥

श्रीकृष्ण स्वामी के चरण कमलों की ऊर्ध्व रेखा को प्रणाम करके

बुद्धावतार को कि गयाजी में धारण करके प्रथम वास्ते एक प्रयोजनके यज्ञादिक की निन्दाकरी और फिर सब धर्मोंको स्थापित किया दण्डवत् है सेवानिष्ठा की महिमाके वर्णनसे पहिलेही एक संदेहका निवृत्त करना प्रयोजन हुआ वह यह है कि भागवत इत्यादि पुराणों में नवप्रकारकी भक्तिमेंसे सेवा व पूजन व दासनिष्ठा को अलग २ वर्णन किया और विचार करके प्रकट कुछ भेद नहीं जनाई देता सो कारण अलग २ वर्णन करने शास्त्रोंका क्याहै सो जानेरहो कि स्वरूप सेवानिष्ठाका सम्मुख रहना अनुक्षणसेवा में अपने स्वामीके और सहि नहीं सकना विश्लेषता एक क्षणमात्रका और करना सब सेवा जो समय समयपर करना प्रयोजन पड़े और वह सेवा मन वच कर्मसे होय सो पूजननिष्ठासे तो इस सेवानिष्ठा को यहभेद हुआ कि पूजानिष्ठा उसको कहते हैं जो केवल षोड़शोपचारसे कियाजाय जिनका वृत्तान्त आठवीं निष्ठा अर्थात् प्रतिमा व अर्चानिष्ठामें विशेषकरके लिखाहै कुछ अनुक्षण सम्मुख प्राप्त रहनेका नियत नहीं है और वियोग भी वह उपासक सहिसक्ताहै और दासनिष्ठासे यह भेद है कि दासनाम किंकरका है व करना किङ्करताई निकट व दूर दोनों दशामें बनताहै दासको स्वामीकी प्रसन्नतापर दृष्टि रहती है हठ किसी बात में नहीं करसक्ता महिमा सेवानिष्ठा की वर्णन नहीं हो सक्ती कि जिसके प्रभाव करके पूर्णब्रह्म सच्चिदानन्द घन का सामीप्य मिलताहै जिनको नित्यमुक्त कहते हैं वे इसीनिष्ठासे उसपदवी को प्राप्तहैं भागवतमें लिखाहै कि देवता व राक्षस अथवा आदमी यक्ष गन्धर्व कोई होय नारायणके चरणसेवनसे परमकल्याण को पावता है फिर लिखाहै कि हे भगवन् तुम्हारे चरण नौकाके सदृशहैं और उनकी सेवामें जिसका मन लगाहै सो इस संसारसमुद्रको गोपद जलके सदृश उतर जाते हैं कपिलदेवजीका वचनहै कि जो मेरे चरणकी सेवाकरते हैं उनको संसारका दुःख कदापि नहीं होता है सप्तमस्कन्ध भागवतमें लिखाहै कि तबतक भय और शोक व लोभ औ स्पृहा इत्यादिक दुःख देनेवाले हैं कि जबतक भगवत्सेवामें मन नहीं लगता शेषशेषी भाव जो शास्त्रों में लिखाहै उसका निर्णय यहहै कि जो वस्तु किसी और के निमित्त होवै उसका नाम शेषहै और जिसके निमित्त वहवस्तुहोय उस को शेषी कहते हैं जिसप्रकार राजाका राज्य व फौज व प्रजा व संपत्ति

इत्यादि हैं सो राजा तो शेषी है और राज्यइत्यादिक सब शेष हैं इसीप्रकार सवार तो शेषी है और घोड़ा साईस शेष सो जब क्रम से एकको दूसरे का शेषी विचार कियाजाय तो परिणाममें शेषीहोना भगवत्पर समाप्तहोता है किसवास्ते कि जितनी वस्तुहैं सो और ब्रह्माण्ड जहांतक गुप्त व प्रकट आंखों से देखनेमें आवें सो भगवत्के वास्ते हैं और भगवत्का है भगवत्से अधिक कोई नहीं और इसीप्रकार जबशेषका परिणाम पदवी का विचार कियाजाताहै तो शेषनाग पर समाप्त होताहै किसवास्ते कि जब सबवस्तु भगवत्का ठहरायागया तो विचारकरना चाहिये कि सब से अधिककौन वस्तु निज भगवत्कीहै जो वस्तु अतिशय करके भगवत् सम्बन्धी होवै वहही सब शेष वस्तुवों में वास्तवकरके अतिशय शेषहै सो यह लक्षण सब शेषनागजी में पायेगये अर्थात् कोई अंग शेषजीका ऐसा नहीं कि भगवत् सेवासे रहित होवै शरीर तो शय्याहै और कोमल भाग शरीर का तोशक के स्थान है और सहस्रों फण चँदुये के स्थान और सहस्र फण पर जो मणि हैं सो दीपमालिका के स्थान और विष भरे श्वासको रोंककर जो शीतल उश्वासका लेना है सो पंखे के स्थान जिह्वासे भगवत्का नाम लेतेहैं और गुप्त व प्रकटके आंखोंसे अनुक्षण दर्शन अनन्त गुण शोभाधाम भगवत्के रूप अनूपका करते हैं नासिका से भगवत् शरीरकी सुगन्ध और तुलसी सूंघते हैं और सर्प आंखही से सुनते हैं कान उनके नहीं हैं इसहेतु आंखोंकी राहसे भगवत्के श्वासा से वेद और मन्त्र निकलते हैं सो मूल पद अर्थ सहित मनमें धारण करतेहैं तात्पर्य्य यह कि सब अंग शेषजीके भगवत् सेवामें लगेहैं और सब वास्ते भगवत् सेवाकेहैं इसीहेतु उनका नाम शेष विख्यात होकर पदवी अन्त व परिणाम शेष होनेका उनपर समाप्त हुआ सो प्रयोजन इस लिखने से यह है कि सेवा भगवत्की ऐसी हो कि गुप्त व प्रकटके अंगमें से कोई अंग सेवासे रहित न होय इस अवस्थाको जिसकी सेवा पहुँच जाती है उसीका नाम शेष है और वहही अनित्य और वहही नित्य मुक्तहै और वही समीपी सेवक व पार्षदहै और उसीका नाम सामीप्यमुक्तिवाला है रामानुज सम्प्रदाय में, जो शब्द कैंकर्य्य विख्यात है वह तात्पर्य भगवत् सेवासे है मूल रम पद [illegible] होने का यह है कि जितना काम प्रभात से अगिले [illegible] यह मनुष्य

अपने तनके वास्ते करता है वह सब भगवत् सेवाके सम्बन्ध विचार करके करताहै अपने निमित्त तनक न समझै जैसे रसोई करनाहै तो चौकेका देना और जलका ले आना और रसोईका बनाना भगवत् की रसोई का विचारहो अथवा घोड़ा मोललेनाहै तो भगवत् की सवारीके निमित्त मोललै अपने सवारी को विचारके नहीं और सवारहोते समय यह ध्यानकरले कि भगवत् घोड़ेपर सवारहैं और आप साईसकी भांति साथहै अथवा कोई पोशाक बनावनाहै तो भगवत् के निमित्तहो अपने निमित्त विचार न करै व पहिले भगवत्को पहिनावै पीछेप्रसाद भगवत्का आप धारणकरै इसीप्रकार और सबकाम रातदिन और अपने जातिधर्म के करै और जो त्यागी होय तो जो कुछ वन और पहाड़में शरीरसे कर्म्म हो सब भगवत् सेवाके निमित्त विचारकरै अपने शरीरकी मुख्यता सब उठादेवै और यहसेवा भगवत्मूर्त्तिकी करै या मानसी व भगवत्के ध्यान स्वरूपमें और ध्यानमें और विश्वासरूपअनूपभगवत्काऐसाहो कि मानों यह पोशाक अथवा कोई वस्तु अर्पण न कियाहुआ भगवत्ने अंगीकार व धारण करलिया और प्रसाद मुझको कृपा किया केवल बातही का जमा खर्च न हो और हरएक काम में ऐसा विचार करता रहै और मालूम रहै कोई विधान भगवत् सेवा के सम्बन्धी आठवीं निष्ठा अर्थात् प्रतिमा व अर्चानिष्ठामें भी लिखेगये हैं कहांतक लिखाजावै मुख्य तात्पर्य यहहै कि जो अधिक न होसके तो जितना सामा और काम निज अपने सुख आरामके वास्ते यह मनुष्य करता है वह सब भगवत् के वास्ते किया करै यद्यपि वह सबसामा व वस्तु सब मनुष्यही के आराम व सुखके वास्ते होजातेहैं परन्तु भाग्यके हीनताके कारणवश विचार व ध्यान भगवत्का नहीं करता है हे श्रीकृष्णस्वामी इस भाग्यहीन मनको मैंने बहुत समझाया यहांतक कि समझाते समझाते हारगया परन्तु इस दुष्टको कुछ गड़ता नहीं अब मुझको अपने पुरुषार्थके उपाय का तनकभी भरोसा नहींहै केवल आपकी कृपाका भरोसा करके प्रार्थना करताहूं कि जिसप्रकार से होसकै आपके चरणकमलों में मेरा मन लगै और यह समाज आपके चरित्र का मेरे हृदय में पूर्णमासी के चन्द्रमाकी भांति उदयबना रहै और सब रसिकजननको आनंदका देनेवाला होय श्रीब्रजचन्द्रमहाराज परमरसिक व रिझवारको समाचार पहुँचै कि बरसानेमें वृषभानु

नन्दिनी ऐसी परम सुकुमारी और शोभायमानहैं कि तीनलोक में जिसकी उपमा को कोई नहीं अति चाह दर्शन की हुई और यह भी सुना कि सांभी के समय में नित्य फूलोंके लेनेकेवास्ते फुलवाड़ियों में आया करती हैं सो उस बाग़में कि जिसकी शोभासे लज्जित होकर नन्दनवन आकाशमें जाकर छिपा आन पहुँचे और जैसे फूल सब खिल खुलके लटक रहे थे उसी प्रकार उसी बाग़के फूलोंमें सब अंगसे नयन होकर बाट जोहि रहेथे कि अचानक उत्तरओरसे एक सुखमा व शोभाकीमूर्त्ति हज़ारों सखियों के बीचमें देखी कि अपने मुखके प्रकाश से सब बाग़ और सब दिशाओं को प्रकाशित व तड़प व वे सुधि बुधि करती हुई आती हैं आभूषण व पोशाक चमक दमक की ऐसी झमाककी व सजावट व सुन्दरताई के सहित तनमें शोभितहै कि मानों शोभा व छवि व मनोहरता आदिने पोशाक व आभूषण के स्वरूपसे मनमोहन महाराजके मनको मोहिलेने के वास्ते नवलकिशोरी महारानी जी के अंग अंग व शरीरपर वासकियाहै यद्यपि विश्वविमोहन महाराज रूपराशिने ब्रजनागरीजीके देखने वास्ते इच्छाआगे चलनेकी की परन्तु कुछ ऐसी छाया व तेजप्रियाजीकी शोभाका मनपर छाया कि उसी जगह खड़ेरहे और चरण न उठा इतने में ब्रजचन्दनी जी चितचोर मनमोहन महाराजके आवनेकी खबरकोपाय अपनी सखियोंके साथ हँसती व खेलती और फूलोंको तोड़ती हुई समीप आनि पहुँचीं देखा कि एक नवयौवन श्यामसुन्दर स्वरूपवाला आभूषण व पोशाक बहुमोल्यसे सजाहुआऐसे सज धज के साथ है कि जिसपर करोड़ों कामदेव और शृंगार निछावर होते हैं यकटक नयनलगाये अतिआसक्त देखनेकी होकर मनसे बेहोश और शोभाके मादकमें छकाहुआ मतवारा खड़ा है सो प्रेमकी झलक ब्रजचन्द्र शोभाधामकी ब्रजकिशोरीजी के चित्तपर कामकरगईथी इस हेतु वृषभानुकिशोरीजी देखतेही ब्रजकिशोर महाराजकी शोभाकोवेबस होकर मुखचन्द्रमाके चकोरहोगईं और प्रियाप्रीतमके चार नयन होकर देखने रूप व बहार परस्पर के मग्नहुये पीछे वृषभानुकुमारी ने लज्जा कर सखियोंसे पूछा कि यह नाज़ुक नवयौवन कौनहै और कहांका और किसकाहै कि निर्भय व ढीठवे पूंछे व विनाआज्ञा हमारी फुलवारीमें नये नये फूलेफूलोंके लालचसे फिरताहै सखियोंने कि दोनोंके मनकीजानने

वाली होगईथीं देखनेवास्ते रूप मनमोहन व प्रियाप्रीतम के मिलनकी समाज व सुखलेने वास्ते प्रियाजी ने जो वचनकहा उसमें भांति भांति के अर्थ प्रकट करके ऐसी ऐसीबातें परिहास व व्यंग्यकटाक्ष लिये हँसी व ठट्ठेकी आरम्भकी कि दोनोंओरकी चाह चौगुनी होगई व नित्यके मिलनेकी रीति बँधिगई इस समय सुन्दरतापर किसीका यह वचन है कि उसीदिन दोनोंने गांधर्वी विवाह करलिया जो इस वचनपर पुराणों के प्रमाण से एक बात निश्चय किया जाय तो परकीयाभाववालों को अंगीकार न होगा इसहेतु उसका निर्णय हरएक भाववालोंके विश्वास पर निश्चय करके छोड़दिया और प्रियाप्रीतमके रूपका वर्णन जो इस समाजमें नहींकिया तो वह भाववालोंके मनकी रुचिपर रखदिया जैसी रुचि जिसकी होय तैसीही छवि युगलकी मनमें विचारिलेवैं॥

कथा लक्ष्मीजी की॥

लक्ष्मी जगत्जननी भगवत् की परमप्रिया कि भगवत्की सेवा में मुख्य पदवी है कि एकक्षण भगवत् चरणसेवा से अलग नहीं होतीं यद्यपि लक्ष्मीजी और भगवत् में कुछ भेद नहीं नाममात्र को अलग दिखाई देती हैं जिसप्रकार शब्द व अर्थ की वास्तवमें एक बातहै परंतु कहने मात्रको अलग अलगहैं और युगल उपासकोंने दोनोंको वादसे एकही सिद्धान्त करदिया परन्तु प्रकटमें भगवत् तो स्वामी और लक्ष्मी जी सेवा करनेवाली हैं इसहेतु शास्त्रोंने लक्ष्मीजी को सेवानिष्ठोंकी भक्तों में लिखा और दूसरे भक्तोंके सदृशलिखने किसी निजचरित्र लक्ष्मीजी की ढूंढीगई तो जानागया कि जितने चरित्र भगवत् के शास्त्र और पुराणोंमें लिखेहैं सो सब लक्ष्मीजी और भगवत्से मिश्रितहैं इसहेतु सब चरित्र जो वेद शास्त्रमें लिखेहैं लक्ष्मीजी के चरित्र समझलेना चाहिये इसीप्रकार राधिकाजी व सीताजी व रुक्मिणीजी के चरित्रोंका वृत्तान्त है तनक भेद नहीं परन्तु उपासककी उपासना और विश्वासका भेदहै॥

कथा शेषजी की॥

सेवानिष्ठा शेषनागजी पर समाप्तहुई सो सेवानिष्ठा की भूमिकामें प्रथमहीं लिखिआये अब लिखना दुबारा प्रयोजन नहीं जगत्के उपकार व उद्धारमें ऐसी प्रीति है कि सदा भगवद्भजन और वेद श्रुति का उपदेश करते हैं और कई शास्त्र नवीन रचनाकरके विख्यातकिये कि

संसार समुद्रसे पार उतरने को दृढ़तर सेतुहोगये उनमें एक व्याकरण शास्त्र ऐसाहै कि जो वह न होता तो वेद और शास्त्रोंका अर्थ मालूम न होता और पातंजल शास्त्र ऐसाहै कि जिनसे योगमत और ज्ञानभक्ति के विचारमें आते हैं उसी शास्त्रसे प्रवृत्तिपाई और साहित्य शास्त्र वहहै कि रसभेद व काव्य इत्यादि उसीके प्रभावसे प्रवर्तमानहुये जबकभी धर्मकी हानिहुई तो अवतार धारण करके परमधर्म भगवद्भक्ति का प्रवर्तमान किया और सब विघ्न दूरकिये शेषजीके चरित्रों को भगवच्चरित्र समझना चाहिये और जिसकी महिमा वेद और शास्त्र वर्णन नहीं कर सक्ते तो मेरे ऐसे मतिमन्द की क्या सामर्थ्य कि एक अक्षर लिखसकूं और शेषजी का नाम अनंत है तो उनके चरित्रका अन्त कौन पाने सक्ता है अर्थात् कौन वर्णन करसक्ता है ॥

१ विष्वक्सेन २ सुसेन ३ वल ४ प्रवल ५ जय ६ विजय ७ भद्र ८ सुभद्र ९ नन्द १० सुनन्द ११ चण्ड १२ प्रचण्ड १३ कुमुद १४ कुमुदाक्ष १५ शील १६ सुशील ॥

षोड़श द्वारपाल ये भगवत् के हैं सर्वकाल सेवामें वर्तमान रहते हैं व भगवत् के पार्षद असंख्य हैं पृथ्वी के रजकी गिनती कदाचित् कोई करसकै परन्तु भगवत् पार्षदों की गिनती नहीं हो सक्ती ये सोलह नामी हैं सो लिखेगये उनकी भगवत् सेवामें ऐसी प्रीतिदृढ़ है कि कोई समय सिवाय भगवत् सेवाके दूसरा काम नहीं भगवत् स्वरूप को निरखि २ सेवा और रूपके आनन्दमें मग्नरहते हैं कबहीं अलग नहीं होते आवागमनकी रीतिसे पार व न्यारे हैं और सबको यह सामर्थ्य है कि करोड़ों ब्रह्माण्डरचैं और पालनकरैं और फिर नाशकरदें भगवत् पार्षद भगवत् रूपहैं इसमें सन्देह नहीं जो किसी को सन्देहहो कि जन्म मरणसे बाहरहैं तो सनकादिकों के शापसे जय विजय पार्षदोंके तीनतीन जन्म किस हेतु हुये उत्तर यह है कि जो मुक्त हैं सो मनुष्यतन धारण करके धरती पररहैं तो उनके वास्ते आवागमनका निश्चय नहीं जैसे नारद व सनकादिक व वशिष्ठजी इत्यादि सिवाय उनके भगवत् भी प्रयोजन वास्ते शरीर धारण करतेहैं जो भगवत्के निमित्त आवागमनका निश्चय किया जाय तो पार्षदों के वास्ते भी होनेसकै सिवाय इसके ऐसा संयोग कभी नहीं हुआ कि जब उन पार्षदोंका जन्म हुआ तो भगवत् का अव-

तार न हुआहो इसीसे यह बात निश्चयहुई कि जिसप्रकार कोई राजा किसी देशको जाताहै तो पहिले अपना सामा डेरा व नौकरोंको भेज देताहै इसीप्रकार जब कबहीं भगवत्का पूर्ण अवतारहुआ तो जो चरित्र करना विचारा उनकी सामाको पहिलेही से भेजदिया सो यह बात बाराहीसंहिता और गर्गसंहिता से प्रकट है इसके सिवाय भगवत् अपनी इच्छासे इससंसार में अपनारूप प्रकट करलेताहै इसीप्रकार जो पार्षदोंने भी प्रकट करलिया तो क्या सन्देह है और एक बात यह भी है कि भगवत् इच्छा सब पर प्रबल है जो वे केवल भगवत् इच्छा करके इससंसारमें देह धारण करके भगवत् इच्छामें वर्त्तिके फिर उसी लोकमें चलेगये तो आवागमन का निश्चय होसक्ता है अब यह सन्देह उत्पन्न हुआ कि भगवत् सेवा के उपासक एकक्षणका वियोग नहीं सहिसक्ते सो वन गमनके समय श्रीरघुनन्दनस्वामी ने लक्ष्मण महाराज को अयोध्याजी में रहनेको आज्ञादी सो वे सेवाकेउपासकथे भगवत् आज्ञाको अङ्गीकार न किया साथगये सो दोनों पार्षद जय विजयको भगवत् सेवा से वियोग कैसे सहागया सो यह शङ्काठीकहै उत्तर इसका इतनाहीं बहुत है कि उन्होंने जगत् का उपकार विचार करके सेवा में वियोग अङ्गीकार किया यह कि भगवच्चरित्र फैलैंगे जिस को गायगायके कोटानकोटि जीव भगवंत् की सेवामें आवैंगे तो इससे अच्छा और क्याहै सो यह विचार उनका सिद्धहुआ कि भगवद्भक्तों के सिवाय कितने राक्षस और दैत्य और परमपातकी भगवत् को प्राप्त हुये॥

कथा हनुमान्जीकी॥

चरित्र और कथा हनुमान्जीके और भक्तिभाव ऐसेपवित्रहैं कि आप रघुनन्दनस्वामी सुनकर प्रसन्नहोते हैं श्रीरघुनन्दन स्वामीके चरित्रजो संसारसमुद्र उतरने के वास्ते दृढ़ जहाज़ हैं हनुमान्जी के चरित्र उन जहाजों के वास्ते बादबान के सदृशहुये महिमा हनुमान्जी की किससे होसक्ती है कि सारा ब्रह्माण्ड उनकी सेवाको धन्य धन्य कहताहै सीता महारानी जगज्जननी को तो भगवत्का संदेश और रावणके बधहोने की भविष्यबात सुनाकर और रघुनन्दन स्वामी के हज़ूर हाज़िर होकरके समाचार सुनाये लक्ष्मणके वास्ते संजीवनीलाये मृत्युसे बचाया व भरत शत्रुघ्नजी व अयोध्या वासियोंको भगवत्के आवने का समाचार सुनाकर

उपकार किया रावणका वध कराकर सब देवताओं को आनन्द देकर धन्यधन्य कहाया भगवच्चरित्र संसारमें विख्यात करके सब संसारी जीवोंको परमपदका अधिकारी किया अर्थ यह कि ऐसा कोई नहीं कि जिस के वास्ते उपकार हनुमान्‌जी ने न कियाहो और बहुतप्रकार की विद्यामें हनुमान्‌जी का आचार्य्य होना शास्त्रोंमें लिखाहै परन्तु गानविद्या और ब्रह्मविद्या और शास्त्रविद्या और व्याकरण और साहित्यशास्त्रमें विशेष करके आचार्य्यत्व हनुमान्‌जी को है शिवजी के अवतार हैं और केवल रघुनन्दन स्वामी की सेवाके निमित्त अवतारलिया यद्यपि सब निष्ठाओं में उनका विश्वास दृढ़ है परन्तु सेवा निष्ठा में इस हेतु लिखा कि आप भगवत्‌ने उनकी सेवाको बड़ाईदी और सर्व्वकाल सेवामें प्राप्त रहतेहैं भगवन्नाममें ऐसाविश्वास हनुमान्‌जीकोहै कि जब श्रीरघुनन्दन स्वामी लङ्काजीतकर अयोध्याजी में आये तो विभीषण एक मणि की माला कि जैसी कहीं सारेसंसारमें नहीं है समुद्रसे मांगके भगवत्‌भेंट को लाया और जिससमय रघुनन्दन महाराज राजसिंहासन पर विराजमान हुये तो वह माला भेंटकी देवता व राजा आदि जो वहांथे सबको उसके मिलने की चाहहुई भगवत् अन्तर्य्यामी ने विचारकिया कि मालाएक और इस के चाहनेवाले अनेक तो ऐसे किसी को देना चाहिये कि जिसको चाहना न होय सो हनुमान्‌जी को पहिनाय दी हनुमान्‌जी ने जब उस मालाको देखा तो विचार किया कि प्रकट देखने में कोईबात भगवद्भक्ति की इस माला में दिखाई नहीं पड़ती क्या जाने भीतर कोई बात होगी इसहेतु एकनग को तोड़ा और उस को देखा जब उसमें भगवन्नाम न पाया तो दूसरेदाने को तोड़ा और नाम भगवत् का न देखा उसको भी डालदिया इसीप्रकार बहुत नग तोड़डाले जो दाने तोड़तेथे चाहनेवालों का मन टूटता था और मनहींमन में रिस करके कहतेथे कि भगवत्‌ने कैसे बेसहूर को यह माला अनमोल दी कि जो मोल व परख उसके जवाहिरातों की नहीं जानता नितान्त एक किसी से न रहागया और हनुमान्‌जी से पूंछा कि किसवास्ते ऐसी दुर्लभ मणिको तोड़के डालतेहो हनुमान्‌जीने कहा कि इसमणिके भीतर रामनाम देखताहूं उसने कहा कि महाराज कहीं ऐसी वस्तुओं के भीतर रामनाम होताहै हनुमान्‌जी ने कहा कि जो रामनाम इसके भीतर नहीं तो किसकामकी है उसने कहा

कि जो आपके विश्वासका ऐसा वृत्तान्तहै तो आपके भीतरभी रामनाम होना चाहिये हनुमान्‌जीने कहा कि सत्यकरके होनाचाहिये यह कहकर चर्म्म अपनी छातीका उखाड़कर दिखाया तो सब रोमरोममें रामनाम लिखाथा सब किसीको हनुमान्‌जी की भक्ति और विश्वास का निश्चय हुआ गीताशास्त्र जो महाभारत में भगवत्‌ने अर्ज्जुनको उपदेश किया तो हनुमान्‌जी ने भी अर्ज्जुन के रथपर ध्वजामें विराजमानथे सुना अर्ज्जुन को उपदेश किया सो एक अक्षर स्मरण न रहा भगवत्‌ने टीका करनेकी आज्ञादी सो हनुमान्‌जीने तिलक गीताजीका भगवत् आज्ञानुसार रचनाकिया और गीताजी की प्रवृत्ति को जगत् में किया यह बात गीतामाहात्म्य से प्रकट है और महाभारतके समय यद्यपि भगवत् आप सहायक अर्ज्जुनके थे परन्तु हनुमान्‌जीका भी ऐसा प्रताप हुआ कि आप भगवत् ने बड़ाई को किया और महाभारतसे सब बात विशेष करके प्रकट है॥

कथा जगत्‌सिंहकी॥

राजा जगत्‌सिंह बेटे राजा आनन्दसिंह के भगवद्भक्ति और साधु सेवा के मुल्क में भी राजों के राजाहुये भगवत्‌सेवा में ऐसी सच्ची प्रीति उनकी थी कि कबहीं उस में डगमग नहीं होती थी जितना प्रकट ऐश्वर्य व धन असंख्य था तैसेही ऐश्वर्य भक्तिका भी मनमें रखतेथे जिन्हों ने लक्ष्मीनारायण को अपनी सेवासे वशीभूत करलिया और ऐसा निर्मल यश जगत्‌में फैलाया कि असंख्य विमुख लोग भगवद्भक्त होगये प्रताप ऐसा था कि जिसप्रकार सूर्यके उदयहोने से अंधकार ध्वस्त होजाता है तिसप्रकार शत्रु सब नाश होगये व आज्ञादृढ़ ऐसी थी कि प्रजा को आनन्द व धन सम्पत्तिकी वृद्धिहो और किसीको पराक्रम अवज्ञा की न होय लक्ष्मीनारायणकी सेवाकी यह प्रीति थी कि जो कबहीं राजधानी से बाहरजाते तो भगवत्‌की पालकी सबसे पहिले चलती और आप किंकरके सदृश पीछे होते व जब कबहीं संयोग शत्रु से युद्धका पड़ता तो मालिक व अधिपति लड़ाई और सेनाके भगवत् होते और आप हरवलके सदृश फ़ौजके कामकरते जितनी टहल प्रभातसे अगले प्रभाततक भगवत्‌सेवा की होती सब अपने हाथसे करते अन्त है कि पानी भगवत्‌सेवा के वास्ते अपने शिरपर धरकेलाते शाहजहानाबाद

में राजा जगत्सिंह व दूसरे राजालोग जैसे यशवंतसिंह उदयपुरके व जयसिंह जयपुरके ठिकैत थे सबने यह हाल भक्ति व सेवाका सुना बहुत प्रसन्न और अपनी ओर विचार करके अतिलज्जित हुये एक दिन राजा जयसिंह व यशवंतसिंह को राजा जगत्सिंह के दर्शनकी अभिलाष जल लेआने के समय की हुई सो दो तीनघड़ी रातरहेपर राहपर जा बैठे और इस समाजसे दर्शन हुआ कि सौ दोसौ सिपाही वीर हथियार बंद सैकरों खिदमतगार व गुलामों सहित साथहैं और आप राजा अपने शिरपर भगवत्सेवाका जल सोने के कलशामें लियेहुये जिह्वापर नाम और मनमें भगवत् स्वरूप तिलक और माला धारण कियेहुये नांगे पायँन जातेथे दोनों राजोंको धैर्य न रहा और साष्टांग दण्डवत् करके चरणों में पड़े फिर हाथ जोड़कर विनय किया कि जीवनेका सुख व फल भगवत् ने तुम्हींको कृपाकरके दिया क्या हेतु कि-भक्तिका सुख व राज तो संसारमें पाया और परमधाम और भगवत् का स्वरूप उसलोकमें मिलैगा राजा जगत्सिंह राजा जयसिंहकी ओर देखकर बोले कि मैं किसी योग्य नहीं हूं मुझसे क्या भगवत्सेवा और टहल होसक्ती है तुम्हारी बहिन अलबत्ता भगवद्भक्त है उसके सत्संग और कृपासे थोड़ी २ मेरे चित्तकी वृत्ति भी भगवत्सेवाकीओर लगने लगीहै राजा जयसिंह अपनी बहिन दीपकुवँरि की भक्ति व प्रतापको समझकर बहुत प्रसन्नहुये और किसी कारणसे क्रोधथा और जागीर अपनी बहिन की-जब्तकरली थी सो छोड़दी और द्रव्य वस्त्रादिक भेजकर अपने अपराध को क्षमा कराया दीपकुवँरि ने क्षमा किया और अपने भाईको भगवद्भक्ति और साधुसेवा का उपदेश लिख भेजा हे भगवन् श्रीकृष्णस्वामी कृपासिंधु महाराज इस पापपुंज और मतिमंदपर भी कुछ ऐसी दयादृष्टि होय कि अहङ्कार आदिक नाना दुर्मतिको छोडकर आपके चरण शरण रहै ॥

कथा कुवँरकिशोरकी ॥

कुवँरकिशोर राजा खेमाल के पोते भगवद्भक्तिके बड़े दृढ़ और प्रेम की मूर्त्ति बुद्धिमान् आनन्ददर्शन उदार मीठेवचन के बोलनेवाले हुये भगवद्भक्तिको जगत् में फैलाकर सब छोटे व बड़ोंको अपनी अच्छी प्रकृतिके आधीन किया अर्थात् सब कोई धन्य धन्य कहताथा अवस्था थोड़ीथी परन्तु भगवद्भक्तिमें जवानोंऔर वृद्धोंसेभी अधिक होगये अपने

पिता पितामह के शिक्षापन को ऐसा निबाहा कि मरणपर्यन्त उसमें भेद न पड़ा अर्थात् जिस समय राजाखेमाल उनका पितामह देहत्याग करनेलगा तो आंखों में जलभरके बड़े शोचयुक्त हुआ बेटोंने विनयकिया कि ख़ज़ाना व राज्य व समाज इत्यादि सबकुछ भगवत्का दिया है जो चाहैं सो दानकरें शोचकरने की बात क्याहै राजानेकहा कि उनबातों में से किसी बातका शोचनहीं है कि जो काम सुयश व दान पुण्यका करना उचितथा सो सब करलिया परन्तु दोबातका अफ़सोस है एक यह कि कबहीं भगवत्सेवाके वास्ते कलश जल का अपने शिरपर लेआकर सेवा न की दूसरी यह कि नूपुर बांधकर भगवत्के सामने नृत्य न किया राजाके बेटेलोग सुनकर चुप होरहे परन्तु कुवँरकिशोर राजाके पोतेने खड़ेहोकर हाथ जोड़के विनय किया कि इस दासको आज्ञाहो जबतक जीऊंगा तबतक आज्ञापालन करूंगा कबहीं व्यवधान न पड़ैगा राजा ने उसी दशामें अतिहर्ष व आनन्दसे उठकर कुवँरकिशोर को छातीसे लगाया और दोनोंको सेवा की आज्ञा देकर परमधामकी राहली कुवँर-किशोर ने उस राजाकी आज्ञाको ऐसा निबाहा कि लिखने व वर्णनक-रनेकी किसीको सामर्थ्य नहीं तन मन व सबइन्द्रिय भगवत्में लगादिये भगवद्भक्तों ने सारे संसारमें यश वर्णन किया ॥

कथा नरहरियानन्द की ॥

नरहरियानन्दजी ऐसे परमभक्त हुये कि दिन रात सिवाय भगवत् सेवाके कुछ काम न था और सदाअनुक्षण भगवत्सेवा सामाकी तैयारी में रहतेथे एक दिन भगवत् रसोईका चौका इत्यादि सब बनाकर भग-वत्के हेतु रसोई करनेलगे घरमें लकड़ी न मिली और पानी बड़े धूम धामसे बरसता था इसकारण बाज़ारमें भी लकड़ी न मिली और भ-गवत्सेवा सबपर सर्वोपरि है और सब देवताभी इस बातमें एकमत हैं इस हेतु रसोई में विलम्ब उचित न समझकर दुर्गाका मकान उनके निकटथा गये और छत्त उतारने लगे दुर्गा महारानी इस भगवत्सेवा के दृढ़विश्वास से प्रसन्न हुईं और नरहरियानन्दजी से कहा कि स्थान को तोड़ो फोड़ो मत लकड़ी तुम्हारेघर पहुँचतीरहैंगी नरहरियानन्दजी फिर आये और प्रयोजनभरे को नित्य लकड़ी पहुँचती रहीं एक स्त्री पड़ोस की ने इस भेदको जाना और अपनेपुरुषसे कहा कि नरहरिया-

नन्दजी ने दुर्गाको डरपाकर नित्य लकड़ीका पहुँचाना दुर्गासे ठहरा
लिया जो तुम भी ऐसाही करो तो नित्य लकड़ी विना परिश्रम आती
रहैं वह निर्बुद्धि दुर्गाके स्थानपर पहुँच और जैसे फावड़ा छत्तपर मारा
कि दुर्गा महारानी ने शिर नीचे व पांव ऊपर करके उसको लटकादिया
जब मरनेलगा तो पुकारा कि हे दुर्गा महारानी हे माता अबकी प्राण
छोड़देव फिर ऐसा अपराध न होगा दुर्गाने कहा कि जो मेरे बदले
नरहरियानन्द के घर लकड़ी पहुँचायाकरै तो प्राण तेरा बचसक्ता है नहीं
तो इसी घड़ी प्राण तेरा लेतीहूं लाचार होकर दुर्गाकी आज्ञाको अंगी-
कार किया और दुर्गाके शिरसे बेगारछूटी भगवतसेवा की महिमा जो कुछ
कोई वर्णन करै सो थोड़ीहै शेष और शारदासेभी वर्णन नहींहोसक्तीहै॥

कथा प्रेमनिधि की॥

प्रेमनिधिजी जातिके ब्राह्मण रहनेवाले आगरेके अन्तर व बाहर
शुद्ध व सुन्दर मधुर वचन बोलनेवाले नवधाभक्ति से भक्तोंको आनन्द
के देनेवाले गृहमें रहकरके गृहस्थी के किसी कारमें बद्ध नहीं शुद्धस्व-
भाव उदार भगवद्भक्तों के सत्संग में नियमवाले और दयालुहुये वास्तव
करके प्रेमनिधि थे सदा चारघड़ी रात रहते उठकर भगवत्सेवामें लगते
और भगवत्सेवा के निमित्त यमुनाजल अपने शिरपर रखकर लेआते
एकबेर वर्षाऋतुमें कहीं कहीं बहुत कीच राहमेंथी चिन्तामेंहुये कि दिन
ऊगे स्पर्श व भीड़ लोगों की राहमें होगी कोई नीच से जल छूजायगा
व रातको जायँ तो कहीं अँधेरी में गिर न पड़ें व घट फूटजाय नितान्त
स्पर्श नीचका अयोग्य विचारके पानीबरसते में उसी अँधेरीमें कलश
शिरपर रखकर चले द्वारसे बाहर जैसे चरणदिया कि भक्तवत्सल करुणा-
कर महाराज उनके मनकी सेवासे प्रसन्नहोकर बारह वर्षके लड़के के रूप
से मशाललेकर प्रेमनिधिजी के आगेआगे होलिये प्रेमनिधिजीने जो रूप
माधुरी उस मशालची मनमोहन हरारंग आँखैं अरसीली घुंघुवारी अ-
लकैं लाल चीरा बांधेहुये कमर मशालचियोंकी नाईं कसेहुये हाथमेंमशाल
देखी तो भीतर व बाहर दोनों प्रकाशित हुये आसक्त और मोहित हो
गये यद्यपि यह विचार लिया कि अपने स्वामीको पहुँचाकर अपनेघर
आताहै परन्तु उसके देखने की आशाकरके जिधर को वह चला साथ
होलिये और यमुनाजीपर पहुँचे प्रेमनिधिजी स्नानकर यमुनाजल क

कलशा भर और शिर पर रखकर चले घर आये कलशा जलका भगवत्
मन्दिरमें रखकर तुरन्त उस मशालची को ढूंढ़तेरहे कहीं पता न लगा
जानिगये कि ऐसे रूपवाला सिवाय उस ब्रजकिशोर चित्तचोर के और
कौन है कि एक निगाह में अपना दास करलेवै और उस परमदयालु
करुणाकर से ऐसा और कौन स्वामी है कि सेवक के थोड़ेसे परिश्रमके
हेतु अपनी ईश्वरता को कि जिसका वेद और ब्रह्माभी पार नहीं पाते
छोड़कर तुरन्त आनपहुँचे यह समझकर भगवत्सेवा और भजनमें
लगे पहिले कथा फिर जब भगवत्सेवा से छुट्टी पाते तो भगवच्चरित्रों
का कीर्त्तन कियाकरते और बड़े प्रेमसे कथा कहते थे तो श्रोता बहुत
आते थे कथाके पीछे गान और कीर्त्तन का समाज होता था और सब
भगवत्के भाव और भक्ति में पूर्णहोते थे दुष्ट और पापात्मा लोगोंको
यहबात अच्छी न लगतीथी बादशाह से जनाया और पिशुनता की कि
प्रेमनिधि नगरकी स्त्रियोंको कथाके मिस अपने घर पर जमा करताहै कि
यहबात कारण अनर्थकी है बादशाह ने चोपदार भेजा और उसने च-
लने के वास्ते जल्दी की उससमय प्रेमनिधिजी भगवत्के निमित्त जल
लियेजातेथे चोपदारकी जल्दी करनेसे जलकापिलाना भ्रमहोगया बा-
दशाहके सम्मुख गये बादशाहने वृत्तान्त पूछा प्रेमनिधिजीने जो सत्य
बातथी कहदी कि भगवत्कथा का कीर्त्तन किया करताहूं उससमय कोई
स्त्रियांआवैं अथवा पुरुष रोक नहीं होसक्ती कि यह सत्पुरुषोंका आचरण
नहीं हैं परन्तु स्त्रियोंको बुरीदृष्टिसे देखना पाप बड़ा होता है बादशाह ने
कहा कि तुम्हारे टोलेके लोगोंने कुछ खोटी बातें कही हैं सो हम इसका
वास्तव वृत्तान्त समझैं बूझैंगे यह कहकर प्रेमनिधिको नज़रबन्द किया
और महलमें चलागया रातको जब सोया तब भगवत्ने उसके इष्टदेव
के रूपसे स्वप्नमें कहा कि हमको जलकी तृषालगी है बादशाहने कहा
कि जलके घड़े भरे धरे हैं पान करिये इस उत्तर से भगवत्को रिस आय-
गई और कहा कि तेरे घड़े का पानी कौन पीताहै और एकलात मारी कि
हमारीबात नहीं सुनता बादशाहने कहा जिसको आज्ञाहो पानी ले आवै
कहा कि हमारा जो पानी पिलानेवालाहै उसको तू ने क़ैद करलिया पानी
कौन पिलावै बादशाहकी आंखें खुलगईं और बड़ी मर्य्यादसे प्रेमनिधि
जीको बुलाया और चरणों में शीश रखकर अपराध क्षमाकराया और

कहा कि आप जल्द जावें जो तृषा की तृषाको भी दूर करनेवाला है उसको आपके बिना तृषालगी है और माल मुल्क जो चाहिये सो लीजिये भगवद्भक्तों को सिवाय भगवत्के अनित्य पदार्थों की चाह नहीं रहती कुछ न लिया बिदाहुये बादशाहने मशाल साथ देकर उनके घर पहुँचादिया उसीक्षण प्रेमनिधिजी ने जल भगवत् को अर्पण किया कि तृषा मिटगई ॥

कथा जयमल की ॥

जयमल राजा मीरथके परमभगवद्भक्त हुये कोई कोई लोग उनको मीराबाईजीका छोटाभाई कहते हैं दशघड़ी दिनचढ़े तक भगवत्की सेवा पूजामें तत्पर रहतेथे और यह आज्ञाथी कि सेवाके समय कोई मनुष्य पास न आवे नहीं तो वधके योग्यहोगा हेतु यह कि चित्तकीवृत्ति दूसरी ओर न जाय कोई सजाती बैरी को यह समाचार पहुँचे और जो समय राजाकी सेवा पूजनका था उसीसमय बहुत सेनालेकर चढ़िआया जब उसके चढ़िआने का शोरगुल नगरमें पहुँचा तो राजाकेडरसे कोई राजा से कहनेको नहीं गया परन्तु राजाकी माताने जाकर सब वृत्तान्त कहा राजाने उत्तरदिया कि आप सुचित्तरहैं भगवत् सब अच्छीकरैंगे और आपसेवा में सावधान बनेरहें शत्रुसूदन महाराज कि सर्वकाल अपने भक्तोंके सहायके हेतु शस्त्रलिये व कमर बांधे रहते हैं राजाके घोड़े पर चढ़िके शत्रुकी सेनापर पहुँचे और एकपलमें सब सेनाको ध्वंस करदिया राजा जयमल भगवत्सेवा से छुटकारा करके बाहरआये तो शत्रुसे युद्धकरने की तैयारीमें लगे अपनी निज सवारीके घोड़ेको पसीने में भरा देखकर बड़े आश्चर्य्य में हुये परन्तु जल्दी सवारी के कारणसे कुछ सुधि न किया दूसरे घोड़े पर सवारहोकर सेनालेकर शत्रुके सम्मुख पहुँचे पहिले अपने शत्रु को देखा कि धरती पर पड़ाहै और विकल है उसने राजा जयमल से पूछा कि तुम्हारे लश्कर में वह श्यामस्वरूप परम अनूप सिपाही कौन है कि जिसने अकेले आयकर मेरी सारीफ़ौजको मारडाला और मेरा मन अपने साथ लेगया राजा जयमलने उत्तर दिया कि भाई तेरे भागकी बड़ाई कौन कहसक्ता है कि मुझ को वह सिपाही कबहीं स्वप्न में भी दिखाई न दिया और तुझको दर्शन मिला उस बैरी ने भी सब चरित्र भगवत् के [illegible] किया और भगवद्भक्ति अंगीकार करके कृतार्थ हो [illegible] ग्रीष्मऋतु

में यह मनमें आया कि अत्यन्त बेविश्वासी व ढिठाई मेरी है कि भगवत् तो नीचे मन्दिर में कि जहां पवन का तनक प्रवेश नहींहोता तहां शयनकरैं और हम अटारी पर हवादार मकानों में सोवैं इस हेतु एक बँगला अतिविचित्र तिमहला तैयार करवाया और उस को फ़र्श व परदे व छत्त व चांदनी इत्यादि कमख़ाब व स्वर्णतारी का व झालर मुक़ैश व मोतियोंसे सजाया एकपलँग सोने व चांदी का तोशक व चादर व तकिया आदिसे सजिके उसमें बिछाया और सबसामान रातके शयन समय का जैसे मिठाई व पानदान व अतरदान व उगालदान इत्यादि रखकर भगवत् को मानसीध्यान से उसमें शयन कराया व आप हथियार लेकर चौकी और पहरेके वास्ते बँगलेके चारोंओर फिरते रहे और ध्यान भगवद्रूप के आनन्दमें भरतेरहे नित्य बँगलेकी सजावट और सबसेवा अपने हाथ कियाकरते और किसी सेवक व दास को उसकाम व सेवा में कुछकरने नहीं देते भगवत् ने अत्यन्तप्रीति व स्नेह राजाका सेवामें देखा तो अपने वचनके अनुसार जो गीताजी में लिखाहै कि जो मेरेभक्त जिसप्रकार मुझ को सेवन करते हैं उसीप्रकार मैं उन को अङ्गीकार करताहूं उस सेवा को ऐसा अङ्गीकार किया कि प्रतिदिन प्रभात को चिह्न ख़रच होने मिठाई व पान और अतर और पानीका और दन्तवन करनेका निर्देश और उगालदानमें उगाल होने का भाव सब राजाको अच्छेप्रकार मालूम हुआ करता और राजा उस भगवत्कृपा के परम प्रेमके समुद्रमें गोता लगायाकरते कुछदिन जब इसीप्रकार बीते और महलमें जाना न हुआ तो रानी के यहमन में आया कि राजा न मालूम किसी स्त्रीको उस बँगले में बुलाता है सो भेदके बूझने के हेतु ऊपर चढ़कर जो बँगलेको देखा तो एक लड़का किशोर परम शोभायमान श्यामसुन्दर स्वरूप पीताम्बर पहिनेहुये शयनमें पाया रानी आधीन हुई और प्रभात को यह वृत्तान्त राजा से कहा राजाने यद्यपि इस बातसे रानीपर कुछ रिसकिया परन्तु भीतर मनमें यह विचार किया कि परम बड़भागी यह स्त्री है कि उस को भगवत् का दर्शनहुआ ॥

कथा आशकरनकी ॥

आशकरन राजा नरवरगढ़ के महाराजा भीमसिंह के बेटे जाति के कछवाहे स्वामी कील्हजी के चेले धर्म्मात्मा और परम भागवत गुण-

वान् बुद्धिमान् मधुर बोलनेवाले शूर उदार दृढ़चित्त साधुसेवी श्रीजानकीवल्लभ और राधावल्लभजन के नेमवाले अर्थात् श्रीकृष्णस्वामी और श्रीरघुनन्दन महाराजको एकरूप जानतेथे दशघड़ी दिनचढ़ेतक भगवत् की सेवा पूजन अत्यन्तप्रेम से करते थे और द्वारपालों को आज्ञा थी कि कोई मनुष्य उस समय साम्हने न आने पावे और न किसी मामिलेका सन्देश कोई संयोगवशकी वादशाहकी सवारीआई प्रभातको किसी कार्य्यशीघ्र के वास्तेबुलाया वादशाही सिपाही जो आये तो किसी ने उनकी आज्ञाका पालन न किया और न राजातक वृत्तान्त पहुँचाया उन सिपाही लोगोंने वृत्तान्त सब वादशाह के हजूर में पहुँचाया बादशाहने क्रोध करके फ़ौज भेजी परन्तु तबभी राजातक कोई न गया और न कुछ भय फौजके आनेका हुआ सेनापति ने बादशाहको लिखभेजा कि फ़ौजके आनेपरभी कोई राजातक वृत्तान्त नहीं पहुँचता जो आज्ञा होय तो युद्ध प्रारम्भहोय वादशाह यहबात सब सुनकर आप आया और दरबानों ने केवल एक बादशाहको भीतर जानेदिया बादशाह ने देखा कि आशकरनजी सेवा पूजन करके भगवत्के साम्हने दण्डवत करते हैं बादशाह देरतक खड़ारहा नितान्त तरवार राजाके पावँ में मारी कि एँड़ी कटगई परन्तु राजाने तब भी कुछ असावधानी न की और न घावका भानहुआ क्योंकि मन भगवद्रूप में तदाकार होरहा था और जिसओर मन न होय उसओर का दुःख सुख कब व्यापित होताहै सो भगवत् का वचन है कि जिनलोगों का मन मेरी कथा और चरित्रो में नहीं लगा दुःख सुख उनको मालूम होते हैं राजा दण्डवत् करने पीछे मन्दिरके द्वारपर चिलमन डारकर बाहर आये और बादशाहको देखकर रीतिके अनुसार मिलने की जो बादशाही मर्य्याद है सो सब किया बादशाह यह वृत्तान्त सब देखकर और राजाके विश्वास और सांची प्रीति पर बहुत प्रसन्न हुआ और लज्जितहो अपने अपराध को क्षमा कराया और मर्य्याद राजाकी वड़ी की सब राजों का शिरोमणि समझा राजा जब परमधामको गये बादशाहने सुनकर बड़ा शोचकिया और श्रीमोहनजी के मंदिरमें जो राजा सेवनकरता था तिसकी सेवा व राग भोगके वास्ते कईगांव जागीरके बन्धान करदिये कि अबतक माफहै।

अठारहवीं निष्ठा॥

जिसमें दास्यनिष्ठा की महिमा और वर्णन सोरह भक्तों की कथा का है॥

श्रीकृष्णस्वामी के चरण कमलों की पूर्णचन्द्ररेखाको प्रणाम करके ऋषभदेव अवतारको दण्डवत् करताहूं कि अयोध्यापुरी में वह अवतार धारण करके ज्ञान और वैराग्यकी अन्तिमदशाको संसारमें प्रकट किया महिमा दास्यनिष्ठा की कौन वर्णन करसक्ताहै इसमें कुछ सन्देह नहीं कि इससंसारसे उद्धारके हेतु दास्यनिष्ठासे अधिक और कोई अवलम्ब नहीं यद्यपि भगवत् प्राप्तिके हेतु दूसरी निष्ठाभी बहुते हैं परन्तु परिणाम सब निष्ठाओंका इसी निष्ठामें पहुँच जाताहै जैसे सखा व वात्सल्यहै और उसमें दास्यभाव प्रकट मुख्य नहीं परन्तु जो मूल अभिप्रायपर दृष्टिजाती है तो वास्तवमें जड़ उनके निष्ठाकी दास्यभावसे सम्बन्ध रखती है और सखा व वात्सल्यभाव केवल मनकीरुचिसे चित्तके लगने वास्ते हैं उनके मन्त्रीसे साक्षात् अर्थ शरणहोने और दास्यभावके निकलते हैं तो जब कि उन दोनों निष्ठावालोंका यह वृत्तान्तहो तो और निष्ठा एक अंग व मिश्रित दास्यनिष्ठा की आपही होगई और हैं ब्रह्मस्तुति में भागवत में लिखाहै कि तबहींतक द्वैत व सुख दुःख इस मनुष्यकी बुद्धिको चुरानेवाले हैं और तबहींतक गृह कारागार है और तबहींतक मोह जो अज्ञान सो पांवकी बेड़ी है कि जबतक भगवत् का दास नहीं होता दूसरा वचन भागवतकाहै कि जिस भगवत् के केवल नामलेने और सुननेसे निर्मल होजाते हैं उसके दास होने से कौनपदवी उत्तम नहीं मिलसक्ती है इसप्रकारके हज़ारों वचन सब पुराण इत्यादिकों में विख्यात व प्रसिद्ध हैं और यह निष्ठा ऐसी सहज समवायी को अंगीकार व प्राप्तहै कि जिस किसीसे पूंछा जाताहै तो अपने आपको ईश्वरदास और ईश्वरको स्वामी और मालिक अपना वर्णन करदेताहै और यह बोलना कहना सब छोटे बड़ों के मुखसे स्वाभाविक है कोई कोई उपासकों ने जो शरणागती को दास्यनिष्ठासे अलग वर्णन किया तो कारण यहहै कि दास तो दास्यता व सेवा टहलके करनेमें विवश व पराधीन हैं कि सर्वावस्था व सब दशामें उसको अपने स्वामीकी सेवा करना उचित व मुख्यतरहै व शरणागत अर्थात् शरणमें आयाहुआ यद्यपि दाससे भी अधिक सेवा टहल करताहै परन्तु दासके सदृश उस

पर आवश्यक सिद्धान्त नहीं कि सेवा टहलकरै सो प्रसिद्ध देखने और सुनने में आयाहै कि जो दास किसीका होताहै जो वह अपने स्वामी की नियत सेवा टहल न करै तो निमकहरामों में गिनाजाता है और स्वामी भी प्रसन्न नहीं रहताहै और जो शरण में आताहै उसके ऊपर कोई सेवा टहल नियत नहीं परन्तु वह दासोंकी भांति दास्यताकी टहल व सेवा भी करताहै तो अनुक्षण सामने रहनेके हेतु और सेवाका काम भी शीघ्र होजाताहै पद्धति दास्यनिष्ठाकी जगह जगह लिखी है और गो तुलसीदासजी ने भी अयोध्याकाण्ड रामायणमें दास्यनिष्ठाका भाव और रीति अच्छी कुछ वर्णन करीहै उसका सारांश तात्पर्य्य यहहै कि दोनों लोकका लोभ अर्थात् अर्थ धर्म्म काम मोक्ष को मनसे दूरकरके केवल अपने स्वामीकी सेवा व प्रसन्नताको सब सिद्धान्तोंपर सिद्धान्त-तर समझै और अपने आपको सबप्रकार परवश व आधीन अपने स्वामी के जानकर सुखपायकै हर्षित दुःख पायकै दुःखित न होय और सुखको दियाहुआ अपने स्वामीका और दुःखको अपने जन्मान्तरीय पापोंका फल समझतारहै और विशेष करके जगत् की बोलन यह है कि जो कोई बात दुःख व हानिकी आय जाती है तो यह कहते हैं कि भगवत् की इच्छा व आज्ञा ऐसीही थी सो जानेरहो कि अपने दासके दुःख व हानि के लिये भगवत् की आज्ञा कदापि नहीं होती भगवत हरघड़ी अपने दासोंके वास्ते अच्छाही करताहै नहीं तो विचार करना चाहिये कि उस मालिक की रिस और कोप करोड़ों ब्रह्माण्डोंके ब्रह्मा और काल व यम इत्यादि नहीं सहसक्ते मनुष्य अपराधोंसे भरा क्या सहि सकैगा इसहेतु कदापि भूलिकै व स्वप्न में भी किसी दुःख व उत्पात के आने से किसी को यह मन में न हो कि भगवत् की इच्छासे हुआ सेवा टहल जो दासको करना चाहिये अर्थात् आठवीं निष्ठा व सत्रहवीं निष्ठामें लिखी हैं उन सेवाओंका करना उचित व योग्यहै सेवा मानसी होय अथवा साक्षात् श्रीविग्रहकी तो जबतक सेवा सब न करै तबतक निष्ठा दास्यता की नहीं होसक्ती काहेसे कि दासका काम सेवा करने का है सैर व सपाटा करने फिरनेका नहीं जब उस सेवासे छुट्टीपावै तब अपने स्वामीके सम्मुख विनय व प्रार्थना व स्तुति अपराध क्षमापन कियाकरै और चरित्र व गुण शोचि समझके उस आनन्दमें मग्न र

उपासकों ने इसनिष्ठाको पांचरसमें एकरस लिखाहै सो रसके विचार के अनुसार भगवत् सच्चिदानन्दघन पूर्णब्रह्म परमात्मा करुणाकर दीनबन्धु दीनदयाल भक्तवत्सल शरणागत पालक इस रसका विषयालम्बन है और भगवद्भक्त जो पहिले होगये या अब हैं या आगे होंगे वे आश्रयालम्बन तिलक व माला व तुलसी और शस्त्रों का चिह्न धारण करना चरित्रों का श्रवण कीर्त्तन और शास्त्रों के अनुकूल वर्त्तना और भगवत् सेवा और टहल की सामा इकट्ठी करनी व्रत एकादशी इत्यादि व सत्सङ्ग व भगवत् उत्साह यह सब विभाव व अनुभाव अर्थात् प्रथम व द्वितीय सामग्री है व आठ प्रकार के सात्विक जो ग्रन्थके आरम्भमें लिखे हैं अर्थात् तीसरी सामग्री सब इस रसमें अपनी प्रवृत्ति करते हैं व चौथी सामग्री अर्थात् तेंतीस व्यभिचारों की दश दशा जो वात्सल्य निष्ठा की भूमिका में लिखी हैं इस दास रसमें भी उतनीही हैं सिवाय नहीं भगवच्चरणोंकी सेवामें निश्चल प्रीतिका होना वह स्थायी भाव है और वह प्रीति कैसीहो कि किसी प्रकार और किसी सबब से किसीघड़ी कम न होवे जिसप्रकार गङ्गा का प्रवाह रात दिन बराबर चलता रहता है इसीप्रकार चित्तकी वृत्ति केवल भगवच्चरणों में लगी रहै हे प्रभु दीनवत्सल हे करुणाकर हे पतितपावन महाराज किस अवतरन व अवलम्ब से अपनी दशा के समाचार आपके समीप पहुँचाऊं कि सब प्रकार दीन और दुःखित हूं और जो चुप होरहूं तो विना निवेदन दूसरा उपाय उद्धारका नहीं देखताहूं काहे से कि आपके सिवाय ऐसा और कौन है कि जिस को पतित और अधम प्यारे हों जो यह आप कहैंगे कि दूसरे देवता बड़े बड़े नामी व बड़े हैं उन के शरण किसवास्ते नहीं जाता है तो पहिले तो वे बपुरे अपनीही दशा में फँसे हैं मेरे वास्ते क्या करैंगे दूसरे जबकि आपके चरणकमलों के आगे किसी की कुछ बड़ाई न समझी तो वे हम से कब प्रसन्न होंगे सिवाय इसके सब अपनी सेवा और स्वार्थ के चाहनेवाले हैं विना कारण दीनपर प्रसन्न होना केवल एक आपही के बांटे में आया है तो उन देवताओं की सेवा में वह कोई जाय कि जिस को अपने शुभकर्म्म और सब प्रकारकी सेवा करने का भरोसा हो उन की सभामें मेरे ऐसे अपराधी को कौन पूंछता है इसहेतु मुझ को तो न कोई जगह जानेकी है व न कोई

स्वामी दिखाई देता है न कोई दूसरा शरण है आपके द्वारपर पड़ा हूं जब कबहीं जो कुछ होगा आपही के चरणारविन्द से होगा और निश्चय करके आपके द्वारसे कोई पतित और पातकी निराश नहीं फिरा इसहेतु मुझको भी निश्चय है कि अपने मनोरथ को प्राप्त होजाऊंगा और एक विनती यहहै कि यद्यपि प्राप्तहोना मेरे मनोरथ का मेरे यत्न से अतिदुर्लभहै परन्तु आपकी तनकसी कृपासे दासों से मिलसक्ताहूं केवल इतनाहीं चाहताहूं कि वह सभा व समाज आपके राज्याभिषेक का जो ब्रह्मादिक को परम आनन्द का देनेवालाहै सदा निश्चल मेरे मनमें बसारहै भगवत्का बावन अवतार उस स्वरूपसे हुआ कि जो विष्णुनारायण शंख चक्र गदा पद्मधारी का ध्यान शास्त्रोंमें लिखाहै और शरणागतिनिष्ठा में लिखाजायगा परन्तु जिस घड़ी राजाबलिके द्वारपर गये और दानलिया उस समयका ऐसा ध्यान भागवत में लिखाहै कि परम मनोहर और शोभायमान छोटासा ब्रह्मचारी का स्वरूप जिसको देखकर सूर्य्य शीतल और चन्द्रमा लज्जासे सब अंग जल होताथा बनाकर एक हाथमें जलका कमण्डलु व डोरी दूसरे हाथमें दण्ड लिये हुये मुंजी शोभित छतुरी छाया के वास्ते लगायेहुये राजाबलिके सम्मुख विराजमान औ संकल्प कराते हैं ॥

कथा प्रह्लादजी की॥

प्रह्लादजी भगवद्दासोंमें अग्रगण्नीय व शोभाके देनेवाले दास्यनिष्ठा और भागवतधर्मके हुये सो कथा उनकी सब पुराणों में और विशेष करके भागवत व विष्णुपुराण व महाभारतमें विस्तारसे लिखी है इसवास्ते यहां संक्षेपसे लिखताहूं जब्र हिरण्याक्ष हिरण्यकश्यप के भाईको भगवत्ने वाराह रूप धरके मारा तो हिरण्यकश्यप सदा एक छत्र राज्य करने व अमर रहने के वास्ते उपाय विचार करके तप करनेकोपहाड़में चलागया राजा इन्द्रने साज और घरबार हिरण्यकश्यपका लूट पाटके ध्वस्त कर दिया और उसकी स्त्री को कि प्रह्लादजी गर्भमें थे पकड़ कर लेचला नारदजीने आकर छोड़ा दिया और अपनी रक्षामें रखकर ज्ञान उपदेश किया वास्तव करके वह ज्ञानका उपदेश प्रह्लादजी के वास्ते हुआ क्योंकि गर्भ में सुनते थे जब हिरण्यकश्यप अति कठिन कठिन वरदान लेकर आया तो अपना राज्य व घरबार सब सजि लिया और

तीनों लोकके राज्यगद्दीपर बैठकर सब देवताओंको बंदि में डालदिया कुछ दिन पीछे प्रह्लादजी का जन्महुआ और ब्राह्मणों ने हिरण्यकश्यप को मंगल आशीर्वाद किया कि इस महाभाग लड़केके जन्मलेने से तुम्हारा कुल परिवार पवित्रहुआ और तुम्हारे पुरुषा सब परमधामके भागी होगये हिरण्यकश्यपने प्रह्लादजीको बड़े लाड़ व दुलार से पालन किया और पांच चार वर्षकेहुये तो शङ्ख व लिखित दोनों शुक्रजी के पुत्र हैं उनकेपास वास्ते पढ़ने राजनीति और शास्त्रमें प्रवृत्ति होनेके निमित्त भेजा जब गुरूने पढ़ाना आरम्भकिया तब प्रह्लादजी ने भगवन्नाम का उच्चारण किया तब गुरूने कहा कि अरे तू किसका नामलेताहै वह तेरे बापका शत्रुहै जो तेरा बाप सुनेगा तो तुझे दण्ड होगा प्रह्लादजीने कहा सब विद्याका पढ़ना केवल उस भगवत् के जानने वास्तेहै उसको छोड़ कर दूसरी विद्याका पढ़ना निपट निष्फल है और अपने पिताका कुछ डर मुझको नहीं गुरूने प्रह्लादजी की मातासे बहुत शिक्षाकराई परन्तु प्रह्लादजी अपने विश्वास और धर्म्ममें दृढ़रहे एकदिन हिरण्यकश्यप ने गोदमें बैठालकर पूछा तुमने इन दिनों में क्या पढ़ाहै प्रह्लादजी ने वही नाम भगवत्का सुनाया हिरण्यकश्यप क्रोधसे बोला कि यह नाम मेरे शत्रुका किसने पढ़ाया है अब फिर कबहीं इस नामको न लेना प्रह्लादजी ने कहा कि यही नाम सब नामियोंका नाम देनेवाला है और सब धर्मोंका परमधर्म्म और सब विद्याओं की परमविद्या है तुमको उचितहै कि इस नामका भजन कियाकरो हिरण्यकश्यप सुनकर अधिक क्रोधवन्त हुआ अपने भृत्यलोगोंसे प्रह्लादजी को दण्डदेने के वास्ते आज्ञादी उन्होंने आज्ञाके अनुसार किया जबकुछ न सपरा तब आगमें जलवाया नदीमें डुबोया और पहाड़पर से गिरवाया परन्तु कुछ क्लेश प्रह्लादजीको न हुआ हारिके हिरण्यकश्यपने फिर पढ़ानेवालेको सौंपा प्रह्लादजी ने पाठशालाके सब बालकों को गुरूजब न रहें तब उपदेश कियाकरें कि यह संसार असारहै और जगत्का सब व्यवहार नस्वर है और भगवत् सारहै और सदा सब जगह प्राप्तहै भगवच्चरणों में मन लगाना परमसुख है और भगवत् विमुख होना परमदुख मनुष्यका देह मूल भगवद्भजनके वास्ते है नहीं तो पशु पक्षी व तृण व कूड़ा करकट भी तिरस्कृतहै नारदजी ने जो उपदेश मुझको किया था सो तुम्हें

सुनाया कल्याण इसी में है कि भगवत् शरण होकर स्मरण और भजन करो भगवत् को कुछ जाति और कुलपर दृष्टिनहीं मैं भी तो तुम्हाराही सजाती हूं देखो भगवत् ने कैसी २ संकट काटी हैं बालकों को उपदेश प्रह्लादजी का लगगया सब भगवद्भजन करनेलगे गुरू आया और यह वृत्तान्त जब देखा तो रिस की और हिरण्यकश्यप से जाकर सब वृत्तान्त कहा वह क्रोधकी अग्निमें लाल हुआ आया और तरवार हाथ में लेकर प्रह्लादजी के मारनेको उद्यत होकर बोला कि अब तेरारक्षक कौनहै प्रह्लादजी ने उत्तरदिया कि वही भगवत्जो सबमें व्यापक और समर्थ सर्वत्र प्राप्तहै हिरण्यकश्यपने कहा इसखम्भे मेंभी है उत्तरदिया अलबत्ता इसमें भी है हिरण्यकश्यपने एक मुष्टिका उसखम्भे में मारी कि शब्द प्रचण्ड व भयङ्कर उसमें से हुआ और फिर भगवद्भक्तरक्षक और सत्य करनेवाले वचन अपने भक्तों के नृसिंहरूप धारण करके बैशाख शुदी चतुर्दशी मध्याह्न के समय मुल्तानमें कि वह राजधानी हिरण्यकश्यप की थी प्रकट हुये हिरण्यकश्यप भी युद्धको उद्यतहुआ लड़ाई होनेलगी जब संध्याका समय आया तब भगवत्ने उसको पकड़ा और अपने जानुओं पर डालकर गृहके द्वारपर अपने नखोंसे उदर फाड़ा और परमपदको भेजदिया और ब्रह्माका वरदान सब भगवत् ने सत्य भी रक्खा ब्रह्मा और शिव और इन्द्रादिक सब देवता स्तुति और विनय करनेलगे और आकाश से जयजयकार की धुनि और फूलोंकी वर्षा होने लगी और जो भगवत्का स्वरूप विकराल व क्रोधभरा था किसी को यह सामर्थ्य न हुई कि समीप जाकर क्रोधको शान्तकरै इसहेतु सब ने प्रह्लादजी को भेजा प्रह्लादजी ने जाकर दण्डवत् करके विनय किया कि हे प्रणतारतिभञ्जन आपकी महिमा वेद और ब्रह्मा भी नहीं कह सक्ते मुझ अधम व अज्ञ व बालक से तो क्या वर्णन होसक्ती है परन्तु कृपासिन्धु व दीनवत्सल जानकर विनय करताहूं कि आपके क्रोधभरे स्वरूपसे सब देवता भयभीत और कम्पायमान हैं कृपाकरके उनका भय दूरकरो भगवत् ने प्रसन्न होकर कहा कि अच्छा और जो इच्छा तुमकोहो सो मांगो कि पूर्णकरूंगा प्रह्लादजी ने विनय किया कि आपके चरणकमलों की भक्ति से सिवाय किसी वस्तुकी चाहना नहीं जो शरीर मुझको मिलै आपके चरणों की प्रीति बनी रहै भगवत्

यह बरदानदिया और राजगद्दीपर बैठालकर अपने हाथसे राजतिलक करदिया उस समय भगवद्रूप की शोभा ऐसीथी कि जो हज़ारों सूर्य्य एकसाथ ऊगें तो वे भी भगवत्मुखके तेजकी समता नहीं पायसक्के उस मुखपर जहां तहां रुधिरकी बूंदें लगीहुई बड़ीआंखें लाल कुछ पियराई लियेहुये जीभसे बारबार अपने ओठोंको चाटते हैं मूछैंभूरी गर्दनके बाल पीले और श्याम दोनोंहाथ अत्यन्त बलिष्ट नख तीक्ष्ण चौड़ीछाती पर आंतोंकी माला विराजमान और पूंछ कमरपरकी होकर शिरपर चमर की भांति लहराती हुई प्रह्लादजी को गोदमें लेकर राजतिलक करते हैं देवता चारोंओर विनती करारहे हैं आकाश में दुन्दुभी बजती हैं अप्सरा नाचतीहैं गन्धर्व भगवच्चरित्रों का कीर्त्तन करते हैं फूलोंकी वर्षाहोती है और यह बात मालूमरहे कि भगवत् स्वरूप ऐसा न था कि कोई अंग व्याघ्रका होय और कोई अंग मनुष्य का वह सब स्वरूप भगवत् का कबहीं व्याघ्रके रूपसे देखपड़ता तथा कबहीं मनुष्यके यह बात भागवतके तिलकसे प्रकटहै परन्तु बहुत करके भगवद्रूप व्याघ्र के शरीरसे देखनेमें आताथा पीछे भगवत् तो अन्तर्द्धान होगये और प्रह्लादजी राज्यकरनेलगे उनके राज्यमें भगवद्भक्ति की ऐसी प्रवृत्तिभई कि कोई विमुख न रहा और न्यायधर्म इतना था कि एकबेरप्रह्लादजीके पुत्र विरोचन से व श्रुतधन्वा ब्राह्मणसे आपुसमें एकसुंदरी स्त्रीके वास्ते यह विवादहुआ कि विरोचन तो उसस्त्रीको राजाके पुत्रहोनेसे आपलिया चाहताथा और वह ब्राह्मण कहताथा कि राज इत्यादिकों पर ब्राह्मणों को अधिकता है इसहेतु यहस्त्री पहिले भाग मेरा है न्याय इसझगरे का प्रह्लादजी पर निश्चयहुआ और आपुस में यह प्रबंध ठहरगया कि जो अन्यथा कहनेवाला राजाके यहां ठहरे सो बधकिया जाय प्रह्लादजी ने कुछ पक्ष अपने पुत्रका न किया और ब्राह्मण जो सच कहताथा उसको वह स्त्री दिलादी और अपने पुत्रके बधकेवास्ते आज्ञादी वह ब्राह्मण इस न्यायसे बहुत प्रसन्नहुआ और उसके बदले विरोचनको बधसे बचाय के प्रह्लादजीको देदिया इसप्रह्लादचरित्रसे भगवत् की भक्त वत्सलतापर विचार करना चाहिये कि यह हिरण्यकश्यप आरंभ राजसे देवताओंपर उत्पात करता था और देवतालोग सदा त्राहि त्राहि पुकारतेरहे परन्तु भगवत्ने कबहीं हिरण्यकश्यपकी ओर कुछ तनक चिन्तवन भी न किया

जब उसने भगवद्भक्तको दुःखदिया तो उसको न सहिसके और आपने बिनापुकारे भक्तकी सहायकरी और एकशिक्षा भी इसचरित्र से प्रकट होतीहै कि जो बापभी भगवत् सम्मुख होने में बाधाकरै तौ त्यागके योग्यहै जिसप्रकार प्रह्लादजी ने त्यागकिया॥

कथा अङ्गदजी की॥

अङ्गदजी बेटे बाली बानरों के राजाके ऐसे परम पवित्र भगवद्भक्त हुये कि युवावस्था और सर्व्वसुख राज्य ऐश्वर्य्य प्राप्तथा तथापि सदा मनकी वृत्ति भगवच्चरणों में रखतेथे और रघुनन्दन महाराजने उनके बापको सुग्रीवकी दीनपुकार पर बधकिया परन्तु तनकभी भक्तिकी राह से और अपने धर्मसे न फिरे और प्रसन्न हुये कि ऐसी पदवी के योग्य बाली नहीं था सो दीव जानकीजीके खोजने में और रावणसे युद्धहोने के समय ऐसा परिश्रम व शूरताकरी सो वृत्तांत विस्तारसे रामायणमें लिखाहै थोड़ासा यहहै कि जब रघुनन्दन महाराजकी ओरसे रावणके पास दूत बनिके गये और प्रश्नोत्तर उचितताके साथहुआ तो उस घड़ी यह बात ढिठाई की रावण के मुंहसे निकली कि जैसे और आदमी हैं वैसेही रामचन्द्र तेरे स्वामी भी हैं यह वचन सुनतेही अंगद जी क्रोधमें भरिके कालस्वरूप होगये कि भयसे कितने राक्षस भाग गये व रावण भी कांपकर गिरपड़ा व मुकुटभी उसके माथे से गिरपड़े उसमें से कई मुकुट अंगदजी ने श्रीरघुनन्दन महाराजकी ओर फेंके उसकेपीछे जब अतिउत्तर प्रतिउत्तर का संयोग पहुँचा तो चरणरोपिके रावणसे प्रण किया कि जो कोई तुम्हारेमें से मेरा पांव उठाय देवै तौ श्रीरघुनन्दन महाराज लौटजायँगे और सीता महारानीको मैं हार चुका इसबातको सुनकर इन्द्रजित आदिक बड़े बड़े वीर उठायके हारिगये चरण न चला न हिला जैसे कामियोंकी बातोंके सुननेसे पतिव्रता स्त्रीका मन अथवा कोई आपत्तिके आनेसे भक्त का मन हरिभजन और न्यायसे नहीं चलायमान होता राक्षसों ने भांति भांति के उपाय से चरण को उठाया परन्तु चरणने धरतीको इसप्रकार न छोड़ा कि जैसे बिना भगवद्भजन संसारका दुःख और बिना विद्याके अज्ञान नहीं छोड़ता सब लज्जित होकर बैठगये तब अन्त में रावण ललकारकर उठा चाहा कि अंगद जी के चरणको पकड़ैं उस समय अंगदजी ने शिक्षा और तर्क करके

कहा कि अरेमूढ़ मेरे चरणके पकड़ने से तेरा क्या भलाहोता है श्रीर- घुनन्दन स्वामी के चरण क्यों नहीं पकड़ता कि कृतार्थ होजावे रावण लज्जित होकर सिंहासनपर बैठगया अंगदजी को भगवत् का ऐसादृढ़ विश्वास था कि प्रणकरने के समय कुछ संदेह न किया और लङ्काको जीतकर जब रघुनन्दनस्वामी अयोध्या में फिर आये और राज्याभिषेक होलिया तब अंगदजी भी स्वामीकी आज्ञासे विदाहोकर अपने घरको गये और भगवत् के स्मरण भजन में ऐसे लीनहुये कि दूसरी ओर तनक चित्तकी वृत्ति न गई॥

कथा पीपाजी की॥

पीपाजी ऐसे परमभागवत हुये कि उनकी भक्तिके प्रतापसे पशुतु- ल्य भी भगवत् शरण होगये भगवद्भक्तोंके भक्त और सबगुणोंके जान- नेवाले हुये गागरौनगढ़ के राजा व पहिले दुर्गाजी के सेवकथे एकबेर भगवद्भक्तलोग जा निकले उनको रसोई की सामग्री जो इच्छा से चाही सो दिलवायदी उन्होंने रसोई बनाकर भगवत्का भोग लगाया और भगवत् से प्रार्थना की कि यह राजा भक्तहोजाय रातको एक किसी ने राजा को स्वप्न में शिक्षा की कि तू कैसा मतिमन्द है कि भगवत् से विमुख होकर उद्धार चाहता है पीछे एक प्रेतने भयङ्कररूप से प्रकट होकर राजाको पलँग परसे धरती पर डालदिया राजाने उसीघड़ी से भगवद्भक्तिका आरम्भकिया और सब रचना संसारकी असार दिखाई देनेलगी दुर्गाजी साक्षात्हुई और पीपाजी ने दण्डवत् करके पूछा कि भगवद्भक्ति किसप्रकार प्राप्त होय दुर्गाजी महारानी रामानन्द जी को गुरूकरने की शिक्षा करके अन्तर्द्धान हुई और पीपाजी रामानन्दजी के दर्शनके हेतु ऐसे व्याकुल हुये कि लोगोंको यह सन्देह हुआ कि पीपा जी वैराग्यको काशीपुरी में रामानन्द जी के पास आये उन्होंने निराश करदिया कि यह घर त्यागियों व विरक्तों का है राजाका यहां क्या काम है पीपाजी सब त्यागके फ़क़ीर बनकेगये कि मैं भी फ़क़ीर होगया रा- मानन्दजीने आज्ञाकी कि कुवेंमें गिरपड़ो तुरन्त गिरनेचले जब गिरने लगे तो रामानन्दजी के चेलोंने पकड़लिया साम्हने लाये तब रामा- नन्दजी ने चेलाकिया और भगवद्भक्ति कृपापूर्व्वक देकरकहा कि अपने घरजाओ साधुसेवा करते रहो एकवर्ष पीछे हमभी साधुसेवा सुनैंगे तो

ोना अवश्य योग्यहै सीताजी ने सबहाल जानलिया और उनके
आगे अपनी भक्तिको तुच्छ समझा अपने अंगपरके वस्त्रसे
कर बाहरलाई और एकसाथ भोजनकिया पीछे सीता व पीपा
की सेवा उचित समझकर विशेष द्रव्यकी प्राप्ति वेश्याकर्म से
नकर बाजारमें जाबैठे सुन्दररूप देखकर लोग जमाहुये समीप
आंख उठाकर न देखसके पूछा तुमकौन हो जवाब दिया कि
हैं घरबार कहीं नहीं केवल एक समाजी साथहै वे लोग सुन-
होरहे कुछ हँसी की बात न कहिसके नाज व मुहर व रुपया
पीपाजी ने वह सब चीधरभक्त के घर पहुँचादिया भक्त ऐसे
थवान् थे कि उसी घड़ी भगवद्भक्तोंको देदिया आप जैसेथे तैसेरहे
जी बिदाहोकर राहका कष्टझेलते ठोड़ाशहर में टिके तालाबपर
न करनेगये मुहरोंसे भरा एकघड़ा देखा रातको सीतासेकहा चोरों
नकर जाकरदेखा तो घड़े में एक बड़ासर्प है तब विचारा कि इस
से उसको कटवाना चाहिये जो हमारे काटनेके वास्ते झूठकहा उस
को लेआकर पीपाजी के स्थान में डालकर चले गये पीपाजी उस
न सातसौवीस मुहर जो पांचपांच तोलेकी एकएकथी तीन दिनमें

भंडारा करके साधों को खिलादिया सूरसेन राजा उसदेशका था वह पीपाजी का नाम सुनकर दर्शनको आया चरणोंमें पड़कर विनयकिया कि मुझकोभी अपने ऐसा बना व मन्त्रदेकर चेलाकरो पीपाजीने कहा कि अपनी सम्पत्ति व रानी इत्यादि सब हमारे भेंटकरो राजाने तुरन्त वैसाही किया तब उसको मंत्र उपदेश करके चेला किया व रानी व सम्पत्ति इत्यादि जो भेंटकी थी सो सब फेर दी और कहा कि भक्तोंसे परदा का प्रयोजन नहीं राजाके भाई बन्धु यह वृत्तान्त सुनकर बहुत क्रोधयुक्त हुये और अन्तष्करण से पीपाजी के साथ दुष्टता करनेलगे एक बनजारा बैलोंके मोललेने को बैल ढूंढ़ताहुआ आया राजाके भाइयों ने बहँकादिया कि पीपाजीके पास बैल अच्छे २ हैं बनजारेने पीपाजीके आगे आयके रुपयानक़द रखदिये और कहा कि नयेनये बैलों को मोललेने आयाहूं पीपाजी दुष्टोंकी दुष्टता जानगये कहा कि इससमय बैल चराईपर गयेहैं फिर आकर लेजाना बनजारा तो चलागया और पीपाजीने उसी रुपयेसे भंडारा व महोत्साह आरम्भकिया हज़ारों साधुजमा थे कि बनजारा आया और बैलों के वास्ते विनयकिया पीपाजीने कहा कि यह हज़ारों बैलखड़े हैं कि परमधाम तक खेप पहुँचादेतेहैं जितने तुमको कामहो लेजाव बनजारा बड़भागी हरिभक्तोंका दर्शनकरिके उसीघड़ी भगवत्के शरणहुआ व अच्छे कपड़े साधोंकोदिये एकबेरघोड़े पर सवारहोकर पीपाजी स्नानको गये घोड़ेको खुला छोड़कर नहानेलगे घोड़े को दुष्टलोग चुरालेगये और बांधरक्खा जब स्नानकरके चलनेका विचारकिया तो घोड़ा कसाकसाया आगे आकर खड़ाहुआ मानो कोई तैयार करके लायाहै एकबेर पीपाजी हरिभक्तों की समाजमें गयेथे घरपर साधु आये घरमें कुछ न था सीताजी बाज़ारमें जाकर एक बनियेसे रात को आनेके क़रारपर सामग्री ले आई उसीघड़ी पीपाजीभी आगये बहुत प्रसन्नहुये और सीताने सब वृत्तान्त कहदिया जब रातको सीता शृंगार करके चलीं तो जल बरसने लगा पीपाजी अपनी पीठपर चढ़ाकर बनियेके घरलेगये दर्शनसे बनिये को ज्ञान होगया चरण सूखा देखकर पूंछा माता किसप्रकार आई सीताने कहा मेरे स्वामी अपनी पीठ पर लाये दरवाज़े पर खड़े हैं बनिया दौड़कर चरणों में पड़ा और गिड़गिड़ाने लगा पीपाजी ने क़हा लज्जाका कुछ प्रयोजन नहीं अपनी दूकान में

जा बच्चा चैन उठावो तुमने हमको वह रुपया दियाहै कि जिसके कारण भाई आपसमें लड़मरते हैं वनिया बहुत दुखित और धार मारमार रोने लगा पीपाजी को दयाआई दीक्षा देकर आवागमनके दुःखसे छुटादिया दुष्टों ने यह वृत्तान्त राजातक पहुँचाया ब्राह्मणों ने राजासे कहा कि यह बड़ी अनीति है राजा अज्ञान अपनीही नाईं समझकर बेविश्वास होगया पीपाजी ने सुनकर विचार किया कि गुरुसे विश्वास छुटे इसके दोनों लोक बिगड़जायँगे इसको दृढ़विश्वास करायदेना चाहिये इसहेतु राजा के घरगये खबर कराई राजाने कहलाभेजा कि पूजा करताहूं पीपाजीने कहा कि यह राजा बड़ा मूर्ख है चमारके घर जूती लेने वास्ते गयाहै नाम पूजाका लेता है राजा सुनकर तुरन्त नङ्गपायँ बाहर आयकर चरणों में पड़गया पीपाजीने राजाको चेतानेवास्ते कुछ और परीक्षा देना उचित समझा राजाकी एकरानी जो बन्ध्या घरमें थी उसको ले आनेकी आज्ञा की राजा अपने राज्यके शोचमें चला आंगनमें व्याघ्र बैठे देखा फिरा कि यही बहाना करूंगा पीछेभी व्याघ्र देखा तब तो करामात पीपाजी की समझा और रानी के पास गया देखा कि बगलमें एक लड़का तुरन्त का जन्माहै तब तो आधीन व विश्वासयुक्त होकर साष्टाङ्ग दण्डवत् किया और हाथ जोड़कर कांपताहुआ डरसे कहने लगा कि मैंने तुम्हारी महिमा नहीं जानी अब मेरा अपराध क्षमाकर कृपाकरो पीपाजीने उसीलड़के के स्वरूपसे प्रकट होकर कहा कि ऐ मूर्ख उसदिनके विश्वास और प्रेमको स्मरणकर कि जिस दिन चेलाहुआ उचित तो यह था कि दिन दिन भगवत् और गुरुमें प्रीति अधिक होती यह नहीं कि विमुखहोकर नरक में जाना अबसे ज्ञानकर कि दोनोंलोक सहजमें प्राप्तहों इसप्रकार शिक्षा देकर अपने स्थानपर आये। एक कोई विमुख ऊपरसे साधु भेष बनाकर पीपाजी से एक रातके वास्ते सीता को लिया और सारी रात भागा और सीताकोभी भगाया इसविचारसे कि दूर निकलजावें कि सीता फेर न जाय जहां प्रभातहुआ तहांसे सीता चलनेसे रुकिगईं कि स्वामीकी आज्ञा एक रातकी है तब सवारी ढूँढ़ने गांवमें गया गांवकी स्त्रियों को सीताका स्वरूप देखा तब तो ज्ञानहुआ सीताजी के चरणों में पड़ा और चेला होगया पीपाजीको इसीप्रकार एकबेर चार विषयीभी साधु बनिके आये सीताजीको मांगा जब शृंगारकरके सीता कोठरी में जाबैठी वो

भी चारोंगये तो देखा कि एक बाघिन मारने व फाड़नेवाली बैठी है तब क्रोध व भयसे भरे पीपाजी के पास आये व कहनेलगे कि अच्छे साधुहौ बाघिन बैठाय दी है पीपाजी ने कहा वह सीताहै जैसी तुम्हारी रुचि की वृत्तिहै वैसी दिखाई देती है जो शुद्धचित्तसे जाओगे तो सीताके दर्शन होंगे पीछे सीताके दर्शन हुये वह सब भी चेले होकर भगवद्भक्ति करने लगे भगवत्को प्राप्तहुये। एक गूजरी से दही बहुत दिनतक साधों की सेवाके निमित्त मँगाया व उसको मोलके रुपये बहुत दिये। एकब्राह्मण दुर्गा उपासक के घर पीपाजीने भगवत् भोग लगाकर महाप्रसाद भोजन किया तो उसकोभी भोजन कराया उस प्रभावसे उसको दुर्गाके दर्शनहुये भगवद्भक्त होगया व भगवत्मूर्त्तिकी सेवा आराधन करनेलगा। एक तेलिन सुन्दरी तेल लो तेल लो कहती फिरतीथी पीपाजी ने कहा कि इस मुखसे रामराम कहनेसे बड़ी शोभा होती तेलिन क्रोधकरके बोली कि जब कोई मरजाता है तब रामनाम कहा करते हैं वह जब अपनेघर पहुँची तो खसम को मरा हुआ देखा आधीन होकर पीपाजीके चरणोंमें पड़ी और सब लड़के बाले समेत रामनाम कहनेका क़रार किया तब पीपाजी ने उस मुरदेको जिलादिया। साधुसेवा के निमित्त एक भैंस कहीं से आयगई उस को चोर ले चले पीपा जी भैंस के बच्चे को लेकर पीछे पीछे यह पुकारते चले कि भैंस बिना बच्चेकी दूध न देगी इसको भी लेते जाओ चोर आधीन हुये भैंस को स्थान में बांधगये। कहीं से एक गाड़ी गेहूं और कुछ रुपया लातेथे बटपारों ने वह गाड़ी छीनली पीपाजी वह रुपया भी देनेलगे कि बिना रुपये के घी चीनी इत्यादि सामा रसोईकी न होसकैगी बटपारे भी सब आधीन हुये व गाड़ी आप पहुँचाय गये। एक महाजन का बहुत रुपया साधु सेवा के खरचका पीपाजी पर क़रज़ होगया नित तगादा करता था व पीपाजी आज कल किया करते एक दिन बहुत कड़ाई की पीपाजी ने कहा कि हम कुछ नहीं धराते हैं उसने हाकिमके यहां फ़रयाद की जब हिसाब की बही दिखानेलगा तो सब बही कोरी देखी लज्जितहुआ हाकिमने दण्ड देने को चाहा पीपाजी छोड़ायलाये चरणों में पड़ा रोनेलगा तब बही ज्योंकी त्यों होगई और रुपयाभी उसका देदिया। भगवत् ने देखा कि पीपाजी कङ्गाल होगये रुपया और अनाज बहुत भेजवाय दिया पीपा

जीने वह घर और सब असबाब पुण्य करदिया। एक किसी मनुष्य से गोहत्या होगई उसके जाति भाइयोंने पांतिसे निकाल दिया पीपाजी ने रामनाम उसके मुखसे कहलाया और भगवत् प्रसाद भोजन कराकर भगवद्भक्त करदिया उसकी जातिने ज्योंका त्यों अलग रक्खा तब पीपाजी ने सब वेद व शास्त्रोंके सिद्धान्तसे नामकी महिमाप्रकट दिखाकर कहा कि वह नाम एकबेर मुखसे निकलै तो करोड़ों जन्मके महा पातक दूर होजाते हैं तो उस नाम के सैकरों हज़ारों बेर के लेने से एक गोहत्या कहां बाकी रही सबने निश्चय किया उसको जातिमें लेलिया। राजा सूरसेन को एक बेर पीपाजीके दर्शन की चाहहुई उसके मनकी बूझके पीपाजी आपगये दर्शन दिये। एक साधुको रुपयाका प्रयोजनलगा उसीजगह इतना रुपया पीपाजी ने दिया कि और बच रहा। एकबेर श्रीरंगजी के मिलनेको गये रंगजी पूजा करतेथे फूलों की माला मानसमें पहिरावते मुकुटमें अटकजाय बनै नहीं तिसको पीपाजीने कहदिया कि कैसे पूजा करतेहो कि माला पहिनाते नहीं बनती श्रीरङ्गजी सुनकर दौड़आये परस्पर मिले एक ब्राह्मणने लड़की ब्याहनेवास्तेजांचा पीपाजीने उसको राजाके पास अपना गुरू बतलाके द्रव्य दिलवाया। एकादशी के दिन जागरण होताथा पीपाजी तुरन्त उठकर अपना हाथ मलनेलगे राजाने कारण पूंछा तो कहा कि द्वारकामें भगवत् चँदुये को आग लगगई थी उसको बुझायाहै राजाने सांड़नी लगाकर समाचार मँगाया तो सत्य ठहरा और यह भी मालूमहुआ कि पीपाजी हर एकादशीको जागरणमें वहां आते हैं। एकदिन पीपाजी नदी पर स्नान करनेगये थे एक तेलीके लड़केसे बैल लेकर एक ब्राह्मणको देदिया जब तेलीने पीपाजीसे अपना दुःख सुनाया तो बैल अपने घर पर बँधापाया। एकबेर अकालमें अन्नाज व कपड़ा लोगोंको इतनादिया कि अकालथाही नहीं सबका दुःख निवारण किया। एकबेर बड़ीसम्पत्ति कहीं से हाथलगी दो चार दिनमें खरच करदिया ऐसे चरित्र पीपाजी के अनेकहैं कि जाननेमें नहीं आते सो भगवत् और भक्तोंमें क्या भेद है कि ऐसीही महिमा भगवत् की है॥

कथा प्रयागदासकी॥

प्रयागदासजी अपने गुरु अग्रदासजी की कृपासे ऐसे परमभक्तहुये

कि मन वच क्रम से एक रघुनन्दनस्वामी के चरणकमलोंमें प्रेमथा और भगवद्भक्तों में ऐसी प्रीतिथी कि भगवत्रूप जानते थे मौजे कियारे में भगवत् मन्दिर के कलश चढ़ाने का उत्साह था और मौजे आड़े व वलियेमें भगवत् मन्दिरके ध्वजा चढ़ानेको दोनों स्थान से साधुबुलाने को आये प्रयागदासजी ने विचारा कि एक जगह जायँ एक जगह नहीं तो साधु उदासहोंगे इसहेतु दोनों जगह दो स्वरूप बनाकर गये और सत्संग इत्यादि का आनन्द लिया और अपने हाथसे एक जगह ध्वजा और दूसरी जगह कलश चढ़ाया। रास होताथा भगवत् के स्वरूपकी माधुरी देखकर प्रेममें मग्न होगये और प्रेमके तरंग और गीतमें प्राण भगवत् पर निछावर करके परमपदको गये॥

कथा भगवान् की॥

भगवान् नाम करके भगवद्भक्त सोनेपत ग्राममें हुये जहां कहीं धर्म विमुखिन को सुनते तो भांति भांति के उपदेश करते और भागवत धर्म पर दृढ़ करदेते सो पड़रीनामे गांवमें योगियों की जमातरहती थी उन को अपनी सिद्धताकी परीक्षा दिखलाकर भगवद्भक्त करदिया बादशाह ने करामात समझने वास्ते विष पिलवादिया भगवत् कृपासे कुछ न हुआ लज्जित होरहा दासभावमें भगवान् की बड़ी प्रीतिथी॥

कथा रामराय की॥

रामरायजी परम भक्तरूप सारस्वत ब्राह्मणथे ज्ञान व वैराग्य व योग के बड़े ज्ञाताथे काम क्रोध लोभ मोहके त्यागी थे और साधु सेवा में ऐसी प्रीतिथी कि साधुके दर्शनसे कमलके भांति प्रफुल्लित होजाते थे एक वेर साधु समाजथा वहां एक दुष्ट रामरायजी की निन्दा करनेलगा भगवत्को उसका दण्ड उचित मालूमहुआ सो सभामें जहां उसके भाई बन्धु सब बैठेथे उसकी पगड़ी उसके शिरसे ऐसी उछलके गिरपड़ीकि जैसे कोई धौलमारे लज्जित होकर सभासे निकलगया॥

कथा श्रीरंगजीकी॥

श्रीरंगजी देवसागांव जयपुरके राज्यमें है तहां रहतेथे सरावगी के बेटेथे उनका सेवक मरकर यमदूतहुआ और उसी गांवमें एक बनजारा टिकाथा उसके प्राणको निकालनेको आया आगेकी प्रीति वश रंगजी से मिला और वृत्तान्त कहा श्रीरंगको चाह इसलीलाके देखने कीहुई

जहां बनजारा टिकाथा तहांगये देखा कि उस यमदूतने एकबैलको भ-
का दिया और बनजारा पकड़नेको उठा वह दूत बैलके शिरपर जा
ठा और सींगसे बनजारे का पेट फाड़दिया बड़ीपीड़ा से मारडाला
ारंग देखकर शंसित हुये और उस दूतसे उपायपूछा कि जिसमें यम-
तों के हाथों से बचैं उसने कहा कि विना भगवद्भक्ति सबको ऐसेही
ड़ा होती है और जो भगवद्भक्त हैं उनकेपास स्वप्नमेंभी यमदूत नहीं
ाते श्रीरंगजी ने सरावगी मत असार समझकर उसी घड़ी भगव-
क्ति अंगीकार करके दूतके बतलानेसे श्रीअनन्तानन्द जो रामानन्द
ी के चेले थे तिनके चेले होगये थोड़ेही कालमें भगवत् स्वरूप की
ाप्ति होगई और जन्म मरणके भयसे छूटगये एकप्रेत नित श्रीरंगजी
बेटेको दिखाई देताथा इसकारण वह दुबला होगया जब यहवृत्तांत
ुना तब एकदिन लड़के की खाटपर सोरहे जब प्रेत आया तब रगेद
ठया प्रेतभागा और कहा कि मैं इसी गाँवका फलाना सुनारहूं परस्त्री
ामन व चोरी झुठाई कर्म्म करिके प्रेत होगयाहूं सो अपने उद्धारके
ेतु तुम्हारा द्वारा सेवताहूं श्रीरंगको दयाआई भगवत् का चरणामृत
सको दिया कि उसके प्रभाव करके देवताका स्वरूप पायकर संगति
ा फल प्राप्त हुआ॥ कथा हठी नारायण की॥

हठीनारायण कृष्णदासजी के चेले रहनेवाले पंजाबदेशके परमभक्त
भगवत्के हुये सर्वकाल भजनमें व संतोषयुक्त रहते थे भांग पीने की
रुचिथी बादशाहने धतूरा मिलाकर पिलाया कुछ न हुआ तब मत के
द्वेषसे विष पिलाया व ऊपरसे ऐसी वस्तु खिलाई पिलाई कि जिसमें
विषभी दूर और मरजाय परंतु कुछ काम न किया लज्जित होकर चरणों
में गिरा अपराध क्षमा कराया जानेरहो कोई मनुष्य इस कथाको भांग
पीनेके लिये प्रमाण न समझले भांग त्याज्यहै मदिरा में शास्त्रने गिना
है वरु भांगमें एकअवगुण मदिरासे भी अधिकहै कि बुद्धिको हरिलेती
है किसी बड़ेके पीनेसे प्रमाण नहीं होसक्ताहै मूर्ख महादेवजीका दृष्टांत
दिया करते हैं तो शिवजी हलाहलविष पान करगये तो विषभी कोई
पीवै व शङ्करस्वामी भट्टीमें से औटाहुआ कांच पीगये और कोईभी तो
औटाकांच उठाकर थोड़ाभी तो पिये सो बड़ेके आचरण से निषेध है
सो ग्राह्य नहीं होसक्ता॥

चौ० समरथ कहँ नहिं दोष गुसाईं। रवि पावक सुरसरि की नाईं॥

और कई पुराणों के वचनयुक्तहैं कि जो कोई किसी बड़े महात्माओं के दृष्टांतसे वस्तु निषेधको विधि समझते हैं व त्याज्यको ग्राह्य करते हैं वे नरकगामी होते हैं हठीनारायणने सिद्ध होने पीछे भांग पिया और सिद्ध महात्मा विधि निषेधके बंधनसे बाहरहैं भगवद्रूप होजाते हैं तात्पर्य्य यह कि भांग पीना निषेध है॥

कथा रैदासकी॥

रैदासजी परमभक्त भगवत्के हुये जिनकी वाणी व काव्य हृदय के अन्धकार और सन्देहके दूरकरनेको सूर्यकी भांतिहै शास्त्र व वेदके अनुसार कर्म करने में हंसके सदृशहुये अर्थात् निषेधको छोड़कर सारको ग्रहणकिया इसी शरीरमें भगवद्धाम को पहुँचे और जिनके चरणों को बड़े २ वर्ण आश्रमवालों ने दण्डवत् किया पहिले जन्म में ब्रह्मचारी रामानन्दजी के चेले थे भिक्षा करके गुरुसेवा व भगवत्प्रसाद किया करते थे एकदिन पानी बरसताथा सो एक बनिया कि जो बहुत दिन से कहताथा परन्तु उसकी भिक्षा कबहीं न लेतेथे उसदिन उसीके यहां से रसोई की सामग्री लेआये जब रामानन्द जी भोग लगाने लगे तो भगवत् ध्यानमें न आये तब रामानन्दजी ने ब्रह्मचारी से बूझ के उस बनिये का वृत्तान्त बूझा विचारा तो उसका लेन देन चमारों के साथ मालूम हुआ रामानन्दजी ने ब्रह्मचारीको शापदिया कि तुझको चमार का जन्म मिलै तो ब्रह्मचारी ने ब्राह्मण का तन छोड़कर चमार के घर जन्मलिया परन्तु भगवद्भक्ति व गुरूके प्रतापसे पहिले जन्मका स्मरण बना रहा जन्मे तबहीं से माताका दूध पीना छोड़दिया कि बिना गुरुमन्त्रके उपदेश हुये खाना पीना निषेध है रामानन्दजी को भगवत् ने आकाशवाणी से कहा कि ब्रह्मचारी को तुमने घोरदण्ड दिया उसपर दया उचित है कि रामानन्दजी उस आज्ञासे चमारके घर गये मन्त्र उपदेश करके रैदास नाम धरा और दूध पीनेकी आज्ञादी जब रैदास जी कुछ सयानेहुये तो भगवद्भक्तों की सेवा करनेलगे जो कुछ घर से मिलता भगवद्भक्तों के आगे धरदेते बापने उनको रिस करिके घर के पिछवाड़े एकजगह रहनेके वास्ते देदी धन बहुतथा परन्तु एक दमड़ी भी न दी रैदासजी स्त्री समेत आनन्दसे रहने लगे जूती बनाकर दिन

खेवते जो कोई वैष्णव व साधु देखते तो विनादाम जोड़ी पहिनाया करते फिर एक छप्पर डालदिया और उसमें भगवत्मूर्त्ति विराजमान करके सेवा करने लगे और आप उस छप्पर के आंगन और चौरे में विना छांया पड़े रहते यद्यपि ऊपर दुःख दरिद्रता इत्यादि का था परन्तु मन भगवत् के ध्यान में आनन्द रहता था भगवत् ने वह कङ्गाली भी दूर करना उचित समझकर आप साधुके रूपसे रैदासके घरआये रैदास ने बड़ी सेवा करके भोजन कराया और भगवद्रूप वह जाना उस साधु ने प्रसन्न होकर एक पारसपाषाण रैदासजी को दिया और गुण वर्णन करके कहा कि वहुतयत्न से रखना रैदासजीने कहा कि मेरे किसी की कामना नहीं मेरा धन सम्पत्ति रामनाम है उससाधु ने जाना कि प्रभाव इस पारसका रैदासने नहीं जाना इसहेतु रांपीको लगाकर सोनेका कर दिया रैदासजी ने मनमें समझा कि रांपी भी हाथसे गई वहुत कहा तब रैदासजी ने कहा कि छप्पर में रखदेव सो साधु छप्पर में उसपारस को रखकर चलेगये तेरहमहीने पीछे फिर आये रैदासजी का वृत्तान्त वैसा ही देखा पूछा कि पारस क्या हुआ रैदासजी ने कहा कि जहां आप रख गये तहांहीं होगा मुझको उसके हाथलगाने से भय होताहै भगवत् उस को लेकर चलेगये एकदिन सेवा पूजाको पिटारी से पांचमुहर निकलीं रैदासजी को भगवत् सेवासे भी भय होनेलगा भगवत् ने स्वप्नमें आज्ञा की कि यद्यपि तुम को कुछ लोभ नहीं है परन्तु अब जो कुछ हम देवें उसको अङ्गीकारकरो तब रैदासजी ने अङ्गीकार किया और एक धर्म-शाला पक्का वनवाकर भगवद्भक्तों को उसमें वसाया और फिर एक भग-वत् मन्दिर तय्यार करके भांति भांति के चँदोये और झालर व सुन-हरी बन्दनवार व दीवारगीरी व छतबन्द इत्यादिसे ऐसा सजा कि जो दर्शन करनेवाले आतेथे मन्दिर की शोभा व भगवत्मूर्त्ति की छवि दे-खकर मोहिजाते थे पूजा प्रतिष्ठा सब ब्राह्मणों के हाथसे होतीथी तिस के पीछे जहां रैदासजी आपरहते थे तहां एक स्थान दोमहला बनवाया और बड़ी प्रीतिसे भगवत् आराधन आरम्भ किया वहुत से ब्राह्मणों ने शत्रुता के कारणसे राजाके पास कठोर वचन मुखसे निकालकर फ़र-याद की कि चमार जातिको भगवत्मूर्त्ति के पूजनका अधिकार किसी शास्त्रमें नहीं लिखा रैदास निश्शंक भगवत्सेवा मूर्त्ति विराजमान करके

शोच न था और भगवत् ने दोनोंबातें उनकी देहान्त पर्य्यंत निवाहीं पहिले जगन्नाथस्वामीके चरणोंमें प्रीतिरही अन्तमें रघुनन्दनस्वामीके चरणों में प्रीतिहोगई जगन्नाथपुरी में रहाकरते थे रघुनन्दनस्वामी के स्नेहसे दोनोंलोक की स्पृहा दूरकरदी थी मनमें रूप और जिह्वापर रघुनन्दनस्वामी व जानकी महारानीका नाम रहता था॥

कथा राजाखेमाल की॥

राजाखेमाल जातिके राजपूत राठौर ऐसे परमभक्तहुये कि उनके कुलमें भक्ति अचलहोगई रामराय बेटे कुँवरकिशोर पोते कि उनकाव- र्णन इसभक्तमालमें अलगहोआया परमभक्तहुये कि राजासेभीअधिक होगये राजाको भगवद्भक्तों में ऐसी प्रीतिथी कि जिसप्रकार चन्द्रमाको देखकर समुद्र तरंग लेता है इसीप्रकार भगवद्भक्त को देखकर आनन्द होते थे भगवद्भजन में अत्यन्त प्रेमथा गंगाजल के सदृश मनविमल मन वचन कर्म्म से श्रीरघुनन्दनस्वामी के दास थे सिवाय उस चरण- कमल के दूसरा भरोसा और आशा न थी॥

कथा केशव की॥

केशवजी लटेरा पदकरके विख्यात थे लटेरा दुर्बलको कहतेहैं काम क्रोधादिक में दुर्बलथे परन्तु भक्तिभाव में पुष्ट और मोटेथे सुरसुरानन्द जीकी संप्रदायमें परमभक्तहुये जिह्वापर नाम और मनमें भगवच्चरित्र रहताथा जैसा प्रेमदास्यभाव भगवत्में किशोरजी का था ऐसाही उनके पुत्रको हुआ क्यों न होय कि जैसा वृक्षबोया था वैसाही फललगा भग- वच्चरित्रों के कीर्त्तन में एकहीथे तैसेहीउदारता और दया में॥

कथा सोती की॥

सोतीजी हरिभक्तोंकी सभामें वन्दनीय व श्लाघ्य विख्यात सूर्य्यके सदृशहुये भजनका प्रताप ऐसाथा कि भक्ति और धर्म्म के ध्वजा थे श्री सीतापति अवधविहारी के चरित्रों में अनुक्षण मग्न रहाकरते और भगवत् के दास्यभावमें मनको ऐसा दृढ़किया था कि तनक दूसरी ओर चित्त की वृत्ति नहीं जातीथी और नरहरजी उनके गुरू के प्रताप से ऐसीही भक्ति उनके बेटे व पोते सब को भी हुई॥

उन्नीसवीं निष्ठा ॥

जिसमें महिमा वात्सल्य व नवभक्त इस निष्ठा के उपासकों की कथा वर्णन है ॥

श्रीकृष्णस्वामी के चरणकमलों की इन्द्रधनुष रेखाको दण्डवत्कर-के हरि अवतार को प्रणाम करता हूं कि गजके वास्ते वह रूप प्रकट करके आये और उसको ग्राहसे छुड़ाया वात्सल्यनिष्ठा वहहै कि अपने बलसे भगवत् को खींचके उपासक के मन में स्थिर करदेतीहै और ऐसा कदापि नहीं होता कि इस निष्ठा के अवलम्ब से उपासना करने वाले को भगवत् प्राप्त न होयँ कारण यह है कि भगवत्का प्राप्तहोना मनके प्रेमपर निश्चयहै सो इस निष्ठा से शीघ्र व विनाश्रम प्रीति उत्पन्न हो-जातीहै कि और किसी निष्ठासे ऐसी शीघ्र नहीं होती प्रकट है कि प्रीति सांची केवल पिताको अपने पुत्रोंके हेतु होती है और बेटा कैसाही रूप व बुद्धि हीनहोय परन्तु पिताके कलेजे का टुकड़ा व आंखोंका प्रकाशहै जो वहही प्रीति भगवत् में लगाई जावैगी तो क्यों नहीं शीघ्रतर भग-वत् प्राप्त होगा सिवाय इस के बालकों के चरित्र ऐसे मनोहर हैं कि बरबस चित्त में बसिजाते हैं और बहुतेरों ने देखा होगा कि किसीका लड़का लीला और तोतलीबातें करता है और सुन्दरभी है तो राही बटोही भी राहचलते उसकी लीला देखकर प्रसन्नहोते हैं और कहलाते हैं और वह लड़का मनमें समाजाता है तो वह पूर्णब्रह्म सच्चिदानन्द घन कि जिसपर सब सुन्दरताई व लीला और दूसरे चरित्र बालकों के समाप्तहैं इस निष्ठाके सहारे से आराधन कियाजावै तो क्यों नहीं शीघ्र मनमें समायगा सिवाय इसके प्रीति सबवस्तुकी किसी न किसी भयसे होती है और जब भय नहीं रहता तो प्रीतिभी कमहोजाती है और बेटेकी प्रीति आपसे आप मनके तरंगसे होती है इसहेतु उसको दृढ़ता है इस रूपसे निश्चय होगया कि जो इस निष्ठाके अवलम्बसे मन भग-वत् में लगेगा तो कबहीं प्रीतिकी घटती न होगी और दिन दिन वह प्रीति बढ़कर भगवत् परायण करदेवैगी जहां रसभेद का वादविवाद लिखा है तहां नवरसके निश्चय करनेवालों ने वात्सल्यनिष्ठा को एक अंग करुणारस लिखा है और भगवत् उपासकों ने जो उनका उत्तर दिया और निश्चय रसोंकी करी तो करुणाको एक अंग वात्सल्य का ठहरायके दृढ़करदिया सो दोनोंकेवचनपर जो दृष्टिकीजाती है तो समझ

भगवत् उपासकों की ठीक और युक्त है किसहेतु कि रस उसको कहते हैं कि जिसकरके अधिक स्वादु विशेष करके उस वस्तुका कि जिसको रस विख्यात कियागया है और किसी वस्तुमें न होंय जैसे वीररस उस को कहैंगे कि सब पदवी वीरता व शूरताकी जिसपर समाप्तहोंगी इसी प्रकार यहां दयाके विचारमें मुख्यरस उसको कहना चाहिये कि जिस पर दया समाप्त हो सो विचार करके देखा जाता है तो दया वात्सल्य निष्ठा पर समाप्त है काहे से कि करुणा उसको कहते हैं कि दूसरे का दुःख देखके मन कोमल होजाय और मन से व वचन से व कर्म्म से उसके वास्ते उपाय करिजावे और वात्सल्य वह है कि प्रीति की अति झोंकसे धैर्य्य छोड़कर स्वाभाविक दयाहोवे और मन वचन कर्म्म एक वेर अन्तष्करण की झोंक और खींच से सब एक ओर एक वृत्ति हो जावै तो विचार करना चाहिये कि समाप्तहोना दयाका वात्सल्यपर हुआ कि करुणारसपर और दोनों में करुणाकी अधिक प्रतिष्ठा हुई कि वात्सल्य भी अब भलीप्रकार समझमें आनेके वास्ते एक दृष्टान्त स्मरण हो आया सो लिखताहूं एक संकीर्ण गली में एक ओर से गायें आती हैं और दूसरी ओरसे एक मनुष्य स्नानकरके आता है और ऐसाशुद्ध व पवित्र है कि किसी को स्पर्श नहीं करता संयोगवश किसी का एक लड़का दो तीन वर्ष का खेलरहा है जब वह गायें उस लड़के के निकट आईं तो वह मनुष्य बड़ी दयासे पुकारा कि कोई जल्दी से आकर इस लड़के को उठा लेवै और आप अशुद्ध होजाने के भय से न उठाया थोड़ी दूर चलाथा कि उसी मनुष्य का बेटा भी उसी अवस्था का राहमें खेलरहाथा और मिट्टी व कीचमें शरीर उसका अशुद्ध होरहा था वह गायें इस लड़के के भी निकट आनिपहुँचीं वह मनुष्य धैर्य छोड़कर दौड़ा और कुछ विचार अपनी शुद्धता और लड़केकी अशुद्धता का न किया तुरन्त उस लड़केको उठाकर अपने गलेसे लगालिया इस दृष्टान्तसे विचार वात्सल्य और करुणारस में करलेना चाहिये सो मुख्यरस वात्सल्य है और करुणा उसका एक अंगहै यह उपासना श्रीदशरथनन्दन अवधविहारी और श्रीनन्दनन्दन वृन्दावन चन्द की प्रवर्त्तमान है और ऐसा अलौकिक भाव इस उपासनावालों का है कि वर्णन उसका नहीं होसक्ता भगवत् को अपनापुत्र मानते हैं और उसी

को पूर्णब्रह्म सच्चिदानन्दघन मुकुन्द जानते हैं कुछकरीति इस उपासना की विष्णुस्वामी व बल्लभाचार्य्य की कथा में लिखीगई और कोई कोई सामग्री आगे लिखीजायगी महिमा इस उपासना व उपासकोंकी निगम व आगम व ब्रह्मा व शिव भी नहीं कहिसक्ते इस मतिमंद पापपुंज को क्या सामर्थ्य कि जीभ हिलायसके और सचहै कि कोई किसप्रकार कहिसकै कि जो पूर्णब्रह्म अनेक जन्मतक योगियों के हज़ारों साधन करनेपरभी मनमें नहींआता सो उपासकों के वास्ते नररूपहुआ और परमअनूप बालचरित्र दिखाये और अब दिखाता है और आगे दिखावैगा आप उसी पूर्णब्रह्म को यह निष्ठा ऐसी प्यारीहै कि अपने भक्तों के चित्तको दूसरी निष्ठाओं से फेरकर इस निष्ठाकी ओर प्रीतियुक्त लगादेताहै कि इसका निश्चय भागवत व रामायण से अच्छाहोता है अर्थात् नन्दरानी व देवकी व कौशल्या व वसुदेव को कई बेर अपनी ईश्वरता भगवत्ने दिखाई जब उनके चित्तकी वृत्ति उसओर लगी तो आप भगवत् ने उस ओर से उनके मनको फेरकर बालचरित्रों की ओर लगादिया और परमआनन्द दिया जो भगवत् को यह निष्ठा प्यारी न होती तो क्यों ऐसाकरते और अब भी ऐसे भावको पक्काकरदेने के निमित्त अपने भक्तों को इसप्रकार के चरित्र दिखलादेते हैं कि देखने से कथा विट्ठलनाथ व कृष्णदास व कर्माबाई इत्यादिक से मालूम होता है और थोड़ेदिनों की बातहै कि एक गोसाईं बल्लभकुल के कि नाम उनका स्मरणनहींहै परमभक्त वात्सल्यरसके उपासकहुये एकबेर मनिहारी उनके घरकी स्त्रियोंको चूड़ीपहिनानेके निमित्त उनके घरआई जब गोसाईंजी दामदेनेलगे तो मनिहारी ने कहा कि मैंने सातलड़की व बहूइत्यादि स्त्रियों को चूड़ी पहिनाई हैं गोसाईंजी ने उत्तरदिया कि मेरे घर में छः स्त्रियां बेटी और बहू समेत हैं इस वाद विवाद में मनिहारी बिना दाम लिये चलीगई रातको राधिका महारानी ने स्वप्नमें गोसाईंजीको कहला भेजा कि क्या मैं तुम्हारी बहू नहीं जो मेरी चूड़ियों के दाम मनिहारी को नहीं देते हो अब देखना चाहिये कि भगवत् कैसे मनोहर चरित्र करके अपने भक्तों के भाव को पक्का करदेते हैं सो यह वात्सल्यनिष्ठा भगवत् के शीघ्र मिलने के हेतु सब निष्ठाओं का तत्त्व व अभिप्राय व परम सार है॥ ग्रन्थ के आरम्भ में लिखा गया

रस चार सामग्री अर्थात् विभाव अनुभाव सात्विक व्यभिचारी से प्र-
कट होते हैं सो इस वात्सल्य रस में पहिली सामग्री की सामग्रियों में
पूर्णब्रह्म परमात्मा अच्युत अनन्त सच्चिदानन्दघन श्रीनन्दनन्दन म-
हाराज के रघुनन्दन महाराज तीनवर्ष से सात वर्ष तक अवस्था वाले
सुकुमारअङ्ग तुतले वचन श्यामसुन्दर स्वरूप शिरपर छोटासा मुकुट
शरीरमें महीन जरतारीका कुरता गोटेपट्ठे से भराहुआ कानों में झूमका
और छोटे छोटे कुण्डल व गोरोचन का तिलक भालपर नाकमें बुलाक
कपोलपर डिठौना आंखें ढीठ और चञ्चल गले में कठुला व यन्त्र
व बघनखा हाथों में कड़े व पहुँची चरणकमलों में घुँघुरू यह विषया-
लम्बन है और नन्द यशोदा व कौशल्या महारानी इत्यादि आश्रया-
लम्बन और अत्यन्त चञ्चलता व चपलता की कबहीं माताकी गोद
में हैं और कबहीं खिलौनों की ओर चित्त कबहीं पखेरुओं पर दृष्टि
कबहीं भोजनपर सुरत और कबहीं किसी वस्तु के लेनेपर हठ कबहीं
तोतली वाणी से कुछ पूछना और कबहीं पलँगको पकड़कर खड़ाहोना
कबहीं माताकी उंगली पकड़कर चलना सीखना कबहीं नाचना कबहीं
आंगन में अपने सखाओं और भाइयों के साथ खेलना ऐसे २ अनेक
चरित्र ॥ स्नानकराना शृङ्गारकरना व बालचरित्रके खिलौना इत्यादि
सजिरखना सबप्रकारके पदार्थ खिलाने के योग्य भोजन कराना प्यार
करना लाड़ लड़ाना गोदमें लेकर रंग रंग की सैर कराना आशीर्व्वाद
देना और इसीप्रकार के अनेकसाज व सामाकी चिन्तन सब सामग्रियां
सामग्री पहिली अर्थात् विभाव में कि और सामग्री दूसरी अर्थात् अ-
नुभाव की है ॥ सामा तीसरी अर्थात् आठप्रकार के सात्विक सब इस
रस में प्रवर्त्तमान होते हैं व तेंतीसों व्यभिचारी अर्थात् सामग्री चौथी
में से दश दश इस रसमें प्राप्तहोते हैं एक मनस्ताप दूसरी दुर्व्बलता
तीसरी विवरण चौथी मन उचटजाना संसार के सब कामों से पांचवीं
अदृढ़ता छठवीं जड़ता सातवीं दुःखी होजाना आठवीं उन्मत्तता नवीं
मूर्च्छा दशवीं मृत्यु और इसरसका स्थायीभाव वहहै कि चिन्ताकी वृत्ति
दोनोंलोककी चिन्ताको छोड़कर एकाग्र होकर दिन रात अचल भगवत्
के स्वरूप और प्रेममें दृढ़होजाय और किसीप्रकार किसीओर न जाय ॥
हे श्रीनन्दनन्दन हे दीनवत्सल हे प्रणतार्त्तिभंजन हे पतितपावन हे दी-

नवन्धु हे कृपासिन्धु महाराज आज तक जो निन्दा इस मनकी विनय करके तो व्यर्थ ज़ानिपरता है किसवास्ते कि उसी निन्दासे कवहीं कुछ प्राप्त न हुआ और न इस मन अभागे ने कुछ सुना और न कुछमाना जो उस कृपा और प्रसन्नताका कि जिसके प्रभावकरके अजामिल और गज व गणिका व पशु पक्षी इत्यादि विना कुछ साधन व भजन एक क्षणमें परमपदको पहुँचकर जन्ममरण के वंदीखाने से छूटगये आश्रित होकर आपके द्वारपर विनय व प्रार्थना किया करता तो आपके विरद व दया से कव मैं ऐसाही संसारी रहता और यह मन अभागा मेरे वशीभूत क्यों न होजाता सो अब उसी कृपा व दयाकी आशाकरके विनय करताहूं कि जिस प्रकार से होनेसके ऐसी कृपादृष्टि होय कि रूप अनूप आपका दिन रात अचल मेरीआंखों में वसारहै ॥

क० कवहूं शशि मांगत आरि करैं कवहूं प्रतिबिम्ब निहारिडरैं।
कवहूं करताल बजायके नाचत मातु सबै मन मोद भरैं ॥
कवहूं रिस मारि कहैं हठसों पुनि लेत वही जेहि लागिअरैं।
अवधेशके वालक चारिसदा तुलसी मन मंदिरमें विहरैं १ ॥
तनकी द्युति श्याम सरोरुह लोचन कञ्जकी कोमलताई हरैं।
अति सोहत धूसर धूरि भरे छवि भूरि अनङ्गकी दूरि धरैं ॥
दमकैं दतियां द्युतिदामिनिज्यों किलकैं कल वालविनोदकरैं।
अवधेशके वालक चारिसदा तुलसी मनमन्दिरमें विहरैं २ ॥
वरदंत की पङ्गति कुंदकली अधराधर पल्लव खोलन की।
चपलाचमकै घनविज्जुजगै छवि मोतिनमाल अमोलन की॥
घुंघुरारि लटैं लटकैं मुख ऊपर कुण्डल लोल कपोलनकी।
न्योछावर प्राणकरैं तुलसी बलिजाउँलला इनवोलनकी ३ ॥
दोहनीकीसमय वा मनमोहन ललाजूकी ललितलोनाई कविबरनैकहाकहैं।
कवहूं किलकिधाय नन्दके निकटआय करउचकाय मुखतोतरे बबाकहैं ॥
ताकेव्रजरानी महाकौतुक सिरानी दीठ बानीमृदुसुनत बलैयालेडँ माकहैं।
ओटह्वै गैयाकी ललैया बलगैयादैकै यशुमतिमैयासों कन्हैया जब ता कहैं ४ ॥

कथा कौशल्याजी की ॥

कौशल्या महारानी के भाग्य की वड़ाई और भक्तिभाव का वर्णन कौन करसक्ता है कि पूर्णब्रह्म सच्चिदानन्दघन जिसकी महिमा को वेद

व शास्त्र वर्णन करके पार नहीं पाते सो जिस कौशल्या के भक्तिके वश होकर परम मनोहररूप धारण करके प्रकटहुये और ऐसे चरित्र पवित्र दिखलाये कि जिनको सुनकर महा महापातकी भवसागर पार होते हैं महाराजाधिराज दशरथजी की कथामें वर्णन हुआ कि पहिले जन्म में दशरथजी स्वायंभुवमनु और कौशल्या महारानी शतरूपा रहे और उन को वरदान हुआ कि तुम्हारा पुत्र हूंगा उस समय शतरूपा ने यहभी मांगा कि हमको ज्ञान तुम्हारे स्वरूपका बनारहै भगवत् ने आज्ञाकी कि माताकाभाव और ज्ञान दोनों तुमको बनारहैगा सो वैसाही कौशल्या जीको दोनोंभाव बनेरहे इसहेतु वात्सल्य की उपासना का आद्याचार्य कौशल्याजी को समझना चाहिये॥ एकसमय कौशल्या महारानी भगवत् को पालने में सुलाकर आप कुलदेवता के पूजन करने को गईं व पूजा के समय भगवत् अर्थात् रामचन्द्र को देखा आश्चर्य मानकर वहांसे भगवत् के शयन के स्थान में आईं तो वहां सोता देखा फिर पूजाके घरमें गईं तो वहां भी भगवत्को देखा सो दो चार बेरके आने जाने में जो दोनों जगह भगवत् को देखा तो चिन्ता में होकर विचार करनेलगीं कि यह कौन कारण है भगवत् ने यह चिन्ता देखकर अपने स्वरूप और अपनी माया के दर्शन माता को कराये कि अगणित ब्रह्माण्ड हैं और अलग अलग प्रकारसे सब ब्रह्माण्डों की रचनाहै और सब में श्रीरघुनन्दन महाराज विराजमान हैं परन्तु भगवत् का रूप ब्रह्माण्डों की भांति अनेक प्रकार का नहीं सब जगह एकही प्रकार व बराबर है ब्रह्मा शिव सिद्ध देवता असुर इत्यादि स्तुति करते हैं और एक कोने में वह माया कि जो सब ब्राह्मण्डोंको बनाकर फिर नाश करदेती है डरसहित खड़ी है कौशल्याजी यह चरित्र देखकर डरीं और घबराय के चरण पकड़ लिया भगवत् ने हँसकर बोध किया और वचन हुआ कि अब मेरी माया तुमको कबहीं न सतावैगी इस चरित्र से भगवत् शिक्षाकरते हैं कि जिसको मेरा स्वरूप लाभ हुआ उसको मुझसे सिवाय और कौन पूजने के योग्य बाकी है काहे से कि जिस देवता में जो ईश्वरता है सो सब मेरी दीहुई है और वह देवता हमारेही सम्बन्ध से पूज्य है फिर तो कौशल्याजी इस प्रकार भगवत् स्वरूप के चिन्तवन और लाड़ लड़ाने में तत्परहुईं कि जिसका वर्णन नहीं होसक्ता सो

जब रघुनन्दन महाराज वनको चलेगये तो स्वरूप भगवत् का ऐसा सम्मुख कौशल्याजी के रहताथा कि कबहीं वनकाजाना मालूम न हुआ जब कोई स्मरण कराय देताथा तब वनकाजाना मालूम होताथा फिर एकक्षण के पीछे वही दशा होजाती थी जब रघुनन्दन महाराज लङ्का जीतकर आये और कौशल्या महारानी जैसे पहिले आरती भगवत्की किया करती थीं आरती करनेलगीं तो यह मालूम न हुआ कि यहसमय कौनसा है और यह शोचहुआ कि लड़के ने ऋषीश्वरों कासारूप क्यों बनाया है और मेरीप्यारी बहूका रूपभी वैसाही बनालिया दुःखितहुई और उसीघड़ी जानकी महारानी को अपने साथ उठालेगई और आभूषण इत्यादि से शृंगार कराया और जब भगवत् के राजसिंहासनपर बैठने की समाज व धूमधाम का आनन्द सारे संसार में हुआ तो कौशल्या महारानी को यह चिन्ताहुई कि राजतिलक के समय ऋषीश्वर व देवता व असुर इत्यादि सब आवैंगे और मेरा लड़का और बहू परम सुकुमार और कोमल और मनोहर हैं ऐसा नहो कि रूप अनूप देखकर किसीकी नज़र लगजावे सो सुमित्रा इत्यादि रानी तो मंगल व आरती इत्यादि की तैयारी में रहीं और कौशल्या महारानी को आरती के करने के समयतक तलाश व उपाय ऐसी ऐसी वस्तुकीरही कि जिसमें नज़र न लगै सो राजतिलक के समय आरती करनेको आरम्भकिया तो पहिले नजरके बचानेवास्ते स्याहीकी बिन्दी अपने लड़के व बहूके चेहरेपर लगाय ली तब आरतीकरी और रूपको देखकर परम आनन्द में मग्नहोगई उससमय के परम आनन्द का समा भक्तों के हृदय में बनाहै ॥

कथा श्रीनन्दबाबा व यशोदारानी की ॥

ये नवनन्दहैं—धरानन्द १ ध्रुवानन्द २ उपनन्द ३ अभयनन्द ४ सुनन्द ५ अभयानन्द ६ कर्मानन्द ७ धर्मानन्द ८ वल्लभानन्द ९ ॥ तिनमें धरानन्दजीके घर भगवत् का अवतारहुआ सो धरानन्दजी व यशोदारानी की यह कथा है यशोदा महारानी व बाबानन्दजी के भाव की महिमा कौन कहिसक्ताहै कौशल्या महारानी का भाव व इनका भाव एक है बार बराबर भी भेद नहीं जो कोई न्यून विशेष कहै तो कारण उपासना भावके भेदको समझना चाहिये लीलाचरित्रों का भेद अल-

वत्ताहै अर्थात् श्रीराम अवतारमें तो ऐसा चरित्र बहुत नहीं हुआ कि जिसको कौशल्याजी से छिपानेका प्रयोजनपड़े और श्रीकृष्ण अवतार में आरम्भहीसे सब चरित्र ऐसेहुये कि मातासे छिपाना अवश्यपड़े कारण इसप्रकारके चरित्रोंका प्रकाशित और सबको मालूमहै कि भगवत् का अवतार केवल जगत् उद्धारके हेतु होताहै सो ऐसे चरित्र मनोहर किये कि सबका मन भगवत् की ओर लगिजाय और उनचरित्रों की खबर यशोदामाता और नन्दबाबा को कबहीं नहीं हुई और जो कोई कारण संदेहका होगया तो यह समझा कि हमारा बालकभोला और सीधासादा है उसने यह काम कदापि नहीं किया होगा सो जब आप गोपिकाओं का माखन चुराते और वे सब मनमोहन के रूप अनूपके देखनेवास्ते उरहनेके बहाने यशोदा महारानी के पासआतीं और फरयाद करतीं तो यशोदामहारानी अपने पुत्र कौतुकी का अपराध कदापि न समझतीं वरु उनहीं को लजावतीं एकबेर रातको किसी कुंजमें आप और प्यारीजी विहार और रास विलास करते थे जब दो चार घड़ी रात शेषरही तो कौतुकी महाराज चुपके चुपके अपने पलँगपर आके सोरहे और जल्दी में पीताम्बर छूटगया नीलाम्बर बदलेमें लायेथे उसी को ओढ़े शयनमें थे प्रभातही यशोदाजी ने जगाया तो नीलाम्बर को देखकर यह जाना कि बलदेवजी का नीलाम्बर बदलगया और आपसके परस्पर हँसी खेलमें नखोंके चिह्न श्रीअंगपर झलक रहेथे तो उस को यह विचार किया कि काल्ह इसी वनमें यह लड़का गया था कि वन्दरों ने घेरलिया और उनके नखों का चिह्न शरीर पर है और रातके जगने से उनींदी आंखोंको यहजाना कि वन्दरों के नखोंके लगन से रातको नींदनहीं आई अति प्यार दुलारकरके छाती से लगाया और रोनेलगीं और समझाया कि अबसे ऐसे वनमें कदापि मतजाना और ब्राह्मणों को बुलाकर दान व निछावर दिया व यद्यपि घरमें हजारों दास दासीथे परंतु जो गऊ निज भगवत्के वास्ते नामकरके थीं उनकी सेवा और उनके दूधको गरम करना व जमाना और बिलोवन यशोदाजी निज अपने हाथ से किया करतीं थीं और जो माखन होताथा उसको अलगअलग कई पात्रोंमें ऐसीजगह रखतीं कि जहां आतेजाते भगवत् की दृष्टिपड़े अभिप्राय यहथा कि किसीप्रकार यह लड़का मुझसे मांगकर

अथवा छिपाके कुछ माखन खावे कि शरीरसे पुष्टहो ब्राह्मण फ़क़ीर कुछ जाननेवाला जो कहीं सुनतीं तो उसको बड़े निहोरे और चाहसेबुलातीं और धन द्रव्य उसको मनमानी देकर इसबातका यन्त्र और गंडा बनवाया करतीं कि लड़का सुकुमारहै बुरी भली जगह समय व असमय फिरताहै किसीकी नजर न लगजावे और अच्छेप्रकार भोजन किया करै ऐसे २ चरित्र असंख्यहैं कि जो कोटानकोट जन्म शेष और शारदाका पाऊं तबभी वर्णन न करसकूं और किसप्रकार वर्णन होसकै कि जो मनुष्य महापापी और पतित उसभाव और चरित्र यशोदा माताके स्मरण करलेता है उसकी महिमा किसीसे नहीं कहीजाती और तरणतारण होजाताहै जो परमआनन्द यशोदा माताको लाभहुआ सो न शिवको न लक्ष्मीको और किसीको तो क्या गिनती है कि भगवत् इसबातका साक्षी है कि एक सिखापन भगवत्का इसकथामें लिखना उचित समझा और वह यहहै कि जब यशोदाजी ने कईबातैं और धूमधामके करने के कारण से उस ढीठ व धूम करनेवाले को ऊखलमें बांधना विचारकिया तो यह बात सुनकर सब गोपिका प्रसन्नहुईं कि आज सब लँगराई का बदला होगा और अपने अपने घर से रसरीलेकर दौड़ीं और निजकामना यहथी कि इसी बहाने से उस परमसुन्दर को देखि आवैं जब यशोदाजी बांधने लगीं तो सब रस्सी दो अंगुल घटजातीरही यहांतक हुआ कि किसी गोपिकाके घर रसरी न रही और भगवत् न बँधे तब तो यशोदा जीको बड़ीलज्जा व खिन्नगात्र व परिश्रमहुआ तब कृपासिंधु तुरन्त उस रस्सीमें बँधिगये इस चरित्रमें यह शिक्षाहै कि मेरे बँधि जाने में केवल दो अंगुलका बीचहै एक अंगुलका तो भक्तकी ओरसे अर्थात् परिश्रम व उपाय के शोच का और दूसरा एक अंगुल का मेरी ओरसे अर्थात् करुणा व दयालुता का सो जिससमय भक्तकी ओरसे परिश्रम सहित उपाय होय और उसके कारण से मैंने दयाको किया तो तुरंत बँधि जाताहूं अर्थात् ढूंढ़नेवालेको मिलजाताहूं ॥

कथा विट्ठलनाथकी ॥

विट्ठलनाथ गोसाईं वल्लभाचार्य्य के बेटे जिनकीकथा धर्म्म प्रचारक निष्ठामें लिखीगई ऐसे परमभक्त वात्सल्यनिष्ठाके हुये कि जो सुख वात्सल्य का नन्दबाबाको हुआथा सोई भगवत्ने कृपाकरके उनको दिया

बिट्ठलनाथजी की रीतिथी कि रातदिन भगवत् आराधन व लाड़लड़ाने और खिलाने और रागभोगकी तैयारी और सेवामें रहतेथे प्रभातही भगवत्को जगाना और मुखारविन्द धोना कुछ भोजन कराना फिर स्नान कराना आभूषण व पोशाक पहिराना शृङ्गार कराना खिलौना अनेक प्रकारके ढूंढ़के लेआना सेजबिछाना शयनकराना और दूसरे सब बालचरित्रोंमें तत्पररहना और यह आराधन केवल एकबेर का न था सात बेर करते थे तात्पर्य्य यह कि सेवा और आराधनके विना चित्तकी वृत्ति दूसरीओर नहींजातीथी जैसा कुछ वास्तवमें गोकुल और नन्दरायजी का समाजथा वैसाही शोभाका सामान अपने सेवकों के हृदयमें प्रकट करदियाथा इसमें सन्देहनहीं बिट्ठलनाथजीने कलियुगको द्वापरकरदिया यद्यपि ध्यान में भगवत् के बालचरित्रों का दर्शन साक्षात् दर्शनों के बराबर होताथा परन्तु एकबेर चाहनाहुई कि साक्षात् भगवत्के बालचरित्रदेखें भगवत्ने उनका मनोरथ पूर्ण करना बहुत उचित समझकर आज्ञा की कि हम अपने आवेश अवतार से अपने बालचरित्र दिखावेंगे सो जब गिरिधरजी बड़े पुत्र उत्पन्नहुये तो उनके शरीरमें भगवत् की कलाने प्रकाश किया और बालचरित्र बिट्ठलनाथजीको दिखलाये जब गिरिधरजी पांच वर्षकी अवस्थासे अधिकहुये तो वही कला गिरिधरजी से अलग होकर दूसरे पुत्रके शरीरमें आयगई इसीप्रकार सातपुत्रहुये और सबमें भगवत् ने अपनी कला का प्रवेश किया और बालचरित्र दिखाया एकबेर भगवत् बन्दरको देखकर डरे और दौड़कर बिट्ठलनाथजीकी गोदमें आय छिपे उसघड़ी बिट्ठलनाथजीको भगवत् की ईश्वरताका ध्यानथा प्रेमसे गोद बैठाकर प्यारकरके बोले कि जिस घड़ी लङ्कापर चढ़े और असंख्य बन्दर कालके सदृश विकराल साथ में थे उस घड़ी तो कबहीं न डरे अब इस छोटे एकबन्दरसे किस हेतु डरे हैं भगवंत् ने कहा कि जो तुम्हारे चित्तकी वृत्ति मेरे ईश्वरता की ओर लगी है तो बालचरित्र के उपासनाका क्या प्रयोजन है और जो बालचरित्रकी उपासना निश्चय है तो उन चरित्रों का कारण पूछना कुछ प्रयोजन नहीं मेरे चरित्र और मेरे स्वरूप भक्तवत्सल व कृपालुता करके भक्तोंकी चाहना के अनुकूल होते हैं नहीं तो इनबातों से अलग और सब माया के गुणों से परे हैं बिट्ठलनाथ जी इसभगवत्की कृपासे

अतिआनन्द को प्राप्तहुये सातों पुत्रोंका नाम बल्लभाचार्य्यजीके परंपरा में लिखाहुआ है सब आवेश अवतारहुये सातगादी उनके नामसे अबतक गोकुलमें विराजमानहैं और विख्यात हैं इस संसार समुद्र से पार उतारनेको मानों सात जहाजहैं स्वामी बल्लभाचार्य्य और विठ्ठलनाथ और उनके पुत्रोंकी विराजमान की हुई सात मूर्त्तिथीं तिनमें से एकमूर्त्ति श्रीनाथ महाराजकी उदयपुरके रानाकी चाह और प्रार्थना व विनयसे आलमगीर बादशाह जिससमयथा तब रानाके राजमें सैर करनेको पधारे और उदयपुरसे बारह कोस उत्तर ओर विराजमान हैं और नाथद्वारा सारे संसार में प्रसिद्ध और विख्यात व अबतक आप श्रीनाथजी वहां पथिकोंकी भांति शोभितहैं निज अपने रहनेके वास्ते कोई मन्दिर नहीं बनवाया गोसाईं लोग व पुजारी लोगोंके वास्ते बड़ी बड़ीभारी इमारतें तैयार होगईहैं और विठ्ठलनाथजीके वंशमें से वहां के अधिकारी व गोसाईं हैं और इसीप्रकार दूसरी मूर्त्ति गोकुलचंद्रमा नाम आलमगीरहीके समयमें जयपुरका राजा लेगया वहमूर्त्ति भी अब तक जयपुरमें है और गुरुद्वाराभी बड़ाभारी विठ्ठलनाथके वंशमें से वहाँ पुजारी व गोसाईं हैं ॥

कथा कर्म्माबाई की ॥

कर्म्माबाई परमभक्त वात्सल्य उपासकहुई रीति है कि बालक छोटे प्रभातही उठते हैं और खिचड़ी अथवा रोटी खानेको मांगा करते हैं और माको लड़के के जगने के पहिले से चिन्ता होती है सो कर्म्माबाई को उसी भावसे पहिले चिन्ता भगवत्के खिचड़ी तैयार करनेकी होती थी और बिना न्हाये और क्रिया आदिकके किये थोड़ीसी खिचड़ी छोटीसी कुलहड़ी में अंगारोंपर रखदिया करतीं और जब वह तैयार होजाया करती तो अत्यन्त प्यार व प्रीतिसे भगवत्को भोगलगाया करतीं व जगन्नाथराय स्वामी पुरुपोत्तमपुरीसे आयकर और अतिप्रसन्नहोकर भोजन किया करते एकबेर कोई साधु आगया वह आचारपूर्वक भोग लगाने को शिक्षा करगया लाचार कर्म्माबाई आचारपूर्व्वक भोग लगानेलगीं अब देरी भोजन में भगवत् के होनेलगी एकदिन कर्म्माबाईजी के गोदमें बैठे खिचड़ी खायरहेथे कि पुरुषोत्तमपुरी में राजभोग की तैयारीहुई और बिना हाथ मुँह धोये वहां पहुँचे जब पण्डों ने भ-

गवत्के हाथ और मुखमें खिचड़ी लगी देखी तो चकितहुये और विनय करके पूंछा तो आज्ञाहुई कि कर्म्माबाई हमको प्रभातही खिचड़ी भोग लगाया करती थी और हम उसके प्रीतिके वश होकर भोजन करने जाया करते थे अब एकसाधूने उसबाईको आचारक्रियाकी शिक्षा करदी है इसकारण विलम्ब होजाता है सो उससाधुको आज्ञादेव कि कर्म्माबाईको पहिले जिसप्रकारसे करती रही तैसेही करने को शिक्षा दे आवै पुजारियोंने उससाधुको ढूंढ़कर कर्म्माबाईजी के घर भेजा भगवत् आज्ञाकी शिक्षा देआया कर्म्माबाईजी ने कि उसक्रिया आचारको बड़ी बलाय समझ रक्खाथा इस हेतु कि मेरा लड़का सुकुमार और थोड़ा खानेवालाहै सो दोपहर तक भूखा रहनेलगा जब पहिली रीतिकी शिक्षापाई तो ऐसी प्रसन्नहुई कि अंगमें न समाई अबतक जो जगन्नाथ रायजी को सब भोगों से पहिले खिचड़ीका भोग कर्म्माबाई के नाम से लगताहै तो इसके दो कारण समझमें आते हैं एक यह कि गीताजी में भगवत्का वचनहै कि जो कोई जिसभावसे मरताहै सो उसी भाव को प्राप्तहोताहै सो इसवचनके प्रमाणसे कर्म्माबाईजीको यशोदा महारानी की पदवीमिली काहेसे कि उनको मरनेके समय अपने वात्सल्यभाव में दृढनिष्ठाथी और उसीके अनुसार कर्म्माबाईजी अबतक भगवत्को खिचड़ी भोगलगाती हैं दूसरा यह कि भगवत् अपने भक्तोंको शिक्षाकरते हैं कि मेरीप्रीति और वात्सल्यकी यहपदवी है कि कर्म्माबाईजीकी खिचड़ी का स्वाद अबतक मेरी जीभसे नहीं मिटा उपासक लोग और प्रेमीलोग व रसिकलोगोंको मालूमरहै कि इसमें सन्देह नहीं जो कर्म्माबाई आप आकर खिचड़ी भोगलगाती है किसहेतु कि हज़ारों प्रकारके भोजनभगवत्के वास्ते पुरुषोत्तमपुरी में तैयार होतेहैं परंतु जो स्वाद व मिठाई कर्म्माबाईजी की खिचड़ी में है इसप्रकार और किसी भोजनमें नहीं॥

कथा कृष्णदास की॥ ॥१३७॥

कृष्णदासजी वात्सल्यनिष्ठा में ऐसे परमभक्त हुये कि श्रीगोवर्द्धन धारी ब्रजभूषण महाराजने अपने नित्य परमआनन्दमें मिलालिया श्री वल्लभाचार्य गुरूके वचनपर ऐसे आरूढ़हुये कि आप भजन व सेवाके स्वरूप होगये और उनका काव्य दूषणरहित ऐसा था कि पण्डित और भक्त सब कोई जिसको धन्य कहकर समझ के दण्डवत् करतेथे

और अबतक विमुखोंको राह धरानेवाला है ब्रजकी रजको अपने इष्ट-देव के सदृश जाना व सदा भगवत्भक्तों के सत्संग में रहे एकबेर शृङ्गार की सामा के खरीदने वास्ते दिल्ली में आये जलेबी बिमल देखकर चित्त में आया कि जो नाथजी के वास्ते यह जलेबी भेजीजावें तो आंगनमें खाते फिरतेहुये और बन्दर व जानवरोंको खिलातेहुये बहुत प्रसन्नहोंगे और यहभी जानेंगे कि हमारे बाबाने हमारेवास्ते दिल्लीकी मिठाई भेजी है और अपने सखाओंको खिलावैंगे बस उसध्यानके स्वरूपके चिन्तवन में मग्न होकर उन जलेबियों का भोग श्रीनाथजी को लगाया और वह ऐसा अङ्गीकार हुआ कि थाल जलेबियों का उठाके दूकानसे कृष्णदासजीके आगे आयगये कि उसकाप्रसाद अपने सेवकों को दिया कोई कोई ने तो न लिया और यह समझा कि पुजारीकी बुद्धि में भेद आयगया है न जानैं यह जलेबी किस आचारसे बनी हैं और कोईकोई ने लेकर महाप्रसाद विचार किया और कृपा व आचारकेवास्ते यह समझा कि बड़ों के आचरणमें पकड़करना न चाहिये उनकी आज्ञा को शिरपर रखना उचितहै वहांसे आगेचले एक बारमुखी को नाचते देखकर प्रेमसे मग्नहोगये कि इस चन्द्रमुखीका नाच नाथजीको दिखाना चाहिये और अपने पास बुलाकर कहा कि हमारा लड़का नाचराग का बड़ा रसियाहै उसके सामने नाचनेको चल उसने मंजूर किया सो साथलेकर आये और गोवर्द्धनजी में मानसीगंगा स्नानकराकर गहने व वस्त्र चमकके पहिनाये और अतर पान सुरमा इत्यादि से सवाँरिके मन्दिरमें लेगये वह वेश्या श्री नाथजी का स्वरूप देखकर प्रेम के मद में मतवारी होगई औरमन कम वचनसे भगवत्की होकर देखने और दिखलानेके रसमें बेसुधिबुधि होगई कृष्णदासजीने पूंछा कि हमारे साहिबजादेको देखा वेश्याने उत्तरदिया कि देखा और मेरे मन व नयनोंमें समागया फिर उसने नाचना गाना प्रारम्भकिया और ऐसी ऐसी भाव अपने मुसकान व चितवन व बतलाने इत्यादिकी बनाईं और दिखलाईं कि उस परमरिझवार को अपनेरूप और नाच और राग और भावके वशमें करलिया फिर तदाकार रूप होकर और तन को छोड़कर नित्य विहारमें जामिली भगवद्भक्तों को करोड़ों दण्डवत्हैं कि एकक्षणमें परम पातकी और अधर्मी को कि जिन्होंने कबहीं नामतक मुखसे न उच्चारण

कियाथा उनको उसपदवी को पहुँचाय देते हैं कि आप वह अनन्त ब्रह्माण्डोंका उत्पन्न करनेवाला होजाताहै कृष्णदासजी ने प्रेमरस रासग्रंथ बनाया कि उसको आप श्रीनाथजीने अंगीकार किया और सब भक्तों को उसमें प्रेम व प्रमाण है मिलनेके समय सूरदासजी ने कृष्णदासजी से कहा कि कोई पद अपना बनाया ऐसापढ़ो कि जिस में मेरे बनाये पदोंका भाव न होय कृष्णदासजी ने दशपांचपद सुनाये परन्तु सूरदास जीने सबमें अपने बनायेहुये भावको ठहराया व पद पढ़दिया कृष्णदास जीने कहा कि तुम्हारे कहने अनुसारपद कल सुनावैंगे और चिन्तामें हुये व श्रीनाथजी महाराज परमकृपालुने जो चिन्ता अपने भक्तकी देखी तो आप एकपद बनायके उनके तकियाके नीचे रखदिया कृष्णदासजी ने जो प्रभातको उठकर देखा तो भगवत् कृपासे आनन्दहुये और सूरदासजी को वह पद सुनाया सो सूरदासजी भी परमभक्त थे जानिगये और कहा कि यह करतूत तुम्हारे कौतुकीकी है कि अपने बाबाकी हिमायतकी और दोनों भगवत्प्रेममें बेसुधिबुधि होगये॥ पहिलातुक भगवंत् के बनायेहुये पदका यहहै (आवत बनेकान्ह गोपबालक सँग बच्छ की खुररेणु छुरित अलकावली) मालूमरहै कि कृष्णदासजी और सूरदास जी दोनों गुरुभाई बल्लभाचार्य्यजी के चेले हैं कृष्णदास जी नित्य मथुरा जी से विश्रान्तघाट का जल भगवत् स्नानके निमित्त लेआयाकरते थे गोवर्द्धनजी से नवकोसहै भगवत् ने मनाकिया कि इतने परिश्रम का कुछ प्रयोजन नहीं परन्तु जब कृष्णदासजी ने न माना तो श्रीनाथजी ने अपने शिर में चिह्न लेआने कलश जलका दिखलाया कृष्णदासजी लाचार होकर कूपके जल से स्नान करानेलगे एक दिन पांवके कँपने से कूपमें गिरपड़े और भगवत् के नित्य लीला विहार में जायमिले रसिकलोगों को एक तो दुःख उनके वियोगका दूसरे कुँए में गिरकर मरनेका हुआ श्रीनाथजी महाराज उस निन्दाको न सहिसके कृष्णदासजी को नित्य विहारमें मिलने की सबको परीक्षा दी यह कि कृष्णदासजी एक ग्वालको गोबर्द्धनजी के निकटमिले और उस ग्वालसे यह बातकही कि गोसाईं विट्ठलनाथजी से दण्डवत् करके विनयकरना कि इस घड़ी वह कौतुकी और ढीठ गोवर्द्धन की ओर अकेला चलागया है उसके ढूंढ़ने को जाता हूं इस हेतु आय नहीं सक्ता और मेरे

शयन स्थान में साठहज़ार रुपया गड़ा है तुम उस को निकलवाकर आधेका आभूषण व शृङ्गार श्रीनाथ जी का और आधा साधुसेवा में लगादेव विठ्ठलनाथजी ने जो कहने के पतेपर ढूंढ़ा तो उतनाही रुपया निकला और सबको विश्वास हुआ॥

॥ कथा गोकुलनाथकी ॥

गोसाईं गोकुलनाथजी विठ्ठलनाथके पुत्र वल्लभाचार्य्य के पोते भक्ति और सबगुणों के समुद्र व बुद्धिमान् व सुन्दरधीर सहिष्णु मितभाषी श्री गिरिधर महाराजके भजनमें दृढ़हुये भक्तिके प्रतापसे जिनके चरणों को सबराजा दण्डवत् करते थे भीतरबाहर एकभांति और मन सब संसारियों के लाभके हेतु सावधान रहताथा उनकी सेवामें एक कोई बड़ा धनवान् सेवक होनेकेवास्ते आया और लाखोंरुपया भेटकरने के वास्ते लेआया गोसाईंजी ने उससे पूंछा कि तुम्हारीप्रीति हृदयकी किसवस्तु में है उसने उत्तर दिया कि किसी वस्तु में नहीं गोसाईंजी ने कहा कि तुम किसी और गुरूको ढूंढ़ो जो तुमको किसी ओरकी प्रीतिहोती तो होसक्ता कि उस ओरसे मनको हटाकर भगवत् की ओर लगादिया जाता और जब कि स्नेहका बीजही नहीं तो भक्तिका वृक्ष कब उत्पन्न होगा सो सत्यहै कि जो मन स्नेह व चाहरहित हैं सो तीक्ष्ण पत्थर के सदृश हैं॥ कान्हाभंगी सदानाथजी के मन्दिर में झाड़ूदेने के वास्ते आया करता था और रूप अनूप भगवत् का दर्शन करके उसकेरस और प्रेममें मग्नरहता था गोसाईंजी ने सब के नज़र का पड़ना श्रीनाथजी पर अच्छा नहीं जानकर एक आवरणकी दीवार खिंचवाई और कान्हा को भगवत् के दर्शन होने में विक्षेपपड़ा भगवद्भक्तवत्सल को उसका दर्शन बन्दहोना पसन्द न हुआ और रातको स्वप्नमें उसकान्हा को आज्ञादी कि गोसाईं गोकुलनाथजी से विनयकरदेना कि नईदीवार गिरवायदे हमारे दूरतकके अवलोकनमें बाधा करती है कान्हाने मनमें विचारा कि गोसाईं तक पहुँचनेकी हमको कहां गति है जो जाता हूं तो द्वारपाल ढिठाई समझकर पीटेंगे लालजी महाराज विन प्रयोजन मुझको प्रेरणा करते हैं यह समझकर चुपहोरहा श्रीनाथजी महाराज ने तीनदिनतक बराबर उसी आज्ञाको किया लाचारहोकर गया डेवढ़ दारों से कहा किसी ने गोसाईंजी से न कहा परन्तु किसी और

ने वार्त्तालाप होतेमें जनायदिया गोसाईंजी ने उसीघड़ी बुलवाया और उसके विनय के अनुसार एकांत में पूछा कान्हाने भगवत्का संदेश सुनाया और यह भी कहा कि तीन दिनसे बराबर दिढ़ायके आज्ञा है गोसाईंजी ने पूछा कि क्या मेरा नाम धरकर नाथजी ने आज्ञा कियाहै उत्तर दिया कि आपही का नामलेकर कहाहै कि दीवार गिरवायदें सो गोसाईंजी को भी कुछ इसबातकी इंगित मालूम हुईथी बात कान्हाकी ठीक समझकर बेसुधि होगये और कान्हा को दौड़कर छाती से लगा-लिया और भगवंत् आज्ञाकी पालनकरी॥

कथा गुञ्जामाली की॥

गुञ्जामालीनाम विख्यात होनेका कारण यहहै कि गुञ्जा जो घुंघुची उसकी माला बहुत पहिरते थे इसहेतु कि ब्रजभूषण महाराजको उसकी माला प्यारी है इसीहेतु गुञ्जामाली नाम विख्यात हुआ नाम का अर्थ यह कि गुञ्जाकी मालावाला लाहौर के रहनेवाले थे बेटा उनका मरं-गया बहू से कहा कि धन सम्पत्ति घरबार सब तेरा है और गोपाल जी महाराज मालिक और स्वामी हैं जो तुझ को इच्छा हो सो लेकर भगवद्भजन कियाकर सो वह बहू उनकी भगवद्भक्त थी उसने कहा कि मुझको कुछ चाहना नहीं गोपालजी महाराज की मूर्त्तिसेवा के हेतु मुझको देव और भगवत्सेवा के हेतु अतिविनय व प्रार्थना करती भई गुंजामालीजी ने भगवत्सेवा तो उस बहूको सौंपी और माल अ-सबाब स्त्रीको देकर आप श्रीवृन्दावन आये और ब्रजवल्लभ महाराज के भजन कीर्त्तनमें लगे और बहू वह बड़भागिनी सेवा करनेलगी ऐसी भगवत्सेवा में लवलीनहुई कि कोई घड़ी भजन व सेवा विना व्यति-रिक्त न जाय और जहां भगवत्मूर्त्ति विराजमान थी तहां दूसरों के लड़के उसबहूकी चाहना और भावनासे खेलाकरते थे एक दिन ईटों की धूल उनलड़कोंने भगवत् के ऊपर डालदी उसबहूने उनपर बहुत रिसकी और आना उनका बन्दकरादिया जब भोजन तैयार करके भोग धरा तो भगवत्ने भोजन न किया और अनमने होकर कहा कि हमारे सखाओंको आनेसे मनाकरदिया हम तेरी रोटी भी नहीं खाते बहूजीने बहुत मनाया दुलराया परन्तु एक न सुनी तब तो रिसकरके कहा कि हमारी क्या बिगड़ती है तुम्हारीही पोशाक बिगड़ती है सो मैं जितनी

धूल मिट्टी कहोगे प्रभातको डलवाओगी अव भोजन करलेव भगवत् विना अपने सखाओं के राज़ी न हुये लाचार उनलड़कोंको मिठाई देने को कहकर फुसलाकर लेआई तव भगवत्ने भोजनकिया धन्यहै भगवत्की कृपालुता व दयालुता कि अपने भक्तोंकी प्रीतिका ऐसा निवाह करते हैं॥

कथा गिरिधरकी॥

गिरिधरजी महाराज बेटे विठ्ठलनाथजी के और पोते वल्लभाचार्य्य जीके कल्पवृक्षके सदृशहुये वरु कल्पवृक्षसे भी अधिकहुये क्योंकि कल्प वृक्ष तो केवल सांसारिक पदार्थ देता है सो भी कामना करने से और गिरिधर महाराज अर्थ धर्म काम मोक्ष और भगवत्भक्ति विना चाहना देनेवाले हुये सर्व शास्त्रोंका सार और वेदका मुख्य तात्पर्य्य जो भगवत् ज्ञान है उसको अच्छेप्रकार समझा और व्रजराजकुँवर महाराज की सेवामें वात्सल्य भावसे प्रेमलगाया केवल उनके दर्शनोंसे लोग पवित्र होतेथे और जिससभा में बैठतेथे वहां भगवत् प्रेमका अमृत वरसता था उनके गुण और भावका वर्णन कहांतक कोई करै॥

कथा तिपुरदास की॥

तिपुरदासजी जातिके कायस्थ रहनेवाले शेरगढ़के वात्सल्यभावसे प्रेम और भक्तिके स्वरूपहुये हरसाल जाड़ेके दिनों में यह नियमथा कि श्रीनाथजी महाराजके वास्ते पोशाक ज़रदोज़ीकी या और किसी अति सुन्दर प्रकारकी तैयार करके भेजाकरतेथे संयोगवश राजाने सव धन सम्पत्ति उनका निरोध करलिया कुछ पास न रहा शोचनेलगे कुछ उपाय न वनपड़ा अधिक हुआ तो यह शोचहुआ कि उस सुकुमार को जाड़ा लगताहोगा विकलहोकर रोनेलगे और घरमें जाकर वहुतढूंढ़ा तो एक दवात हाथलगी एकरुपयापर वेंचकर एकथान गुंदा मोल लेकर कुसुम्भी रँगाकर भेजनेके उपायमें लगे परन्तु उसकपड़ेको देख देख यह शोचाकरते कि उस परममनोहर शोभायमान और अति सुकुमारके वास्ते हाय ऐसा मोटा कपड़ा भेजना चाहिये और इसीविचार में वेसुधि और विकल होजाते कोई भगवद्भक्त व्रजको जानेलगा उसको वह कपड़ा देकरके वड़ी आधीनताई से विनय किया कि इसकपड़े का समाचार गोसांईजीको न पहुँचै काहेसे कि उनकी दासियोंकी दासीके योग्यभी नहीं है भंडारमें डालदेना वह आदमी आया भंडारी को दे-

दिया भण्डारीने नेमर्य्यादसे कपड़ों के नीचे डालदिया श्रीनाथजी को कि वह रजाई भेजीहुई नंदस्वरूप अपने बाबाकी तोशेखाने में पहुँचने परभी पाई तो जाड़ेसे कांपनेलगे गोसाईंजीने लिहाफ़ और रजाई जरवफ्त और किमखाब इत्यादिकी उढ़ाई परन्तु जाड़ा न गया फिरदुशाले व रूमाल इत्यादि उढ़ाये तबभी जाड़ा वैसाही रहा आगकी अंगीठीलाये दरवाजे सब बन्दकरदिये परन्तु क्या बात कि जाड़ा तनकभी हटे गोसाईं जीने विचार करके भण्डारी और कारबारियों से कहाकि भाई यह शीत नहीं किसी की प्रीति है सो कहो किस किस भक्तने क्याक्या जड़ावरभेजीहै उन लोगोंने जिस जिस राजा और उमराव और दूसरे लोगोंकी भेजी जड़ावरथी सो विनयकी और उढ़ायीगयी कुछ कार्य्य सिद्ध नहुआ तब भंडारीको स्मरणहुआ और गोसाईंजीसे वर्णनकिया कि तिपुरदास कंगालहोगयाहै उसने एकथान बहुतमोटा भेजाहै वह भगवत्की पोशाकें के बांधनेवास्ते भंडारमें रक्खाहै गोसाईंजी ने कहा कि शीघ्र लेआओ सो आया और उसका चोलनासा तैयारकरके पहिनाया कि तुरंत जाड़ाछूट गया और हठभी छूटा तिलककार भक्तमाल शिक्षा करातेहैं कि इसप्रीति और भक्तवत्सलताकी ओर विचार करके मन लगाना चाहिये सो सत्य करके है जो इस भगवत् कृपालुता को विचार करके और पढ़ सुनके मन अभागा भगवत् में न लगे तो निस्सन्देह पत्थरसे भी अतिकठोर है बरु वज्र समझना चाहिये ॥

बीसवीं निष्ठा ॥

जिसमें वृत्तान्त छः भक्तों व इस निष्ठाके उपासकों व सौहार्द महिमाका वर्णनहै ॥

श्रीकृष्ण स्वामीके चरणकमलोंकी अष्टकोण रेखाको दण्डवत्करके कल्की अवतार कि जिसको निष्कलङ्क कहते हैं प्रणाम करताहूं और वह अवतार कलियुगके अन्तसमय सम्भलदेश में धारण करेंगे और नाम कलियुग का व पापोंकापुञ्ज संसारसे उठायदेंगे प्रत्यक्षहै कि जितने सम्बन्ध संसारमें प्रवर्त्तमानहैं सो नव प्रकारके सम्बन्धसे उत्पन्न होते हैं एक शेष शेषी १ अंश अंशी २ शरीर शरीरी ३ पति पत्नी ४ पूज्य पूजक ५ सेव्य सेवक ६ रक्ष्य रक्षक ७ जनक जन्य ८ गुरू शिष्य ९ ॥ सो सब सम्बन्धों पर अच्छीप्रकार विचार कियाजाता है तो अन्त की पदवी सब सम्बन्धोंकी ईश्वरप्राप्त व युक्तहोतीहैं व इस ओर जीव पर

प्राप्तहोती है सो विस्तार करके सेवानिष्ठा में शेष व शेषी भावके वर्णन में जीव व ईश्वर पर लिखाहै थोड़ा यहाँ भी लिखताहूं तात्पर्य्य यह कि अंशी व पति व पूज्य व सेव्य व रक्षक व पिता व गुरू अथवा कोई सम्बन्धवाला जो सबमें बड़ा और पुराना और आगे परभी सदा रहने वाला और पहिले था और उस सम्बन्धकी रीतिका जाननेवाला और निर्वाह करदेनेवाला जो ढूंढ़ाजाय तो भगवत् से अधिक और अच्छा कोई नहीं और इसीवास्ते अंशी व रक्षक पति इत्यादि नाम भगवत् के विष्णुसहस्रनाम और दूसरे सहस्रनामों व स्तोत्रोंमें लिखे गये और इसीप्रकार पूजाकरनेवाला और सेवाकरनेवाला व रक्षा चाहनेवाला इत्यादि जो ढूंढ़ाजाय तो जीवपर युक्त व योग्यता होती है कि जीव से अच्छा उन सम्बन्धों में दूसरा कोई नहीं तिस में भी मनुष्य शरीर तो मुख्य सम्बन्ध अर्थात् नातेदारी ईश्वर और जीवपर समाप्त हुई और यह नाता अनादि और पुराना अर्थात् उस दिनसे है कि जिस दिनसे इस जीवने ईश्वर अंशसे प्रकटहोकर जीव नाम धराया और विशेषता यह कि आगे परभी बनारहैगा तो भला जब कि ऐसा नाता पुराना जीव और ईश्वरका दृढ़है तो अत्यन्त उचित व योग्यहै कि नातेदारी जो संसारी हैं सोभी भगवत्ही के साथ लगाईजावें और इसबात में आप निज भगवत् ने कहाहै कि जो मुझको अपना नातेदार जानकर सेवन करता है सो मुझको प्राप्तहोता है भागवत व महाभारत के बहुत वचन इसबात के निश्चय करनेवाले हैं फिर गीताजी और एकादश और शान्तिपर्व्व महाभारतमें वारम्वार यह वार्त्ता आई है कि जो जिसभावसे भगवत् का आराधन करताहै भगवत् उसीभाव से उसपर प्रसन्नहोता है और सैकड़ों हजारों कथा पुराण व भक्तमालकी इसबात की साक्षी हैं नहीं तो कहां वह पूर्णब्रह्म सच्चिदानन्दघन कि जिसको वेद नेतिनेति कहते हैं और जिसके स्वरूप ज्ञान और महिमा के वर्णन में ब्रह्मा व शिव व शेष व शारदाके ज्ञान का दीपक ठंढाहै और कहां राम कृष्ण नृसिंह वामन इत्यादि अवतार धारणकरके सब भक्तों के भाव और चाहको पूर्णकरना तात्पर्य्य इस कहने का यहहै कि संसार में नाते की धग्गी ऐसी बराबर है कि उसके अवलम्बसे बरबस स्नेह व प्रीति सबको अपने नातेदारों के साथ होती है जो भगवत् में स[illegible]

अवलम्ब से मन लगायाजाय तो भगवत् के मिलने में क्या सन्देह व भ्रमहै वरु निश्चय करके और शीघ्रमिलैगा जो यह वाद कोईकरे कि भगवत् को भाई अथवा वाप व दामाद व भतीजा अथवा देवर व जेठ इत्यादि नातेदार कहना कहां योग्यहै और कब बुद्धिमें यह बात आय सक्ती है उत्तर यहहै कि जो यह बात अंगीकार कीजाय तो दास्य व शृ-ङ्गार व वात्सल्य इत्यादि उपासना सब त्याज्य होजायँगी काहेसे कि जिन प्रमाणों से नातेदारी त्याज्यहोंगी सोई वास्ते लोपकरने दास्य इत्यादि निष्ठाकेभी समर्थ हैं कि भगवत् स्वामी व मित्र व बेटा व पति नहीं होसक्ता और जिन वचनों के प्रमाणसे दास्य इत्यादि निष्ठा अंगी-कार योग्यहैं उन्हीं प्रमाणों से यह सौहार्दनिष्ठा भी सत्य व युक्त है कि जैसी आज्ञा शास्त्रोंकी उन निष्ठाओं के वास्ते है वैसीही इस निष्ठाके वास्ते भी है सिवाय इसके गवाही युधिष्ठिर व कुन्ती व द्रौपदी व उग्रसेन व लक्ष्मण व शत्रुघ्न व भरत व बलदेवजी व लव व कुश व प्रद्युम्न व अनिरुद्ध व जनक इत्यादि हज़ारों भक्तों की प्रगट है और एकबात यह भी सब शास्त्रों में लिखी है कि सब नातेदारों को भगवत् के नाते से मानना चाहिये अर्थात् बेटा पोता भाई भतीजा और दूसरों को किसीको किंकर किसी को जल भरनेवाला और किसी को रसोइया और किसी को चौका देनेवाला और किसी को सेवा करने वाला जानै संसारीनातों को मुख्य न समझै और उनमें कोई भगवत्विमुख हो तिसका त्याग उचित है कि प्रह्लाद ने पिताको त्यागदिया और विभी-षण भाई को और भरतजी ने माताको राजाबलि ने गुरू को और गोपिकाओं ने पतिन को और उस त्याग करने में यह नहीं हुआ कि किसीकी कुछ हानि हुईहो वरु ऐसी हुई कि उनका नाम जगत्के आनन्द और मंगलको देताहै तो जब कि दूसरे नातेदारों को भगवत् के नातेसे मानना लिखा है तो आपसे आप उचित व आवश्यक कर-नाहीहुआ कि निज अपना नाता भी स्थिरकरले और वह नाता आरो-पण करना योग्यहै कि जैसी मनकी रुचि और गहरी प्रीति होय और मुख्य अभिप्राय सब शास्त्रोंका यहहै कि भगवत्का किसी प्रकार और किसीरूप में और किसी रीतिसे आराधनहो अद्वैतता और ईश्वरता भगवत्की निश्चय समझकर दृढ़ विश्वास करलेना चाहिये यह कदापि

नहीं कि भगवत् न मिलें और जबतक कि अद्वैतता और ईश्वरताका ज्ञान व विश्वास न हो तबतक कुछ प्राप्त नहीं होता इस सौहार्दनिष्ठा की महिमा व बड़ाई कौन कहसक्ताहै और ऐसा प्रतापइस निष्ठाका है कि अपने आप मन भगवत् में लगताहै और क्यों नहीं ऐसा प्रताप इस निष्ठाका होय कि पूर्णब्रह्म अन्तर्य्यामी और व्यापक साक्षात् होकर सबप्रकार से मनभाया व चितचाहा इस निष्ठाके उपासकों का करता है और करता रहा और आगेपर करेगा कारण ऐसा प्रताप होने इसनि-ष्ठाका यहहै कि दूसरी निष्ठा तो ऐसी प्रसिद्धहैं कि सब कोई अपने आ-पको दास व सिरजाहुआ भगवत् का कह सक्ताहै अथवा कोई बात अपने मतमतान्तर की जानताहो के न जानताहो और इस निष्ठामें उसीका मनलगैगा कि जो कुछ जाननेवाला भगवत् के सिद्धान्त और शास्त्र व ईश्वरता व चरित्रोंका होगा और जब कि शास्त्रोंके सब अभि-प्राय जानने के पीछे मन भगवत्में लगा तो भगवत् बहुत शीघ्र मिल-सक्ताहै इस निष्ठाके उपासकों को उचितहै कि जिस नातेसे भगवत् का आराधन करें उस नाते को अच्छेप्रकार रीति भांति जैसी कि भाई व दामाद अथवा भतीजे आदिके साथ रखते हैं भगवत् के साथ दृढ़ वि-श्वास व सच्ची भावना से पक्की दशाको पहुँचा देवें और जिस नातेकी जो रीतिहै सो सब भगवत् के साथ ऐसी निबाहैं कि तनक कोई बात बाक़ी न रहै थोड़े दिनहुये कि स्वामी रामप्रसाद जनकपुरके रहनेवाले श्रीरघुनन्दन महाराज को अपना दामाद मानते थे जब दर्शन करने को अयोध्याजी में आये तो अयोध्याके देशका पानी तक पीना छोड़-दिया जब दर्शन को श्रीरघुनन्दन महाराज के गये तो उनके भाव के पूर्ण करनेको और भक्तिके प्रतापको प्रगट दिखाने के निमित्त भगवत् की मूर्त्ति रत्नसिंहासनसे उठकर कईडग उनकी अगवानीको आई और जो रीति मर्य्याद राजाजनक के वास्ते होना उचितथा सो सब उनके वास्ते हुई यह बात विख्यातहै और स्वामी रामप्रसादजीके सेवक अब तक उसदेशमें बने हैं कहनेका अभिप्राय यह कि निष्ठामें पक्केताहोय कि तुरन्त बेड़ापारहै एक वैष्णव रघुनन्दनस्वामी को अपना बहनोई जा-थे और कोई घड़ी भजन बिना नहीं बीतती थी व जिसघड़ी निष्ठा और विश्वासकी वार्त्तालाप करते थे तो सुननेवाले प्रेम

होजाते थे और उनकी दशा क्या कहीजाय ॥ व्रजमें बरसाना जो लाड़िलीजी का मैकाहै वहांकी व्रजवासिनियों की बोलचाल यात्रियोंके साथ जो होती है और उस समाज में जो दशा भगवद्भक्तों की होती है सब किसीको मिलै तात्पर्य यह कि इस निष्ठावालोंकी बोलचाल सुनकर सुननेवालोंको बरबस स्नेह व प्रीति भगवत् में होती है उनके प्रेमका क्या वर्णन कियाजाय हे श्रीकृष्णस्वामी हे दीनवत्सल हे पतितपावन कोई ऐसी अच्छी घड़ी मेरेवास्ते भी आवैगी कि जितने इस संसारमें नाते व स्नेह व मित्रताहैं सो सब आपके चरणकमलों में विचारकिया करूँगा और कबहीं वह दिन भी होगा कि दूसरे सब अवलम्ब व विश्वासों को छोड़कर केवल उन चरणकमलों का आसरा व विश्वासयुक्तहूंगा कि जो शिव ब्रह्मा इत्यादि परम योगियोंके इष्टदेवहैं और नारद प्रह्लाद सनकादिक भक्तों के स्वामी और ध्यान जिनका परमपदका देनेवाला है और इस संसारसमुद्रके उतरने को हम सबका जहाज़है ॥

कथा राजाजनककी ॥

राजा जनक महाराजकी महिमा शास्त्रों में लिखी है जिनका ज्ञान सूर्य्यके सदृश ऐसा प्रकाशित हुआ कि शुकदेवजी इत्यादि ऋषीश्वर ज्ञानवान् और वैराग्यवानों के मनको कमलकी भांति प्रफुल्लित करदिया और आवागमन के अन्धकार को दूरकिया सीता महारानी सर्व ब्रह्माण्डेश्वरोंकी माता और श्रीरघुनन्दन स्वामीकी परमप्रियाने जिन जनक महाराजके घर अवतार धारण करके परमपवित्र चरित्र किये ऐसे महाराज की महिमा का वर्णन कौनसे होसक्ता है जब रघुनन्दन महाराज जानकीजी के स्वयम्बरमें विश्वामित्रजी के साथ जनकपुरमें गये और राजाजनक मिलने के वास्ते आये तो श्रीरघुनन्दन महाराज को देखा और उसीघड़ी ज्ञान वैराग्यको बिदाकरके परममनोहर और अनूपरूप माधुरी के प्रेममें विह्वल होगये और जब अपनी प्रतिज्ञा पर चित्तगया कि जो कोई शिवजीका धनुष तोड़ैगा उसकोही सीता मिलैगी तो अतिविकल हुये कबहीं तो अपनी बुद्धिपर शोच करते थे कि क्यों ऐसी प्रतिज्ञा की और कबहीं कर्मोंसे उदास होकर कहते कि तुमने प्रतिज्ञा किस वास्ते कराई कबहीं देवताओं का ध्यान मनमें करके यह मांगते कि यह श्यामसुन्दर वर सीताको मिलै और कबहीं अपने ज्ञान

वैराग्य व कर्मोंका फल वास्ते पूर्णहोने अपने मनोरथ के मनमें संकल्प करते नितांत जब किसीप्रकार मनकी विकलता न मिटी तो रघुनन्दन महाराज के चरण कमलोंकी शरणगही और दृढ़विश्वास अपने मनोरथ पूर्णहोनेका करलिया श्रीरघुनन्दन महाराजने जो जनकमहाराजकी भक्ति और भाव को देखा और फिर जनकपुरवासियों की चाहना कि राजा जनकसे सौगुणी कामना टूटने धनुषकी रघुनन्दन के हाथसे रही देखी और जानकी महारानीका वह प्रेम अपार पाया कि सब ब्रह्माण्डों का प्रेम जिनके करोड़वें भाग प्रेमकी छायाहै तो धनुषको तोड़ा और सीता महारानी ने जयमाल को राजसभामें श्रीरघुनन्दन महाराज को पहिराया उस समय छवि अनूप सीता और दशरथनन्दन की जनक महाराजने जो देखी तो अपने भाग्यकी बड़ाई करतेहुये भगवत् कृपा के समुद्र में गोता लगाके बेसुधिबुधि होगये व जिस घड़ी विवाह व भांवरिहोने पीछे सीताजी व रघुनन्दन महाराज एक सिंहासनपर विराजमानहुये उस समयकी शोभा व दशाका वर्णन किसी से नहींहोसक्ता ब्रह्मानन्द का परमानन्दभी उस आनन्दके सम्मुख फीकाहै राजाजनक की यह दशाहुई कि अंग अंगसे थकित थकित होकर आंखोंसे एकटक रहिगये सत्यकरके विदेह नाम उसी समय हुआ और राजाजनक व सुनयना उनकी रानी का प्रेम अलगरहा जनकपुरवासियों के प्रेमकी दशा लिखीजाय तो अगणित शेष व शारदा भी नहीं लिखसक्ते तो मैं मतिमन्द क्या लिखसक्ताहूं रनिवास की प्रीति और बोलचाल और हँसी इत्यादि ऐसे आनन्दका देनेवाला रस है कि जिसको पान करके सुधिबुधि सब बिसरजाती है तो फिर वर्णन कौन करिसके गूंगेका गुड़ है कि मनहींमन स्वादको लेताहै और विश्वामित्रजी को राजा जनक के प्रेम व भक्तिका वृत्तांत कुछ कुछ धनुष टूटनेपर और कुछ कुछ विवाह होलेने पर खुलिगया था परन्तु अच्छीतरह उस घड़ी मालूमहुआ कि जब जानकी महारानी को पालकी पर सवार कराकर श्रीदशरथनन्दन महाराज से बिदा हुये ॥

कथा वृषभानुकीर्तिजी की ॥

महिमा और भक्ति और यश वृषभानु महाराज और कीर्तिदा महारानी उनकी धर्मपत्नी की कैसे मुखसे वर्णन होसके जिनकेघर श्रीराधिका

महारानी सर्वेश्वरी श्रीकृष्णकी प्राणप्रियाने अवतार धारणकरके तीनों लोकको पवित्रकिया रसिक लोगोंको मालूमहै कि श्रीराधिका महारानी में उपासकलोग दोप्रकारके भाव रखते हैं निम्बार्क सम्प्रदायवालों को तो यह निश्चयहै कि राधिका महारानी और नन्दकिशोर महाराजका विवाह हुआ और विष्णुस्वामी सम्प्रदायवालों का उनके निश्चयपर अपना निश्चयभी रखते हैं और उसभावका नाम स्वकीया है माध्वसम्प्रदाय और हितहरिवंश सम्प्रदायवाले परकीयाभावका निश्चय और विलक्षण भावभी रखते हैं अर्थात् विवाह नहींहुआ प्रिया प्रीतम महाराजका अन्योन्य प्रीतिका होना वर्णन करते हैं और दोनों स्वरूप को एक जानते हैं सो पुराणादिकके वचनों के प्रमाणसे दोनों भावमें से एक भावको जो दृढ़ कियाजाय तो दूसरेकी अनरुचिहोगी इसहेतु इसके निर्णयका कुछप्रयोजन नहीं समझकर यही निश्चयहुआ कि दोनों भावसे वृषभानुमहाराजश्वशुर व कीर्त्तिदा महारानीसासु श्रीव्रजचन्द्र महाराज की हैं और यहभी जानेरहो कि अवतक बरसानेकी सब जाति नन्दगांव वालोंको अपनी बेटी विवाहमें देते हैं व नन्दगांवकी बेटी नहीं लेते हैं सिवाय इसके वल्लभाचार्य के कुलमें वात्सल्यनिष्ठा है अर्थात् पुत्रभाव रखते हैं कि इसका वर्णन वल्लभाचार्य की कथा और वात्सल्यनिष्ठा में अच्छेप्रकार हुआ उनकी यह रीति है कि व्रजयात्राके समय जब किसी मन्दिर में दर्शन को जाते हैं तो आपही मन्दिर के भीतर जाकर पूजा इत्यादि किया करते हैं सो जब बरसाने में आते हैं और लाड़िली जी के दर्शनों को जाते हैं तो बरसानेवाले उनको मन्दिर के भीतर नहीं जाने देते भाव इसमें यह है कि समधीको कैसे महलमें जाने देवें बाप के घरमें कोई लड़का अपने ससुरालवालों के सामने नहीं जाती ऐसे ऐसे विमलभाव व्रजवासियों के हैं रसिकलोग विचारकरके अपने अपनेभाव और विश्वासके अनुसार वृषभानु और कीर्त्तिजी में भावराखें सब प्रकार भक्ति और भाव परमआनन्द वा प्रेमकी खानि हैं वृषभानु व कीर्त्तिजी का यश चन्द्रमासे भी अतिनिर्मल है जिसने उस यशका शरण लिया संसारके तापसे छूटा ॥

कथा उग्रसेनकी ॥

उग्रसेनजी कंस के बाप नाना श्रीकृष्ण महाराजके थे और उनकी

भक्तिका भाव ऐसा अलौकिक हुआ कि भगवद्भक्ति का उत्पन्न करने वालाहै श्रीकृष्ण महाराजको पूर्णब्रह्म सच्चिदानन्दघन मानते थे और दौहिता अपना जानकर वैसेही प्रेम निबाहते थे और भगवत् ने कंसादिक आठ बेटे उनके मारे परन्तु भगवत्दर्शन का सुख ऐसा माना कि उनके वधका दुःख कबहीं निकट न आया और भगवत् उस भक्ति और भावके आधीन होकर ऐसे वशीभूत होगये कि ब्रह्मा शिव और सूर्य्य और चन्द्रमा और यम और काल व वरुण इत्यादि सब जिसकी माया से भयभीत होकर सदा प्रसन्नताकी आशा करते हैं उस अपनी ईश्वरतापर कुछ विचार न किया और आप श्रीहस्तसे छत्र व चमर लेकर सेवकों के सदृश सेवाको किया सत्य करके भक्तिही भगवत्‌को वशीभूत करती है गुण नहीं अर्थात् यह विचार करना चाहिये कि सुदामाको कौन धन और गजराजको कौन विद्या उग्रसेनजी को कौन पौरुष व बल व कुब्जा को कौन सुन्दरता व्याधका कौन पुण्य आचरण व विदुरजीका कौन उत्तमकुल और ध्रुवका क्या वयक्रम सो निश्चयकरके भगवद्भक्ति ही सार पदार्थ है ॥ कथा कुन्तीकी ॥

कुन्तीजी परमभक्त भगवत् की हुई भगवत् श्रीकृष्ण महाराज को भतीजा अपना जानती रहीं और ऐसी प्रीति भगवत् से थी कि हरघड़ी भगवत्मूर्त्ति अथवा साक्षात् अथवा ध्यानमें आंखों के आगे रहती थीं दुर्य्योधनको जीतने पीछे जब राज्य राजा युधिष्ठिर को प्राप्त हुआ तो भगवत्‌ने विचार द्वारका जानेका किया कुन्तीजी ने जाने न दिया पीछे उसके जब कबहीं विचार जानेका करते तो कुन्तीजी व्याकुल व दुःखित होकर कहतीं कि इस राज औ सुखसे तो बनबासही अच्छाथा कि सदा श्रीकृष्ण संगरहा करते थे और भगवत् से कहा करतीं कि हे श्रीकृष्ण हमको वह बन और बनबासही अच्छा है अब भी वही देना चाहिये जिसमें तुम्हारे दर्शन होते रहैं एकदिन भगवत् ने दृढ़ विचार जानेका किया और रथपर सवार होगये कुन्तीजीगईं उनकी दशा देखकर भगवत्‌को निश्चय होगया कि जो अब जाते हैं तो कुन्तीजी तन छोड़ देंगी न गये कुन्तीजी रथसे उतार लेआईं और अन्त समयमें कुन्तीजी ने भगवत्‌के अन्तर्द्धान होने के समाचार सुनतेही तुरन्त अपने देह को छोड़ दिया और जहां भगवत् रहे तहीं पहुँचीं ॥

कथा युधिष्ठिरादिकी॥

पांचों पाण्डवनमें से अर्ज्जुनकी कथा सखानिष्ठामें लिखीजायगी व राजा युधिष्ठिर व भीमसेन व नकुल व सहदेव की कथा यहां लिखी जाती है पाण्डवलोग भगवत् को ममेरे भाई जानते थे औ पूर्णब्रह्म व स्वामी भी जानते रहे और भगवत् भी वह भाव उनका अपनी कृपालुता और भक्तवत्सलता से पूर्ण करते थे अर्थात् नित प्रभातके समय ऊपरके भावसे युधिष्ठिर व भीमसेन जो वयक्रममें भगवत्से वड़ेथे प्रणाम किया करते थे और नकुल व सहदेव कि वे छोटेथे वंदना किया करते थे और कवहीं अपनी ईश्वरताका प्रकाश उनको ऐसा दिखला दिया करते थे कि वह भाव ईश्वरताका भी सदा उनको वना रहताथा और जितनी मर्याद व संकोच राजा युधिष्ठिरके साथ रही तितनी भीमसेन के साथ नहीं वरु हँसीठट्ठा भाईचारोंका हुआ करताथा विशेषकरके वहुतभोजन करने व स्थूलता व लम्बेडील पर भीमसेनको हँसा करते थे व भीमसेन जीभी जो मनमें आता सो कहते थे वृत्तान्त वोलन व चालन इत्यादि भगवत् व चारों भाइयों का वर्णन नहीं होसक्ता व्यासजी महाराज ने कुछ थोड़ासा महाभारतमें लिखाहै कि उन चरित्रोंको सुनकर असंख्य पापी जन्म मरणके दुःखसे छूटगये और छूटेंगे युधिष्ठिर महाराज धर्म्म का अवतार व भीमसेनजी पवनका और नकुल सहदेव अश्विनीकुमार देवताओं के वैद्यसे हुये जो जो संकट दुर्य्योधनकी शत्रुता करके उनपर आनपड़ा भगवत्ने कृपाकरिके सवसे रक्षाकिया पहिले तो दुर्य्योधन ने भीमसेन को विष दिलवाया और हाथ पांव बांधकर नदी में डालदिया भगवत्ने यह कृपाकी कि भीमसेनको नदी में से वरुणदेवता अपने गृह में लेगये वहां उनको अमृत व दशहज़ारहाथी का वल मिला पीछे उस के लाक्षागृहमें जलानेका उपाय दुर्य्योधनने किया तहांभी कुछ न हुआ वरु अधिक ऐश्वर्य्य व मर्याद व ख्याति का कारण पाण्डवों को हुआ अर्थात् हज़ारों राजोंकी सभामें से द्रौपदीको जीतकरलाये पीछे उसके हस्तिनापुर जो दिल्ली है तहां आयके धरतीपर जितने राजाहैं तिनसे विजयकरायके भगवत्ने राजसूययज्ञ पूर्णकराया उस यज्ञमें जव दुर्योधन की हँसीहुई उसने जुयेमें छलसे सव धन सम्पत्ति इत्यादिको जीतलिया और द्रौपदी को राजसभा में नग्न करनेको चाहा तो भगवत्ने रक्षाकी

और जब पाण्डव दुर्योधनसे वचन हारनेके कारण तेरहवर्ष वनमेंरहे तो बहुतगन्धर्व व राक्षसों को विजयकिया व अनेक प्रकारका लाभ उनको ऋषीश्वरों व शिवजी व इन्द्रादि देवताओंसे हुआ और भगवत्ने दुर्वासाके शापसे बचाया और महाभारत युद्धके समय दुर्योधन की ओर ग्यारह अक्षौहिणी दलथा और भीष्मपितामह व द्रोणाचार्य व कृपाचार्य व कर्ण व अश्वत्थामा व शल्य व सोमदत्त व जयद्रथ व विकर्ण आदि ऐसे ऐसे शूरवीर थे कि सबकोई पाण्डवोंके जीतनेका अहङ्कार रखते थे और दुर्योधन का अङ्ग अष्टधातुके सदृशथा व दुःशासन दशहजार हाथियों के बलवाला व दूसरे अट्ठानवे भाई दुर्योधनके सब बलवान् व शूरवीरथे और पाण्डवोंकी ओर पाचोंभाई पाण्डव आप और दो चार राजे दूसरे व सात अक्षौहिणी दलथा भगवत्ने उस लड़ाईकी घोर नदी से आप केवर्त्तक होकर पाण्डवोंको पार उतारा व दुर्योधनादिक की सेना व शूरवीरों समेत भग्न व नाश करदिया पीछे राजा युधिष्ठिर राजसिंहासन पर विराजमान हुये तो न्याय व धर्मपूर्व्वक प्रजापालन किया जब परमस्नेही भाई अर्थात् भगवत् के अन्तर्द्धान होनेका वृत्तान्त सुना तो उसी घड़ी राज्यको छोड़दिया और उत्तर दिशामें सुमेरुपर्व्वत के निकट बरफानेमें जाकर परमधाम को गये सो कथा पाण्डवों की विख्यात और महाभारत आदिमें विस्तार से लिखी गई है इसहेतु नाम मात्र थोड़ा लिखागया ॥ कथा द्रौपदी की ॥

॥ द्रौपदीजी परमसती की भक्ति और भावकी महिमा ऐसा कौनहै जो वर्णन करसके उस भगवत्ने कि जिसको वेद और ब्रह्माभी वर्णन नहीं करसक्ते उसके मनोरथको पूर्ण किया अर्थात् जब द्रौपदीजी ने स्मरण किया तब तुरंत आये और अपनी ईश्वरताको छोड़कर उनकी चाहको मुख्य जाना द्रौपदीजी भगवत् श्रीकृष्णस्वामीको यद्यपि मनसे पूर्णब्रह्म परमात्मा मानतीथीं परंतु भाव देवरका रखतीथीं उसभाव में रस व परम आनन्द अपार है चरित्र द्रौपदीजीका और वृत्तांत उनके जन्मका पाण्डवों की कथाकेसाथ विस्तार करके महाभारत व दूसरे पुराणोंमें लिखा है यहांभी दो एक कथा लिखीजाती हैं जब राजा युधिष्ठिर ने सम्पूर्ण राज्य द्रौपदी समेत आप व भाइयोंने जुयेमें दुर्य्योधनके हाथ हारदिया तो दुर्य्योधनने पाण्डवों को बेमर्याद करना विचारा व राजसभामें जहां

युधिष्ठिर व भीमसेन व अर्ज्जुन व नकुल व सहदेव भी बैठेथे द्रौपदी को बुलाकर दुःशासनको नग्नकरने के वास्ते आज्ञादी व भीष्मपितामह व द्रोणाचार्य इत्यादि इसविचारसे कि द्रौपदीजी भगवद्भक्त हैं दुष्टता व अनीति दुष्टों की नहीं चलसकैगी अथवा दुर्योधनके डरसे कुछ मना न करसके और युधिष्ठिर आदि धर्म्मको विचारिके न बोले और द्रौपदीजी उससमय स्त्री धर्म्म के कारण केवल एकसारी पहिने हुये थीं दुःशासन दुष्ट वस्त्रखींचने को जब तैयारहुआ तब द्रौपदीजी ने भक्तवत्सल दीनबंधु प्रणतार्त्तिभञ्जन कृपासिंधु अपने देवरका स्मरण किया और लज्जा रखनेवाले महाराज कि सदा सर्व्वकाल अपने भक्तों के सहायके हेतु समीपही बनेरहते हैं आन पहुँचे व द्रौपदीकी सारी वामन महाराजके शरीरके सदृश अथवा कुरुक्षेत्रके तुलादानके सदृश अथवा भगवत् अर्पित कर्म्म के सदृश अथवा नारायणके नाभिनालके सदृश बढ़नेलगी इतनी बढ़ी कि दुःशासन जो दशहज़ार हाथियों का बल रखताथा खींचते खींचते हारगया व एक नख भी द्रौपदी का नग्न न हुआ सब दुष्ट लज्जित होरहे और उसी समय उन पापियों से राज्य व धर्म्म व बुद्धि व बड़ाई व आयु व सम्पत्ति इत्यादिने बिदा मांगी ॥

दो० कहा करै बैरी प्रबल जो सहाय यदुबीर ।
दशहज़ारगजबल छुट्यो घट्यो न दशगज चीर॥

क० दुर्जन दुःशासन दुकूल गह्यो दीनबंधु दीनह्वैकै द्रुपददुलारी यों पुकारीहै ।
आपनो सबलछाड़ि ठाढ़ेपतिपारथसे भीममहाभीम ग्रीवानीचे कारिढारी है ॥
अम्बरलौं अम्बरपहाड़कीन्हों शेशकवि भीषम करणद्रोण सबी यों विचारी है।
सारीमध्यनारीहैकिनारीमध्यसारी है किसारीहैकिनारी हैकिनारी हैं किसारी है॥

यहां एकशंका यहहै कि भगवत् बिना पुकारे आपसे आप सहाय करते उन्हों ने किसहेतु धैर्यको छोड़कर भगवत् से सहाय चाही सो एक उत्तर तो प्रेमसे भरायहहै कि भगवत् से और द्रौपदी जी से जब हँसी की बातैं व छेड़छाड़ होती थी तो कबहीं भगवत् निरुत्तर होजाते थे और कबहीं द्रौपदी जी जब यह संकट आनिपड़ा तो द्रौपदीजी ने इसहेतु श्रीकृष्ण स्वामी को स्मरण किया कि जो आप से आप बिना स्मरण व पुकारे भगवत् की सहाय हुई तो मेरा परमस्नेही देवर सदा मेरे व्यंग्य वचनसे निरुत्तर होजाया करेगा कि नः— वस्त्र खींचता

था तब सहायको नहीं आयेथे तो उसीको पुकारना चाहिये कि जिसमें वह निरुत्तर न हो और मुझीको अपने उपकार से संकुचित करके व्यंग्य वचन बोलाकरे कि राजसभामें कैसीभई दूसरे यह कि द्रौपदीजी भगवत् को स्मरण करके वचन मारती हैं कि तुम अपने राज्य व बड़ाईकी बड़ाई करके हमको वचन मारते रहे अब देखो कि तुम्हारी भावज को दुष्ट लोग किसप्रकार से बेवस्त्र किया चाहते हैं तीसरे यह कि द्रौपदी जी भगवत् का स्मरण करके सबभक्तों को शिक्षाकरती हैं कि भगवत् के स्मरण करने से वस्त्र जो जड़पदार्थ है अनन्त होजाताहै तो जीव उस के स्मरण से अनन्त व अच्युत क्यों न होजायगा चौथे अपने पतिन को धैर्य देती हैं कि भगवत् के स्मरणसे कौन ऐसा संकट है कि दूर न होगा पीछे दुर्य्योधनने पाण्डवों के बारहवर्षको वनबास और फिर एक वर्ष गुप्तरहने को निश्चय विचार किया सो वनको चले सिवाय शस्त्रों के दूसरी सामग्री कुछ खानेपीने की पास न थी सूर्यनारायणने एक टोकनीको प्रसन्न होकरदिया चमत्कार उसका यह था कि जबतक द्रौपदी जी भोजन न करलेती थीं तबतक सब प्रकारकी सामग्री भोजनकी जो चाहना होती उसमें से निकलती थी और जब द्रौपदीजी भोजनकर चुकती थीं तब बन्दहोजाती थी एक दिन दुर्वासाजी दशहजार चेलों समेत दुर्य्योधन के कहने से ऐसे समयपर आये कि द्रौपदीजी भोजन करचुकी थीं युधिष्ठिर महाराज ने भोजनके वास्ते विनय किया दुर्वासा जी ने कहा कि स्नान करआवैं तब भोजन करैंगे यह कहिकर स्नान करने को गये व राजायुधिष्ठिर ने द्रौपदीजी से कहा कि तुम भोजन न करना दुर्वासाजी का शिष्टाचार है द्रौपदीजी ने विनय किया कि मैंने तो भोजन करलिया राजायुधिष्ठिर यह वचन सुनतेही अचेत व बेसुधि होगये और रोदन करने लगे कि अब किसप्रकार मर्याद रहैगी और दुर्वासा के शापसे कैसे बचेंगे द्रौपदीजी ने जो यह दशा राजाकी और भीम व अर्ज्जुन आदिकी देखी तो अतिदृढ़ विश्वास व भक्तिसे कहने लगीं कि तुम क्यों ऐसे दीन व अधीर होतेहो वह श्रीकृष्ण तुम्हारा भाई परमस्नेही क्या कहीं दूरहै कि इस समय सहाय न करैगा और यह कहकर द्रौपदीजी ने श्रीकृष्ण स्वामीको स्मरण किया भगवत् तुरन्त द्वारकासे रुक्मिणीजीको छोड़कर आनपहुँचे मानों उसीजगहथे सबसे

मिलनेपीछे द्रौपदीजी की ओर देखकर कहा कि भूखलगी है कुछ भोजन को लावो द्रौपदीजी ने कहा कि यहां पहिले से एकके वास्ते सब शोचमें पड़ेहैं यह दूसरे नये भूखेआकर पधारे मेरे घर कुछ खानेपीने को नहीं है भगवत् ने कहा कुछ थोड़ासा लेआवो द्रौपदीजी ने कहा कुछनहीं है वड़ी बेरसे टोकनी मांज धोकर रक्खी है भगवत् ने युधिष्ठिरकी ओर देखकर कहा कि यह पुर्वियेकी बेटी भूखे घरकी ऐसीभूखी मिलगई है कि जब हम भोजन मांगते हैं बिना नहीं किये कवहीं नहीं देती है अच्छा वह टोकनी उठाय लेआवो हम आप ढूंढ़लेंगे द्रौपदीजी टोकनी उठायले आई और भगवत् के सामने रखकर कहा कि जो आपही ढूंढ़ लेवैंगे तो यहां किसका निहोरा है भगवत्ने एक पत्ता सागका उसमें कहीं लगाहुआ पाया उसको निकाल द्रौपदीजी को दिखाया कि देखो यह क्या है द्रौपदीजी बहुत हँसीं और कहा कि यह कृष्ण साग इत्यादि से रुचि मानरहा सोई ढूँढ़लिया भगवत् उस सागके पत्तेको अपनी हथेलीपर रखकर भोजन करगये और थोड़ासा जलपिया कि उसीक्षण त्रिलोकी तुष्ट व तृप्त होगई और दुर्वासाजी की तो यह दशाभई कि पेटके भरने से उठने की सामर्थ्य न रही और फिर जो विचार किया कि क्या कारण इस भांति पेटके अफरनेका है तो भगवद्भक्तोंका प्रताप अपने मनमें समझकर औ राजा अम्बरीषके कारण जो कष्ट उठाया उसको स्मरण करके राजा युधिष्ठिरसे विनाकहे छिपकर भागगये भीमसेन ढूँढ़आये कहीं पता न लगा ऐसे चरित्र द्रौपदीजीके अनेकहैं क्या सामर्थ्य किसीको है जो लिखसके॥

इक्कीसवीं निष्ठा॥

जिसमें महिमा शरणागती व आत्मनिवेदन और दशभक्तों की कथा वर्णन है॥

श्रीकृष्णस्वामी के चरणकमलोंकी छत्र चमररेखाको दण्डवत् करके मन्वन्तर अवतारकी वंदनाकरताहूं कि बिठूरमें वह अवतार धारणकरके सबधर्म्मोंका प्रकाशकिया शरणागति व आत्मनिवेदनकी महिमाके पहिले एकबात यह लिखनेके योग्यहै कि जो भक्त बन्दननिष्ठाके उपासक हैं सो भी इसनिष्ठामें लिखेजायँगे हेतु यहहै कि वास्तव करके बन्दनसे अभिप्राय वारिजाने अर्थात् निछावरहोनेकाहै और बन्दन और शरणागतिमें केवल इतनाही भेदहै कि बन्दन तो बाहर निछावर और अ-

र्पणहोनेको कहते हैं और शरणागति बाहर व भीतर दोनोंको अर्पण और भेंट करनेका नाम है जिसप्रकार कीर्त्तन व स्मरण कि कीर्त्तन तो उसको कहते हैं कि जो भगवत्का नाम और भजन केवल मुखसे होय और स्मरण उसका नामहै कि जो मनसेहोय वास्तवमें दोनोंबातका तात्पर्य एकही है मनसे होय अथवा वचनसे सुरति बनीरहै इसहेतु स्मरणभी कीर्त्तन निष्ठामें मिलायके लिखागया है इसीप्रकार वन्दननिष्ठाको भी शरणागतिसे मेल कियागया और यहभीमालूमरहै कि शरणागति और आत्मनिवेदन एकबातहै कि इसका वर्णन इसीनिष्ठा में विस्तार करके होगा कोई उपासकलोग विशेषकरके रामानुज सम्प्रदायवाले भगवत् के प्राप्तहोने का हेतु मुख्य शरणागति को मानते हैं और कहते हैं कि भगवत् दो प्रकार से मिलता है एक तो भक्तिसे दूसरे शरणागति से सो भक्तिके योग्य तो वे लोग हैं कि जिनको अपने परिश्रम व उपायका भरोसा दृढ़होय कि इस जन्म में अथवा दश के पचास जन्म में अपने पुरुषार्थ अर्थात् भगवत् आराधन इत्यादिसे निश्चय भगवत्को प्राप्त होंगे और भजनके विश्वाससे यमराज इत्यादिका कुछ भय नहींरखते और जो इस जन्म में उनका मनोरथ पूर्ण न हो तो होनेवाले जन्मोंसे आगे को यह भय नहीं कि हमको भगवद्भक्ति न होगी भगवद्गीता के वचन के अनुसार कि अनेक जन्ममें सिद्धिको प्राप्तहोकर परमगतिको जाता है दूसरा वचन यह कि हे अर्जुन मेरे भक्तका नाश कहीं नहीं होता ऐसेऐसे वचन सैकड़ों व हज़ारों भागवत व गीता व दूसरे पुराणों के हैं व शरणागति वह वस्तु है कि जिससमय भगवत् में दृढ़विश्वास करके शरण हुआ और इसलोक व परलोक का बोझ भार भगवत्पर डालदिया उसीघड़ी से उस जनको न किसी उपाय का प्रयोजन है न पुरुषार्थ का और जो कुछ पुरुषार्थ और उपाय का भरोसा रहा तो उसके शरण होने में कचाई है वरु उसका नाम शरणागती नहीं व न शरणागती का फल उसको मिलता है जिसप्रकार हनुमान् जी को इन्द्रजीत रावण के बेटे ने ब्रह्मफांस में कि वह एकपतरी रस्सी थी बांधलिया तो और कुछ उपाय न किया और उसको विश्वास रहा कि इस ब्रह्मफांससे कबहीं न छूटेगा उसके विश्वासके अनुसार हनुमान्जी बँधेरहे जबवह विश्वास छूटगया अर्थात् मोटे २ रस्सोंसे हनुमान्जीको

बांधा तो हनुमान्जी उस ब्रह्मफांस और रस्सोंको तोड़कर निकलगये इसी प्रकार भगवत्शरण होकर कुछ और भी विश्वास मुक्ति के हेतु समझा तो शरणागति का रूप कहां बाकी रहा॥ भक्तिमार्ग के चलने वालों का यह सिद्धान्त है कि श्रवण कीर्त्तन इत्यादि जो भगवद्भक्ति है उनमें प्रेम व स्नेहका होना विशेष चाहिये जब वह प्रेम परिपक्क और दृढ़ताको पहुँचजायगा सोई फलहै उससे आगेपर कुछ करतव्य शेपनहीं रहता व न किसी साधनका प्रयोजन॥ अब निर्णय इस बातका उचित हुआ कि शरणागति व आत्मनिवेदनमें क्या भेदहै जो कुछ भेद नहीं तो शरणागति व भक्तिमार्गवालों को आपुसमें बोलचाल क्याहै सो जाने रहो शरणागति और आत्मनिवेदन एक बातहै और उसीको प्रयत्ति व न्यास और त्याग कहते हैं जिसप्रकार घड़ेके कईनाम कलश व कुम्भ व घटहै इसीभांति उस शरणागतिके कईनाम जो ऊपर लिखे हैं सो हैं केवल एक वचनका भेद उनमें यहहै कि भक्तिमार्गवालों ने तो शरणागतिको एक अंग भक्तिका समझा अर्थात् यह कहते हैं कि भगवत शरण होकर दास्य अथवा वात्सल्य अथवा शृङ्गार अथवा श्रवण वै कीर्त्तन इत्यादि भक्तिका करना योग्य है कि उस भक्तिसे उद्धार होगा और शरणागति के उपासकों में शरणागतिही को उद्धारके हेतु मुख्य समझा और कहते हैं कि शरणागति के ऊपर प्रयोजन और किसीबात का नहीं शरणागतिही सबकाम दोनों लोकका करदेती है सो यह सिद्धान्त दोनों मार्गवालों के निश्चयका लिखागया परन्तु जब कि शरणागतिके उपासना वालोंको विनासेवा पूजा श्रवण कीर्त्तन इत्यादिके शोभा नहीं व न श्रवण न कीर्त्तन के उपासकों को बिना शरणागतिके दूसरा कुछ उपायहै इससे बोलनेका भेद जो ऊपर लिखा सो भेद नाम मात्र व विश्वास के बढ़ावने के वास्ते है महिमा बड़ाई शरणागति निष्ठाकी किससे लिखीजाय कि सबप्रकार की भक्तिकासार मेरी शरणागति है भगवत् ने चौथे स्कन्ध पुरंजनकी कथामें कहा है कि सख्य व आत्मनिवेदन को मैं आप शिक्षा करताहूं इससे निश्चयहुआ कि सबप्रकार की भक्तिकासार व फल शरणागति अर्थात् आत्मनिवेदन है जहांतक जो मन्त्र देखने में आते हैं सबमें शरणागति को मुख्य रक्खाहै विवर्ण उसका यहहै कि कोई मन्त्रों में तो खुलाहुआ पद शरणागतिका लिखा

है कि मैं श्रीकृष्णकी नारायणकी रामचन्द्रकी शरणहूं और कोई मंत्रोंमें नमःपद लिखाहै और नमःके अर्थ दण्डवत् और वन्दन करनेके हैं और वन्दनाका तात्पर्य्य अर्पण अथवा भेंटकै निवेदन करना शरीरसे है कि जिसको वारीजाना व निछावर होना कहते हैं तो जब कि दण्डवत् करना और शरणागति व आत्मनिवेदन एकही बातहै और एकही परिमाण है तो निश्चय होगया कि सब मन्त्र भगवत् शरणागतिको वर्णन करतेहैं और शरणागतिही सर्वत्र मुख्यकरीगई और जब कि सबप्रकार की भक्ति और उपासना का निश्चय केवल मन्त्रके ऊपर है और मंत्रों से शरणागति की बड़ाई दृढ़हुई तो शरणागति को सब उपासना और सब भक्तिमार्गों में मुख्यतर होनेमें क्या सन्देहरहा और सब उपासना और निष्ठाओं में शरणागति की बड़ाई इससे भी दृढ़हुई कि भगवत्ने गीताजी में कहाहै कि जो मेरे शरणहोते हैं सो मेरी मायाको तरते हैं जब भगवत् श्रीकृष्णस्वामी ज्ञान और भक्ति व वैराग्य व योग व कर्म का उपदेश अर्जुनको करचुके तो आज्ञाकी कि जो सबसे अत्यन्त गुप्त-तम बातहै सो परम वचन मेरासुन तुझसे कहताहूं काहेसे कि तू मेरा प्यारा सखा और बुद्धिमान्है सब धर्मोंको छोड़कर मेरे एकके शरणहो मैं तुझको सब पापोंसे तुरन्त छुड़ादूंगा शोच मत करै और इस शर-णागति उपदेश के पीछे और कोई उपदेश नहीं किया तो प्रतीति हो-गई कि सब धर्म्मोंका परिणाम पदवी व तात्पर्य्य शरणागतिहै इसके आगे अब और कोई भागवत धर्म नहीं और सब भक्ति आपसे आप शरणागतिसे प्राप्त होजाती हैं अथवा उसके अंगहैं॥ जब विभीषण भग-वत् शरणआया तो सुग्रीवआदिने उसको बन्दी में डालनेका सम्मतकिया भगवत्ने कहा कि जो कोई मेरी शरण होकर यह कहताहै कि तेराहूं उस को सम्पूर्ण लोकनसे निर्भय करदेताहूं यह प्रतिज्ञा मेरी है यह अर्थ वाल्मी-कीय रामायणके श्लोकका है और यह दोनों श्लोक अर्थात् गीताजी के अंतके और वाल्मीकीयरामायणके मंत्रोंमेंभी गिनेजाते हैं॥ सो इनभगव-द्वचनोंसे अच्छेप्रकार सिद्धान्त होगया कि शरणागतिही उद्धारके वास्ते समर्थहै इसके सिवायशास्त्रोंसे प्रसिद्धहै कि गज और विभीषणनेकोई सा-धननहीं किया केवल भगवच्छरण हुयेथे कि उसके प्रभावकरके दोनोंलोक के अर्थको प्राप्तहुये॥ जगत्में प्रसिद्ध चाल देखने में आती है कि कैसेहूं

पापी और नीच किसीकी शरणजाताहै तो उसके अवगुण और अन्याय पर कदापि दृष्टि नहींजाती सबसे पहिले उसके कार्यसिद्धहोने पर दृष्टि होती है इसीप्रकार यहजीव सब भरोसे को छोड़कर जो भगवत्शरण होगा तो वह परमात्मा कि जो सबरीतों का जाननेवाला है क्यों नहीं दोनोंलोकका मनोरथ पूर्णकरैगा सो विचार व दृष्टांत व रीति व प्रमाण से अच्छेप्रकार निश्चय होगया कि भगवत्शरणागति उद्धारके वास्ते आप समर्थ व स्वतंत्र हैं दूसरे किसी साधन का प्रयोजननहीं सो उस शरणागतिका वास्तवरूप तो यह है कि दोनों लोकके प्राप्त की चिन्ता व शोच अपने शरीर से दूरकरके और सब बोझ व भार अपना भगवत् के ऊपर डालकर अपने आपको भगवत् के समर्प्पण करदेना और हरघड़ी यह विश्वास दृढ़ बनारहना कि भगवत् शरणागति से इसलोक और परलोक के सब काम आपसे आप होजायँगे मेरी चिन्ता आप भगवत् को है और जिससमय जो भगवत् शरण होताहै अनेक जन्मों के पाप उसीसमय दूरहोजाते हैं परन्तु कोई इसशरणागति में छः प्रकार के विवर्ण करते हैं ॥ प्रथम यह कि शरणागति के समय से जो भागवत धर्म शास्त्रों में लिखे हैं उनका आचरण करना दूसरे जो भागवतधर्म्म से विरुद्ध धर्म्म हैं और शास्त्रों में उनका निषेध लिखाहै उनका त्याग करना और भगवद्भक्तों में प्रीति और सेवा का होना ॥ तीसरे यह विश्वास दृढ़ रखना कि मैं जो भगवत् के शरणागत हूं भगवत् मेरे सब अपराधों को अवलोकन न करके निश्चय क्षमा करेंगे चौथे यह कि सिवाय एक भगवत् के दोनों लोकमें किसी को रक्षा व कल्याण के वास्ते स्वप्न में भी न समझना ॥ पांचवां यह कि भगवत् की मूर्त्ति जैसे शालग्राम इत्यादि अथवा मानसीस्वरूप भगवत् के आगे खड़ाहोकर अपनी दीनता और अपराध वर्णनकरना कि हे प्रभु मैं अपराधी व दीनहूं सिवाय आपके मेरा कुछ ठिकाना और आसरा नहीं सो आप पतितपावन दीनवत्सल हैं तो यह एक सम्बन्ध भी आपसे रखताहूं कि मेरे से अधिक पतित और दीन कोई नहीं मेरा उद्धार आप से होगा ॥ छठवां अपने आत्मा अर्थात् अन्तर व बाहर की ममता सब भगवत् समर्प्पण करदेना सो इसप्रकारकी शरणागति निस्सन्देह विना दूसरे किसी साधन के इस संसार समुद्र से एक क्षण में पार उतार

देवैगी ॥ हे श्रीकृष्णस्वामी हे दीनवत्सल हे पतितपावन हे अधम उ-द्धारण महाराज जैसाहूं आपका हूं मेरे ऊपर भी कृपाकी दृष्टि होय कि आपका चिन्तवन दिन रात करतारहूं जो स्वरूप वैकुण्ठका धामनिष्ठा में लिखाहै उसके मध्य में निजधाम भगवत् के विहारकाहै कि हजार खम्भ उसके हैं और सब द्वार व दीवार उसके प्रकाशरूप दिव्य मणिन से जड़े हुये हैं उसके बीचमें सहस्रदल कमल और सब दल मंत्ररूप हैं अर्थात् जितने देवताओं के मंत्र उन दलोंपर चिह्नित व अंकित हैं उनके ऊपर शेशजी महाराज मसनन्द की भांति हैं और शेशजी के ऊपर श्रीलक्ष्मीनारायण परमशोभा और माधुर्यके धाम विराजमान हैं भगवत् के स्वरूप और प्रकाश परम देदीप्यमान के आगे करोड़ों सूर्य व चन्द्रमा जो एकसंग उदयहोकर एकवेर प्रकाशकरें तो करोड़वांअंश को नहीं पहुँचे चरणकमलों के नख कि जिनका शिव और ब्रह्मादिक ध्यानकरके कृतार्थ होते हैं और उनको मुक्तिकास्थान शास्त्रों ने लिखाहै ऐसे प्रकाश करनेवाले हैं कि मानों भक्तों के हृदय को प्रकाशकरने के निमित्त कोटिन महामणिके पुंजहैं और चरणतलसे उन चरणोंकी ऐसी लालीहै कि जितनी ज्योति और शोभा सब ब्रह्माण्डों में है उसीसे प्रकट हुई है और ऊपरसे ऐसी मनोहर शोभा उन चरणोंकी है कि सब शोभा उसी सम्बन्धसे है कड़े और घुंघुरू विराजमान पीताम्बर धारण किये हुये उसपर क्षुद्रघंटिका यज्ञोपवीत शोभायमान मणिगण और तुलसी मंजरी और फूलों की माला कौस्तुभमणि कण्ठमें ऊपर भँवर गूंजरहे हैं चारोंभुजनमें कड़े पहुँची बाजूबन्द आदि आभूषण व शंख चक्र गदा पद्म शोभायमान मुखारविन्द देदीप्यमान और भालपर तिलक शोभित मकराकृत कुण्डल कानोंमें शिरपर किरीट मुकुट पीताम्बर आदि की मनमोहनी पहिरन श्रीवत्सचिह्न वक्षस्स्थलपर और आप लक्ष्मी जी वामभागमें वैसीही शोभा से विराजमान चरणसेवामें और विष्वक्सेन आदि पार्षद कैंकर्य में तत्पर ॥

कथा अक्रूरकी ॥

अक्रूरजीको शास्त्रोंने वन्दननिष्ठाके उपासकोंमें लिखाहै यदुवंशि-योंमें सुफलकके पुत्र पवित्र थे यद्यपि उनके रहने का संयोग महाकुसंग अर्थात् कंसके राजकाज में था परन्तु वे भगवच्चरणों में विश्वास दृढ़

रखतेथे इसहेतु वह कुसंग कुछहानि नहीं करसक्ताथा वरु उन कुसंगियोंको अक्रूरजी का चरण श्री व आयुर्बलका कारण था जब कंसने श्री व्रजचन्द्र महाराजके ले आनेके हेतु अक्रूरजीको भेजा तो अतिआनन्द से तनमें न समाये इस आशासे कि इसवहाने से उन चरणकमलोंको देखूंगा कि जो शिव और ब्रह्मादिकके स्वामी और नायकहैं और उस चन्द्रमुखको देखकर मेरी आँखें शीतल और सफलहोंगी कि जिसकेहेतु सब व्रजसुन्दरी चकोरसी होकर अनूपरूप सुधाके पानसे तृप्त नहीं होतीं और जब दण्डवत् करूंगा तो उन हस्त कमलोंसे मुझको उठा कर हृदयसे लगावेंगे कि जिनकी छाया कल्पवृक्षके सदृश सदा भक्तोंके शिरपर रही है ऐसे मनोरथ करतेहुये जब श्रीवृन्दावनके निकट पहुँचे तो व्रजभूषण महाराज के चरण कमलोंके चिह्नको पहिचानकर प्रेम व स्नेहके आनन्दसे अत्यन्त वेसुधि होगये और उन चिह्नों को अपना स्वामी व इष्टदेव जानकर साष्टांग दण्डवत् किया उसी प्रेम और उमंगमें भरेहुये जहां जहां चरणचिह्न देखे तहां तहां दण्डवत् की और प्रेमके मदमें छकेहुये श्रीनन्दजी के घरपहुँचे श्रीभक्तवत्सल महाराजने उनके हृदयकी प्रीति पहिचानकर उनकी चाहना पूर्ण करी और अति भाव से बलदेवजी सहित उनसे मिले जब प्रभातको नंदजी महाराज और बाल गोपालों समेत चलकर श्रीयमुनाजी पर पहुँचे तो अक्रूर जीको प्रेमवश यह सन्देहहुआ कि श्रीकृष्ण महाराज और बलदेव जी परम सुकुमार और शोभायमान बालक हैं मैं बड़ी मूर्खता करताहूं कि निर्दय व महाबलवान् मल्लों के झुण्ड में कंसकी सभा में लेजाता हूं श्रीज्ञानराय महाराजको यह संदेह दूर करना उचित मालूमहुआ और जब अक्रूरजी स्नान करनेलगे तो यह चरित्र देखा कि कईबेर भगवत् को बलदेवजी और सब समाज सहित यमुनामें और बाहर रथपर देखा और फिर यह देखा कि आप भगवत् शेशशय्यापर श्यामसुन्दर स्वरूप किरीट मुकुट मकराकृतकुण्डल व सब आभूषण सब अंगन में कौस्तुभमणि और पीताम्बर पहिनेहुये शंख चक्र गदा पद्म हाथों में लिये विराजमान हैं ब्रह्मा शिव यम काल यक्ष राक्षस गन्धर्व आदि भय व त्रासयुक्त चारोंओर खड़े स्तुति करते हैं और वह देखा जो कबहीं न सुनाथा अक्रूरजी का संदेह तुरन्त दूर होगया और यमुनाजी से बा-

हर आकर अतिप्रेम से दण्डवत् किया और मथुरा को चले कंस के वध होने पीछे आप भगवत् ने उनके घर चरण ले जायके और भक्ति का वरदेकर कुलपरिवार के समेत कृतार्थ करदिया जब भगवत् द्वारका को पधारे तो यादवों को अक्रूरजी के प्रताप और भक्ति के न जानने के कारण से वे विश्वासी और शत्रुता होगई और स्यमन्तकमणि के वृत्तान्त में भगवत् की आज्ञानुसार अक्रूरजी काशी को चलेगये उसी घड़ी द्वारका में ऐसा उपद्रव उठा और दुर्भिक्षपड़ा कि सबदीनहोगये और जब अक्रूरजी आये तब सब उपद्रव शांतहुआ एक और भक्ति का प्रताप विचारने व लिखने के योग्य है कि स्यमन्तकमणि ऐसा था कि आठभार सोना नित्य आपसे आप जहांरहै तहां जमाहोजाय और दरिद्रता आदि कोई उपद्रव तहां निकट नहीं आता परन्तु दोष भी उसमें ऐसा था कि जहां रहा तिसकी हानि को किया अर्थात् पहिले सत्राजित मारागया जब उसका भाई लेकर भागगया तो वह भी मरा जब जाम्बवान् के पासगया तो वहां भी यद्यपि भक्त होने के कारण से जाम्बवान् से बहुत उपद्रव न करसका तौ भी जाम्बवान् को पराजय प्राप्तहुई तब आप भगवत् के पासगया तो भगवत् से बलदेवजी को सन्देह उत्पन्न होगया जब अक्रूरजी के पासगया तो उसका सब दोष दूरहोगया और पूर्णफल मंगल हुआ ऐसे चरित्रों से भगवत् अपनी भक्तिका प्रताप दिखाते हैं नहीं तो सब कोई जानता है कि भगवत् एक निमिष में कोटिन ब्रह्माण्ड प्रकट करके फिर नाश करता है तिसको गुणदोष से क्या प्रयोजन॥

कथा विंध्यावली की॥

विन्ध्यावली राजाबलिकी पटरानी परमभक्त और पतिव्रताहुई जिस घड़ी राजाबलिसे वामनजीने तीनडग धरतीकी याचनाकरी और शुक्र जी ने समझाया कि ये विष्णु नारायण हैं उस घड़ी यह रानी निर्भर प्रेममें मग्न होगई और अपने और राजाके भाग्यकी बड़ाई करतीहुई लोटाका जल लेकर बारबार राजा से कहनेलगी कि संकल्प करो करो और कारण कहने का यह था कि ऐसा न हो कहीं शुक्रजी के कहने से राजाका मन दान से फिरजाय संकल्प होने के पीछे जब भगवत् ने दो डग से दोनोंलोक नापलिये तो तीसरे डग के हेतु राजाको बांधा रानी

को उस घड़ी राजाके बँधने का शोच व दुःख तनक न हुआ वरु यह आनन्दहुआ कि राजा बड़ा भाग्यवान् है कि उसको भगवत् के चरणों और हाथों का स्पर्शहुआ और फिर भगवत् से विनय करनेलगी कि हे नाथ हे कृपासिन्धु आपने दया व करुणा जो कुछ इस राजापरकरी सो किसप्रकार वर्णन होसके कि एक राज्य व धन के अभिमानी को आप निजपधार के दर्शन दिया और कुल परिवार समेत पवित्र कर दिया पीछे रानी ने विचारा कि राजाका राज्य व धन भगवत्‌भेंट होकर सफल होगया परन्तु मुझको और राजाको देह अभिमान बाकी है सो यह भी जो भगवत् अर्पण होजावे तो आगे पर के देह के होने का बखेड़ा मिटजावे इसहेतु जब राजा ने अपने शरीरके नापलेने वास्ते कहा तो रानी ने भी विनय किया कि महाराज मेरा अंग शास्त्र वचन के अनुसार आधा अंग राजाका है सो राजाका व मेरा शरीर एकडग के बदलेमें नापलीजिये भगवत् ने जब यह प्रेम रानी का आत्मनिवेदन में देखा और राजाके दृढ़ विश्वासपर निगाहको किया तो उसकृपा को किया कि जिसका वर्णन नहीं होसक्ता कि उसका थोड़ासा वृत्तान्त राजावलि की कथा में लिखागया कि वह कृपा भगवत् की रानी की परम भक्ति और आत्मनिवेदन के कारणसे हुई ॥

कथा विभीषण की ॥

विभीषणजी विश्वश्रवाके बेटे पुलस्ति के पोते ऐसे परमभक्तहुये कि शास्त्रों में परम भागवत लिखेगये और प्रभातही उनके नाम लेनेसे मङ्गल व कुशल होताहै बाल्यअवस्थाही से भगवच्चरणों में प्रीतिरही जब अपने भाई रावण व कुम्भकर्ण के साथ तपकिया तो वरदान के समय ब्रह्मा और शिवजी से भगवद्भक्ति को मांगा जिनका चरण लङ्का में रावणआदि राक्षसों की सम्पत्ति व आयुर्बलका कारण था सो रावण को जब विभीषणजी ने त्यागकिया तबही तुरन्त लङ्कापर विध्वंस आन पहुँची और रावण आदि सब राक्षस मृत्युके ग्रासहुये सूक्ष्म वृत्तान्त यहहै कि जब रघुनन्दन महाराजकी सेना समुद्रके किनारेपर पहुँची तो रावणने अपने सब मंत्रियों से मंत्र पूछा विभीषणजी ने जो धर्म्म और नीतिके ज्ञाताथे कहा कि कुशल तो इसी में है कि सीताजी को भगवत् के समर्पण करो और विनय और प्रार्थना सहित चरणगहो

व संधिकरो नहीं तो विग्रह बढ़ने से लङ्काकी और तुम्हारी और सब राक्षसों की कुशल नहीं है रावणको यह मन्त्र अच्छा न लगा और क्रोध करके राजसभा में एकलात मारी और कहा कि जिसकी वर्ग व पक्ष तू करताहै उसीके पासजा विभीषणजी ने फिरभी साधुता की रीतिसे उसके कल्याणकी शिक्षाकरी परन्तु जब सबप्रकार भगवत् से विमुख निश्चय करलिया तब उसका त्यागकरके भगवच्चरणों के शरण में चले राहमें यह मनोरथ करते आतेथे कि आज मैं उन चरणकमलों को दण्डवत् करूंगा कि जो शिव और ब्रह्मादिकके भी इष्टदेवहैं और उसरूप अनूप को देखूंगा कि जिसको योगीजन समाधि लगाकर ध्यान करते हैं जब समुद्रके इसपार आये तो श्रीरघुनन्दन स्वामीको समाचार पहुँचे विनय निवेदन होने पर आनेकी आज्ञा दी सुग्रीवने विनय किया कि शत्रुका भाई है न जानें उसके मनमें क्याहै अच्छा यह है कि बांधि लियाजाय रघुनन्दन स्वामीने हँसके कहा यद्यपि तुमने राज नीतिकी बातकही परन्तु मेरा प्रण शरणागत के भयको दूरकरने का है जो कोई दोनोंलोकके सब्पापों में फँसाहै और भयभीत होकर मेरे शरण आकर एकबेर यह कहताहै कि मैं तुम्हारा हूं उसीघड़ी दोनों लोक के भयसे निर्भय करदेताहूं तो जो शरण आयाहै और बांधाजाय तो मेरे प्रण में भंग होगा और जो कपट करके आयाहै तो तौभी कुछ चिन्ता नहीं कि लक्ष्मणजी एकक्षण में सारे संसारके राक्षसोंका संहार करसक्ते हैं सो हरप्रकार से उसका आना उचितहै यह सुनकर हनुमान् व अंगद व जाम्बवन्त आदि दौड़े और बड़ी रीति व मर्याद से लेआये विभीषणजी ने दूरसेही धनुषबाणधारी के शोभायमान मुखकी शोभा देखकरके दोनोंलोकके दुःख व पीड़ाको विदाकिया और साष्टांग दण्डवत् करके अतिदीनता से पुकारकर यह शब्द कहा कि हे शरणागत वत्सल शरणहूं शरणपाल महाराज उस शब्दके सुनतेही उठे और छाती से लगालिया और वार्त्तालाप होनेपर यद्यपि भगवद्दर्शन प्राप्त होने से विभीषणजीको कुछ कामना संसारके विषयकी नहीं रही परन्तु दर्शन करने के आगे जो कुछ चाहना उनके मनमें रही उसका पूर्ण कारण भगवत् ने निश्चय समझा इसहेतु वहराज्य लङ्काका कि जिसको रावण ने हजारों बार अपने मस्तकको भेंट कर करके शिवजी से पायाथा उसी

घड़ी विभीषण को प्रसन्न होकर देदिया और समुद्रका जल मँगाकर राज्य तिलक करादिया रावणके वध होने पीछे जब विभीषणजी राज्य लङ्काका करनेलगे तो वहही लङ्का जो पहिले पाप और अपराधों से भरी हुई थी सो धर्म और भक्तिको रूप होगई विभीषणजी को रामनाम में इतना विश्वासथा कि थोड़ासा वृत्तान्त उसका यहहै कि एकजहाज किसी सौदागरका समुद्रमें चलने से रुकगया जहाजके मालिकने अपने मंत्रियों के कहनेसे एक आदमी को समुद्रकी भेंट करके समुद्र में डालदिया वह विचारा डूबता उतराता बहता लङ्काके किनारे जायलगा वहांके लोग विभीषणजीके पास उसको लेगये कि विभीषणजी इस विश्वाससे कि ऐसेही आकार और स्वरूप मेरे स्वामीके हैं उसको भगवद्रूपजाना और प्रेमसे सेवा पूजा करके सिंहासन पर बैठाला बड़ी मर्याद से रक्खा वह आदमी राक्षसोंके सङ्गसे डरकर नित्य बिदा मांगै तब विभीषणजीने उसको बहुत रत्नदेकर बिदाकिया और समुद्रसे पार होने के वास्ते उसके भालमें रामनाम लिखदिया वह मनुष्य उसी रामनाम की नौकापर समुद्रमें ऐसे सुखसे चला कि जहाजमें भी ऐसा सुख न था संयोगवश उसी जहाजके निकट पहुँचा और जहाजवालोंने चढ़ालिया उसने सबवृत्तान्त और भक्ति विभीषणजीकी और रामनामकी महिमा को जहाजवालों से वर्णन किया वे लोग सब विश्वासयुक्तहुये और उस नामको जपकर कृतार्थ होगये निश्चय करके यह नाम मंगल रघुनन्दन स्वामी का वहहै कि जिसके प्रभावसे शिला समुद्र पै तरगई पापी और पातकी जितने इस संसार से उतरे हैं उनकी तो कुछ गिनती ही नहीं और विभीषणजी ने भी यही समझकर उसके भालपर रामनाम लिख दिया कि करोड़ों महापातकी संसार घोरसमुद्रको उतरगये तो एक मनुष्यका छोटासा समुद्र उतरना क्या बात है ॥

कथा गजराजकी ॥

महाभारत व भागवत और दूसरे पुराणोंमें कथा विस्तारसे लिखी है कि गज व ग्राह दोनों पहिले जन्मोंमें ब्राह्मण भगवद्भक्तथे ऋषीश्वर के शापसे एकने शरीर हाथीका दूसरेने शरीरग्राहका पाया व पहिले जन्म की शत्रुता से इस जन्ममें भी संयोग लड़ाई का पहुँचा इसप्रकार कि एक दिन वह गजराज पानी पीनेके वास्ते गंडकी नदी में जहां वह ग्राहरहता

था गया और ग्राहने गजका पांव पकड़लिया ग्राह अपनी ओर जल में खींचताथा और गज अपनी ओर इसीभांति एकहज़ार वर्षतक दोनों लड़ते रहे अन्तको ग्राह प्रबलपड़ा और गजको नदीमें लेचला सूंड़मात्र थोड़ासा डूबनेको बाकीथा कि गजने भगवत्की शरणली अर्थात् एक कमल नदीमें से तोड़कर अपनी सूंड़ में लेकर भगवत् भेंट किया और पुकारा कि हे हरि मैं तुम्हारी शरणहूं शरणागतवत्सल दीन दुःखभञ्जन महाराज दुःखसे भरीहुई टेर सुनतेही विकल होकर गरुड़पर सवार चक्र फिराते हुये वैकुण्ठ से दौड़े और शीघ्र पहुँचने के हेतु ऐसी विकलता हुई कि जो गरुड़का वेग मनके बराबरहै उसको भी बलहीन समझकर छोड़दिया और पियादे पाँयन धाये गजकी सूंड़ ज्यों की त्यों बाहर थी कि आनपहुँचे और ग्राह के मुँहपर चक्रमारा कि मुँह उसका कटगया और गज उसकी फांसीसे छूटा ॥ एक शंका यहहै कि भगवत् सर्वत्र व्यापकहैं सो क्या कारण कि वैकुंठ से अवतार धारणकरके आये उसीजगहसे क्यों न प्रकटहुये सोहेतु यहहै कि उससमय गजने वैकुंठनाथ का ध्यान मनमें करके पुकारकियाथा इसीकारणसे रीतिके अनुसार भक्त की चाहनाके अनुकूल वैकुंठ से आये और दूसरा यह कि यह चरित्र अपनी अधिक विकलताका कि अपने शरणागतके छुड़ानेके वास्ते दूसरे भक्तोंके भाव बढ़ानेके निमित्त विख्यात करना उचित समझा इसहेतु वैकुंठसे आये भगवत्के शीघ्र पहुँचनेके वर्णनमें हज़ारों श्लोक व कवित्त कविलोगों ने रचना किये हैं उनमेंसे दोचारका भाव सूक्ष्मकरके यहहै ॥ हाइन मिटन पाइ आये हरि आतुरहुये ॥ अर्थात् पुकारकी झनक न मिटी थी तबतक विकलहुये आय पहुँचे ॥ दूसरा-रा-कह्यो कदनमाहिमा कह्यो मगनमें ॥ अर्थात् गजने रामपुकारा तो ऐसी शीघ्रतासे आये व रक्षाकरी कि-रा-शब्द तो पीड़ा व रोते में मुखसे निकला और-मा-शब्द आनन्दमें मुखसे निकला॥तीसरा-पानीमेंप्रकट्यो कैधौं बानीमें गयन्दके॥अर्थ खुला है॥चौथा-आयो चढ़िवाहीके मनोरथ महारथी ॥ अर्थात् उसीकी चाहना पर चढ़कर आये ऐसी लाघवता करी ॥ पीछे गजने भगवत्की स्तुतिकरी कि गजेन्द्रमोक्ष स्तोत्रमें लिखाहै कि जो कोई उसका पाठकरताहै भगवद्धामको जाताहै भगवत्ने प्रसन्नहोकर अपना परमपद गजराजको दिया और भगवद्दर्शन व चक्रके स्पर्श होनेसे ग्राहको भी परमपद मिला ॥

कथा ध्रुवजीकी॥

ध्रुवजीकी कथा बहुतसे पुराणोंमें लिखी है और सब लोग जानते हैं इसहेतु थोड़ीसी में लिखताहूं जन्मउनका राजाउत्तानपाद व रानीसुनीति से हुआ एकदिन राजाने दूसरी रानीका बेटा उत्तम नामी को गोद में बैठायाथा ध्रुवजीने भी गोदमें बैठनेकी इच्छाकी सुरुचि रानी जो दूसरी थी तिसने कहा कि तू जो मेरे उदरसे जन्मलेता तो राजाकी गोद में बैठने योग्य होता यह कहकर बैठने न दिया ध्रुवजीने लज्जा व हीनताई से उसीघड़ी भगवत् शरणली कि सिवाय भगवत् शरणागत के दूसरा शरण दिखलाई न पड़ा अपनी माता से आज्ञा लेकर भगवद्भजन करने घरसे चले राह में नारदजी ने समझाया न फिरे तब द्वादशाक्षर मन्त्रका उपदेश करदिया ध्रुवजी मथुरा में आये मंत्र जप करके भगवत्को प्रसन्नकिया सो शरणागतवत्सल दीनबन्धु महाराज आये अपना हस्तकमल ध्रुवजीके माथेपर रखकर भक्ति वरदान देकर कहा कि छत्तीसहजार वर्ष इसपृथ्वीका राज्यकरके फिर अटललोकका राज्य करोगे अब तुम अपने घरजाव ध्रुवजी अपने घरको आये पिता उनका नारदजी की आज्ञा व समझाने से ध्रुवजीको आगे जायके बड़ी रीति मर्यादसे लेआया और ध्रुवजीको राज्यतिलक देकर आप भगवद्भजन करनेको वनको चलागया ध्रुवजीने छत्तीसहजार वर्ष न्याय धर्म पूर्वक राज्यकिया और भगवद्धर्म को सारे संसारमें फैलाया उत्तम नामी ध्रुव जीका भाई था उसको कुबेरके अनुचरों ने मारडाला ध्रुवजी कुबेर पर चढ़गये एकलाख अस्सीहजार कुबेरके अनुचरों को वधकिया स्वायंभूमनु आये कुबेरका अपराध क्षमा कराया पीछे उसके ध्रुवजी अपने दोनों माता पिता समेत ध्रुवलोक को गये और जब महाप्रलय होगी तब भगवत् के परमपदको जायँगे॥

कथा जटायु की॥

सब रामायणों में कथा विस्तारसे लिखीहै कि जटायु पक्षियोंका राजा परमभक्त भगवत्का हुआ और अपने शरीरको भी भगवत् पर निछावर करदिया जब रघुनन्दन महाराज दण्डकवनमें आये और पंचवटी से सीताजीको रावण चुराकर लेगया तो सीताजी भगवत् विरहसे व्याकुलहोकर महाविलाप करती जातीथीं जटायुने जानकीजीको पहिचान

कर रावणके प्रताप व बलका कुछ भय न किया अधीर होकर दौड़ा व अपनी चोंच व पंजों से रावण को मारकर गिरादिया सीता महारानी को छुड़ालिया और एकजगह बैठालकर रावणसे लड़नेको सन्नद्धहुआ ऐसा लड़ा कि जिस रावणने सारे देवता व राजाओंको विना परिश्रम जीतलियाथा उसको बेसुधि मृतककीनाईं करदिया रावण चकित व क्रोधवन्तहुआ तरवारसे पंखकाटदिये यद्यपि ऐसीदशामेंभी बल व पराक्रम बहुतकिया परन्तु जब कि पक्षी विनापक्षके मृतकके सदृशहैं वह परिश्रम कुछ काम न आया रावण दो चार कारीघाव देकर चलागया सीता जीको ढूंढ़तेहुये रघुनन्दन महाराज और लक्ष्मणजी जटायुके पास पहुँचे उसी घड़ीतक प्राण जटायु का शरीर में था रघुनन्दन महाराजके दर्शन करके सब दुःख सुख शत्रु मित्र साधु असाधु मनसे दूरहुये सिवायरूप अनूप भगवत् के भीतर बाहर कुछ न रहा पीछे रघुनन्दन महाराजसे सब वृत्तान्त कहकर प्राणोंकी विदा मांगी श्रीकरुणाकर कृतज्ञने जटायु को अपनी गोदमें रखकर शरीर पर हस्तकमल फेरा उससमयके चरित्र में एक कवित्त तुलसी के पिताका कहाहुआ लिखताहूं ॥

कवित्त ॥

दीन मलीन अधीनहै अंग विहंग परेउ क्षिति छिन्न दुखारी ।
राघव दीनदयाल कृपालु को देखि दुखी करुणा भइ भारी ॥
गीधको गोद में राखि कृपानिधि नयन सरोजन में भरिवारी ।
बारहिंवार सुधारत पंख जटायु की धूरि जटान सों झारी १ ॥

और शोकके दुःख से बिकल होकर आंखनमें आंसू भर कहा कि तनका छोड़ना क्या प्रयोजन अटल और निश्चय कर सक्ताहूं जटायुने कहा कि जिसका नाम करोड़ों जन्म के पातकों को दूर करके परम आनन्द को पहुँचा देता है सो पूर्णब्रह्म सच्चिदानन्दघन मुझको अपनी गोदमें लेकर मेरे शिरपर हाथ फेरताहै और प्यार करताहै और मैं उस स्वरूपको कि जो शिवजी के भी ध्यानमें कबहीं बहुत कष्ट से आता है तिसको देखकर आनन्दमें मग्न हूं तो इस घड़ी से सिवाय और कौन सी घड़ी अच्छी होगी कि इस अनित्य शरीर को छोड़ूंगा यह कहकर भगवच्चरणों का चिन्तवन करता हुआ तनको छोड़कर स्वरूप मुक्तिको प्राप्त हुआ भगवत् की स्तुति करके परमशोभायमान विमानपर आ-

रूढ़ होकर परमधाम को गया भगवत् ने उसके शरीर की दाहादिक क्रियाको आप किया और जिसप्रकार दशरथ महाराजको तिलांजलि दीथी उसीप्रकार जटायुको भी दी धन्यहै इस कृपालुता व दीन वत्सलता को भगवत्की कि कैसे२ तुच्छ किसपदवीको पहुँचाते हैं कि जहां मन व बुद्धिका प्रवेश नहीं॥

कथा मामूं भानजेकी॥

मामूं भानजे दोनों ऐसे परमभक्त हुये कि भगवत् को अपनी सेवा से प्रसन्न किया और प्राणतक भगवत् की निछावर करदिया पहिले जब भगवत् शरण हुये तो घरबार सब त्यागकरके तीर्थयात्रा करते हुये फिरने लगे पण्डित और ज्ञानवान् थे यात्रा करतेमें किसी वन में देखा कि परम शोभायमान भगवत् की मूर्त्ति है परन्तु मन्दिर नहीं सो मन्दिर बनवाने का विचार करके द्रव्य के अन्वेषण में फिरनेलगे कहीं कुछ न मिला किसी नगर में सेवड़ों के देवता की प्रतिमा पारस पाषाण की सुनी प्रसन्न हुये कि अब मन्दिर मनमाना बन जायगा परन्तु शंका यह हुई कि सरावगियों के चौताले में जाना मना है कैसे जावें फिर यह विचारा और निश्चय किया कि यह शरीर भगवत् शरण है भगवत् जिस बात में प्रसन्न हों सो बात करनी चाहिये और भगवत् शरणागतों ने जो नरकादिक का भय किया तो शरणागती की दृढ़ता नहीं नितान्त सेवड़ों के मन्दिर में जाकर चेले होगये और ऐसी सेवा उस मन्दिर और सेवड़ों की करी कि सबने बुद्धिहीनता करके सब कारबार मन्दिर का उनको सौंपदिया जब देखा कि सब कारबार अपने बश में आगया तो मूर्त्ति के लेजाने की चिन्ताकी परन्तु राह निकालने की न मिली द्वार संकीर्ण था कारीगरने जो मन्दिर बनाया था उनसे युक्तिहीयुक्ति भेदलिया कि गुम्मजके ऊपर जो कलश है पेच लगाकर दृढ़ किया गया है और वह पेच खुल सक्ता है और वहीं मूर्त्ति के आने जाने की राह है रात को दोनों आपुस में मन्त्रणा करके पहिले उस कलश को उतारा फिर भानजा उस राहसे निकलकर गुम्मजपर चढ़गया मामूं ने मन्दिर के भीतर बैठकर उस मूर्त्ति को अच्छे प्रकार दृढ़ रस्सी से बांधा व भानजे ने ऊपर खींचलिया जब मूर्त्ति के मिलने से मन स्थिर होगया तो मामूं ने भी उसी राह से निकलने को चाहा परन्तु

अतिहर्ष होने के कारण से शरीर ऐसा मोटा होगया कि उस राह से न निकल सका उसी में फँसगया कितनेही उपाय किये परन्तु कुछ वस न चला मामूंने अपने भानजे से कहा कि जो मेरा शरीर यहां रहा तो कुछ चिन्ता नही व न कोई वात दुःखकी है मनोरथ जो था सो सिद्ध होगया उचित यह है कि तुम जाकर भगवत् मन्दिर जैसी कांक्षा है वनवाओ मेरा शिर काटकर कही डालदेव कि मेरे कानों में साधु भेष की निन्दा के शब्द सेवड़ों के मुखसे पड़ने न पावैं क्योंकि साधु भेष वास्तव करके भगवत् भेष है भानजे ने शोक से दुःखित होकर मामूंके कहने के अनुसार किया अर्थात् उसका शिर काटलिया और मूर्त्ति को लेकर चला यद्यपि ज्ञान व भगवत् शरणागती की दृढ़तासे कुछ शोच अपने मामूं के मरजाने से नही लेआया परन्तु सत्सङ्ग को समझकर व परम भागवत के बिछुड़ने से ऐसा शोकसमुद्र में पड़ा कि किसी भांति चित्त को चैन नहीं सो कबही शोक में दुःखित कबहीं मूर्त्ति के मिलने के आनन्द में मग्न होता जहां मन्दिर बनवाने का विचार किया था तहां पहुँचा दूर से देखा कि कोई मन्दिर के वनवाने की तैयारी में तत्परहै अपने मनमें जाना कि कोई दूसरे मनुष्यने मन्दिर के वनवाने का कार लगाया है दुःखित हुये जब और समीप पहुँचे तो देखा कि मामूं खड़ा है और मन्दिर बनवाने के काम में तत्पर है अतिआनन्द से दौड़कर दोनों मामूं भानजे मिले और मन्दिर रङ्गनाथ स्वामी का ऐसी शोभा व तैयारी से वनवाया कि वैसा दूसरा संसार में नहीं ॥

कथा राघवानन्दकी ॥

राघवानन्दजी रामानुज स्वामी की सम्प्रदाय में परमभक्त और हरिभक्तों को आनन्द के देनेवाले हुये जिस देश में रहते थे उस को काशीजी के सदृश करदिया चारो वर्ण अर्थात् ब्राह्मण क्षत्री वैश्य शूद्र और चारो आश्रम अर्थात् ब्रह्मचर्य्य गृहस्थ वानप्रस्थ संन्यस्थ को भगवद्भक्ति में दृढ़ करदिया रामानन्दजी को मृत्यु के मुखसे निकालकर साढ़ेसातसौ वर्ष की आयुर्बल को देदिया कि रामानन्दजी की कथा में वृत्तान्त लिखागया है ऐसे ऐसे प्रभाव उनके वहुत हैं महिमा उनकी कौन लिखसक्ताहै ॥

कथा जगन्नाथ की ॥

जगन्नाथ बेटे रामादासजी के पारीक ब्राह्मण कान्हड़ाकुल में धर्म्म और भक्तिके मर्यादहुये श्रीरामानुज सम्प्रदायके अनुकूल भगवत्शरण होकर मनको लगाया और उपासना के शास्त्र अच्छेप्रकार निज अभिप्राय उपासनाका भलीप्रकार सब समझा सार और असार को ऐस न्यारा न्यारा करदिया कि जिसप्रकार हंस दूध और पानी को अलग अलग करदेताहै मुनीश्वरों की भांति आचार व धर्मका आचरण करतेथे और अनन्य शरणागती व दश प्रकारकी भक्ति के करनेवाले दृढ़ हुये पुरुषोत्तम अपने गुरुके प्रतापसे दोनों अंगमें कवच जिसको बख्तरकहते हैं पहिना था इसके अर्थ कईभांति के हैं प्रथम यह कि ये महाराज पुरोहित राजाके थे और शूरता वीरतामें विख्यात सो एक जो शरीर है उसमें बख़्तर पहिना करतेथे जैसा सिपाहीलोग पहिनते हैं और दूसरा अंग जो मनहै तिसमें सहिष्णुता व क्षमाका बख्तर धारणथा कि किसी की कठोर वाणी रूपी शस्त्र न लगै दूसरा यह कि दोनों अंग जो दोनोंभुजा तिसपर शंख और चक्रके चिह्न धारणकरके कलियुगके पाप जो तीर व तरवारके सदृशहैं उनसे शरीरकी रक्षाकिया तीसरा यह कि प्रकट अङ्गमें भगवत् सेवाका ऐसा कवच पहिनाथा कि संसारी कार्य्य जो तीर व तरवार सेभी अतितीक्ष्णहैं कदापि नहीं काम करसक्ते थे और हृदयमें भगवत् चिन्तवनरूपी कवच पहिनाथा कि जिसकरके दूसरी चिन्तारूपी शस्त्रस्पर्श नहीं करसक्ताथा ॥

कथा लक्ष्मणभट्ट की ॥

लक्ष्मणभट्टजी रामानुजसम्प्रदाय मे परमभक्त शरणागती मार्गके हुये भक्तिका आचरण मुनीश्वरोंके अनुसार करतेथे और भाव व भगवद्धर्म्म और भगवद्भक्तों की सेवा और दशप्रकारकी भक्ति में विख्यात हुये सन्तोष व क्षमा व प्रेमकी मूर्त्तिथे औरमन कबही स्वप्नमेंभी संसारी कार्य्यके सिद्धके अर्थ नही सावधान होताथा परमधर्म्म जो शरणागति है उसका प्रतिपालन करके सबलोगोंको उपदेशकिया और श्रीमद्भागवतको विचारकर सार और असारको अलग अलग करदिया भगवत कीर्त्तनमें अद्वैत और भजन सुमिरणमें वैसेही थे ॥

निष्ठा बाईसवीं ॥

जिसमें महिमा सखाभाव व वर्णन कथा पांचभक्त उपासकों की ॥

श्रीकृष्ण स्वामी के चरण कमलों की मुकुटरेखा को दण्डवत् करके ध्रुव अवतारको दण्डवत् प्रणाम करताहूं कि विठूर में अवतार धारण करके भगवद्भक्ति और शरणागती के स्वरूपको जगत् में प्रगट किया जानेरहो कि कोई २ पुराणोंमें ध्रुव अवतारके स्थान नारदजी का अवतार लिखाहै सखाभावके उपासकों का यह सिद्धान्तहै कि ईश्वर और जीव दोनों परस्पर सखा अर्थात् मित्रहैं और ऐसी मित्रता व स्नेह दृढ़ है कि ईश्वर को जीव विना ईश्वरता न हो और न जीव ईश्वर विना होसक्ताहै अर्थात् जो जीव न हो तो ईश्वरको कोई नहीं जानता और जो केवल जीवहो और ईश्वर नहो यह वात होनेकी नहीं क्योंकि विना ईश्वर जीव नहीं होसक्ता जो कदाचित् यह वाद कोई करै कि मित्रता दोनों की आपुस में बराबर के हों तब होती है सो कहां तो जीव कि हज़ारों प्रकारकी पीड़ा जन्म मरण व पाप पुण्य में फँसा है और कहां वह ईश्वर जिसका स्वरूप मन व बुद्धिमें न आयसकै और वेद जिसको नेतिनेति कहते हैं और मायाके गुणों से अलग नित्य निरीह निर्विकार अच्युत अनन्त पूर्णब्रह्म परमात्मा सच्चिदानन्दघन है इस विवाद का उत्तर प्रगट दृष्टान्तसे समझलेना चाहिये कि पहिले तो मित्रताके व्योहार में कुल व ढंग व मर्याद व बुद्धि व चतुराई व सुन्दरताई व वस्त्रकी पहिरन व आभूषण की सजावट इत्यादि सब सामा सब तुल्य व बराबर होना योग्य होता है तिसके पीछे अपना अपना भाग्य है कि एक बादशाह होजाय और दूसरा दरिद्र सो ऐसाही वृत्तान्त जीव और ईश्वर की मित्रता का है अर्थात् जैसा ईश्वर निर्विकार प्रकाशवान् ज्ञानानन्द स्वरूपहै वैसाही दो एक बातों के न्यून विशेष करके जीव है कुछ भेद नहीं दोनों के बीचमें मायाके स्वरूपका आचरण जंजालहुआ सो जीव तो अणु अर्थात् छोटा व अल्पज्ञथा इस कारण करके वह तो माया को देखकर मोहित होगया और उसके जाल में फँसगया और ईश्वर कि जो अनन्त व सर्वज्ञथा वह मायासे ज्यों का त्यों अलग व परे रहा यद्यपि ईश्वरने अपने मित्रके छूटने के हेतु वेद व शास्त्र के द्वारा उस मित्र को अपना और उसका स्वरूप वतलाया और अपने नाम

को प्रगटकिया और सैकड़ों हज़ारों उपाय जैसे मंत्र जप व यज्ञ व दान व दया व कर्म्म व ज्ञान व वैराग्य व नवधाभक्ति इत्यादि की प्रवृत्ति करी परन्तु वह जीव उस मायाके मोहमें ऐसा फँसा कि कुछ न समझा और अपना और अपने मित्र का स्वरूप सम्पूर्ण भूलगया सो जब अपने और ईश्वर और माया के स्वरूप को जानकर छूटने के निमित्त उपाय करे तब फिर अपने मित्रका मिलन और परम आनन्द को प्राप्त होय अब बड़ी शंका यह उत्पन्नहुई कि जब ईश्वर और जीव मित्र हैं और वह ईश्वर कि जिसकी मायामें यह जीव फँसाहुआहै उसके छुटाने को चाहताहै तो फिर कौन हेतु यह जीव मायामें बँधाहै आप ईश्वर क्यों नहीं छुड़ालेता सो यह शंका नई नहीं है वही बातहै कि जो शास्त्रोंमें ईश्वरकी दयालुता व कृपालुता जीवपर वर्णनकरीहै और संसारके सृष्टि की परम्परा के बने रहने के हेतु कर्मकी विशेषता प्रगट करके मुक्तिका होना ज्ञानसे अर्थात् पाप पुण्य ये दोनों कर्मों के दूरहोनेपर वर्णन किया है सो जो उत्तर इस शंकाके समाधान के हेतु शास्त्रोंके सिद्धान्तके अनुसार वहां निश्चयहुआहै सोई यहां समझलेना चाहिये और जो सखाभावकी रीति के उत्तर की चाहनाहोय तो यहहै कि संसारी व पारलौकिक सब कार्योंकी रीति व पद्धतिका जाननेवाला ईश्वरसे अधिक दूसरा कोई नहीं इसीप्रकार मित्रताकी रीति भी भगवत्से अच्छा दूसरा कोई नहीं जानता और मित्रता की रीतिमें दोनोंमित्र बराबर आचरणकरते हैं जो एक मित्रने शिष्टाचार किया तो उसके बदले में दूसरामित्र उससे अच्छा शिष्टाचार करदेताहै और विवाहादि में जो एक मित्र ने सौ रुपया उठाये तो दूसरा मित्र भी उसके विवाहादि में उतनाही उठाता है सो इस बराबरीकी रीतिके अनुसार जो ईश्वर बिना सम्मुखभये जीव की मायाको दूरकरके मिलनेके वास्ते आवे तो रीति और मूलमित्रता की विपरीत होजाय जो यह कहिये कि जीव के सम्मुख होनेपर कौन प्रबन्धथा आप ईश्वरने अपने मित्रके मिलनेके हेतु अगुताई क्यों न की कि मित्रता में मित्रका अपने घर आना अथवा आप उसके घरजाना दोनोंबात बराबरहैं सो जानेरहो कि भगवत्की ओरसे अगुताई व हठ अच्छे प्रकारसे हुई और कदापि कोई रीतिमें चूक न हुई अर्थात् अपना और उस मित्रका स्वरूप वर्णन करके और वेद व शास्त्रों को सन्देशा

पहुँचानेवाले के भांति भेजकर मिलनेके वास्ते सन्देशाभेजा और अ-
पना नाम और लक्षण प्रगटकिया तिसके पीछे मिलने का उपाय बत-
लाया और अबतक सर्वकाल सब जगह मिलने के वास्ते सम्मुख व
प्राप्त है तो ईश्वरकी ओर से कौन चूक है सब चूक इस जीवकी है कि
कदापि उससे मिलना नहीं चाहता व न सम्मुख होताहै यहां जो कोई
सन्देह करै कि बात तो मायासे छुड़ाने की पड़ी है तुम मिलनेकी बात
लिखतेहौ प्रश्न और उत्तरऔर सो सन्देह कुछ नहीं है मायासे छूटनेका
तात्पर्य्य ईश्वर से मिलनेकाहै और ईश्वर से मिलनेका अभिप्राय माया
से छूटनेकाहै बात एकही है केवल बात के कहनेका हेर फेरहै॥ अब यह
निश्चय्र कैसेहोय कि जीव और ईश्वर पुराने मित्रहैं सो वेद श्रुतीमें स्पष्ट
यही बात लिखी है और श्रीमद्भागवत के चौथेस्कंध पुरञ्जनकी कथामें
विस्तारसे निर्णय करके लिखी है कि जीव और ईश्वर दोनों आपुस में
मित्रहैं इसके सिवाय जहां नवधाभक्तिका वेद और शास्त्रोंने वर्णनकियाहै
तो वहां सखाभावकी भी भक्ति लिखी हैं तो जो जीव और ईश्वर आपुस
में मित्र नहीं होते तो सखाभावकी भक्ति और उसकी रीति वेद और
शास्त्रमें क्योंलिखी जाती और सखाभावके आराधनकी रीति दूसरी नि-
ष्ठाओंकी रीतिके अनुसार है केवल इतनाभेदहै कि दूसरी निष्ठाओं में
स्वामी इत्यादिजानिके सेवापूजा करतेहैं और इसनिष्ठामें मित्र व बराबर
समझकर सेवा होती है और भगवंतने चौथेस्कंध पुरञ्जन उपाख्यानमें
कहाहै कि दूसरीभक्ति तो गुरूके उपदेशसे मिलती है और सखाभाव व
आत्मनिवेदन को मैं आप उपदेश व शिक्षाकरताहूं इसभांतिसे सखा-
भावमें जिसघड़ी भक्तका मन लीन होताहै उसघड़ी आप भगवंत उसके
हृदयमें प्रवेश व प्रकाश करताहै यहरस जिस किसीने पान किया तुरंत
मतवारा व वेसुधि होगया सब सखाभाववालों के मनका लाभ भगव-
च्चरित्रों में अपने मनकी रुचिके अनुसार है जैसे कि बदरिकाश्रममें नर
नारायण सखाहैं उनकी प्रीति तप और ज्ञानके चरित्रोंमें है॥ अर्ज्जुन
और श्रीकृष्ण महाराज की प्रीति महाराजों के सदृश और व्रजगोप
कुमारों की खेल और हँसी गोपकुमारों के सदृश और अयोध्याके राज
कुमारोंकी प्रीति भगवच्चरित्रोंमें महाराज कुमारों की हँसी खेलके सदृश
हुई और इसीप्रकार सबके भाव अलग अलगहैं जिसओर जिस किसी

की चाहहै उसी भांतिकी तैयारी से सेवा और भगवत् आराधन किया करताहै व आराधनसे व पूजा जो नव अथवा सातवेर नित्य न होसके तो तीनवेर से कम न हो स्तोत्रपाठ और नाम व मन्त्रजप अलगरहे व हरघड़ी मनसे ध्यान उसओर लगारहना नित्यनेमकी सेवापूजा से अलग वात है कि सव सेवापूजा व उपसना उसीके हेतु है यह उचित व परम सिद्धान्तहै इसकालमें उपासना इस सखाभावकी माधुर्य व शृंगारके विचार से विशेष करके प्रवृत्त है कै रामउपासक हों अथवा कृष्ण उपासक और सिद्धान्त विचारसे भी जितनी प्रीतिकीदृढ़ता व वृद्धि माधुर्यभावमें शीघ्र होतीहै और दूसरे किसी भाव में इतनी शीघ्र नहीं होती है थोड़े दिन वीते होंगे कि अयोध्याजी में रामसखे महाराज और उनके चेले प्रेमसखेजी सखाभाव की ध्वजा और भक्ति के देश के राजा हुये रामसखेजी का एकग्रन्थ इस भावकाहै उसमें माधुर्यको मुख्यकरके रक्खा है और व्रजमें जो निर्णय इस वात की करी गई तो वहां विशेष करके प्राधान्यता माधुर्यकी सर्वावस्था में उचित व योग्य ठहरी कि व्रज में चरित्र भगवत् के सव शृङ्गार और माधुर्य्य के स्वरूपही हैं अनन्यभाव भगवत् में और यह वात कि उपासक को भूलकेर भी अपने उद्धार व मुक्ति के वास्ते दूसरे देवता का चिन्तवन न होवे जैसे अनन्यता सव निष्ठाओं में सिद्धान्त है इसी प्रकार इस निष्ठामें ज्यों की त्यों है महिमा इस निष्ठा और उपासकों की वर्णन नहीं होसक्ती क्योंकि इस निष्ठा और भगवत् व इस निष्ठा के उपासकों में वार वरावर भी भेद नहीं सव एक हैं॥ भगवत् उपासक लोगों ने इस सखा निष्ठा के पांचों रसों में एक रस वर्णन किया सो उस रीति के अनुसार भगवत् श्रीकृष्ण अथवा श्रीराम के विष्णु चतुराई में व चोज व कटाक्ष लेके वोलने व शीघ्र समझने य हाव भाव व झटिति उत्तर देने में प्रवीण व प्रगल्भ व नव यौवन परम शोभायमान कि जिसके मुखके सम्मुख सव शोभा व सुन्दरता धूलि हैं वस्त्र व आभूषण जैसा जहां चाहिये सव अंगन में पहिने हुये विषयालम्बन हैं अर्ज्जुन व सुदामा व श्रीदामा आदि व्रजग्वाल व दूसरे भक्त सखाभाव के आश्रयालम्बन हैं व सामग्री शृङ्गार व माधुर्य व हँसी ठट्ठा व आपस में खेलना एक साथ भोजन करना एक संग शयन करना एक साथ वैठना एक साथ रहने

एकही साथ उपवन पुष्पवाटिका आदि में विहारको जाना आपुस में शृंगार व छविकी सजावट करना ऐसे ऐसे हज़ारों भाव सामग्री प्रथम व द्वितीय अर्थात् बिभाव अनुभाव की सामाहै व सामा तीसरी अर्थात् आठों सात्विक सब इस रसमें अपनी प्रवृत्ति करते हैं और यह सख्य रस शृंगारसे मिश्रित हैं इस हेतु तेंतीसों प्रकारके व्यभिचारी अर्थात् सामा चौथी इस रसमें वर्त्तमान होते हैं स्थायीभाव इस रसका वह है कि उस परम मनोहर मित्रके स्नेह में इतनी दृढ़ता व पक्कता होय कि कदापि तनके स्वप्न व ध्यानमें मनकी लगन दूसरी ओर न जाय और अचल चित्तकी वृत्ति उस मित्र मनोहरके प्रेममें मग्नरहै ॥ हे श्रीकृष्ण हे दीनवत्सल हे प्रणतार्त्तिभञ्जन महाराज मैंने सुना है कि आपके न्याव व रक्षासे कोई बली किसी दुर्बलको सताने नहीं सक्ता और दीन व दुखी न्याय पावते हैं सो कृपासिन्धु महाराज मेरे वास्ते न जाने वह न्याव व कृपा कहां गई कि यह महामोह दिन राति भांति भांति के उपद्रव करता है व अनेक जन्मों से दुखी व दीन कररक्खाहै सो आप की कृपा व न्याय में कुछ सन्देह नहीं परन्तु मेरी अभाग्य दशा है कि उस पापी के पंजे से छूटने नहीं पावता अब आपके श्रीद्वार पर दीन होकर पुकारता हूं कि एक वेर किसी प्रकार उसके उपद्रव व उपाधि से छुड़ाकर मेरे मनको अपने रूप अनूप के चिन्तवन में लगादीजिये कि जो सब वेद और शास्त्रों का सार और एकान्त निज भक्तों का जीवन आधार है ॥

कवित्त ॥

कर कंजन मंजु बनी पहुँची धनुहीं शर पंकज पानि लिये।
लरिका सँग डोलत खेलत हैं सरयू तट चौहट हार हिये ॥
तुलसी असबालकसों नहिं नेह कहाजपयोग समाधि किये।
नरसो खर शूकर श्वान समान कहो जगमें फलकौनजिये ॥

तिलक ॥

बिना धागेकी माला पहिरेहुये अभिप्राय यह कि वह सखी जिसके यहां रातको रहे सो जो माला पहिने थी उसका साट छातीपर शोभायमान है ॥ हंसकी गतिका तात्पर्य यह है कि रातके जगने से मतवारी चालहै ॥ अधरन पद वह वचन अर्थात् दोनों होठ कई वेरके पानखाने

और सखीके लाल होठोंकी लालीभी लगजाने से अत्यन्त लालहोरहे हैं अथवा अधरके आगे जो नकारहै सो लालीको नहीं कहताहै अर्थात् यह कि सखीने अधरामृत पान कियाहै इस कारण से होठों की लाली जाती रही और शोभा व छवि चढ़के है हेतु यह कि बहुत अच्छीभांति शृङ्गार करके ठटिकर गये थे॥ तिलक पदके आगे नकार सो एकअर्थ तो बहुवचन सूचित करता है अर्थात् सखी के॥

मूल–बिनगुनमालवारे चलनमरालवारे अधरनलालवारे शोभामदभारे हैं।
तिलकनभालवारे जलजतमालवारे मूरतिविशालवारे दृगअनियारे हैं॥
पीतपटवारे लटवारे नटवारेपूपी कारीलटवारे तूतोमोहनीमनवारे हैं।
चोरपर वारे चितचोरपरवारे सुनमोरपरवारे तेरी मोरपर वारे हैं॥

भालके तिलकके चिह्नहोनेसे बहुत से तिलक होगये हैं दूसरा अर्थ नकारका नहीं रहने तिलकके हैं अर्थात् मिलने व आलिङ्गन गाढ़करने से भालपर तिलक न रहा दलमल गया जलज जो कमल व तमाल जो वृक्ष सुन्दर होताहै तैसे सुकुमार व श्याम व शोभायमान अथवा कमल दिनमें शोभित होताहै परन्तु तुमने यह आश्चर्य किया कि तमाल अर्थात् सघन अँधेरी में कमल की भांति आप प्रफुल्लित हुये और दूसरे को प्रफुल्लित किया मूरति विशालवाले कहनेका यह हेतहै कि तुमऐसेही कोमल अंग और छोटे से स्वरूपवाले नहीं युवालोगों का काम करते हो और अनियारे आंखों से यह अभिप्राय है कि रातकी उनींदी हैं तिसकरके हृदय में चुभती हैं अथवा काजरकी तीक्ष्णरेखासे बरबस कलेजे को बेधती हैं॥ पीताम्बरवाला कहने से छवि सँवार कर जानेकाहै और लटवाला कहने से हेतु यह है कि केश कहां गुँधवाये और नटवाला कहने से अभिप्राय स्फूर्त्ति व चपलता के जतानेका है और यमुना किनारेवाला कहनेसे तात्पर्य व कटाक्ष यह है कि रातको बनके कुञ्ज में रहे और मनका मोहलेनेवाला कहने का यह हेतुहै कि वह ऐसीदगा देनेवाली सखी है कि तुमकोभी मोहित करलिया॥ चोर अर्थात् माखन चोरीका स्वभाव तो पहिलेही से था परन्तु अब चित्तके चुरानेका भी स्वभाव वैसाही हुआ सुनते मोरपङ्खके मुकुटवारे तेरीमोर अर्थात् त्रिभङ्गी लचकनपर मैं बलिहारी होगई अर्थात् तेरामन दूसरी ओर लगै तो लगै परन्तु हमको सिवाय तेरे दूसरा प्राणअधार नहीं॥

यद्यपि यह कवित्त धीराखण्डिताकाहै परन्तु इसके सब पद प्रेम और रस और ब्रजराज महराज के ध्यान और शोभा और माधुर्य्यको प्रकाशित करते हैं इसहेतु इसका लिखना उचित जानकर लिखा ॥

कथा अर्ज्जुन की ॥

अर्ज्जुन महाराज के सखाभावका वर्णन कौन से होसक्ताहै जिनके भावना और भक्तिके वशहोकर वह पूर्णब्रह्म सच्चिदानन्दघन जो मन व बुद्धिमें नहीं आयसक्ता सो रथवान् उनकाहुआ यद्यपि अर्ज्जुन महाराज फुफेरे भाई श्रीकृष्णस्वामीके थे परन्तु सखाभाव मुख्यथा बैठना उठना व खाना पीना व लीला विहार व हँसना बोलना मिलना मित्रवत् था युधिष्ठिर व भीमसेन आदिके सदृश भाईचारेकी रीति न थी जो जो भगवत्ने कृपा सहायताकी विस्तार करके सो कथा महाभारत में लिखी है उसका वर्णन इसकथामें प्रयोजन नहीं समझा क्योंकि मित्रतामें जिस किसीसे जो कुछ भलाई आपस में होय सब योग्यहै एकवृत्तांत निष्कपटता का लिखा जाताहै अर्ज्जुन महाराज जब सुभद्राजी की शोभा व सुन्दरताको देखकर हजार जीवसे आसक्त होगये तब सच्ची मिताईके विचार से प्रसन्नता व उदासी का कुछ शोच न किया अपनी प्रीति व विकलता को वृत्तान्त सत्यसत्य श्रीकृष्णस्वामी से कहदिया व श्रीमहाराजकी सुभद्राजी उनकी यद्यपिबहिनथी परन्तु रुचि रखना व मनोरथ पूर्ण करना अपने मित्र परमप्रेमीका इतना चित्तमें बसा कि जगत्के उपहास्य व निन्दापर कुछ दृष्टि न करके यह गुप्तमंत्र अर्ज्जुनजी को दिया कि जो बिवाह करदेनेवास्ते वसुदेवजी व बलदेवजी से कहताहूं तो न जानें अङ्गीकार करैं कि न करैं सो तुम संन्यासी का वेष धारण करके द्वारकामें जाय बलसे अपने लेआवो पीछे वसुदेवजी व बलदेवजी को समझाकर प्रसन्न करलिया जायगा सो अर्ज्जुनने वैसाही किया और जब बलदेवजी ने अर्ज्जुनके मारडालनेकी तैयारीको किया तो आप श्रीकृष्ण महाराजने समझाकर उनका क्रोध शान्तकिया ॥ एकबेर अर्ज्जुन महाराज सुभद्राजी से आनन्द व विलास में रतरहे श्रीकृष्णस्वामी ने उनको बैठककी जगह नहीं देखा तो विकलहोकर लज्जाछोड़के सुभद्राजी के महलमें चलेगये मित्रताकी हँसी ठट्ठे में लीनहुये और अतिशय करके स्नेह को दृढ़ किया ॥ भगवत्की कृपालुता व दीन वत्सलतापर

विचारकरना चाहिये कि आप मित्र व शत्रु व सुखदुःख पुण्य पाप इत्यादि माया के प्रपञ्च से जहांतक भीतर बाहर की आंखें पहुँचैं न्यारा व निर्लेप है सो ऐसा होकर जो ऐसे चरित्र किये तो भक्तों को बोध और दूसरे लोगोंको भक्तिके हेतु शिक्षा देताहै कि जो कोई जिसभावसे मेरा भजन करताहै मैं उसीभावसे प्रकट होकर भक्तकी भावना पूर्ण करता हूं कि गीताजी में इस बातका प्रण दृढ़ कियाहै ॥

कथा सुदामा की ॥

कथा सुदामाजी की भागवत व विष्णुपुराणमें विस्तार करके लिखी है और भाषा में कवि लोगोंने सुदामा चरित्र कई एक बनाये हैं इस हेतु थोड़ेमें लिखताहूं सान्दीपन गुरूकेपास जब श्रीकृष्ण स्वामी ने वेद और दूसरी विद्या सबपढ़ी उससमयकी मिताई सुदामाजीसे थी जब पढ़चुके तब विश्लेषहुआ सुदामाजी दरिद्री ऐसे थे कि न घरमें कुछ अन्नदाना न तनपर वस्त्रथा एकदिन उनकी स्त्री सुशीलाने कहा कि बड़े आश्चर्य की बातहै कि जिसका मीत लक्ष्मीपति श्रीकृष्ण महाराजहो सो ऐसा दीन व दरिद्रीहोवै सो अब तुम उनकेपास जाव सुदामाजीने बहुत संदेह व नाहीं नाहीं किया परन्तु सुशीलाने ऐसे उत्तरदिये कि हरिके जाने का निश्चय किया सुशीला थोड़े से चावल साठीके कहींसे मांगिलाई और सुदामाजी को देके कहा कि भगवत् की भेंटकरना सुदामाजी भगवत् दर्शनको प्रेममें भरेहुये चले रातको किसी गावँ में टिके वहां भगवत् को अपने मित्रसे मिलने का प्रेम उमँगा और रातोंरात सुदामाजी को द्वारकाके समीप बुलालिया प्रभातको सुदामाजी जब थोड़ीदूर चले तो एक नगर दिखाई पड़ा और जो नाम पूछा तो द्वारका सुनकर हर्षितहुये स्नान पूजा करके पूछते पूछते श्रीकृष्ण महाराजकी राजधानी पर आये द्वारपालोंने दण्डवत् करके श्रीकृष्ण स्वामी को निवेदन किया कि एक ब्राह्मण छोटी धोती फटी चादर पहिने नङ्गे पांव दरिद्री सा आप का स्थान पूछताहै और सुदामानाम है सुनतेही उस नामके बेसुधि दौड़े पहिले चरण पकड़ छाती से लगालिया और बहुत दिनपर जो दोनों मित्र मिलेथे इस हेतु बड़ी देरतक ऐसे मिलेरहे कि मानों एकतन होगये पीछे भगवंत् हाथमें हाथ लेकर रंगमहल में लाये और दिव्य पलँग पर बैठालकर कुशल प्रश्नादिक पूछनेलगे इतने में रुक्मिणीजी

पूजा की सामा ले आईं और आप भगवत् और रुक्मिणी जी चरण धोनेलगे उससमय का एक कवित्त नरोत्तम कविका कहा लिखताहूं॥

कवित्त छन्द सवैया अर्थ सलिल हैं॥

ऐसे बेहाल बेवाँयन सों भये कंटक जाल गुँधे पग जोयें।
हाय सखा दुखपाये महा तुम आये इतै न किते दिनखोये॥
देखि सुदामा की दीन दशा करुणा करिकै करुणामयरोये।
पानी परातको हाथ छुयो नहिं नैनन के जलसों पग धोये॥

पायँधोये पीछे भगवत्ने अपने पीताम्बर सों पोंछकर जैसी पूजाकी विधि है पूजाकी तब पूछा कि हमारी भाभी ने कुछ हमारे वास्ते भी दिया है और तुम्हारा स्वभाव और भांतिका है ऐसा न हो कि तुमहीं पचाय जाव और हम देखतेही रहैं सुदामाजी जो साठीके चावल कुक्षिमें थे छिपानेलगे भगवत्ने जाना कि कुछ सौगात बगलमें है इधरतो भगवत्उसके लेनेके दावँ घातमें हुये और उधर सुदामाजी लज्जाके हेतु छिपाने के विचारमें इतनेमें कपड़ा बहुतजीर्ण था फटगया और चावल धरती में गिरगये भगवत् ने उनमेंसे एकमूठी लेकर तुरन्त और जल्दीसे मुहँ में डालली और दूसरी मूठी के वास्ते भी वैसीही चतुराई थी कि रुक्मिणीजीने हाथ पकड़लिया सो कोई२ भक्त व तिलककार लोगोंने हाथ पकड़ लेनेका हेतु यह लिखाहै कि एक मूठी चावलसे तो दोनों लोककी सम्पत्ति सुदामाको देदी दूसरी मूठीमें कौनवस्तु देवेंगे और किसीने यह लिखा कि रुक्मिणीजीको भयहुआ कि मैं लक्ष्मीका स्वरूपहूं ऐसा न हो कि भगवत् दूसरी मूठी के बदलेमें हमको देदेवें और किसीका यह कहाहै कि रुक्मिणीजीको भगवत् की सुकुमारता व स्वल्प आहार व कोमल व मधुर पदार्थोंके भोजनकास्वभावशोचकर यह चिन्ताहुई कि कच्चे चावलों के भोजनसे कुछ अवगुण न करें परन्तु निज अभिप्राय रुक्मिणीजी का हाथ पकड़लेने से यहहै कि महाराज यह सौगात तुम्हारे मित्रकेघरकी है ऐसा मीठापदार्थ अकेले आपहीआप खायलेना उचित नहीं इसमें हमारा भी भागहै और जो यह कहोगे कि हमारे मित्रकी लाईहुई सौगात में तेरा क्या बखरा है तो आपकेमित्र भूखे बंगाली व उपासमस्त होते हैं उनको किसी सौगातके जुहावने की क्या सामर्थ्य है यह सौगात मेरीजिठानी के व्यवसाय से तुमको जुरी है निश्चय करके भागीहूं इस

चरित्रके होने पीछे सेवक लोगोंने जेवनारके तैयार होनेका संदेशानिवेदन किया दोनों मित्रोंने एकसंग भोजन किया इसीप्रकार सातदिन सुखआनन्द में बीते पीछेसुदामाजी ने बहुत कहा तब बिदाहुये भगवत् दूरतक पहुँचानेके हेतुगये और बिदाके समय सुदामाको कुछ न दिया सुदामाजी अपने मनमें कहनेलगे कि आखिर तो ग्वालियों के घर पलेहो क्या हुआ कि अब राज्य व बड़ा ऐश्वर्य्य मिला जो हमको कुछ देते तो क्या खजाने का टोटाथा या कि कम होजाताथा और बहुत अच्छा हुआ कि कुछ न दिया अब उसस्त्रीसे कि जिसने बलात्कार करके भेजाथा कहूंगा कि धनको अच्छी प्रकार से यत्न करके धर कि बहुत खजाना मिलाहै फेर मनमें कहने लगे कि जानैं भगवत् नें इस विचारसे कुछ न दिया कि धन के पावने से भगवद्भजन में बाधा न पड़जावे ऐसेही ऐसे शोचते विचारते अपनेगांव के समीप पहुँचे देखा कि द्वारका से भी सहस्र गुण अच्छीसोनें व मणि गणोंकी महलात खड़ी हैं ऐसे कि कभी देखीथीं न सुनीथीं लोगोंसे पूछा कि किसका नगरहै और क्या नामहै उत्तरदिया कि आपहीका नगरहै और सुदामापुर नामहै यही कहते सुनते थे कि तबतक दासदासी दौड़े हाथोंहाथ सुदामाजी को महलों में लेगये सुशीला आकर चरणोंमें पड़ी और सुदामाजी इस भगवत् कृपाको देखकर जो वचन भगवत् को व्यंग वितर्को कहेथे उनका शोच व पश्चात्ताप करने लगे ऐश्वर्य्य के सुखमें कबहीं भजन और आराधन न भूले बरु अधिक करके तत्परहुये भगवत् की ईश्वरता कि अच्युत अनन्त व सच्चिदानन्दघन परमात्मा पूर्णब्रह्महैं विचारकरके फिर इस दयालुता व कृपालुता व भक्तवत्सलता और मित्रभाव के निवाहने की भाव पढ़ सुनकर जो निर्भर आनन्द में मग्ननहीं होते उसने व्यर्थ जन्म लेकर अपने माताके यौवनका नाशकिया और जिसके आंखोंसे प्रेमका जल नहीं उमँगता तो वे आँखों से अन्धी अच्छी॥

कथा ब्रजके ग्वालबालों की॥

श्रीनन्दनन्दन महाराज के असंख्य ग्वालबाल सखाहैं उनमें—श्रीदामा, मधु, मंगल, सुबल, सुबाहु, भोज, अर्जुन, मंडल ये आठ सखा परममित्र और हरघड़ी पास रहनेवाले व दूसरे [illegible] सखाओं के नायक हैं जिसप्रकार श्रीराधिकाजीके साथ ल[illegible] चंपक-

व्रता आदि आठ सखी हैं सिवाय असंख्य सखाओं के—रक्तक, पत्रक
पत्री, मधुकण्ठ, मधुवर्त्त, रसाल, विशाल, प्रेमकन्द, मकरन्द, आनन्द,
चन्द्रहास्य, पयद, बकुल, रसदान, शारदाबद्धि इतने सखा यद्यपि स-
खाभाव रखते हैं परन्तु सेवकाई व आज्ञा पालने में भी क्या गृहमें क्या
बनमें हरघड़ी तत्पर व हाज़िर रहते हैं सखा भाववालों के जितनेभाव
अलख अलख हैं उनसबमें मुख्यता ब्रजके ग्वालबाल सखाओं को है
किस हेतु कि उनको उस पदवी से न्यून व अधिक नहीं होती भगवत्
के नित्य विहार में प्राप्त रहते हैं और सब गोलोक निवासी हैं जब भग-
वत् का अवतार होता है तब वह भी साथ आते हैं जो कोई भगवत्
की महिमा अथवा भगवच्चरित्रों को लिखसके तो उनकी महिमा भी
लिखसकेगा नहीं तो जैसे महिमा भगवत् की अपार है तैसेही उनकी
है और उनके चरित्र और परमपवित्र कथा का यह माहात्म्य है कि
जो कोई धोखे से भी उनके खेल व लीला व हँसी ठठ्ठा अशक्तता वाल
चरित्रोंको सुनताहै अथवा गानकरताहै तो भगवत् बलात्कारसे अपनी
भक्ति उसको देकर उसके आधीन होजाते हैं सखाभावके चरित्र इतने
अगणित व अपारहैं कि शेष व शारदा भी वर्णन नहीं करसक्के सोएक
दो चरित्र सूक्ष्म करके इस ग्रन्थ के पवित्र होने के हेतु लिखताहूं जब
बन में गऊ चराने को जाया करते थे तो दो यूथ होकर खेलते थे एक
दिन बलदेवजी का यूथ तो जीतगया और लालजी का यूथ हारा तब
हारेहुये सखाओं ने एकएक सखा जीतेहुयेको अपनी चड्ढी चढ़ायां
श्रीदामाजी के बखरे में नन्दनन्दनजी आये व जहां पहुँचानेका प्रबन्ध
था सो जगह दूरथी थोड़ी दूर चलकर सुकुमारता व सुन्दरता के का-
रण से नन्दनन्दने महाराज को पसीना आयगया और थकगये तो
पहिले श्रीदामाकी बहुत खुशामद व लल्लोपत्तो करी कि आधी दूरतक
लेजाऊंगा जब न माना तो धमकाया डरपाया कि अच्छा कल्हको मैं
कड अच्छीप्रकार शिष्टाचारी करूंगा जब उसपर भी श्रीदामाजीने कुछ
न माना तो मचलाई करनेलगे परन्तु श्रीदामाजी ऐसे उस्तादमिले कि
एक डगभी माफ न किया जहांतकका प्रबन्धथा वहांहींतक लेगये जब
श्रीनन्दनन्दन महाराज कंसके बुलानेपर मथुराजी में गये तो मुष्टिक व
चाणूरआदि मल्लोंको और कुवलयापीड़ मतवारे हाथीको विनापरिश्रम

एकक्षणमें मारडाला और उसी अखाड़े में जब व्रजग्वालबालों के साथ कुश्ती होनेलगी तो कभी नन्दनन्दन महाराज उनको धरतीपर गिरा यदेते थे और कभी ग्वालबाल आपको ऐसे पटकतेथे कि शीघ्र उठने की सामर्थ्य नहींरहतीथी धन्यहै यह भक्तवत्सलता और प्रीतिकी पूर्णत जब सूर्यग्रहणमें कुरुक्षेत्रपर द्वारकासे भगवत् आये तो सब व्रजवासि भी आये थे बहुतदिन पर आपसमें मिलापहुआ और लोग तो अपने अपने स्नेह व भावके अनुसार मिले और भगवत् सखा उस अपने रङ्ग में रँगेहुये अपने दावँ और पेंचके लेनेको तैयारहुये और वह रंग भगवत् गुणानन्त निर्विकारको भी ऐसाचढ़ा और प्रेमकीनदी में ऐस मग्नकरदिया कि प्रेमका जल आंखों से बहकर चरणोंतक पहुँचा॥

कथा गोविन्दस्वामी की॥

गोविन्दस्वामी महाराज के सखाभाव का चरित्र भगवद्भक्तों को त परम आनन्द का देनेवाला है और जो कोई भक्तनहीं उनको भक्तिके देनेवालाहै गोविन्दस्वामी उसभावकी आराधनासे थोड़ेही दिनमें उस पदवी को पहुँचे कि गोवर्द्धननाथजी के साथ सदा खेल व क्रीड़ामें प्राप्त रहकर अपने परममित्र के रूप अनूप में मग्न रहते थे एकदिन गुल्ली डण्डा खेल रहेथे जब दांव गोविंदस्वामी का आया तो नटनागर महा राज भागकर मंदिरमें आघुसे गोविंदस्वामी पीछे दौड़ आये और गुल्ली भगवत् मूर्त्तिपरमारी उधरसे भगवत्के हिमायती अर्थात् पुजारीलोग मंदिरके दौड़े और अत्यन्तढिठाई गोविंदस्वामीकी समझकर धक्केदेकर मन्दिरसे निकालदिया व भगवत्से विमुखजाना गोविन्दस्वामी तड़ाग के किनारे राहपर आकर बैठरहे व गालियां देकर कहनेलगे कि अब तो हिमायतमें जाबैठा भलाकभी तो निकलैगा ऐसी शिष्टाचारी करूंगा कि जानैगा नंदकिशोर महाराजको चिंताहुई कि अबयह बेरंगमेरे तलाश में है और मुझसे बिन वनबिहार और खेलके रहानहींजाता जब बाहर जाऊंगा न जानैं क्या करैगा सो इस शोचमें कुछ न खाया और गोसाईं बिट्ठलनाथजी जो परमभक्तथे उनसे कहा कि गोविन्दस्वामी के डरसे हमसे कुछ भोजन नहीं कियाजाता जो हमको कुछ भोजन करानाहोय तो गोविन्दस्वामीको प्रसन्नकरो यद्यपि दांव गोविन्दस्वामीका था परंतु सुधि भूलिकै मैं मन्दिरमें चलाआया अब वह मुझको वृथा गालीदेता

है और जब बाहर जाऊंगा न जानैं क्या करेगा सो जब उसका क्रोध शान्तहोगा तब मुझको कुछ खानापीना सुहायगा विट्ठलनाथजी दौड़े गये विनय प्रार्थना करके बलसे गोविन्दस्वामी को मनाकरलाये और मन्दिरमें भगवत् के पास भेजदिया वहां जब दोनोंका आपुसमें बनाव होगया और दोनों यार गलेलगकर मिले तब नन्दलाल महाराज ने भोगलगाया एकबेर गोविन्दस्वामी बाह्य शंकाको बनमेंगये थे जबबैठे तब आप लालजी महाराज जाकर दूरखड़ेहोकर आकके फल मारनेलगे और इसीप्रकारकी दूसरी कुछ चपलाई को किया गोविन्दस्वामीने उसी दशामें उठकर ऐसे आकके फलमारे कि व्रजमोहन महाराजने घबराकर भागनेको चाहा संयोगवश गोबिन्दस्वामीकी माता उनको ढूँढ़तीआय गई तब गोविन्दस्वामी धोती बाँधकर घरगये और झगड़ा छूटगया एकबेर भगवत् मन्दिर को भोग के निमित्त थालजाता था व गोबिन्द स्वामी जो कि राहमें प्रसादकी आशाकरके बैठरहे थे पुजारी से माँगा कि पहिले हमको देव तिसके पीछे नन्दनन्दनके वास्ते थाल लेजाना पुजारी ने न माना गोविन्दस्वामी उसके हाथसे थाल छीनकर सब सामग्री थालकी खायगये और चलखड़ेहुये पुजारी रिसकरताहुआ गोसाईं जी के पास आया और कहा कि मैं पूजा सेवासे बाज आया गोविन्द स्वामी भोगका थाल लूटलेगया गोविन्दस्वामीको बुलाकर पूंछा कि यह क्यों ढिठाई है गोविन्दस्वामी ने उत्तर दिया कि तुम अपने लालाको अच्छे अच्छे भोजन कराकर फिरने व खेलने व लड़ने को तैयार करदेतेहो और पहिले ठटिवट करि बनको चलाजाताहै मुझको जो भोजन पीछे मिलताहै तो उसको ढूँढ़ताहुआ सारेबनमें भ्रमित भ्रमता फिरता हूं तोमैं उससे पहिले क्यों न तैयारहोरहूं गोसाईंजीने हँसकर प्रतापऔर भक्ति और सखाभाव गोविन्दस्वामीका पुजारी से वर्णनकिया और आगे परको ढिठादिया कि उनकी प्रसन्नतासे भगवत् की प्रसन्नता जानगये गोविन्दस्वामी के पद बनाये हुये भगवत्में ऐसे शीघ्र मनको लगादेते हैं कि मानों मूलमन्त्र हैं और मालूम रहै कि कीर्त्तननिष्ठा में नन्ददास जीकी कथामें जो अष्ट छापके नाम लिखे हैं तो उसमें दो नामकी भूल है व तुलसी शब्दार्थ प्रकाश ग्रंथ गोपालसिंहका बनायाहै उसमें अष्ट छापके नाम ठीक ठीक लिखे हैं सो यह हैं ॥ सूरदास; कृष्णदास, पर-

मानन्द, कुंभनदास येचारों भक्त वल्लभाचार्य्य के चेलेथे, चतुर्भुजदास, छीतस्वामी, नन्ददास, गोविन्दस्वामी येचारों भक्त वल्लभाचार्यके विठ्ठलनाथजी तिनके चेलेथे अर्थात् ये आठोंभक्त वल्लभकुल के से भगवत् पदको प्राप्तहुये और उनके ग्रन्थ गोकुल व वल्लभाचार्यजी की सम्प्रदायमें मिलते हैं सो ये गोविन्दस्वामी भी अष्टछापमें हैं॥

कथा गङ्गग्वालकी॥

गंगग्वाल व्रजनाथजी के चेले सखाभाव के परमभक्त और किसी सखाका अवतारहुये जिन्होंने व्रजके चरित्र और सबसखी और भगवत् सखाओं का वर्णन विस्तार करके किया नन्दनन्दन महाराज के साथ खेलका जो परम आनन्द उसके रस में हरघड़ी मग्नरहते थे व्रजकी भूमि प्राणसे भी प्यारीथी और भगवच्चरित्रों में अत्यन्त प्रीति रखते थे और भगवत् कीर्त्तन अर्थात् गान्धर्वविद्या जो गान विद्याहै तिसमेंहुये कि उससमयमें उनके ऐसा गानेवाला दूसरा कोई न था एकवेर बादशाह श्रीवृन्दावन आया और उनके गानेकी बड़ाई सुनकर बुलाया बलसे आये वल्लभाचार्य्य भी उसघड़ी साथमें थे दोपहरका समय था तिस्से सारंग गाया कि बादशाह और जो कोई वहांथा सब मोहित होगये और सब भगवत् के प्रेममें मग्न बादशाह यह प्रताप देखकर हाथ जोड़कर खड़ाहुआ और अत्यन्त आधीनताई से यह विनतीकी कि मेरे साथ चलो उत्तरदिया कि व्रजभूमि को छोड़कर नहीं जासक्ता जब बहुत कहा सुनी दोनों ओरसे हुई तो बादशाह कैदकरके दिल्ली में लेआया व नज़रबंदमें रक्खा राजाहरिदास जाति तोदर राजपूतने यह वृत्तान्त सुना शिफ़ारस करके छुड़ादिया तुरन्त व्रजमें आये और अपने परम मित्रको देखकर परम आनन्द को प्राप्त हुये ग्वाल संज्ञा सखाभाव करके विख्यात था॥

निष्ठातेईसवीं॥

जिसमें महिमा शृंगार व माधुर्य्य की व कथा आठभक्तों की है॥

श्री कृष्णस्वामी के चरणकमलोंकी त्रिकोण रेखाको और श्रीकृष्ण अवतार को दण्डवत् करताहूं कि वह अवतार गोकुल में धारण करके ऐसे चरित्र पवित्र जगत्में विख्यात व प्रवर्त्तमान किये कि जिनके प्रभाव से ब्रह्मानंद व परमपदकी प्राप्ति महापापी व अपराधियों को भी

अति सुलभ होगई शृंगाररस को उज्वल और शुक्लरसभी कहते हैं यह वह रस है कि ज्ञान और वैराग्य और भक्ति सब जिसके सेवक व दासहैं दूसरे धर्मोंकी तो क्या गिनती है इस शृंगार रसको वह गुनहै कि एक क्षणमें निविड़ प्रेम उत्पन्न करके फ़कीर को बादशाह व बादशाह को फ़क़ीर करदेताहै इसरस अर्थात् सुन्दरताके बराबर मोहन गुण न तंत्र में है न मन्त्रमें है व राग इत्यादि तो एकबात हलकी हैं जितने भक्त पहिले हुये और आगेपर होंगे और अब हैं सो इस रसके अवलम्बसे अपनी मनोवांछित पदवीको पहुँचे और पहुँचेंगे महिमा इसरसकी अपार व अथाह है जो कोई भगवत्की महिमा व चरित्रों का वर्णन करसके तो इसरसकी भी महिमा वर्णन करदे गोपिका एक तो स्त्री फिर गाँवकी रहनेवाली न कुछ विद्यापढ़ी न कुछ साधन किया व न कुछ साधक जानती थीं और जातिसे भी उत्तम न थीं इसरसके प्रभाव से उसपद को पहुँचीं कि ब्रह्मा जो सब जगत्के पितामह और उत्पन्न करनेवाले ने जिनकी चरणरज को अपने शिरपर धारणकिया और जिनके चरित्रों का जहाज़ संसार समुद्रसे पार उतरने को ऐसा प्रवर्त्तमान हुआ कि कर्म्म भोगरूपी आंधीका कदापि भयनहीं शृंगार उपासक जो इसरस को मुख्य वर्णन करके कहते हैं कि ब्रह्मानन्द इसीरससे प्राप्तहोताहै वचन उसका सत्य व ठीकहै क्योंकि जब भगवत् आराधन ज्ञान अथवा भक्तिके द्वाराकरके होगा तो कोई झलक सुन्दरता व माधुर्य भगवत्की उपासकके मनमें ऐसी प्रगट होगी कि उसके आनन्द से सब मिठाई व उत्तमपदार्थ तीनोंलोक के तृणके समान समझपड़ेंगे और बेसुधि व मग्न उस झलकके दर्शनमें होजावेगा और जबतक भगवत्के सुन्दरता की झलक मनमें न आवैगी तबतक भगवत् की प्राप्ति कदापि नहीं तो इस्से निश्चय होचुका कि ब्रह्मानन्द केवल शृंगाररस से प्राप्त होताहै इसमें एक शंका यह उत्पन्न हुई कि जो शृंगाररस मुख्य है तो शास्त्रों में जो दास्य सख्य वात्सल्य इत्यादि कई प्रकार की निष्ठा व भक्ति लिखी है उनका लिखना क्या प्रयोजनथा केवल शृंगारनिष्ठा लिखदेना बहुत था और नवप्रकार भक्तिमें शृंगारका कहीं नाम भी नहीं है सो जानेरहो कि जितने वेद व पुराण और शास्त्र इत्यादि ग्रन्थ व आज्ञा हैं सब शृंगारही रसका वर्णन करते हैं व शृंगारही मुख्य है व जो वर्णन जहां भ-

गवत् आराधन काहै वह सब शृंगारका अर्थ समझना चाहिये क्योंकि सुन्दरताकी झलकके विना साक्षात्कार हुये भगवत्की प्राप्ति कदापि होने नहीं सक्ती और दास्य सख्य वात्सल्य इत्यादि जो भक्तिके प्रका शास्त्रोंमें लिखे हैं सो भी उसी शृंगारही के विस्तारहैं जैसे भक्तिके स्व रूपके वर्णन में प्रथम भूमिकामें लिखाहै कि भक्ति एकहै व जिस जि रीतिसे जिस किसी ने मन लगाया वही एकप्रकार की भक्ति होगई इसीप्रकार भगवत् की शोभा व माधुर्य्य की चिन्तन सब निष्ठा दा इत्यादि में योग्य व निश्चय हुआहै जिस किसी ने भगवत् को अपन स्वामी ध्यान करके सुन्दरता व स्वरूप व माधुर्य्य का चिन्तवन उ रीतिसे किया सो दासनिष्ठा ठहरा और जिस किसीने मित्र जानक उस रूपका ध्यान किया सो सख्य और जिस किसी ने पुत्र जानक चिन्तवन किया सो वात्सल्य इसीप्रकार सेवा और अर्चा व शरणाग इत्यादिको विचार करलेना चाहिये तो वेद और पुराणों के प्रमाण निश्चय होगया कि भगवत् का शृंगार व माधुर्य्य मुख्यहै जो यह को कहै कि भगवत्की करुणा व दयालुता व भक्तवत्सलता आदिभी त जगह जगह लिखी है कि तिस कारण से भगवत् में प्रीति होती है सो पहिले उत्तर तो यहहै कि वह प्रीति जिसका वर्णन करतेहो किसवस्तु में होती है जो किसीरूप व झलक में होती है तो उसीका नाम शृंगार व माधुर्य्यहै और जो कुछ शोभा व झलक के चिन्तवन में नहीं होती है किसी और बात में होती है तो मिथ्याहै क्योंकि विना किसी सुन्दरता व झलकके प्रकाश भये कदापि दृढ़प्रेम नहीं होसक्ता दूसरा उत्तर यह है कि जिसप्रकार संसारी प्रीति अर्थात् मनस्वी प्रीति में जिसपर आसक्त हैं तिसकी सुन्दरता का वर्णन करते हैं तो उसके बोलने व चलने व मिलने इत्यादि स्वभावका भी वर्णन किया करते हैं इसीप्रकार भगवत् प्रेमके वर्णन में भगवत् के रूप और माधुर्यका वर्णन करना तो मित्रके सुन्दरता के वर्णन के सदृशहै और भगवत् की अद्वैतता व कृपालुता व करुणा व भक्तवत्सलता व ईश्वरता व सर्वज्ञता और दूसरेगुण जैसे अच्युत व अनन्त व व्यापक व अन्तर्यामी व पूर्णब्रह्म व परमात्मा व सच्चिदानन्दघन इत्यादिक वर्णन मित्रके स्वभाव के वर्णन के सदृश है अब यह शङ्का उत्पन्नहुई कि एक वचन से भक्ति व शृंगार एकही भांति

जनाई पड़ते हैं अर्थात् एक जगह तो दास्य सख्य वात्सल्य इत्यादिको
भक्तिके प्रकारमें लिखा और इस शृंगारनिष्ठाके वर्णनमें शृंगारके अंग
व भेद उन दास्य इत्यादि निष्ठाओंको लिखा जब कि भक्तिदशा प्रेमा-
भक्तकी है और शृंगार प्रियवल्लभकी सुन्दरताको कहते हैं तो दो दशा
भिन्न २ एक कब होसक्ती हैं सो सत्य है कि दोनों प्रकार अलग २ हैं
परन्तु एकसे एकका सम्बन्ध ऐसा है कि एकके विना एकका प्रकाश
नहीं होता क्या हेतु कि सुन्दरता विना स्नेह कदापि नहीं होसक्ता और
इसीप्रकार प्रेम विना सुन्दरताका गाहक कोई नहीं जैसे कि जगत् न
रहा तब भक्त भी नहीं थे उसकालमें ईश्वरको कौन जानताथा और
आगेपर जब प्रलय होजायगी तो तब भगवत् को कौन जानेगा व उ-
नकी सुन्दरतापर कौन आसक्त होगा तो जब कि स्नेह व सुन्दरता
ऐसे सम्बन्धी हुये तो अंग सब उनके परस्पर मिश्रित होकर एकके
सदृशहोयँ तो कौन आश्चर्य्य व विरुद्ध है सिवाय इसके परिणाम में
स्नेह करनेवाला व जिसमें स्नेहहुआ दोनों एक होजाते हैं अर्थात् प्रेम
करनेवाला अपनी सबदशा भूलकर सब अंगमें अपने प्रियवल्लभका
रूपहोजाता है तो इसप्रकारसे भी एक लिखने में कुछ शङ्का योग्यनहीं
है सिवाय इसके शृंगार व भक्ति दोनों भगवद्रूप हैं कुछ भेद नहीं इस
प्रकार से भी शङ्काकी समवाई नहीं निश्चय करके यह शृंगाररस सब
रसोंमें मुख्यतर है और सत्यकरके भगवत् में प्राप्त करदेताहै यह रस
चारसामा अर्थात् विभाव व अनुभाव व सात्विक व व्यभिचारी करके
उत्पन्न होताहै पहिली सामा जो विभाव तिसमें भगवत् सच्चिदानन्द
घन पूर्णब्रह्म नवयौवन सब शोभा व सुन्दरताका सार श्यामसुन्दर स्व-
रूप दिव्यवस्त्र व आभूषणोंको सजेहुये कि जिसके सब अंगोंपर करोड़ों
कामदेव निछावर होतेहैं विषयालम्बनहैं और जिस उपासककी भग-
वत् के सुन्दरता व शृंगारपर जैसी प्रीति व चाहहोय सो अपनी उपा-
सना के अनुसार भगवत् का ध्यान जैसा कि जगह जगह शास्त्रों में
वर्णन कियाहै और इस ग्रन्थमें भी जहां तहां लिखाहुआहै विचारकर
लेवै ॥ भगवद्भक्ति जो कि उस सुन्दरता व शृङ्गार के महाआसक्त और
ध्यान करनेवाले हैं इस विभावमें आश्रयालंबनहै व दूसरी सामा सब
इस शृङ्गाररसकी विस्तारकरके इस ग्रन्थके आरम्भमें लिखीगई है दो

वार लिखना प्रयोजन नहीं शृंगार रसमें उपासक लोग दो भेद वर्णन करते हैं एक तो शृंगार और दूसरा माधुर्य शृंगार तो इस सुन्दरता और प्रेमसे तात्पर्य है कि जो नायकव नायकाके बीचमेंहो और बिना एकओर नायका व एकओर नायकके शृंगार नहीं कहा जाता सो उसमें उत्तमपद स्वकीया नायका अर्थात् व्याहीस्त्री और पतिके शृंगारका है भगवत् भक्तोंमें यह पदवी लक्ष्मीजी और श्रीजानकी और रुक्मिणीजीपर स माप्तहुई और किसी किसीके वचनसे श्रीराधिकाजी भी स्वकीयाहैं अ कोई उपासके इस पदवीका न देखा न सुना व दूसरी पदवी शृंगारकी परकीया नायकाहै सो गोपिकाओं पर समाप्तहुआ अब यह भाव किस को होसक्ताहै जो कोई किसी गोपिकाका अवतारलेवै तो होसक्ताहै जैसे कि मीराबाईजी व करमैतीजी व नरशीजी व हरिदासजी इत्यादि लोग हुये और यह भी जानेरहो कि रीति शृंगार व प्रीतिकी इसी पदवी में विशेष बनिआती है अब जो उपासक हैं उनके यह भावहैं कि कोई तो सख्यताकी मुख्यतालिये दासीभाव रखते हैं और कोईको दासीभावकी मुख्यता सख्यताकी गौणताहै और कोई अपने आपको युगलकीदासी जानते हैं सख्यता से कुछ प्रयोजन नहीं और कोई अपने आपको श्री प्रियाजीकी दासी जानकर उनकी प्रसन्नतामें प्रीतमकी प्रसन्नता मानते हैं औ इस अन्त पदवी के निज उपासकहित हरिवंशजी की संप्रदाय वाले हैं सब शृंगार उपासकों की यह रीतिहै कि युगल शृंगार व बि हार में अपने भावके रूपसे सब समय प्राप्तरहते हैं कोई समय अन प्राप्त व परदेकी नहीं और प्रियाप्रीतमके मनकी बात जाननेवाले और संदेशमें चतुर और मानके समय मनाने व मिलाने में प्रवीण ऐसे ऐसे सैकड़ों हज़ारों भावसे सेवा व चिन्तवन करते हैं भाव बहुत बारीक व अतिकठिन है इसका विस्तार करके कहना प्रयोजन नहीं शृंगार की उपासना चारोंयुगसे सदा है बहुत ऋषीश्वर और योगीजन श्रीरघुन न्दन महाराजाधिराज का अपाररूप देखकर मोहित व आसक्त होगये और उस रूप व शृंगारके पूर्ण सुख व आनन्द की प्राप्ति श्रीमहारानी जी को देखकर मानसी दासीभाव व सख्यतासे मनको लगाया ॥ मा धुर्यका अर्थ यद्यपि मिठाईका है परन्तु तात्पर्य सुन्दरतासे है माधुर्य के उपासक लोग अपने आपको सखीभाव नहीं मानते भगवत् के मा

धुर्य व सुंदरता के आसक्त व अनुरक्त होते हैं उनमें कई भेद हैं एक वह है कि केवल भगवत् माधुर्यके उपासकहैं प्रियाजीके ध्यानसे कुछसम्बन्ध नहीं रखते दूसरे वह हैं कि युगलस्वरूप अर्थात् प्रियाप्रीतमका चिन्तवन और ध्यानकरतेहैं उनमेंभी एकयूथवाले तो भगवत्की ईश्वरतामुख्य मानते हैं और प्रियाजी को आद्या और सब ब्रह्माण्डों की माता और भगवत् आश्रयाभूत जानते हैं दूसरे ऐसे हैं कि प्रियाप्रीतमको एकमानते हैं जिसप्रकार जल और तरंग अथवा सांप और उसका कुण्डल कि वास्तव करके एकहै कहने मात्रको दो कहेजाते हैं व तीसरे ऐसे हैं कि प्रियाजी की परत्व अधिक करते हैं व प्रीतमकी न्यून इस तीसरे भाव की बात विस्तारसे आगे लिखीजायगी और माधुर्यके उपासकों के सेवा पूजाकी रीति ऊपरके लिखे भावोंसे सिवाय कई भांतिके दूसरे हैं अर्थात् कोई २ तो युगल स्वरूपकी सेवा पूजाके समय अपने आपको बालक दो चार वर्षका चिन्तवन करके सब सेवा पूजाकरते हैं और किसी की यह रीतिहै कि आप तो सेवा भगवत्की करते हैं और महारानीजीकी सेवाके निमित्त अपनी माता के स्त्रीको अथवा भगिनी इत्यादिको अथवा अपने घरकी सब स्त्रियोंको महारानीजीकी दासी विचार करलेते हैं और किसी की यहरीतिहै कि ब्रह्माणी और भवानी व इन्द्राणी इत्यादिको महारानी जीकी सेवा करनेवाली जानकर भगवत्का सेवा पूजा आप करलेते हैं सिवाय इसके स्वकीया परकीया भाव अलगरहा सो रामानुज संप्रदाय और राम उपासकोंमें तो परकीया भाव कदापि शोभित नहीं होसक्ता स्वकीया भावसे सेवा आराधन प्रवर्त्तमान है श्रीकृष्ण उपासना में विशेष करके परकीया भाव से आराधन योग्य है और होती है सो उसका यह भेदहै कि निम्बार्क सम्प्रदायमें स्वकीयाभावसे सेवा पूजन करते हैं और विवाहका होना श्रीकृष्ण व राधिका महारानीका पुराणों के प्रमाण से मानते हैं और विष्णुस्वामी की सम्प्रदायवाले यद्यपि उपासक केवल बालचरित्र श्रीकृष्णस्वामी के हैं परन्तु राधिकाजी को निम्बार्कसम्प्रदाय के प्रमाणके अनुकूल स्वकीयाभाव से श्रीकृष्णस्वामीकी परमप्रिया जानते हैं और माध्वसम्प्रदाय में परकीयाभाव की रीतिहै और मनकी रुचि दूसरीबात है व स्मार्त मतवालोंमें कोई सिद्धांतरीतिका प्रबन्ध नहीं जैसे चरित्रों और भावपर मन सम्मुखहोगया

वैसाही मानलेते हैं ॥ शृंगार और माधुर्य्य भावमें जो साज व शृङ्गार प्रियाप्रीतमका ध्यानमें अथवा प्रत्यक्ष करनाचाहिये और जो प्रियाप्रीतम आप परस्परके मिलने और देखने और दिखलाने और अपने २ सजावट रखने और विहार व आनन्द की सामा अत्यन्त मनसे शोधि शोधि व बनावट से तैयारी की उमंग रखते हैं और जो खेल व हँसी व वाक्‌विलास व प्यार व चाह परस्पर उनमें होते हैं उनकावर्णन अगणित शेष और शारदासे करोड़ों कल्पतक कदापि नहीं होसक्ता और जिन भक्तोंकी उपासना सिद्धहोगई है और वह सामा व समाज मनमें समायगई है उनको भी सामर्थ्य नहीं कि वर्णन करसकें मनहीं मनमें उस आनन्द का अनुभव करते हैं तो मैं मतिमन्द क्या लिखसकूं वे मित्र परमप्रेमी व स्नेही कि जिनका मन आपुसकी सुन्दरतापर परस्पर परम अशक्तहो और मिलने की चाह और उमंग में भरेहुये त्रयलोकका ऐश्वर्य्य व सम्पत्ति से जहांतक सामा के लिये व आनन्द व सजावटकी जो शास्त्रों में सुनते हैं व जोकुछ देखते हैं अथवा जहांतक मनपहुँचे सो सब तैयार करतेहो सो सब प्रियाप्रीतमके शृंगार व विहार व आनन्द व सुख व शोभा व सुन्दरताकी सामाके आगे ऐसेहैं कि जैसे सौकरोड़ सूर्यके सामने एकबालूकी कणहो सो इसहेतु उपासकलोग अपनी चाह व मनकी दौड़ व देखेसुने के अनुसार जिसप्रकार जितना युगलस्वरूप का ध्यान व आराधन करसकें तितनाहीं अच्छा है जैसी और जिसप्रकार चिन्तवन करैंगे सोई वांछितपदको पहुँचावेगा और यहभी जाने रहो कि प्रियाप्रीतम परस्पर प्रेमासक्त स्नेहियोंमें शिरोमणि हैं जो चरित्र शृङ्गार व माधुर्य्यके हृदयकी आंखोंको दिखाई पड़ें सो सबभगवत् के कियेहुये होंगे नयेचरित्र कोई न होंगे सो उसरूप अनूप में जिसप्रकारमनलगै लगाना चाहिये कि परमानन्द व ब्रह्मानन्द व ज्ञान व भक्ति व वैराग्य व चारोंपदार्थ आपसे आप प्राप्तहोजाते हैं ऊपर वर्णनहुआहै कि कोईकोई प्रियाजीकी परत्व वर्णन करते हैं और प्रीतमकी किंचित् न्यून सो जानेरहो कि चारों सम्प्रदाय में ऐसी रीतिको किसी ने प्रगट नहीं कियाथा अब चार सम्प्रदायोंमें एक किसीने नई शाखा निकाली अर्थात् पहिले से रामानुज सम्प्रदायमें दो मार्ग हैं एक तिङ्कल दूसरेमें वड़गल तिङ्कल वे हैं कि जो निज रामानुज स्वामी की रीति के अनुकूल

हैं और उनके सिद्धान्त में विष्णुनारायण ईश्वर हैं औ लक्ष्मीजी जीव और बड़गल वे हैं कि वेदान्ताचारी ने नईरीति चलाई कि विष्णु और लक्ष्मी को बराबर जाना और युगल स्वरूप के आराधनकी परिपाटी को प्रवर्त्तमान किया अब थोड़े दिनोंसे अर्थात् सौ दोसौ वर्षसे वेदान्ताचारीके पन्थमें वीरराघवाचार्य्य ने यह शाखा निकाली कि विष्णुनारायण पर लक्ष्मीजी को अधिक लिखा और वीरराघवी मत चलाया उनका मत दुर्गाउपासकोंसे थोड़ा मिलताहै उसमतमें थोड़े लोग हैं और मदरासमे एक मञ्जिल पश्चिम उनका गुरुद्वाराहै ॥ शृङ्गार व माधुर्य्य के उपासक लोग ध्यानकरने में व प्रियाप्रीतमकी सुन्दरता व शृङ्गारकी उपासनामें एकमतहैं और आरम्भ परिणाम दोनों का एकही भांति है इसहेतु शृङ्गार व माधुर्य्य के उपासक लोगोंको एकही निष्ठामें लिखना उचित जाना हे कृपासिन्धु हे दीनवत्सल हे करुणाकर अब इस दीन की ओरभी कुछ ऐसी कृपादृष्टिहो कि आपके माधुर्य्यका चिन्तवन करताहुआ आनन्दमें रहाकरूं यद्यपि मेरे कोई आचरण आपके कृपा व दया करनेके योग्य नहीं हैं परन्तु जो आपकी बिरददीनवत्सल और प्रणतार्त्तिभञ्जन की ओर दृष्टिजाती है तो दृढ़आशा होती है सो अपनी ओर व अपने बिरदकी ओर देखकर यह दृढ़ता कृपाकरो ॥

॥ कवित्त ॥

जिनजान्यो वेद तेतो वेदविद विदितहीं हैं जिनजान्यो लोक लोक लीकन पर लड़मरें।
जिनजान्यो तप तीनों तापन सों तपतते पञ्चअग्नि सङ्गलैं समाधि धरे धरे मरें ॥
जिनजान्यो योग तेतो योगीयुग २ जिये जिनजान्यो ज्योति सोउ ज्योतिलै जरमरें ।
हूं तो देवनन्द के कुमार तेरी चेरीभई मेरो उपहास कोउ कोटिन करमरें १॥
कोउकहो कुलटा कुलीन अकुलीन कोउ कोउकहो रङ्किनि कलङ्किन कुनारी हौं।
केशव देवलोक परलोक त्रयलोकमैंतो लीनीहै अलौकिक लोक लोकनते न्यारीहौं॥
तनजाहु धनजाहु देव गुरुजनजाहु जीव क्यों न जाहु नेक टरत न टारी हौं।
वृन्दावनवारी बनवारी के मुकुटवारी पीतपट वारी वा मूरति की वारीहौं २॥
माथे पै मुकुटदेखि चन्द्रिका चटक देखि छविकी लटक देखि रूपरस पीजिये।
लोचन विशाल देखि गरेगुञ्जमाल देखि अधररसाल देखि चित्तचोप कीजिये ॥
कुण्डल हलन देखि अलकैं वलन देखि पलकैं चलन देखि सर्व्वस दीजिये ।
पीताम्बर छोरदेखि मुरलीकी घोरदेखि सांवरेकी ओर देखि देखिवोई कीजिये ३॥

कथा व्रजगोपियों की ॥

व्रज गोपिकाओं के चरित्र त्रयलोकको ऐसे पवित्र करनेवाले हैं कि जिनकी उपमा कोई नहीं देखने में आती जो गङ्गा इत्यादि तीर्थों से बराबर करीजाय तो वे एक एक देशमें स्थित हैं जो लोग दूर रहते हैं उनको बड़े परिश्रमसे मिलते हैं और पर्व आदि के भेदसे पुण्यके न्यून विशेषकी बात अलगरही और यह चरित्र परमपवित्र सबको सब जगह अनायास प्राप्त हैं और चारोंपदार्थ के देने के निमित्त सब समय बराबरहैं अपने अभाग्य से जो उसमें प्रीति न होय तो दूसरी बात है महिमा गोपिकाओं की वेद और ब्रह्मा व शेष व शारदा इत्यादि भी नहीं कहसक्के ब्रह्माजी ने जिनकी चरणरज को अपने शिरपर धारण किया व अपना भागसराहा तो फिर उनकी महिमाका वर्णन करनेवाला कौनहै जो गोपिकाओं को भगवद्भक्तों के यूथमें गिनाजाय तो उसमें शङ्का होती है प्रथम यह कि जिनके चरित्र गायकरके भक्तजन भक्तनाम पायकर विख्यात होते हैं जो उनको भक्त कहाजावै तो ढिठाई है दूसरे यह कि वेद और पुराणों में कईप्रकारकी भक्ति लिखी हैं उनके साधन से भक्तनाम होताहै सो गोपिकाओं ने उन सबमें कौनसा साधनकिया कि उनको भक्तों में गणना कियाजाय व जो उनको भक्तों में न लिखा जावै तब भी शङ्का का स्थानहै प्रथम यह कि किसी ने विना भगवद्भक्ति भगवत्को नहींपाया दूसरे यह कि जो वे भक्त नहीं तो इस भक्तमाल में क्यों लिखा इसहेतु उनको भगवत् की परमप्रिया और भगवद्रूप जानना चाहिये और जो महिमा उनकी वर्णन हो सो महिमा भगवत् की विचार करनी योग्य है वरु गोपिकाओं की महिमा अधिक है इस भांति कि जो प्रबल होताहै सो निर्बलको अपनी ओर खींच लेताहै सो गोपिकाओं ने भगवत् को गोलोक से अपनी ओर खींचलिया सिवाय इसके सारा संसार कहताहै कि भगवत् इस संसारका कर्त्ता हर्त्ता और स्वामी है परन्तु इस कहने सुनने से भी किसीको विश्वास नहीं होता कि भगवत्का भजन स्मरणकरके भगवत्के रूप अनूपका चिन्तवन किया करैं और गोपिकाओं के चरित्रको यह प्रताप और प्रभावहै कि जो थोड़ा सा भी कोई सुनलेताहै तो ऐसा कदापि नहीं होसक्ता कि भगवत् का वह स्वरूप उसके हृदयमें न आजाय और भगवत्में विश्वास न होय

इच्छाथी कि कुछ चरित्र गोपिकाओं के इस ग्रन्थमें लिखेजावैं परन्तु उन अपार चरित्रों में से एकप्रकार के चरित्र के लिखने कीभी सामर्थ्य करोड़ों जन्मतक न देखी गोपिकाओंका भाव भगवत्में अलौकिक अ-र्थात् जो न देखने में आवे ऐसा हुआ कि भगवद्भक्तोंको परमआनन्द का देनेवाला है और दूसरे लोगों को भगवत् में लगा देनेवालाहै अर्थ अलौकिकभाव का यहहै कि गोपिका भगवत्को एक व सबसे अलग पूर्णब्रह्मपरमात्मा जानतीथीं और उसीको यारदोस्त व मित्र परमस्नेही व प्राणप्रीतम समझकर मित्रता व दुलार व प्रेमके नेमकी रीति सब आचरण करतीथीं यद्यपि यह दोनोंबात परस्पर ऐसी विरुद्धहैं कि जैसे अन्धकार व प्रकाशको आपुसमें विरुद्धता होती है परन्तु सो गोपिका-ओं में दोनों बनेरहे इसहेतु शास्त्रों ने उनका भाव अलौकिक कहा सो इस भावके चरित्रों में से एक दो चरित्र नमूने के भांति लिखताहूं॥ एक बेर ब्रजभूषण महाराज रातको किसी गोपिका के घर रहे जब बड़े भोर वहांसे चलनेकी इच्छाको किया अपने घुँघुरू इस डरसे कि शब्द सुन-कर कोई जागि न पड़े उतारनेलगे उस गोपिकाने हाथ पकड़लिया और कहा कि जो मेरी उपहासहोय तो चिंता नहीं परन्तु यह उपहास तुम्हारी होनी न चाहिये कि श्रीकृष्ण पूर्णब्रह्म अपने चरणसे लगेहुयेको अलग करदेताहै॥ एकबेर ब्रजगोपिका माखन बेचने के लिये यमुनापार जाती थीं और उनको ब्रजचन्द्र महाराज से हँसने बोलने व देखनेकी प्रीति अनुक्षण रहतीथी इसहेतु उसीओरगईं जिसओर नटनागर महाराजथे और दर्शन परस्पर होने पीछे दधिदानका झगड़ा व रसबादके होनेपर यमुनापार जानेकी इच्छाको किया तब ब्रजकिशोर महाराजने कहा कि यहनाव तो यमुनामें है परन्तु इससमय मल्लाह नहीं है जो तुमको आव-श्यक जानाहै तो हम तुमको पार उतार देवेंगे सब गोपिका उसनावपर चढ़गईं और ब्रजकिशोर महाराज मल्लाहबने संयोगवश वहनाव सड़ी और पुरानीथी जब बीचधारामें पहुँची उसमें पानी आनेलगा कौतुकी महाराजने कहा कि सावधान होजाओ नावडूबी उनमें से जो नन्दनन्दन महाराजके हँसी खेलके स्वभाव की जाननेवालीथीं उन्होंने कहा कि कुछ चिन्ता नहीं डूबनेदो हम वह मतिहीन नहीं हैं कि तेरीयमकीसे डरकर जो तू कहै सो मानलेवें और कोई२ जोथोड़ी अवस्थाकीथीं और नन्दनन्दन

महाराजके स्वभावसे अजान व नई आईथीं वह सवघबरानी और श्याम सुन्दर शोभाधामके निकटआकर कोई तो छातीसे लिपटगई और किसी ने हाथ पकड़लिया और कोई चरण पकड़कर बैठगई और किसीने गले में हाथ डालदिया जब मनमोहन महाराजने देखा कि बहुतोंसे तो मन की भाई सिद्धहुई परन्तु कितनी एक हमारी धमकी में नहीं आती हैं तो नावको बोरो बरोबर पानी में मग्न करदिया तब तो सबको निश्चय होगई कि अब यह नावडूबी औ गोपकुमार जो किनारेपर खड़ेथे ताली बजाकर हँसनेलगे कि यह मूर्ख गोपी सब इन नन्दलाल के भरोसे से नावपर चढ़ीथीं उन व्रजनागरियोंको अपने प्राणका तनकशोच न हुआ और कहनेलगीं कि यह गोरस और माखन सब डूबजावै तो क्या चिंता है और जो हमारे प्राण जातेरहैं तबभी कदापि कुछ चिन्ता व शोचका कुछ प्रयोजन नहीं है परन्तु अत्यन्त शोक व शोच इस बातका है कि सब जगत्में बात फैलेगी कि जिस नावका खेवनेवाला श्रीकृष्ण भव-सागरतारकथा सोनाव डूबगई जब यशोदाजी महारानी ने ब्रह्मा और शिव आदिक को मायाकी फांसी से बांधने और छुड़ानेवाले को रसरी से बांधा तब सब गोपिका लीला देखनेको आई और कहनेलगीं कि हे नन्दनन्दन बहुत अच्छी बातहुई जो तुमको यशोदाजी ने ऊखलसे बांधा कि अब भी तुझको दूसरे के बँधनेका दुःख जानपड़े अर्थात् जीवों को मुक्ति कृपाकरो ॥ जब ऊधोजी भगवत् का संदेशा लेकर मथुरा से गोपिकाओं के पास आये और ज्ञान वैराग्का राग आरम्भ किया तब व्रजसुन्दरियों ने ऐसे उत्तर दिये कि निरुत्तर होरहे संयोगवश एक भ्रमर वहां आयगया गोपिका उसभ्रमर के मिसकरके ऊधोसे कहती हैं कि हे भ्रमर तू उसी निर्दयी व कपटी की स्तुति व बड़ाई करता है कि जिसने राजावलि विचार से कपट व धूर्तई करके उसका राज लेलिया फिर रामावतार धारणकरके पहिले तो शूर्पणखा को अपने मुखकी शोभापर वशीभूत व आसक्त करलिया फिर उसीके रूपका नाश कर-दिया और न जानें कि उसधूर्त बेशीलको अन्तर्यामी किसवास्ते कहतेहैं जो वास्तव करके अन्तर्यामी है तो हमारी अन्तर्दशा देखकर क्योंनहीं आता और हमारे दुःखकी दशापर दया क्यों नहींकरता सो कैतो अ-न्तर्यामी नहीं है कै निर्दयी व बेशीलहै इसप्रकारके चरित्रोंसे कि अनन्त

है गोपिकाओं का अलौकिकभाव अच्छेप्रकार प्रत्यक्ष है ॥ महाभारत व भागवत व गर्गसंहिता व विष्णुपुराण और दूसरे पुराणोंसे प्रगटहै कि गोपिका वेदश्रुती व ऋषीश्वरों व जनकपुरवासियोंकी स्त्रियोंका अवतार थीं जितना कि ज्ञान और प्रेम व भाव इत्यादि उनको हुआ सब ठीक व युक्तहै प्रेम गोपिकाओं का इतनाहुआ कि सब ऋषीश्वर लोग व कवि लोगोंने अगिले व अबके प्रेमका अन्त गोपिकाओंपर समाप्त लिखा और इस भक्तमालमें जो प्रेमकीदशा प्रेमनिष्ठामें लिखीजायगी और उनके दृष्टान्त वर्णनहोंगे सो करोड़से करोड़ व भाग गोपिकाओं के प्रेम का है विचार यह कियाथा कि कुछ गोपिकाओं के प्रेमका वर्णन इस कथामें भी लिखाजाय परन्तु जब अपारदेखा तब मौनताको अंगीकार किया शृङ्गाररस जिसका कुछ वर्णन ग्रन्थारम्भमें और कुछ शृङ्गाररस की भूमिकामें हुआ उसरसके खज़ानेकी ध्वजा अथवा उसरसके देशकी सम्राट् अथवा चक्रवर्त्ती राजा यह ब्रजगोपिका हुईं व उसरसका अन्त ब्रजगोपिकाओंपर समाप्त होचुका अब थोड़ा थोड़ा जिस किसीको प्राप्त होताहै तो ब्रजनागरियों की कृपासे मिलताहै और जिस किसीको उसके स्वादकी चाहहोवे तो गोपिकाओं के चरित्रकी शरणलेवे और ब्रजगोपिका व ब्रजचन्द्रमहाराज वहचरित्र सब जो शास्त्रों में लिखे हैं ज्योंकेत्यों अबतक करते हैं जिनको भगवत्‌ने सूझनेवाली आंखें कृपाकरके दी हैं सो उसचरित्रको देखते हैं ब्रजचन्द्रमहाराज कबहीं ब्रजछोड़कर अलग नहीं होते और भागवत इत्यादि पुराणों में जो मथुरा व द्वारकाका और भगवत् के जानेका वर्णनहुआ वे चरित्र भगवत् के कोई कोई कार्य के प्रयोजन के हेतु हैं एकरूपने तो सब चरित्र मथुरा आदिमें किये और दूसरा निज स्वरूप पूर्णब्रह्म सच्चिदानन्दघन नन्दनन्दन महाराज का ब्रजमें रहा कि अबतक वे चरित्र ज्यों के त्यों होते हैं इसका सिद्धांत वेद श्रुती और पुराणोंसे अच्छेप्रकार उपासक जनों ने निश्चय करदिया है उसको विस्तारकरके लिखनेकी यहां समवाई नहीं परन्तु एकवृत्तान्त थोड़े में लिखा जाताहै जब उद्धवजी ने विरह करके गोपिकाओं की अत्यन्त विकलता देखी तो आप दयासे अतिविकल व बेचैन होगये और भगवत्‌की ओर निर्दयता व कृतघ्नताको समाप्त करनेलगे यह विचार करतेही थे कि एक चरित्रदेखा यह कि नन्दनन्दन महाराज किसी ब्रज-

गोपिका से हँसते हैं और किसीका माखन चुराकर खाते हैं और नन्द रायजी के घरमें गऊ बछड़ों की रक्षा गोदोहन इत्यादि करते हैं और वनसे गऊ चराये लिये आते हैं और गोपिका भगवत्के देखने के लिये अपने अपने द्वारपर खड़ी हैं ऐसेही ऐसे चरित्र जो भगवत् नित्यकिया करतेथे देखे और आश्चर्य में चकितहोकर बेसुधिबुधिहोगये तब ब्रज गोपिकाओं ने समझाया कि उद्धव तू ज्ञान किसको सिखलाताहै और क्या प्रयोजन इत्यादि को वर्णन करताहै श्रीकृष्ण सदा यहां बिराजमान रहते हैं और कबहीं ब्रजसे अलग नहीं होते॥

कथा मीराबाईजी की॥

गोपिकाओं की प्रीति और भक्तिके अनुसार कलियुग में अशङ्क व निर्भयप्रीति मीराबाईजीकी हुई संसारकीलज्जा और कुलकी परम्परा त्यागकरके बलसे गिरिधरलालजीसे प्रेमलगाया और निर्मलयश सब भगवत्भक्तों ने गाया मेरते के राजा के घर जन्महुआ और लड़काई से गिरिधरलालजी के रूप अनूपमें प्रीतिहोगई कारण उस प्रीति होनेका कोई कोई भगवद्भक्त यह कहते हैं कि किसी बड़े के घर बरात आईथी उसबरातकी धूमधामके देखने के निमित्त महलकी स्त्रियां कोठेपर चढ़ीं उससमय मीराबाई जी की माता गिरिधरलालजी के दर्शनके हेतु जो महलमें बिराजते थे गईथी मीराबाईजी भी तीनचार वर्षकी थीं खेलती हुई अपनी माता के पास चलीगईं व अपनी मातासे पूछा कि हमारा दूलह कौनहै उनकी मा ने हँसकर गोदमें उठालिया और गिरिधरलालजीकी ओर बतलाकर कहा कि तेरादूलह यहहै मीराबाईजीने अपनी माताकी लज्जासे अपनेदूलहसे घूँघटकरलिया और उसी घड़ीसे ऐसी प्रीति गिरिधरलालजी में हुई कि एकपल विनादर्शन व चिन्तवन अपने स्वामी के नहीं व्यतीत होताथा भक्तमाल के तिलककार ने लिखाहै कि मीराबाई गिरिधरलालजी के प्रीति दृढ़ होजाने के पीछे माता पिता ने चीतौर के राना के बेटेके साथ मीराबाईजी का विवाह करदिया और बरात बड़ी भारीआई जब रानाके बेटेके साथ भांवरीं होनेलगीं तो मीराबाईजी अपनी भांवरी गिरिधरलालजी के साथकरतीथीं रानाके बेटेको भान तनक न था जब बिदा करनेकी तैयारीको माता पिताने किया तो मीराबाईजी गिरिधरलालजी के वियोग को न सहिसकीं और अत्यन्त

बिकल होकर रोतेरोते बेसुधि होगई मा बापने अतिप्रेम व प्यारसे कहा कि सबकुछ तैयार है जो तुमको अच्छा लगे सो लेजाव मीराबाईजी ने उस बिकलता दशासे कहा कि जो हमको जिलाना चाहो तो गिरिधर-लालजीको देवमैं तनमन से सेवाकरूंगी माता पिता को मीराबाईजी बहुत प्यारीथीं और समय बिछुड़नेकी थी इसहेतु गिरिधरलालजीको मीराबाईजीको सौंपदिया बाईजी भगवत् को अपने डोले में बिराजमान करके भगवत् छविको देखतीहुई और अपने प्राणप्रीतमके मिलने से बहुत प्रसन्न व हर्षित रानाके घरपहुँचीं सासुने डोलाउतारने की रीति भांति करके तब पहिले दुर्गाका पूजन अपने बेटेसे करवाया और फिर मीराबाईजी से कहा मीराबाईजी ने उत्तरदिया कि यह तन गिरिधरलाल जीको भेंटकरचुकीहूं उनसे सिवाय और किसीकेसामने शीश कब झुका सक्तीहूं सासुने कहा दुर्गा के पूजनसे सुहागकी बढ़ती होती है इसहेतु दुर्गापूजन उचितहै मीराबाईजी ने उत्तरदिया कि इसबातमें हठकरने का कुछ प्रयोजन नहीं जो कुछ मैंने पहिले कही है उसके सिवाय और कुछ नहीं होगी यह सुनकर मीराबाईजीकी सासु अप्रसन्नहुई और जल बलकर अपने पतिके पासगई और कहा कि यह बहू किसी कामकी नहीं जब कि पहिलेहीदिन उत्तर देकर मुझको लज्जित करदिया तो न जानें आगे क्या करेगी राना यह बात सुनकर महाक्रोधमें भरकर मीरा-बाईजी को मारनेको उद्यत होगया परन्तु अपनी स्त्री के कहने से रुकि रहा और अलग मकान में टिकादिया॥ यह बात जानेरहो कि गोपिका और रुक्मिणी ने जो दुर्गापूजन कियाथा तो श्रीकृष्ण महाराज तबतक मिले नहीं थे व मीराबाईजीको तो पहिलेही श्रीकृष्ण महाराजपति मिल गये इसहेतु दुर्गा पूजनका प्रयोजन न हुआ और रुक्मिणी व गोपि-काओंके दृष्टान्तसे शङ्का भी योग्य नहीं है मीराबाईजी जब अलगस्थान में रहनेलगीं तो बहुत प्रसन्नहुई और गिरिधरलालजी को बिराजमान करके शृंगार और सजावटमें भगवत् की और सत्संग में दिनरात मन लगाया रानाकी बेटी जिसका उदाबाई नामथा सो मीराबाईजी को स-मझाने के निमित्त आई और कहनेलगी कि भाभी तू बड़े घरकी बेटी है कुछ ज्ञान व विवेक सीख बैरागियों का संग छोड़दे इसमें दोनों कुल को कलंक लगताहै मीराबाईजी ने उत्तर दिया कि सत्संग से करोड़ों

जन्मके कलङ्क छूटते हैं जिसको सत्संग प्यारानहीं सोई कलङ्की है और हमारा तो सत्संगहीसे जीवनहै जिस किसीको दुखहोय उसको तुम्हारी शिक्षा उचित है उदाबाई फिर आई और अपने माता पिता से सब वृत्तान्तकहा कि मीराबाई भगवद्भक्ति में ऐसी दृढ़है कि किसीका कहना नहीं मानती राना क्रोधित हुआ और विषका कटोरा चरणामृतका नाम करके मीराबाईजी के पास भेजदिया मीराबाईजीने भगवच्चरणामृत को शीशपर चढ़ाया और अतिआनन्दसे पानकरगईं राना अगोरतारहा कि अब मीराबाई के मरनेके समाचार पहुँचते हैं परन्तु मीराबाई जी के मुखारविन्दपर शोभाकाप्रकाश क्षण क्षण बढ़ताथा भगवत् शृंगार और शोभामें छकीहुई नये नये प्रकारों से सजावट करती थीं और भगवच्चरित्रों का कीर्त्तन करके रस और प्रेमामृत में भरती थीं उससमय मीराबाईजी ने एक विष्णुपद भगवत् के साम्हने कीर्त्तन किया ॥ स्थायी उसका यहहै ॥ रानाजी जहर दियो हम जानी ॥ जब मीराबाईजी को विषकी ज्वाला कुछ न व्यापी तब रानाने डेवढ़ीदाररखदिया कि जिससमय मीराबाईजी साधोंसे बोलना बतरावना करतीहो उसका वृत्तान्त पहुँचावै कि मारडालीजावै व मीराबाईजी गिरिधर लालजी के साथ हँसी व ठट्ठा व खेल व बातचीतपर काया अभिमानियों व प्रिय वल्लभोंकी जैसी होती है क्रिया करतीथी एकदिन डेवढ़ीदारने समाचार पहुँचाये कि इससमय मीराबाईजी किसीके साथ बोल बतराव हँसी ठट्ठेकी करती हैं राना तलवार पकड़े पहुँचा और पुकारा कि किवार खोल मीराबाईजी ने किवार खोलदिये जब भीतरगया तो कुछ न देखा बोला कि जिसके साथ बात चीत हँसी ठट्ठे की होरहीथी सो कहां है मीराबाईजी ने कहा कि तुम्हारे आगे बिराजमानहै आंख खोलकर देखलो कि उसकी तुमसे कुछ लज्जा व ओट नही है उससमय मीराबाई और भगवत् आपुसमें चौसर खेलते थे जब रानापहुँचा तो भगवत् ने पांसाडालने के वास्ते हाथ फैलायाथा रानाने जो हाथ भगवत् का पांसा लिये फैला देखा तो लज्जितहुआ फिर आया रानाने अपने आंखों से यह प्रताप भी देखा परन्तु उसके मनमें कुछ न व्यापा निश्चय करके जबतक भगवद्भक्तों की कृपा नहीं होती तबतक भगवत् कदापि कृपा नहीं करते राना तो मीराबाईजी के मारने के उपायमें लगाथा भगवत्कृपा उसपर किसभांति से हो एक धूर्त

कपटी साधुका वेष बनाकर मीराबाईजीके सामने आया और कहा कि गिरिधरलालजीकी आज्ञा है कि मीराबाईजी को पुरुष के अंग संगका सुखदेव इस हेतु आयाहूं मीराबाईजी ने कहा कि गिरिधारलालजी की आज्ञा मेरे शिरऊपरहै पहिले आप भोजन प्रसादकरैं तिसके पीछे मीराबाईजीने जहां भगवद्भक्तोंकी समाजहोरही थी उस मकानके आंगन में पलँग बिछवाया और सजिके उसधूर्त्तसाधुको बुलाया और कहा कि पलँगपर पधारिये लज्जा और भय किसी बातकी न चाहिये क्योंकि गिरिधर लालजीकी आज्ञाका पालन सर्व्वथा उचितहै वह धूर्त्त सुनतेही पीलापड़गया और हृदयका अन्धकार ध्वस्तहोकर प्रकाशहोगया मीराबाईजीके चरणोंमें त्राहित्राहि करके पड़ा मीराबाईजीने कृपाकरके भगवत् सम्मुख करदिया॥ अकबर बादशाह मीराबाईजी की सुन्दरता का वृत्तान्त सुनकर तानसेनके साथ दर्शन को गये और दर्शन किये पीछे भक्तिकी दशा देखकर अपने भाग्यको धन्य मानकर बहुत प्रसन्नहुआ तानसेन जब एक विष्णुपद भगवत्के भेंटकरचुका तब फिर चलागया मीराबाईजी दर्शनके निमित्त श्रीवृन्दावनमें आईं व जीवगोसाईंजी के दर्शनकोगई जीवगोसाईंने कहलाभेजा कि हम स्त्रियोंका दर्शन नहींकरते मीराबाईजीने कहा कि हमतो वृन्दावनमें सबको सखीरूप जानती थीं और पुरुष केवल गिरिधरलालजीको सो आज हमारे जाननेमें आया कि इस व्रजके और उसव्रजराजके और भी पट्टीदारहैं गोसाईंजी सुनकर नांगे पायँन आये मीराबाईजी के दर्शन करके प्रेममें पूर्णहोगये पीछे मीराबाईजी सब वन व कुंजोंके दर्शन करके व भगवत्रूप माधुरीको हृदयमें धरके अपने देशमें आईं रानाकी द्वेषबुद्धि ज्योंकीत्यों बनी देखकर द्वारकाजीमें चलीगईं और गिरिधरलालजीकी शोभामें छकीहुई भगवत् शृङ्गारके रसमें मग्न रहनेलगीं जब भगवद्भक्तोंका आवना रानाके नगर में बन्दहुआ और भांति भांतिके उपद्रव होनेलगे तब रानाने मीराबाई जीकी भक्तिका प्रताप जाना और बहुतसे ब्राह्मण मीराबाईजीको फेर लानेके निमित्त भेजे ब्राह्मण द्वारकामें गये और रानाकी प्रार्थना व विनती सबसुनाई ब्राह्मणोंने जब देखा कि मीराबाईजीको देश चलनेका मननहीं है तो सब धरने बैठे कि जब तुम चलोगी तबहीं अन्नजलकरेंगे मीराबाईजीने ब्राह्मणोंसे कहा कि मेरा निवास इसद्वारकामें रनछोड़जी

की कृपासे हुआहै उनसे विदाहोआऊं सो वहां जाकर गिरिधरलालजी के प्रेममें मग्नहोकर एक विष्णुपद भगवत्‌भेंट किया अन्तकातुक उसका यहहै ॥ मीराके प्रभु गिरिधर नगर सिलि बिछुड़न नहिंकीजै ॥ भगवत् पूर्णब्रह्म सच्चिदानन्दघन परमप्रीति मीराबाईजीकी देखकर अलग न करसके और उनको अपने अंगमें मिलालिया विलम्बभये पीछे जो ब्राह्मणलोग ढूँढ़ते वहांगये तो मीराबाईजीको कहीं न देखा परन्तु सारी जो मीराबाईजी पहिनेथीं सो पीताम्बरकी जगह भगवत्‌के अंगपर देखी भक्तिकी निश्चय करके फिर आये व अकबर बादशाहने चीतौर को मीराबाईजी के चलेजाने पर युद्धसे विजयकरके ध्वस्तकरदिया ॥

कथा करमैतीजी की ॥

करमैतीजी परशुराम रहनेवाले कण्डिले राजा शिखादत्तके प्रोहित की बेटी ऐसी परम भक्तहुई कि कलियुग जो हजारों कलङ्क व पीड़ासे भ-राहुआहै करमैतीजीके निकट नहीं आया अनित्य पतिको छोड़कर नित्य निर्विकार पति श्रीकृष्ण महाराजसे प्रीति लगाई व संसारकी सब फांसें तृणके सदृश तोड़कर वृन्दावनमें वासकिया निर्मलकुल जो परशुराम ब्राह्मण जो उनके पिताहैं उनके धन्यभागहैं कि जिसके घर ऐसी लड़की जन्मी जिनकी बड़ाई और भक्ति सब भक्तोंने वर्णन करी श्रीकृष्ण महा-राजकी छविपर करोड़ों कामदेव निछावर होते हैं ऐसा चित्तको लगाथा कि उसीछविके चिन्तवन व ध्यान में मग्नरहतीं और ध्यानके सुखसे ऐसी आनन्द व स्वादलेतीं कि शरीरमें न समातीं व संसारका सबकाम असार व फीकाहोगया करमैतीजीका पति गवनालेनेके निमित्त आया मातापिताने गहने व कपड़ेकी अच्छी तैयारी करी करमैतीजीको शोच हुआ कि यह तन भगवद्भजनके हेतु है शरीरके विषय भोगके सुखलेने के निमित्त नहींहै इसहेतु देहत्यागकी इच्छाकरी फिर शोचा कि भगवत् की प्रीति और भजन सब अर्थोंपर मुख्यतर अर्थहै और जगत्‌की प्रीति व सम्बन्ध सब अनित्य है सो विना शरीर भगवद्भजन नहीं होसक्ता इसहेतु देहका त्यागकरना उचितनहीं भजनके विरोधियों का त्यागयो-ग्यहै यह विचार सिद्धान्त ठहरायके जिसरातके भोरको गवनाथा उसी रातके आधीबीतनेपर भगवत्‌की छविमें छकीहुई और उसी ध्यानरूपी रूपके साथ निर्भय निराली अकेली घरसे निकलकर चल खड़ीहुई

प्रभात को चारोंओर आदमी ढूंढ़नेको दौड़े उनको आते देखकर एक मरेऊंटके कंकारमें घुसकर छिपगई व कलियुगकी पापोंकी दुर्गन्धके बराबर मरेऊंटकी दुर्गन्ध नहीं तुलसक्ती इसीकारणसे वह दुर्गन्ध जनाई न पड़ी व भगवत् शृङ्गारके अतर इत्यादिकी सुगन्ध जो मन व प्राणके मस्तकमें समाईथी उसके कारणसे भी कुछ दुर्गन्ध का विकार न हुआ तीन दिन उसीकरंक में छिपीरहीं तीन दिन बीते उसमें से निकलकर एक मेला गंगानहाने को जाताथा उसके साथ गंगाजी पर आईं वहां स्नान करके गहने सब दानकरदिये जब मथुराजी में गईं वहां स्नान और यात्राकरी तब वहां से वृन्दावन में ब्रह्मकुण्ड पर निवास करके भगवत् के चिन्तवन और ध्यानमें रहने लगीं॥ करमैतीजी का पिता परशुराम ढूंढ़ता मथुराजी में पहुँचा एक मथुरावासी चौबे से पता पायकर वृन्दावनमें गया उन दिनोंमें इतनी आबादी व कुंज व बाग इत्यादि वृन्दावन में नहीं थीं वन सघन व हरियाली बड़ी थी एक बरगद के वृक्षपर चढ़कर देखा कि करमैतीजी भगवत् ध्यानमें विराजमानहैं वृक्ष से उतरकर उनके पासआया और अत्यन्त स्नेहसे रोता कलपता चरणों में लपटगया और कहनेलगा कि तुम्हारे चले आने से मेरी नाक कटगई कि भाईबन्धु कलङ्क लगाते हैं और सारा तेरा बोल मारताहै अब घरको चलो अपने ससुराल में जाकर भगवद्भक्ति व सेवा पूजा किया करो यह बनहै कोई जंतु तुमको खायजायगा हमको दुखहोगा तुम्हारी माता जो मरने अटकी है तिसको जिलावो करमैतीजी ने उत्तरदिया कि निश्चय करके जिस २ तनमें भगवद्भक्ति नहीं है वह तन मृतकप्राय है जो जीनेकी चाहहै तो भगवद्भक्ति करनी चाहिये और यह जो कहतेहो कि नाक कटगई सो नाक पहिलेहीसे तुम्हारे मुँहपर न थी क्योंकि मुख्य नाक भगवद्भजन व भक्ति है बिना उसके हजारों नकटे कानकटे हैं शोचकरो कि पचासवर्ष तुम्हारी अवस्था संसार के विषय विलास में बीतगई और कबहीं तृप्ति न हुई अब भी मोहरूपी नींद से जागो कि सब भोग विलास अनित्य व तुच्छ हैं भगवत् का भजन सारहै सब बखेड़ा छोड़कर उसीओर मनलगाओ इस थोड़ेही उपदेशसे परशुराम का अज्ञान इसप्रकार दूरहोगया कि जैसे सूर्यके उदयहोनेसे अन्धकारका नाशहोजाता है तबतक करमैतीजीने एक भगवत्स्वरूप सेवाके निमित्त

दिया व बिदा किया परशुराम घरआया भगवत्मूर्त्ति विराजमान करके ऐसा मनलगाया कि सिवाय सेवा व भजनके दूसरीओर तनक सुरति न रही व लोगोंके यहां आनाजाना सब किसीसे बोलना बतरावनाभी छोड़ दिया एकदिन राजाने लोगोंसे पूछा कि परशुराम ब्राह्मण बहुत दिनोंसे हमारेपास नहीं आता उसका क्या समाचारहै किसी मनुष्यने सबवृत्तांत विस्तारसे भक्ति व भजनका वर्णन किया राजाने मनुष्य बुलानेको भेजा परशुरामने कहा अब राजासे कुछ काम नहीं मनुष्य तन पायकर जो कार्य्य करना चाहिये तिसमें लगाहूं राजा परशुरामकी भक्ति और वैराग्यको विचार करके आप दर्शनों के निमित्त आया और उनकी सांची प्रीति भगवत्में देखकर और करमैतीजीकी भक्ति और वैराग्यका वृत्तांत सुनकर प्रेमसे विह्वल होगया इच्छाहुई कि करमैतीजी का दर्शन करना चाहिये जो मेरे अच्छे भाग्यहों तो क्या आश्चर्यहै कि आवें और देशको पवित्रकरें इस आशासे वृन्दावनको गया और करमैतीजी के दर्शनकिये देखा कि नन्दनन्दन महाराज की निश्चल और दृढ़ प्रीतिमें करमैतीजी उस अवस्थाको पहुँचगई हैं कि कुछ कहने सुनने की बेर नहीं रही उस दशामें चलनेके निमित्त अधिक बोलचाल न करसका और करमैतीजी के मने करनेपर भी एक कुंजकुटी करमैतीजी के रहने के निमित्त बनवाकर चरणों को दण्डवत् करके फिर आया और भगवद्भजन में लवलीन हुआ अबतक कुटी करमैतीजी की ब्रह्मघाट पर प्रकट है॥

कथा नरसीजी की॥

नरसीजी महाराज का गुजरातदेश में और ऐसे कुल में कि स्मार्त धर्म्म से सिवाय जहां भगवद्भक्ति का निर्मूलपता न था और जो किसी को तिलक छाप धारण कियेहुये देखते थे तो उसीकी निन्दा करते थे तहां जन्महुआ और ऐसे परमभागवत हुये कि उसदेशके पापोंको दूरकरके सबको भगवद्भक्त करदिया शृङ्गार और माधुर्य्यकी उपासनामें ऐसेहुये कि गोपिकाओं के तुल्य कहना चाहिये जूनागढ़ के रहनेवाले थे उनके मा बाप जब मरगये तो भाई भावजके यहां रहनेलगे एक दिन बाहर से खेलतेहुये घरमें आये और भावजसे पानीमांगा उसने अपनी दुष्ट प्रकृतिके कारणसे क्रोधकरके उत्तरदिया कि ऐसाही कमाईकरके लाये है जो पानी पिलाऊं नरसीजीको लज्जाके मारे जीना भारीहोगया और

शिवजीकी सेवामें गये सातदिन तक विना अन्नजल शिवालय में पड़े रहे शिवजी महाराजने विचारकिया कि संसारी मनुष्य भी अपने द्वार पर पड़ेहुये की रक्षाकरताहै और मैं जगत्का ईश्वर हूं इसहेतु साक्षात् आकर दर्शनदिये और कहा कि जो इच्छाहो सो मांग नरसीजीने विनय किया कि मुझको मांगने नहीं आता जो कुछ आपको प्रियहोय सो दीजिये शिवजीको चिन्ताहुई कि मुझको वह प्रियहै कि जिसको वेद भी नेतिनेति कहते हैं और जिसका भेद अपनी परमप्रिया पार्वतीजी को भी अच्छेप्रकारसे नहीं बतलाया इस मनुष्यको तुरंत कैसे बतलादेवें फेर अपने वचन और इसबातको देखा कि इस मनुष्यके प्रभाव करिके एक देश कृतार्थ होजायगा इसहेतु अपना और नरसीजीका सखीरूप बनाकर वृन्दावनमें आये देखा कि सबभूमि कंचनमयी रत्नजटित उसके बीचमें रासमण्डल व रासमण्डलमें असंख्य गोपिका और गोपिकाओं के बीचमें सिंहासन और सिंहासनपर प्रियाप्रीतम विराजमानहैं शोभा की चांदनी से करोड़ों चन्द्रमाकी चांदनी फीकी दिखाई पड़ती है रास विलास होरहा है तालदेकर कबहीं आप लालजी प्रियाजी को और कबहीं प्रियाजी प्रीतमको सांगीतकी गति सिखाते हैं और कबहीं परस्पर गलबाहीं देकर नृत्य औरकबहीं परस्पर हाथ पकड़कर गानकरते हैं और कबहीं दूसरी गोपिकाओं के नृत्य व गानपर सावधानहै और कबहीं हँसी व ठट्ठाहोताहै पखावज व बीनाआदि सब प्रकारके बाजेमिले ताल स्वरसे बजतेहैं छहोंराग रागिनियों सहित सखीरूपसे खड़ेहैं नरसीजीने जब यह समाजदेखा तो कृतार्थ होगये दुःख सुखसे उसीघड़ी अलग हुये और शिवजीकी आज्ञासे मशाल दिखलानेलगे व्रजकिशोर महाराजने प्रियाजी से कहा कि आज यहसखी कोई नई आईहै प्रियाजी ने उत्तर दिया कि शिवजीके साथहै तब नटनागर महाराजने मन्दमुसुकान और कृपाकी दृष्टिसे नरसीजी की ओरदेखा और फिर प्रियाजीने भी वचनसे सहायकिया तब आज्ञाहुई कि अब तुमजाओ और जो देखा है उसीका ध्यान और चिन्तवन करते रहो जहां बुलाओगे तहां तुरन्त आऊंगा नरसीजी भगवत् आज्ञापाय परम आनन्दमें मग्न अपने घर को आये अलग एकघर बनाकर उसीसमाज के ध्यानमें रहनेलगे एक ब्राह्मणकी लड़की से विवाह होगया उसीसे एकबेटा दो लड़की उत्पन्न

हुई संसारमें भगवद्भक्ति को विख्यात किया जो साधुआते उनकी सेवा अच्छेप्रकार कियाकरते और रात दिन भगवद्भजनके सिवाय दूसराकार्य नहींथा यह वृत्तान्त देखकर उनके सजातीय ब्राह्मण द्वेषकरके शत्रुताक रनेलगे परन्तु नरसीजी तो भगवद्रूपके समुद्र में मग्नथे, और भगवत सदा उनकी रक्षा व सहायके निमित्त प्राप्त रहतेथे, इसकारणसे, वे लोग कुछ न करसके, एकवेर साधु आनिउतरे लोगोंसे पूछा कि हमको द्वारक की हुण्डी करानीहै कोई साहूकार यहा है लोगोंने कुत्सा व, ठट्ठेकी राहसे नरसीजी को बतलाया और समझादिया कि जो वे न मानें तो तुम चरण पकडलेना और बहुत विनय प्रार्थना करना साधुआये और सातसौरु पया नरसीजी के आगे रखकर चरण पकडलिये नरसीजी नाहीं करने लगे तो हाथ जोड़ जोड़ प्रार्थना करनेलगे नरसीजी ने, जाना कि किसी के बहकाने से आये हैं अथवा भगवत् ने शत्रुलोगों के हृदयमें, प्रेरणा करके यह खर्च भेजवाया है तुरन्त हुण्डी को लिखदिया और समझा दिया कि जिसके नाम हुण्डी है उसका नाम सांवल साहहै उसीके हाथ में देना वे साधु द्वारका में आये और उस साहूकारको ढूंढा पता न मिला लाचार भूख प्याससे विकल नगरसे बाहर आये कि भोजन प्रसादसे छुट्टीकरके तब फिर साहूको ढूंढ़ेंगे सांवलसाह महाराजने विचार किया कि विना पक्केखोजके मेरामिलना कठिनहै परन्तु जो अधिक कष्ट ढूंढने का देताहूं, तो मेरी गुमास्तगरी और नरसीजी की साहूकारी में वट्टा लगताहै इसकारण बड़ी पगडी, लम्बी धोती नीचाजामा पहिन कमर बाँध, कलम कानपररख एक वही बगलमें दबी साहूकार रूपबना और थैली रुपया की कांधेपररख जहां साध टिकेथे आये और पूछा कि नरसीजी की हुण्डी कौन लायाहै साधुलोगों के तनमें मानों प्राण पड़गया और सब एकवेरही बोले कि महाराज हमलाये हैं आपको ढूंढ़ते ढूंढ़ते हारगये आपने वडीकृपाकरी कि आये साहूनें कहा कि किसवास्ते लजवातेहो हमको तुमको ढूंढ़ते, कईदिन वीतगये और नगरमें जो मेरा पता न मिला तो कारण यहहै कि जो भगवत्‌को निजदासहै सो, मुझको जानताहै साधोंने हुण्डीको दिया और सांवलसाहने नकद रुपया देकर नरसीजी के नाम जवान लिख दिया कि चिट्ठीआई रुपया रोकदेदिये मुझको अपना गुमास्ता जानकर कामकाज लिखते रहना साधुलोग

यात्राकरके फिर नरसीजी के पासआये और वह चिट्ठीदीनी नरसीजी
ने पूछा कि सांवलसाहको देखआये साधोंने कहा हांमहाराज देखआये
नरसीजी अतिप्रेमसे मिले और साधोंको जो यह वृत्तान्त मालूम हुआ
तो वेभी प्रेममें रँगिगये नरसीजी ने वह सब रुपया साधुसेवामें खर्च
किया क्योंकि साहूका रुपया देना निश्चयहै और उसकेपास कोई ले-
जानेवाला पहुँच नहींसक्ताहै सिवाय साधुसेवा के और कोई उपाय नहीं
नरसी जी की बड़ी लड़की के लड़का उत्पन्न हुआ और नरसी जी के
घरसे छूछक की सामा नहीं गई सास आदिक सबनित्य बोलीमारतीं
व गालियां दिया करती थीं उसलड़की ने नरसीजी को कहला भेजा
कि इस सासने मुझको यातना में डाल रक्खा है जो तुमसे कुछ दिया-
जावे तो लेआवो नरसीजी एक पुरानी गाड़ी जिसके बैल अति दुर्बल
व बूढ़ेथे तिसपर चढ़कर उसनगरके किनारे पहुँचे लड़की ने जो कंगा-
ली दशादेखी तो नरसीजी से कहा कि जो तुम्हारे पास कुछ न था तो
किसहेतु आये नरसीजीने कहा कि चिन्ताका कुछ प्रयोजन नहीं अपनी
सासके पास जाकर जो कुछ सामान छूछक का चाहिये सो एक कागज
पर लिखालेआवो सासने क्रोध करके सारे नगरके वास्ते सामा पहिरने
का व गहना सब लिख दिया जब नरसीजी की लड़की फ़र्दलेकर आई
तो नरसीजीने फेर भेजा कि जो किसी के निमित्त कुछ और बाक़ी रह-
गयाहो तो वह भी लिखकर भेजो सासने रिसकरके लिख दिया कि दो
पत्थर भी भेजदेना पीछे एकपुराने व टूटे दालानमें टिकादिया व न्हाने
के वास्ते जल भेजा सो ऐसा उष्ण कि हाथ न लगायाजाय भगवत्
इच्छा से मेह बरसा जल शीतल होगया नरसीजीने यथेष्ट स्नान किया
और उस दालानमें एक कोठरीथी उसके द्वारपर परदा डालकर भग-
वत्कीर्त्तन आरम्भ किया भगवत् आप रुक्मिणी जी के सहित सब
असबाब जो कागजपर लिखाथा लेकर उसकोठरी में आये और रुक्मि-
णीजीको साथ लानेका यह हेतुहै कि पुरुषोंके शृङ्गार पोशाकसामा तो
मेरे आधीन है जो स्त्रियोंकी सामामें कुछभेद पड़ेगा तो उसका दोष
रुक्मिणीजी का समझा जायगा एक शङ्का यह उत्पन्नहुई कि नरसीजी
शृङ्गार उपासक थे उचित यह था कि उनके इष्टदेव अर्थात् नन्दनन्दन
महाराज व राधिका महारानी आकर विराजमानहोते रुक्मिणीजी व

द्वारकानाथ महाराज क्यों आये उत्तर इसका यहहै कि नरसीजीने प्रिया प्रीतमके सुख समाज व विहारमें दुचिताई डालना उचित न समझा इसहेतु द्वारकानाथ व रुक्मिणीजीका स्मरण किया दूसरे यह कि भगवत्‌ने विचारा कि यह कार्य्य शृंगारके सम्बन्धका नहीं है गृहस्थी धर्म्मके सम्बन्धका है इसहेतु उसरूपसे चलना चाहिये कि सब कार्य्य विवाह गवना छूछक भात इत्यादि का जिसने किया होय सो द्वारकानाथ व रुक्मिणीजीके रूपसे प्रकटहुये पीछे नगरके बासी लोगोंको सामा ओढ़ने पहिरने की बँटनेलगी और ऐसे असबाब दिये कि किसीने आंखसे भी नहीं देखे थे सबसे पीछे दो पत्थर चांदी सोनेके दिये सारे नगर व देशमें नरसीजी का यश ऐसाहुआ कि अबतक साधु समाजमें गायाजाता है पीछे नरसीजी अपने घरको चले एक स्त्रीका नाम उस कागज़पर नहीं चढ़ाथा छूटगयाथा उसको नरसीजीकी लड़की अपनी पोशाक देनेलगी उसने हठकिया कि जिसके हाथसे सबने लियाहै उसी के हाथसे ल्योंगी नरसीजी ने अपनी लड़की के सङ्कोचसे दोहराय के भगवत्‌को बुलाया और उसको भी सब असबाबदिया इस देनेसे नरसीजीकी लड़की इतनी प्रसन्नहुई कि शरीरमें न समाई और अपने बापकी भक्ति देखकर अपने पति इत्यादिको त्याग करदिया नरसीजी के साथ चलीआई भगवद्भजनमें लगी दूसरी लड़की ने अपना व्याहही न कराया वहभी भगवद्भक्त होगई जूनागढ़ जहां नरसीजीका घरथा दो गानेवाले गातेफिरते थे कहीं एककौड़ी उनको न मिली किसीने नरसीजीका नाम बतलादिया कि उनके घरसे कुछ अच्छीभांति तुमको मिलैगा वे आयके नाचने गाने लगे नरसीजी ने समझादिया हम फ़क़ीर हैं हमसे क्या चाहतेहो चले जाओ उन्होंने न माना नरसीजीने कहा कि यहां केवल भगवद्भक्ति साक्षात्‌है जो तुमको उसकी चाहहोय तो मूड़मुड़ायके आजाओ उन्होंने तुरंत शिर मुड़ालिया और नरसीजीकी समाजमें मिलगये नरसीजीकी दोनों लड़की व दोगायन प्रेम और भक्तिसे भगवत्‌का भजन और कीर्त्तनकरके जो भाव भगवद्भक्ति और प्रेमके परमानन्द देनेवालेहोते प्रकट किया करती नरसीजीका मामू शाह लंगनामें जूनागढ़के राजाका दीवान था उसको नरसीजीका आचरण अच्छा न लगा और राजासे मिथ्या पाखण्डी ठहरायकें इसबातपर सन्नद्धकिया कि दण्डी साधु और ब्राह्मणों

का समाजकरके नरसीजीको इसनगर और देशसे निकालदेना चाहिये कि लोगोंको पाखण्डमें भुलाताहै सो चारचोपदार नरसीजीको लेआने वास्ते भेजे नरसीजीने अपनी लड़कियों और दोनों गायनों को कहा कि तुमलोग कहीं अलग होजाओ हम राजाके पासजाते हैं उनलोगों ने कहा कि राजाका क्याडर है हमभी साथहैं सो सब भगवत् कीर्त्तन करतेहुये राजाकी सभामें आये सब सभावालोंके मुखकी श्री नरसीजी के प्रतापसे जातीरही परन्तु एक पण्डितने पूंछा कि स्त्रियोंको साथर-खना किस पद्धतिमें लिखाहै नरसीजी ने उत्तरदिया कि सबशास्त्र और पुराण और वेदोंकासार भगवद्भक्ति है जिस किसीको कि भक्ति प्राप्त हुई वह परम भागवत और भगवद्रूपहै क्या स्त्री होय क्या पुरुष और उसका एक निमिषका सत्संग भगवद्भक्तिका देनेवाला है भगवत्ने श्री मुखसे आप मथुरावासिनी स्त्रियोंकी श्लाघाकरी और उनके पति म-थुराके ब्राह्मणों ने उनके भाग्यकी बड़ाई करके कहा कि यहस्त्री परम बड़भागिनी हैं कि भगवत्का दर्शन पाया और हमारी सर्वज्ञता और वेदपढ़नेपर धिक्कार है कि भगवत् से विमुख हैं भागवतमें लिखा है कि वही बड़ाहै और वही मुक्तिके योग्यहै और वही सत्संगी है और वही सेवा करनेवालाहै कि जिसको भगवद्भक्ति है फिर भगवत्का वचनहै कि मैं भक्तिके वशमेंहूं एकादशस्कन्ध में भगवत्का वचन है कि मेराभक्त जो श्वपच भी है तो उनबड़े कुलीनों से कि जो भगवद्भक्त न हों बड़ा है तो जिसकिसीको भगवद्भक्ति लाभहुई उसका स्त्री अथवा पुरुष अथवा छोटीजाति या बड़ीजाति कहना शास्त्र विरुद्धहै वह भागवत और भ-गवत्का प्याराहै शास्त्रों के सिद्धान्त और मुख्य तात्पर्यको समझकर जो भगवत्में मनको लगाये हैं सोई पण्डित व सर्वज्ञहैं नहीं तो सबगुण व पण्डिताई तुच्छहै ऐसेही ऐसे उत्तरसे सब सभाको निरुत्तर करदिया इस बोल बतरावमें एक ब्राह्मणने नरसीजीका प्रताप और छूछकके देने का वृत्तान्त राजासे वर्णनकिया राजाको विश्वासहुआ और चरणों में पड़ा प्रार्थनाकरके विनय किया कि मेरे गृहको पवित्रकरिये अर्थात् गृह में मेरे चलकर विराजमानहो कि मेरी कृतार्थताहो राजाका आश्वासन व बोध करके नरसीजी चलेआये और भगवद्भजनमें लगे श्रीमूर्त्ति भ-गवत्की जो विराजमानथी नित्य उसस्वरूपके सम्मुख भजन व कीर्त्तन

कियाकरते थे और जिससमय रागकेदारा गाते थे उससमय भगव
प्रसन्नहोकर अपने गलेकी माला दियाकरते थे एकबेर ॥
जनपड़ा केदारा रागिनीको साहूकारके यहां गिरों रखदिया कि जबतक
रुपया न देंगे तबतक केदारा भगवत्को न सुनावैंगे उसीसमयमें श
लोगोंने राजाको बहकाया कि नरसीजीकी बड़ाई व श्लाघा व्यर्थ फैल
रही है एक कच्चेधागे में फूलोंकी माला भगवत्को पहिनाय देताहै औ
वह माला फूलों के भारसे आप टूटपड़ती है राजा परीक्षा लेनेपर हुअ
राजाकी माता भगवद्भक्तथी उसने बहुतसमझाया परन्तु कुछ न मान
एक मोटे रेशमके डोरे में मालाको बनवाया और भगवत्को पहिनाक
नरसीजीसे कहा कि हमभी तो देखें कि भगवत् तुमको माला किसप्रका
देते हैं नरसीजी ने कीर्त्तन आरम्भ किया एककेदारा छोड़ और स
रागगाये परन्तु भगवत् प्रसन्न न हुये और न मालादीनी तबतो नरस
जीने बोली मारना प्रारम्भकिया कि नितान्त ग्वालवालहो एकमालाक
हेतु ऐसी कृपणताईको अंगीकार करलियाहै कि छाती से लगारक्खी
और सिवाय उस केदाराके किसीभांति प्रसन्न नहीं होते विष्णुनाराय
वड़े बुद्धिमान् हैं कि सारे संसारका पालन करके अपने किंकरोंकी वांछ
पूरीकरते हैं मेरेभाग्यमें तुम ग्वालवाल लिखगये कि एकमालाके नि
मित्त यहदशाहै और इस उदारताईपर विशेष यहहै कि अपने से अल
भी नहीं होने देतेहो अपने मुख और अंगनकी अनूप छविको दिखाक
वशी व आधीन करलियाहै और इस तुम्हारी कृपणतापर मेरी क्य
हानि है तुमहींको कलङ्कलगैगा जब आप श्रीजीने यहबोली मारन
सुनलिया तो नरसीजीका रूप बनाकर और उनका रुपया लेकर उस
साहूकारके घरगये वह साहूकार अभागा नींदमेंथा उसने कहदिया वि
मेरीस्त्रीको रुपया देकर लिखना अपना निकलवाय लेजाव जब स्त्रीवे
पासगये तो उसने दण्डवत् और प्रतिष्ठाकिया व रुपयालेकर लिखन
फेरदिया पीछे कुछभोजन करवाकर बिदाकिया साहूकारकी स्त्रीको जो
दर्शनहुये तो कारण यहहै किएकबेर उसस्त्रीने नरसीजी से बहुत प्रार्थना
करके विनयकियाथा कि भगवत्के दर्शन करादो तब नरसीजी ने वचन
प्रबन्ध कियाथा सो नरसीजी के वचनको भगवत्ने पूराकिया इसहेतु
दर्शनहुये जब भगवत्के आगे रागकेदारा अलापा तो कागज़ नरसीजी

के गोदमें डालदिया नरसीजी देखकर प्रसन्नहुये और ऐसा उस रागको
गाया कि और दिन तो माला भगवत्के गलेसे अलग होजाया करती थी
उसदिन भगवत् मूर्त्तिने अपने हाथ से नरसीजीको पहिनाई सबने जय
जयकार किया और राजा दृढ़विश्वासयुक्त होकर चरणोंमें पड़ा सब दुष्ट
लज्जितहुये और भगवद्भक्तिका विश्वास करिके भगवत् शरण होगये
भगवत् ने जो विना केदारागाये माला कृपा न की तो कारण यहहै कि
पहिले तो नरसीजी के मन से बड़ाई व प्रेम उस केदारा रागिनी की
जाती रहती सिवाय इसके साहूकार व और दूसरे लोगोंको उसरागिनी
का विश्वास न रहता और नरसीजी ने माला मिलने हेतु व दिखावने
सिद्धाई के जो हठकिया तो कारण यहहै कि उसदेश में भक्तिका प्रचार
नहीं था और यह प्रभाव सिद्धताका देखनेसे बहुत लोगों ने भक्ति को
अंगीकार किया जो इस सांची भक्तिकी परीक्षामें कुछ अनर्थ प्रकटहोता
तो सबलोग बे विश्वास होजाते और भक्तिका प्रचार उसदेश में न होता
एक ब्राह्मण लड़कीके विवाहके निमित्त लड़का ढूंढता जूनागढ़में आया
कोई लड़का रुचिके अनुकूल न मिला किसी ने नरसीजी का पता बत-
लाया कि उनका लड़का बहुत सुन्दरहै उस ब्राह्मणने नरसीजीका ल-
ड़का जो देखा तो बहुत प्रसन्नहुआ और तुरन्त तिलक विवाहका कर-
दिया नरसीजी ने कहा कि हम कङ्गालहैं तुम किसी धनवान्के घर वि-
वाहकरो वह ब्राह्मण नरसीजी की बड़ाई व विनय करके शीघ्र अपने
नगरमें पहुँचा व लड़कीके बापसे सब वृत्तान्त कहा वह लड़कीवाला
नरसीजी का नाम सुनकर बहुत अप्रसन्न व क्रोधवन्त हुआ और उस
ब्राह्मणसे कहा कि यह लड़का अंगीकार नही हैटीका फेरलावो ब्राह्मण
ने कहा कि जिस अँगुली से विवाह का तिलक करआयाहूं उसको जो
काटडालो तो कुछ चिन्ता नहीं है परन्तु सम्बन्ध नही फिर सकैगा वह
लड़कीवाला लाचारहुआ और कहनेलगा कि लडकीके भाग्य में जैसाहै
वैसा निश्चयकरके होगा शोचकरना प्रयोजन नही विवाहमें ऐसादायज
देदेवैंगे कि नरसीजी को धनाढ्य करदेंगे जब विवाह का दिन निकट
आया तब उसने लग्नपत्रिका भेजी नरसीजीने उसको कहीं डालदिया
और निर्मल विवाह की चर्चा व कबहीं चिन्तवन न किया ज्योंके त्यों
भजन और कीर्त्तन में लगेरहे चारदिन जब विवाहके रहगये और नर-

सीजी ने कबहीं विवाह का नाम भी न लिया तो श्रीकृष्णस्वामी और
रुक्मिणी महारानीजी विवाहके कार्य सँवारने के निमित्त आये ९
जी तो स्त्रियों के कार्य सँवारने में लगीं और आप भगवत् नरसीजी वे
करने योग्य कार्यों में लगे स्त्रियों ने विवाहके गीतगाना इत्यादि आरम्भ
किया व ठौर ठौर मिठाई व पकवान बननेलगे और नौबत बजनेलगं
श्री रुक्मिणीजी ने अपने हाथसे लड़के के भालपर तिलक किया वि
जिसको चित्रमुख अथवा मुखमंडन अथवा मुरचट कहते हैं और आप
शृंगारकरके घोड़ेपर चढ़ाया और जिस जिस जगह जो जो नेग दान
दक्षिणा का उचित था सो दशगुणा किया फिर ज्योनार हुई असंख्य
आदमी आये ब्राह्मणलोगों ने स्पर्द्धा व द्वेषके कारणसे इतनी मिठाई
व पकवान लिया कि पोट बांध बांधकर घरलेगये फिर बरातकी तैयारी
हुई असंख्य रथ व घोड़े व हाथी व पालकी इत्यादिपर सुन्दर सुन्दर
पुरुषलोग चढ़े जब बरातचली तो भगवत्ने नरसीजी का हाथ पकड़
के आज्ञाकिया तुमभी साथचलो गुप्तमें यद्यपि हम साथहैं परन्तु प्रकट
में तुम सब कार्य्य करतेरहो नरसीजी ने कहा कि महाराज आप जानैं
और आपका कामजानै मुझको तालबजाना और आपका कीर्त्तन आ
ताहै सो यह काम जहांचाहो तहांलेलो भगवत् ने विचारा कि सिवाय
भजन कीर्त्तन के नरसीजी से कुछ काम न होगा तो आपही सबकामों
के अधिष्ठाताहुये और बरात समधी के नगरके समीप पहुँची उस स-
मधी ने बरात के आनेके पहिले अपने आदमी भेजेथे कि दिन विवाह
का आपहुँचा है जो लड़का और दोचार आदमी आतेहों तो ले आवो
उनलोगों ने जो बरात ऐसी भारीदेखी तो लोगोंसे पूछा कि यह बरात
किसकी है बरातियों ने कहा कि नरसीजी महात्माकी है वहलोग समधी
के पासआये और बरातकी भीड़ और शोभाका वृत्तान्त वर्णन किया
समधी ने जो नरसीजी को कंगाल समझलिया था और कुछ सामान
तैयार नहींकिया था उन लोगोंसे कहा कि क्या मेरी हँसी करतेहो उन
लोगोंने कहा हँसी नहीं सत्यकहते हैं तब तो समधी की बुद्धि उड़गई
और जो ब्राह्मण टीका देआया था उसको देखने के निमित्त भेजा वह
बरातको देखकर अत्यन्त प्रसन्न व आनन्दहुआ और आयके समधी
से कहनेलगा कि इतनीबरात आती है कि तुम अपना साराधन लगाने

से घोड़ों को घास नहीं देसक्तेहो जिसओर दृष्टिजाती है सिवाय बरात के कुछ नहीं देखपड़ता समधी घबराकर आप देखनेकोगया बरातको देखकर शोचमें पड़ा धनका अहङ्कार दूर हुआ मर्य्याद रहनी कठिन समझी लाचार व दीन होकर तिलक चढ़ानेवाले ब्राह्मणके चरणों में पड़ा कि अब मेरी मर्य्याद सिवाय तुम्हारे और किसीसे नहीं रहसक्ती वह ब्राह्मण उसको नरसीजी के पास लेगया उसने जातेही नरसीजी के चरण पकड़लिये और हाथ जोड़कर प्रार्थनाकी कि कृपाकरो और मुझको और मेरी मर्य्यादको रखलो यह कहकर रोनेलगा व फिर चरण पकड़लिये नरसीजी उससे मिले और भगवत् के दर्शन कराये और उसकी आश्वासनकरी कि दोनों ओर की लज्जा व मर्य्याद इन महाराजके आधीनहै यहसमझाकर विदा किया भगवत्ने आप दोनोंओर का कार्य्यसम्हाला और इस धूमधामसे विवाहहुआ कि वर्णन नहींहोसक्ता जब विवाहकरके नरसीजी घरआये तब भगवत् द्वारकाको पधारे और भगवद्भक्तिके प्रतापका यश सारे संसार में व्याप्तहुआ यह प्रसंग नरसीजीका पढ़ सुनकर जिसको भगवत् चरणों में प्रीति उत्पन्न न होवै तो उससे अधिक भाग्यहीन और कोई नहीं क्योंकि यह चरित्र अच्छे प्रकारसे बोध करताहै कि भगवत्की शरण होनेसे कुछ चिन्ता संसार व परलोक की नहीं रहती आप भगवत् सब पूर्ण करते हैं॥

कथा हरिदासजी की॥

स्वामी हरिदासजी सब शृंगार उपासकों के शिरमौरहुये और उपासनामें दृढ़ धारना जैसी उनको हुई उसका वर्णन नहीं होसक्ता अपने समयमें अद्वैतथे सखी भावनासे अनुक्षण प्रिया प्रीतमके सुख समाज और नित्यविहार में मिले रहते थे और प्रिया प्रीतम कुञ्जविहारी राधारमण राधाकृष्णनाम जिह्वापर रहताथा भक्तिका प्रताप यहथा कि देश देशके राजा दर्शनकी आशाकरके द्वारपर रहतेथे भगवत् भोग लगने के पीछे मयूर व बन्दर इत्यादि को देखते तो बड़ी प्रीतिसे भोजनकराते इसभावसे कि नटनागर महाराज उनसे खेल व दिल्लगी करते हैं और जिनके कीर्त्तन और गानविद्या के सम्मुख गन्धर्व भी लज्जितथे कोई सेवक स्वामीजी के निमित्त अतिउत्तम विष्णुतैल अर्थात् अतर बड़े परिश्रमसेलाया उससमय स्वामीजी यमुनाके पुलिनमें बैठेथे शीशा

लेकर सब अतर उसरेत में डालदिया उसमेवकको बड़ा दुःख व शोच हुआ और मनमें कहनेलगा कि स्वामीजी ने मर्य्याद व गुण इस अतर का न जाना स्वामीजी उसके मनकी सब जानगये उसको कहा कि विहारीजी महाराजके दर्शन करआवो वह पुरुष जब मन्दिरमें आया तो सारामन्दिर सुगन्धकी लपटमे भरापाया और जब विहारीजी के दर्शन किये तो भगवत् की पोशाक शिरसे पांवतक सब अतर में भीगी देखी तब तो विश्वासहुआ और अपनी अज्ञानतासे लज्जित होरहा॥ सब शीशा अतर भगवत्पर डालने का हेतु यह है कि हरिदासजी ध्यानमें भगवत्से होरी खेलते थे भगवत् ने हरिदासजीपर रंग व गुलालडाला स्वामीजी के हाथमें उसघड़ी यह शीशा अतरका आयगया कि रंगकी जगह उसशीशे को भगवत्पर डालदिया॥ कोई एकपुरुष स्वामीजी के पास सेवक होनेको आया और पारसमणि भेंटकी स्वामीजी ने जाना कि इसको पारसमणि बहुत प्यारी है जबतक उसमें से प्रीति न जायगी तबतक प्रिया प्रीतम में प्रीति कब होगी इस हेतुसे उसको आज्ञादी कि यह पारसमणि यमुनाजी में डालदे उसने आज्ञाके अनुसार यमुना में उसमणिको डालदिया परन्तु यहशोच मन में रहताथा कि जो वह पारस रहता तो साधु सेवा और भगवत् के शृंगारकी सामाकी तैयारी अच्छेप्रकार होती स्वामीजी ने देखा कि अबहीं उस पत्थरकी प्रीति नहीं गई इसहेतु अपने साथ बनमें लेगये और हजारों पारसपाषाण दिखलाकर कहा कि जितने त्रिलोकी के ऐश्वर्य्य और जितनी स्वादकी चाहना भीतर व बाहरकी हैं सब भगवत् प्राप्तके पन्थ के ठगहैं और जब तक सबओर से प्रीति दूर करके भगवत् चरणों में मन नहीं लगता तबतक भगवत्का परमानन्द प्राप्त नहीं होता इसहेतु सब ओरसे मन को खींचकर भगवत्मे लगाना चाहिये और जो पारसपाषाण प्यारा है तो जितना तुझको कामहो उठाले वह सेवक चरणों में पड़ा और मन को एकाग्र करके भगवत् के भजन स्मरण में लवलीन हुआ अकबर बादशाह ने तानसेन से पूछा कि तुम्हारा गुरू गान विद्याका कौन है उसने स्वामी हरिदासजीको बतलाया बादशाह को स्वामीजी के दर्शन की बड़ी उत्कण्ठाहुई और तानसेन के साथ तानपूरालेकर दर्शनपाया तानसेन ने एक पदगाया और जानबूझके दो एक जगह तालस्वर में

अशुद्धकिया स्वामीजीने तानपूरालेकर आप उस पदकोगाया कि जितने लोग सुनते थे सब भगवत् स्वरूप में लयहोरहे जब बादशाह डेरे परआया तब उसीपदके गानेकी आज्ञा तानसेनकोदी जब उसनेगाया तो जो रस स्वामीजीके मुखसे पायाथा सो न मिला कारण इसका तानसेनसे पूछा उत्तरदिया कि स्वामीजी तो उसके साम्हने गाते थे कि जो सबका स्वामी और पालन करनेवालाहै और मैं तुम्हारे साम्हने गाता हूं बादशाहने यह वचन उसका स्वीकार किया ॥ विदाके समय स्वामी जी से बादशाहने विनयकिया कि कुछ सेवाकी मुझको आज्ञाहोय स्वामी जी ने कहा कुछ प्रयोजन नहीं जब बहुत हठकिया तो स्वामीजी ने दिव्य ब्रजभूमि दिव्य नेत्र से बादशाह को दिखलाई कि वह वृत्तान्त धाम निष्ठा में लिखागया पीछे बादशाह चरणों में पड़ा व प्रार्थनाकी कि जो किसी सेवाके योग्य यद्यपि नहीं हूं परन्तु कुछ स्वल्प सेवाके निमित्त भी आज्ञाहोय तो मैं कृतार्थ व धन्य भाग्य होजाऊं स्वामीजी ने कहा कि पहिले बन्दरों के निमित्त कुछ चना पहुँचतारहै दूसरे ब्रजभूमि के वृक्ष और शाखा कोई काटने न पावे तीसरे तुम फिर कबहीं हमारे पास न आना बादशाहने आज्ञा पालनकिया ॥

कथा रत्नावलीजी की ॥

रत्नावलीजी भगवद्भक्तों में राजाहुई भगवत् कथा और कीर्त्तन और सत्संग और उत्साह और भगवत् शृंगारमें अनुक्षण लवलीन रहतीथीं पतिके स्नेहका तनक चिन्तवन न था भगवत् प्रीति और भक्तिको मुख्य समझकर अपने विश्वास से चलायमान न हुई अपने प्रेम और भक्तिको अच्छेप्रकार निबाहा सत्य करके अँधेरे घरकी चांदनी हुई राजामानसिंह मेरके अधिपति तिसके छोटेभाई माधवसिंह तिसकी रानी थीं एक सहेली भगवद्भक्तिमें पगी हुई भगवत्का नाम नवलकिशोर नन्दकिशोर व ब्रजचन्द व मनमोहन व बिहारी जी इत्यादि कहक[illegible] से आंखों में जल भरलाती और प्रसन्नहुआ करती रानीजी [illegible] गवत्के नाम सुने तो स्नेह उत्पन्न होगया और सहेली से [illegible] बार किसका नाम लेती है जो मेरे मनको अपनी ओर [illegible] सहेली ने उत्तरदिया कि तुम क्या भूलीहो अपने [illegible] वलीनरहो भगवद्भक्तों की कृष्ण [illegible] अनमोल रत्न[illegible]

है रानीजीको और अधिक प्रेम भगवत् का उत्पन्नहुआ और सहेली से पूछा कि किसीप्रकार वह मनमोहन महाराज मुझको भी मिलै सहेली ने जो प्रेम रानीजी का देखा तो भगवत् के चरित्र रानीजी को सुनाये और भगवद्भक्त जो रसिक व शृंगार उपासकहुये हैं तिनकी कथाकही रानीजी ने उस सहेली को सेवा टहल करना छुड़ादिया व गुरूके सदृश समझा और मर्य्याद बहुत करनेलगी और भगवच्चरित्र दिनरात सुना करती जब अच्छेप्रकार मन भगवत्के चरित्रों में लगा तो दर्शनों की चाहनाहुई और सहेलीसे कहा कि ऐसा कुछ उपाय करनाचाहिये जिस में भगवत्के दर्शन होयँ कि प्राण सुखीरहैं क्योंकि वह मनमोहन मनमें समायगयाहै सहेली ने कहा कि उसके दर्शन बहुत कठिनहैं हजारों ऋषीश्वर इत्यादि घरबार व राज ऐश्वर्य्य त्याग करके धूरमें लोटते हैं और दर्शन नहींपाते परन्तु प्रेम से वह मिलताहै सो तुम भक्ति और भावसे भगवत् सेवा अंगीकारकरो और शृंगार व रागभोगमें लवलीन रहाकरो रानीजी ने नील मणिका स्वरूप भगवत्का विराजमान किया और बड़ी भक्ति और भावसे सेवामें लीनहुई भांति २ के शृंगार और रागभोग और नानाप्रकारके लाड़ लड़ाने को आरम्भकिया थोड़े दिन में उस पदवीको पहुँचगई कि स्वप्नमें भगवत्से बातचीत हुआ करती निश्चयकर करोड़ों उपाय और योग यज्ञ व तप व दान इत्यादिसे प्रेम की राह कुछ निराली है पीछे यह कांक्षाहुई कि भगवत् के साक्षात् दर्शन होयँ उसीसहेली से मनकी बातकही उसने उत्तरदिया कि अपने महल के निकट एकमकान बनवाओ और चारोंओर अपने मनुष्य सावधान करो कि जो कोई भगवद्भक्त व साधु आयाकरैं उनको ले आकर उस मकान में टिकायाकरैं और भोजन इत्यादि की सेवा अच्छेप्रकार होती रहै और तुम परदे में बैठकर उनके दर्शन कियाकरो इस उपायसे विश्वासहै कि व्रजकिशोर महाराज के दर्शन होजावैंगे रानीजी ने वैसाही सब किया और साधु सेवा में विरहिन व प्रेम मतवालियों की भांति दिन काटने लगीं एकबेर निज व्रजभूमिके रहनेवाले साधु आय गये कि युगलकिशोर महाराजके रँगमें रँगे हुये थे उनके दर्शन और बोल बतरान से रानी थकित होगई और सहेली से पूछा कि इस शरीर में वह कौन अंगहै कि जिसकी लज्जासे सत्संग व साधुसेवा में व्यवधान

पड़ताहै मेरे देखने में सब अंग बराबर हैं भगवत् स्वरूप के रस से परम आनन्द के रसमें मग्न होना यही सारहै और सब असार और तुच्छहै यह कहकर जहां भगवद्भक्तथे तहां चली आई उस सहेली ने मना भी किया पर न माना आयकर चरण पकड़ के दण्डवत् किया और बड़ी दीनता व अधीनतापूर्वक अपने हाथसे भोजन कराने और सेवा करानेका मनोरथ करके विनयकिया कि जो आज्ञाहोय सो करें उस समयके प्रेमकी दशा रानीजीकी लिखने व वर्णन करने में नहीं आय-सक्ती और किसप्रकार वर्णन होसके कि प्रेमसे नेम नहीं रहता अपने हाथमें सोनेका थाल भगवंत् प्रसादका लेकर सबको भोजनकराया और पानदिया और चरणों में पड़ी हरिभक्त यह सेवा और प्रेम रानीजीका देखकर प्रेमसे विकल होगये जब सब परदा व संकोच रानीजी ने उठा धरा तो नगरमें शोरहुआ और लोग देखने को आये महलपर मुसद्दी तैनाथथा उसने राजाको सब वृत्तान्तलिखा कि रानीजीने निर्भय होकर सब लज्जाको दूरकिया और मुण्डी अर्थात् वैरागियोंके साथ वैठती हैं राजाने जो पत्र पढ़ा और हलकारेकी ज़बानी सब सुना तो जलबलकर भस्म होगया संयोगवश कुंवरप्रेमसिंह जो रत्नावली के पेटसे जन्माथा अपने बापको सलाम करने इस स्वरूपसे आया कि भालपर तिलक और गलेमें कण्ठी व मालाथी जिससमय आयकर सलामकिया व लो-गोंने साधोंके स्वरूपसे कुंवरके आनेका वृत्तान्त निवेदनकिया तो माधव-सिंहने उसकुंवरको मुण्डीके अर्थात् वैरागिनका वेटा कहा और यहकह-कर महल में चलागया प्रेमसिंहको अपने बापके क्रोध करनेकी चिन्ता उत्पन्नहुई लोगोंसे कारणपूछा सब वृत्तान्त समभने पीछे विचार किया कि जो हम साधुहैं तो इससे अच्छा और क्याहै भगवद्भक्ति अंगीकार करनी चाहिये अपनी माताको लिखभेजा कि जो तुम्हारी प्रीति भगव-च्चरणोंमें सांची है तो राजाने आजसभामें हमको मुण्डीका कहाहै उसको सत्यकरना चाहिये और मृत्युको शिरपरपहुँचा जानकर किसीप्रकारका शोच योग्यनहीं रानीने वह पत्री पढ़ी और भगवद्भक्तिके रंगमें रंगीन होकर उसी घड़ी शिरके केश जो अतर फुलेलसे भीजे थे दूरकिये और पहिले साधोंको भोजन इत्यादि सेवाकरके महलों में चलीजातीथी उस दिनसे महलका जाना बन्दकिया साधुसेवाके स्थानमें रहने लगी और

राजाकी ओरसे जो कुछ खर्चके निमित्त बंधान था तिसका लेना छोड़ दिया और अपने पुत्र प्रेमसिंहको लिखभेजा कि आज मुण्डी होगई तुम आनन्दसे रहो प्रेमसिंह बहुत आनन्दहुये लोगोंको इनआमदिया और नौबत बजवाई राजा माधवसिंह ने लोगोंसे पूछा कि आज कुंवर प्रेमसिंहको किसबातकी खुशी है लोगोंने कहा कि पहिले तो रानीजीने मुण्डीका स्वांग बनारक्खाथा अब आपने जो कुंवर प्रेमसिंहको मुण्डी का कहा तो रानीजी सच्चीमुण्डीं होगईं और केश शिरके दूरकिये राजा सुनकर महाक्रोध में आया और कुंवर व उसकी माताका घातक शत्रु होगया व हथियार बांधकर फ़ौजलेकर कुंवरके मारने के निमित्त सवार हुआ कुंवरने जो यह वृत्तान्त सुना तो वह भी युद्धपर आरूढ़ होगया और संयोग मारकाटकी निकट पहुँचगईथी कि राजमन्त्रियों ने राजा को समझाया कि बेटेपर मारनेकी कमर बांधनी उचित नहीं बड़ादुर्यश सारेसंसारमें होगा और उधर कुंवर प्रेमसिंहको समझाया कुंवरने उत्तर दिया कि संसारके विषय भोगके हेतु हज़ारों लाखों शरीर धारणकिये फिर वे शरीर जातेरहे जो एकबेर भगवत् की राहमें यह तन जाय तो इससे दूसरा क्या उत्तमहै राजमंत्रियोंने चरण पकड़लिये और विनय व प्रार्थना की तब यह ठहरी कि जो माधवसिंह कमर खोलकर अपने मकानपर चलाजावै तो हमको भी विना प्रयोजन युद्धकरना अंगीकार नहींहै सो ऐसाही हुआ रात्रिके समय राजा माधवसिंह रानीके मारनेके हेतु दिल्लीसे कूचकरके अपने नगर में आया और लोगोंसे सब वृत्तान्त सुनके अपने महलमें गया मंत्रियोंसे मन्त्रणा किया कि रानी ने हमारी नाकको काटलिया ऐसी स्त्री के वध करने में कुछ पापनहीं होता सो वध करना चाहिये एक बुद्धिमान् ने मन्त्रदिया कि तरवार इत्यादिसे मारना उचितनहीं जहां रानी रहती हैं तहां नाहरको छोड़वादो कि रानीको मार देवैगा सबको यह मन्त्र पसंदहुआ और प्रभातको यह बात करी उस समय रानी भगवत् सेवा करके उठी थी और भगवद्रूप के प्रेमका जल आंखों में था उस सहेली ने कहा कि देखो नाहर आया रानी ने देखकर कहा कि यहां नाहरका क्या कामहै नृसिंहजी पधारे हैं और अत्यन्त भक्तिभावसे सम्मुख आई दण्डवत् व विनय करके कहा कि आज धन्य मेरे भाग्य हैं जो दर्शनदिये भगवत् ने जो यह शुद्धभाव देखा तो उस

नाहरही में अपना नृसिंहरूप दिखाया रानीजी ने पूजनकिया और फूल व माला इत्यादि अर्पण करिके आरती को किया भगवत्ने विचारा कि पूजाको तो करालिया परन्तु कामभी तो नृसिंहका करनाचाहिये इसहेतु नृसिंहजी के सदृश कि हिरण्यकश्यप के मारने के समय खम्भसे भयंकर रूप प्रकट हुये थे मन्दिर से बाहर आये और जो लोग विमुख थे उनको मारकर निकलगये माधवसिंहको यह सब सुनने में आया और रानीका वृत्तान्त सुना कि ज्यों की त्यों भजनमें आनन्दहैं तबतो विश्वास हुआ वे आधीन होकर आया भूमि में गिरकर साष्टांग दण्डवत् किया उस सहेली ने विनय किया कि राजाजी दण्डवत् करते हैं रानीजी ने कहा कि लालजी महाराज को दण्डवत् करैं फिर विनय किया कि एक निगाह देखनी चाहिये उत्तर दिया कि ये आंखें एकओर लगी हैं दूसरी ओर निगाह नहीं होसक्ती राजाने हाथजोड़कर विनय किया कि राज्य व खज़ाना सब आपकाहै जो मनमें आवे सो करो रानीजी ने कुछ सावधान होकर उत्तर न दिया भगवद्भजन में लगीरहीं एकबेर राजा मानसिंह व माधवसिंह दोनों एकबड़ी गहिरीनदी के पारजाते थे नावडूबने लगी और मल्लाह बेबश होगये दोनों घबराये और राजा मानसिंहने माधवसिंह से कहा कि अब कौन उपाय करना चाहिये माधवसिंह ने रानी की भक्ति का वृत्तान्त सब कहा और फिर ध्यान रानीजीका किया उसी घड़ी नाव किनारेपर लगिगई और दोनोंका मानो नया जन्महुआ राजामानसिंहको बड़ी चाह दर्शनकी हुई जब आया तो पहिले रानीजी के दर्शन को गया दीन व आधीनता से विनती करी और मन में दृढ़ विश्वास युक्तहुआ ॥ कथा निषादकी ॥

भीलोंके राजा निषादकी कथा सब रामायणों में विस्तार करके लिखी है यहां सूक्ष्म करके लिखी जाती है जब श्रीरघुनन्दन स्वामी दशरथ महाराजकी आज्ञासे वनको गये तब शृङ्गबेरपुर में कि अब सींरोर विख्यातहै वहां के राजा गुहनामा निषादथे तहां पहुँचे निषाद रघुनन्दन स्वामी के आगमनका समाचार सुनतेही भेंट व नजरलेकर आये और रूप अनूप व छवि माधुरी का दर्शन करके मन व प्राण से आसक्तरूप होगये और उसीघड़ी से सिवाय उसरूप और दर्शनके कुछसुधि अपने व बिरानेकी न रही जब रघुनन्दनस्वामी चित्रकूटको पधारे और नि-

को बिदाकिया तो बेसुधिबुधि होकर उसी रूपके ध्यानमें रहनेलगे जब भरत महाराज रघुनन्दन स्वामीसे मिलने के निमित्त चित्रकूट को और निषादको समाचार पहुँचे तो सन्देह हुआ कि मेरे स्वामी व परम प्रीतमसे लड़ने के हेतु यह सेना जाती है तब प्राणदेनेको उद्यत होगये और तनक भय उस सेना कटीलीका न किया फिर जो वृत्तान्त भक्ति और मनकी निष्कपटता भरतजी का जाना तो भरतजी से मिले और चित्रकूटतक साथ चलेगये जब वहां से फिरआये तो भगवत्के बियोग से ऐसे बिकल व बेचैन हुये कि रोतेरोते आंखों से रुधिर बहने लगा और उस भगवत् ध्यान में अपने और बिराने की सुधि जातीरही फिर मनमें बिचार करनेलगा कि मुझ से मीन इत्यादि जन्तु जलके हज़ार गुना अच्छेहैं कि अपने प्राणप्रीतमसे बिछुड़तेही मरजाते हैं नितान्त फिर दर्शन मिलने की आशाकरके रहे परन्तु यह न हुआ कि इन आंखों से सिवाय उसरूप अनूपके और भी कुछ देखना चाहिये इसहेतु आंखें बन्दकरके उसी रूपके चिन्तवन और ध्यानमें रहे चौदह वर्ष पीछे जब रघुनन्दनस्वामी आये तो विश्वास न आया और कहनेलगे कि ऐसे मेरे भाग्य कहां हैं कि फिरभी उसरूपको इन आंखिनसे देखूं श्रीरघुनन्दन स्वामी अपारप्रीति देखकर आप आये और उठाकर अपनी छाती से लगाया उसघड़ी निषादने आंखें खोलीं और अपने स्वामी परम प्रीतमके दर्शन करके दोनोंलोक में कृतार्थ हुये॥

कथा बिल्वमङ्गल की॥

बिल्वमंगलजी श्रीकृष्णस्वामी की कृपाकेपात्र आनन्दस्वरूप परम भागवतहुये करुणामृत व गोबिन्दमाधवग्रंथ और स्फुटस्तोत्र संस्कृत में ऐसे रचनाकिये कि रसिकभक्तोंको हार और मालाके सदृशहैं चिन्तामणि के संग को पायकर ब्रजसुन्दरियों के बिहार व परम आनंद को वर्णन किया दक्षिण देशमें कृष्णवेणानदी के निकटके रहनेवाले थे और चिंतामणिनाम बेश्याके प्रेममें ऐसे आसक्तथे कि संसारकी लज्जा शरम छोड़कर दिनरात उसीके प्रेममें फँसे हुये उसीके घररहाकरतेथे जाति के ब्राह्मण थे पिताके श्राद्धके दिन कर्म करते और ब्राह्मण जिमाते दिन थोड़ा रहगया बिकलहोकर चले वह बेश्या कि नदी के उसपार रहतीथी जब नदीपर पहुँचे तो बाढ़पर देखा और नाव इत्यादि उतरनेकी सामा

कुछ न पाई तो अत्यन्त बेचैनहुये और विना अपने प्रेमीके जीना व्यर्थ समझकर नदी में कूदपड़े कुछ सुधि अपने व बिरानेकी न थी उसीवेश्या के मिलने का ध्यानथा जब नदी में डूबनेलगे तो एक मृतक वहां वहा जाताथा उसको पकड़लिया और विचारा कि उसी महबूबने नावभेजी है उसपर चढ़कर किनारे पहुँचे वहांसे गिरते पड़ते बड़े बेगसे उसवेश्याके द्वारपर पहुँचे आधीरातथी व द्वार बन्दथा भीतर जानेकी चिन्ता में हुये संयोगवश एक सर्प लटकरहाथा विचारा कि उस महबूबने कृपा करके चढ़ने के वास्ते डोरको लटकाय दिया है उसको पकड़कर मकान की छतपर चढ़गये और वहांसे जब उतरनेकी राह न पाई तो आंगन में कूदपड़े शब्द सुनकर वेश्या और उसके घरके लोग जगे दीपकबारकर देखा तो बिल्वमंगलजी हैं स्नान करवाया व सूखे बस्त्र पहिनाये पूछा कि किसप्रकार आये उत्तर दिया कि तुमने नदीपर नावको भेजदिया व द्वारपर डोर लटकाय दी उसी के अवलम्बसे आयाहूं वेश्या ने छतपर चढ़कर देखा तो अजगर लटक रहाहै वह वेश्या अत्यन्त क्रोध करिके कहनेलगी कि जिसप्रकार मेरे शरीरपर कि केवल मांस व चमड़ाहै मन को लगाया है इसीप्रकार श्यामसुन्दर सब शोभाके धाम जो ब्रजनागर महाराजहैं उनसे क्यों नहीं मनको लगाता कि इससंसार समुद्रसे पार होजावै और दोनों लोक शुद्धहोयँ मैं तो प्रभातहीसे युगलकिशोर महाराजका स्मरण भजन करूंगी तुझको तेरे आधीन है जो चाहै सो कर बिल्वमंगलजी को यह बात ऐसी लगी कि हियेकी आंखें खुलगईं और श्रीब्रजचन्द्रकी रूप माधुरी ने तुरन्त हृदय में प्रकाश किया और उसी घड़ी रूपमाधुरीका रस ऐसा मनोवांछित पाया कि परम आनन्दमें मग्न होगये वह रात तो भगवत्चरित्र और वृन्दावनकी कुंजन और शोभाके कीर्त्तनमें व्यतीतहुई प्रभातहोते दोनोंने अपनी अपनी राह को लिया मनमें परम शोभाधामका स्वरूप और जिह्वापर नाम और आंखोंमें प्रेम का जलथा बिल्वमंगलजी माध्वसम्प्रदायमें सोमगिरनामे संन्यासी के सेवकहुये और भगवत्के रूप अनूपकी चितवन करतेहुये हज़ारोंश्लोक रसचरित्र व भगवत्के ध्यानके गुरूसे पढ़े और आप रचना किये एक वर्ष पर्य्यन्त गुरूकी सेवा में रहे पीछे श्रीवृन्दावन के दर्शनकी चाह हुई उसी प्रेम में मतवाले चले राहमेंरहे एकनदी के किनारे पहुँचे वहां स्त्रियां

सब स्नान कररहीथीं एक स्त्री परम सुन्दरी को देखकर आसक्त होगये और अपने भेषको भूलकर उसके पीछे होचले वह तो अपने घरमें च लीगई और बिल्वमंगलजी देखनेकी चाहमें द्वारपर खड़ेरहे उसस्त्रीका पति भगवद्भक्तथा एक परम भागवतको अपने द्वारपर खड़ा देखकर अ- पनी स्त्रीसे वृत्तान्त पूछा उसस्त्रीने वृत्तान्त आसक्तहोने और साथ आने का वर्णन किया उस भक्तने बिल्वमंगलजीको हाथ जोड़कर विनय किया कि मेरेगृहमें पधारिये कि चरण पड़ने से मेरा गृह पवित्रहोय और सेवा करके दोनों लोकमें धन्यताको प्राप्तहोऊं उसे अपने घर लेगया अटारी पर टिकायकर बड़ीप्रीतिसे सेवाकी अपनी स्त्रीसे कहा कि शृङ्गार करके सबप्रकारसे सेवाकर कि भगवद्भक्तों की सेवासे भगवत् बहुत शीघ्र मि- लते हैं वह स्त्री शृङ्गार करके और थालमें भगवत् प्रसाद लेकर बिल्व- मंगलजी की सेवामें पहुँची बिल्वमंगलजी ने उसको देखकर और उन की भक्ति व साधु सेवाको विचार करके अपने मन आसक्तको सावधान किया और जाना कि सब उपाधि व बखेड़े का कारण ये मेरी आंखें हैं जो ये न होतीं तो काहेको मन आसक्तहोता उस स्त्रीसे कहा कि दो सूई ले आओ सो वह लेआई और बिल्वमंगलजी ने उन दोनों सूइयों से अ- पनी दोनों आंखोंको अंधीकरलिया वहस्त्री डरीहुई और कांपती अपने पतिके पास आई वृत्तान्त कहा वह भक्त आया चरणपकड़कर अत्यन्त विकल होकर बोला कि महाराज हम से क्या अपराध हुआ कि जिस कारण आप को यह क्लेश हुआ बिल्वमंगलजी ने उसको आश्वासन करके कहा कि तुम्हारी साधुता व भक्ति में कुछ संदेह नहीं हमारीही साधुता में भेदहै उसने विनय किया कि कुछ दिन आप रहें कि सेवा करके कृतार्थहोऊं बिल्वमंगलजी ने कहा कि तुमने ऐसी सेवा करी है जो किसी से नहीं होसक्ती अबतुम भगवद्भजन करो यह कहिकरचले ऊप- रकी आंखों को दूरकरके भीतर की आंखों से कामरक्खा वृन्दावन में पहुँचे एकवृक्ष के नीचे बैठकर भगवत्के ध्यान और भजनमें लवलीन हुये भगवत्ने देखा कि मेराभक्त भूखा और प्यासा है आपआये और महाप्रसाद भोजन कराया जिस जगह बिल्वमंगल जी बैठे थे वहां धूप आगई भगवत्ने कहा कि चलो तुमको छांहमें बैठालदेवें सो हाथ पक- ड़कर घनीछाया में लेगये बिल्वमंगलजी महाप्रसादके भोजन व मधुर

बोलने और कोमल हाथके स्पर्श से जानगये कि आपहैं इस हेतु हाथ पकड़लिया और छोड़ने को मन न चाहा भगवत् ने छुड़ाने के हेतु बल किया तो बिल्वमंगलजी ने भी बलकिया नितान्त भगवत् हाथ छुड़ाकर लम्बेहुये तब बिल्वमंगलजी ने कहा कि भला इसघड़ी तो बरिआई आपकी चलनिकली अब मनमें पकड़ताहूं देखूंगा कैसे भागजाओगे सो ऐसाही किया अर्थात् सब ओरसे मनको बटोरके एक श्रीव्रजचन्द्र महाराजके रूप और ध्यानमें ऐसा चित्त लगाया कि जो योगियों के मनसे भी निकल जाताहै सो बिल्वमंगलके मनमें दृढ़होकर स्थितहुआ जब अच्छेप्रकार मनकी दृढ़ताहोगई तो वनसे उठकर वृन्दावनमें आये और चाह यहहुई कि जो आंखेंहोतीं तो भगवत्के कुञ्जमहलके विहार स्थान और भगवत्के श्रीविग्रहोंका दर्शन करते भगवत् ने उनके मन की रुचि जानकर पहिले तो उस बांसुरीकी ध्वनि कि जो योगमायाकी भी मायाहै सुनाई और परमानन्दमें पूर्णकिया व फिर दोनों आंखों को प्रकाशवान् करदिया जैसे सूर्य्य के उदयसे कमल खिलजाते हैं बिल्वमंगलजी ने बेलि और लता और कुंज व विहारस्थान भगवत्के दर्शन किये और फिर भगवत् श्री मूर्त्तियोंका रूप शोभायमान देखकर अधिक चाह व तृष्णा ध्यानके रूप माधुरी की हुई क्योंकि उस परमअनूपरूप का सुख ऐसा नहीं कि तृप्तहोय वरु जितना प्रकाश हृदयमें करताजावे तितनाही अधिक तृष्णा व चाहको बढ़ाताहै बिल्वमंगलजी ने करुणामृत रसग्रन्थ और कईस्तोत्र ऐसे ऐसे रचनाकिये कि जिनसे मन युगल स्वरूपमें लगजाताहै करुणामृत ग्रन्थके मंगलाचरण में जो पहिलेनाम चिन्तामणि पीछे नाम अपने गुरूका लिखा तो इसमें दो बात जानीजाती हैं एक तो यह कि पहिले उपदेश चिन्तामणि से हुआ इस हेतु उसको प्रथम गुरू करके जाना व पहिले नाम उसका लिखा दूसरे यह कि भगवद्भक्त थोड़े से उपकारकोभी बहुत मानते हैं इस हेतु यद्यपि वह वेश्या थी परन्तु उसका उपकार इतना माना कि गुरूसे भी अधिक उसको विचार किया और जयपद उसके निमित्त धरे उस चिन्तामणि बड़भागिनी ने बिल्वमंगलजी का वृत्तान्त सुना कि भगवत्के दर्शनहुये और परमभक्त होगये हैं पहिले प्रेमका नाता विचार करके वृन्दावन में आई बिल्वमंगलजी उसको देखकर उठे और बड़ा सत्कार व आदर

भावक्रिया दूधभातका देना निज-प्रसाद का भोजनके निमित्त आगेधरा चिन्तामणि ने पूछा कि यह भोजन कहां से आया है विल्वमंगलजी ने कहा भगवत् कृपाकरके देते हैं चिन्तामणि ने कहा कि यह महाप्रसाद भगवत्ने तुमको कृपाकरके दियाहै जो मुझको कृपाकरके अपने हाथ सेदेंगे तो लेऊंगी यह कहके भगवत्भजन में लगी भगवत्ने जो प्रीति अपार चिन्तामणिकी देखी तो परमप्रीति और कृपासे आप दोना दूध व भातका चिन्तामणि के निमित्तलाये कि जिसकी ब्रह्मादिक भी बड़ी चाहनासे कृपाकटाक्ष जोहते रहतेहैं व दर्शन देकर कृतार्थ किया ॥

कथा सूरदास मदनमोहन की ॥

सूरदास मदनमोहन ब्राह्मण सूरध्वज किसीसखीका अवतार परम भक्त माध्वसम्प्रदायमें हुये यद्यपि मुख्यनाम उनका सूरदास था परन्तु श्रीमदनमोहनजी महाराज में प्रेम और स्नेह अत्यन्त रखते थे इस हेतु नाम सूरदास मदनमोहन उनका विख्यातहुआ बाहर भीतरकी आँखें कमलके सदृश प्रफुल्लितथीं और गानविद्या व काव्यकी रचनामें बहुत अभ्यास रखते थे प्रियाप्रीतम के जो गोप्य चरित्र हैं उनके परमानन्द और सुख और रसके अधिकारी हुये और नव रसों में जो शृंगाररस मुख्य और पहिले है उसको अपनी कविताई में अच्छा वर्णनकिया कविताई उनकी तुरन्त मुखसे निकलते के साथ विख्यात होजाती थी एक दिनमें चारसौ कोसतक पहुंचजाती थी मानो वह काव्यही पङ्ख उड़ने को बांधलेती थी पूर्वके जिलेमें बादशाह की ओरसे सन्दीलेके सूबेदारथे बाजारमें खांड़ स्याह दिव्यदेखी विचारमें आया कि मदनमोहन महाराजके मालपुआके योग्यहै खरीदकरने के निमित्त आज्ञादी सेवकों ने कहा कि इसके दामसे बीसगुणा खर्च किरायेका पड़ेगा और वृन्दावन तक मिश्रीसेभी अधिक महँगी पहुँचैगी सूरदासजी ने कहा कि खर्चका कौन वर्णन है भगवत्प्रीति पर दृष्टि चाहिये सब गाड़ियों में भरवाकर भेजा संयोगवश वृन्दावन में रातकेसमय पहुँची मन्दिर के पुजारियों ने भंडारे में रखवाली कि प्रभातको भोगलगावेंगे भगवत् कि अपने भक्त के भेजे सौगातका बाट जोहिरहेथे भूखके कारण भोरतक धैर्य्य न धर सके गोसाईंजीको स्वप्नमें आज्ञादी कि इसीघड़ी मालपुआ बनैं सो बना और भोगलगा तब संतुष्टहोकर शयनकिया धन्यहै यह भक्तवत्सलता

कि जिसकी माया कोटानकोट ब्रह्माण्डको एक क्षणमें ग्रास करलेती है सो ईश्वरभक्तके वशहोकर क्षुधा व संतुष्टता प्रकटकरताहै सूरदासजी ने एक विष्णुपदके तुकमें वर्णनकिया कि भगवद्भक्तोंकी जूतीका रक्षक यह पदवी मुझको मिले किसी साधु ने परीक्षा के हेतु सूरदासजी से कहा कि हम मदनमोहनजी महाराज के दर्शन करआवें हमारे जूतेकी रखवारी करतेरहो सूरदासजी ने बहुत प्रसन्नहोकर साधुकी जूतीको अपने हाथमें उठालिया और कहनेलगे कि आजतक तो इसकार्य्यमें बातही की जमाखर्चथी परन्तु आज मेरी वांछापूरी हुई कि यहसेवा मिली गोसाईंजी ने कईवार बुलाया नहींगये विनय कर भेजी कि साधुके चरण सेवाकरें पीछे दर्शनको पहुँचूंगा गोसाईंजी और साधु इस विश्वास पर अत्यन्त प्रसन्नहुये संदीलेके सूबेसे तेरह लाख रुपया तहसील होकर आया सब साधुसेवामें खर्च करदिये और कुछ डर हिसाब व बादशाह का न किया जब बादशाहके सेवकलोग रुपया लेने के निमित्त आये तो सन्दूक कंकरों से भरकर सब सन्दूकों में एक एक पुरजा लिखकर डालदिया उसमें यह लिखाथा (तेरहलाखसंदीलेउपजे सबसाधुनमिलिगटके सूरदासमदनमोहन आधीरातसटके) और हरएक सन्दूक पर अपनी मुहरकरके आधीरात को भागगये जब सन्दूक खोलीगई तो कङ्कर निकले बादशाहने पुरजों को पढ़कर कहा कि गटक अर्थात् खाना तो अच्छाहुआ परंतु सटक अर्थात् भागजाना अच्छा न हुआ और साधु सेवा व उदारता को समझकर प्रसन्नहुये व एक फ़रमान क़सूरके माफ होनेका और हाज़िर होने के निमित्त भेजा सूरदासजी ने उज़र लिखभेजा कि अब आमिली और सूबेदारी से श्री वृन्दावन की गलियों में झाडूदेना सहस्रगुण बड़ाई है टोडरमल दीवान ने विनयकिया कि जो इसीप्रकार लोग माल वाजिब सरकारका खर्चकरके भागजावेंगे तो सब इन्तिजाम जातारहेगा उनकी गिरफ्तारी का हुक्म जारी कराया और क़ैदखाने में भेजादिया सूरदासजी ने एक दोहा लिखकर बादशाह के पास भेजदिया उसमें बादशाहकी श्लाघा और क़ैदका दुःख और अपनाहाल थोड़े में लिखाथा बादशाहने उसीघड़ी छोड़दिया छूटे तब वृन्दावन में आकर श्रीव्रजकिशोर किशोरी के ध्यान में मग्न रहे ॥

कथा अग्रदास की ॥

स्वामी अग्रदासजी चेले कृष्णदास पयआहारीकी तीसरी पीढ़ी में रामानन्दजी के परमभक्त हुये और उनकी सम्प्रदाय माधुर्य्य उपासक विख्यात है जो कथासे कोई चरित्र माधुर्य्य व शृङ्गारकी नहीं जानने में आतीहो इस हेतुसे इसनिष्ठामें लिखी ऐसे भजनानन्दथे कि एकपल व एक क्षणभी विना भजन व चिन्तवन नहीं बीतता था प्रभातसे उठकर भगवद्भक्तों की रीति जैसी होती है आचार व कृपासे श्रीसीतापति अवधविहारी की सेवा व स्मरणमें रहते और अपने वचन अमृत की वर्षा से सबको ऐसा आनन्द देते कि जिसप्रकार घटाकी वृष्टि सबपर बराबर होती है सिद्ध ऐसे हुये कि नाभा ग्रन्थकार जन्मके अन्धे तिनके नवीन नेत्रकरदिये और समुद्रसे डूबताहुआ जहाज बचाया कि यहदोनों बातें ग्रन्थके आरम्भमें लिखीगईं जानकी महारानी के साक्षात् दर्शनहुये वैराग इतनाथा कि सब कारबार संसारी त्यागकरके गलताजी में जोकि आमेरके निकटहैं तहां भजनमें लवलीनहुये फुलवाड़ी को अपने स्वामी का विहारस्थान समझकर आपअपनेहाथोंसे झाड़ूदेते व उज्ज्वल कियाकरते यद्यपि सैकड़ों बागवान व नाभा ऐसे२ चेले सब सेवामें थे परंतु किसीको अपनी सेवामें साझी नहींकरते एकदिन झाड़ूदेकर पत्ते व कूड़ा टोकरी में लेकर बाहरडालने को निकले थे कि महाराजा मानसिंह आमेरके अधिपति दर्शन के निमित्त आये स्वामी जी भीड़ देखकर फुलवाड़ीमें न गये बाहर एकबटके वृक्षकेनीचे बैठरहे जब विलम्बहुआ तो नाभाजी गये और दण्डवत् करके प्रेममें भरेहुये खड़ेहोरहे कुछकहि न सके राजाने बहुत बेरतक बाटजोही फिर उठकर जहां स्वामीजी बैठेथे तहां गया दर्शन व दण्डवत् किया फिर विदाहुआ स्वामीजी के भीतर न जानेका अभिप्राय यहथा कि इसवृक्षके नीचे छोटेबड़े सबको बराबर दर्शनहोंगे और भीतर बड़ेलोगोंको दर्शनहोंगे और छोटेलोगोंको दर्शन न होंगे और यहभी विचारकिया कि भीतर बैठनेसे राजा बहुतबेरतक रहेगा वृक्षके नीचे धूल इत्यादि में बहुत बेरतक न रहैगा चलाजावैगा धनाढ्यलोगोंका संग जितनाही थोड़ाहो तितनाही अच्छीबात है ॥

कथा स्वामी कील्हदास की ॥

स्वामी कील्हजी चेले कृष्णदास पयआहारीके माधुर्य्य और शृङ्गार

उपासक परम भागवत स्वामी अग्रदासजी के गुरुभाई हुये दिनरात श्रीरघुनन्दन स्वामी के चरण कमलों के ध्यान में मग्नरहते थे जिनका नेर्म्मलयश अबतक सारेसंसार में विख्यातहै भगवद्भजन में शूरवीर और सांख्ययोग के मुख्य तात्पर्य्य के जाननेवाले हुये भीष्मपितामह के सदृश मृत्यु अपनी इच्छाके आधीन कियेथे ऐसी सिद्धतापर प्रेम व नम्रताका यह वृत्तान्तथा कि सबको आप प्रणाम किया करते सुमेरदेव उनके पिता गुजरातमें सूबाथे जब उनका परलोक हुआ तो विमानपर चढ़कर परमधामको चले उसी घड़ी कील्हदासजी मथुरामें राजामान-सिंहके पास बैठेथे विमानको देखकर उठे और दण्डवत्करके कहा कि अच्छाहुआ अच्छाहुआ राजाने पूछा कि किससे बात करते थे कील्ह-दासजी ने पहिले छिपाया जब राजा ने हठकिया तो जो वृत्तान्तथा सो कहदिया राजाने हरकारा भेजकर दिन घड़ी सब समझा ठीकउतरा तो दण्डवत् किया व विश्वास दृढ़किया एकबेर कील्हदासजी भगवत् पूजन करते थे और पिटारी फूलोंकी रक्खीथी उसमें फूललेने के निमित्त जो हाथडाला तो सांपने अँगुली में काटा कील्हजीने जाना कि सांप तृप्त नहीं हुआ उसको कहा फिरकाट सो तीनबेर कटवाया तनकविष न भीना जब परमधाम जानेकी इच्छाकरी तो भगवद्भक्तोंका समाज किया और दर्शन व सत्संग करनेके पीछे दशवांद्वार अर्थात् ब्रह्माण्ड तोड़कर देह त्याग किया कि योगीजन भी यह वृत्तान्त सुनकर चकित हुये व सब भक्तोंको विश्वासहुआ ॥

कथा गोपालभट्ट की ॥

गोपालभट्ट व्यङ्कटभट्टके पुत्र श्रीकृष्णचैतन्य महाप्रभुकेचेले ब्राह्मण परमभागवत हुये माधुर्य्य और शृंगार उपासना में ऐसे पगेहुयेथे कि वृन्दावनमें उस अमृत रसका स्वाद उन्हींको प्राप्तहुआ जिनके प्रभाव करके सहस्रों को भगवत्की प्राप्तिहुई भागवतधर्म्मके प्रवृत्त करनेवाले और भगवद्भक्तिके रूपहुये कि सिवायगुणके किसीका अवगुण दृष्टिमें न आया धन सम्पत्ति सब छोड़कर वृन्दावन में वासकिया और सदा रस रास और परमशोभामें ब्रजकिशोर महाराजके मग्नरहते थे भगवद्भक्त भावना महाराज उनकी भक्ति और सेवाके वशमें ऐसे थे कि अत्यन्त प्रसन्न होकर शालग्रामी मूर्त्ति स्वरूप अपना प्रकट किया अर्थात् सेवा

के समय एकबेर उनको शालग्रामजी में यह चिन्तना हुई कि जिस प्रकार भगवत् का शृंगार ध्यानमें कियाजाताहै व प्रकट उसी प्रकारहुआ करै तो अच्छा है भगवत् ने अपने भक्तके मनोरथ पूर्ण करने केलिये शालग्रामसे मूर्ति स्वरूप अपनी परम शोभायमानको बैशाखसुदी पूर्णमासी को प्रकट किया भट्टजीने मन्दिरमें विराजमान करके राधारमण नाम विख्यात किया कि वृन्दावन में प्रसिद्ध व विख्यात है और चिह्न आधेभाग शालग्रामका चरणकेनीचे और आधेका कटिपर विराजमानहै इस कृपा के पश्चात् भट्टजी शृंगार व सेवा व राग भोग इत्यादि में लगे व सारे संसारको हेतु सुगतिके हुये ॥

कथा केशवभट्टकी ॥

केशवभट्ट कश्मीरी ब्राह्मण ऐसे परम भक्तहुये कि लोगों को दुःख व पापोंसे छुड़ाकर भगवत् सम्मुख करदिया महिमा भट्टजी की संसारमें विख्यातहै कि भक्तिके कुल्हाड़े से दूसरे धर्मोंके वृक्षोंको काटकर भगवच्चरित्रोंको जगत्में विख्यात किया भट्टजी को निम्बार्कसम्प्रदायवालों ने अपने गुरु परम्परा में लिखाहै वे उनकी कथासे उपदेश होना श्री कृष्णचैतन्य महाप्रभुसे किमाध्वसम्प्रदायमेंथे प्रकटहै ऐसी जनाई पड़ती है कि उनको उपदेश भगवद्भक्तिका श्रीकृष्णचैतन्यसे हुआ और उस समय महाप्रभुकी सातबर्षकी अवस्थाथी इसकारणसे उनकेचेले न हुये निम्बार्कसम्प्रदायवालों के सेवक हुये जिस प्रकार भगवद्भक्ति प्राप्तहुई तिसका वृत्तान्त यहहै कि यह भट्टजी बड़ेपण्डितथे हज़ारों पण्डितोंको शास्त्रार्थमें निरुत्तर करदिया जब दिग्विजय करते हुये सैकड़ों पण्डित व शिष्यों के सहित नदियाशांतिपुर में पहुँचे तो वहांके पण्डित लोग भय को प्राप्तहुये महाप्रभुजीने विचार किया कि इसपण्डितको अपनी पण्डिताईका बड़ा गर्वहै सो गर्व दूरकरनाचाहिये इसहेतु भट्टजीके पासआये व मधुरवचनसे बोले कि आपकी विद्या और यश सारे संसारमें विख्यात है कुछ मुझको भी सुनाकर कृतार्थकरो भट्टजीने उत्तरदिया कि अबहीं लड़केहो और विद्याभी प्राप्त नहींहुई ऐसे वचन निर्भय बोलना ढिठाईहै परन्तु हम तुम्हारे मधुरवचनसे बहुतप्रसन्नहुये जो कुछ कहो सो सुनावैं महाप्रभुजीने कहा कि गंगाजीका स्वरूप वर्णनकरो भट्टजीने कईश्लोक अपने बनाये पढ़े महाप्रभुजीने तुरन्त उपस्थित करलिया वरु पढ़के

सुनायदिया और कहा कि अर्थ व गुण दोष जो उनमें हैं वर्णनकरो भट्ट जीने कहा कि मेरी काव्य में दोष कब होसक्ताहै महाप्रभुजीने कहा कि यह नहीं होसक्ता जो आज्ञाकरो तो मैं गुण दोष व अर्थ वर्णनकरूं सो कहना आरम्भकिया और ऐसे ऐसे अर्थकिये कि बनाने के समय भट्ट जीको भी न सूझेथे और जो जो दोष व गुणथे सोभी ऐसे विस्तारसे प्रगटकिये कि भट्टजीको उत्तर न आया महाप्रभुजी तो अपने स्थानको चलेआये और भट्टजीने लज्जितहोकर रातको सरस्वतीका ध्यानकिया सरस्वतीजी आईं भट्टजीने बिनयकिया कि सारे संसारसे विजय करा-कर एक लड़केसे हरायदिया हमसे ऐसा कौन अपराध हुआ था सर-स्वतीजीने उत्तरदिया कि महाप्रभुजी भगवत्अवतार और मेरे स्वामी हैं मेरी क्या सामर्थ्य है कि उनके सम्मुख बोलसकूं और तुम्हारे भाग्य धन्यहैं कि उनके दर्शनहुये यह कहकर सरस्वती तो अन्तर्द्धानहुईं और भट्टजी महाप्रभुजी की सेवामें आये हाथ जोड़कर विनय किया व प्रा-र्थना किया कि कुछ शिक्षाहोय महाप्रभुजी ने आज्ञा किया कि भगवत् भक्ति अंगीकार करो और आगेका किसी पण्डित के साथ वाद करना उचित नहीं भट्टजी ने मानलिया उस बचन को धारण किया और जो पण्डितलोग साथथे सबको विदा करके भगवद्भक्त होगये फिर कश्मीर अपने घरमेंगये और कुछ दिन वहांरहे मथुराजी के वृत्तान्त व समा-चार पहुँचे कि मुसलमानोंने विश्रान्तघाटपर ऐसा यन्त्र लगादियाहै कि जो कोई उसपर जाताहै आपसे आप उसकी सुन्नत होजाती है और मु-सलमान बलात्कार उसको अपने दीनमें मिलालेते हैं भट्टजी यह समा-चार सुनतेही कश्मीरसे चले और एकहज़ार अपने चेलों सहित मथु-राजी में पहुँचे पहिले विश्रान्तघाट पर गये दुष्टोंने जैसे और लोगोंसे दुष्टता करते थे उसी प्रकार भट्टजी से भी कहा कि नग्न होकर हमको दिखाओ भट्टजी ने उनको अच्छी प्रकार मारा और यन्त्र को तोड़कर यमुनाजी में डालदिया मुसलमान सब सूबाके पास फ़रयादीहुये सो सब दुष्टता उनकी सूबेकी हिमायतसे थी उसने अपनी फौज सहायके हेतु पठाई भट्टजी उसफ़ौजसे ऐसेलड़े कि बहुतेरोंको बधकिया और कित-नोंको यमुनामें डालदिया और कुछ भागगये इस युद्धका वृत्तान्त एक कविने विस्तारकरके लिखाहै उससे जाननेमें आया कि भट्टजी ने चक्र

सुदर्शनको आराधन करके ऐसी अग्नि बरसाई कि सब दुष्ट अशरण होगये और क़ाज़ी व सूबा आदि सब आयके चरणों में पड़े पीछे के यह चरित्र किया कि सब मुसलमानों के शरीरपर चिह्न हिन्दुओं के जनाई पड़नेलगे वह लोग यह प्रभाव देखकर अधिक आधीनहुये और सबने हाथबांधके सेवकाई करनी अङ्गीकारकरके रक्षाचाही त्राहित्राहि पुकारा भट्टजीने व्रजके सब हिन्दुओं का बटोर किया और बहुत जगह आपगये व सबको मुसलमानों से निर्भय करादिया और भगवद्भक्ति की प्रवृत्ति करी ॥

कथा बनवारीजी की ॥

बनवारीजी भगवद्भक्तिके रङ्गमें रङ्गीन और माधुर्य्य व शृंगाररसके रसिक और भजनकी मूर्तिहुये अच्छे वचन के बोलने व काव्यके समझने व व्यंग व व्याजोक्ति में बड़े बुद्धिमान व प्रवीण व सार व असार के बिचारमें परमहंसोंसे भी अधिकहुये सदाचारके करनेवालेव संतोषी व सबपर दया करनेवाले अनेकन विद्याकेज्ञाता पण्डित इसप्रकार भक्ति के साधनमें सावधानहुये उनके दर्शनोंही से लोग पवित्र होते थे और जो किसी से बातचीत हुई तो उसके पवित्र और भक्त होजाने में कुछ संदेहही न था व व्रजभूषण महाराज सुखधाम के चरित्र के आलापमें अत्यंत चतुरथे ॥

कथा यशवन्तजी की ॥

यशवन्त जातिके राजपूत राठौर भगवद्भक्तिमें समाधान और भक्ति के सब धर्म्मोंके आचरण करनेवाले हुये भगवद्भक्तोंसे ऐसी सच्चीप्रीति थी कि क्लेश निकट नहीं आताथा सब हाथबांधे उदारमनसे उनकी सेवा में एक पांवसे खड़े रहते थे और अनुक्षण यह चाहना करते थे कि किसी सेवा के निमित्त आज्ञाहो श्रीवृन्दावन में दृढ़वास करके श्रीराधावल्लभ लालके चरित्र और बिहारीलालमें मनको लगाकर दिन रात भगवत्के शृङ्गार और माधुर्य्यके चिन्तवनमें रहते थे सब धर्म्मोंकासार जो नवधा भक्ति है उसके धनी और सत्य के बोलनेवाले हुये और भगवत् प्रेममें ऐसे हुये कि विशेष करके बेसुधि व डूब जातेथे ॥

कथा कल्यानदास की ॥

भगवत्की भक्ति और भलाई और सब गुणोंकी सूक्ष्मसमझ संसार में कल्यानदासजी के बखरे में आई नवलकिशोर व्रजचन्द्र महाराजके प्रेममें मग्न रहते थे व जिसप्रकार नदीका प्रवाह दिन रात प्रवर्त्तमान

रहताहै इसीप्रकार अनन्य जो दृढ़ मनकी वृत्ति अनुक्षण माधुर्य्य व शृ-ङ्गारके चिन्तवनमें रहतीथी बाणी ऐसी मधुरथी कि सुननेवाले का मन वरवस मोहित होकर आधीन होजाय परोपकारी दयावन् व विवेकी हुये और नाभाजी ने जो यह वचन लिखाहै कि मन क्रम वचनसे रूपभक्तकी चरणरजके उपासक थे इसका अर्थ यह मालूम होताहै कि रूप जो भक्त हैं सनातनके भाई तिनकी चरणरज के उपासक अर्थात् उनके चेले थे अथवा रूपभक्त अर्थात् माधुर्य्य उपासक जो भक्त तिनके उपासक थे अथवा रूप अर्थात् माधुर्य्य और भगवद्भक्त दोनोंके उपासक थे॥

कथा कर्णहरिदेव विख्यात कन्हरदास की॥

कर्णहरिदेव विख्यात कन्हरदासजी रहनेवाले योड़ियां के भगवद्भक्त अपनी आत्मामें आनंद करनेवाले और भविष्यके जाननेवाले श्रीकृष्ण भक्तिके आरोपण करनेवाले ब्राह्मण कुलमें सूर्य्यके सदृश सहिष्णु व दृढ़ स्वभाव सब गुणोंकी खानिहुये भगवद्भक्तों को अपना सर्वस्व जानकर प्रेमसे सेवा भक्ति करते थे कपड़ा व जिन्स खाने पीने का जो कुछ जितना जिसको प्रयोजन होताथा निर्म्मलमन व बिश्वाससे देते थे सोभूरामजीसे उनको अनुभवहुआ शृङ्गार और माधुर्य्य के स्वरूप थे व सब जीवोंपर कृपादृष्टि बराबर रखते थे॥

कथा लोकनाथकी॥

लोकनाथजीको भगवत्में प्रेम व स्नेह इतना था कि जितना पार्षदोंको है श्रीकृष्ण चैतन्य महाप्रभुजीके चेलेथे और प्रियाप्रीतमके चिन्तवन और चरित्रों में अनुक्षण ऐसे मग्न रहतेथे कि जो एक क्षणभी भगवत्स्वरूप का चिन्तवन न करते तो विकल होजाते श्रीमद्भागवत् का गान और कीर्त्तन प्राणसे अधिक प्याराथा व जो कोई भागवतके रास चरित्रका भजन और कीर्त्तन करता तो उसको अपना मित्र जानतेथे और उसहीको नातेदार समझते एकबेर राहमें चलेजातेथे एक मनुष्यको देखा कि भगवत्चरित्रों का कीर्त्तन करता है उसको रसिक और प्रेमी जानकर वेसुधि होकर उसके चरणों में पड़े और इस चरित्र से दूसरे मनुष्योंको शिक्षा भगवत् के प्रेम और भक्तिकी करी॥

कथा मानदासकी॥

मानदासजी परमभक्त परोपकारी दयावान् सुशीलहुये श्रीरघुनंदन

स्वामी के चरण कमलों में प्रेम और भक्ति अनन्य थी जानकीजीवन महाराजके जो चरित्र रामायण व हनुमन्नाटक और दूसरे गोप्य करके लिखेहैं उनको मानदासजी ने भाषामें इससुघड़ाई व कविताईसे वर्णन किया कि सबको प्रिय और दोनोंलोक में लाभ देनेवाले हैं यद्यपि नवरस कि जिनका वृत्तांत ग्रन्थके आरम्भमें लिखागया अपने ग्रन्थमें विस्तार से वर्णन किया परन्तु भगवत्का शृंगार और माधुर्य्य रस ऐसालिखा कि जिसके पढ़नेसुनने से निश्चयकरके मन भगवत्स्वरूपमें लगजाताहै और जो रीति शृंगारकी श्रीकृष्णचरित्र में उपासकोंनेवर्णन की है उसीप्रकार रामचरित्रमें मानदासजी ने वर्णन किया॥

॥ कथा कृष्णदासकी ॥

कृष्णदासजी परमभक्त और पण्डितहुये श्रीगोविन्दचन्द्र महाराज के रूप माधुरी और शृंगार में मग्न होकर उनके रसमें रात दिन मत्त रहतेथे भगवत्सेवा ऐसी प्रीतिसे करते कि सेवाके स्वरूप होजाते भगवद्भक्तों को भांति भांतिके भोजन और प्रसाददिया करते और जो कोई साधु उनकी सम्प्रदायका होता तो उसके साथ बड़ी प्रीतिसे मिला करते भगवच्चरित्रों के कीर्त्तन और स्वरूप के चिन्तवन और अनुभव में ऐसे आनन्द और बेसुधि रहाकरते थे कि वर्णन उसकानहीं होसक्ता॥

निष्ठा चौबीसवीं ॥

प्रेमके वर्णनमें व जिसमें सोलहभक्तों की कथा वर्णनहै ॥

श्रीकृष्ण स्वामीके चरणकमलों की साधुहद रेखाको दण्डवत् करके रामावतारको दण्डवत् करताहूं कि जगत् के उद्धारके हेतु अयोध्यापुरी में धारण करके रावण इत्यादि रक्षसोंको वधकिया और धर्म्मकी मर्य्यादको दृढ़ आरोपण करके पवित्रचरित्र जगत् में फैलाये यह प्रेमनिष्ठा भगवत् रूप है और जितनी निष्ठा इसके पूर्व्व वर्णन होचुकीं उन सब का सार व परिणाम यह निष्ठाहै इसके आगे कोई और पदवी नहीं कि उसको साधन करनापड़े जीवन्मुक्त जो विख्यात हैं सो इसी प्रेमके दृढ़ होनेको कहते हैं और कोई कोई जो कैवल्य मुक्ति कहते हैं वह भी इसी प्रेम और उसके दृढ़ होनेको कहते हैं अब कुछ अर्थ व विवरण उस प्रेम का लिखाजाताहै शाण्डिल्य ऋषीश्वरने पहिले भूमिका में अपने सूत्रों के यह सूत्र लिखाहै ॥

अथातो भक्तिजिज्ञासा ॥

अर्थ सूक्ष्म करके इससूत्रके तिलककार के तिलक अनुसार यह है कि भगवद्भक्ति चारों पदार्थ अर्थात् अर्थ धर्म्म काम मोक्षकी देनेवाली है इसहेतु उस भक्तिको जानना चाहिये सूत्र दूसरा ॥

सापरानुरक्तिरीश्वरे ॥

अर्थ इसका यहहै कि परम अनुरक्त ईश्वरमें होना उसका नाम भक्ति है और अनुरक्त अथवा रागके प्रीतिके प्रेमके इश्क अथवा रति अथवा मोह धृति अथवा उलफ़त अथवा स्नेह सवके एकही अर्थ हैं और जब कि भक्तिको अनुरक्ति लिखा तो भक्तिका अर्थभी दृढ़प्रीति निश्चय भूत होगया और इसप्रकारसे प्रेम और भक्ति एकही वातहुई सो नारद पंच-रात्रिमें लिखाहै कि अनन्य ममता भगवत्में है उसको प्रेम कहते हैं और उसीका नाम भक्तिहै अब दोशङ्का उत्पन्नहुईं एक यह कि जो प्रेम व भक्ति एकवातहै तो भक्तिका वृत्तान्त ग्रन्थके आरम्भमें लिखागया यहां अब फिर किसहेतु वर्णन होताहै दूसरा यह कि जो सब निष्ठाओंका परिणाम पदवी प्रेमनिष्ठा है तो जो दूसरीनिष्ठा और उनकी श्लाघा पहिले लिख आये सो किसहेतु लिखे केवल यह प्रेमनिष्ठाही वहुतथी सो पहिलीशङ्का का उत्तर यहहै कि ग्रन्थारम्भमें जो दशा भक्तिकी लिखीगई वह महिमा भक्तिकी और स्वरूप उसका और भक्तिका प्रकार लिखागया और इस निष्ठामें वह वृत्तान्त लिखाजाताहै कि उस भक्तिके प्राप्तहोने पीछे जो दशा उस भक्तिकी होती है दूसरी शङ्का का उत्तर यहहै कि जो महिमा वड़ाई दूसरी निष्ठाओं की लिखी गई सो सब सत्य व योग्य है परन्तु यह प्रेमनिष्ठा जो विचारीगई तो यह सब निष्ठाओं की परिणामदशाहै जो वह सब निष्ठा विचारी न जाती तो इस परिणाम दशाकी निष्ठाके लिखने का संयोग काहेको पहुँचता सिवाय इसके यद्यपि निष्ठा वहुतहै परंतु परिणाम दशा सबकी एकही भांतिहै जैसे दाननिष्ठावाला अपनी उपासना पर दृढ़होकर उस पदवी को पहुँचगया है कि कवहीं गावता है कवहीं नाचताहै कवहीं हँसताहै कवही रोताहै और कुछसुधि अपने व विराने की नहीं रखता जब सखा अथवा वात्सल्य व श्रवण व पूजा इत्यादि निष्ठावाला परिणाम पदवी को पहुँचैगा तो उसकी भी ऐसीही दशाहोगी इसहेतु सब निष्ठाओंकी परिणामदशा एकहुई और उस परि-

णाम दशाका वर्णन जो सब निष्ठाओं में लिखाजाता तो ग्रन्थके बहुत विस्तार होनेकी बात अलगरहै एकप्रकार की दशा वृत्तान्त सब ओं में लिखना पड़ता इस हेतु यह प्रेमनिष्ठा लिखीगई सिवाय इसके सब वस्तुका प्रारम्भ व परिणाम नियतहै जो प्रेमनिष्ठा न लिखीजाती तो अन्तकी पदवी जानी नहींजाती और जानेरहो कि मुक्ति इसनिष्ठा व सब वस्तुओंका फलहै व सब निष्ठाओंकी अन्तिम पदवी प्रेमहै और यह भी जाने रहो कि यद्यपि पराभक्ति और प्रेम एकही बातहै परन्तु सब शास्त्रों में उसदिशा नियतको भी प्रेमहीनाम धरके लिखाहै कि जो प्रेमकी विकलता भक्तपर बीतती है प्रेम दोप्रकारसे उत्पन्न होताहै एक ईश्वरकी कृपासे कि भगवत् ने एकादशमें कहाहै कि हे ऊधव गोपी न गुरूसे पढ़ीं न तपकिया न यज्ञइत्यादि कुछ किया केवल मेरीही कृपासे मुझको पहुँचगई अथवा मीराबाई व करमैतीकी भांति कि आपसे आप प्रेम भगवत् कृपासे हुआ दूसरा भावसे होताहै अर्थात् भगवत् का सच्चिदानन्द स्वरूप उसके गुणसुनकर प्रेम उत्पन्नहो और उसप्रेमसे द्रवीभूतहोकर तदाकार व बेसुधि होजाय जैसे विष्णुपुराण का बचनहै कि भगवत् अन्तर्यामीके गुण सुनने से चित्तकीवृत्ति भगवत्की ओर लगानेके योग्यहै और वह ऐसीहो कि जिसप्रकार गङ्गाका प्रवाह दिनरात प्रवर्त्तमान रहताहै वह भाव दोप्रकारकाहै एक तो भगवद्भक्तों के प्रताप से होताहै जिसका नारदजीने प्रह्लाद व दक्षप्रजापत्ति के पुत्रोंको व दत्तात्रेय ने राजा सुबाहुको व भरतने रघुगुण को उपदेश किया व तुरन्त भगवत् स्वरूप साक्षात्कार होगया और अब भी विख्यातहै कि कोई ऐसा सिद्ध भगवद्दास किसीको मिलगया कि एकघड़ी में भगवत्पदको दरशायदिया दूसरा साधनसे प्रकटहोताहै जैसे नारदजी ने भगवच्चरित्रों को सुना उसपर आचरण व साधन किया भगवद्भक्त और प्रेमी होगये इस भावके चार भेद तन्त्रशास्त्र में लिखे हैं एक वह जो सदा चित्तकी वृत्ति भगवत् में लगीरहै उसमें भी दो भेदहैं एकवह कि जिसको कबहीं संसार के विषय स्वादकी चाहना नहींहोती जैसे प्रह्लाद व सनकादिक इत्यादि दूसरे वह कि जिनको संसार के सुखों की चाह होजाती है जैसे अर्जुन इत्यादि तीसरे वह कि प्रेमकेसमय समाधिकी दशाहोती है जैसे शुकदेव इत्यादि चौथे वह कि बड़ी खैंचसे मनको लगाते हैं तब प्रेमकी

दशा उत्पन्न होती है जैसे अक्रूरआदि पांचवें वह कि मनमें शोच व पश्चात्तापकरते हैं कि हमारामन गोपिकाओं की भांति भगवत्के प्रेमसे पूर्णहुआ जैसे उद्धव व युधिष्ठिर इत्यादि अब प्रेमकी दशाके प्रकारोंके लिखने के पहिले इसबातका निर्णय करना हुआ कि प्रेमकी दो दशाहैं एक संयोग दूसरी वियोग सो भगवत्प्रेम में भी वियोगकी दशाहोती है कि नहीं व जो होती है तो उसकाक्या वृत्तांतहै सो जानेरहो कि निश्चय वियोगकी दशाहोती है परन्तु विषयीलोगों के मनमुखी प्रेमकी भांति व संसारी विषय भोगके सम्बन्धियोंके सदृश दुःखकी देनेवाली नहींहोती वरु भगवत्के प्रेम और चिन्तवनकी बढ़ानेवाली होती है जिसप्रकार गोपिकाओं को ब्रजचन्द्र महाराजके मथुरागमन के समय बिरहहुआ परन्तु वह ऐसे प्रेमका भभकानेवाला हुआ कि बेसुधिहोकर भगवत् के नित्य बिहारमें जामिली इसमें जो यह कोई कहै कि यह वृत्तान्त तो उन भक्तोंके बिरहका है कि साक्षात् रामकृष्णके रहनेके समय जिनको बिरह हुआ परन्तु जिनलोगोंको कि ध्यानसे और रूप व गुणके श्रवणसे भगवत्काप्रेम उत्पन्नहुआ अथवा होताहै उनको भी बिरह होताहै कि नहीं सो जानेरहो उनकोभी बिरहहोताहै और उसके कई स्वरूप हैं एक यह कि भगवत्के ध्यान व चिंतवनकेसमय किसीसमय गोपिकाओं अथवा दशरथ महाराज व कौशल्या महारानी अथवा नन्दजी व यशोदा महारानी अथवा दूसरे भक्तोंके वियोगकी चिन्तवन आयगई कै उनके बियोगकी कथासुनी तो जो दशा उनपर वियोगके समय बीतीथी वही इस भक्त पर बीतती है तनक भेद नहीं रहता सो कथा में किसी वियोग के चरित्रके सुननेके समय विशेषकरके परीक्षा सबको होती है व जिससमय ध्यानकी पक्वता होने लगती है उससमय अति चिन्तवन व प्रेमकी भभकसे ध्येयरूपकी शोभाका जो बिरह होता है सो दशाभी ज्यों की त्यों प्रियवल्लभके वियोग की दशा की भांति होती है और जब भगवत् का ध्यान व चिन्तवन अनुक्षण रहनेलगा तो भगवत्के साक्षात् दर्शन होते हैं अथवा ध्यान का रूप व शोभा साक्षात् रूपके सदृश इस भक्तको होजाताहै तब सब समय व प्रतिदिन दशा संयोग व वियोगकी बीता करती हैं अर्थात् प्रारंभदशासे अंतिम दशातक संयोग व वियोग दोनों होते हैं अब यह लिखना उचितहुआ कि कोई कोई लोगों ने वियोगकी

पदवी संयोगकी पदवी से श्रेष्ठलिखी और वास्तवकरके जो कुछ स्वाद
वियोग में है सो संयोगमें इतना नहीं इनदोनों में बड़ाई जिसको है
जानेरहो कि जो वाद विवादसे लिखीजाय और बड़ाईका निश्चय एक
का दूसरेपर कराजावै तो सैकड़ों पोथियों में लिखनेसे समवाई न होसके
क्योंकि अन्तको झगड़ा व वाद विवाद वेद श्रुति और न्याय व पात
ञ्जल व कर्म्मशास्त्र व वेदान्ततक पहुँचजाती हैं और सिद्धान्त; नहीं
होता सो इसहेतु उस विस्तारसे बचायके जो सारांश सब बातोंका पाया
गया वह लिखाजाता है कि प्रेममें वियोग और संयोग दोनों अन्योन्य
सम्बन्ध रखते हैं क्योंकि जो सदा वियोग बनारहै और आशा संयोग
ध्यान में संयोगकी अथवा प्रकट संयोगकी न होवे तो प्रेम कबहीं न उ-
त्पन्नहोय और इसीप्रकार सदा संयोगही की दशा बनीरहै और वियोग
अथवा वियोगका भय व शोच न होय तब भी प्रेम कदापि न होय सो
प्रेमनाम उसी का है कि वियोगके पीछे संयोग और संयोगके पीछे बि-
योगहोताहै इसहेतु संयोग और वियोग दोनोंका सम्बन्धहै परन्तु बि-
योग में स्वाद विशेषतर है और प्रेमकी पक्कता वियोगसे होती है और
मुख्य अभिप्राय जो नित्य संयोग अर्थात् मुक्तिहै सोभी वियोगके भाव
से शीघ्र प्राप्तहोती है इसहेतु कोई कोई लोगोंने वियोगकी बड़ाई लिखी
है और जो मुख्य अभिप्रायपर दृष्टि करिजाय तो सब शास्त्र और सब
साधन और भक्ति ज्ञान वैराग्य इत्यादि केवल संयोगके निमित्त हैं अब
प्रेमकी दशा व प्रकाश लिखाजाताहै सबदशाका जो दृष्टान्त व उपमा
लिखीजायँगी तो उनके पढ़नेसे यह नहो कि वे दशा अगिले समय में
बीतती होंगी बरु वे सब दशा सब भक्तोंपर सदा अब बीतती हैं और
भक्तको जिससमय जैसी चिन्तवन होती है वैसेही समाजका तदाकार
व तद्रूप होजाताहै वे दशा बारहहैं और कोई कोई ने उसमेंसे सूक्ष्मता
निकालकर तीनदशा और अधिक कीं कि सब पन्द्रह होगईं सो सबका
उदाहरण कियाजाता है पहिली दशाका नाम उस जब महबूब अर्थात्
प्रियवल्लभ की सुन्दरता और गुणोंको सुना और अत्यन्तचाह उसके
मिलनेकी हुई और फिर वह किसी भांति दिखाई पड़ा तो सिवाय उस
प्यारेके और किसी प्यारीवस्तु की और किसीकी देखीसुनी सुन्दरताई
की आंखों में न समानी और यह आशा और चाह होनी कि यह प्यारा

मेरी आंखों से क्षणभरभी अलग न हो उससमय में जो दशा सच्चे आ-
शिक अर्थात् भक्तपर बीतती है उसका नाम उत्त है जैसे कि जानकी
महारानी की जब रघुनन्दन स्वामी जनकपुरमें पहुँचे अथवा रुक्मिणी
जीकी भांति अथवा गोपिकाओंकी सदृश कै अक्रूरजी के सुतीक्ष्णकी ॥

दूसरीयत ॥

कोई मिसकरके दूतसे अपने प्यारेके समाचार पूछने और उसपूछनेके समय बिकल व बिरही आशिकपर जो दशा बीतती है अथवा महबूबप्यारेका वृत्तान्त सुनकर जो दशा और हर्षहोताहै अथवा प्यारा आया है और जान पहिंचान नहीं है इसकारण से मिलना व बोलना बतरावना नहीं हुआ और उसीकी चर्चाहोना कि यह कौनहै और कहां से आयाहै उससमय जो दशा होती है अथवा महबूबकी ओरसे कोई संदेशा लेकर आया है उसके साथ बातचीत करने के समय जो गति होती है इन सब दशाओंमेंसे कोई एक दशाहो उसका नाम यतहै और मालूमरहै कि इसके दशप्रकार हैं जल्प व प्रजल्प इत्यादि और सबमें नई नई बातें हैं ग्रन्थके बिस्तार के भयसे नहीं लिखीं दृष्टान्त इस यत दशाका यह है कि जिससमय उद्धवजी श्रीव्रजकिशोर महाराजका सन्देशा लेकर व्रजमें आये उससमय जो बोलना बतराना हुआ अथवा भँवरके मिसकरके गोपियों ने व्रजचन्द्र महाराजकी निठुरता व कृतघ्नता इत्यादिको बर्णन किया कि भँवरगीतमें बिस्तार सहित लिखाहै अथवा जिससमय रघुनंदनमहाराज जनकपुरमें पहुँचे वहां स्त्रियां देखकर आपुसमें कहती सुनतीभई ॥ तीसरी ललित ॥

ललितका स्वरूप यहहै कि महबूब अर्थात् प्यारे के देखनेकी उमंग व उसके तरंगसे गुरुजन लोगों की शिक्षा व ताड़न व तर्ज्जनको मन में न ले आना व बारबार देखनेके निमित्त चाह होनी और लज्जाको छोड़कर देखने के हेतु पीछे होलेना और जब नयनन भरि देख लिया तब गुरुजनों से व अपने साथ स्नेह करनेवालों से लज्जाहोनी जिस प्रकार गोपिका कि जब व्रजमोहन महाराज वनसे आतेथे तो व्रजगोपिका लज्जासंकोच को छोड़कर बिनाभय सास ससुर इत्यादिके देखनेको जाती थीं और स्वयम्बर के समय धनुष तोड़ने के पहिले से जो दशा जानकी महारानी पर बीती ॥

॥ चौथी दलित ॥

दलितका रूप यह है कि महबूब प्यारा किसी कारण से आंखों के साम्हने नहीं उसके वियोग में रंगका बदलजाना अर्थात् बे वर्ण होना और नींद न पड़नी व आहार घटिजाना व दुर्बलता व विकलता हो-जानी और किसी वस्तुका न सुहाना और रोते २ बेसुधि होजाना और महबूब प्यारेका मनमें ध्यानकरके तन्मय होजाना और उससमय मन नवनीत के सदृश कोमलहोकर जो कुछ दशा बीतती है उसको दलित कहते हैं जिसप्रकार गोपिकाओं से रासके आरम्भमें व्रजकिशोर महा-राज अन्तर्द्धान होगये और उससमय भांति २ का विलाप गोपिकाओं ने किया और जब ढूंढ़कर हारिगई मनमोहन न मिले तो चरित्रों का गानकरके तन्मयहोगई के श्रीजानकी महारानी के लंका में जाने व अ-शोक बाटिकामें रहनेकेसमय जो दशा बीती ॥

॥ पांचवीं मिलित ॥

मिलितका स्वरूप यहहै कि बहुत कालसे जो महबूब प्रियवल्लभसे वियोगथा और विश्लेषताकी व्यथाके कष्टसे मन विकल व बेचैन होकर भांति २ के मनोरथ व चाहकिया करताथा वह प्यारा प्राणवल्लभ बहुत कालपीछे मिला उस समय जो मनकी दशा होती है उसका नाम मि-लितहै जिसप्रकार श्रीव्रजचन्द्र नटनागर महाराज रासलीलामें अंत-र्द्धान होगये थे और फिर अचानक गोपिकाओं से आनिमिले के रघु-नन्दन महाराज लङ्का जीतकर अयोध्या में आये और भरत इत्यादि वियोगियों को नवीन जीवन हुआ ॥

॥ छठवीं कलित ॥

कलितका रूप यहहै कि जिस समय मनसंयोगके आनन्दसे द्रवी-भूत होकर प्यारे महबूबके प्रेममें डूबजाताहै उस दशाको कलित कहते हैं वह दो प्रकारकी है एक यह कि प्रियवल्लभसे साक्षात् अर्थात् प्रकट मिलकर उसके देखने अथवा वार्त्तालाप व लाड़ व प्यार व भाव अथवा श्लेषनसे जो आनन्दहोय दूसरा यह कि ध्यान व चिन्तवनमें मिलकर जो चाहना थी सो उस चिन्तवन में ज्यों की त्यों प्राप्तहोय और उससे आनन्द होय वह दोनों प्रकारका सम्भोग परमआनन्द का देनेवालाहै जिसप्रकार किसी गोपीको श्रीव्रजचन्द्र महाराजने वनमें अकेली पाकर

अपने प्रेम व कटाक्ष भरे वचन और परस्पर प्यार व दुलार से व जो वस्तुका लेना देना दुर्लभ होवे ऐसी परस्पर आपुस के मांगने से और हँसी व छेड़छाड़ और खींचाखींची इत्यादि से परम आनन्द के अन्तको पहुँचाया और उस रसमें बेसुधिकिया अथवा रासलीलाके समय ऐसा वृत्तांत विस्तार से पञ्चाध्यायी में लिखा है ॥

॥ सातवाँ छिलित ॥

छिलित यह कि प्यारे प्राणवल्लभ पर परम अत्यंत स्नेहके कारण से क्रोध आजाना और प्यारे के दोष वर्णन करना और बहुत प्रेम के क्रोधसे ओठोंका फड़कना व शरीर कांपना और दूसरी दशा सब क्रोध को तिससे अपने प्यारे महबूब का तदाकार होजाना उस को छिलित कहते हैं जिस भांति गोपिका भँवरगीत में अति क्रोधसे कहती हैं कि हे भँवर तू उसी कृष्णकी श्लाघा करताहै कि जिसने रामअवतारमें बाली को व्याधाकी भांति होकर मारा कि जिसका मांस व चर्म कुछ प्रयोजन का न था और प्रेमसे जो रावण की बहिन आई उसके रूपको बिगाड़ करके न आप रक्खा व न और के योग्य रहनेदिया वामन अवतार में राजाबलिके यज्ञको नष्टकरदिया अथवा जिसप्रकार लक्ष्मणजी को बन-वास होने के समय रघुनन्दनस्वामी पर क्रोधआया और कहा कि आप क्या ब्राह्मणों कीसी बात कहते हैं कि बन में जाकर ऋषीश्वरोंके दर्शन और तप करेंगे मैं आपका किंकरहूं आज्ञा होवे कि शत्रुनको यमलोक में पठाय देवैं और इसीप्रकार चित्रकूटपर जब भरतजी गये तब क्रोध आया ॥

॥ आठवाँ चलित ॥

चलित यह कि देह त्यागके समय अपने प्रिय वल्लभका चिंतवन करके प्रेमके कष्टकी दशा में यह मांगना कि दूसरे जन्म में भी मुझको उसका प्रेमहोवे और वहीमिलै इसका नाम चलित है जिसप्रकार सती जीने दक्ष प्रजापतिके यज्ञमें देह त्यागके समय चाहना किया व मांगा अथवा बाली कै राजा दशरथ अथवा सरभंग इत्यादि ने ॥

॥ नवाँ क्रांत ॥

क्रांत यह कि प्यारे महबूबके चिन्तवन से जो स्वरूप मनमें प्रकट हुआ मनके चाहके अनुकूल शृंगार इत्यादिकरना और हँसना खेलना बोलना बैठना और अपने मनकी चाह व कामना पूरीकरनी और सि-

वाय अपने प्यारेके और किसीका वृत्तांत सुनना न और को देखना न और किसीसे बोलना ऐसी जो दशाहै उसको क्रांत कहते हैं ॥ ५
कोई गोपी भगवत्के चिन्तवनसे बाहिरकी सबबात भूलगई और चिन्तवनमें जो परमआनन्द प्राप्तहुआ उसमें योगीजनों की भांति ज्योंकी त्यों रहिगई और वियोगका जो दुःख था तनक न रहा और बावरीसी कभी आंखें खोलती है और कभी बन्दकरलेती है जानेरहो कि विरही आशिक अर्थात् रूपासक्तको जो माशूक अर्थात् प्राणवल्लभके चिन्तवनका सुख न होवे तो शोकके कष्ट से जीता न रहै और जो अनुक्षण चिन्तवन में मग्नरहै तबभी थोड़ेही दिन जिये ॥

विक्रांत ॥

विक्रांत एक अंग नवीं दशाकाहै इसहेतु गणनामें लिखा नहीं गया जिस समय आशिक अर्थात् रूपासक्त भक्त भगवत्के प्रेमके प्राप्तहोने से अपनी भाग्यकी बड़ाई करताहै अथवा अपने इष्टदेव अर्थात् भगवत् की बड़ाई और उसके मिलने का आनन्द और उस आनन्द की बड़ाई और उसके मिलने की दुस्तरता बर्णन करता है अथवा अपने इष्टदेव से जो औरों की प्रीतिहै उनकी श्लाघा और गुणोंको कहता सुनताहै अथवा अपने प्यारेके न मिलने व देखने का शोच करता है इन दशाओंमें से एक दशा प्रकटहो अथवा कई उसका नाम विक्रांत है जिस प्रकार भरद्वाज और अत्रि और वाल्मीकि इत्यादि ऋषीश्वरोंने श्रीरघुनन्दन स्वामी के देखने के समय अपने भाग्यको सराहा अथवा ब्रह्मा व शिव और दूसरे ऋषीश्वरों ने भगवत् की महिमा वर्णन करी अथवा ब्रह्माजी ने ब्रह्मस्तुति में बड़ाई ब्रज और गोपिकाओं की और दुर्लभता मिलने भगवत्के प्रेमकी वर्णनकरी कि वे आंखें गोपिकाओं की धन्यहैं जो नन्दनन्दन शोभाधामको देखती हैं ॥

संक्रांत ॥

संक्रांत अंग क्रांत व विक्रांतका है वर्णन करने का प्रयोजन नहीं ॥

दशवीं विहत ॥

विहत दशाका रूप एक श्लोक के दृष्टान्त के अनुसारहै कोई गोपी कहती है कि देखो पहिले जन्ममें हमको श्रीकृष्ण महाराज का प्रेम न हुआ इसकारण यह देहपाई और संसारके दुःख देखनेपड़े और कैवल्य

मुक्तिमें जो श्रीकृष्ण के प्रेमकी अधिकाई नहीं तो वह मुक्तिनहीं मानों मृत्युहै अभिप्राय यहहै कि जो मृत्युके समय भगवत्का प्रेमहोजाय तो मृत्यु हज़ार जीवनके सदृशहै और जिस मुक्तिमें भगवत्का प्रेमनहीं सो मुक्ति हज़ार मृत्युसे निकृष्टतरहै कोई गोपीने श्रीकृष्ण महाराजसे मान करके मनावने परभी मान न छोड़ा जब श्रीकृष्ण महाराज चलेगये तब शोचकरके बियोगकी दशासे विकलहुई और अपने शरीर और मानको धिक्कार करके शोककी पीड़ा व बिरहसे चिन्तवनमें वेसुधि होगई॥

संहत॥

संहत एकअङ्ग बिहतका है उदाहरण का प्रयोजन नही है॥

ग्यारहवींगलित॥

यह कि प्यारेमहबूब अर्थात् प्राणबल्लभकी सुन्दरता इत्यादिकी चिंतवन करके अथवा उसकी सुन्दरता देखकर गलाई चांदी सोने के सदृश मनका द्रवीभूत होजाना उसको गलित कहते हैं जिसप्रकार कोई गोपिका किसी सखीको देखकर कहती है कि देखो इसी गोपिकाने एकबेर श्रीब्रजकिशोर महाराज की शोभा व सुन्दरता और बोलन चलन व भाव इत्यादि किसी से सुनाहै इस हेतु से इसकी यह दशा है कि योगियों की भांति मौनहोगई है न हिलतीहै न डोलतीहै कबहीं रोती है कबहीं रोमाञ्चित होतीहै कबहीं बकतीहै और कबही नाचती है और कबहीं गाती है और कहतीहै कि कब मैं उसप्यारेको देखूंगी जब कि नन्दनन्दन की सुन्दरताके सुननेसे यह दशाहै तो न जाने मनमोहनके देख लेने पीछे कैसी दशाहोगी॥

बारहवीं संतप्त॥

संतप्त यह कि सच्चिदानन्दघन पूर्णब्रह्म परमात्मा छविसमुद्र शोभाधाममें ऐसा जिसका मनलगा है कि जहां तहां उसको देखती हैं और उसरूप अनूपमें ऐसी बेसुधि व मग्नहैं कि तनकभी दूसरीओर मनकी वृत्ति नहींजाती है दर व दीवारमें वहीप्यारा दिखाई पड़ताहै कि जिसके निमित्त अनेक जन्ममें अनेक प्रकारके योग और अभ्यास और शुभ कर्म्म किये थे इसदशाका नाम संतप्तहै और सब उपासना व निष्ठाओं का सार व मानों वही दशाहै इसीकी बड़ाई में भगवद्गीतामें यह लिखाहै कि जो बासुदेव रूप सब जगह देखताहै सो महात्माहै सो दुर्लभहै इसी अवस्था व दशाके वर्णनमें सब वर्णन भगवद्गीता व भागवतमें लिखाहै

वाय अपने प्यारेके और किसीका वृत्तांत सुनना न और को देखना न और किसीसे बोलना ऐसी जो दशाहै उसको क्रांत कहते हैं :
कोई गोपी भगवत्के चिन्तवनसे बाहिरकी सबबात भूलगई और चिन्तवनमें जो परमआनन्द प्राप्तहुआ उसमें योगीजनों की भांति ज्योंकी त्यों रहिगई और वियोगका जो दुःख था तनक न रहा और बावरीसी कभी आंखें खोलती है और कभी बन्दकरलेती है जानेरहो कि विरही आशिक अर्थात् रूपासक्तको जो माशूक अर्थात् प्राणवल्लभके चिन्तवनका सुख न होवे तो शोकके कष्ट से जीता न रहे और जो अनुक्षण चिन्तवन में मग्नरहै तबभी थोड़ेही दिन जिये ॥

विक्रांत ॥

विक्रांत एक अंग नवीं दशाकाहै इसहेतु गणनामें लिखा नहीं गया जिस समय आशिक अर्थात् रूपासक्त भक्त भगवत्के प्रेमके प्राप्तहोने से अपनी भाग्यकी बड़ाई करताहै अथवा अपने इष्टदेव अर्थात् भगवत् की बड़ाई और उसके मिलने का आनन्द और उस आनन्द की बड़ाई और उसके मिलने की दुस्तरता वर्णन करता है अथवा अपने इष्टदेव से जो औरों की प्रीतिहै उनकी श्लाघा और गुणोंको कहता सुनताहै अथवा अपने प्यारेके न मिलने व देखने का शोच करता है इन दशाओंमें से एक दशा प्रकटहो अथवा कई उसका नाम विक्रांत है जिस प्रकार भरद्वाज और अत्रि और बाल्मीकि इत्यादि ऋषीश्वरोंने श्रीरघुनन्दन स्वामी के देखने के समय अपने भाग्यको सराहा अथवा ब्रह्मा व शिव और दूसरे ऋषीश्वरों ने भगवत् की महिमा वर्णन करी अथवा ब्रह्माजी ने ब्रह्मस्तुति में बड़ाई ब्रज और गोपिकाओं की और दुर्लभता मिलने भगवत्के प्रेमकी वर्णनकरी कि वे आंखें गोपिकाओं की धन्यहैं जो नन्दनन्दन शोभाधामको देखती हैं ॥

संक्रांत ॥

संक्रांत अंग क्रांत व विक्रांतका है वर्णन करने का प्रयोजन नहीं ॥

दशवीं विहृत ॥

विहृत दशाका रूप एक श्लोक के दृष्टान्त के अनुसारहै कोई गोपी कहती है कि देखो पहिले जन्ममें हमको श्रीकृष्ण महाराज का प्रेम न हुआ इसकारण यह देहपाई और संसारके दुःख देखनेपड़े और कैवल्य

मुक्तिमें जो श्रीकृष्ण के प्रेमकी अधिकाई नहीं तो वह मुक्तिनहीं मानों मृत्युहै अभिप्राय यहहै कि जो मृत्युके समय भगवत्का प्रेमहोजाय तो मृत्यु हज़ार जीवनके सदृशहै और जिस मुक्तिमें भगवत्का प्रेमनहीं सो मुक्ति हज़ार मृत्युसे निकृष्टतरहै कोई गोपीने श्रीकृष्ण महाराजसे मान करके मनावने परभी मान न छोड़ा जब श्रीकृष्ण महाराज चलेगये तब शोचकरके बियोगकी दशासे विकलहुई और अपने शरीर और मानको धिकार करके शोककी पीड़ा व बिरहसे चिन्तवनमें बेसुधि होगई ॥

संहत ॥

संहत एकअङ्ग विहतका है उदाहरण का प्रयोजन नहीं है ॥

ग्यारहवींगलित ॥

यह कि प्यारेमहबूब अर्थात् प्राणवल्लभकी सुन्दरता इत्यादिकी चिंतवन करके अथवा उसकी सुन्दरता देखकर गलाई चांदी सोने के सदृश मनका द्रवीभूत होजाना उसको गलित कहते हैं जिसप्रकार कोई गोपिका किसी सखीको देखकर कहती है कि देखो इसी गोपिकाने एकबेर श्रीब्रजकिशोर महाराज की शोभा व सुन्दरता और बोलन चलन व भाव इत्यादि किसी से सुनाहै इस हेतु से इसकी यह दशा है कि योगियों की भांति मौनहोगई है न हिलतीहै न डोलतीहै कबहीं रोती है कबहीं रोमाञ्चित होतीहै कबहीं बकतीहै और कबहीं नाचती है और कबहीं गाती है और कहतीहै कि कब मैं उसप्यारेको देखूंगी जब कि नन्दनन्दन की सुन्दरताके सुननेसे यह दशाहै तो न जाने मनमोहनके देख लेने पीछे कैसी दशाहोगी ॥

बारहवीं संतृप्त ॥

संतृप्त यह कि सच्चिदानन्दघन पूर्णब्रह्म परमात्मा छविसमुद्र शोभाधाममें ऐसा जिसका मनलगा है कि जहां तहां उसको देखती हैं और उसरूप अनूपमें ऐसी बेसुधि व मग्नहैं कि तनकभी दूसरीओर मनकी वृत्ति नहींजाती है दर व दीवारमें वहीप्यारा दिखाई पड़ताहै कि जिसके निमित्त अनेक जन्ममें अनेक प्रकारके योग और अभ्यास और शुभ कर्म्म किये थे इसदशाका नाम संतृप्तहै और सब उपासना व निष्ठाओंका सार व मानों वही दशाहै इसीकी बड़ाई में भगवद्गीतामें यह लिखाहै कि जो बासुदेव रूप सब जगह देखताहै सो महात्माहै सो दुर्लभहै इसी अवस्था व दशाके वर्णनमें सब वर्णन भगवद्गीता व भागवतमें लिखाहै

में होगा सो उसी रानीकी बात लिखीजाती हैं कि जब यहरानी ब्याही आई और राजासे उपदेश अलग सेवापूजा करनेका पाया तो अत्यन्त प्रेम व विश्वास से भगवत्मूर्त्ति विराजमान करके सेवापूजा करनेलगी और इतना प्रेम भगवत् में हुआ कि किसीसमय सिवाय भगवद्भजन और आराधन के किसीकाम में मन नहीं लगाती थी राजाको भी इस वृत्तान्त का समाचार पहुँचा रानीके महलमें आया देखा कि रानी को भगवत् में इतना प्रेमहै कि साधन अवस्थासे जायके सिद्ध अवस्थाके समीप अर्थात् तद्रूपताको पहुँचगई है इसदशाको कि जब कबहीं अति चाह व उमंगसे गाती है और कबहीं नाचती है और कबहीं हँसती है और कबहीं रोती है और कबहीं भगवद्ध्यान में भीतिके चित्रके सदृश होजाती है राजा यहदशा देखकर अतिप्रसन्नहुआ और अपने भाग्य की बड़ाई करताहुआ रानीके पास पहुँचा रानी तो भगवत् छविके अनुभवमें मग्नहोकर शरीरकी सुधि व भान भूलगई थी पहिले कुछबात न पूछी पीछे बहुतबेर बीते कुछ सुधिहुई तो राजाको देखकर बड़ीरीति मर्याद व आदर सम्मान करके हाथ जोड़ खड़ीहुई इसहेतु कि एकतो पति दूसरे राजा तीसरेगुरू कि उसकेही उपदेशसे भगवत् सेवा मिली पीछे वार्त्तालाप सत्संग व भगवत् आराधनहुये पर राजाने भगवच्चरित्रोंके कीर्त्तन करनेकी आज्ञाकरी सो रानीने भगवत् कीर्त्तन और नृत्य आरम्भकिया और ऐसीप्रेममें मग्नहोगई कि अपने व बिरानेकी कुछ सुधि न रही राजाने इसकारणसे कि इस प्रेमरसके आनन्द व सुखका स्वाद कबहीं पायानहींथा अपने भाग्यको धन्यमानके नित्य व हरघड़ी उस रानीके सत्सङ्ग में रहनेलगा और रानीके प्रेमका फल यहहुआ कि सारानगर और देश राजा का भगवद्भक्त होगया वह वृत्तान्त विस्तार करके राजाकी कथा में लिखागया॥

कथा सुतीक्ष्णकी॥

सुतीक्ष्ण ऋषीश्वर अगस्त्यजी के चेले रामोपासक बड़े प्रेमी हुये जब रघुनन्दन महाराज दण्डकवनको पधारे और सुतीक्ष्णजीके आश्रम के समीप पहुँचे तो सुतीक्ष्णजी अपने स्वामीके आगमन का समाचार सुनकर आगे लेनेके हेतु चले परन्तु परमानन्द भगवत्के आगमनकी और दर्शन की उमङ्ग इतनीहुई कि सबसुधि अपने बिराने की भूलगई

इसीपदवी को शाण्डिल्य सूत्र में परानुरक्ति अर्थात् पराभक्ति के नामसे लिखाहै कि वहसूत्र ऊपर लिखागया इस भूमिकापर दृढ़होने का जीवन्मुक्तहै व फल इसकामुक्त व परमपदहै और जानेरहो कि जो दशा सत्र सात्विक व्यभिचारी अर्थात् समान तृतीय व चतुर्थ जो कि रसभेद के वर्णनमें ग्रंथके आरंभमें लिखीगई हैं सो भी प्रेमनिष्ठाकी संबंधीहैं सो ग्रंथारंभमें जो दशा रसभेदकी लिखी है और इस प्रेमनिष्ठाकी दशा सत्र मिलाने पर जो किसी प्रेमासक्तकी कोई नईदशा सुनने के देखनेमें आवै तो उसको एकअंग उनदशाओं का समझलेना चाहिये अथवा हमसे लिखते न बना नहींतो ऐसीबात कोई नहीं कि शास्त्रने जिसका मूल न लिखा होय ॥ हे श्रीकृष्णस्वामी हे दीनवत्सल हे पतितपावन महाराज जिसभांति शेषीभाव आप पर परिणाम को प्राप्तहुआहै उसीप्रकार पतितपावन और अधमउद्धारण नामभी आप पर समाप्त हैं और जिस प्रकार शेष नाम पर शेषभाव का अन्त हुआहै उसीप्रकार अधम और पतित होनेकी पदवी मेरे ऊपर समाप्त है परन्तु ऐसी मेरी दुर्भाग्यता है कि शेषजी को तो अनुक्षण समीपता प्राप्त है और मैं इस जगत्के जंजालमें ग्रसितरहूं और गुण यह कि मैंतो अपने काम चतुर व चौकसहूं अर्थात् कोई पाप व अपराध ऐसानहीं कि न कियाहो व न करताहूं और आपको कबहीं अपने नामका स्मरणभी नहीं होता सो कुछ चिंता नहीं अब हमने ग्रन्थोंमें लिखना आरम्भ करदियाहै कबहीं तो चित्तपर चढ़ैगा यद्यपि इसभांति विनयकरनी अनरीतिहै परंतु आपकी दिलगीने इसढंगसे कहलाई कि लिखाई ढिठाई क्षमा कीजाय उसके ऊपर इतना और अधिकहै कि आपका दृढ़वचन प्रबन्धकइस जगह पर है कि जो शरण आता है उसको अभय करदेता हूं सो बहुतकाल बीता कि आप के द्वारपर पड़ाहूं यद्यपि ऐसा पक्का व दृढ़ नहीं कि वादकरके ठहरायदेव परन्तु आप सबप्रकार जानते हैं कि आपके द्वारको छोड़ और किसीसे कुछ सम्बन्धभी नहींरखता जब जो कुछ मेरे निमित्तहोगा आपसे होगा थोड़े में विनय यहहै कि किसीप्रकार उसरूप अनूपके चिन्तवनमें दिन रात लगारहूं जो सब रूप और शोभा का सारभूत है मेरे निमित्त वही सबकुछ है ॥

कथा अम्बरीषकी रानीकी ॥

राजा अम्बरीष की कथा में लिखीगई कि रानी का वर्णन प्रेमनिष्ठा

में होगा सो उसी रानीकी बात लिखीजाती है कि जब यहरानी ब्याही आई और राजासे उपदेश अलग सेवापूजा करनेका पाया तो अत्यन्त प्रेम व बिश्वास से भगवत्मूर्त्ति बिराजमान करके सेवापूजा करनेलगी और इतना प्रेम भगवत में हुआ कि किसीसमय सिवाय भगवद्भजन और आराधन के किसीकाम में मन नहीं लगाती थी राजाको भी इस वृत्तान्त का समाचार पहुँचा रानीके महलमें आया देखा कि रानी को भगवत् में इतना प्रेमहै कि साधन अवस्थासे जायके सिद्ध अवस्थाके समीप अर्थात् तद्रूपताको पहुँचगई है इसदशाको कि जब कबहीं अति चाह व उमंगसे गाती है और कबहीं नाचती है और कबहीं हँसती है और कबहीं रोती है और कबहीं भगवद्ध्यान में भीतिके चित्रके सदृश होजाती है राजा यहदशा देखकर अतिप्रसन्नहुआ और अपने भाग्य की बड़ाई करताहुआ रानीके पास पहुँचा रानी तो भगवत् छविके अनुभवमें मग्नहोकर शरीरकी सुधि व भान भूलगई थी पहिले कुछबात न पूछी पीछे बहुतबेर बीते कुछ सुधिहुई तो राजाको देखकर बड़ीरीति मर्याद व आदर सम्मान करके हाथ जोड़ खड़ीहुई इसहेतु कि एकतो पति दूसरे राजा तीसरेगुरू कि उसकेही उपदेशसे भगवत् सेवा मिली पीछे बार्त्तालाप सत्संग व भगवत् आराधनहुये पर राजाने भगवच्चरित्रोंके कीर्त्तन करनेकी आज्ञाकरी सो रानीने भगवत् कीर्त्तन और नृत्य आरम्भकिया और ऐसीप्रेममें मग्नहोगई कि अपने व बिरानेकी कुछ सुधि न रही राजाने इसकारणसे कि इस प्रेमरसके आनन्द व सुखका स्वाद कबहीं पायानहींथा अपने भाग्यको धन्यमानके नित्य व हरघड़ी उस रानीके सत्सङ्ग में रहनेलगा और रानीके प्रेमका फल यहहुआ कि सारानगर और देश राजा का भगवद्भक्त होगया वह वृत्तान्त बिस्तार करके राजाकी कथा में लिखागया ॥

कथा सुतीक्ष्णकी ॥

सुतीक्ष्ण ऋषीश्वर अगस्त्यजी के चेले रामोपासक बड़े प्रेमी हुये जब रघुनन्दन महाराज दण्डकबनको पधारे और सुतीक्ष्णजीके आश्रम के समीप पहुँचे तो सुतीक्ष्णजी अपने स्वामीके आगमन का समाचार सुनकर आगे लेनेके हेतु चले परन्तु परमानन्द भगवत्के आगमनकी और दर्शन की उमङ्ग इतनीहुई कि सबसुधि अपने बिराने की भूलगई

सिवाय उसरूप अनूप जो चिंतवनमें था और कुछ भीतर व बाहर दि-
खाई नहीं पड़ताथा और न यह कुछ भानरहा कि मैं कौनहूं और कहांहूं
और किसओर जाताहूं जबकबहीं सुधिहोती तो यह मनमें होतीथी कि
आजकौन ऐसी शुभघड़ी और क्या मङ्गल दिनहै कि जो शिव व ब्रह्मा-
दिकोंको भी दुर्लभहै तिस स्वामीका दर्शन करूंगा और कबहीं इसबात
पर प्रसन्न होतेथे कि मेरे बराबर और कौन बड़भागीहै कि जिसको आज
पूर्णब्रह्म सच्चिदानन्दघन के दर्शनहोंगे बस ऐसे चिंतवन और आनन्द
में एकडग भी न चलागया और बेवश होकर राहमें बैठगये इसभांति
उस ध्यान के स्वरूप में लीन व लय होगये कि जब रघुनन्दन स्वामी
जानकी महारानी और लक्ष्मण जी के सहित आये तो कुछ जनाई न
पड़ी और जब पुकारा तो कुछ न सुना तब तो रघुनन्दन स्वामीने अ-
पनारूप जो ध्यानमें देखते थे तिसको अन्तर्द्धान करलिया और चतुर्भु-
ज रूप उनके मनमें प्रकटकिया जब सुतीक्ष्णने वह मनोहररूप अपने
स्वामी का न देखा तो विकल होकर आंखें खोलदीं और अपने मन-
भावन को सन्मुख देखकर और अतिप्रेमसे बेसुधिहोकर चरण पकड़
लिये न छोड़े भगवत् ने बलसे उठाकर अपनी छाती से लगाया और
आश्रममें जाकर टिके ऋषीश्वर ने रीति अनुसार पूजा इत्यादि किया
फिर भगवत् स्तुतिका आरम्भ किया परन्तु मारे प्रेमके ऐसा स्वरभंग
हुआ कि एक अक्षरभी उच्चारण न करसके कबहीं तो आंखोंसे जलका
प्रवाह चलताथा और कबहीं कंठ रुकिजाताथा जब भगवत्‌ने यह प्रेम
अपार देखा तो आज्ञाकी कि जो इच्छाहो सो वरमांगो कि सब कामना
तुम्हारी पूर्णहोंगी ऋषीश्वरने विनय किया कि कौनवस्तु मांगूं हमको
अच्छे बुरेका ज्ञान नहीं है आपको जो अच्छीलगे सो दीजिये और जो
मेरेही मांगनेपर बात है तो यह मांगताहूं कि आपका रूप अनूप जा-
नकी महारानी व लक्ष्मणजी महाराजके सहित मेरेमनमें सदानिश्चल
बसारहै सो भगवत्‌ने यही वरदानदिया प्रभातको जब रघुनन्दनस्वामी
आगे को चलनेलगे तो सुतीक्ष्णजी को वियोग का सँभार न होसका
अगस्त्यजी अपने गुरूके दर्शनके बहाने से साथचले और उसी पर-
मानन्द के समुद्र में मग्नरहे ॥

शवरी भीलनी की महिमा किसप्रकार वर्णन होसके कि बड़े बड़े ऋषीश्वर जिसकी भक्ति को देखकर आधीन होगये प्रथम जब शवरी को भगवद्भक्ति हृदयमें उत्पन्नहुई तो साधुसेवा को अंगीकार किया यह कि दण्डकारण्य में पम्पासर के समीप मतंगइत्यादि ऋषीश्वरों के आश्रममें रात्रिके समय छिपकर लकड़ियोंका भारडालजातीथी और रात से उठकर जिसराहसे ऋषीश्वरलोग स्नान करनेको आयाजाया करते थे उस राहको झाड़ बुहार कर विमल करदेतीथी मतंग ऋषीश्वर अपने मनमें कहा करते कि ऐसा कौन बड़भागी है कि ऐसी सेवा करता है और हमारे तप व भजनमें बखरा लेनेवाला होता है रात को दश बीस ऋषीश्वर चुपके छिपकर लगेरहे जब शवरी आई तो पकड़कर मतंगजी के पास लेगये शवरी ऋषीश्वर के डरसे कांपने लगी और जब सम्मुख गई तो रोदन करनेके दुःखसे व डरसे कुछ विनय न करसकी दूसरे ऋषीश्वरोंको तो यह मनमेंहुआ कि यहशवरी नीचजाति है तिसकी लेआईहुई लकड़ी जो हमने काममें लगाई न मालूम किस पापमें पकड़ेजायँगे और मतंग ऋषीश्वर कि भक्तिके प्रभावको जानते थे अपने मनमें कहने लगे कि यह शवरी ऐसी परमपवित्र व शुद्ध है कि जिसके ऊपर करोड़ों ब्राह्मणोंके धर्म्म कर्म्म निछावरकरना उचित है मतंगऋषीश्वर उसको अपने आश्रममें लेआये और भगवत् मंत्र उपदेश किया जब मतंगजी परमधामको जानेलगे तो शवरीको शिक्षा किया कि श्रीरघुनन्दन स्वामी पूर्णब्रह्म यहां आवेंगे व तुझको उनके दर्शन होंगे तू इसी आश्रम में रहाकर यद्यपि शवरीको गुरूके वियोग से अत्यन्त शोकहुआ परन्तु श्रीरघुनन्दन स्वामीके दर्शनोंकी आशासे प्रसन्नहोकर भजन व ध्यानमें रहनेलगी जिसघाटपर ऋषीश्वर स्नान के निमित्त जायाकरते थे शवरी राह बुहारा करतीथी एक दिन नियत समयमें विलम्बहोगया और ऋषीश्वरने शवरीको देखकर क्रोधकिया और उसीक्रोधमें एक ऋषीश्वरका वस्त्र जो शवरीसे स्पर्श होगया तो और अधिक ऋषीश्वरोंके क्रोधका कारणहुआ और शवरी को वचन दुष्ट व कठोर कहकर फिर स्नानको गये तड़ाग जलका स्थान रुधिर से भरादेखा और बड़े बड़े कीड़े देखे इस बातको अपने दुर्विदग्धतासे

यह समझा कि शवरी की अपवित्रता से जल तड़ागका नष्ट होगयाहै कुटीपर अपने फिरगये व शवरी ऋषीश्वरों के भयसे अपने स्थानपर चली आई और चिन्ताकी कि श्रीरघुनन्दन स्वामी के निमित्त प्रसाद अन्वेषण करनी चाहिये इसहेतु वन २ फल ढूंढनेको जानेलगी अच्छे अच्छे बेर तोड़कर पहिले आप चाखा करती कि यह मीठे हैं के खट्टे जो मीठे होते तो रखलिया करती और खट्टे को फेंकदिया करती और फिर राह पर जाकर जिसओर से रघुनन्दन स्वामी पधारेंगे बाट देखा करती जब अपनी कुरूपता व जातिकी नीचताको विचारती तो किसी जगह झाड़ीमें छिपजाती और जब अपने गुरूके वचन और भगवत् की कृपालुता व पतितपावनता परदृष्टि करती तो आगे लेनेकेहेतु दौड़ती इसीप्रकार भगवत्के प्रेम व चिन्तवनमें दिन रात व्यतीत करती जब बहुत दिन बीते तो अधम उधारण व भक्तवत्सलमहाराज पधारे और लोगोंसे बड़ीचाहसे पूछा कि शवरी परमभक्त का स्थान कहां है जब स्थानके समीप आये तो शवरी ने साष्टांग दण्डवत्करी रघुनन्दन स्वामी ने लपककर धरती से उठालिया और सब दुःख व शोक वियोगका दूरकिया शवरीकी यह दशा हुई कि भगवत् मुख चन्द्रमा की चकोर होगई और दर्शनमें मग्न होकर निर्भर परमानन्द का जल आंखों से ऐसा प्रवाहमान किया कि जिसका वारपार न रहा फिररघुनन्दन स्वामी को अपने आश्रम में लेगई और बेर जो जंगल से ले आतीथी भोजनके निमित्त आगे धरे भक्तभावन महाराज तो उन बेरों को भोजन करनेलगे और शिव आदि उस भक्तवत्सलता व कृपालुताके प्रेममें मग्न होकर शवरी के भाग्य की बड़ाई करनेलगे भगवत् एकबेर उठावैं और मुखमें डालकर उसकी मधुरता व मिठासकी श्लाघा करलें कि ऐसाफल मीठा कबहीं नहींखाया फिर दूसरा उठावैं और उसी भांति गुण वर्णन करके भोजन करैं जब भोजन करचुके तो सब ऋषीश्वर आगमन सुनकर कि आप शवरी के गृह में आयके उतरे हैं अचम्भे योगमें हो श्रीरघुनन्दन स्वामी के दर्शनको आये व सब गर्व अपने धर्म कर्म व कुलीनताका विदा किया और भगवत् दर्शनों से कृतार्थ होकर परमानन्द को प्राप्त हुये वार्त्तालाप होने पीछे ऋषीश्वरों ने तड़ागके जल बिगड़जाने का वृत्तान्त कहा व उसके शुद्ध व बिमल

होने का उपाय भगवत् से पूंछा भगवंत् ने आज्ञा किया कि शबरी के चरण परमपावन जब उस तड़ाग में पड़ेंगे उसी क्षण जल निर्म्मल व शुद्ध होजायगा ऋषीश्वर शबरी से विनय व प्रार्थना करके तड़ागपर लेगये और उस परमभक्त के चरणों के पड़तेही तड़ाग भगवद्भक्तों के मानसके सदृश विमल व शुद्ध होगया पीछे रघुनन्दन स्वामी ने आगे जाने की बिदा शबरी से मांगी और आज्ञा किया कि जो उपदेश भक्ति का हमने किया है उसी प्रकार आगे पर आचरण करती रहना शबरी को जो वह परम मनोहर रूप बाहर व भीतर की आंखों में समाय गया था वियोग न सहसकी बिदा मांगतेही अपने प्राण को निछावर करके परमधाम को गई भगवंत् ने दाहकर्म्म उसका आप किया इसचरित्रसे आवागमन से छुट्टी चाहनेवालों को भक्ति करने की शिक्षाकरी निश्चय करके प्रेम की अन्त पदवी यही है कि अपने प्यारे के मिलने के अति आनन्द में अथवा वियोगके अतिशोकमें आसक्त अर्थात् स्नेहकरने वाले के प्राण तुरन्त जाते हैं॥

कथा विदुर व उनकी स्त्रीकी॥

विदुरजी व उनकी धर्मपत्नी परमभक्त हुये विदुरजी धर्मके अवतार थे माण्डव्य ऋषीश्वरके शापसे मनुष्य देह पाई कथा उनकी विस्तार से महाभारत में लिखीहै जितनी प्रीति भगवत् में विदुरजी को थी उस से अधिक उनकी धर्म्मपत्नीको थी जब भगवत् श्रीकृष्ण महाराज कौरव पाण्डवन के विरुद्ध मिटाने के निमित्त हस्तिनापुर में पहुँचे तो दुर्योधनने अपने ऐश्वर्य्य के गर्व्व से सन्धि अर्थात् मेल अङ्गीकार नहीं किया परन्तु भोजनके शिष्टाचारके हेतु विनय किया भगवंत् ने आज्ञा किया कि विराने घर भोजन तीनभांति से होता है एक तो कङ्गालता करिके दूसरे प्रेमके सम्बन्धसे तीसरे हरिभक्त अथवा गुरू चेले आपुसके घर जबजावें सो यहां इनतीनों बातों में से कोई बातनहीं यहकहके विदुरजीके घरपधारे उससमय विदुरजी घरपर नहींरहे और उनकी स्त्री स्नान करती थी उसने जो भक्तवत्सल महाराजका आगमन सुना तो मारे हर्ष के अङ्ग में न समायसकी और ऐसी प्रेम व आनन्द में मग्न होगई कि बेधड़क उस नग्न दशामें उठदौड़ी लज्जा रखनेवाले महाराज यह दशा उसके प्रेमकी देखकर चकित हुये और झट पीता-

म्बर श्रीअंगका अपना उढ़ायदिया सो यह समझ पड़ता है कि जाने
भगवत् को उस समय यह विचार हुआ होगा कि यह मेरे
पहुँचगई है केवल पीताम्बर नहीं है इस हेतु पीताम्बर भी उढ़ायदेन
चाहिये अथवा यह बातहो कि जबराजा किसी अपने प्यारे सेवकपर
प्रसन्नहोताहै तो अपनी पोशाक निज खिलत देता है सो भगवत् महा
राजाधिराजमणि ने इसके प्रेम से प्रसन्न होकर पीताम्बर खिलत की
भांति कृपाकरदिया अथवा ऐसा मनमें आया होय जब कोई राजाकी
सेवा में जाताहै तो कुछ नज़र भेंट दियाकरता है सो भगवत् ने विदुर
पत्नी को अपने प्रेमियों में राजा के सदृश विचार करके पीताम्बर भेंट
दियाहो पीछे भगवत्को अपनेघरमें लेआई और परमप्रीति से सिंहा
सनपर बैठाकर अत्यन्तप्रेम व आनन्दमें बेसुधिहोगई कृपासिंधु महा
राजने जो उसकी यह दशादेखी तो अपनी ओर वार्त्तालाप में लगाने
के निमित्त आज्ञाकिया कि भोजन कुछ तैयारहोय तो लाओ वह बड़
भागी केलेके फल लेआई पास बैठकर खिलानेलगी वह तो परमानन्द
में पूर्ण थी गिरी को तो धरती पर गिरादिया और छिलका भोजन के
निमित्त दिया विश्वम्भर महाराज कि केवल प्रेमके भूखे हैं छिलकोंको
सराहि २ खानेलगे उससमय विदुरजी आयगये और भगवत्के चरण
कमलोंको दण्डवत् करके स्त्रीको तर्जन भर्त्सन करनेलगे कि रे मन्दबुद्धी
गिरी खिलानेको सो छिलके खिलाती है और आप भगवत् के पासबैठ
कर बड़ेभाव व भक्तिसे गिरी निकाल २ कर खिलानेलगे भक्तचित्तरंजन
महाराज ने आज्ञा किया कि विदुरजी यह केलोंका गूदा बड़ा मीठा है
परन्तु उन छिलकोंके स्वादको नहीं पहुँचता इस वचनसे भगवत् अ-
पने भक्तोंको शिक्षा करते हैं कि जिस किसी को जितनी प्रीति व भक्ति
मेरे चरणकमलों में है तितनाही भोजन इत्यादि जो कुछ मेरे अर्पण व
भेंट करते हैं मैं अङ्गीकार करताहूं दूसरे यह बात जनाते हैं कि मेरेदर-
बारमें चतुराई इत्यादि की कुछ नहीं चलती केवल प्रेम व स्नेहपर री-
झहै और एक यह अर्थभी प्राप्तहोगया कि जो विदुरजी और उनकी
स्त्रीको छिलकोंके खिलाने के कारणसे लज्जा व शोचहुआ था सो सब
मिटगया और दोनों परमप्रीति से भगवत्की सेवा में तत्परहे॥

कथा भक्तदासकी ॥

राजा भक्तदास कुलशेखर जिनका पद है भगवद्भक्त प्रेमीहुये कथा उनके प्रेम और भक्तिकी प्रपन्नामृत ग्रन्थमें विस्तार से लिखी है यहां मूल भक्तमालमें जितनी लिखीहै सो लिखीजाती है यह राजा श्रीरघुनन्दन स्वामीके उपासक थे श्रीरघुनन्दन स्वामी की कथा चरित्र सदा सुनाकरते और अतिप्रेम और प्रीति से लीला और उत्साह भगवत् का नित्य नये भावसे कियाकरते ब्राह्मण कथा सुनानेवाला राजाके प्रेम का वृत्तान्त जाननेवालाथा जब रामायण में सीताहरणकी कथा आया करती तो छोड़दिया करताथा एकबेर वह दुःखीपड़ा उसका बेटा कथा सुनानेको आया वही कथा सुनाई कि रावण आया और जानकी महारानी को चुराकर लेगया इतना वचन सुनतेही राजा तरवार खींचकर मार २ करताहुआ दौड़ा और घोड़ेपर सवारहोकर लङ्काकीओर चला कि इसी घड़ी रावणको मारकर अपनी माताके दर्शन करूंगा मेरेजीते मेरीमाताको कैसे लेजाय जब राहमें समुद्र आनपड़ा तो निर्भय घोड़ा समुद्रमें डालदिया भक्तभावन व भक्तमनरंजन महाराज जानकी महारानी व लक्ष्मणजीसहित प्रकट हुये और कहा कि कुलशेखर कहांजाते हो रावण को तो हमने वधकिया जनकनन्दिनी सहित अयोध्या को जाते हैं राजा चरणों में पड़ा युगल स्वरूपके दर्शनकरके नये प्राण पाये अपनी राजधानी में आकर प्रेम भक्तिमें मग्नरहे ॥

कथा विठ्ठलदासकी ॥

विठ्ठलदासजी माथुर चौबे अनहंकार व औरोंको मानदेनेवाले सब प्रकारसे निर्मल परोपकारीहुये किसीके अवगुणपर दृष्टि नहीं जातीथी जो विद्या जिसमें होतीथी उसका वर्णन करते थे माला और तिलक व भगवद्भक्तों की महिमा व प्रेम भगवत् के सदृश बुद्धिमें समाया था व हरिगोविन्द हरिगोविन्द यह वाणी अनुक्षण जिह्वापर रहती थी उनके बाप दो भाई सगे राना के पुरोहित थे विठ्ठलदास लड़केही थे तबहीं वे दोनों आपुसमें लड़कर मरगये जब विठ्ठलदासजी सयानेहुये तो भगवद्भक्तिको अङ्गीकार किया और रानाके पास आना जाना छोड़ दिया एकदिन रानाने लोगोंसे पूछा कि हमारे पुरोहितका लड़का नहीं आता वह कहांहै शीघ्रलेआओ विठ्ठलदासजी न गये जब दोहरायके बुलाया

तब शत्रुलोगों ने कहा कि महाराज वह तो दिनरात रागरंग व वैरागियोंके संगमें रहताहै और अपनेआपको भक्तमें गिनताहै रानाने विठ्ठलदासजीको कहलाभेजा कि आज जागरण हमारेयहां है सो जागरण हमारे गृहमें करना विठ्ठलदासजी हरिभक्तों के समाजसहित गये रानाने सबको आदरभाव करके समाज के निमित्त तिखने मकान की छत पर फरश लगवाया जिससमय भगवच्चरित्रों का कीर्त्तन और भजन होने लगा विठ्ठलदासजी की दशा उनचरित्रों के रसमें बेसुधिहोगई और अपने व बिरानेको भूलकर आप कीर्त्तनकरनेलगे और नृत्य व गानकी दशामें कुछ सुधि अपनेशरीर व मकानकी न रही तिमंजिले मकानसे नीचे गिरे राजा वह दशा देखकर बड़े शोचमें हुआ और दुष्टलोगोंको बहुत तर्जना भर्त्सनाकिया साधुलोग विठ्ठलदासजीको उठाकर घरपर लेआये व रानाने रुपया व सामग्री सब भेजी विठ्ठलदासजी को तीन दिन पीछे सुधिभई उनकी माताने सबवृत्तान्त राजाकी परीक्षा लेनेका व दुष्टलोगों की दुष्टता व तिमहले पर फरश होनेका कारण सब कहा विठ्ठलदासजी रात्रिको अपने घरसे चले छठीकरागांव में कि जहां यशोदाजी ने छठी की रीति रस्म श्रीनन्दनन्दन महाराजकी करी है आयकर श्रीगरुड़गोविन्दकी सेवापूजामें लगे रानाके सेवक सब जगह जगह ढूंढ़आये कहीं न मिले परन्तु उनकी माता व स्त्री ने ढूंढ़ते ढूंढ़ते पाया घरचलनेके निमित्त उनसे बहुतकहा व उपायकिया समझाया परंतु मन विठ्ठलदासजी का सेवा व स्वरूप में श्रीगरुड़गोविन्द महाराज के लिपटगया था इस हेतु कोई उपायने काम न किया हारिके उनकी माता व स्त्री उसी गांवमें रहनेलगे कुछदिन बीते बहुत दुःखी पड़े भगवत्ने स्वप्नमें आज्ञाकी कि तुम मथुराजी में निवासकरो विठ्ठलनाथजी को गरुड़गोविन्द महाराज का वियोग अंगीकार न हुआ जब तीनदिनतक बराबर आज्ञाको किया तब बेवश होकर मथुराजी में आये व अपने सजातियों को देखा कि भगवद्भक्ति से विरुद्धहैं इसहेतु एकबढ़ई साधुजीके घर उतरे उनकी स्त्री परमसती गर्भवती रही उसको खर्चपातकी चिन्ताहुई भगवत्ने मिट्टी खोदते में एक अपनी मूर्त्तिको बहुत धन सहित प्रकट करदिया विठ्ठलदासजी वह मूर्त्ति व रुपया बढ़ईको देनेलगे परंतु उसने हाथजोड़कर चरणकमल पकड़लिया व विनयकिया कि आपही भगवत्की सेवाकरें

और यहरुपयाभी खर्चमें लगावैं बिट्ठलदासजी ने ऐसी प्रीतिसे सेवाको आरंभकिया कि सिवाय सेवापूजाके और किसी कार्यसे संबंध न रक्खा और थोड़े दिन में उनके भक्तिभावकी ऐसी ख्यातिहुई कि बहुत लोग चेले होगये भगवत् उत्साह और कीर्त्तनका ऐसासमाज रहनेलगा कि मानो भगवत् पार्षदोंका समाजहै संयोगवश एकनटिनी आयगई और उसने भगवत् के आगे नृत्य और गानकिया बिट्ठलदासजी भगवत्प्रेम में ऐसे बेसुधि व बेवश होगये कि जो गहने व वस्त्रादिक थे सब उसको प्रसन्नहो दानकरदिया और जब उसकोभी कमजाना तो रंगीरायने अपने पुत्रको भगवत्की निछावर करके देदिया रंगीरायकी चेली रानाकी लड़की थी उसने उस नटिनी से कहलाभेजा कि जो रुपया व आभूषण तुझको चाहनाहोय मुझसे ले व रंगीराय मेरे गुरूको मुझकोदे नटिनी ने उत्तरदिया कि सम्पत्तिकी तो कुछ परवाह नहीं परन्तु रीझकर तन मन धन सब देसक्तीहूं रानाकी लड़की ने बिट्ठलदासजीसे विनय व प्रार्थना करके फिर समाज कराया और जो गुणी और भक्तजन आये थे बहुत रुपया उनको नज़र भेंटदिया और आप भगवत्के सामने नृत्य करनेलगी कि वह नटिनीभी चकित होगई और रंगीरायजीका शृङ्गार करके और डोलेमें बैठाकर भगवत्के सम्मुख लाई रंगीरायजी उसनटिनीके कहने से नृत्यकरनेलगे कि सब समाज भगवत्प्रेममें बेसुधि हो गया और नटिनी ने सब धन सम्पत्ति रंगीरायजी सहित भगवत् भेंट किया रंगीरायजीने बिट्ठलदासजी से कहा कि आप मुझको भगवत्की निछावर करचुके हैं उचित नहीं कि फेरलेवें इसहेतु रंगीरायजी को तो बिट्ठलदासजी ने न लिया परन्तु रानाकी लड़की ने लेलिया रंगीरायजी ने विचारा कि यद्यपि प्रकट जो तनहै सो तो भगवत् निछावर होचुका परंतु प्राण अबतक निछावर नहींहुये इसहेतु पाञ्चभौतिक तन छोड़कर भगवत् के परमधाम को प्राप्तहुये यह चरित्र पवित्र भगवत्के रसिक व प्रेमियोंका कि भगवद्भक्ति का देनेवालाहै विचारके योग्यहै ॥

कथा कृष्णदासकी ॥

कृष्णदासजी भगवत्के परमभक्तहुये कि श्रीनन्दनन्दन महाराजने निज अपने चरणकमलों का नूपुर उनको कृपाकरके दिया भगवत् कीर्त्तनकी रीतों के अच्छे ज्ञाताहे स्वर और ताल व ग्राम और

इत्यादि जो कुछ संगीतरत्नाकर आदि ग्रन्थों में लिखे हैं उन को ऐसा जाना कि उससमय में उनके सदृश कोई न था और अत्यन्तता उसकी यहांतकहुई कि राधिकावल्लभ महाराज कोभी अपने प्रेम और गुणसे प्रसन्नकरके रिझायलिया जाति के सुनारथे और खरगसेन उनके बाप का नामथा एकदिन श्रीराधाकृष्ण महाराजकी सेवापूजा करके भगवत् के सामने नृत्य व गान करनेलगे और भगवत् के रूप और चरित्र के चिन्तवन व रसमें ऐसेमग्न और बेसुधिहुये कि कुछ शरीरका भान न रहा उसीदशामें एकपाँवका घुंघुरू खुलकर गिरपड़ा और समा जो जमरहाथा उस में विक्षेप होनेलगा श्रीरसिकविहारी परम रिझवार उस समाके भंगको ताल व बेशोभा समझकर उठे व अपने चरणकमलका नूपुर श्रीहस्तसे कृष्णदासजी के चरणमें पहिना दिया कृष्णदासजी ने नृत्य और कीर्त्तन के पीछे जब यह वृत्तान्त जाना तो भगवत् कृपाकी और अपने भाग्यको धन्य मानिके फिर आनन्द में मग्न होगये और ऐसे भगवद्भजनमें लवलीनहुये कि दिनरात उसी प्रेमकीदशामें बेसुधि रहनेलगे व साधुसेवी ऐसेथे कि हरिभक्तोंको कबहीं भगवत्से न्यून न जाना जो किसी को शङ्काहोय कि भगवत् ने अपना घुंघुरू क्यों पहिनाया वही घुंघुरू क्यों न सजि दिया सो हेतु यहहै कि जो वह घुंघुरू साजिके पहिनाते तो विलम्ब होता इसहेतु अपना घुंघुरू पहिनादिया और भक्तके मनमें अपनी रिझवारता और चित्तकी चाहको प्रकट कर दिया सिवाय इसके यहबात भी सूचितहोती है कि भगवत् ने रीझकर यह घुंघुरू इनाम दिया॥

कथा कात्यायिनी की॥

कात्यायिनीजी के प्रेम और भक्तिकी कथा किससे कहीजाय जितना प्रेम और स्नेह ब्रजगोपिकाओंको श्रीब्रजराजभूषण महाराज में हुआ तितनाहीं कात्यायिनीजीका था बात कहते कहते भगवत्के रूपमें चिन्तवन करके बेसुधि होजातीथी तनक सुधि नहींरहतीथी जगत्के जितने झगड़े व बखेड़े हैं तिनसे न्यारी और भगवत् के प्रेमकी मूर्त्ति थी सब भगवद्भक्तों का सम्मत इसबात परहै कि भगवत् का स्नेह कात्यायिनीजी पर समाप्तहुआ यह दशाथी कि राहचलते में भगवच्चरित्रोंके तन्मय होजाती थी और कबहीं गातीथी कबहीं रोती थी कबहीं हँसती

थी एकबेर की बात है कि भगवच्चरित्रों के कीर्त्तन में बेसुधि व मग्नथी पवन तेज चलने के कारण से वृक्षों से शब्द आनेलगा कात्यायिनी जी यह समझीं कि यहलोग कोई तालमृदंग बजानेवाले हैं भगवत् के सम्मुख जो मैं गातीहूं तो यह बाजा बजाते हैं इसहेतु कुछ इनाम इनको देना चाहिये सो सब अपने वस्त्रों को उनको प्रसन्नहो दान करदिया और प्रियाप्रीतम के प्रेममें बेसुधि और मग्न होगईं ॥

कथा माधवदास की ॥

माधवदास रहनेवाले कंधागढ़ के ऐसे भगवत्के प्रेमी भक्तहुये कि जब भगवच्चरित्रों का गान अथवा कीर्त्तन सुनते अथवा आप कीर्त्तन कियाकरते तो भगवत्के रूप माधुरी के चिन्तवनमें बेसुधि होकर लोटनेलगते और कुछ सुधि न रहती और पुत्र व पौत्रोंका भगवद्भक्तों में अत्यन्त प्रेमथा व दृढ़ प्रेमरखते थे और तनमन से उनकीसेवा टहल किया करतेथे नगरका अधिपति भगवत्से विमुखथा दुष्टलोगों ने उस को बहँकाया कि माधवदास अपने को संसारमें दिखलाने के हेतु भगवत्प्रेम के बहाने झूठमूठ धरती पर लोटाकरता है राजा अज्ञानी ने परीक्षा के निमित्त अपने स्थान पर समाज ठहराया और तिमहले पर समाजीसभा ठहरी समाजके समय माधवदासजी ने नूपुरबांधकर कीर्त्तनकिया कि बेसुधिहोकर लोटनेलगे और उसीदशासे मकानकी छत से एक कड़ाह तप्तघृत कि जिसमें उत्सव के निमित्त पकवान बनता था उसीमें गिरे भगवत्ने ऐसी रक्षाकरी कि किसीअंगमें कुछचोट न आई इस चरित्रसे राजाके हृदयकी आंखें खुलगईं व भय व लज्जासे भगवद्भक्तिमान् व भक्तोंके आधीन होगया और भक्तहुआ ॥

कथा नारायणदास की ॥

नारायणदास जी नर्त्तक अर्थात् नट व भगवत् प्रेम के स्वरूप हुये यद्यपि संसार में हजारों नाचनेवाले होगये और हैं परन्तु जो भगवत् प्रेमको उन्होंने निर्बाहा दूसरे किससे होसक्ता है विष्णुपद को अक्षरके अर्थसे भगवद्रूपमें मग्नहोकर भगवंत् के नित्य विहारमें जामिले उनका यह नेम व प्रणथा कि सिवाय भगवत्के और किसीके सामने नृत्य व गान नहीं करते थे तीर्थ और भगवंत् मन्दिरोंकी यात्रा करतेहुये हँड़िया सरायमें जो प्रयागराजसे छःकोस पूर्व है पहुँचे और उनके नृत्य

व गानकी धूम नगरमेंहुई वहाँका हाकिम यवनथा उसने बुलानेके हेतु अपने लोगोंको भेजा नारायणदासजी ने भगवत् सिंहासनका लेजाना यवन के सामने उचित न समझा और उसका अभिलाष भंग करना भी अच्छा न जाना बेवश होकर एक विचार अपने जी में ठहराय कर गये और ऊंचे सिंहासनपर तुलसी की माला कि शास्त्रके वचन से तुलसी और भगवत् में कुछ भेद नहीं विराजमान करके नृत्य और गान करनेलगे परन्तु उस हाकिम मुसल्मानकी ओर जो अलग बैठाथा भूल करभी न देखा जब यह विष्णुपद मीराबाईजीका कि ध्रुवा उसका यह है॥ सांचो प्रीतिहीको नातो कैजाने राधिका नागरी के मदनमोहन रंगराते ॥ कीर्त्तन किया तो उसके अर्थ व भावको समझकर प्रियाप्रीतम के चिन्तवनमें बेसुधिहोगये और उसी बेसुधिकी दशामें उसविष्णुपदके अर्थके अनुकूल भीतर व बाहरकी आंखनमें वह समाज समाया कि ब्रजमोहन महाराज व वृषभानुनन्दनी परस्पर की प्रीति व स्नेहसे आनन्दमें भरे खेल और विहार व नृत्य और गानमें लवलीनहें और नृत्यकी दशामें तिरछादेखना और त्रिभंगी लटकवारे रूप ब्रजकिशोर महाराज ने और परम शोभा व शृङ्गार ब्रजनागरीजी ने ऐसा छटा व समाका स्वरूप पकड़ा कि नारायणदास जी को अत्यन्त चाव से कुछ निछावरकरना उचित हुआ तब निश्चय करके उससमय अपने प्राण से अच्छी और कोई वस्तु निकट न पाई बस तुरन्त युगल स्वरूप के निछावर करके नित्य विहार और परम आनन्दमें जामिले ॥

कथा लीलानुकरणकी ॥

एक ब्राह्मण पुरुषोत्तमपुरी में ऐसे प्रेमी भक्तभये कि भगवत् रूपके अनुभवमें मग्नहोकर तन्मय व बेसुधि होजाते थे एकबेर नृसिंहजीकी लीला को परमपवित्र नृसिंहचतुर्दशी के दिन लोगों ने बहुत धूमधाम से तैयार किया और उस ब्राह्मणको भगवद्भक्त और प्रेमी जानकर नृसिंहजीका रूप बनाया जब उस चरित्रका कीर्त्तन होनेलगा कि नृसिंह जीने हिरण्यकशिपुको अपने नखों से उदर चीरकर मारडाला तो उस ब्राह्मणको अनुकरणका ध्यानरहा और जो [illegible] करना उचित था सोई किया अर्थात् जो पुरुष हिरण्यक[illegible] उसका उदर अपने नखों से चीरकर मारडाला अ[illegible]

गोंने उसका वध शत्रुता के कारण से समझा और भगवद्भक्तों ने यह कहा कि शत्रुता नहीं नृसिंहजी का अंश इस ब्राह्मणमें आगयाथा नितान्त सबका यह सम्मत ठहरा कि रामलीला के समय इस ब्राह्मणको दशरथ महाराज का अनुकरण बनाना चाहिये उससमय वृत्तान्त प्रेम और शत्रुताका खुलजायगा सो रामलीलामें वैसाही किया जिससमय वह चरित्र आया कि रघुनन्दन स्वामी जनकनन्दिनी व लक्ष्मण महाराज सहित वनको गये और सुमन्त मन्त्री ने आकर राजादशरथ को सन्देशा रघुनन्दनस्वामी का सुनाया और राजा ने सुनतेही सन्देशे के प्राण त्यागकिये तो उसब्राह्मणने कि वास्तव करिके दशरथही होगया था रघुनन्दन स्वामी का सन्देशा सुमन्त के मुखसे सुनतेही उसी घड़ी अपना प्राण भगवत्के निछावर किया और दशरथ महाराज से बढ़करपदवी पाई वास्तव करिके प्रेमका ऐसाही प्रतापहै ॥

कथा मुरारिदासजीकी ॥

मुरारिदासजी प्रेमीभक्त श्रीरघुनन्द स्वामी के बलवण्डा शहरमें जो माड़वार देशमें विख्यात है हुये भगवत्का उत्साह और हरिभक्तों की सेवा और भण्डारा करने में अद्वितीय थे कीर्त्तन करने के समय श्रीरघुनन्दनस्वामी के चरित्रोंमें लवलीनहोकर प्रेमकी अन्तदशा हरिभक्तोंको शिक्षा किया एक चर्म्मकार भगवत्सेवा पूजा बड़े भावसे करके बड़े उच्चस्वर से नित्य कहा करताथा कि जो भगवत् के चरणामृत का अधिकारीहो सो लेजावे मुरारिदासजी ने वह शब्द राहचलते सुना उस के घरगये वह चमार डरसे कांपउठा मुरारिदासजी ने उसकी बहुत आश्वासन करी और कहा कि भय किसहेतु करताहै केवल चरणामृत के निमित्त आयाहूं चमारने विनय किया कि महाराज मैं जातिका चमार हूं आपको कब देसक्ताहूं मुरारिदासजी ने उत्तर दिया कि तू हमसे भी अच्छा है व जो तुझको कुछडरहै तो हम किसीसे न कहैंगे यह कहकर विकलहोगये और जल आंखोंसे बहनेलगा चमारने पूछा कि महाराज तुम किसहेतु रोतेहो मुरारिदासजी ने उत्तरदिया कि हमारी आंखें दुखती हैं फिर चमार ने बड़ी विनय व पुकारसे कहा कि महाराज आपको चरणामृत मुझ नीचसे लेना न चाहिये मुरारिदासजी ने न माना और हठकरके चरणामृत लिया भगवद्भक्तको मुख्य समझा और जातिको

आदिपर धूलिडालदी जानेरहो मुरारिदासजी इस चरित्रसे तीनों प्रकार के लोगों को शिक्षा करते हैं अर्थात् जो कोई भगवत्प्रेम और भक्ति की सिद्धदशाको पहुँचगये हैं उनको तो यह शिक्षाहै कि जाति इत्यादि का बन्धन उनलोगोंकोहै कि भगवत् प्रेममें दृढ़नहींहुये सो तुम उसदृढ़ता पर स्थिररहना और साधकलोगों को दृढ़निश्चय कराते हैं कि भगवद्भक्तिमें और प्रेममें वह पदवी प्राप्त करनीचाहिये कि भेद और द्वैतदूर होजावे और जो भगवत् से विमुखहैं उनपर यह दशाहै कि तुमसे चमार अच्छेहैं जो भगवत्सेवा करते हैं भागवतके एकादशका वचन है कि जो विप्र बारह कर्म करके युक्तहै परन्तु भगवद्भक्ति नहीं रखता उससे श्वपच अच्छा है काशीखण्ड में लिखाहै कि ब्राह्मण अथवा क्षत्रिय अथवा वैश्य के शूद्र और नीच जो भगवद्भक्त हैं सोई सब उत्तम लोगोंमें उत्तमहैं ऐसे सैकरों वचन इसबातके सिद्धांतमें हैं एक यह उपदेशभी इसचरित्रसे दिखाई देताहै कि आगम शास्त्रके वचनके अनुकूल भक्तिमार्ग के पांच कण्टकहैं कुलमद १ विद्यामद २ धनमद ३ सौंदर्यमद ४ बलमद ५ सो जिसने इन पांचों विरोधियों को जीत लिया सोई भक्त देशका अधिपति हुआ मुरारिदासजी का यह वृत्तान्त सारे नगर में फैला और सबलोग प्रकट बोली मारनेलगे और राजा तक समाचार पहुँचाया राजाकोभी यहबात अच्छी न लगी और मन फिरगया एकबेर मुरारिदासजी राजाके देखनेको आये तो पहिलीसी भाव भक्ति राजामें न देखी व वैराग्यवान् पुरुषथे सब त्यागकर किसी और जगह जारहे उनके जानेसे भगवद्भक्तोंका आना निर्मूल बंदहोगया और राजा जो प्रतिवर्ष उत्साह करता था और देश देशके साधु भगवद्भक्त मेले में इकट्ठे होते थे कोई न आया और उपाधि उपद्रव व अकालका आगमन दिखाई देने लगा तब तो राजा शोच व शोकयुत होकर फेर लेआने के हेतु चला और जाकर अत्यन्तदीनता व नम्रतासे साष्टांग दण्डवत् किये मुरारिदास जी ने मुँह फेरलिया कि ऐसे भगवद्विमुख का मुख देखना नहीं चाहिये कि ऐसे भगवद्विमुख से गुरुकी निन्दा होती है राजा हाथजोड़े दीनता व दुःखसे लज्जाकी नदीमें डूबकर खड़ारहा और फिर दण्डवत् करके प्रार्थना की कि आप मेरे ऊपर दया करके जो दण्ड विचारकरें उसके योग्यहूं और यह कटाक्षका वचनभी

नियत किया कि मेरे अच्छे भाग्य होनेमें कुछ संदेह नही कि आपऐसे गुरू मुझको मिले परन्तु आपकी कृपा व दयाकी न्यूनता निश्चय करिकैहै कि आपके चरणोंमें विश्वास न रहा मुरारिदासजी इस कटाक्ष युक्त वचनसे बहुत प्रसन्न हुये और और प्रसंग बाल्मीकि श्वपच का कि श्रीकृष्ण महाराजने युधिष्ठिर के यज्ञमें सब से ऊंचे आसन पर बिठलाकर द्रौपदीजीके हाथसे भोजन कराया और शवरीका कि ऋषीश्वरोंने जिसके चरण पकड़े और तड़ाग जिस चरणके प्रभावसे पवित्रहुआ और निषाद का कि वशिष्ठजी और भरतजी ने अपने बराबर बैठाया व हनुमान् व सुग्रीव व विभीषण व गज व गणिका इत्यादिका वृत्तान्त उपदेश करके राजाके हृदयके अन्धकारको दूर करदिया और भगवद्भक्ति और भक्तों का विश्वास दृढ़ करदिया पीछे राजाके नगर में आये और वैसाही समाज भगवद्भक्तों का और सत्संग रहनेलगा सब उपद्रव व उत्पात शान्त होगया व सब लोगों ने भगवद्भक्तिको अंगीकार किया॥ एकबेर समाज हुआ व जो कोई कीर्त्तन और भजन में ज्ञाता व प्रवीणथे सब चेले हुये भजन कीर्त्तन के समय भगवद्भक्तों ने मुरारिदासजी को कहा कि कुछ आपभी भजन करैं उनके कहनेसे उठे और घुँघुरू बाँधकर नृत्य करनेलगे व भगवद्भक्त थे सब राग रागिनी और सातोंस्वर तीनोंग्राम व इक्कीसों मूर्छनाआयके प्राप्तहुई और ऐसा समाज हुआ कि किसी ने देखाथा न सुनाथा जब श्रीरघुनन्दन स्वामी के वनके जानेका चरित्र भगवद्भक्तों ने कीर्त्तन किया तो मुरारिदासजी भगवत्विरह के तन्मय होगये और चित्र के सदृश ज्योंके त्यों रहगये अथवा यह बात समझी कि उस वन व अरण्यमें परमसुकुमार रघुनन्दनस्वामी व जानकी महारानी और लक्ष्मणजी की सेवा कौन करैगा इसहेतु यह प्राण संग भेजना उचित है यह दशा देखकर उस समाज ने बहुत दुःखपाया व मुरारिदासजी श्रीरघुनन्दन स्वामीजी के परम्पद को पहुँचे॥

कथा गदाधर भट्टजीकी॥

गदाधर भट्टजी प्रेमभक्ति के समुद्र सुशील मधुर बोलनेवाले सहज स्वभाव निस्पृह अनन्य भगवद्भजन में आनन्द और लोगों को भगवद्भक्ति में दृढ़ करनेवाले हुये किसीसे कुछ चाहना नही रखतेथे और भगवद्भक्तोंकी सेवा ऐसेप्रेमसे करतेथे मानों इसीहेतु उनका जन्महुआ

था उनका यह विष्णुपद कि। सखी हों श्याम रंग रँगी। देखि बिकाय गई वहसूरति मूरति माहिं पगी॥ जीवगोसाईंजीने सुना व एकचिट्ठी लिखकर दो साधु के हाथ भेजी चिट्ठी में यह लिखाथा कि तुमको बिनारैनी रंग किसप्रकार चढ़गया हमको चिन्ताहै इसलिखनेका तात्पर्य प्रथम यह कि बिना वैराग्य अर्थात् त्याग बिना भक्ति का रंग चढ़ना अतिकठिन है सो तुमने अब तक गृह कुटुम्बका त्याग नहीं किया जो फिर रंग में रंगीन किसप्रकार हुये॥ दूसरे यह कि श्रीवृन्दावन भगवद्रूप के रंगकी रैनी है सो वृन्दावनवास विना रंग किसप्रकार चढ़गया साधुलोग वह चिट्ठीलेके भट्टजीका घर जहांथा तहां पहुँचे संयोगवश भट्टजी नगरसे वाहर कोईकुयेंपर वैठेथे उन्हींसे पूछा कि गदाधर भट्ट जी कहां रहते हैं भट्टजी नें पूछा कि तुम कहांसे आये व कहां रहतेहो साधोंने कहा कि सव धामों का परमधाम श्रीवृन्दावन है तहां रहते हैं और तहांहींसे आयेहैं भट्टजी उसनाम परम अभिरामके सुनतेही प्रेम से वेसुधि होकर गिरगये कुछ कालपीछे सुधिहुई तो परम आनन्द में मग्न मौन होकर चित्रकी मूर्त्तिके सदृश भगवद्रूप के चिन्तवनमें वैठ गये किसीने साधोंसे कहा कि गदाधरजी यही महाराजहैं साधोंने वह पत्री उनको दी भट्टजी ने जो पढ़ा शिरपर चढ़ाकर वृन्दावन व वृन्दावनबिहारी के रूपमें आनंद होकर उसीक्षण वृन्दावनको चल खड़ेहुये व आयके जीवगोसाईंजीसे मिले दोनों परमभागवतों को प्रेमकी नदी ऐसी उमड़ी कि उसमें डूबगये और आपुसके सत्संगसे भाग्यको धन्य मानकर भगवत्की बड़ीकृपा समझी गदाधरभट्टजी ने जीवगोसाईं जी से सव ग्रन्थ भगवच्चरित्र और रस रास और प्रिया प्रीतम के कुञ्जविहारके पढ़े सुने और भगवत् के रूप रंगमें रंगीन होगये भट्टजी नित्य श्रीमद्भागवत की कथा कहते थे कल्याणसिंह नामी राजपूत रहनेवाला दरेरागांवका जोकि वृन्दावनके निकटहै कथा सुनकर भगवत्की ओर सावधान हुआ और अपने घरका आना जाना त्याग करके भगवद्भजन में रहनेलगा उसकी स्त्रीने समझा कि भट्टजी के सत्संग से घरकी चाह व कामकी वासना जातीरही सो अपने पति को वे विश्वास करने के हेतु एकस्त्री गर्भवती जोकि भिक्षामांगती फिरतीथी उसको बुलाया व वीस रुपया देनेको कहकर यहवात सिखाया कि जिससमय भट्टजी

कथा कहैं उससमय जोमैं सिखातीहूं अच्छे पुकारकर कहदेना अपनी दासी साथकरके गदाधरजीका स्थान उसको बतलादिया वह स्त्री लोभमें बद्धहोकर जहां भट्टजी कथा कहतेथे आई और पुकारकर कहा कि तब तो मेरे साथ तुम को वह खेलमेल था कि गर्भ रहगया अब ऐसी निठुराई है कि खर्चका देनाभी बन्द करदिया भट्टजीने कथा कहतेही में उत्तर दिया कि ठीकहै परन्तु मेरी इसमें कौन तकसीरहै तुमहींने दर्शन नहींदिया कथामें जितने लोगथे किसीको विश्वास न आया और कहने लगे कि निपट झूठहै वरु यह पापिनी दण्डके योग्य है ॥ राधावल्लभलालजीके गोसाईंको यह वृत्तान्तका समाचार पहुँचा बहुत दुःखित हुये उसस्त्री को बुलाकर बहुतभय त्रासदिया कि सचकहु नहीं तो जीती न छोडूंगा उस ने जो बात सत्य सत्य थी सो कहदी उस कल्याणसिंह ने अपनी स्त्री के त्रियाचरित्र के समाचार पाये तो तलवार लेकर उसके मारने को उद्यत हुआ भट्टजीने दयासे कहा कि कदापि स्त्री को कुछ न कहनाचाहिये इतनाही दण्ड बहुतहै कि उसका त्याग होगया ॥ किसी देशका एकमहन्त कथामें आया व भट्टजीने सबसे आगे उसको बैठाया उस महन्त ने देखा कि सब श्रोता प्रेम में भरेहुये भगवच्चरित्रों को सुनते हैं और प्रेमका जल आंखों से बहता है परन्तु मेरी आंखों से एक बूंदभी जल नहीं निकलता सब लोग मेरी महन्तता पर निश्चय करके व्यंग बोलेंगे दूसरे दिन लालमिरच चादर के कोनेमें बांधकर कथा में जाबैठे और आंखोंमें मिरच डाल २ कर अच्छापानी बहाया एक साधु ने इसबातको देखलिया था भट्टजीसे सब वृत्तान्त कहदिया भट्टजी अपने हृदयकी सचाईसे यहसमझे कि उसमहंतने इसहेतु अपनी आंखों में मिरच डाली है कि जिन आंखों से प्रेमकाजल न बहै उसमें मिरच अच्छी है सो जब कथा होचुकी भट्टजी बहुत प्रसन्नहोकर उस महन्तसे मिले और यह मिलना उनका उसकेहेतु ऐसा रसायन होगया कि थोड़े दिन में दूसरे प्रेमियोंसे अधिक होगया ॥ एकबेर गदाधरजीके स्थानमें चोरआया और वस्त्रादिक वस्तुकी दृढ़पोट बांधी परन्तु भारी के कारण से उठाय न सका भट्टजी आप आये और वह गठरी असबाबकी उठवादी चोरने शोच किया कि यह मनुष्य कौनहै कि पकड़ता नहीं है गठरी उठाय देताहै पूछा कि तुम कौनहो भट्टजीने अपना नाम बतलाया

चोर असवाब को छोड़कर चरणोंमें पड़ा और गिड़गिड़ाने लगा भट्ट जी ने कहा कि निर्भयहोकर लेजाओ वरु और जो चाहिये सो लेजाव और शीघ्र चलेजाओ प्रभातहोगई चोरने हाथ जोड़कर विनय किया कि अव वह धन निरुपाधि मुझको कृपाहोय कि दोनों लोककी चिंता से निश्चिन्तहोकर वेपरवाह होजाऊं यह कहकर रोयके फिर चरण प· कड़ लिया भट्टजी ने दया करके उसको मन्त्र उपदेश किया और इस चोरी से छुड़ाकर माखनचोर से हाथ पकड़ादिया॥ भट्टजीकी यह रीति थी कि भगवत्की रसोईकी सेवा सव अपने हाथसे किया करतेथे व से· वक व चाकर वहुतथे परन्तु भगवत्सेवा में किसीको प्रवृत्त होने नहीं देते एकदिन भगवत् रसोईका चौका देतेथे कोई साहूकार अथवा राजा दर्शन करनेको आया और वहुत द्रव्य भेंटके निमित्त लाया एकसेवक ने भट्टजी से विनयकिया कि चौका छोड़कर हाथधोकर शीघ्र गद्दी पर आवें कि वड़ाभारी सेवक आताहै भट्टजी उस सेवकसे वहुत अप्रसन्न हुए और कहा कि भगवत्सेवासे दूसरा मुख्य काम कौनसाहै कि जिस के हेतु सेवा छोड़ीजाय ऐसे चरित्र गदाधरभट्टजीके वहुत और आन- न्दके देनेवालेहैं ॥ कथा रतवन्ती की ॥

रतवन्ती वाई परमभक्त वात्सल्य उपासक हुई भगवद्भजन और भोग इत्यादिकी सामग्री की तैयारीमें सर्वकाल सदा लवलीन रहा क· रती थी श्रीमद्भागवतकी कथा किसीजगह होतीथी तो नित्य वहां जाने का नियम था एक दिन भगवत् की रसोई वनाती थी उस को छोड़कर कथामें जाना उचित न समझा क्योंकि सेवाकी विशेषता है अपने वेटे को कथामें भेजदिया उसदिन कथा में यह प्रसङ्गथा कि नंदनन्दन व्रज- चन्द्र महाराज माखनको चुराकर अपने मित्रों और वन्दरों को खिला रहे थे और उस खेल और लीला में लगरहे थे कि यशोदाजी ने यह चरित्र आप अपनी आंखसे देखा और उसी दिन कितने उरहने इसी प्रकारके व्रजसुन्दरियों केभी पहुँच चुकेथे इसहेतु नन्दरानीजी ने व्रज- भूषण महाराज को ऊखल से वांधदिया रतवन्तीजी के वेटे ने वह सव कथा आयकर कहिदीनी जिससमय उस लड़केके मुखसे यह वात नि- कली कि रस्सीसे वांधदिया तो विह्वलहोगई और यहकहा कि यशोदा वड़ी कठोरहै उस सुकुमार कोमल अंग परमसुन्दर को रस्सीकी वन्धन

कैसे सहिमकी होगी हाय वह मेरा मनोहर बालक तो ऊखल से बँधाहो और मैं सुखसे बैठी रहों यह कहकर उसी घड़ी अपने प्राण निछावर किये और नित्य परमआनन्द को पहुँचकर अपने आंख की पुतली व कलेजेके टुकड़े श्यामसुन्दर को ऊखल से छुड़ाया कि जिसकी मायाकी फांसी में करोड़ों ब्रह्माण्ड बँधि रहे हैं ॥

कथा जस्सूधरकी ॥

देवदास वंशमें जस्सूधरजी ऐसे भक्त दृढ़हुए कि पुत्र व स्त्री इत्यादि सब भगवत् परायण थे और जिस भाव और भक्ति से भगवत् में प्रेम और स्नेहथा उसीभाव से भगवद्भक्तों की सेवा करते थे और रघुनन्दन स्वामीके चरित्रोंमें इतनी प्रीतिथी कि चरित्रों को सुनकर भगवद्रूपमें बेसुधि होजाते थे यह चरित्र जो रामायण में लिखा है कि विश्वामित्र ऋषीश्वर आये व दशरथ महाराज से श्रीरघुनन्दनस्वामी और लक्ष्मण महाराज को मांगा व भक्तवत्सल महाराज ऋषीश्वरके साथ चलने को तैयारहुए तो इस चरित्रके वर्णन करते समय उसी समाज के तद्रूप होगये अर्थात् कहनेलगे कि महाराज मैं भी साथ चलताहूं भगवत् ने साक्षात् होकर कहा कि तुम यहांरहो हम थोड़े दिनमें विश्वामित्रजी का यज्ञ पूरण करके आते हैं सो जस्सूधरजीने उस रूपमाधुरी को सम्मुख देख लियाथा कि जिस की शोभा के एक कणकी शोभा में कोटानकोट ब्रह्माण्डों की शोभा होती है तो वियोग कब सहा जाय रहनेकी आज्ञा सुनतेही अपने प्राण भगवत् शोभाधामकी निछावर करके नित्य परम आनन्द को प्राप्तहुये ॥

कथा कृष्णदास की ॥

कृष्णदास ब्रह्मचारीके चेले सनातनजी के हुये जब श्रीमदनमोहन जी महाराजका मन्दिर तैयारहुआ और मूर्त्ति भगवत् की उसमें विराजमानहुई तो सनातनजीने कृष्णदासजीको भगवत् सेवामें अतियोग्य जानकर भगवत् सेवा उनको सौंपदी सो ऐसे भाव व भक्तिसे सेवा पूजा में तत्पर हुये कि जिसमें भगवत् व गुरू की प्रसन्नता का कारण हुआ तिसके पीछे कृष्णदासजी ने नारायण भट्टको भक्ति व प्रेमी जानकर अपना चेला किया एक दिन कृष्णदासजी ने भगवत्का शृंगार किया व भगवत् छविको देखने लगे भगवत्के रूपमें बेसुधि व मग्नहोगये और

इतना प्रेमका तरंग व झोक बढ़ा कि उपाय करने से भी बहुत देरतक अपने व बिराने की कुछ सुधि न रही जिस स्नेह व प्रेमसे शृङ्गार ते थे उसका वर्णन कब होसक्ता है ॥

सम्पूर्णता इस भाषान्तर और कुछ वृत्तान्त प्रयोजनी का वर्णन ॥

श्रीराधाकांत वृन्दावनविहारी के चरण कमलोंकी बलिहारी कि मेरे ऐसे अधम व मतिमन्दों को कृपालुता व दयालुता करके अपने चरण के शरणमें राखिके दोनोंलोकके दुःखोंसे एकक्षण में निर्भय व निश्चित कर देते हैं विचार करना चाहिये कि जिसकी माया अनंत ब्रह्माण्डोंको रचकर फिर नाश करदेती है जिस को कोई सहस्रशीर्षा व सहस्राक्ष व सहस्रपाद और कोई निराकार निर्गुण निरवयव अर्थात् बिना अङ्ग वाला और कोई विश्वरूप और कोई योगका परिणाम और कोई सब प्रमाणों का प्रमाण और कोई सब तत्त्वों का परमतत्त्व और कोई चि- न्मात्र व कोई कालका भी काल और कोई सबकर्मोंके फलका परमफल बतलाता है और जिस के चरणकमल ब्रह्मा व देवताओं के देवता हैं जिसकारूप अनूप शिवजी के मनमानस का हंस व भक्तोंका आधार है मङ्गलरूप नाम जिसका सब नामियोंके नामका देनेवाला है व सब वेद व शास्त्रोंका सार है जिसकी महिमाके वर्णनमें शेष मौन व शारदा मूक हैं वेद जिसको नेति नेति कहते हैं व बुद्धि व विचार व अनुमान व तर्क से बाहरहै सो कहां तो वहस्वामी और कहां मैं अपराधी व अघपुंज कि जिसको नरकभी घृणा करता है सो मेरे ऊपर भी ऐसी करुणा व कृपा करी कि जिसका लेख नहीं अर्थात् जिसभक्तमालका सुनना और पढ़- ना अगले जन्मों के हज़ारों पुण्य व सत्कर्म के फलके उदयसे प्राप्त होताहै सो भक्तमालप्रदीपन जो पारसीमें है तिसको अनायास पंजाब देशसे लेआकर प्राप्तकरदिया व पारसी भाषासे देवनागरी में भाषांतर करके हृदयमें प्रेरणा किया कि उस भाषान्तर करने से एक एक अक्षर की चिन्तना व पद पद का अर्थ समझाना और फिर उसको भाषांतर करना और उसके रसमें आनन्द होना नेत्रोंसे जलकाआना रोमांचि- तहोना व हृदय द्रवीभूत होजाना व कबहीं प्रेम के तरङ्गमें कलम हाथ का हाथ रहजाना यह सब सुख मुझ को प्राप्त हुआ और चारों सम्प्र- दायके उपासना इत्यादि के ग्रन्थ जब बहुत संग्रह करते व पढ़ते सम-

भते तब अभिप्राय व सारांश व गुरुपरम्परा लिखते सो ऐसे परिश्रम की नदी को उतरने के निमित्त मुझ को यह पारसी आरसी सी ऐसी मिली कि जैसे चींटी को पुल मिलजाय सिवाय इसके यह कृपाकी कि दूसरेकी सहायताको भी न लेनेदिया मेरेहीहाथ व लेखनीसे सम्पूर्ण करा दिया सो ऐसी कृपालुता व करुणा को विचारकर जो मेरा अल्पभागी मन ऐसे स्वामीके चरणकमलों में न लगै तो उससे अधिक भाग्यहीन व शठ कौन है और यह चरित्र भगवद्भक्तों के आप श्रीकृष्णस्वामीको श्रीराधिका महारानी व अपने भक्ति महारानी के सदृश प्यारे हैं और बिना निजकृपाकटाक्ष भय किसीको प्राप्त नहीं होती दोनोंलोक का मनोरथ अर्थात् अर्थ धर्म काम मोक्षकी दाता और श्रीकृष्णस्वामी के स्वरूपको हृदयमें दृढ़प्रकाश करदेनेवाली है इसहेतु इसके सम्पूर्ण होनेसे भगवत्की कृपा व धन्यमानना उचित न था काहेसे कि न जाने यह आनंद फेर मेरे भागसे मिलै कै न मिलै परंतु यह दृढ़ विश्वास है कि जिस कृपासे यह सत्संग प्राप्तहुआ और बहुतकाल पर्य्यंत इसमें लगेरहे व मनोरथ पूर्णहुआ सो कृपा सदा बनीरहैगी और सर्वदाको सत्संग मेरे भागमें बनारहैगा और एक कारणसे बिशेष करके कृपाकी आशा मुझ को है कि स्वामीके मित्रों व सम्बन्धियों के चरित्रों को मनसे भाषान्तर कियाहै जो कदाचित् अपने चरित्रोंकी रचनाकी मंजूरी न दें तो समर्थ हैं परंतु यह कदापि नहीं होसक्ता कि उनके मित्रोंके चरित्रों की मंजूरी न मिलै इसहेतु दृढ़ विश्वासहै कि निश्चयकरके रूपअनूपकी दृढ़चिन्तवन और स्मरण भजनकाधन मुझको मिलेगा जो यह सन्देहकरूं कि भाषान्तर की वाणी गजबज व स्वामीके रीझ के योग्य नहीं है मुझको कौन आशा कुछ मिलने की है तो यह सन्देह योग्य नहीं क्योंकि यह भाषान्तरकी वाणी भदेश व गजबज सुनकर बहुत हँसैंगे व जब हँसनें की चाहहोगी तब इसको सुनैंगे व प्रसन्न होकर जो धन मैं चाहता हूं सो निश्चय करके स्वामी देंगे और भगवद्भक्तों की रीतिहै कि जिसपद व रचना में भगवत् व भक्तों के चरित्र व नाम हैं उसीको परममन्त्र व अच्छा काव्य समझते हैं जो वह कैसेही बुरे व अवगुण भरे कवि की रची और काव्य गुणसे रहित होय इस हेतु साथ बैठनेवाले भगवत्के कि भक्तहैं इस भाषांतरको कि भगवत् और भक्तों के चरित्रका स्वरूप

है अतिप्रेम से सुनकर व प्रसन्नहोकर निश्चय हमारे विनय की सहाय व सिफारिश करैंगे व हमारे मनोकामना को पूर्ण करदेवैंगे अर्थात् गवत्के रूप अनूपका चिन्तवन व भजन मुझको मिलैगा सिवाय इस के यह भक्तमाल एक कल्पवृक्ष का स्वरूप है कि भगवद्भक्त तो उसका मूल और चौवीसनिष्ठा जो वर्णनहुई सो शाखा हैं भगवद्भक्तों की कथा पत्रहैं और नवीन २ अर्थ व भाव सब फूलहैं और भगवत्स्वरूप का चिंतवन भजनका दृढ़ होजाना यह जिस मे फल हैं सो जब किसीने ऐसे कल्पवृक्ष को सेवनकिया है तो वह फल मुझ को क्यों न मिलैगा और कदाचित् हमारे कोई पापकर्म्म ऐसे उदय होजावें कि इधर तो इसस त्संग सें अन्तरपड़े और उधर भगवद्भजन व चिन्तवन में मनलगा तो निश्चय करके यह बात समझी जायगी कि यह मेरा तन श्वान व शूकर व खर व सर्प्पआदिसे भी निन्दितहै क्योंकि क्षुधा पिपासा निद्रा मैथुन इत्यादि सब जीवों को बराबर है मनुष्य शरीरकी बड़ाई भगव द्भजनसे है तो जिस शरीरसे भगवद्भजन आराधन नही होता वह सब शरीरों से अधम व अमंगल है जो शिर कि भगवत् व भगवद्भक्तों के चरणों में नहीं झुकता सो शिर बाजीगर के सूमका अथवा कड़ुईतूंबा और जिसकी जीभसे भगवत्कीर्त्तन नहीहोता सो दादुरकी जीभ और कान से भगवच्चरित्र श्रवणनहीं किया सो सर्पका बिल जानना चाहिये और भगवत्का दर्शन जिन आंखोंसे नहींहुआ सो आंखें मोरकेपर अथवा जूतीका सितारा और हाथ बिना भगवत्पूजन सेवा के अधजली लकड़ी के सदृश हैं और चरण जो भगवत्तीर्थों व भगवत्स्थान में यात्रा नहीं करते तो सूखेवृक्षके सदृश हैं केवल भगवद्भजनही से मनुष्य कहाजाताहै नहीं तो श्वासा तो लुहारकी धौंकनीसे भी निकलती है श्वासालेनेसे मनुष्यनेही वृथा जन्मलेकर अपनी माताको दुःखदियें और यद्यपि निष्काम भजन की पदवी उत्तमहै परन्तु जिनलोगोंने संसारी कामनाके हेतु भगवत्की शरणको लियाहै उन को मनवांछित संसारी कामना प्राप्तहुई और होती हैं और अंतको आवागमन के बंधन से छूटगये और छूटजाते हैं कि वेद श्रुति औ[illegible] व भागवत और सब पुराण यह बात पुकारते हैं औ[illegible] सु[illegible] व युधिष्ठिर व उग्रसेन व सुदामा इत्यादि [illegible] दे[illegible]

यहभी शिक्षा सबको करते हैं कि भगवत् से विमुख होकर किसीने सुख नहीं पाया न किसीका ऐश्वर्य्य बनारहा कि जरासन्ध व वेणु व दुर्य्योधन व रावण व कंस व शिशुपाल आदिकी कथा साक्षीहै ॥

भगवद्भजनकी महिमाके वर्णनमें—वर्त्तमानलोगोंका वृत्तान्त व भगवद्भजनके विरोधीका ॥

कईबार आपुस में अच्छेलोगों के इसबातका वादविवाद हुआ कि हस्तिनापुर के बादशाहों पर एक हजारवर्ष के दिनों से बराबर उत्पात घोर किसकारणसे होतेहैं इसके उत्तरमें किसीने तो व्यभिचारकी रीति प्रवृत्तहोजाने और उस पाप से भांति भांतिकी पीड़ाहोनी वर्णन किया किसी ने कहा कि परलोकका भय न रहा व सत्धान्य के खानेकी रीति उठगई सब उद्यमीलोगों ने अपने सत्कर्म्म के धान्यमें अधर्म्मका धान्य थोड़ासा मिलाकर सब को नष्टकरलिया है किसी ने कारण प्रवृत्त होने रीति मिथ्या व धूर्त्तता व मद्यपान व कपट व द्यूत व चोरी इत्यादि बुरेकर्म्मोंका वर्णनकिया कोई बोला कि शत्रुता व फूट इसदेशमें इतनी फैलगई कि सहोदरभ्राता आपुसमें बुरा चाहते हैं इस हेतु विरानेलोग प्रबल पड़गये और भांति २ के दुःखदिये एक किसी ने कहा कि शास्त्र विद्या इसदेश में कमहोगई अपने मन व दूसरी विद्याओं से बहुत से अज्ञ व मूर्खहैं कुलीनलोगों में जो थोड़ी विद्याका प्रकाश है तो केवल संसारके लाभमात्रका है परलोकका निर्मूल चिन्तवन नहीं और दूसरी जाति सब लाभकेहेतु विरानेकी विद्या व बोल पढ़लिये उसी को पढ़ते हैं स्वप्नमें व भूलकरभी अपनी विद्याकी ओर चाह नहींकरते सो जैसी विद्या को पढ़ते हैं वैसाही स्वभाव होजाताहै इसहेतु भगवत्के दरबार से भ्रष्टहोगये और होजातेहैं और अनेकप्रकारकी पीड़ा दूसरों के हाथ से पाई और पातेहैं किसीनेकहा कि राजालोग अपने धर्म्मसे जातेरहे अर्थात् धर्म्मशास्त्र के अनुसार राजा ऐसाहो कि बुद्धिमान् व धर्म्मात्मा विद्यावान् पूर्णपण्डित शास्त्रमें सावधान सूक्ष्मका समझनेवाला न्यायके समय शत्रुमित्रको बराबर जाननेवाला अठारह अवगुण जोहैं मद्यपान हिंसा विहार स्त्रीरतरहना अन्याय दुर्वचन बोलना वाचालता बिनअपराध वधकरना प्रजा से शत्रुता खेल कूद इत्यादि इन सबसे बचा रहै आठ जगहसे चौकस रहै अर्थात् गुरु पुरोहित मन्त्री कोट किला ख-

हैं अतिप्रेम से सुनकर व प्रसन्नहोकर निश्चय हमारे विनय की
व सिफारिश करेंगे व हमारे मनोकामना को पूर्ण करदेवैंगे अ
गवत्के रूप अनूपका चिन्तवन व भजन मुझको मिलैगा सि
के यह भक्तमाल एक कल्पवृक्ष का स्वरूप है कि भगवद्भक्त
मूल और चौवीसनिष्ठा जो वर्णनहुई सो शाखा हैं भगवद्भक्त
पत्रहैं और नवीन २ अर्थ व भाव सब फूलहैं और भगवत
चिंतवन भजनका दृढ़ होजाना यह जिस में फल हैं सो जब
कल्पवृक्ष को सेवनकिया है तो वह फल मुझ को क्यों न
कदाचित् हमारे कोई पापकर्म्म ऐसे उदय होजावें कि इ
त्संग में अन्तरपड़े और उधर भगवद्भजन व चिन्तव
तो निश्चय करके यह बात समझी जायगी कि यह मे
शूकर व खर व सर्प्पआदिसे भी निन्दितहै क्योंकि क्षु
मैथुन इत्यादि सब जीवों को बराबर है मनुष्य शरीर
द्भजनसे है तो जिस शरीरसे भगवद्भजन आराधन
शरीरों से अधम व अमंगल है जो शिर कि भगव
चरणों में नहीं झुकता सो शिर वाजीगर के सूमव
और जिसकी जीभसे भगवत्कीर्त्तन नहींहोता सो
कान से भगवच्चरित्र श्रवणनहीं किया सो सर्पका
और भगवत्का दर्शन जिन आंखोंसे नहींहुआ से
थवा जूतीका सितारा और हाथ बिना भगवत्पूज
लकड़ी के सदृश हैं और चरण जो भगवत्तीर्थ
यात्रा नहीं करते तो सूखेवृक्षके सदृश हैं केवल
नुष्य कहाजाताहै नहीं तो श्वासा तो लुहारकी धं
है श्वासालेनेसे मनुष्यनेहीं वृथा जन्मलेकर अपन
और यद्यपि निष्काम भजन की पदवी उत्तमहै प
सारी कामनाके हेतु भगवत्की शरणको लियाहै उ
सारी कामना प्राप्तहुई और होती हैं और अंतको
से छूटगये और छूटजाते हैं कि वेद श्रुति और गी
सब पुराण यह बात पुकारते हैं और ध्रुव व सुग्रीव
ष्ठिर व उग्रसेन व सुदामा इत्यादि हजारों भक्तों कं

शौच २ दया ३ दान ४ यही शास्त्रोक्तधर्मों के मूल थे सो कलियुग के प्रभाव करके उन चारोंचरणों में महाविघ्न उत्पन्न हुआ व मनुष्य पापी व अपराधी होगये इसहेतु दूसरेके हाथसे उनपापोंका दण्डहुआ और होते हैं इसीप्रकार के कारण बहुत लोगों ने अपनी बुद्धि व समझ के अनुसार कहि सुनाये सबसे पीछे एकपुरुष बुद्धिमान् व सर्वज्ञ व भगवद्भक्त ने कहा कि मुख्यकारण छूटजाने राजों के राज्य का व उठजाने शास्त्रोक्त धर्म्मों का व प्रवृत्तहोने अपने धर्म्म व प्राप्तहोने अनेक महा उत्पातोंका यहहै कि भगवत्‌का भजन व आराधन न रहा जो वह प्रवर्तमान रहता तो कदापि नहीं किसीप्रकारका विघ्न किसीबातमें होता व न कलियुगका कुछ बलचलता और कारण लुप्तहोजाने भगवद्भजन व आराधन का यहहै कि कोई पन्था तो लोगों ने ऐसी चलाई कि वेद व शास्त्रसे सबबातें विरुद्ध हैं और कोई ऐसीचली कि यद्यपि मूलउसका शास्त्रसे जामिलता है परन्तु प्रवृत्ति में उसके अगिले आचार्य अथवा पिछले आचार्यों से उसपन्थाई की ऐसीभूल व चूक होगई है कि उनके अनुयायी व पन्थाईवाले इधरके हुये न उधरके व निन्दितधर्म्म कर्म्ममें रतहैं और कोई लोगों ने कलियुग व पापकर्म्म के प्रभाव करिके नरक कुण्डके भरनेके निमित्त शास्त्रका अर्थ विपरीत समझलिया और एक पन्थाई के बहाने से त्याज्य व वर्जित वस्तुके खाने पीने व विषयभोग इन्द्रियोंका मज़ा आनन्द खूब अच्छेप्रकार उड़ानेलगे धन्य यह पन्थाई व धन्य समझ अधिक शोच इसबात का यह है कि इनलोगों ने शास्त्र का सिद्धान्त व अर्थ तनकभी नहींसमझा सिवाय इसके हमारे अग्रज लोग आप निर्बलहोगये और थोड़ेसे जो शेषहैं तो उनके आचरण व वचनके प्रभावके अनुसार करिके थोड़ा बहुत परम्परा भजनका प्रवर्तमानहै सिवाय इसके एक बड़ाअनर्थ यह उत्पन्नहुआ कि कोई २ लोग जो कि आप संसारगर्त गम्भीर व अन्ध व संकीर्णमें बिना हाथ पांवके पड़े हैं परंतु किसी ऐसे कोई से कि वहभी उसीगर्त में उससे अतिअधिक दीन व दुःखी हैं बड़ाई किसी ऐसेबादशाहकी कि चौमहलेके ऊपर है और चौमंज़िले महलके ऊपर चढ़जानेपर जाने मिलै कै न मिलै और एक एक महल का चढ़ना हज़ार जन्म में भी कठिन है व चढ़जानेपर भी गिरनेका भय अनुक्षण बना रहता है तिसको सुनकर बिना चारोंम-

ज्ञाना कारबारी सबफ़ौज मित्र इतनेको सावधानीसे रखनेवाला व साम दामदण्ड भेद की रीतिका जाननेवाला व उसका आचरण करनेवाला हो व अपनी प्रजाको दूसरे राजों के हाथसे व ठग व उचक्का व बटपार व चोर व फेरहा व मूर्ख व मद्यपी व धूर्त्त व जान मारनेवाला और दूसरे सब दुष्टोंसे अच्छे प्रकारकी रक्षामें अपने प्राणके सदृश रखकर सबको अपने धर्म्म में स्थिर व दृढ़ राखै और कारिन्दालोग औ पुंश्चली स्त्रि· यों से अतिअधिक रक्षा प्रजाकी करै कि यह दोनों प्रबल प्रेत राजाको झूठमूठ मीठी मीठी बातें कहकर अपने वशमें करलेते हैं इसीहेतु मन्त्री बुद्धिमान् व परलोकका भय करनेवाला व समझदार व विद्यावान् को रखना शास्त्रों में लिखाहै सो ऐसे राजा अपने प्रजाको रक्षाकरके धर्म्म पर स्थिर रखते थे अब के राजोंका वह वृत्तान्तहै कि नहींकहना अच्छा सूक्ष्मकर कहते हैं कि सब विपरीत शास्त्रके आचरणहैं प्रजाकी रक्षा व पालनकी जगह अन्याय व लूटपाटहै व धर्म्मकी जगह अधर्म्म व वि· द्याकी जगह मूर्खताहै व चतुराईकी जगह अज्ञता व लाघवताकी जगह असावधानता है कारिन्दा व बख़्शी व मन्त्री आदि ऐसे हैं कि विद्या जानना व धर्म्मकी प्रवृत्ति व प्रजाका पालन तो अलगरहा निज आप तीनों बातके नष्ट करने को लगे हैं और शुभ चिन्तना व धर्म्मनिष्ठता का यह वृत्तान्तहै कि राजाका राज्य जातारहै तो जूती से परन्तु किसी प्रकार उन को मुद्रा लाभहोय कोई राजालोगों के निमित्त यह दृष्टान्त योग्यहै कि किसी वन में जङ्गली जीवोंका बादशाह एक बन्दरथा बिल्ली व मूसा एक रोटीके बांटकरानेके हेतु उसकेपास गये बादशाह साहबने उसरोटी के दो टुकड़े करदिये परन्तु एक बड़ाहोगयाथा उसका भोजन करना आरम्भ किया दोनों फ़रयादीने कारण भोजन करनेका पूछा तब बादशाह साहबने आज्ञा किया कि दूसरेके बराबर करताहूं खाते खाते वह छोटा होगया तो दूसरेका भोजनकरना आरम्भ किया और इसी प्र· कार बराबर करते वह रोटी समूची चटकरगये भला जब राजोंका यह वृत्तान्त है तो प्रजा आदि दरिद्र व दुःखी क्यों न तुरन्त सङ्कट में पड़ें और जब कि एक गरीबकी आह से एक बड़ादेश भस्म होनेसकता है तो जिसराज्य में लाखों गरीबों की आहहो क्यों न जातारहै व क्यों न विध्वंसको प्राप्तहो पीछे एक किसीने कहा कि धर्मके चार चरणथे सत्य१

शौच २ दया ३ दान ४ यही शास्त्रोक्तधर्मों के मूल थे सो कलियुग के प्रभाव करके उन चारोंचरणों में महाविघ्न उत्पन्न हुआ व मनुष्य पापी व अपराधी होगये इसहेतु दूसरेके हाथसे उनपापोंका दण्डहुआ और होते हैं इसीप्रकार के कारण बहुत लोगों ने अपनी बुद्धि व समझ के अनुसार कहि सुनाये सबसे पीछे एकपुरुष बुद्धिमान् व सर्वज्ञ व भगवद्भक्त ने कहा कि मुख्यकारण छूटजाने राजों के राज्य का व उठजाने शास्त्रोक्त धर्म्मों का व प्रवृत्तहोने अपने धर्म्म व प्राप्तहोने अनेक महा उत्पातोंका यहहै कि भगवत्का भजन व आराधन न रहा जो वह प्रवर्तमान रहता तो कदापि नहीं किसीप्रकारका विघ्न किसीबातमें होता व न कलियुगका कुछ बलचलता और कारण लुप्तहोजाने भगवद्भजन व आराधन का यहहै कि कोई पन्था तो लोगों ने ऐसी चलाई कि वेद व शास्त्रसे सबबातें विरुद्ध हैं और कोई ऐसीचली कि यद्यपि मूलउसका शास्त्रसे जामिलता है परन्तु प्रवृत्ति में उसके अगिले आचार्य अथवा पिछले आचार्यों से उसपन्थाई की ऐसीभूल व चूक होगई है कि उनके अनुयायी व पन्थाईवाले इधरके हुये न उधरके व निन्दितधर्म्म कर्म्ममें रतहैं और कोई लोगों ने कलियुग व पापकर्म्म के प्रभाव करिके नरक कुण्डके भरनेके निमित्त शास्त्रका अर्थ विपरीत समझलिया और एक पन्थाई के बहाने से त्याज्य व वर्जित वस्तुके खाने पीने व विषयभोग इन्द्रियोंका मजा आनन्द खूब अच्छेप्रकार उड़ानेलगे धन्य यह पन्थाई व धन्य समझ अधिक शोच इसबात का यह है कि इनलोगों ने शास्त्र का सिद्धान्त व अर्थ तनकभी नहीसमझा सिवाय इसके हमारे अग्रज लोग आप निर्बलहोगये और थोड़ेसे जो शेषहैं तो उनके आचरण व वचनके प्रभावके अनुसार करिके थोड़ा बहुत परम्परा भजनका प्रवर्तमानहै सिवाय इसके एक बड़ाअनर्थ यह उत्पन्नहुआ कि कोई २ लोग जो कि आप संसारगर्त गम्भीर व अन्ध व संकीर्णमें बिना हाथ पांवके पड़े हैं परंतु किसी ऐसे कोई से कि वहभी उसीगर्त में उससे अतिअधिक दीन व दुःखी हैं बड़ाई किसी ऐसेबादशाहकी कि चौमहलेके ऊपर है और चौमंज़िले महलके ऊपर चढ़जानेपर जाने मिलै कै न मिलै और एक एक महल का चढ़ना हज़ार जन्म में भी कठिन है व चढ़जानेपर भी गिरनेका भय अनुक्षण बना रहता है तिसको सुनकर बिना चारोंम-

हलपर चढ़े विना पनारेके सहारे इच्छा पहुँचजानेकी रखतेहैं आश्चर्य
यह कि उसमहलपर पहुँचना तो दूररहा उसगड़हेसेभी उनके
नेका भरोसा नहीं और उसपरभी मज़ा यहहै कि ऐसी मतिमन्दता व
मलीन समझ पर दूसरे लोगों को अपना संघाती बनालेने में चूकते
नहीं विष्णुपुराण में उनलोगों के निमित्त जो कुछ लिखा है सो ठीकहै
इन लोगोंके सिवाय एक और यूथ ऐसाही है कि जिनके कारणसे भ-
जन और धर्मकी जड़ निर्मूल होगई और ऐसा प्रवर्तमान है कि जैसा
सतयुग में भगवद्भक्तों का यूथथा नाम उनका दुष्ट व विमुख व खलहै
वर्णन व उनकी बड़ाईकी भगवद्भक्तोंके चरित्रसे दूना तिगुना विस्तार
है थोड़ेमें लिखते हैं॥ उपासना उनकी यहहै कि शास्त्र विरुद्ध आच-
रण करना यहीकर्म व भगवद्धर्म है दूसरों के अवगुण व दुष्टकथा और
दुष्टों के चरित्र सुनना यह उनकी श्रवणनिष्ठा है मिथ्या व चुगली व
निंदा व गालीदेनेका रात दिन कीर्त्तन करतेहैं जैसे पोशाक और छवि
से हिन्दू जनाईपड़े ऐसी पोशाक व छवि बनानी यह उनकी भेषनिष्ठा
है मदिरा वेचनेवाले व जुवां खेलनेवाले व जो बड़ेधूर्त्त व कपटी व मि-
थ्याबोलनेमें व निर्लज्जता में अभ्यास रखताहो ऐसे सब उनके गुरुहैं
वेश्याओं व पराईस्त्रियों व लड़कोंका भगवत्मूर्त्तिसे भी अधिक सेवन
करते हैं विनाकारण किसी की हानि करदेनी व जीवहिंसा व कपट मि-
ताई व लड़ाई व क्रोध यह उनकी दयाहै मद्यपान करना व वर्जित व-
स्तुका खाना यह उनका चरणामृत व महाप्रसादहै दिन रात नाचराग
रंग कुत्सित इतिहास पढ़ना खेल कूद लीला तमाशा चकलेकी सैर ग-
लियों में घूमना और ऐसेही काम में रहना यह उनका सत्संगस्थानहै
भगवद्भक्तों और साधु संन्यासी आदि की निन्दाकी रचना करनी यही
उनकी साधुसेवा है सत्य बात को भी मिथ्या समझलेना और सन्देह
युक्त रहना व एककाम व स्मृतिकी आज्ञामें मनमुखीतर्क उत्पन्न करके
उसके अनुकूल न आप आचरण करना न दूसरे को आचरण करने
देना यह उनका ज्ञानहै भगवत् व भक्तोंके चरित्रों से इतना वैराग्य है
कि कबहीं स्वप्नमें भी स्मरण नहीं होता चाह व खोटापन व लालच व
कामोल्लास व गर्व व दम्भ व असत्यता से मिताई है और जो उनके
अनुकूल कामकरै सोई उनका सम्बन्धी और प्रियहै अर्थके किङ्कर हैं

और जिससे कुछ मिलै तिसके शरणागत मद्यस्थान व द्यूतस्थान व विजयादि का स्थान और वेश्याओं का मकान व कुसंगियों का स्थान जिनका तीर्थ और धामहै कईबार अथवा बहुत भोजन करना यह उ-पासहै ऊपर लिखिआये सो आचरण व कर्म को सुनकर व मनलगा-कर विचार करके दिन रात उसमें प्रसन्न रहना और दूसरी ओर चाह न होनी यह उनलोगोंका दृढ़प्रेमहै परमधाम अर्थात् मुक्ति उनकी वह नरकहै कि जिससे न निकलें और जिनको सुनके हृदय कांपिजाय ऐसे कठिन व अपार दुःखोंका प्राप्तहोना यही उसमुक्तिका सुखहै कामक्रोध लोभ मोह मद मत्सर उसके आदि आचार्य्य हैं अग्रगामी व प्रकाशक व प्रवर्तक उसके वे महाराज धर्मवान् अथवा आज्ञा चलानेवाले अ-थवाकुलीन व पुराने घरानेदार अथवा लंपटों व शोहदोंके प्रधानलोग हैं कि जिनको भगवद्भजन में प्रीतिनहीं काहेसे कि जैसा आचरण उन का दूसरेलोगोंने देखा वैसाही आचरण किया भगवत् ने गीता में कहा है कि यद्यपि मैं शुभ अशुभ कर्म्मों से बन्धमान होने के योग्य नहीं हूं परन्तु लोक संग्रहके निमित्त सब कर्म्म आप मैं करताहूं जो मैं कर्म्मों को छोड़दूं तो दूसरे लोग भी मेरे अनुसार आचरण करें और सबका नाशहोजावै इससे निश्चय होगया कि उन चारोंप्रकार के लोगों से जो ऊपर लिखआये सब अनर्थों व अधर्मों की प्रवृत्ति हुई कुछ निन्दा कि-सीकी कोई न समझै केवल स्मृति व शास्त्रकी शिक्षा लिखदेने में कुछ अनुचित न समझी एकादशस्कन्ध की टीका में श्रीधरस्वामी ने क्रमसे नीच व नष्ट लोगों का वर्णन करके समाप्ति राजों के सेवकों पर लिखी और स्मृतिका वचन भी उसके अनुसार पाया और एकवचन सारे सं-सारकी कहनावतहै कि खेतीकी वृत्ति उत्तमहै व बाणिज्य मध्यमहै और सब से नष्टचाकरी की है सो कारण इसके नष्टताका यह है सबशास्त्र व सब संप्रदाय व मतकी राह मनके एकाग्र होनेके निमित्त है कि उसीको निर्मल मानसक्ते हैं और जब मन निर्मल हुआ तब भगवत् मिलताहै और मनके एकाग्र होनेके निमित्त दयाकाहोना विशेषसे विशेष चाहिये मुख्य साधनहै सो इस चाकरी की वृत्तिमें दोनों बातनहीं हैं अर्थात् बे विश्वासता स्वामी से इतनी है कि कदापि मनसुस्थिर नहीं रहता ऐसा दूसरी वृत्तिमें नहीं है और निर्दयपन इस अधिकाई से है कि भारीपीड़ा

व दुःखको राजसेवक लोग एकबात प्रबन्धवाली व रीति व पद्धति अपने स्वामी की समझते हैं भला जबकि वे मुख्यबातैं दोनों जोकि दृढ़ साधन व विशेष कारण भगवत्के मिलने का इस वृत्तिके प्रभाव करके जातारहे तो सब वृत्तियों में यह वृत्ति नष्ट व निकृष्ट क्यों न गिनीजाय और क्यों न शास्त्रोंमें उसकी निन्दा लिखीजाय अभिप्राय इसलिखने से यहहै कि एक तो यह वृत्ति नष्ट तिसपर जो इस वृत्तिवाले भगवद्भजन करैं तो अपनी अन्तदशा पर अच्छे शोचकरलें कि क्या होनी है और जो ऐसी निन्दित वृत्तिके प्राप्तरहने परभी भगवद्भजन करैंगे तो उसका अन्तसमयका फलभी देखलें कि सबसे उत्तमपदवी उनको क्यों न मिलैगी अभिप्राय कहनेका यहहै कि जब भगवद्भजनरूप चन्द्रमाको कृष्ण पक्षकी चतुर्दशी है तो उस भगवद्भजन में हानिकाहे न होय और उस परमधर्म्म की परम्परा काहे न भङ्गहोजाय और दूसरे लोगों के हाथसे भांतिभांतिकी पीड़ा काहे न होय सो भगवद्भजन सार व तात्पर्य्य सब शास्त्रोंकाहै जिसप्रकार होसकै भजनमें मनलगाना उचितहै और जाने रहो कि ब्रह्मा जोकि सबसे बड़ाहै सो भी विना भगवद्भजन इससंसार समुद्रसे नहीं उतरसक्ता है ॥

मुक्तिका वृत्तान्त व स्वरूप ॥

जगह जगह इसग्रन्थमें हुआ कि भगवत् आराधन व सबमतोंका फल मुक्तिहै उसीकेनिमित्त सब परिश्रम करते हैं सो वर्णनकरना चाहिये कि मुक्तिकिसको कहते हैं और वह कौनवस्तु है सो जानेरहो कि जैसा ज्ञान शब्दके वर्णनमें हरएकमत व शास्त्रके न्यारे २ अर्थ व सिद्धांतहैं इसीप्रकार मुक्तिकी निर्णयहै कथनका भेदहै नहीं तो अभिप्राय सबका एकही निकल आताहै अर्थात् किसीने संसारके आवागमनसे छूटनेको मुक्तिका स्वरूप वर्णन किया और किसीने कहा कि सब दुःखदूर होकर नित्यसुख होनेको मुक्तिकहते हैं ॥ और किसीने मायाके गुणोंसे अलग होनेको और किसीने सुख दुःख दोनोंके न रहनेको और किसीने परतंत्रता से छूटकर स्वतंत्र होजानेको और किसीने शरीर व मन दोनों का न रहना ॥ और किसी ने सब तत्त्व व पञ्चमहाभूतको ईश्वरमें मिलजाने को ॥ और किसीने मायाका नाशहोजाना मुक्तिका रूप बतलाया परंतु मुख्यबात जो शास्त्रों के सिद्धान्त के अनुसार मालूमहुई सो यह है कि

ब्रह्मस्वरूप होजानेका नाम मुक्तिहै यद्यपि शाब्दिक अर्थ मुक्ति शब्दका छूटनेका है परन्तु जबतक ब्रह्मस्वरूप न होगा तबतक कब छूटसक्ताहै इसहेतु ब्रह्मस्वरूप होना सिद्धान्त व सार ठहरा व ब्रह्मस्वरूप सो होताहै जो भगवत् कृपासे मायाकी फांसीसे छूटजाता है अब यह वाद उत्पन्न हुआ कि शास्त्रों में मुक्तिके चारनाम लिखे हैं और ऊपरकी लिखावटसे केवल एकमुक्ति अर्थात् ब्रह्मस्वरूप होजाना जानने में आताहै तो विरुद्धताकी बातक्याहै सोजानेरहो कि वास्तवमें तो मुक्तिकेवल ब्रह्मस्वरूप होनेका नामहै परन्तु शास्त्रोंने जो चार नामसे विख्यात कियाहै तो कारण यहहै कि भगवत्को सवदशा में अपने भक्तके मनकी चाह पूर्ण करनी अङ्गीकार रहती है और वेभक्त वहांभी उसी अपने भावकी चाह करते हैं कि जिसभाव व कैङ्कर्य के प्रभावसे ब्रह्मस्वरूप होने की पदवी उनको प्राप्तहुई इसहेतु उस एकमुक्ति अर्थात् ब्रह्मस्वरूप होने के चार प्रकार शास्त्रोंने लिखे हैं॥ प्रथम सार्ष्टि अर्थात् परमात्माके समान ऐश्वर्य काहोना॥ दूसरी सालोक्य अर्थात् उस परमात्मा के लोक में रहना॥ तीसरी सारूप्य अर्थात् परमात्माके स्वरूप ऐसा स्वरूप धारण करके वहां रहना॥ चौथी सामीप्य अर्थात् भगवत्के समीप रहना॥ सायुज्य पांचईं है अर्थात् भगवत् में मिलजाना उसका नामभी सार्ष्टि कहते हैं कि इसमें किसी का तो यह निश्चय है कि भगवत् में एक होजाना और फिर खोज उसजीवका उसलोक में न रहना उसका नाम सायुज्य है और किसीका यह वचनहै कि यद्यपि भगवत् में जीव मिलजाता है परन्तु उस जीव को भगवत् में अपने मिलजाने का ज्ञान बनारहता है जिसप्रकार कोई पुरुष नदी में डुबकी लगाताहै यद्यपि किसी को नदी से भिन्न वह दृष्टि में नहीं आता परन्तु उस डुबकी लेनेवाले को अपने डुबकी लेनेका वृत्तान्त स्मरण रहताहै और किसीका सिद्धान्त सायुज्य शब्दसे सहयोगका है अर्थात् भगवत्अंग से अंगका संलग्न होना॥ सो जिससमय उपासककी उपासना परिपक्वता को पहुँचती है उस समय जीवन्मुक्त कहलाता है और परमधाम जानेकी इच्छाहुई तब इस देहको छोंड़कर लिङ्गशरीर को धारण करता है फिर भगवत् पार्षदों के साथ उसराहसे कि कुशीतकी उपनिषद् व आठयें अध्याय गीताजी में अग्नि व सूर्य और शुक्लपक्ष और छःमहीने उत्तरायण के देवताओं का

वृत्तान्त लिखाहै यात्राकरके जो मायाकेगुण जैसे पृथ्वी जल अग्नि पवन आकाश व अहङ्कार जो यह अनित्यहैं उनको एक २ के आवरणमें छो-ड़ता हुआ अर्थात् पृथ्वी का आवरण जब भेदन करचुका तो पृथ्वी के सब तत्त्वों को वहीं छोड़दिया जल के आवरण में जामिला इसीप्रकार दूसरे आवरणों को भेदन करताहुआ इन्द्र व ध्रुव व ब्रह्माइत्यादि देव-ता व ऋषीश्वरों से पूजा आदर सत्कार ग्रहण करताहुआ इसब्रह्माण्ड से बाहर होताहै जानेरहो कि पृथ्वीकीरज और जलकीसीकर जो गि-नजायँ तो गिनजायँ परन्तु ब्रह्माण्डों की गणना नहीं होसक्ती सो सब आवरणों के भेदन करने पीछे विरजानदीपर कि वह प्रभाव व प्रकाश पूर्णब्रह्म परम सच्चिदानंदकाहै पहुँचताहै और उसमें स्नानकरके लिङ्ग शरीरको छोड़ देताहै और दिव्यशरीर निर्विकार प्रकाशवान् ज्ञानानंद स्वरूपको धारणकरके मायाके जो गुणहैं उनसे अलग व निर्लिप्त होता है और फिर उन गुणों से सम्बन्ध नहीं रहता वहां से आगे जो दूसरे स्थान सब नित्यमुक्त इत्यादि भगवद्भक्तों व पार्षदोंकेहैं उनके और वहां के रहनेवालों के दर्शन करताहुआ और उनसे पूजा व सत्कारको प्राप्त होताहुआ अपने स्वामीके निज निवास स्थानके द्वारपर पहुँचताहै कि किसीके सिद्धांत में वह वैकुण्ठहै और किसीके गोलोक और किसीके अयोध्या तब पार्षद लोग व द्वारपालक सब दण्डवत् व महासत्कार करने पीछे भीतर लेजातेहैं वहांकी झलक व तड़प व प्रभाव व प्रकाश पूर्णब्रह्म परमात्माका कि उसीसे सबस्थान व वाटिका फुलवाड़ी व जल-यन्त्र व जलप्रणाली व कूप व मार्ग इत्यादि जो कुछ मन व विचारके बुद्धिको देखने में आवें तैयारहैं सुख दर्शन करताहुआ अपने स्वामीके पास पहुँचता है और वहां भगवत् पूर्णब्रह्म परमात्मा सच्चिदानन्दघन स्वामी और उनकी परमप्रिया व उनके निकट निवासी की ओरसे सब रीति प्यार व दुलार व प्रेम कृपा व दया कि इस पहुँचनेवालेपर होती है बोलबतराव होने पीछे उससमय यह कहता है कि मैं नित्यनिर्विकार ज्ञानानन्द स्वरूप प्रकाशवान् ब्रह्म हूं अबतक मायाके जालमें फँसाथा अब आपकी कृपासे छूटा अपने स्वरूपको प्राप्तहुआ पीछे उसके चाहे भगवत् स्वरूप में मिलजाय अथवा वही अधिकार व सेवा उसको मि-लतीहै कि जिस ओर चाह उसकी है और परमानन्दमें निश्चल व मग्न

होकर उस परमपद में वासकरता है यद्यपि आप इतना बल व सामर्थ्य रखताहै कि कोटानकोट ब्रह्मांडोंको उत्पन्नकरके पालन और नाशकर देवै परन्तु उस ब्रह्मानंदके स्वादमें ऐसा मग्न रहताहै कि दूसरी ओर चाह नहींहोती जो कुछ वेद व शास्त्र और सम्प्रदायवालोंके सिद्धान्तके अनुसार समझमें आया लिखागया और कोई २ बातका विशेष वर्णन व निर्णय इसहेतु न किया कि किसी एक सम्प्रदायके सम्बन्धमें वह हो-जायगा और चाहना यह थी कि सब सम्प्रदायवाले अपने निश्चय के अनुकूल अपना अर्थ सिद्धकरलेवैं सो ऐसेही अक्षरोंसे वहांलिखागया॥

निर्गुणपंथ और भक्तिमार्ग में विशेषता किसको है इस बातका वर्णन॥

अब एक यह सन्देहहुआ कि बहुतसेलोग भक्तिमार्गपर ज्ञानमार्ग की बड़ाई वर्णनके श्रुति व शास्त्रोंके वचनको प्रमाणदेकर मुक्तिकाहोना निर्गुण ब्रह्मके ज्ञानहोनेपर वर्णन करते हैं और इस भक्तमालमें आदि से अन्त पर्य्यंत बड़ाई और महिमा भगवद्भक्ति और सगुणब्रह्म की वर्णन होकर उसी के प्रभाव करके उद्धार का होना वर्णनहुआ सो इन दोनों मार्गोंमें वास्तव करके बड़ाई किसमार्ग को है और किससे मुक्ति मिलती है सो उत्तर पीछे लिखैंगे यहबात जानेरहो कि वास्तव करिके मुख्य अर्थ ज्ञान शब्दका ईश्वर माया जीवके स्वरूप जानने के हैं और निर्गुण ब्रह्मका अर्थ यह है कि माया के गुणों से वह परमात्मा अलग निर्लेप है परन्तु कोई कोई लोग ज्ञान शब्दका तात्पर्य जीव व ईश्वरके एक होनेसे समझते हैं और ईश्वर को अव्यक्त मानते हैं स्वरूपवान् नहीं मानते और उसको निर्गुणब्रह्म विख्यात करतेहैं सो इस वादानुवादमें उन निर्गुण मतवालोंके निश्चयके अनुसार दोनोंपदके अर्थात् ज्ञानपद व निर्गुणपद के अर्थको समझना चाहिये और सगुणपद का तात्पर्य उपासकों व भक्तोंके इष्टदेवसे और मुख्यअर्थ सगुण स्वरूपका आगे लिखैंगे व जो संदेह ऊपर लिखआये तिसका उत्तर पहिलेही श्री-कृष्णस्वामी ने अर्जुनसे गीतामें वर्णन कियाहै अर्थात् अर्जुनने भग-वत् से पूंछा कि दोनों मार्गोंमेंसे कौनसा मार्ग उद्धारके निमित्त विशेष-तर है भगवत्ने आज्ञाकी कि जो मेरे में मनलगाकर विश्वाससे मेरी उपासना अर्थात् मेरीभक्ति करते हैं सो योग्यतम अर्थात् बहुत अच्छे हैं और जो निर्गुण अर्थात् अरूप व अव्यक्त जानकर उपासना करते

हैं यद्यपि वे भी मुझको प्राप्तहोंगे परन्तु क्लेश बहुत अधिक उस में है काहे कि अव्यक्त अर्थात् अरूप की उपासना और प्राप्ति में दुःख व परिश्रम बहुत है फिर ब्रह्मस्तुति में ब्रह्माजीका वचन है कि हे महाराज जो कोई अपने आपको मुक्त होनेका गर्व मानकर आपकी भक्ति नहीं करते और शुष्कवाद विवादमें बड़े बुद्धिमान् हैं जो वे बड़ेकष्टसे किसी उत्तम पदको पहुँचभी जावें तो फिर गिर पड़तेहैं किसहेतु कि आपके चरणकमल से विमुख हैं और जिन लोगों ने आपके चरणकमलों में मन लगायाहै सो लोग बड़े २ देवतोंके ऊपर होकर वहां पहुँचतेहैं कि जहांसे फिर नहीं फिरते तीसरे स्कन्धमें कपिलदेवजीने अपनी माता को उपदेशकिया कि भगवद्भक्ति सिद्धहै अर्थात् निर्गुण ज्ञानसे अधिक है जो निष्काम हो फिर कैसेहो कि इन्द्रियां व उनके देवता व मन सब भगवत् में लगजावें पद्मपुराण में लिखाहै कि ज्ञान और योग इत्यादि से क्या है केवल भगवद्भक्तिही मुक्तिकी देनेवाली है भागवतका वचन है कि हे महाराज जो तुम्हारी भक्ति को छोड़कर केवल निर्गुणज्ञान के लाभके हेतु क्लेश व दुःख उठातेहैं उनको केवल दुःखही हाथ रहता है जिसप्रकार भूसे के कूटनेवालोंको कि सिवाय दुःखके दूसरा कुछ हाथ नहीं लगता और जिनलोगों ने अपने सब कर्म्मोंको आपके समर्पण कियेहैं और तुम्हारे चरित्र सुनते हैं वे तुम्हारीभक्तिको पाकर मुक्त होजातेहैं यद्यपि इन वचनों सेज्ञानमार्गपर भक्तिमार्गकी बड़ाई व विशेषता स्थिर व सिद्धहोगयापरन्तु मनको यह उमंगहुई कि थोड़ा और भी वृत्तांत लिखाजाय सो कुछ लिखताहूं और सब पुराणोंमें श्रीमद्भागवतको प्राधान्यताहै इसहेतु प्रमाणके निमित्त कुछ वचन भागवतके लिखे जावैंगे दूसरे पुराणों के वचन लिखनेका कुछ प्रयोजन नहीं समझा और जानेरहो कि चारोंवेदकासार उपनिषद् और सब उपनिषदोंकासार गीता उपनिषद्है और निर्गुण व सगुणमतके सब उपासकों ने उसगीताके वचनका प्रमाण दृढ़करके अंगीकार कियाहै इसहेतु कि जैसा वेद भगवत्के मुखसे उत्पन्नहुआ ऐसेही यह गीताहै सो उसके मुख्य सिद्धांतके कोई २ वचनों को तर्जुमा करके लिखूंगा भागवत में भगवत्का वचनहै कि भक्तियोग जो विख्यातहै और मैंने वर्णन किया है उसके प्रभाव करके तीनोंगुणों से अर्थात् मायासे छूटकर जीव मेरे

भावको प्राप्त होताहै ॥ बचन दूसरा मेरेभक्त सारूप्य इत्यादि मुक्तिको मेरे देनेपर भी नहीं लेते केवल मेरीभक्ति चाहतेहैं ॥ बचन तीसरा मेरे भक्त स्वर्ग और धरतीपरके सबसुख कदापि नहीं चाहते हैं परंतु मेरी भक्ति चाहतेहैं ॥ बचनचौथा मेरेभक्त कैवल्य मुक्तिको भी नहीं चाहते यद्यपि मैं देताहूं ॥ बचनपांचवां दूसरे बचनके अनुसार कुछ थोड़ान्यून विशेषहै हे अर्जुन मेरेहीं में मनलगावै और मेराही भक्तहो और मेरेही निमित्त यज्ञकरै अर्थात् जपकर और मुझीको दण्डवत्कर कि मुझही को प्राप्त होगा यह सत्य कहता हूं इस अध्याय से बहुत अच्छे प्रकार निश्चय होगया कि ज्ञान व विज्ञान केवल भक्ति हैं दशवें अध्याय में भगवत् ने अपनी विभूति स्वरूपका वर्णन करके ग्यारहवें अध्याय में अपना स्वरूप अर्जुन को दिखाया और कहा कि न मैं वेदों से न तप से न दानसे न यज्ञ से देखने में आताहूं कि जैसा हे अर्जुन तूने देखा और यह भी कहा कि अनन्य भक्ति से मिलता हूं जैसा मैं हूं इस अध्याय से भी यही सिद्धांत ठहरा कि भगवत् केवल भक्तिसे जानाजाता है बारहवें अध्याय में सम्पूर्ण भक्ति का बर्णन हुआ दूसरी चर्चा कुछ नहीं और निज अभिप्राय उसका इस विवादके आरम्भमें वर्णन करचुका हूं तेरहवें अध्याय में यद्यपि भगवद्भक्ति का वर्णन एक जगह हो चुकाहै परन्तु वह अध्याय प्रारम्भसे समाप्त पर्यन्त ईश्वर माया जीव और दूसरे तत्त्वोंको वर्णन करताहै चौदहवें अध्यायमें भगवत्ने माया के तीनों गुणों का वर्णन करके अन्त में कहा कि जो मुझको दृढ़भक्ति से सेवन करते हैं सो उन तीनोंगुणों से छूटकर ब्रह्मस्वरूप होनेके योग्य होते हैं पन्द्रहवें अध्याय में भगवत्ने अर्जुन को शरणागती मन्त्र उपदेश किया और जीव तटस्थ से अपने आप को अलग पुरुषोत्तम नामसे वर्णन करके कहा कि जो मुझ को पुरुषोत्तम जानताहै सो सब प्रकारसे मेरा भजन करताहै यह अतिगुप्त बात तुझसे मैंने कही है हे अर्ज्जुन जिसको जानकर कृतकृत्य होजावै भगवत् के इस वचन पर अच्छेप्रकार विचार करना चाहिये कि निर्गुण मार्ग्ग कब सिद्धांत रहा अर्थात् भगवत्ने जीवको पुरुषोत्तमसे अलग वर्णन किया और कृतकृत्य होनेका निश्चय पुरुषोत्तमके जानने पर समाप्तकिया तो विना परिश्रम और विनासन्देह प्रकट व दृढ़होगया कि ईश्वर सगुण स्वरूपहै

कि भगवत् के वचनों से सिद्धांत सब शास्त्रों का भगवद्भक्तिही दृढ़हु
और दूसरे पुराण भी भगवद्भक्तिही को सबमार्ग और धर्म कर्मकाफल
वर्णन करते हैं और भगवत्का मिलनाभी कि उसकानाम मुक्ति है के
वल भक्तिसे बहुतशीघ्र होताहो तो भक्तिसे अधिक दूसरे किसमार्गके
अच्छा समझाजाय और दूसरी कौनसीराह ऐसी है कि जिसको बड़ा
दीनीजाय भक्तिही भगवत् के मिलने के निमित्त मौलिक व स्वतंत्र व
सार व सिद्धान्त सबवेद व शास्त्रोंकी है विनाभक्ति किसीप्रकार भगवत
किसी को न पहिले मिला न अब मिलेगा ज्ञान शब्दका अर्थ पहिलेहं
लिखिआये कि जीवमाया ईश्वरके जानने को कहते हैं जो निर्गुण उ
पासकोंका यहहठ और निश्चय कि यहशब्द एक तत्त्वको कहताहै तो
इसमें भी भक्तिही की सहायता है क्योंकि जबतक ईश्वर के एक और
सबसे निर्लेप होनेका ज्ञानहोगा तबतक मुक्ति कब होसक्ती है सो अ
नन्य भक्तिका कई जगह वर्णन हुआहै उपासक तत्त्वमसि और सोहं
इत्यादि महावाक्य को मूलकारण अपने मतका समझते हैं और उन
महावाक्योंके अर्थ सगुणउपासनाको प्रकट करते हैं कि सो पदसे अ
हंपद आप भिन्नता का अर्थ सूचित करता है व इसीप्रकार त्वंपद तत्त्व
पद से भिन्न सूचित होताहै और जो यह सब महावाक्य और ज्ञानश
ब्दभी जीव ईश्वरके एकहोने को निर्गुण उपासकों केकथनके अनुसार
समझाजावै तब भी सिद्धान्त सगुण उपासकों की विशेषता है क्योंकि
कोई उपासकों ने जीव ईश्वरको एकही जाना अङ्गीकार किया है और
सायुज्यमुक्ति उनका मुख्य निश्चयहै अब यह विवाद उत्पन्न हुआ कि
वेदान्तशास्त्र वेदका अंगहै और उस शास्त्रके बड़े बड़े बिस्तारग्रंथ देखने
में आते हैं उसमें निर्गुण उपासकों का सिद्धान्त लिखा है उसका क्या
वृत्तान्तहै सो जानेरहो कि वेदान्त वेदके अन्तभाग अर्थात् उपनिषदों
कहते हैं और जो उपनिषदों में वर्णन हुआ सोई गीताजी और शारी-
रकसूत्रमें लिखाहै तो मुख्य वेदान्तशास्त्र यह तीनों हैं कि बड़ेबड़े ग्रन्थ
ऊपरकहे सोहैं निर्गुण उपासकों ने उनका तिलक आप बनाया और
उसके सहायके निमित्त विस्तारकरके ग्रन्थ अलग बनाया उसकानाम
वेदान्त रखलिया नहीं तो वास्तवकरके उपनिषद् और गीता और सू-
त्रोंका सिद्धांत व सम्मत भगवद्भक्ति है और भगवद्भक्ति के सम्बन्धके

जो तिलक व भाष्य व ग्रन्थहैं सो मुख्य वेदान्तहै और भगवत् उपासकोंमें प्रवर्त व विख्यात है इस कहनेका तात्पर्य्य यह कि कुतर्करहित निर्विवाद भगवद्भक्तिही सर्वमार्गोंकी सरताज व शिरोमणिहै यह सिद्धान्त सबशास्त्रोंका द्वेषरहित लिखागया भला इसको रहनेदीजिये जो निर्गुण उपासकोंहीके वचनों को सिद्धांत मानाजाय तबभी भक्तिहीको बड़ाई प्राप्तहोती है क्योंकि उनका वचन है कि वही निर्गुणब्रह्म सगुण स्वरूप होजाताहै अब इसमें यह पूंछते हैं कि वह सगुणस्वरूप जो निर्गुणब्रह्म ने प्रकट करलिया ईश्वर है कि आवागमनके परम्परामें बद्ध है जो जन्मलेना व मरना उसको है तो ईश्वर कहना न चाहिये और जो ईश्वर है तो उसके सेवनसे मुक्ति क्यों न होगी सिवाय इसवादके और एक यह बातहै कि निर्गुणमार्ग्ग के अनुसार वेदश्रुति ने कहाहै कि निर्गुण परमात्मा अपने भक्तों पर कृपाकरके सगुणरूप होजाताहै इस में यह पूंछते हैं कि जो उस सगुणरूपकी भक्ति व सेवनमुक्ति न हुई तो उस निर्गुणब्रह्म ने कृपा क्याकरी वरु वह कृपा एक प्राणपीड़ा होगई क्योंकि हज़ारों जन्मोंतक एकजीव बेचारेने परिश्रमकिया और अन्तकाल वह ईश्वर मुख्यकार्य के सिद्धकरने में असमर्थ निकला तो वह निर्गुणब्रह्म एक धोखेबाज व कपटी हुआ कि लोगों को एक हरा बगीचा बातोंका दिखलाताहै और उसी श्रुती के अनुसार दूसरा प्रश्न यह है कि जो वेद श्रुती सिद्धान्त व ठीकहै और यहभी बात उनकी सच्चहै कि निर्गुणमार्ग सेही मुक्ति होती है तो इस भगवत्वाक्यका क्या अर्थ कियाजायगा॥ हे अर्ज्जुन मेरे जन्म व कर्म जो कोई जानताहै अर्थात् मेरे चरित्रों में मनलगाताहै सो शरीरको छोड़कर फिर जन्म नहींलेता और मुझको प्राप्तहोता है अभिप्राय इसके लिखनेका यहहै कि मुक्तिहोना भगवद्भक्तिसे जो मानलिया है तो इस सिद्धान्त में विरुद्ध पड़ता है कि बिना निर्गुण मार्ग के भक्तिनहीं और जो यह सिद्धान्त ठीक है तो उसश्रुती और भगवत्के वचनका उत्तरदेना उचितहै कि सच्च है कि झूंठ इसके सिवाय सिद्धान्त की बात है कि जो जिसकिसी का ध्यान करता है सो वही रूप होजाताहै तो इस सिद्धान्तके अनुसार जिस किसीने भगवत् को पूर्णब्रह्म परमात्मा सच्चिदानंदघन व्यापक मायाधीश अनंतब्रह्मांडों का नायक जानकर उसके रूप अनूप का चिन्तवन किया सो कहा

जायगा जो यह कहोगे कि वह अपने स्वामीका रूप होजायगा तो यह भी कहना उचित है कि उसके स्वामी में वे गुण कि जैसा जानकर उसने चिन्तवन कियाहै कि नहीं जो हैं तो सब प्रकारसे वह चिन्तवन करनेवाला मुक्तहोगया कि सिद्धान्त यही है और जो वे गुण नहीं तो वैसा गुणवाला दूसरे किसीको निश्चय करदेना चाहिये नहीं तो सिद्धान्तमें बड़ा विरुद्धपड़ेगा यद्यपि इनबातोंको निर्गुण मतवाले मानके यहबात बनावते हैं कि निश्चय करके जो भक्तिकरके अपने स्वामीको पहुंचगयाहै उसको आवागमन नहींहोगा परन्तु वास्तवमें मुक्ति अर्थात् निर्गुणब्रह्मकी प्राप्ति तबहींहोगी कि जब अपने स्वामी के साथ अन्तर्द्धान होकर निर्गुण ब्रह्ममें मिलजावेगा अभिप्राय उनका यह है कि निर्गुण ब्रह्मके मिलनेका भक्ति एक साधनहै सो इसकाउत्तर तो हम ऐसीमोटी बुद्धिवालों का तो यहहै कि हमको आंब खाना कि पेड़ गिनना तात्पर्य हमारा आवागमनसे छूटनेकाथा सो तुम्हारी कृपासे आप प्राप्तहोगया अब अधिक वाद विवाद का क्या प्रयोजन है और किस हेतु सिवाय अपने स्वामी के दूसरे किसी को ईश्वर अंगीकार करें परन्तु जो कोई निज निचोवा के वृत्तान्त और वेदशास्त्रों के सिद्धान्त जानते हैं वे निर्गुण मतवालोंकी बातोंको बिना जड़मूलका कहकर उत्तरदेते हैं कि वह वचन उनका तब निश्चय करने के योग्यहोता कि जो सगुणब्रह्म एक अंग निर्गुणब्रह्मका होता और जब कि निर्गुणब्रह्म एकअंग सगुणब्रह्मका है तो वह सिद्धांत उनका कब अंगीकार करनेके योग्यहै निश्चय विरुद्ध व विपरीतहै सो सूक्ष्मकरके वृत्तान्त उसका यहहै कि पन्द्रहवीं निष्ठा में शास्त्रोंके सिद्धान्त के अनुसार जहां ईश्वर का वर्णन हुआ है तहां पांचप्रकार का निरूपण लिखागया उसके चौथे निरूपण में यह लिखागयाहै कि वह स्वरूप चौथा उस सगुणब्रह्मका अन्तर्यामी अव्यक्त ज्ञानानन्द अलख अविनाशी निरंजन निर्गुणब्रह्म सर्वव्यापक है तो प्रकट होगया कि निर्गुणब्रह्म अंग सगुणब्रह्मकाहै और निर्गुणमत वाले उसी चौथे स्वरूप के उपासक हैं सिवाय इसके वाराहीसंहिता में लिखाहै कि निर्गुणब्रह्म प्रकाश व छाया सगुणब्रह्मकाहै और निजरूप भगवत का सगुणब्रह्म है और इसी प्रकारका वचन सनकादिकसंहिता में लिखाहै तो इन वचनोंसे पन्द्रहवींनिष्ठाके चौथे निरूपणकी मिलान

होती है सो निस्सन्देह निर्गुणब्रह्म एकअंग सगुणब्रह्मका है और प्रकारके विवाद व सन्देहके दूर करनेके निमित्त निर्गुणब्रह्मका अर्थ इसवाद के प्रारम्भमें लिखि आयाहूं कि जो ईश्वर मायाके गुणोंसे भिन्न व निर्लेपहोय उसको निर्गुणब्रह्म कहते हैं अरूपको नहीं कहते हैं और इसी प्रकार ज्ञान शब्दका अर्थभी लिखागया कि ईश्वर मायाजीवके जानने का नाम ज्ञानहै और वह एक साधन भगवद्भक्तिकाहै कि इसका सिद्धांत गीताजी के श्लोकोंके तरजुमे जो ऊपर लिखिआये हैं उनसे अच्छेप्रकार होताहै और यहां भी दो एक वचन लिखताहूं गीताजीमें भगवत् ने कहाहै कि जो मुक्तिके निमित्त मेरे शरण होते हैं सोई ब्रह्मके जानने वाले और अध्यात्मज्ञान व सब कर्मोंके जाननेवाले हैं (शाण्डिल्यसूत्रहै) कि ब्रह्मकांड अर्थात् ज्ञान भगवद्भक्ति जानने के निमित्त है सो निश्चय करिके ज्ञान एक साधन भक्तिकाहै और भगवद्भक्तिमें दृढ़होना विज्ञानहै अब जो यह शङ्काहोय कि निर्गुण शब्दका अर्थ जो उपासकों के इष्टदेवके सम्बन्धका ठहरा तो सगुण स्वरूपका कौन अर्थ किया जायगा सो प्रकट है कि जब निर्गुणब्रह्मका अर्थ मायासे निर्लेपका हुआ तो सगुण शब्दका अर्थ उस भगवत् स्वरूपका ठहरा कि अपनी माया के आश्रय होकर अपने भक्तके कार्यके हेतु प्रकटहोताहै और जिसका चरित्र संसार समुद्रके उतरनेके वास्ते दृढ़सेतुहै जो कोई संसारसमुद्रसे पारहुआ तो उन चरित्रोंही के कृपा व प्रभावसे उन चरित्रोंसे अधिक और कोई निर्वाहकी राह न आगेरही न अबहै न आगेपर होगी इस बातको वेद व शास्त्र उच्चस्वर से पुकारकर कहते हैं नितांत सब शङ्का संदेह दूर होनेपर भगवद्भक्तिही मुख्यहै उससे सिवाय और कोई राह अच्छी व सीधी नहीं और ईश्वरका स्वरूप निर्गुण मतवालोंका भगवद्भक्ति के उपास्य ईश्वर परमात्मा का एक अङ्ग है इस लिखने में जो यह कोई शङ्काकरै कि जो यह निर्गुणब्रह्म भगवत्के सब रूपों में एक अन्तर्यामी व व्यापक अथवा आयाहै तो उसके उपासनामें क्या विवादहै क्योंकि भगवत् उपासकोंका सिद्धांत है कि भगवत् के कोई एक रूप चाहै धाम चाहै नाम अथवा चरित्र की उपासना दृढ़होनी चाहिये निश्चयकरके उद्धारहोगा उत्तर इसका यहहै कि इस विवादके आरम्भ से व यहांतक यहबात कहीं नहीं लिखी कि उनकामत अशुद्धहै केवल

भगवद्भक्ति और सगुण स्वरूपकी विशेषता का वर्णन कियागया है जो वह लोग सिद्धांत व सच्चीबात को समझकर निर्गुण ब्रह्मका आराधन करें तो निश्चयकरके कबहीं न कबहीं भगवत् सच्चिदानन्दघन पूर्णब्रह्मका वास्तव स्वरूप उनके हृदयमें प्रकटहो और उद्धार होजाय परंतु विचारकरना भी तो उचितहै कि वह मार्ग्ग कैसा कठिन और क्लिष्ट है पहिले तो भगवत् ने आप गीताजी में कहा है कि अव्यक्तकी राह अर्थात् निरूपकी प्राप्ति देहाभिमानी को दुःखरूपहै अतिकठिन है सिवाय इसके उसका निरूपण करना कठिन जो कदाचित् किसीने निरूपणभी किया तो उसका समझना उससे और अधिक कठिन और जो किसी प्रकार समझ भी लिया तो आचरण व आरूढ़ होना उसपर कैसा कठिन व क्लिष्टहै कि जानै पहिले युग व समयमें कोई आचरण करनेवाला उसका हुआहोगा क्योंकि जो वस्तु बुद्धि व समझ से बाहर है उस में किसप्रकार मनलगै और बिना एकाग्रहोने मनके उसका प्राप्तहोना दुर्लभ है इस हेतु उस परम्परापर पहुँचना जानेरहना कदाचित् अगणितजन्मों में बड़ेकष्टसे किसी एकको कोई पदवी प्राप्तभीहुई तो ऊपर ठहरना अत्यन्त कठिनहै और गिरना बहुत सहज क्योंकि इन्द्रियोंकी बलात्कारी सबको मालूम है तात्पर्य्य यह कि आदि से अन्त पर्य्यन्त सिवाय क्लिष्टताके और कोई बात दिखाई नहीं पड़ती और भगवद्भक्ति की सहजता व भगवत्के शीघ्र मिलनेका वृत्तांत यहहै कि किसी प्रकार से भगवच्चरित्रों में थोड़ीसी प्रीति होनी चाहिये वह चरित्रही भजन और कीर्त्तनमें लगाकर भगवत्स्वरूपको हृदयमें प्रकट करदेते हैं उस स्वरूपका यह प्रतापहै कि दिन २ भक्तके हृदय में अपने निजझलक व प्रकाश को बढ़ावताहुआ दृढ़ निश्चय व विश्वास कृपाकरके अनन्य मनसे संसारके स्वादकी चाहना दूर करताहुआ और ज्ञान वैराग्य को प्रकाशित करताहुआ और नामकीर्त्तन व भजनके सहायसे पहिले करुणा क्षमा तितिक्षाइत्यादि भक्तके मनमें उत्पन्न करदेताहै तिसकेपीछे अपनी यथार्थ सुंदरता व अनूपछबि हृदयकी आंखोंको दिखाकर ऐसा वश व मोहित करलेताहै कि सिवाय उसरूप अनूप और छवि माधुरीके दूसरीओर वह मन नहीं जाता फिर वह कृतकृत्य व कृतार्थ होकर उस रूप अनूप में दृढ़ व निश्चल होजाता है कि उसीका नाम जीवन्मुक्तहै

इसके पीछे मुक्ति होती है सो आदि अन्त तक सहज और शनैःशनैः सुखरूप इस मार्गके और मार्ग कठिनहैं कोई वात देखने में नहीं आती जन्म मरणकी पीड़ासे भयकरके उसी ओर सम्मुख होनेकी देरहै भगवत्को अपनी करुणा और दयालुता और दीनवत्सलतामें तनक देर नहीं अपने मिलनेका सब सामान व सामग्री आप कर देताहै जगत्में बहुत जगह सुना और कहीं कहीं देखने में भी आया कि झूंठे व विषयी प्रेमियोंके मनकी लगन अज्ञानी व अनेक पाप व अवगुणोंसे भरीहुई स्त्रियोंके मनमें प्रवेश करके उन स्त्रियों को उनकी चाह करनेवालों को मिला देताहै तो वह परमात्मा जो कि शुद्ध सच्चिदानन्दघन सब जाननेवाला व उत्पन्न करनेवाला सब परिपाटी व प्रबन्ध व रीतिपर कायाभिमानी व प्रियवल्लभपनेका अर्थात् आशिकी व माशूकीका है अपने प्रेम करनेवाले पर दया करके क्यों नहीं शीघ्र वह मिलैगा और क्यों न मनोरथ पूर्ण करैगा नहीं तो उसीकी मर्य्यादा प्रबन्धमें दोष प्राप्त होगा तात्पर्य्य इन बातों के कहने का यहहै कि जो कोई ऐसे सहज व सुख्य मार्गको छोड़कर भगवत्के मिलने के निमित्त अतिक्लिष्ट व एक अङ्ग कीओर चित्त देते हैं वे निश्चय करिकै बुद्धिहीन व अल्पभागी व कर्महीन हैं रत्नोंको डालकर कंकरोंको उठाते हैं कामधेनुको छोड़कर दूधके निमित्त आकका पेड़ खोजते हैं और एक चोरकी बात स्मरण होआई कि निर्गुण खसमको स्त्री भी अंगीकार नहीं करती पुरुष समझदार व बुद्धिमान् तो निर्गुणको अपना स्वामी क्यों अंगीकार करै सो गोपिका भगवत्की परमप्रिया उद्धवसे कहती हैं॥ सूरछांड़ि गुणधाम सांवरो को, निर्गुण निरबाहै॥ और एक बात विचार व न्याय के योग्य है कि प्रेम बिना सुन्दरता व शोभाके नहीं होता और जबतक प्रेम नहीं तब तक मिलना भगवत् का कदापि नहीं होसक्ता॥ उस मतवालोंका सिद्धांतहै कि जबतक वर्णाश्रम के धर्म्मोंको करके हृदय निर्म्मल न हो तब तक वह ज्ञान उपदेश का अधिकारी नहीं अब वह ब्रह्मज्ञान गली २ ऐसा बहा २ फिरता है कि जो थोड़ाभी वर्णनकरूं तो बहुत विस्तार होजाय और द्वेषताका कलंक अलगरहा इसहेतु उसकी चर्चाहीको छोड़दिया और अच्छीप्रकार समझ लिया कि विष्णुपुराण व भागवत इत्यादि में जो वृत्तांत कलिधर्म के लिखे हैं और यहभी वर्णन हुआहै कि कलियुग

में स्त्री पुरुष ऐसे होंगे कि सिवाय ब्रह्मज्ञान के और कुछ न करेंगे और कर्म उनके ऐसे होंगे कि थोड़ेसे लालचमें आयकर ऐसे कर्म करेंगे कि जिससे चांडालका भी हृदय कांपजावै सो वह समय अब आगया अब और वाद विवाद को विरुद्ध करके अतिअधीनताई व प्रार्थनापूर्व्वक विनती करताहूं कि जो सूर्य्य पश्चिम उगे और शशाके शिरपर सींग जमै व आकाश में फुलवारी लगे व पानी में आगलगे तो सन्देह नहीं यह सब होय परन्तु यह कदापि २ नहीं होसकता कि विना भजन भगवत् पूर्णब्रह्म परमात्मा मेरे स्वामी के इस संसार समुद्रसे पार होजावै यह प्रताप भगवत्के सेवन भजनहीका है कि वह संसार समुद्र गोपद जलके सदृश होजाताहै यह सिद्धान्त व सार वेद व शास्त्रों का है॥

थोड़ासा वृत्तान्त सम्प्रदायों के चारोंभेदका और वास्तवमें उनका परिणाम में एक होना॥

अब यह लिखना उचितहुआ कि सब सम्प्रदायवाले अपनी संप्रदायको दूसरी सम्प्रदाय पर विशेष जानकर उद्धारके निमित्त उसीको सत्य व सिद्धान्त समझते हैं और उसीकी विशेषता वर्णन करते हैं सो इन चारों सम्प्रदाय में अच्छी व विशेष कौन सम्प्रदायहै सो जानेरहो कि संसार समुद्रसे पार करदेने के निमित्त चारों सम्प्रदाय एकही भांति व बराबर हैं किसी में कुछ न्यून व विशेषता नहीं सब सम्प्रदाय वालों ने भगवत्की अद्वैतता एकही प्रकार व बराबर लिखी है और प्रमाण श्रुति व स्मृति इत्यादिका सब सम्प्रदायवालों में एकहै और युक्तहै कि सिवाय भगवत् के न कोई उद्धार करनेवाला है न उसके सिवाय और किसी देवताका साधन चाहिये और इसीप्रकार भगवत्के धाम व विग्रहमें सबका बराबर एक सम्मत है केवल थोड़ी बातपर झगड़ते हैं एक तो माया और जीवके निर्णय में आपसमें उनलोगों के निश्चयमें भेदहै दूसरे तिलक और मुद्रा धारणकरने और उसकी मूर्त्ति बनाने में विरुद्ध हैं तीसरे सब सम्प्रदायवाले अपने इष्टदेवको अवतारी व स्वयंस्वरूप और दूसरों को अवतार व अंश व विभूति अपने स्वामी का जानते हैं सो इस विरुद्धता का वृत्तान्त वेषनिष्ठा व धामनिष्ठा और चारों आचार्योंकी कथा व चारों निष्ठाओंसे मालूम होसक्ताहै॥ रामानुज स्वामी की सम्प्रदायमें कैंकर्य निष्ठाहै व ईश्वरको चिदचिद्विशिष्टाद्वैत मानतेहैं

अर्थात् माया और जीवभी उसी अद्वैतसे मिलेहुये हैं और नित्यहैं व निम्बार्क स्वामी की सम्प्रदायमें अनन्यता की निष्ठाहै व जीव ईश्वरमें भेदाभेद अद्वैताद्वैत अर्थात् एकभी व दोभी हैं और व्याप्य व्यापक सम्बन्ध करके तात्पर्य्य यह कि जो जिसकरके व्याप्यहै सो तद्रूपहै और माध्वसम्प्रदाय वालोंकी निष्ठा कीर्त्तनकी और द्वैत सिद्धान्तहै व विष्णु स्वामी सम्प्रदाय आत्मनिवेदन की निष्ठा व शुद्ध अद्वैत संस्मतहै सो इन भेदोंपर विचार कियाजाय तो एकही है क्योंकि वास्तव वस्तु सर्व निष्ठाओं की एकही प्रकारकी है जो कुछ झगड़ा व वाद आपुसमें है सो अपनी अपनी राहमें प्रीति व विश्वासके बढ़ाने के निमित्त है वास्तव करिके कुछ विरुद्ध नहीं ॥

स्मार्त मतके वर्णन के बहाने अनन्य शब्दका अर्थ वर्णन और प्रयोजनवाली दूसरी बातकाभी वर्णन ॥

अब यहबात वर्णन करनीपड़ी कि स्मार्त सम्प्रदाय की भी चर्चा इस भक्तमाल में हुई है उस सम्प्रदायवालों का क्या मार्ग है और किस देवताका आराधन करते हैं और फल व परिणाम उस मार्गका क्याहै सो जानेरहो कि स्मृति अर्थात् धर्मशास्त्र के अनुसार चलना व सोरह कर्म्म गर्भके आरम्भ से मरणपर्यन्त को मुख्य जानना उनका परम्परा मार्ग है जिसने पहिले यज्ञोपवीत दिया अथवा जिससे विद्यापढ़ी उसी को गुरू जानते हैं ऋषीश्वरों अर्थात् मनु और याज्ञवल्क्य इत्यादिको आदि आचार्य्य समझते हैं और ऋषीश्वर बहुत होगये इसहेतु कोई एक मुख्य प्रवर्त्तक उस मार्ग्गका नहीं कहने में आता परन्तु अन्त में सेवड़ों के बधहोने के पीछे शङ्करस्वामी से उस मार्ग्ग की बहुत विशेष प्रवृत्ति हुई और वेलोग सार फल अपने धर्म कर्मका निराकार निर्गुण ब्रह्मकी प्राप्तिको समझते हैं इसहेतु शङ्करस्वामीको अन्तका आचार्य्य समझना चाहिये स्मृतिकी पूजा इत्यादि के निमित्त पुस्तक पद्धति की जानते हैं पञ्चाङ्ग पूजा करते हैं अर्थात् गणेश शिव विष्णु दुर्गा सूर्यकी मूर्त्ति एक सिंहासनपर विराजमान करके सबको पूजते हैं और जिस देवतापर विश्वास व प्रेम अधिक होय तिसको मध्य में और चारोंकोनोंपर चार देवताको बैठालते हैं चारों सम्प्रदाय वैष्णवी में से किसीके चेले नहींहोते उनमें से कोई कोई ऐसेभी हैं कि निज एक किसी देवता

ब्रह्म अपने भक्तोंपर करुणा व दयाकरके आविर्भाव होताहै शाण्डिल्य सूत्रमें लिखाहै कि भगवत् के स्वरूप धारण करनेमें केवल करुणा व दयाका कारणहै भगवत्‌ने गीताजीमें कहाहै कि भक्तोंकी रक्षाकरनेको और धर्मको स्थिर रखने को निमित्त युगयुगमें अवतार लेताहूं मेरे उन जन्मों और कर्म्मों के जानने से फिर जन्म नहींहोता तो उन वचनोंके अनुसार जब कि भगवत् अपने परमधाम को छोड़कर प्रकट होता है तो जो चरित्रकरताहै सो भक्तोंपर दया व करुणाके कारणसेहै इसहेतु कि भक्तलोग उनचरित्रोंको कीर्त्तनकरके और अपने स्वामीकी करुणा व दयालुताको देखकर उसी ओर लगे रहते हैं दूसरी ओर चित्त नहीं देते और दूसरों का भी उन चरित्रों के प्रभाव करके उद्धार होजाता है सिवाय इसके भगवद्भक्तों को अनुक्षण ध्यान व चिन्तवन अपने स्वामीका रहता है और जो प्रयोजन आनि पड़ता है तो भगवत्‌को छोड़ और किसीसे नहीं याचते तो रीति व सिद्धान्त के अनुसार भक्तके प्रयोजनके समय उसीका आनायोग्य व उचित होताहै कि जिसको उस भक्तका ध्यान रहताहै और जो उसमें यह कोईकहै कि भगवत्‌में सब कुछ सामर्थ्य और पराक्रमहै क्या और किसीप्रकारसे वह प्रयोजन सिद्धनहींहोसक्ता निज आप आनेका क्या प्रयोजनहै सो जानेरहो कि इस आशंकासे पहिले तो रीति और सिद्धान्तमें भेद पड़ताहै कि ध्यान तो किया किसी और रूपका और कार्य व मनोरथकी सिद्धता किसी और प्रकारसे यह कब होसक्ताहै दूसरे उन प्रचनोंके अनुसार जो ऊपर लिखेहैं दया करुणा में भगवत् के विरुद्ध पड़ता है अर्थात् जब भक्तोंको प्रयोजन हुआ और आप नहीं आया दूसरे किसी प्रकार से प्रयोजन सिद्ध होगया तो वह वचन भगवत् का और दया कहां सचरही किस हेतु कि उन वचनोंमें यह बात लिखी है कि आप मैं आताहूं यह बात नहीं लिखी है कि प्रयोजन सिद्ध करदेताहूं और इसीशङ्काके समाधानमें एक इतिहास स्मरण होआया यह कि किसी महाराजने किसी एक बड़े महानुभावसे पूछा कि ईश्वर सब प्रकार समर्थ है अवतार लेनेका क्या प्रयोजनथा किसी और प्रकारसे भक्तोंका कार्य्य क्यों न करदिया वे महानुभाव उसदिन चुपरहे एकमूर्त्ति उसके छोटे बालकके तदाकार ऐसी बनवाई कि तनक उसके लड़के के स्वरूप से भेद नहीं था और

लड़का खिलानेवालेको समझादिया कि जिससमय हम और महाराज यमुनाके सैरको नावपर चढ़ें उस समय वह मूर्त्ति गोद में लेआना सो वह उसी समय पर लेगया व वह महानुभाव उस लड़के को लेकर महाराज को देनेलगा परन्तु वह मूर्त्ति हाथसे छूटकर यमुना में गिरपड़ी महाराज जो कि उस मूर्त्ति को अपना लड़का समझता था विकल होकर यमुनामें कूदपड़ा कुछ अपने प्राण व डूबने का शोच न किया उस महानुभावने निकलवाया और पूँछा कि तुम्हारेनौकर व मल्लाह सैकड़ों खड़े थे तुम आप क्यों यमुना में कूदपड़े महाराज ने कहा कि मुझको उस लड़के के स्नेह व प्रेम के कारणसे इतनी सुधि व सम्हार न रही कि कुछकहूं इसहेतु आप कूदपड़ा उस महानुभाव ने उत्तर दिया कि यही दशा उस भगवत् की है कि जब अपने भक्तको दुःख में देखता है दया करके विकल हो आप चला आताहै सिवाय इस बातके भगवत् का दृढ़ बाचा प्रबन्ध है कि अपने भक्तों की चाहना पूर्ण करता हूं और उन श्लोकों का अर्थ कई जगह इस ग्रन्थ में लिखागया तो उस बाचा प्रबन्ध के अनुसार जैसी चाहना भक्तकी हुई सोई आयके भगवत् ने पूर्ण की इसके सिवाय भगवत् व भगवत् का चरित्र कल्पवृक्ष के सदृश है जैसा जिस किसी को विश्वास है उसको वैसाही फल देते हैं सो जानकी महारानी के स्वयम्बर में श्रीरामचन्द्र स्वामी व मथुराके रंगभूमि में आप श्रीकृष्ण स्वामी सब लोगों के भाव के अनुसार दिखाई दिये इससे निश्चय होगया कि जिस भक्तने जिस भावसे चिंतवन किया उसको उसी भावसे देखपड़े और वैसाही फल दिया और वैसेही चरित्रकिये एक वृत्तान्त बरसाने में देखने में आया अर्थात् वनयात्रा के समय जब बरसाने श्रीराधिका महारानी के मैके में जाने का संयोग हुआ तो वहां की व्रजवासिनी सब यात्रियों से पैसा रुपैया मांगनेलगीं किसी ने कहा कि जब यह बात कहोगी कि नन्दनन्दन व्रजकिशोर हमारा बहनोई है तब कुछ देवैंगे उन व्रजवासिनियों ने अपने नाते व भावके अनुसार उस राधिकावल्लभ और उसके सम्बन्धीलोगों को सौ गालियां सुनाई और भगवद्भक्तों और रसिकों के हृदयमें प्रिया प्रीतम के रूप अनूप का एक समाज प्रकट कर दिया उस समय एक दो की तो यह दशा देखी कि प्रेमका प्रवाह आंखों से बहता था भग-

ब्रह्म अपने भक्तोंपर करुणा व दयाकरके आविर्भाव होताहै शाण्डिल्य सूत्रमें लिखाहै कि भगवत् के स्वरूप धारण करनेमें केवल करुणा व दयाका कारणहै भगवत्ने गीताजीमें कहाहै कि भक्तोंकी रक्षाकरनेको और धर्मको स्थिर रखने के निमित्त युगयुगमें अवतार लेताहूं मेरे उन जन्मों और कर्म्मों के जानने से फिर जन्म नहींहोता तो उन वचनोंके अनुसार जब कि भगवत् अपने परमधाम को छोड़कर प्रकट होता है तो जो चरित्रकरताहै सो भक्तोंपर दया व करुणाके कारणसेहै इसहेतु कि भक्तलोग उनचरित्रोंको कीर्त्तनकरके और अपने स्वामीकी करुणा व दयालुताको देखकर उसी ओर लगे रहते हैं दूसरी ओर चित्त नहीं देते और दूसरों का भी उन चरित्रों के प्रभाव करके उद्धार होजाता है सिवाय इसके भगवद्भक्तों को अनुक्षण ध्यान व चिन्तवन अपने स्वामीका रहता है और जो प्रयोजन आनि पड़ता है तो भगवत्को छोड़ और किसीसे नहीं याचते तो रीति व सिद्धान्त के अनुसार भक्तके प्रयोजनके समय उसीका आनायोग्य व उचित होताहै कि जिसको उस भक्तका ध्यान रहताहै और जो उसमें यह कोईकहे कि भगवत्में सब कुछ सामर्थ्य और पराक्रमहै क्या और किसीप्रकारसे वह प्रयोजन सिद्धनहींहोसक्ता निज आप आनेका क्या प्रयोजनहै सो जानेरहो कि इस आशंकासे पहिले तो रीति और सिद्धान्तमें भेद पड़ताहै कि ध्यान तो किया किसी और रूपका और कार्य व मनोरथकी सिद्धता किसी और प्रकारसे यह कब होसक्ताहै दूसरे उन वचनोंके अनुसार जो ऊपर लिखेहैं दया करुणा में भगवत् के विरुद्ध पड़ता है अर्थात् जब भक्तोंको प्रयोजन हुआ और आप नहीं आया दूसरे किसी प्रकार से प्रयोजन सिद्ध होगया तो वह वचन भगवत् का और दया कहां सचरही किस हेतु कि उन वचनोंमें यह बात लिखी है कि आप मैं आताहूं यह बात नहीं लिखी है कि प्रयोजन सिद्ध करदेताहूं और इसीशङ्काके समाधान में एक इतिहास स्मरण होआया यह कि किसी महाराजने किसी एक बड़े महानुभावसे पूछा कि ईश्वर सब प्रकार समर्थ है अवतार लेनेका क्या प्रयोजनथा किसी और प्रकारसे भक्तोंका कार्य्य क्यों न करदिया वे महानुभाव उसदिन चुपरहे एकमूर्त्ति उसके छोटे बालकके तदाकार ऐसी बनवाई कि तनक उसके लड़के के स्वरूप से भेद नहीं था और

वर्त् की छवि माधुरी की चिन्तवन में मग्न व बेसुधि थे और उन व्रज-
वासिनियों को भगवत्की सखी जानकर प्रणाम करतेथे और कोई दुष्ट
भाववालों को देखा कि उन स्त्रियों से गाली देकर कुदृष्टि से देखते थे
और हँसी ठट्ठा उनके साथ करते थे अब विचार करना चाहिये कि एक
ओर वालोंको तो गालियों ने महामंत्र का फल दिया और दूसरे गोल
वालों को वे स्त्री और उनकी बातचीत नरकका कारणहोगई अभिप्राय
इस कहनेका यहहै कि जिस किसीको भगवत् व भगवच्चरित्रों में जैसा
भावहै उसको वैसाही देखने में आता है और शास्त्रों में स्पष्ट लिखा है
कि भगवत् का चरित्र भक्तों को तो आनन्द का देनेवाला और दुष्ट व
विमुखों को रसातल पहुँचानेवाला है जैसे सूर्य्य को कमल तो देखकर
खिल जाताहै और कुमुदिनी सम्पुटित होजाती है अथवा सारे संसार
को तो प्रकाश प्राप्त होताहै व उलूक व चमगीदड़ी की आंखोंकी ज्योति
जाती रहती है इससे कोई संदेहका स्थान नहीं कि भगवत् समर्थ और
मालिक और अपने वाचा प्रबन्धका दृढ़ और अपने वचन को सत्य
कहनेवाला और अपने भक्तोंपर अत्यन्त दया करनेवालाहै जो चरित्र
उसने किया और आगे करैगा सब सत्य व समीचीन हैं शंका व कुत-
र्ककी कदापि समवाई नहीं विश्वासयुक्त और प्रेमियों को वह चरित्र
निश्चय व निस्सन्देह आनन्द व ब्रह्मपदका देनेवाला है और विमुख
व बेविश्वासियों को विश्वास छुड़ाकर सातवें पाताल को प्राप्त कर दे-
नेवाला है काहेसे कि कल्पवृक्ष से आनन्द के मांगनेवाले को आनन्द
मिलताहै और दुःख मांगनेवाले को दुःख कि यह पहिले भी लीलानु-
करणनिष्ठा में वर्णन हुआहै मुझको ऐसे शंका करनेवालों की प्रश्नपर
अत्यन्त आश्चर्य हुआ कि उन्होंने बिना समझे शोचे ऐसा प्रश्न नि-
र्बल व अयोग्य किया काहेको क्योंकि जिनभक्तों के हृदयके नयनों को
सिवाय भगवत्के और कोई दृष्टिमें नहीं आता व न बाहर सिवाय उस
के और किसी को जानते हैं तो जो उनको चाहना किसीप्रकार की हो
उसका पूर्ण करनेवाला सिवाय भक्तवत्सल कृपासिन्धुके और कौन नि-
श्चय कियाजाय और उनभक्तों के भीतर व बाहर के नयनोंको सिवाय
उसके और कौन दिखाई दे ॥

कुसंगसे हानि व सुसंगसे लाभ तिसका वर्णन॥

अब लिखनेका प्रयोजन पड़ा कि कौन वस्तु तुरन्त त्यागने योग्य है और कौन वस्तु अंगीकार करने योग्यहै सो जानेरहो कि दुष्ट और खल व विमुखों के संगका त्याग शीघ्र उचित व योग्य है उनका वर्णन करना व लिखना कुछ प्रयोजन नहीं कि थोड़ा वहुत कोई कोई निष्ठा में व विशेषकरके इसके अन्त में लिखि आयाहूं उनके संगको एक करामात विचार करना चाहिये अनेकरूप से लोगों को सताते हैं अर्थात् किसी को बीछ व कालेभौंरा के सदृश हैं और किसीको बौड़हे कुत्ते के सदृश व किसीको मदिरा की रंगत दिखाती है और,किसी के निमित्त हलाहल विषकी मूर्त्ति होजाती है गोसाईं तुलसीदासजी ने जो इनलोगों के संग त्याग के हेतु जो चौपाई उत्तरकाण्डमें कही है सो यह है॥

उदासीन नितरहिय गोसाईं। खल परिहरिय श्वानकी नाईं॥

इस चौपाईके अर्थ कईएक हैं परन्तु सूक्ष्म करके अर्थ यह है कि दुष्ट से दूर रहिये और श्वान जो कुत्ता है तिसकी भांति उसका त्याग उचित है तात्पर्य दूर रहने से यह है कि कुत्ते से जो स्नेह करिये तो वह शरीर में लगके व चाटकर अपवित्र करै और जो उसको मारिये तो भूकै व काटखाय॥ इसीपर व्यासजी का दोहा है॥

दो०व्यासबड़ाई जगतकी कुत्तेकी पहिचान। प्यारकियेमुँहचाटई बैरकिये तनहान॥

अर्थात् दोनों प्रकार से हानिहै और दूररहनेमें कुछ हानिनहीं और टुकड़ा डाल देनेमें भी कुछ हर्ज नहीं होता अर्थात् इस दोहा व चौपाई के दृष्टान्तसे कुछ,उपकार व भलाई करदेने में रुकावट नहीं समझना उनसे,वैर व प्रीति नहीं करना यह मना करते हैं व दूर रहनेको आज्ञा है किसी ने इसी वचनके अनुसार एक दोकेसाथ आचरण किया आनन्दमें रहा,निश्चय त्याग करना संग विमुख व दुष्टोंका वहुत उचितहै भूलकरभी निकट न जाय व जैसा विमुख व दुष्टोंका और उनके प्रीति का त्यागकरना अत्यन्त उचितहै इसीप्रकार अंगीकार करना सत्संग व समागम भगवद्भक्तों का वहुत योग्य व उचित है सत्संग वह वस्तुहै कि जिस पदवीका मिलना मन व बुद्धिमें न समाय व न समझमें आवे सो पदवी सहजमें मिल जाती है इस संसार व स्वर्गादिक के सुख तो तुच्छहैं ब्रह्मानन्द का सुखभी सत्संग की बराबरी नहीं करसक्ता अरु वे

सब सुख सत्संग के सेवकहैं सबहाथ बांधे सम्मुख होजाते हैं और जब कि पूर्णब्रह्म परमात्मा सत्संग के प्रभाव करके सहजमें मिल जाता है और जहां सत्संग है तहां आप देवताओं के सहित प्राप्त रहताहै तो दूसरी पदवी के सुख सब प्राप्त होजावें तो क्या आश्चर्य है सत्संगका वह प्रतापहै कि अजामिल ऐसा पापी यमदूतों को मार पीटकर उस स्थानपर पहुँचा कि योगियों को मिलना कठिनहै वेश्या जो सब पाप की मूर्त्तिहैं उनको वह पद मिले कि रंगनाथ स्वामी और नाथजी महाराज वशीभूत होगये और नित्य विहारमें अपने मिलायलिया वाल्मीकि व नारदजी के वृत्तान्तपर दृष्टि करनी चाहिये कि पहिले वे क्या थे और अब सत्संग के प्रभाव से क्याहैं सो किसको किसको गिनावें जो कोई जिस उत्तम पदवीको पहुँचा है सो सत्संगहीके प्रभावसे सो जिस किसीको संसार समुद्रसे उतरना है सो सत्संगकरे विना सत्संग नतो नामकीर्त्तन प्राप्त होताहै न भक्ति न भगवत् ॥

बहुत निष्ठा स्थापित होनेका कारण व उसके साथ माहात्म्य नामकीर्त्तनका ॥

इस ग्रन्थमें चौबीस निष्ठा लिखी हैं व सब निष्ठाओंके वर्णनमें यह लिखागया कि इस निष्ठासे भगवत् मिलता है अब चित्त डगमग में है कि उनमें से किसके अनुकूल आचरण करना चाहिये और जो एक निष्ठासे भगवत् मिलता है तो इतनी निष्ठाके लिखने का क्या प्रयोजन एक निष्ठा लिखदेनी बहुत थी और जो किसी कारणसे चौबीसों निष्ठा ठीकहैं तो यह भी वर्णन करना चाहिये कि उनमें कौनसी निष्ठा ऐसी हैं कि जिससे मनोरथ अतिशीघ्र सिद्धहो उत्तर यहहै कि सब निष्ठाओं की जो कुछ महिमा लिखीगई है सबसत्य व ठीक है किसी भांति कुछ सन्देह नहीं है उनमें से किसी एक निष्ठापर चित्त दृढ़ आरूढ़ होजाना चाहिये वही एक निष्ठा इस संसार समुद्र से पार उतार देवेंगी दूसरी निष्ठाका प्रयोजन न होगा और उसी एक निष्ठाके विश्वास व निश्चय को यह प्रतापहै कि शेष दूसरी सब निष्ठाओं में आप से आप अधिकार हो जायगा जैसे एक दीपक के प्रकाश होने से सब वस्तु घरमें हैं सो दीखने लगती हैं और जिस निष्ठा पर जिसका चित्त लगे तो उस निष्ठासे सिवाय भगवत् के मिलनेके निमित्त दूसरे साधन का प्रयोजन नहीं दिन दिन प्रीतिको वृद्धिकरके अधिकारताको पहुँचाय देती है व

बहुत निष्ठा स्थापित होनेका कारण यहहै कि सब किसीकी रुचि मनकी एकसी नहीं है किसीकी बालचरित्रों में रुचि है और किसीको माधुर्य्य व शृङ्गार में व किसीका हँसी खेल सखाभाव के चरित्रों में मन लगता है और कोई ईश्वरता व कृपालुता के चरित्रों पर चाह रखता है इसी प्रकार सब उपासक अपने मनकी रुचिके अनुसार भगवत् के शोभा व चितवनमें सावधान होताहै तो शास्त्रोंमें जो उनके सब भावकी निष्ठालिखी न जाती तो विना ठहरने रीति आराधन उस निष्ठाके भगवत् के मिलने में व्यवधान पड़ना प्रमाण इस वचनका आप भगवत्के चरित्रों से प्रसिद्धहै कि भगवत्ने सब निष्ठाके सम्बन्धी चरित्र किये जिस में जैसे चरित्रों पर जिसको चाहहो वैसेही चरित्रोंपर मनको लगाकर भगवत्परायण होजावे इस हेतु चौबीस निष्ठा जो ठहराईगई बरु जितनी अधिक लिखीजातीं तितनी अधिक प्रकाशित होतीं यहीबात ग्रन्थके आरम्भ में जहांभक्ति अनेक प्रकार की होजाने का उत्तर लिखा गयाहै तहां प्रथमही पद्धति व रीति के नाम से लिखी हैं यहां उसीको विशेष करके लिख दियाहै और यह नहीं कहाजाता कि इस निष्ठासे भगवत् बहुतशीघ्र मिलताहै और इस निष्ठासे शीघ्र नहीं क्योंकि यह चौबीस निष्ठा आवागमनके समुद्रसे पार होनेको चौबीस जहाजके सदृश हैं जिस जहाजपर बैठेगा बेखटके पार होजायगा जहाजपर बैठने अर्थात् विश्वास दृढ़ व आचरण पक्का करने की देरहै पार उतारनेवाला अपनी दयाके वश पार उतारने को सदा सर्व्वकाल सावधान है परन्तु इस कालमें अर्थात् कलियुग के निमित्त जो कुछ शास्त्रों में लिखाहै कि सतयुग में भगवत् का ज्ञान व ध्यान और त्रेतामें भगवत्की यज्ञ और द्वापर में भगवत् की पूजा करने से उद्धार होता था अब कलियुग में केवल भगवत् का नाम मुख्य आधार है और इस वचन का निश्चय भागवत व स्कन्दपुराण व पद्मपुराण इत्यादिसे अच्छेप्रकार होताहै व रामतापिनी वेदश्रुति कहती है कि नामके प्रभावसे पूर्णब्रह्म परमात्मा मिलताहै नाम माहात्म्य कौमुदी ग्रन्थमें सूत्र व स्मृती पुराण व वेदके प्रमाण से निश्चय करके मिलना मुक्तिका केवल भगवत् नामसे ऐसा सिद्धान्त लिखाहै कि वह ग्रन्थ पढ़ने व सुनने से बनिआता है विस्तार के भयसे उसके भाषान्तर का कुछ प्रयोजन न समझा जितने मत व

पन्थई देखने सुनने में आये उनके अग्रगामी अपने अपने मत व पन्थकी बड़ाई करके आपसमें लड़ते झगड़ते हैं परन्तु भगवत् नामकी महिमा और बड़ाई करने में सबका सम्मत एकहै व सब बराबर कहते हैं कि यह नाम सब काम दोनों लोकके सुधार देताहै व परीक्षाकी बात है कि दश आदमी गाढ़ निद्रामें सोते हैं उनमें किसी एकका नामलेकर किसीने पुकारा तो वही जगताहै जिसका नाम लेकर पुकारा इस दृष्टांत व प्रमाणसे दो बातकी निश्चयहुई एकयह कि सोताहुआ पुरुष नामके पुकारने से जगकर प्राप्त होजाता है तो वह भगवत् कि सर्वकाल जागनेवाला व सर्वत्र व्यापकहै क्यों नहीं सम्मुख होजायगा दूसरे यह कि इस प्रमाणसे नाम व नामीको अभेदता निश्चय ठहरगई अर्थात् जो नामहै सोई नामवालाहै तो जब कि नाम भगवत्का कि वास्तवमें भगवतहै अनुक्षण जिसके जिह्वापर रहैगा तो वह जापक क्यों न ब्रह्मरूप होजायगा शास्त्रोंका जो यह वचनहै कि नामके लेनेसे संपूर्णपाप आगेके व अबके दूर होजाते हैं उसका निर्णय नाम माहात्म्य कौमुदी ग्रंथमें अच्छे प्रकार से लिखाहै अर्थात् शङ्का करनेवाले ने यह शङ्का किया कि जो धोखे व भूलकर एक बेरके नाम लेने से सम्पूर्ण पाप आगेके संचित व वर्त्तमान कालके नाशको प्राप्त होजाते हैं तो वह लोग संसार व अन्तकालमें क्यों दुःख पाते हैं उत्तर यहहै कि एकबेर नाम लेने के पीछे जो नाम नहीं लेते इसहेतु नाम नहीं लेनेके पापमें बद्धहोकर भांति भांतिकी पीड़ा व दुःखोंको भोगते हैं जो बराबर नाम लेतेरहै तो कोई पाप न हो व ब्रह्मरूप होजावें और श्वेत वस्त्रपर स्याही बहुत शीघ्र भीनजाती है तो जिस जिह्वासे एकबेर नाम उच्चारणहुआ और वे फिर नाम नहींलेते तो उनको नाम नहीं लेनेका पाप अधिक होताहै अभिप्राय यह निकला कि भगवत्का नाम प्रतिश्वास व प्रतिक्षण जपतारहै कि फिर कोई पाप निकट न आवै यह सिद्धान्त ऐसाहै कि कोई सन्देह अथवा शङ्का उचित नहीं व जो किसीको सन्देहहो तो अजामिलके प्रसंगसे शङ्काका समाधान करदे सर्वथा इसकलियुगमें सिवाय नाम मङ्गलरूप मेरे स्वामीके और कोई उपाय विशेष व सुष्ठुतर ऐसा नहीं कि जिसके अवलम्बसे अतिशीघ्र मनोवाञ्छित पदका पहुँचजाय व नामलेने में न कुछ अटपटहै न कुछ खर्चहोताहै केवल जीभ हिलानी है सो जीभ अनुक्षण

मुखमें प्राप्त है जिन लोगों ने अनन्य होकर उस नामी के नामकी शरण लीहै वही भक्तहैं और वही भजनानन्द व वही साधुहै और वही वैष्णव और वही जीवन्मुक्त है ॥

भगवद्भक्तोंके आगे विनय व श्रीराधाश्याम आनन्दधामके चरणारविन्दमें निवेदन ॥

अब भगवद्भक्तों व उपासकों के चरणकमलों को दण्डवत् प्रणाम करके विनय करताहूं कि यह चरित्र भगवद्भक्तों का सम्पूर्ण पाप व दुःखों का दूर करनेवाला और भगवच्चरणों में प्रीति का बढ़ाने वाला व दोनों लोकका सब सुख कृपा करनेवाला व ब्रह्मानन्द का देनेवाला जैसा अपनी मति अनुसार मुझ मतिमन्दसे होसका देवनागरी में भाषान्तर रचिकरिके निवेदन किया यह तुम्हारे परम प्रीतम के चरित्रों से भराहै इस हेतु मेरे बुरे कर्म्मोंकी ओर न देखिके अवश्य अंगीकार करने योग्य है और सब सम्प्रदायवालों को आनन्द का देनेवाला है क्योंकि सब सम्प्रदायों के आश्चर्य व रीति व परम्परा का वृत्तान्त निखोट् सब बड़ाई व मर्यादके सहित लिखाहै जो कुछ चूकहोगी सो मेरी अज्ञताहै प्रारम्भसे व अन्ततक केवल एक सिद्धांतपर दृष्टि व परिश्रम रहा है कि जिसप्रकार होसकै किसी निष्ठाके अवलम्बसे अथवा चरित्र से कै नाम से कै सम्प्रदाय से भगवत् पूर्णब्रह्म सच्चिदानन्दघन छविसमुद्र शोभाधाम के चरित्रों व रूप अनूप में अज्ञ लोगों को प्रीति व ज्ञाता लोगों को प्रीति की वृद्धि व दृढ़ता प्राप्त होय व दो अपराध जानि बूझिके अलबत्ते हुये एक यह कि वहुत जगह इस समयके लोगों को वृत्तान्त का वह निश्चय करके मेरा वृत्तान्त है सो लिखा गया है सो प्रयोजन इसका इतनाही है कि संग्रह व त्याग विना पहिचान नहीं होसक्ता दूसरा यह कि कोई कोई जगह वह भेद व भाव लिखगया है कि जो विमुख व सम्प्रदायों से बहिर्मुख लोगोंसे गुप्त रखने योग्यथे सो इसमें शुचिताई व दृढ़ताई यहहै कि उन लोगोंको उस भेद व भाव के पढ़ने व सुनने का संयोगही नहीं पहुँचैगा कदाचित् जो हजार दो हजार में कोई एक पद सुनलेगा तो उसके स्वाद व भाव और मुख्य अभिप्राय से निश्चय करिकै अज्ञ रहैगा व कथा व इतिहास की भांति समझैगा जैसे पीनसवारे को कपूरकी सुगंधका ज्ञान नहीं होता क्योंकि उस रसके वेही भागी हैं कि जिनकी भगवत् चरित्रोंमें प्रीति है और

उस रसके उपासकहैं और उनहीं के निमित्त वे भाव भेद लिखेगये हैं॥ हे श्रीनन्दनन्दन राधावर वृन्दावनविहारी शोभाधाम हे शरणागत वत्सल प्रणतारतभञ्जन दीनबन्धु हे करुणाकर सच्चिदानन्दघन पूर्णब्रह्म नित्य निर्विकार हे यशोदाकिशोर परममनोहर सुकुमार हे पतितपावन हे अधमउधारन हे करुणानिधान हे दयासिन्धु जैसा मेरा वृत्तान्त है किस प्रकार किस मुखसे निवेदन करूँ कि आपको विना मेरे निवेदन किये सब अच्छीप्रकार ज्ञातहै मेरे बराबर पतित अनेक अपराधों का पात्र व मतिमन्द दृष्टान्त को भी कोई नहीं और न इस बात पर मुझको निश्चय व दृढ़ताहै कि छोटे से राजाका किंकर अपने स्वामी व प्रजाका हज़ारों अपराध करिकै दण्ड इत्यादिसे बचा रहताहै बरु सबपर आज्ञाचलताहै व जब कि मैं बिन मोलका चेरा बरु घरजाया किंकर लाख दरलाख से तुम ऐसे पूर्णब्रह्मका हूं कि जिसकी माया एक अदने को अनेक ब्रह्माण्डोंका स्वामी बना देती है तो मुझको क्या भय व डर किसी से है परन्तु क्या कहूं और इस मन भाग्यहीन को क्या करूँ कि किसी भांति नहीं मानता व न आपके सम्मुख होताहै बरु ऐसी दशाहै—भजनबिन जीवत जैसे प्रेत॥ दूसरा—भजन बिन मिथ्या जन्म गँवायो॥ तीसरा—दोऊमें एको न भई॥ चौथा—सबदिन गये विषयकेहेतु॥ पांचवां—जन्म गयो बादिही पर बीते॥ ऐसे अपने बुरे आचरण पर दृष्टि करके जो परिणाम को शोचताहूं तो अपना कुछ ठिकाना नहीं देखता न सहारा दिखाई पड़ता है परन्तु आधार व अवलम्ब एकवचन का सो वह यहहै कि अपने निज श्रीमुखारविन्द से कहाहै कि जो कोई एकबेर मेरे शरण होकर और यह बात कहिकर कि तुम्हाराहूँ मुझसे माँगता है तो मेरा यह प्रण है कि उस को निर्भय पद देदेता हूं और इस प्रण में यह नियम नहीं कि वह साधु हो कै असाधु अथवा मानसे शरणहो अथवा ऊपर से सो उस वचनके अनुसार सत्य करिके अथवा मिथ्या अथवा दिखलाने के निमित्त अथवा वंचकतासे अथवा मनसे अथवा ऊपर से आपके शरण होकर और तुम्हारा हूं उच्चस्वरसे पुकार कर यह भिक्षा मांगताहूं कि किसी शरीरमें जावें किसी लोकमें कहींरहें यह ध्यान व चितवन आपका रात दिन निश्चल मेरे हृदय में बनारहै कि श्रीयमुनाजी के किनारे परम शोभायमान चौरासी कोस ब्रजमण्डल

बारह वन बारह उपवन करिके मण्डित जिसकी रज को ब्रह्मादिक अपने मस्तक का तिलक बनाकर व चौरासी कोश की परिक्रमा करके शुद्धता व सिद्धताको पहुंचते व एकबेर दर्शन जिसका असंख्य जन्मके पाप व उपपातकोंको दूर करिके श्रीकृष्ण परायण करदेता है विराजमानहै तिसके बीचमें अनेक विहारस्थान उसके मध्यमें कमलकर्णिका की भांति निज विहारस्थल नित्यवान् श्रीवृन्दावन तिस वनके बीच में गऊ व गोप व सखा व गोपियों की सभा पांच आवरण जिसके कमलाकार हैं छठवें आवरण में रत्नसिंहासन श्रीयुगल महामंगल मूर्त्तिके विराजमान होनेका शोभायमान है उसकी सुन्दरता व दमक चमकका वर्णन कौन करसक्ताहै सो करोड़ चन्द्रमा सूर्यकी ज्योति जिसके आगे गर्द हैं उस सिंहासन पर वितान ऐसा शोभायमान तना है कि जिसकी जगमगाहट और झलक से मन की आंखें चकचौंध खाती हैं मुक्तैश व मोती और जवाहिरात की लड़ियों से झालर लगीहुई है और भूमि व लता द्रुम गुल्म दल फल फूल व मृग मयूर हंस सारस कोकिला भँवर सब मणियम नानारंग के चैतन्य स्वरूप हैं उनकी तड़प झलक जैसा सिंहासनहै वैसीही है उस सिंहासनपर श्रीनन्दनन्दन व्रजचन्द्र राधाकान्त महाराज वंशीधारी ऐसे शोभा व शृङ्गार के सहित विराजमान हैं कि जिसका वर्णन वेद व ब्रह्मा व शेष व शारदा से भी नहीं होसक्ता और जो कुछ शास्त्रों ने और वेदों ने वर्णन किया है तो अन्त में कहदिया कि वर्णन में नहीं आता अपार है चरणकमलों के नख की द्युति ब्रह्मा व शिव इत्यादि योगीश्वरों को ब्रह्मानन्द के प्रकाश की देनेवाली है व चरण मनोहर ऊपर से श्याम और नीचे से अरुण ऐसे सुन्दर हैं कि उपमा श्याम व अरुण कमल की व ज्योति नीलमणि व पद्मराग मणिकी अति फीकी लगती है तिसपर सखियों ने कहीं रंग मेहँदी व कहीं रंग महावर रचिदिया है उन चरणों के अँगूठोंमें जड़ाऊ छल्ले उसपर कड़े और पायजेब जड़ाऊ झलकि रहे हैं पीताम्बरी धोती बिजुली की छविको लजावनेवाली पहिनेहुये नाभि गम्भीर मनोहर के ऊपर ललित त्रिवली चौड़ीछाती उसपर धुकधुकी और वनमाल व वैजयन्ती माला व गजमोतियों का हार बागा बारीक जरतारी धानी रंग की मनोहर व सुकुमार श्री अंगपर सजे जरीका पीताम्बरी

दुपट्टा कसेहुये सोने की हैकल माणिक व पन्ना और हीरे इत्यादि मणि
गणों से जड़ेहुये दोनों कन्धे और छाती पर आकर कमर तक लट
मोतियों के छोटे छोटे दानों की दोहरी कण्ठी गले में हाथों में अँगू
छल्ले कङ्कन पहुँची बाजूबन्द नवरत्न पहिने हुये मुख ऐसा चित्त चुरा
वाला मनोहर कि जिसकी शीतलता व मनोहरता को पूर्ण चन्द्रमा
प्रकाश व दमक को सूर्य्य व बिजुली व चिक्कणता व लावण्यता
नीलमणि व नवीन श्यामघन व प्रफुल्लता व सुन्दरता को कमल
गुलाब देखकर ऐसे फीके व शोभा हीन हैं जैसे सूर्य्य के सम्मुख बा
का कण मोरमुकुट शिरपर जिसमें मोती व चुन्नी व पन्नोंकी लड़ी लट
रही हैं जहांतहां फूल गुँथेहुये भालपर केशरके तिलककी झलक का
में कुण्डल व झूमके उनमें रङ्गरङ्ग के फूलों के गुच्छे प्रियाजी ने अप
हाथसे बनाकर पहिनाये हैं आंखें रसीली व अलसीली में काजल
गाहुआ झलकते हुये शोभायमान गोल कपोलों पर घुंघुरारी अल
झुकीहुई ओठोंपर पानकी लाली और सखियों के किसी छेड़छाड़
मुसक्याते हुये और उस शोभा व शृंगारपर जो डीठ लगने के बचा
के निमित्त जो अगणित कामदेव व सब ब्रह्माण्डों की शोभा और
दरता और सजावट व माधुर्य व चिक्कणता इत्यादि को निछावर कि
जाय तो उसकी यह उपमा होती है कि किसी चक्रवर्ती राजापर
कानी कौड़ी न्यवछावरकरै बामभागमें श्रीराधिका महारानीजी विरा
जमान हैं उनको जो श्रीनन्दनन्दन स्वामी से भेद कहाजाय तो गोपा
सहस्र नाम व गोलोकनाथिनी इत्यादि उपनिषद व दूसरे शास्त्रों

त शीघ्र भगवत् मिलता है और प्रियाप्रियतमके एक होनेकी एक
छटाहै कि उस सिंहासनपर जो दोनों विराजमान हैं तो गौरश्याम
अंगनकी सुन्दरता व निर्म्मल शोभा व पोशाक व आभूषण की झ-
क व चमक दमक दोनों स्वरूपके परस्पर मुखारविन्द व वस्त्र आभू-
ा पर पड़ते हैं उससमय यह नहीं विवेक होता कि कौन श्रीप्रियाजी
ारानी हैं व कौन श्रीकृष्णस्वामी इसपहिचान करनेमें शिव व शारदा
भी बुद्धि दङ्ग है दूसरे की तो क्या सामर्थ्य है जो निरुवार सके व
याप्रियतमके प्रेमका यह वृत्तान्तहै कि प्रियाजी के हृदयमें प्रियतम
प्रियतम के हृदय में प्रियाजी निरन्तर वसीरहती हैं सो जब कि अ-
र व बाहरका यह वृत्तान्त है तो दोनों में किस प्रकार कहाजाय कि
या प्रियतम दो हैं निश्चय करके एक हैं जैसे शब्द व अर्थ व जल व
ंग सो ऐसी श्रीवृषभानुनन्दिनी साक्षात् कृष्णप्रिया जिसकी चरण-
वचन्द्रिका परम रसिकों का जीवन आधार व सम्पूर्ण शोभा व शृ-
रका कारण तिसकी सुन्दरता शोभा व शृंगारका वर्णन किसप्रकार
ई करसके जितनी उपमा रहीं सो प्राकृत स्त्रियोंकी शोभाके वर्णन में
गिगईं प्रियाजी महारानी के योग्य न रहीं ऐसी श्रीप्रियाजी महारानी
कृष्णस्वामी के वाम अंगमें विराजमानहैं कि जिसकी शोभा व सुन्द-
ाके कारणसे श्रीनन्दनन्दन महाराज की शोभा व सुन्दरता प्राप्त होती
ललिता व विशाखा इत्यादि सब सखी चमरछत्र व्यंजन पानदान
ालदान इत्यादि नानाप्रकार की सामां सेवाकेलिये अपनी २ सज
सेवामें सजीहुई खड़ी हैं सम्मुख सखीगण नृत्य करती हैं वीणा वेणु
ी मृदंग सारंगी व करतालआदि भांति भांतिके वाद्ययन्त्र सब एक
रमें मिले बजते हैं घुंघुरू व किङ्किणी गतिपर छमाछम छमकि रही
व मधुर आलाप व गान व तान व उपज व मूर्च्छनाकी तरंग उठरही
सब रागिनी व छओं ऋतु सखीरूप मूर्त्तिमान् सेवा में खड़ी हैं वह
भा व समाज व सुख परम रसिक भक्तों के हृदय में समाय रहा है
सब विराजमान व प्राप्तहै ॥

दुपट्टा कसेहुये सोने की हैकल माणिक व पन्ना और हीरे इत्यादि मणि
गणों से जड़ेहुये दोनों कन्धे और छाती पर आकर कमर तक लटक
मोतियों के छोटे छोटे दानों की दोहरी कण्ठी गले में हाथों में अँगू
छल्ले कङ्कन पहुँची बाजूबन्द नवरत्न पहिने हुये मुख ऐसा चित्त
वाला मनोहर कि जिसकी शीतलता व मनोहरता को पूर्ण चन्द्रमा
प्रकाश व दमक को सूर्य व बिजुली व चिक्कणता व लावण्यता
नीलमणि व नवीन श्यामघन व प्रफुल्लता व सुन्दरता को कमल
गुलाब देखकर ऐसे फीके व शोभा हीन हैं जैसे सूर्य के सम्मुख
का कण मोरमुकुट शिरपर जिसमें मोती व चुन्नी व पन्नोंकी लड़ी ल
रही हैं जहांतहां फूल गुँथेहुये भालपर केशरके तिलककी झलक
में कुण्डल व झूमके उनमें रङ्गरङ्ग के फूलों के गुच्छे प्रियाजी ने अप
हाथसे बनाकर पहिनाये हैं आंखें रसीली व अलसीली में काजल
गाहुआ झलकते हुये शोभायमान गोल कपोलों पर घुंघुरारी अल
झुकीहुई ओठोंपर पानकी लाली और सखियों के किसी छेड़छाड़ प
मुसक्याते हुये और उस शोभा व श्रृंगारपर जो डीठ लगने के बचा
के निमित्त जो अगणित कामदेव व सब ब्रह्माण्डों की शोभा और सु
दरता और सजावट व माधुर्य व चिक्कणता इत्यादि को निछावर किय
जाय तो उसकी यह उपमा होती है कि किसी चक्रवर्त्ती राजापर को
कानी कौड़ी न्यवछावरकरै वामभागमें श्रीराधिका महारानीजी विर
जमान हैं उनको जो श्रीनन्दनन्दन स्वामी से भेद कहाजाय तो गोप
सहस्र नाम व गोलोकतापिनी इत्यादि उपनिषद् व दूसरे शास्त्रों
विरुद्ध पड़ता है व महादेव के वचन के अनुसार ब्रह्महत्या का पा
प्राप्त होता है और जो एकरूप श्रीनन्दनन्दन स्वामी का वर्णन किय
जाय तो माधुर्य व श्रृंगार व छवि व शोभा व सुन्दरता इत्यादि प्रिय
प्रियतमके नित्यहैं उनकी नित्यतामें विरुद्ध आताहै बात यही सिद्धां
है कि जो नन्दनन्दन स्वामी हैं सोई राधिका महारानी व जो राधिक
महारानी सोई नन्दनन्दन स्वामी हैं भक्तोंको अपने चरित्रों में लग
कर उद्धार करनेकेहेतु और श्रृंगार व माधुर्य की उपासना प्रवर्त्तमान
करने के निमित्त भगवत् ने अपने दोरूप प्रकटकिये इसीकारण माधुर्
व शृंगारनिष्ठा सब निष्ठाओं पर अग्रवर्त्ती मुख्य है कि उसके प्रभावसे

हुत शीघ्र भगवत् मिलता है और प्रियाप्रियतमके एक होनेकी एक
ह छटाहै कि उस सिंहासनपर जो दोनों विराजमान हैं तो गौरश्याम
ोअंगनकी सुन्दरता व निर्म्मल शोभा व पोशाक व आभूषण की झ-
क व चमक दमक दोनों स्वरूपके परस्पर मुखारविन्द व वस्त्र आभू-
ण पर पड़ते हैं उससमय यह नहीं विवेक होता कि कौन श्रीप्रियाजी
हारानी हैं व कौन श्रीकृष्णस्वामी इसपहिचान करने में शिव व शारदा
ी भी बुद्धि दङ्ग है दूसरे की तो क्या सामर्थ्य है जो निरुवार सके व
प्रयाप्रियतमके प्रेमका यह वृत्तान्तहै कि प्रियाजी के हृदयमें प्रियतम
प्रियतम के हृदय में प्रियाजी निरन्तर वसीरहती हैं सो जब कि अ-
तर व बाहरका यह वृत्तान्त है तो दोनों में किस प्रकार कहाजाय कि
प्रिया प्रियतम दो हैं निश्चय करके एक हैं जैसे शब्द व अर्थ व जल व
रंग सो ऐसी श्रीवृषभानुनन्दिनी साक्षात् कृष्णप्रिया जिसकी चरण-
खचन्द्रिका परम रसिकों का जीवन आधार व सम्पूर्ण शोभा व शृ-
ारका कारण तिसकी सुन्दरता शोभा व शृंगारका वर्णन किसप्रकार
ोई करसकै जितनी उपमा रहीं सो प्राकृत स्त्रियोंकी शोभाके वर्णन में
गिगईं प्रियाजी महारानी के योग्य न रहीं ऐसी श्रीप्रियाजी महारानी
श्रीकृष्णस्वामी के वाम अंगमें विराजमानहैं कि जिसकी शोभा व सुन्द-
ताके कारणसे श्रीनन्दनन्दन महाराज की शोभा व सुन्दरता प्राप्त होती
ललिता व विशाखा इत्यादि सब सखी चमरछत्र व्यजन पानदान
ालदान इत्यादि नानाप्रकार की सामा सेवाकेलिये अपनी २ सज
सेवामें सजीहुई खड़ी हैं सम्मुख सखीगण नृत्य करती हैं वीणा वेणु
शी मृदंग सारंगी व करतालआदि भांति भांतिके वाद्ययन्त्र सब एक
वरमें मिले बजते हैं घुंघुरू व किङ्किणी गतिपर छमाछम छमकि रही
व मधुर आलाप व गान व तान व उपज व मूर्च्छनाकी तरंग उठरही
सब रागिनी व छओं ऋतु सखीरूप मूर्त्तिमान् सेवा में खड़ी हैं वह
ोभा व समाज व सुख परम रसिक भक्तों के हृदय में समाय रहा है
ो सब विराजमान व प्राप्तहै॥

छन्द ॥

जय जय नन्दकिशोर जयतु वृषभानु किशोरी ।
चिदानन्दघन रूप नित्य सुन्दर शुभ जोरी ॥
लीलाधाम स्वरूप नाम नित भक्त जो गावैं ।
नेति नेति कहि वेद भेद जाको नहिं पावैं ॥
गौरश्याम शोभासदन प्रणतपाल आरतहरण ।
जन प्रतापके कल्पतरु सर्व्वकाव्य पूरण करण ॥

इतिश्रीभक्तमालकथासमाप्ता ॥

मुन्शी नवलकिशोर (सी, आई, ई) के छापेखाने में छपी ॥
सन् १९०१ ई० ॥

इश्तहार रामायण आल्हा का ॥

देखहु ! देखहु ! यह देखहु अब, कीरति रघुपति परम उदार ॥

प्रकटहो कि इस यंत्रालयाध्यक्ष ने सर्व भारतनिवासियों की रुचि आजकल जैसी आल्हा में देखी ऐसी किसी विषयमें नहीं फिरि वो कौन आल्हा कि जिसमें जौन जिसको जानिये तौन तौ सो बनायके गावै-जैसे कि लोग गाते हैं (भैसि बियानी रे कनउजमाँ पड़वा गिरा महोबे जाय) अथवा (बत्तीसिसइयां लागि आल्हा के उघाड़िमाँ परी साठिमन हींग) ऐसेही सम्पूर्ण गाथा कि जो न किसी पुराण में लिखी न कोई देवादी का आराधन इसमें व्यर्थ समय व्यतीत करने के सिवाय और क्या अर्थ सिद्ध होसक्ता है इन सब बातों को अल्पबुद्धी भी थोड़ेही विचार से समझ सक्ते हैं और गाना तो वही है जिसमें धर्म, अर्थ, काम, मोक्षकी प्राप्ती हो और श्रेष्ठ से श्रेष्ठ देवता की आराधनाहो जैसे (कतहि खगेश रघुपति सम लेखों । राम स्वभाव कहूँ सुनो न देखों) यह काकभुशुण्डिजी गरुड़जी से कहते हैं कि हे खगेश हम किस को श्रीरामचन्द्रजी के समान संसारमें ऐसा स्वभाव तो हम किसी को न देखते हैं न सुनते हैं—क्योंकि जो लङ्का रावण को बड़ी कठिन तपस्यासे प्रसन्न हो श्रीशिवजी ने दी थी वो लङ्का सहजही में श्रीरामचन्द्रजी ने विभीषणजी को देदी—अथवा (उलटा नाम जपत जगजाना । बालमीकि भे ब्रह्म समाना) कि जिन के उलटे नामके जाप से बाल्मीकिजी ब्रह्म के समान भये राम को उलटने से मरा होता है—अथवा (बसन हीन नहिं सोह सुरारी । सब भूषण भूषित बरनारी) कि जैसे स्त्री को सम्पूर्ण जेवर पहनादीजाय लेकिन वस्त्र न हो तो क्या उसकी शोभा होसक्ती इसीतरह सम्पूर्ण राग बिना ईश्वरके नाम व्यर्थ हैं जैसे (नैष्कर्म्यमप्यच्युतभाववर्जितं नशोभतेज्ञानमलंनिरंजनम् ॥ कुतःपुनःशश्वदभद्रमीश्वरेनचा र्पितंकर्मयदप्यकारणम्) ऐसेही अभिप्रायों को समझकर इस यंत्रालयाध्यक्ष ने बहुतसा धन देकर वर्त्तमान कवियों में श्रेष्ठ कविवर पं० चन्द्रीदीनजी से सातोंकाण्ड रामायण का आल्हा ऐसी सरल भाषा के मनोहर छंदों से बनवाया है कि जिसको बिना पढ़े लिखे भी मनुष्य अच्छीतरह से समझ सक्ते हैं और जिनको कि भाषा में कुछ भी ज्ञान है वो तो इसके सम्पूर्ण गवैया हो करके राम भक्ताधिकारीही होजायगे क्योंकि इस में ज्ञान, भक्ति, वैराग्य, शृंगार, युद्धादि जौन जहां है तौन तहां गान करने से उसके रूप को दर्शाही देते हैं क्योंकि सब कवियों के काव्यका प्रभावही यह है— लङ्काकाण्डके वीर वृत्तान्तों को सुनके कादरों के रोमांच होजाता है भुजा आदि फरकने लगते हैं वीरों की कथाही क्या इसीतरह रामबनगमन सुनने से कौन ऐसा पाषाण की मूर्ति है कि जिस के अश्रुओं की धारा न चलनेलगे इसीतरह यह आल्हा रामायण बड़ीही विशाल इस यन्त्रालय में बाल, अयोध्या, आरण्य, किष्किन्धा और सुन्दर, लङ्का, उत्तर सातोंकाण्ड छपे तय्यार हैं और ग्राहकों को फरमायश से शीघ्रही मिलसक्ते हैं और कीमत भी बहुतही सस्ता रक्खीगई जिसमें गरीब और अमीर सभी लोग इसके रसको पासक्ते हैं लेकिन जो शीघ्रता न करेंगे उनको पीछेसे हानि की तरह रामायण आल्हा मिलना दुश्वार होगा क्योंकि बहुत फरमायश इकट्ठा है ॥